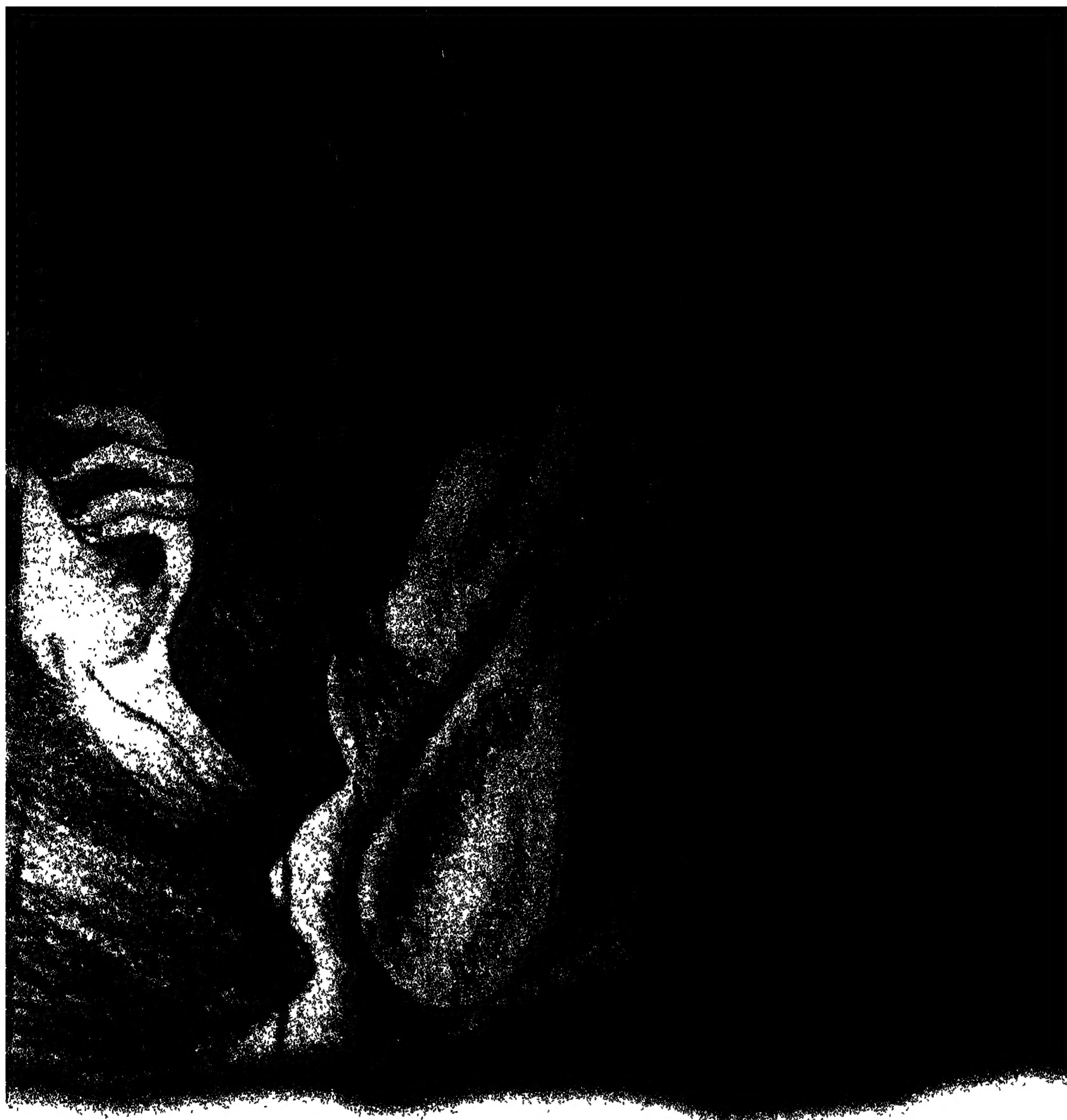


अरे चांडाल

प्रमोद कुमार तिवारी

अरे चांडाल
(उपन्यास)

अपने पहले ही उपन्यास 'डर हमारी जेबों में' पर
अंतरराष्ट्रीय 'इन्दु शर्मा कथा सम्मान', लंदन इंग्लैंड
से सम्मानित लेखक का नया उपन्यास



सामयिक प्रकाशन

3320-21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग,

दरियागंज, नई दिल्ली—110002 (भारत)

फोन : (011) 23282733 ● टेलीफैक्स : (011) 23270715

अरे चांडाल

प्रमोद कुमार तिवारी

ISBN : 81-7138-104-9

प्रकाशक :
सामयिक प्रकाशन
3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

प्रथम, 1953

मूल्य : 500.00

कलापक्ष : निर्दोष त्यागी

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक : अजीत प्रिंटर्स, दिल्ली-110053

ARE CHANDAAL
Novel by PRAMOD KUMR TIWARI

Published By : **SAMAYIK PRAKASHAN**
3320-21 Jatwara, Netaji Subhash Marg,
Daryaganj, New Delhi - 110002 (INDIA)
Tel. : (011) 2328 2733, Fax : 2327 0715
Mob.: 09811607086

अपने ही अंदर के उस अनाम को,
जो कहता है लिखो;
क्योंकि अंधेरा अभी भी वास्तविकता है
और चालबाज समय
अंधेरे में ही उजाले का भ्रम फैलाना चाहता है।

अपने पहले ही उपन्यास 'डर हमारी जेबों में' पर
अंतरराष्ट्रीय 'इन्दु शर्मा कथा सम्मान', लंदन इंग्लैंड
से सम्मानित लेखक प्रमोद कुमार तिवारी का नया उपन्यास

'अरे चांडाल'

गुनी और बिक्रमगंज को जोड़ने वाली इस पक्की सड़क के लिए जैसे ही किसी के मुंह से निकलता है 'पक्की सड़क', लगभग तय-सा हो गया है कि सुनकर मुंह बिचका देता है सुनने वाला—"अब ईहो मत कह दीजिएगा कि जीटी रोड है? बेकार कुछ फूहर निकल जाएगा मुंह से। महमंड पहिले से ही अउंजाया हुआ है।"

जिसने कहा होता, इस प्रतिक्रिया से गद्गद् हो सामने बिछी उखड़ी-पुखड़ी हुई सड़क और सामने खड़े आदमी के उखड़े हुए मूड दोनों का मजा लेने लगता।

आजादी के पचासेक बरसों के बाद लोगों को मजा आने लगा है उखड़ी-पुखड़ी हुई सार्वजनिक सेवाओं, गोबर का चोत हो गई संस्थाओं और गूहगिंजन करती व्यवस्थाओं को देखकर। खूब मनोरंजन होता है। ये नहीं दिखें तो उलझन खड़ी हो जाए तब कि अब किसको देखकर हँसा-बोला जाए!

वैसे तो इस सड़क का चप्पा-चप्पा विधान-मंडलों की कार्यवाहियों जैसा उखड़ा-पुखड़ा हुआ है, टेढ़का पुल के पास यह विप्लवाकुलता की अद्भुत छटा प्रस्तुत करती है। गड्ढे इतने अराजक अंतरालों पर उभर आए थे कि किसी गाड़ी के आने की आवाज सुनाई देते ही अगल-बगल के खेतों में मौजूद लोग इस पैशाचिक प्रत्याशा से भर जाते कि गाड़ी उल्टेगी ही उल्टेगी, इस तरफ नहीं तो उस तरफ। पर गाड़ियां देश के लोकतंत्र की ही तरह सभी गड्ढों को पार करते हुए आगे बढ़ जातीं और लोग अनमने-से वापस अपने-अपने कामों में लग जाते।

गुस्सा भी जाते किसी-किसी दिन गाड़ीवालों पर—"ईहे सरवा सब न असली जड़ है प्रौबलेम का...कबिलांव देखाने में लग जाता है कि खर-खुरहेंटी में भी चला सकते हैं हम! अरे, चलाने को तो आदमी कहां नहीं चल लेगा और चला लेगा, लेकिन ई कवनो बात नहीं न हुआ...क्राइसीस पैदे नहीं कीजिएगा तो कोई सनका हुआ है कि लोल संवारने आएगा आपका?...एतना फुर्सत है किसी को?"

जैसे कुंवरपुरवाले कन्हैया सिंह गुस्सा गए हैं आज—"साफे बंद कर दिया जाए गाड़ी-फाड़ी चलना। चक्का जाम। खाली साइकिल और बैलगाड़ी चलेगा। बता दिया जाए साले नेताजी लोग को कि मोटर नहीं चाहिए आपके भोटर को। भोट चाहिए तो आएं उड़नखटोला से।"

"हं जी बबुआन, संघर्स कोई करबे नहीं करेगा और..." मानिक की मड़ई में मौजूद बगल के गांव के एक आदमी ने हामी भरी।

वैसे संघर्ष, सभी जानते हैं, एक चिपचिपी-सी, खुजली पैदा करने वाली चीज थी,

खद्दरधारी जिसे मंचों से थूकते थे जनता के ऊपर और जिसे जनता बिना समय गंवाए अपने गमछे से पोंछ डालती थी। भले ही यह अफसोस रह जाता कि पोंछने के पहले थोड़ा जांचना चाहिए था उसे।

"संघर्ष भी नहीं मरदे, बस असहयोग।" लेकिन फिलहाल जोश में आ गए हैं कन्हैया सिंह, जिन्हें उनके पिता पल्टू सिंह, पता नहीं प्यार से कि हिकारत के भाव से, लुकुड़ी सिंह भी कहते थे, जिसका कारण उनकी दुबली-पतली काया थी, जो खादी के चूड़ीदार पैजामे और नाकट हो गए कुर्ते में और भी खटाईनुमा लगती। कन्हैया सिंह फिर भी यही ड्रेस धारण करते। बिक्रमगंज कॉलेज में विद्यार्थी जीवन से ही नेतागिरी के शौक में छाती तानकर चलने की आदत पड़ गई थी, जिसके चलते चूतड़ थोड़ा पीछे की ओर चले जाते और पीठ अवतल दर्पण की शक्ल ले लेती। हँसने वाले पीठ-पीछे हँसते, पर कन्हैया सिंह को बेढंगा नहीं लगता अपना यह पोज।

"और ई नहीं हो सकता कि झगरा-गेंगा छोड़कर सब कोई दू-दू खांची माटी डाल दे गड़हवन में?" मानिक बोला।

'इसी को पॉजिटिव थिंकिंग कहते हैं'—कोई मैनेजमेंट गुरु मौजूद होता वहां तो दांते निपोरकर कहता; पर मानिक ने पॉजिटिव थिंकिंग नहीं, बल्कि कन्हैया सिंह को थोड़ा और उकसाने की गरज से कही थी यह बात, जो यह इलाके में बातचीत आगे बढ़ाने और उसे रोचक बनाने की आजमाई हुई शैली है।

"डाल काहे नहीं सकता, एकदम डाल सकता है; लेकिन एगो बड़का खतरा है न डालने में!" कन्हैया सिंह के बोलने के पहले ही दूसरा आदमी बोला।

"खिया जाइएगा?"

"खिया नहीं जाएंगे; बाकी जानते हो, क्या होगा? हम् लोग इधर लग-भिड़कर माटी फेंक देंगे और उधर पी.डब्लू.डी. वाला भोंसड़ीयावाला सब इसी के नाम पर बोगस बिल बनाकर हाथीछाप भंजा लेगा।" ऐसी संजीदगी से कहा उस आदमी ने, मानो सचमुच लोकशाही में लोक-भागीदारी नहीं होने का असली कारण बोगस बिलों का डर ही था।

दरअसल अपने सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं की लंपटता और बेईमानी पर जैसा अगाध विश्वास है इस इलाके के लोगों का, सरकारी सुरक्षा एजेंसियों को पाकिस्तान की आई.एस.आई. की कार्यक्षमता पर भी नहीं होगा। लोग मानते हैं, उनके अधिकारी और नेता कुछ भी कर सकते हैं। लोहिया और लोहा दोनों को एक साथ ढो सकते हैं। एक ही साथ समाजवादी, नमाजवादी और रामराज्यवादी हो सकते हैं। अपने बेटे को ताज भी पहना सकते हैं और परिवारवाद की बखिया भी उधेड़ सकते हैं। घूस लेकर तबादले भी कर सकते हैं और सरदार पटेल के पोस्टर छापकर भ्रष्टाचार-उन्मूलन सप्ताह भी मना सकते हैं। कुछ भी कर सकते हैं।

"एकरी महतारी के...सड़कीया में क्या कर देते हैं जी आप लोग कि हरमेसा चरचराया ही रहता है इनका?" मड़ई के एक कोने में बैठे, सपटे पर कागज फैलाकर

उनमें उलझे धनजी पांड़े की ओर ध्यान चला गया है कन्हैया सिंह का, "कौन जनावर का मूत मिला देते हैं अलकतरवा में?"

धनजी पांड़े, जो पी.डब्ल्यू.डी. में ही कनीय अभियंता के पद पर काबिज थे, ठठाकर हँसे कन्हैया सिंह के सवाल पर और बिना कोई जवाब दिए हुए ही हँसते रहे।

"हँसिए मत महाराज! ई हँसने वाला बात नहीं है।" डपट दिया कन्हैया सिंह ने।

"इसी फेर में बेचारे कन्हैया सिंहवा का पौलटिक्स गड़बड़ा गया, समझे कि नहीं, मानिक?" हँसना बंद नहीं हुआ धनजी पांड़े का, "कह रहा है, कौन जनावर का मूत मिलाते हैं!"

"गलती कह रहे हैं?"

"गलती नहीं कह रहे हो तो किसका-किसका नाम गिनाएं? हमारे-तुम्हारे बस का है इस मूत-मिलावन कार्यक्रम का भेद समझना? हमको तो, ए बाचालल्ला, अपने ठीक से नहीं बुझाया आज तक..." धनजी पांड़े, अब लोभ नहीं संवरण कर पाएंगे कम से कम एक-दो नाम गिनाने का।

"एगो तो हमारा एक्जीक्यूटीव इंजिनियरवा ही है धाकड़ चीज। रघुबर गोप। काम के प्लान और एस्टीमेट पर मूत देता है और बोलता है, कुछ गड़बड़ हो जाए तो पहले टेक्नोक्रेसी को आजमाते हैं, फिर ब्यूरोक्रेसी को और तब डेमोक्रेसी को। तीनों फेल हो जाएं तो जुडिसियरी को भिड़ा देते हैं मोर्चे पर। और समझ जाओ, बाचालल्ला कि आज तक कम से कम हम नहीं देखे हैं उसका काम जहुआते हुए। हम तो चरण पकड़ लिए कि हे यदुनंदन, इस गरीब ब्राह्मन को भी ले लो शरण में।"

"शरण में चले गए हैं तो जमे रहिए वहीं, लेकिन ई भी जरूर सोचना चाहिए आपके करप्सन के पोप रघुबर गोप को कि दूसरे का रस्ता रोकेंगे तो खुद भी ज्यादा दिन नहीं चल सकेंगे।"

"बकलंड है कि यहां चलेगा? देस छोड़ देगा डॉलर सिंहवा जइसा। अमेरिका जाकर इना-मीना-डीका करेगा।" मानिक ने कहा, "दरबे सो सरबे, जो चहबे से करबे।"

"मनिकवा को बहुत बुझाने लगा है हो! देखो, कितना चल्हांकी वाला बात बोला?" प्याजबड़ी बनाने के लिए प्याज छीलते मानिक को हैरत-भरे अंदाज में देखने लगे हैं धनजी पांड़े।

"जहां जाएगा, वहां भी नासेगा।" कन्हैया सिंह का मन थोड़ा 'तीला' हो गया है यह सोचकर कि रघुबर गोपवा चाहता तो सचमुच बचा रह सकता था इन गड्ढों से—अमेरिका चला जाता।

"सब कोई चल गइल, बुढ़वा लटक गइल।" कन्हैया सिंह का उतरा हुआ चेहरा देखकर हँसी छूट गई है मानिक को।

"जाने दो मरदे, ढेर छछनना भी खराबे चीज होता है। एक दिन तो खालीये हाथ न कूच कर देना है!" धनजी पांड़े ने कहा और घड़ी की ओर देखते हुए हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए, "बतरस के फेर में बरतीयो मिस हो जाएगा देख रहे हैं कि..."

"ई साला बभना बस, ऊपरे-से सीधवा लगता है, मानिक। चूड़ामन पंड़इया का भी बाप हो गया है चोरी-चकारी में। हमको सुना रहा है कि..." मड़ई के बाहर अपनी फटफटिया को किक मारते धनजी पांड़े को देखकर कुछ देर तक गुर्राते रहे कन्हैया सिंह।

देर तो उन्हें भी हुई जा रही थी। पर बस के आने का इंतजार करने के अलावा चारा भी क्या था। किसानों के इस देश में किसानी करते-करते जान चली जाए आदमी की, पर फटफटिया पर चलने का सवख नहीं पूरा हो सकेगा।

"कभी-कभी बहुत अखर जाता है, मानिक।" बोले, "चाहता तो आदमी खेल सकता था हजारों-लाखों में, लेकिन साली सिद्धांतहीनता की राजनीति रास ही नहीं आई, नहीं तो ई धनजी पांड़े-तांड़े जैसे लोग तो साले चरण पर लोटते।"

"सिद्धांत भी तो, बबुआन, कौन-सा सही है और कौन गलत, आज तक नहीं बुझाया ठीक से। लाल, हरा, गेरुआ, तिरंगा...जिसको देखिए अपना-अपना नगाड़ा पीट रहा है।"

अचानक गंभीर हो गया है मानिक की मड़ई का वातावरण।

"अपने रंगू सिंह एक बड़े पते की बात कहते हैं। कहते हैं कि इंद्रधनुष में जो एक रंग नहीं है, वही असली रंग है इन सभी सालों का। सबके सब काले में रमे हुए हैं।"

"ठीक कहते हैं रंगू सिंह।" मानिक हँसा रंगू सिंह का जिक्र आने पर। एक से एक पते की बात कहते हैं रंगू सिंह।

दरअसल कन्हैया सिंह, धनजी पांड़े और रंगू सिंह की तरह मानिक भी कुंवरपुर का ही मूल बाशिंदा है। शादी के बाद अपनी ससुराल भजमनपुर में रहने लगा। भजमनपुर टेढ़का पुल से सटा हुआ गांव है। सोचा था, भजमनपुर में रहकर बनिहारी-चरवाही से अलग कुछ फायदे का काम-धंधा शुरू कर सकेगा, सो यह चाय-नाश्ते की दुकान खोल ली थी।

कुंवरपुर में लोग चिढ़ते थे उसकी ऊटपटांग सपने देखने की आदत पर। उन्हें विश्वास लायक आदमी नहीं लगता था वह। उनका कहना था—'जब गीता में लिखिए दिए हैं भगवान कि अपना-अपना करम किए जाना चाहिए चुपचाप तो कभी गाजियाबाद भागता है, कभी दोकान खोलता है...इसका मतलब कि मन में मैल है साला कमकर के बच्चे के...'

जाते हुए अप्रैल की उदास दोपहर धूप की पनीली लहरें बना रही थी टूटी-फूटी सड़क पर। सड़क के दूसरे किनारे खड़े आम के इकलौते पेड़ के नीचे जमा हुए गरीबी रेखा के आसपासवाले अधनंगे लड़के बचे-खुचे टिकोरों को भी धूलिसात् कर देने की कोशिश में जुटे हुए थे। उनकी भैंसें भी उनकी तरफ से उतनी ही लापरवाह थीं, जितना उनका देश था। आराम से चरे जा रही थीं। लड़कों के फेंके ढेले कभी-कभी गिरते पीठ पर तो देख लेतीं मुंह उठाकर और फिर जुट जातीं चरने में।

"एक्को ढेला इधर आया न, तो जबलक रंग देंगे।" मानिक मड़ई के अंदर से

ही चिल्लाया—"चटनीओ-भर नहीं छोड़ेगा साला छुछुंदर का लेंड़ी सब।"

"चटनी खाने से दांत कोठ हो जाता है।" सड़क के उस तरफ से आया था यह बोल।

"तो तुम किसके लिए ले जा रहा है? दिदिया के लिए?"

"मैं पीसूं तू खाय फकीरा, तब मचे गहगड्ड फकीरा, तब मचे गहगड्ड..." वे गाना गाने लगे थे कमर को झटके दे-देकर।

"ईहि साला सब को देख लीजिए अब। कोई है सोचने वाला?"

"पैदा करने वाला सोच रहा है?"

"ऊ तो नहिंयै सोच रहा है..." कुछ और आया था मानिक के मुंह में पर गटक गया। लगा, बुरा मान जाएंगे कन्हैया सिंह।

"जानते हो, हिटलर क्या किया था? ऑडर दे दिया कि जो साले लकड़सूंघवा चाहे उदबिलार जइसा लगते हों देखने में, शादी नहीं कर सकते...पालने-पोसने का हूब नहीं हो तो बच्चा नहीं पैदा कर सकते...यही असली उपाय है।"

"हिटलर वाला?"

"नहीं तो कितना आदमी को नौकरी दोगे और अनाज बांटोगे?"

"लेनिन और माओ वाला ठीक नहीं है?"

"ठीक रहता तो ईहि हाल होता रूस का?"

"माने कि लाल भी फटेहाल ही है।" मानिक ने जानबूझकर कही यह बात।

कुंवरपुर के बड़ों की देह में आग लग जाती है लेनिन और माओ की तारीफ सुनकर। मानिक जानता है, नन्हकू सिंह की फैलाई आंच किस तरह दग्ध कर रही थी उन्हें। वह समय भी आएगा, जिस दिन वह खुलकर कह सकेगा अपने मन की बात; नन्हकू सिंह के पक्ष में ताल ठोंककर खड़ा हो सकेगा; पर अभी तो उसने बेपरवाह होने की मुद्रा ओढ़ रखने का ही फैसला किया है।

एक अजनबी आवाज ने ध्यान हटाया गांव की राजनीति से।

"टेढ़का पुल तो यही हुआ न?" पूछ रहा था मड़ई में झांकते हुए।

"उतरना कहां था आपको?" कन्हैया सिंह ने पूछा।

"टेढ़का पुल।"

"तो ठीके उतरे हैं।"

बतकही के इस अक्खड़ अंदाज ने थोड़ी असुविधा में डाल दिया था उस आदमी को। सोचने लगा, मड़ई में दाखिल होना ठीक रहेगा कि नहीं? बाहर सन्नाटा तप रहा था सुलगती धूप में। खेतों में नजर आते लोग घर जा चुके थे। आम के पेड़ के नीचे जमा लड़के भी नहीं थे अब वहां। उनकी भैंसें भी नहीं थीं।

"अरे महाराज, भीतर आ जाइए, भीतर। सांवर हो जाइएगा बाहर खड़े-खड़े।" कन्हैया सिंह ने समझा कि असमंजस में पड़ा हुआ था वह आदमी और खुलकर हँसे।

"सांवर बानी सांवर बानी, रामजी के संवारल बानी! नहीं सुने हैं आप?" मड़ई

में दाखिल होते हुए कहा उस आदमी ने और महसूस किया कि मड़ई सचमुच काफी आरामदेह थी।

"गोर बाड़ऽ गोर बाड़ऽ गूहवा के चोत बाड़ऽ! ई काहे छोड़ दिए?" लोकोक्ति को पूरा कर मानिक भी हँसा। पूछा, "भाईजी जवारिये लगते हैं?"

"एक तरह से जवारिये समझ लीजिए।" उस आदमी ने कहा।

"और दूसरी तरह से?" कन्हैया सिंह ने पूछा।

"दूसरी तरह से, खालिक खलक, खलक खालिक में।" उसने कहा।

मानिक की समझ में नहीं आया, सो अपने मसरफ की बात पूछ ली, "कुछ चलेगा?"

"ई नहीं कि एक प्लेट पियाजबड़ी रख दें सामने तो पूछ रहा है..." मानिक को डपटकर अजनबी की ओर मुखातिब हुए कन्हैया सिंह, "जाना कहां है भाईजी को?"

"यह इलाका भी बैकवर्ड का बैकवर्ड ही रह गया।" वह टाल गया कन्हैया सिंह का सवाल। मड़ई के बाहर फैले खेत निहारने लगा।

"आजकल बैकवर्डे का चलती है, ए सरकार।" अजीब-सा तो लगा था उसका अपने सवाल को टाल जाना, पर बुरा नहीं माना कन्हैया सिंह ने। बल्कि उन्हें मजा आया यह सोचकर कि बढ़िया घाघ से सामना हुआ था। देखें, क्या-क्या करतब दिखाता है!

"सब राजनेताओं के फैलाए भ्रम हैं।" उस आदमी ने प्याजबड़ी कुतरते हुए, आंखें मड़ई के छप्पर में बने गौरैया के घोंसले पर गड़ाए हुए कहा।

"एकदम ठीक कहा गया।" कन्हैया सिंह के कुछ बोलने के पहले हो बोल पड़ा मानिक। उसे अच्छी लगी थी उस आदमी की यह बात।

"फारवट-बैकवट, सब बेकार का हल्ला है, भाईजी। ग़ांव-गंवई में जिसको देखिए उसी का गांड़ फटा हुआ है।"

"इसी को चोन्हा चुआना कहते हैं, मानिक।" कन्हैया सिंह बोले।

"कुंवरपुर के बबुआन लोग का हाल इंद्रजी महाराज वाला हो गया है। एको बैकवट थोड़ा खुसहाल हो जाता है, तो सोचने लगते हैं, बैकवट सबका चलती हो गया।" इस बार बिना बोले नहीं रहा गया मानिक से।

"केतली-कराही मांजते-धोते ही तुमको बबुआन लोग का बुड़बकाही बुझाने लगा, क्या कहा जाएगा इसको? बैकवर्ड का चलती होना नहीं कहा जाएगा?"

"बाबूसाहेब का घर कुंवरपुर ही पड़ेगा क्या?" उस आदमी ने अकस्मात् हस्तक्षेप किया बातचीत में। शायद इस अचानक शुरू हो गई फारवर्ड-बैकवर्डवादी चर्चा को खत्म करने की गरज से।

कन्हैया सिंह थोड़ा उत्तेजित दिखने लगे थे।

"कुंवरपुर के बबुआन लोगों का जवाब नन्हकू सिंहवे दे सकता है।" नहीं चाहते हुए भी मानिक के मुंह से निकल ही गई मन की बात। पर बोलने के बाद मुस्कराने लगा।

"बोल लो, बोल लो, बचवा मानिक! लेकिन नन्हकू सिंह के गांड़ में खूंटा गड़ाएगा तो बहुत दुखाएगा तुम लोगों का भी।" कन्हैया सिंह ने कहा और तब याद आया उन्हें कि कुंवरपुर के बारे में जिज्ञासु था मड़ई में बैठा दूसरा आदमी।

"कुंवरपुर के बारे में कुछ पूछ रहे थे आप?" पूछा।

"हमको भी वहीं जाना था।" उस आदमी ने थोड़ी झिझक के साथ बताया।

मानिक और कन्हैया सिंह दोनों ही एकटक देखने लगे हैं उसका चेहरा—कुंवरपुर में किसके यहां जाना हो सकता है इस आदमी को?

"किसके यहां?" डरते-डरते पूछा कन्हैया सिंह ने। और मन में बैठी आशंका सही साबित हुई।

"नन्हकू सिंह के यहां।" उस आदमी ने बताया और प्याजबड़ी और चाय का पैसा देने के लिए कमीज की ऊपरी जेब टटोलने लगा।

"पार्टी का आदमी हैं?" मड़ई में व्याप गई असहज चुप्पी के माहौल को मानिक ने तोड़ा।

"कोई ठेठानेवाला नहीं है हो, ई छोकड़चोद सबको।" अचानक फनफनाए हुए-से उठे और झोला कंधे पर लटकाकर अपना पिछाड़ झाड़ने लगे कन्हैया सिंह, मानो उनके मड़ई के अंदर बैठे होने के कारण नहीं आ रही थी जो बस, उनके जाकर बाहर खड़ा होते ही चली आती।

मड़ई के बाहर आ गए हैं कन्हैया सिंह। बिक्रमगंज जाने का विचार छोड़ दिया है। गुनी ही निकल जाएंगे। बाजार का दिन है आज गुनी में। पूरी मंडली मिल जाएगी गांव की। बोलते-बतियाते गांव वापस हो जाएंगे। लेकिन ये साले नन्हकू सिंह के पाहुन अगर सोच रहे हैं कि उनके साथ चल चलेंगे गांव तो गलत सोच रहे हैं। कन्हैया सिंह नन्हकू सिंह के पाहुनों के साथ नहीं रख सकते कोई वास्ता।

"कुंवरपुर तो पैदल ही जाना होता होगा न?" अजनबी आदमी ने, जो सकपका-सा गया था कन्हैया सिंह का व्यवहार देखकर, मानिक से पूछा।

"एकदम ठीक कहा गया। एलेबन अप खड़ा करना है अपना-अपना और खरवा खोटत, पनीया पीअत चल देना है।" मानिक को हँसी आ गई है कन्हैया सिंह की उद्विग्नता देखकर।

"सनक गया क्या रे सरवा?" घूमकर उसे घुंची हुई आंखों से देखा कन्हैया सिंह ने और सड़क की ओर बढ़ गए।

"नन्हकू सिंह के नाम पर एकदम उखड़-से गए बाबूसाहेब?" मानिक से पूछा उस आदमी ने।

"फटा हुआ है डर के मारे।" मानिक फुसफुसाया सड़क की ओर निगाहें किए हुए, "कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है।"

"बहुत तनाव है गांव में; नहीं?"

"अभी तो कुछ भी नहीं है, लेकिन होगा। बस थोड़ा लक्क साथ देना चाहिए

नन्हकू सिंहवा का।'' मानिक ने कहा, ''समय तो बदलना ही न चाहिए, भाईजी।''

वह आदमी चुपचाप मुंह देखता रहा मानिक का, जो कुछ ही क्षणों पहले परम आत्मीय की तरह बोल-बतिया रहा था कन्हैया सिंह के साथ।

सड़क किनारे खड़े कन्हैया सिंह को बस दिख गई थी आती हुई। सड़क में बने गड्ढों पर कत्थक करती। और कन्हैया सिंह सोच ही रहे थे कि कुछ टेढ़-टाबुक बतकही किए तो हुमचकर देंगे एक तबड़ाक कंडक्टर राम को, कि बस के अगले गेट पर लगे रॉड से लटकते गोसांई पांड़े दिखाई दे गए। गले में चमड़े का बैग झूल रहा था।

''लपक लो कन्हइया भाई, टाइम फेल हो रहा है।'' कन्हैया सिंह पर नजर पड़ते ही चिल्लाए गोसांई पांड़े।

''ठेंगे से, हो रहा है तो।'' कन्हैया सिंह ने कहा, ''हमको लगा है हगवास। हो के आते हैं तो चलते हैं।''

''गरमीया में हो, गरमीया में, पिआ काहे के बोलवलऽ, गरमीया में...'' गेट के रॉड से लटकते हुए ही गाना शुरू कर दिया है गोसांई पांड़े ने।

''मन तो कर रहा है कि दू मुक्का धर दें नकबोलवा पर...'' बड़बड़ाते हुए बस के पायदान पर खड़े हो गए हैं कन्हैया सिंह, क्योंकि उससे आगे जाने का रास्ता नहीं दिखा।

''गेटवा पर काहे जाम किए हुए हैं भाई आप लोग?'' गोसांई पांड़े रॉड से लटके हुए ही चिल्लाए और एक झोंके की तरह कन्हैया सिंह के साथ-साथ दाखिल हो गए बस के अंदर।

''सनक गए हैं का जी?'' एक जनाना सवारी गुस्साई एकदम से धसोर दिए जाने पर—''पीछवा कहां जगह है कि चला जाए कोई?''

''ई बाबा, सही में बहुत नाजायज काम हो रहा है।'' सड़ी हुई गर्मी और गुनी के ईंट-भठ्ठे में काम करने वाली एक मजदूरनी की देह से आती तीखी गंध से परेशान एक अपेक्षाकृत साफ-सुथरी सवारी बोली।

''कुछ नाजायज नहीं हो रहा है, धर्मात्मा।'' गोसांई पांड़े भीड़ में बेचारी बनी एक पतोहुनुमा जनाना सवारी के पास पोजीशन लिए हुए जम गए हैं, ''अब बताइए कि यही बहिनजी बाहर घाम में खड़ा होकर 'हरेराम, सीताराम' जप रही थीं, इनको गुनी पहुंचाने के लिए बिल क्लिंटन का हेलिकॉप्टर आता?''

सवारियां हँस पड़ी हैं पसीने से तरबतर होने के बावजूद।

जनाना सवारी को अपने बारे में बतियाया जाना और गोसांई पांड़े के द्वारा खास-खास जगहों पर धकियाया जाना, दोनों ही अच्छा नहीं लग रहा, पर चलती बस से कौन कूद रहा था कि वही कूद जाए! और परेशान कौन नहीं था वहां?

''प्रौबलेम बांटने से न कम होता है।'' गोसांई पांड़े कह रहे हैं, ''हमारा कहनाम है कि सबके कपार में ढील पड़ा हुआ है, तो अपना-अपना कपार मत खुजलाए, एक-दूसरे के कपार का ढील हेर दे।''

सवारियों को यह वक्तव्य भी अच्छा लगा गोसांई पांड़े का।

"टिकटवो कट रहा है कि खाली गलचऊर हो रहा है।" ड्राइवर ने सामने की सड़क पर निगाहें जमाए हुए ही कहा और अपनी तमाम सावधानी के बावजूद गचकी में उछल पड़ी गाड़ी को संभालते हुए एक भद्दी गाली दे डाली उन सभी को, जो देश में सड़कें बनाने का काम करते थे।

"गलत बोले, बाबूसाहेब?" मुंह से बेसाख्ता एक भद्दी गाली निकल जाने की झेंप मिटाने के लिए अपनी मूंछों में मुस्कराहट पिरोए हुए कहा, "टाइम फेल हो जाने पर तो खिचखिच करते हैं लोग, लेकिन जब रोड बन रहा था, कुछ नहीं बोले। माधो बन गए माटी का।"

"सवाल है कि किससे बोले आदमी?" एक बोलक्कड़ सवारी ने लपक ली है ड्राइवर की बात और जोर-जोर से बोलने लगी है, मानो भाषण दे रही हो, "कोई सुनने वाला भी तो होना चाहिए! भगत सिंह ने जिन बहरों को सुनाने के लिए असेंबली में बम फेंका था, उससे भी बड़े बहरे हैं ये लोग। बोलते-बोलते थक जाइएगा आप और कोई असर नहीं होगा इनके ऊपर।"

"फिर भी पब्लिक तैयार हो जाए तो..." ड्राइवर ने ही चूंकि बात शुरू की थी, उसे लगा, कुछ कहना चाहिए और एक अधूरा वाक्य उछाल दिया, जो अभिप्राय में पूरा था।

"मुड़ीकटवा का डर है, ड्राइवर साहेब, मुड़ीकटवा का।" अचानक बहुत तैश में आ गई थी वह सवारी, "हर आदमी डरा हुआ है इस माहौल में। सहमा हुआ-सा जी रहा है। इतना आसान नहीं है बोलना जितना समझ रहे हैं आप।"

कन्हैया सिंह ने जांघ में चूंटी काटकर इशारा किया ड्राइवर को कि बेकार की बहस में मत उलझे। "मंधाता मिसिरवा है।" फुसफुसाकर बताया, "कमूनिस्ट का झांट बनते हैं साले।"

"मिसिरजी भी एकदम खून गरमा देने वाला बात करते हैं।" एक दूसरी सवारी बोल पड़ी थी तब तक।

"ड्राइवर साहब कह रहे हैं कि टाइम फेल होने पर खिचखिच करते हैं लोग और हम कहते हैं कि यही लोग यह क्यों नहीं सोचते कि देश चल रहा है टाइम पर? पचास साल में पहुंचना था जहां, पहुंचा?" एक सवाल उछालकर चुप हो गए मंधाता मिश्र और इंतजार करने लगे कि कोई कुछ बोले तो बोलें।

टिकट काटने से फुर्सत मिली तो गोसांई पांड़े का ध्यान गया बस में छिड़ी चर्चा की ओर। देखा कि मंधाता मिश्र का सवाल तैर रहा था बस की गंधाती हवा में और उसे थाम नहीं रहा था कोई। सोचा, हमी थाम लेते हैं। बोले, "जो साला सरकार बनाता है, वही कहता है, उसके पीछेवाला दस साल पीछे लेता गया देस को। इस तरह तो पचास साल पीछे ही न चला गया देस? आगे कहां गया?"

इस पर ठठाकर हँसे मंधाता मिश्र। बोले, "यही न सोचने की बात है।"

"जनरल नौलेज, देख रहे हैं कि बड़ा तगड़ा हो गया है, बाबा?" कन्हैया सिंह ने

बोनट पर रखे झोले पर ही गोसाई पांडे के लिए जगह बनाते हुए कहा, "बहुत तगड़ा-तगड़ा बोल छोड़ रहे हैं।"

"लेकिन तुम काहे माहुर जइसा मुंह बनाए हुए हो?"

"बिक्रमगंज जा रहे थे तो एकरा बहिन का...बसवे...और ऊपर से टेढ़का पुलवे पर एगो नया पाहुन भेंटा गया नन्हकूआ का।"

"अकेले था?" खैनी मलना बंदकर गोसांई पांड़े इंतजार करने लगे हैं कन्हैया सिंह के जवाब का।

"हम तो यही सोचकर दंग हैं कि इतना पूछनीहार कहां से पैदा हो जाता है ई साला बुद्धि के पैदल का।"

"तुम न सोचते हो, भाई, कि पैदल है बुद्धि का।"

"आप क्या सोचते हैं?"

"लाली देखन मैं गई, जित देखूं तित लाल।" पता नहीं क्या सोचकर सवारियों को कबीर का एक दोहा सुना दिया गोसांई पांड़े ने।

"ई कवन बात पर, देवता?" पूछा गया।

"प्राइवेट बात है।" कन्हैया सिंह के कंधे पर एक हल्की-सी दोस्ताना चपत जमाई और 'बिक्रमगंज-बिक्रमगंज' की टेर लगाते हुए उठ खड़े हुए गोसांई पांड़े।

बस गुनी पहुंच गई थी।

एक मामूली-सी चट्टी से गुनी के एक छोटे-मोटे शहरनुमा कस्बे का रूप ले लेने की प्रक्रिया हूबहू वैसी ही है, जैसी देश के अधिकांश कस्बों के विस्तार में देखी गई है। गुनी इसलिए नहीं बढ़ रहा था क्योंकि उद्योग-धंधे या कल-कारखाने आ गए थे। उसके विकास और विस्तार का कारण थे सरकारी दफ्तर, जो सरकार द्वारा अपना आकार कम करने की घोषणाओं के बीच ही खुलते जा रहे थे। चूंकि दफ्तर खुल रहे थे, बड़ी संख्या में बाहर से अधिकारी और कर्मचारी आ रहे थे, पैसा आ रहा था, दलाल पैदा हो रहे थे, नई-नई चीजों की मांग पैदा हो रही थी।

गुनी के विधायक रामप्रवेश चौधरी कहते कि 'परसासन' को आम आदमी के करीब लाने का काम हो रहा था उनके राज्य में।

हिंदी के कठिन शब्दों को बोलने में लड़खड़ाती है रामप्रवेश चौधरी की जबान। पर जब से सुना है ढेर सारे सांसदों को ऐसी ही लड़खड़ाती हुई जुबान में संसद में दहाड़ते हुए, शर्माना छोड़ दिया है इस बात को लेकर। शर्माना क्या है! जैसी सिखाई गई, बोल रहे हैं। शर्माना हो तो साले कांग्रेसी शर्माएं कि कैसी हिंदी सिखा रहे थे उनके चलाए स्कूल। मनोरमा मिसिर शरमाएं। या कोई भी क्यों शरमाए इस फालतू मुद्दे को लेकर। जो एकदम संस्कृतनिष्ठ, तत्सम शब्दावली वाली हिंदी बोल सकते हैं, कौन-सी ऐसी मूली उखाड़ ले रहे थे जो रामप्रवेश चौधरी नहीं उखाड़ सकते!

उनके अनुज अवधेश चौधरी तो यह भाषा-संबंधी चर्चा शुरू होते ही दहाड़ उठते

गुनी बस-स्टैंड पर—"मनोरमा मिसिर चाहे बूटन राय जइसा बहुबाचकी नहीं हैं, भइया। उनकी तरह जलेबी पार-पारकर जनता को भरमाने का काम नहीं करेंगे। हमेशा आम जनता के भले के लिए सोचने का काम करेंगे।"

गुनी के रंगबाजों और खद्दरधारियों में दो तरह का फैशन जोरों पर है इन दिनों। आंखें मूंदकर, ठहर-ठहरकर बोलने का और 'काम करना' को हर क्रिया की क्रिया बनाकर बोलने का। मसलन रामप्रवेश चौधरी को कुछ कहना होता किसी सार्वजनिक मौके पर, तो कहते, "समाज में...दलितों-वंचितों को...सताने का काम जो लोग...कर रहे हैं...हमारा दल...उनसे संघर्ष करने का काम कर रहा है..."

गुनी में कुंवरपुर के रंगबाज श्रीभगवान सिंह तक ने बातचीत की यही शैली अपना ली थी। अब वे रात को आठ बजेवाला समाचार सुन लेने का काम कर लेने के बाद ही खाने का और उसके बाद सोने का काम करते।

रंगू सिंह ने 'काम करने' के इस महोद्घोष की एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या कर डाली एक दिन। कहा, "अकर्मण्य लोगों के मन में बैठी हुई इस ग्रंथि का परिणाम है यह कि दरअसल वे कुछ भी नहीं कर पा रहे थे।"

साप्ताहिक बाजार के दिन ऐसी सारगर्भित व्याख्याओं की झड़ी-सी लग जाती है कुंवरपुर सदन में। कुंवरपुर से गुनी पहुंची जमात सौदा-सुलुफ के लिए निकलने के पहले एक बार आएगी ही आएगी कुंवरपुर सदन में। सामने लगे चापाकल से हाथ मुंह धोएगी, बरामदे में रखी चौकियों पर सुस्ताएगी, चौकी पर रखा पुराना अखबार पढ़ेगी और यदि मनमाफिक दो-चार लोग मिल गए तो देश-दुनिया की चर्चा में डूब जाएगी।

फिर सौदा-सुलुफ ले लेने के बाद, गांव की ओर प्रस्थान करने के पहले, जमा होगी। कहेगी, "हरिदुआर बाबा ई एगो बहुत बढ़िया काम कर दिए कोठारी बनवाकर।"

सुधाकर पांड़े गद्गद् हो जाएंगे सुनकर और ऐसे पैंतरे देने लगेंगे मानो कुंवरपुर सदन गुनी में बिजनेस चालू करने की संभावनाओं के मद्देनजर नहीं, वरन् कुंवरपुर के बैठकबाजों की सुविधा के लिए ही बनवाया गया था।

"हम तो, भइयवा, साफ बात जानते हैं कि गांव है, सो गढ़ है।" सुधाकर पांड़े कहते हैं, "कोई एक करोड़ भी दे दे हमको और कहे कि डॉलर सिंहवा जैसे रहता है, रहिए, तो नहीं रहेंगे।"

"सही बात।" कहा जाता है उपस्थित लोगों की ओर से, "ग्राम-देवता से मुंह फेर लिए जो साले, ऊ डॉलर सिंह हों चाहे पौंड पांड़े, संस-बरकत नहीं होगा उनको।"

दरअसल व्यापार की संभावनाओं को देखते हुए जवार के बहुत-से धनी-मानी लोगों ने जमीन खरीदना और घर बनाना शुरू कर दिया था गुनी में। रामप्रवेश चौधरी और बूटन राय ने दो कटरे बनवा दिए थे। नारद सिंह ने एक दोमंजिला लॉज बनवा दिया था। हरिद्वार पांड़े ने भी उसी समय चार छोटी-छोटी कोठरियां खड़ी करने का फैसला किया था। एक में सीमेंट और छड़ की दुकान खोल ली थी और दो किराये पर लगा दी थीं, जिनमें से एक में किताब-कॉपियों की दुकान चल रही थी और दूसरी

में कपड़े की। चौथी कोठरी खाली रह गई थी।

कन्हैया सिंह पहुंचे तो देखा, कोठरी सूनी पड़ी थी।

"का बिलायती, पार्टी नहीं दिखाई दे रहा?" सुधाकर पांड़े की छड़-सीमेंट की दुकान में काम करने वाले लड़के से पूछा।

"आज पिछुआ गए आप!" लड़का हँसा।

हँसी में व्यंग्य था उसके। हरिद्वार पांड़े की ही तरह वह भी चिढ़ता था कोठरी में अड्डा जमाने वालों से। मौका मिलते ही कोई कटखना बोल छोड़ता।

"किधर निकले हैं लोग?" कन्हैया सिंह ने पूछा।

"किधर जाएंगे...मियां का दउड़ महजिद तक।" बोला।

"सोझ बात करना नहीं आता?" चापाकल पर कुल्ला करते हुए उसे डपटा कन्हैया सिंह ने और बाजार की ओर बढ़ गए।

"कोई आए तो बोल देना, चंद्रमा साह के यहां गए हैं।"

"जिम्मा लिए हैं आपका?" बुदबुदाया।

"क्या बोले?"

"बोल देंगे कि चंद्रमा साह के यहां गए हैं।" दांत निपोर दिए उसने।

चंद्रमा साह के चेहरे पर मुस्कुराहट बिछ जाती है कुंवरपुर की जमात देखकर। चंद्रमा साह मानते हैं कि बाजार के फैलते चले जाने के बावजूद कुंवरपुरवालों ने नहीं छोड़ी थी उनकी दुकान। काम में लगे हुए ही एक सलाम उछाल देते कुंवरपुर के बाबाजीओं और बबुआनों की ओर। और परंपरा की लीद ढोते इस टट्टू की यही हरकत लूट लेती थी कुंवरपुरवालों को।

"जानते हैं, असली चीज क्या है संसार में?" चंद्रमा साह कहा करते तराजू के बोझ से कांखते हुए, "असली चीज है आदमी का संस्कार और ब्योहार। संस्कार और ब्योहार ठीक रहे तो धंधा कौन रोक देगा जी मइयाचोद?"

चंद्रमा साह के संस्कार से उछला यह 'मइयाचोद' होता उन लोगों के लिए जो डकैतियां करवाते थे उनके यहां और उनके बेटे को उठा ले गए थे पिछले साल। लेकिन अब उनसे भी कोई खास शिकायत नहीं रह गई थी उन्हें। चंद्रमा साह समझ गए थे कि सिस्टम का ही पार्ट थे ये डकैतियां और अपहरण। फायदा नहीं था हनुमान-चालीसा पढ़ने और गंडा-ताबीज बांधने का। सीधे मन से, बुलावा आते ही चढ़ा आना था चढ़ावा।

"राजनीति को खून चाहिए, ए सरकार। गृह मंत्री बोले हैं कि पुष्टई के जोगाड़ का कोई दूसरा तरीका लिखा ही नहीं हुआ है संविधान में।" वितृष्णापूर्वक कहते चंद्रमा साह सहानुभूति जताने वालों से, "हमी लोग न रकटे हुए थे कि आजादी चाहिए, लोकतंत्र चाहिए। चुभलाइए लोकतंत्र का लकठो।"

और उनके ग्राहकों को छू जाती उनकी वेदना। लोग महसूस करते कि नाइंसाफी हो रही थी चंद्रमा साह के साथ।

"कह रहा था, गुनी छोड़ने को कह रहा है लइकवा सब।" बगल में खड़े पल्टू

सिंह से कहा सुदर्शन पांड़े ने। मन भारी हो रहा था; सोचा, हल्का होगा कुछ बोल-बांट लेने से।

लेकिन पल्टू सिंह को दिख गए थे दुकान की ओर चले आ रहे कन्हैया सिंह और एक अलग तरह की वेदना हावी हो गई थी उनकी चेतना पर।

"गांठ में कुछ पइसा हो गया है न, वही परेशान किए हुए है साहजीउवा को।" कन्हैया सिंह पर निगाहें गड़ाए हुए ही कहा उन्होंने, "नहीं तो अपने बाबू लोग हैं कि बी.ए., एम.ए. करके भी दुआर अगोर रहे हैं।"

"छबीला-ओबिला सिंह आज नहीं आए हैं, बाबा?" बाप को नजरअंदाज करते हुए सुदर्शन पांड़े से पूछा कन्हैया सिंह ने।

"तुम्हारे ही जइसा अनघा टाइम नहीं है न छबीला सिंह के पास कि काम-धाम छोड़कर बउवाते चलें।" जवाब पल्टू सिंह ने दिया।

"इसी बात पर न कहा जाता है, बाबा, कि बुढ़ारी में सनक जाता है हिंदू का पुरनिया।" कन्हैया सिंह ने फिर सुदर्शन पांड़े से कहा और वापस लौटने को हुए।

"हो गया लाइसेंस का रिनिउअल?" पल्टू सिंह तड़पे।

"तीन घंटा इंतजार किए टेढ़का पुल पर। तीन घंटा। बसवे नहीं आई तो कैसे चले जाते? उड़ जाते?"

"जिसको जाना होता है, चला जाता है।" पल्टू सिंह ने कहा।

"दिमाग मत खराब कीजिए हमारा।" चीखते-चीखते रह गए कन्हैया सिंह।

"सही बात बोल रहे हैं तो दिमाग खराब कर रहे हैं?" एक आहत पिता की मुद्रा ओढ़ ली है पल्टू सिंह ने।

कन्हैया सिंह बिना कोई जवाब दिए चल पड़े हैं।

"ई तो भुलाइये गए होंगे कि छोटका बचवा के लिए भूख लगने वाला दवाई लेना था?" पल्टू सिंह चीखे।

"हां, भुला गए।" जवाब में कन्हैया सिंह भी चीखे।

"कवन बात पर बीच बाजार नरेटा फार रहे हैं हो, पल्टू चाचा?" बाप-बेटे का एक-दूसरे पर चीखना सुनकर बगल की पान की गुमटी पर चूना लेने के लिए खड़े कलक्टर सिंह चले आए हैं कन्हैया सिंह के पास।

"आदत से लाचार हैं।" कन्हैया सिंह ने कहा।

"यही हाले है इन लोगों का।" कलक्टर सिंह ने खैनी फांकते हुए कहा, "नाक में धुआं किए रहते हैं हमारे बुढ़ऊ भी।"

"हम कहते हैं कि काम नहीं होता देह से तो आराम कीजिए अब। जान देने से राजा हो जाता है कोई? पर काम करना भी नहीं छोड़ेंगे और सरापेंगे भी। हद्द हाल है!"

"हद्द नहीं, बेहद्द हाल है।" कलक्टर सिंह को मजा आने लगा है इस बतकही में, "जानते हो आज का कह रहे थे हमारे बुढ़ऊ? बोले कि बाजार हम जाएंगे आज, तुम घर अगोरो। तो हम बोले कि अब ईहे बाकी है कि नाती-पोता का बियाह हो तो

कहिए कि मौरी हम पहनेंगे।'' कहकर जोर से हँसे कलक्टर सिंह।

कन्हैया सिंह का मन नहीं किया उनके साथ हँसने का। गांव में कोई नहीं चाहता कि बेटे के रूप में उसका नाम कलक्टर सिंह, चूड़ामन पांड़े और शिवजी पांड़े के साथ लिया जाए।

''छबीला-ओबिला सिंह कहां रह गए आज?'' उनसे पिंड छुड़ाने की गरज से कहा।

''पंचाइती करने गए हैं ब्लॉक पर।'' कलक्टर सिंह ने बताया, ''सिरीभगवनवा अझुरा गया था किसी स्टाफ से। सिरीकमलवा बुलाने आया था सबको।''

''कहियो धंगा जाते साले पसंद से, बस काम ठीक हो जाता।'' अनायास ही निकल गया कन्हैया सिंह के मुंह से। और अफसोस हो रहा है अब कि क्या जरूरत थी कलक्टर सिंह के सामने बोलने की।

''श्रीभगवान भाई रंगबाजी के फेर में ही अपना काम हरज कर लेते हैं।'' रफू करने की कोशिश की, ''सरकारी स्टाफ सब से झगरा-गेंगा करने से इमेज खराब हो जाता है आदमी का।''

''ए भाई, अब हमारे-तुम्हारे दिमाग से नहीं न सोचेंगे सिरीभगवान सिंह।'' कलक्टर सिंह ने एक ऐसी बात कह दी कि पता ही नहीं चले कि सहमत थे कि असहमत थे कन्हैया सिंह की राय से।

कलक्टर सिंह दरअसल घोषित तौर पर श्रीभगवान सिंह खेमे के आदमी थे कुंवरपुर में और कन्हैया सिंह का खेमा दूसरा था। भीतर ही भीतर झुलस रहे हैं कन्हैया सिंह कि दिन ही खराब है आज का। एक के बाद एक गलत लोगों से ही मुठभेड़ होती जा रही है। पता नहीं, और क्या-क्या होना लिखा है आज!

पर त्रासदी का अंत हो गया है उनकी। वापस कुंवरपुर सदन पहुंचने तक उनका अपना खेमा वापस आ चुका था ब्लॉक से।

''सुने कि बिक्रमगंज गए हो?'' गमछे का मुरेठा बनाकर सिर के नीचे रखकर चौकी पर लेटे हुए थे रंगू सिंह।

''इसी अदतवा पर न कहता है नन्हकू सिंहवा कि दस-दस आदमी का जगहा छेंके हुए है एक-एक आदमी?'' कन्हैया सिंह टेढ़का पुल पर उस आदमी से हुई मुलाकात का जिक्र छेड़ने की भूमिका बनाने में जुटे।

''हम खाली एक आदमी का जगहा छेंके हुए हैं। जो झूठ बोले सो बेटीयाचोद।'' रंगू सिंह ने कहा।

''नन्हकू सिंह को काहे जपने लगे आते ही आते?'' छबीला सिंह ने पूछा।

''वही बताने के लिए न छटपटाए हुए थे और आप लोग पहुंचे हुए थे श्रीभगवान सिंह का झगड़ा फरियाने।''

''नाम मत लो सुरूतवाला का।'' मुंह को गमछा से तोपे हुए ही कहा रंगू सिंह ने।

कोठारी में बैठे हुए सभी लोगों के कान खड़े हो गए थे कन्हैया सिंह की लाई खबर सुनने के लिए।

"टेढ़का पुलवा पर मनिकवा के यहां बैठे हुए थे कि एगो एकदम अनजान आदमी भेंटा गया।" कन्हैया सिंह ने बताना शुरू किया, "पहले तो बहुत चाल चला कि कुछ बताना नहीं पड़े अपने बारे में, पर हमको तो देखते ही शक हो गया था कि हो न हो, कुछ बात है। घेर-बांधकर पूछिये लिए कि कहां जाना है? बोला, कुंवरपुर। किसके यहां? इधर-उधर देखने लगा पूछने पर। फिर घेरे तो बताया, नन्हकू सिंह के यहां।"

कन्हैया सिंह चुप हो गए इतना बताकर और चेहरे पढ़ने लगे कोठरी में मौजूद लोगों के।

"आ कहां से रहा था?" छबीला सिंह ने पूछा।

"बड़का धुरखेली था, भाई? बात बदल दे कुछ पूछने पर।"

"लंड़बक आदमी को कुछ पूछने भी नहीं न आता।" रंगू सिंह खिसियाए कन्हैया सिंह का जवाब सुनकर।

"अकेले था?"

"था तो अकेले, पर क्या पता..."

"क्या पता का मतलब?"

"आपको मतलब समझाने का ठेका लिए हुए हैं हम?" कन्हैया सिंह को गुस्सा आ गया है रंगू सिंह के बार-बार तिजुक पड़ने पर।

"इसका जाल दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है, मास्साब।" छबीला सिंह ने दिनेश सिंह से कहा, जो एक कोने में चुपचाप बैठे ध्यान से सुन रहे थे कन्हैया सिंह की खबर, "सच पूछिए तो हमको तो बहुत डर लगने लगा है इस आदमी से।"

"बात ही डरने की है।" दिनेश सिंह ने समर्थन किया छबीला सिंह की राय का।

"सबसे खराब बात है कि ऐसा जहर फैला रहा है आपसी द्वेष का कि गांव रह ही नहीं जाएगा पहले वाला गांव।"

"सब लल्लन सिंह के परिवार के चलते हो रहा है। अपने तो जाएंगे ही तेलहंडा में, सबको संग ले जाएंगे भोसड़ीवाले।" सत्यनारायण सिंह भड़के और उठकर चहलकदमी करने लगे कमरे में। पैर धो रखे थे, सो 'चोइं-चोइं' की आवाज निकल रही थी प्लास्टिक के जूते से।

"ए मरदे, कपरे पर लेफ्ट-राइट काहे करने लगे तुम? एगो नया कपरबथी करवाओगे।" रंगू सिंह बिफर उठे हैं।

दरअसल कोठरी में मौजूद ऐसा कोई भी नहीं है, जो चिंतित नहीं दिखाई दे रहा। घड़ी की ओर निगाह चली गई है दिनेश सिंह की। छः बज गए हैं। चलना ठीक रहेगा। सात बज ही जाएगा पहुंचते-पहुंचते। जानबूझकर देर करना ठीक नहीं है। पता नहीं, किस-किस को जुटा रखा है हरामजादे ने! क्या उल्टा-सीधा सोच रहा है!

दिनेश सिंह के घड़ी देखते ही सभी उठ खड़े हुए हैं। मानो वे भी वही सोच रहे थे, जो दिनेश सिंह के दिमाग में चल रहा था।

दिनेश सिंह को अजीब लगता है सोचकर कि जब सारे संसार में शीराजा बिखर

रहा था साम्यवाद का, कुंवरपुर में फैल रही थी लाल चेतना। रूस रसातल में चला गया था, चीन ने दोगली विचारधारा अपना लेने में ही भलाई समझी थी, रूस के चेले नाक रगड़ रहे थे नाटो के पैरों पर, सत्तर के तथाकथित समाजवादी अर्थशास्त्रियों का चेहरा नहीं पहचान पा रहा था नब्बे के दशक का आईना। लोग मानने लगे थे कि समाजवाद ने अगर कुछ बढ़ाया था तो बस आबादी, सेक्स से ज्यादा उत्तेजना सेनसेक्स में समा गई थी, खुलेआम कहा जा रहा था कि प्राकृतिक न्याय के नियम केवल खुला और भरा हुआ बाजार ही लागू कर सकता था, भारतीय सुंदरियां और अर्थव्यवस्था दोनों ही अपने को खोलकर सफलता का सेहरा ढूंढ़ रही थीं, और नन्हकू सिंह कह रहे थे कि लाल क्रांति का परचम लहराएंगे कुंवरपुर में!

एक भरोसा-सा रहता है दिनेश सिंह के मन में कि जैसा हो रहा था माहौल, उसमें बहुत आगे जाने की गुंजाइश नहीं थी नन्हकू-फन्हकू सिंह के लिए, पर कभी-कभी डर भी लगने लगता था उसके प्रभाव का बढ़ता दायरा देखकर।

"देखिए, समय कैसे बदल जाता है देखते ही देखते।" सत्यनारायण सिंह को हँसी आ गई है समय के बदलाव के बारे में सोचकर, "लइकाई में डीहवाले राकस से डर लगता था केवल और अब गउंवे में राकस पैदा हो गए। श्रीभगवान सिंह और नन्हकू सिंह से भी डर लगने लगा।"

डीह दिख गया था, सो डीहवाले राकस की याद आ गई थी सत्यनारायण सिंह को।

रात को डीह की दिशा में करीब आती और दूर चली जाती रोशनियों को देखकर मानते रहे हैं कुंवरपुरवाले कि डीह की बगल वाली बथान में जलाई गई कुछ लाशें राक्षस बनकर रात को नाचती हैं डीह पर। इसलिए गांव लौटने में अबेर हो जाने पर डीहवाले रास्ते का उपयोग नहीं करते हैं लोग। लंबा पड़ता है, पर डीह को छोड़ते हुए हरिद्वार पांड़े के पोखरेवाला रास्ता पकड़ लेते हैं।

"जिस दिन श्रीभगवान सिंह से डर लगने लगा, उसी दिन तय हो गया कि नन्हकू सिंह जैसों से भी डरना होगा एक दिन।" पता नहीं, किन खयालों में डूबे थे छबीला सिंह कि अचानक बोल पड़े चुपचाप चलते हुए।

नोनिया टोले के छोटे-छोटे घरों में जलते दीये दिखाई देने लगे थे पोखरे के पास पहुंचने तक। बिना कुछ बोले उन रोशनियों की दिशा में बढ़ती चली गई मंडली।

नोनिया टोले के कुत्ते जानते थे, बाजार से लौट रहे थे लोग। थूथुन ऊपर उठाकर हवा में सूंध लेते एक बार और सो जाते अपने लोगों की गंध से आश्वस्त होकर।

2

अपने घर में सुलभ शौचालय की तर्ज पर एक पाखानाघर बनवाया है नन्हकू सिंह ने। उनके दुआर पर इसी उपलक्ष में जमा हुए हैं उनके दोस्त और शागिर्द।

"देखे?" नन्हकू सिंह ने दुआर पर बने पक्के चबूतरे पर चुक्का-मुक्का बैठे एक

भिखमंगे-से आदमी से पूछा। उसका नाम चरित्तर दुसाध था।

"देखे, मलिकान।" एंड़ी से चोटी तक मुग्ध होने के-से भाव में बताया चरित्तर दुसाध ने और देह का बोझ लगातार कई बार एक पैर से दूसरे पर बदल डाला इस आनंदातिरेक में।

"समझ जाओ न भइवा कि जिस दिन नन्हकू सिंह के हाथ में आ गई कुछ कर गुजरने की ताकत, गांव क्या, जवार की कोई जनाना झाड़ा फिरने खुरहेंटी में नहीं जाएगी। खुले बधार में झाड़ा फिरने वाली औरतों के इस निरर्थक लोकतंत्र से आजाद कर देंगे पूरे जवार को।" हवा में अपनी बाई भुजा लहराई नन्हकू सिंह ने और हांफते हुए बैल की तरह कांपते हुए दुआर के ऊपर जमा हुए बादलों के सफेद और स्याह गल्लों को देखने लगे। मानो आसमान से भी कह रहे हों, 'तुम भी सुन लो, मियां आसमान!'

"आज जो हुआ है, उसको भी, रामआसरे से, कम बड़ा काम नहीं समझा जाना चाहिए।" दुआर पर जमा लोगों को मुखर अनुमोदन की प्रत्याशा में देखते हुए रामगिरिही राम ने कहा, "हरिदुआर मालिक के यहां कई-कई लोग हाकिम हो गए, तब तक ई चीज नहीं बना था।"

"ए सरकार, ई मरे-मैदान खातिर है?" चरित्तर दुसाध को अभी तक नहीं हो पाया है पूरा विश्वास कि झक्क-झक्क सफेद संगमरमर के उस कटोरे का इस्तेमाल टट्टी-पेशाब करने के काम में होना था। इतना साफ तो गांव में किसी के घर में स्टील का कटोरा तक नहीं हो!

नन्हकू सिंह को अच्छा लगता है लोगों का ऐसे निरीह प्रश्न पूछना, भोली टिप्पणियां करना। और बल आ जाता है छाती में।

"बस भइवा, खाली धीरज रखना तुम लोग, डगमगाना नहीं। तुम्हारे घर में भी यही चीज बनवाकर दम लेंगे हम।"

क्या सचमुच! दालान में एक चौकी पर चुपचाप बैठे दयाशंकर पांड़े नन्हकू सिंह का चेहरा देखते रह जाते हैं ऐसे मौकों पर। झूठ भी बोलता है जवान तो सुनाई नहीं देता किसी को। रेज टोलावालों के चेहरों पर भी उसी के चेहरे पर चमकता उछाह चुहचुहाने लगता है, उनका सकपकाया हुआ आत्म-विश्वास गर्दन सीधी करने लगता है।

"आप कुछ नहीं बोल रहे, दया बाबा?"

"क्या बोलें!" दयाशंकर अकचका-से गए हैं अपनी ओर हठात् उछाल दिए गए सवाल से।

"बाबा कंबल ओढ़कर घीव पीने वाले जीव है।" सिपाही बोला और दुआर पर मौजूद सभी हँस पड़े।

"एकदम सीधका बाबा पर चले गए हैं।" रामगिरिही ने आदरपूर्वक कहा, ताकि दयाशंकर पांड़े बुरा न मान जाएं हँसी-मजाक का।

रामगिरिही को अच्छा नहीं लगता है नए लड़कों का बड़ों से बराबरी दिखाने का दंभ। बड़बोलापन ही ले डूबेगा एक दिन। रामगिरिही का कहनाम है कि भगवान चाहेंगे

तो बदलेगा ही समय, लेकिन छोट-बड़, ऊंच-नीच का विचार बिसरा देने में भलाई नह
है। नए लड़के नहीं देते ध्यान। रामगिरिही को लगता है, जरूरत से बहुत का
सोच-विचार करते हैं नए लड़के।

"यह देश हजार साल तक गुलाम क्यों रहा, इस पर कभी ठीक से सोचे हैं, दया बाबा?" अब अपनी नैसर्गिक लय में आ गए हैं नन्हकू सिंह, *"क्योंकि इस देश में* आत्म-सम्मान का भाव नहीं रहा। जिस साले देश की औरतें खुले बधार में झाड़ा फिरने जाएंगी, उस देश में भला आत्म-सम्मान का भाव रहेगा?"

मन में आया दयाशंकर के कि कहें, अंगरेजों की बात अलग थी, पर अरबों, तुर्कों और मुगलों ने ही कहां बनवाए थे सैप्टिक पाखानाघर कि आधी दुनिया को जीत लिया था, पर नहीं कहा। किसी भी तरह अपनी बेसिर-पैर की भी बात सही साबित करने की आदत है नन्हकू सिंह की। तर्क कमजोर पड़ने लगेंगे तो आवाज ऊंची हो जाएगी, मुठ्ठियां हवा में लहराने लगेंगी, बोलते-बोलते गाज भर जाएगी मुंह में।

"अपनी अस्सी प्रतिशत आबादी के आत्म-सम्मान के अधिकार को तो इस देश ने मान्यता ही नहीं दी।"

माहौल के मूड के लायक एक बात कही और सुनकर खुश हो गए नन्हकू सिंह—"देखिए, कितनी बड़ी बात कह दी दया बबवा ने और ई साला सिपहीया कहता है कि कुछ बोलते ही नहीं हैं बाबा।"

"ए भाई, कोई संगमरमर लगा दे चाहे जवाहिरात, हमारा तो एकरी बहिन का, उतरबे नहीं करता है बिना बधार में गए।" चिलम का गुल बनाते चिरई क्रमकर टपक पड़े अचानक और जोर का ठहाका लगाया, "एकरी बहिन का..."

चरित्तर दुसाध के मन में भी यही उधेड़बुन चल रही थी, सो वह भी ठठाकर हँसे चिरई के साथ—"ईहो ठीके बोले चिरई भाई।"

"सब आदत का बात है।" जगन्नाथ ने देख लिया था कि नन्हकू सिंह का मूड खराब हो गया था चिरई के अवांछित हस्तक्षेप के कारण। चर्चा गंभीर मोड़ पर पहुंच रही थी कि हँसी-मजाक सूझा था चिरई को।

"आदत तो अइसा चीज है कि साला बैल तक को पता चल जाता है कि दंवरी में कहां खड़ा होना है।" जगनाथ ने कहा।

"जब तक आदत नहीं पड़े, तब तक तो बड़ा जुलूम है रे भाई!" कहने को कह दिया, पर चिरई ने भी महसूस किया कि एक अवांछित मोड़ आ गया था बातचीत में। हँसी गले में ही रोक ली।

"भैंस के आगे बीन बजाओ, भैंस खड़ी पगुराय।" नन्हकू सिंह ने आसमान को देखते हुए कहा।

दालान के दूरवाले कोने में बैठी दमयंती को भी गुस्सा आ रहा है चिरई के ऊपर। कितनी अच्छी तो चर्चा चल रही थी कि...उसका मन कर रहा है जानने का कि आखिर क्या कहने वाले थे नन्हकू सिंह दयाशंकर के कहे पर। लेकिन माहौल बदल गया है।

चिलम की लपलपाती लौ में चमकने-बुझने लगे हैं चेहरे।

"चलेगा?" दयाशंकर को साथ लिए हुए उसी की ओर आ गए हैं नन्हकू सिंह और लाड़-भरी आंखों से देखने लगे हैं उसे—"लक्ष्मीबाई!"

दमयंती पहले डर जाती थी नन्हकू सिंह की तपती आंखों से। अब अभ्यस्त हो गई है उनका सामना करने की।

"आप कुछ कह रहे थे न दया बाबा की बात पर?" आंखें उन लाड़-भरी आंखों में डालकर पूछा।

"तुम्हारे दया बाबा तो एक से एक बात सुना रहे हैं आजकल।" नन्हकू सिंह बिल्कुल ही बाहर आ गए हैं गंभीर विमर्श के मूड से—"कह रहे हैं कि राजपूताने और बभनटोल में हड़कंप मचा हुआ है कि कल देश का कोई प्रकांड कामरेड आया था हमारे यहां—क्रांति की घुट्टी पिलाने!"

"गुनी बाजार में जबर्दस्त चर्चा थी इस बात की।" हां में हां मिलाई दयाशंकर ने।

"ए महाराज, सुनाइए न, क्या बतिया रहा था सब।" खिलखिलाते हुए दयाशंकर की मरियल पीठ पर एक जोरदार धौल जमा दी है नन्हकू सिंह ने।

दमयंती को हँसी आ गई है दयाशंकर के चिहुंक पड़ने पर—"इसीलिए कोई नहीं बैठता इनके पास।"

"समझता है साला बम्मड़ सब कि महान हस्तियां दौरे पर आ रही हैं।" नन्हकू सिंह झूम रहे हैं इस खुशी में कि कल गुनी बाजार मे उन्हीं की चर्चा होती रही।

"लेकिन आया कौन था?" समझ नहीं पा रही दमयंती कि किसके बारे में हो रही थी बात।

"चारू एन लाई।" कहा नन्हकू सिंह ने और ठहाका लगाते हुए हाथ धौल जमाने को फैलाया, पर दयाशंकर की पीठ नहीं थी वहां। दयाशंकर पहले ही दूर खिसक गए थे। नन्हकू सिंह के हँसते हुए चेहरे को देख रहे थे। किसके ऊपर हँसता है! कभी-कभी लगता है दयाशंकर को कि नन्हकू सिंह अपने दुआर पर जमा लोगों के ऊपर ही हँसता है—साले, चपंडूक...सामाजिक बराबरी का लकठो खाने चले हैं।

दमयंती के चेहरे पर एक अबूझ-सी, महीन मुस्कुराहट है। पता नहीं, क्या सोच रही है!

कभी-कभी जानने को बेचैन हो जाते हैं दयाशंकर कि वहां उतने मर्दों के बीच अकेले बैठी क्या सोचती है दमयंती!

कभी-कभी दयाशंकर को बहुत अटपटी और बेमानी-सी लगने लगती है नन्हकू सिंह के दुआर पर अपनी उपस्थिति। और दमयंती और भी बढ़ा देती है उनके इस अहसास को। उसकी आंखों की चमकीली टिमटिमाहट में जैसे नंगी होने लगती है दयाशंकर की आस्थाहीनता।

कभी-कभी उनका मन करता है दमयंती से पूछने का कि क्या सचमुच उसे इतना ही अगाध विश्वास था नन्हकू सिंह की बातों पर?

"इनको डर कैसे नहीं लगता, बाबा?" नन्हकू सिंह दूसरी ओर बढ़ गए तो पूछा दमयंती ने और विचार-श्रृंखला टूटी दयाशंकर की।

"किसको?" अपने भीतर ईर्ष्या का पनपना भी महसूस करते हैं दयाशंकर। दमयंती का नन्हकू के प्रति श्रद्धा-प्रदर्शन हमेशा अच्छा ही नहीं लगता उनको, यह बात केवल वही जानते थे। न दमयंती जानती थी, न कोई और।

"ऐसे हँसते रहते हैं जैसे मक्खी-मच्छर हों दुश्मन।" श्रद्धा के पवित्र पानी में ही थोड़ा और गहरे उतर गई थी वह।

"लीडर बन जाने पर आदमी को छुपाना भी पड़ता है मन का भाव।" दयाशंकर ने कहा।

"डर नहीं छुपता है!" दमयंती बोली।

दयाशंकर नहीं बोले कुछ। तिलमिलाकर रह गए।

"हमारे हटते ही कौन बतकही चालू हो जाता है, बाबा?" आवाज लड़खड़ा रही है नन्हकू सिंह की। नशा हावी होने लगा है चेतना पर।

इंकलाब हमेशा परछाईं की तरह लगा रहता है उनके साथ। पत्थर की तरह सख्त, भावशून्य चेहरा—रोबोट की तरह नन्हकू सिंह के पीछे-पीछे चलता हुआ।

"भगतिन है आपकी।"

"दिखाती है साली ऊपर से।"

"हम तो सोचे कि आपका सलाम तो जरूर सुनती होगी।"

"नहीं सुने, नहीं सुनना है तो।" नशे की धुंध से गंभीर चिंतन के बोल फूट पड़े हैं, "नन्हकू सिंह किसी धोखे में रहने वाले जीव नहीं हैं। समझे कि नहीं, बाबा? खूब बढ़िया से जानते हैं कि नन्हकू सिंह के पास नन्हकू सिंह के भले के लिए नहीं आता कोई भी। अपना-अपना फायदा देखकर ही आते हैं लोग। गलत बोल रहे हैं तो टोकिएगा..."

"आपका-उनका फायदा जुड़ा हुआ है एक-दूसरे से।" दयाशंकर बोले।

"ऐसा है, तो ठीक है।" नन्हकू सिंह ने कहा।

दयाशंकर ने इशारा किया इंकलाब को कि अंदर ले जाए नन्हकू सिंह को।

"कैसे तो साला, रोज ढेर चढ़ा लेते हैं।" नन्हकू सिंह ने मान लिया है कि उन्हें जरूरत है इंकलाब के सहारे की।

"बहुत अच्छा करते हैं।" नन्हकू सिंहबो की महीन आवाज आई है घर के अंदर से।

"जानते हैं, बाबा? हिसाब से पीना चाहिए, हम भी मानते हैं, लेकिन हमारा एक्सपीरियेंस कहता है कि जो साला केवल हिसाब से ही करता है सारे काम, वह कुछ नहीं करता जिंदगी में।" नन्हकू सिंह ने भीतर जाने के पहले कहा।

दयाशंकर ने देखा, दालान में लटकती लालटेन की मद्धिम पड़ती पीली रोशनी में वे अकेले रह गए थे वहां और अनायास ही झुरझुरी-सी महसूस की अपने अकेले रह जाने पर। लंबे-लंबे डग भरते चल पड़े वहां से।

"लालटेन दिखा दें, बाबा?" पीछे से आवाज दी इंकलाब ने, पर कोई जवाब नहीं मिला तो लालटेन लेकर वह छत पर बने अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

दमयंती को कभी भी भरोसे का आदमी नहीं लगे दयाशंकर। जिन दिनों वह बहुत कम समझती थी जनवाद की अतिवामपंथी मुहिम के मायने, उन दिनों भी उसे दयाशंकर को अपने खेमे में देखकर कोई खुशी न होती। उसे लगता, वहां, उन लोगों के बीच भटककर आ गए थे दयाशंकर, किसी खुशफहमी के कारण, जिसका अहसास होते ही अलग हो जाने वाले थे। दयाशंकर उसे हमेशा सशंकित और कुछ थाहते हुए-से लगते। लेकिन नन्हकू सिंह को कहती भी तो क्या कहती! नन्हकू सिंह तो उन्हें खुद ही 'कामरेड' के बजाए 'कमरेड' कहते, पर सटाए रहते।

"एगो तुमको छोड़कर सब कोई अपना-अपना गोटी फीट करने में लगा हुआ है। तुम्हीं को बुखार चढ़ा हुआ है समाज बदलने का।" अनजानाजी कहते।

अनजानाजी को रत्ती-भर भी विश्वास नहीं था कि दुनिया में एक भी सच्चा और निःस्वार्थ आदमी था कभी या है कहीं भी।

"नन्हकू सिंह?" दमयंती पूछती।

"हुंह! नन्हकू सिंह!" इतनी जोरदार 'हुंह!' के साथ कहते अनजानाजी कि पूरी देह हिल जाती उनकी और हाथ कुर्ते की छाती पर बनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालने के लिए बढ जाते। कुछ और कहने के पहले आराम से सिगरेट जलाते अनजानाजी, सिगरेट को लालसा-भरी आंखों से देखते, रामगिरिही की ओर बढ़ाते एक सिगरेट, एक जोरदार कश लेते और खी-खी करते हुए हँसने लगते।

"ई नेतागिरी का लाइन है, नेतागिरी का! समझी? इतना जल्दी नहीं बुझाएगा कि कौन क्या है?" वह हँसते हुए ही कहते।

दमयंती बहुत जल्दी ही जान गई थी कि क्या थे अनजानाजी। दुःख उसे इस बात का था कि पूरा कुंवरपुर तो क्या, अनजानाजी के बारे में उसकी राय से चमटोली में ही सहमत नहीं थे ढेर सारे लोग।

"आप लोग तो देखबे किए हैं, चाचा कि इस लाइफ में कितना संघर्ष करने का काम किए हैं हम...याद आता है तो रोआं गनगना जाता है देह का...निरालाजी जो लिखे हैं कि देखकर भी उस आंख से किसी ने नहीं देखा, जो मार खा रोई नहीं, उससे भी बदतर हाल था न जी...लेकिन संघर्ष किया गया...हार नहीं मानी गई...हिंदी साहित्य में एम.ए. का डिग्री लेकर दिखा दिए...सो भी गुड सेकंड क्लास में! और आप लोग देखिए रहे हैं, फटफटिया क्या, जीप पर चल रहे हैं आप लोग के आसिरवाद से..."

चमटोली का मन करने लगता उनके संघर्ष की कहानी सुनने का; सुनकर वाह-वाह कर उठने का। खेल बात है बासी भात और दू फांका घुघनी के लिए घिघियाने से इस मुकाम पर पहुंच जाना कि साले अच्छों-अच्छों को 'नवो नवटिका आठो हरनाम' करने के बावजूद फटफटिया में तेल भरवाने का पैसा नहीं जुटे और जीप पर साहेब

जैसा गोड़ पर गोड़ चढ़ाकर घूमता है जवान!

"ई सारे बकबानर लोग भी तुमसे सिक्छा लें, तब न काम और आगे बढ़े, भाई! इहां तो करमकोढ़ीया लोग को कितबीये-कॉपीया काटता है... ।" सिबचन राम उदीयमान पीढ़ी को धिक्कारने लगते।

"पहले सयनका लोग तो समझ लें बात।" अनजानाजी के सिगरेट का पैकेट बतकही में मौजूद लोगों का चक्कर लगा आता—"हमारा सिद्धांत एकदम स्पष्ट है। बाबा अंबेडकर और हमारे महानु पुरखों ने लड़-भिड़कर जो अधिकार हम लोगों के लिए जुटाए हैं, उनका उपयोग करने का काम किया जाए, ऊपर उठने का प्रयास किया जाए। रैला-रैली में कुछ नहीं रखा है। ढोरू-मंगरू की बात कोई नहीं सुनता। पहले असर पैदा करना होगा आवाज में।"

"हइये है।"

"लेकिन करे तो क्या करे आदमी! जिन सालों को आदत लग गई हो दलितई की, उनका क्या कर सकता है कोई भी?" अनजानाजी को क्रोध आ जाता, "अरे भाई, ऊपर उठने का मन हो तभी तो कांख में हाथ लगाकर उठाने का भी काम करेगा कोई!"

"ओमपरकसवो एगो जगहे का बात करता है।" अनजानाजी की दी हुई सिगरेट पीकर रामगिरिही कहते।

"दलाल है।" दमयंती बोली थी।

"गरीब का बच्चा है, अपना फयदा देखता है। रुपये-पइसे से ही न आदमी बड़ा होता है।" रामगिरिही बोले।

"नारद सिंह और श्रीभगवान सिंह के साथ खी-खी खी-खी करता है। यही तो है बड़ा आदमी!"

"माने कि हम ई नहीं कह रहे कि दोस नहीं है कोई... ।" रामगिरिही को लगने लगा बीच बहस में कि बात ठीक ही कह रही थी दमयंती और बहस छोड़ दी।

और ठीक इसी बिंदु पर बहस में शामिल हो गई थी रामगिरिहीबो, "इसी अदतीया के चलते तुम गांव छोड़वाओगे हमारा...ई रांड़ी का तो जो होगा, सो होइबे करेगा...सब रैला-रैली करना भुला जाएगा..."

"एगो छूंछी दे दिया फुटपाथ पर से खरीदकर, बस उसी के तरफ से बोलने लगी?" दमयंती को गुस्सा आ गया था।

"तो बताओ न, तुम्हारा भतार कौन झबिया गढ़वा दिया है तुम्हारे लिए? नट्टिन जइसा नरेटा फारती चलती है।"

"दलाल-फलाल का बात मत किया करो हमारे सामने।"

"डर लगा है का तुमसे?...ई मत समझना कि ई मउगा चुप लगा जाता है तो हमको भी चुप करा दोगी...आग लगा देंगे बूरी में..."

"ओह!" दमयंती के दोनों हाथ उठ गए हैं अपने कान बंद करने के लिए।

"क्या हुआ?" वसुधा चौंककर देखने लगी है उसे।

"ऐसे ही।" लजा गई है दमयंती।

"ऐसे ही का मतलब?"

"इतनी खराब-खराब गालियां देती है माई...वही सोचने लगे थे..."

"डरती होगी बेचारी।"

"किस बात से?"

"बेटी समाज उलटने-पुलटने की तान छेड़ती चलेगी तो डरेगी नहीं?"

"अब और क्या खराब होगा इससे कि डरना है?"

"तो समझाओ लोगों को।"

"तुमको भी बकवास ही लगता है यह सब, नहीं वसुधा?" चलते-चलते महसूस करती है दमयंती कि वसुधा का मन नहीं लगता ऐसी चर्चा में।

"तुम भी बात करती हो..." थोड़ा झेंप-सी गई है वसुधा। वह सचमुच बोर होने लगती है नन्हकू सिंह की राजनीति की चर्चा से। दमयंती ने एकदम ठीक-ठीक पढ़ लिया था उसके मनोभावों को।

"सवाल है कि जो गढ्ढे में गिरा हुआ हो, बाहर निकलने का प्रयास नहीं करेगा तो क्या करेगा?" दमयंती ने वसुधा से कम, अपने-आपसे ज्यादा कहा।

वसुधा ने सुना। खिन्न है दमयंती।

"जिस-तिस की राय ही तुम क्यों जानना चाहती हो अपने या अपने काम के बारे में? कोई क्या जानता है कि बताएगा?"

"लेकिन बुरा कहने वालों की कमी है आसपास?"

"यह तो स्वार्थ की लड़ाई है न, दमयंती। व्यक्ति नहीं, समूह के स्वार्थ की ही सही। कोई चुपचाप कैसे मान लेगा हार? भले ही एक सही हो, दूसरा गलत।"

दमयंती उलझ-सी जाती है वसुधा की बातें सुनकर। इतने निस्संग, उचटे हुए अंदाज में बोलती है वसुधा मानो दो परस्पर विरोधी सामाजिक-आर्थिक समूहों के बीच का एक महान् संघर्ष नहीं है यह, वरन् वैसी ही लड़ाइयों में से एक लड़ाई हो, जो विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग गुटों के बीच चलती ही रहती हैं।

दिनेश सिंह उन्हें दूर से ही देखते रहते हैं स्कूल जाते और स्कूल से आते हुए। पता नहीं, क्या बतियाती हैं पूरे रास्ते! दिनेश सिंह का मन ललक उठता है जानने को कि किस बात पर हँस-मुस्करा पड़ती हैं दोनों। उन्होंने कई बार सोचा है, साइकिल से उतरकर उन्हीं के साथ हो लें, लेकिन इस सोच को व्यवहार में बदलने की हिम्मत उनमें नहीं है।

'यह सोच सही भी नहीं है।' समझा लेते अपने उदास मन को।

"वसुधा को समझाइए, मास्साब! रामगिरिहीया की बेटीया का रास्ता ठीक नहीं है। उसी की संगबहिनी बनी हुई है।" देवता पांड़ेबो अनुनय करतीं।

देवता पांड़ेबो नहीं जानतीं, कैसे पक्के इरादोंवाली लड़की है वसुधा। दिनेश सिंह जानते हैं। एक अलग प्रकार का ओज है उसके व्यक्तित्व में। अगाध आत्म-विश्वास

का ओज। दिनेश सिंह ने अपनी जिंदगी में कोई दूसरा ऐसा व्यक्तित्व नहीं देखा, जो अपने-आपसे इतना करीबी परिचय रखता हो। वसुधा को न कोई गलतफहमी थी किसी के बारे में, न खुशफहमी।

"दमयंती में कैसी संभावनाएं दिखाई देती हैं तुमको?" एक दिन पूछा था उससे।

"कम से कम अस्वीकार का साहस तो उसमें है न, मास्साब! यही कम बड़ी बात है? बाकी लोग, हम-आप तो कुछ भी सह लेने, स्वीकार कर लेने को तैयार हैं।"

"अंधा साहस भी अच्छी चीज नहीं है न।"

"वह अंधी तो नहीं, पर वर्णांध जरूर है। केवल लाल दिखाई देता है उसको।" वसुधा हँस पड़ी थी।

कितनी साफ-सुथरी, उजली हँसी होती है उसकी! न कोई डर, न अंतर्विरोध।

"दमयंती के साथ रहने में डर नहीं लगता तुमको?" देवता पांड़ेबो की बात कही दिनेश सिंह ने।

"लगता भी है तो डरना अच्छा नहीं लगता, मास्साब। जो डराना या दबाना चाह रहे हैं उसके जायज प्रतिरोध को, उन्हीं के दुराग्रहों के पक्ष में हो जाना अच्छा नहीं लगता।" वसुधा बोली, "हम लोग बिल्कुल ही उचित व्यवहार नहीं करते इन लोगों के साथ।"

"यह बात तो तुम्हारी ठीक है।" दिनेश सिंह कोई प्रति-तर्क नहीं जुटा सके थे।

"आपने तो सबको देखा है। गांव की कोई भी लड़की है इस लायक कि किसी भी मामले में दमयंती के बराबर खड़ी हो सके? तो दमयंती बुरी और डरावनी कैसे हो गई?"

मुस्कराकर रह गए थे दिनेश सिंह।

वसुधा को आदत पड़ गई है दमयंती के साथ अपनी दोस्ती के कारण घर-परिवार की प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं की।

मैट्रिक का रिजल्ट निकला था और पता चला था कि कुंवरपुर की वह अकेली लड़की नहीं थी, जो फर्स्ट डिवीजन में पास हुई थी। वसुधा ने तभी सोचा था पहली बार कि दमयंती के बारे में वह अपने तरीके से सोचेगी, न कि अपनी टोलेवालियों के तरीके से।

रिजल्ट सुनते ही मुंह बिचका दिया था मुन्नी ने—"सौ-सौ गो भतार है इसका, कोई बढ़वा दिया होगा नंबर।"

देवता पांड़ेबो की प्रतिक्रिया तो और भी नायाब थी। कहा, "ई सब का मन बढ़ानें में न लगा हुआ है नेतवा सब। बोला होगा, पांच नंबर के जगह दस नंबर उझील दो।"

एकदम से फट पड़ी थीं अपने पति के ऊपर—"देखिए जी, देख लीजिए रहन अपनी बबुई का। पूरे गांव में रामगिरिहीया की छौंड़ी मिली है संघतीया बनाने को।"

"कुछ बोली उसको तो देख लेना!" वसुधा चिढ़ गई।

"देख लीजिए, अब धिराने भी लगी हमको।"

"तुमको नहीं न कह रही है उसका संघतीया बनने को?" देवता पांड़े अनसाए।
देवता पांड़ेबो फिर भी बाज नहीं आईं दमयंती को अपमानित करने से। बोलीं, "देखो ए बाची, दोस्ती कर रही हो तो हम लोग का टोपरवा कम से कम छोड़वा देना।"
वसुधा असहाय-सी देखती रह गई थी अपनी माई का मुंह। जैसे माई नहीं, जातीय वितृष्णा की पूतना खड़ी हो उसके सामने।
उसके अपने टोलेवालियों ने उसका नाम रख दिया था—'बहिनजी।'
"भाई कहता है कि बड़का कामरेड हैं और बहन...अपने दयाशंकर भइया को क्यों नहीं समझाती हो पहले?" मुन्नी से वह उलझ गई थी एक दिन।
"गाय गरमाएगी तो सांड़ को रोक सकता है कोई?" मुन्नी ने कहा था और एक ही साथ विहँस पड़ी थीं उसकी टोलेवालियां।
कालिंजर के किले से भी अधिक दुर्जेय थी उनकी मूढ़ता। वसुधा ने महसूस किया था, दीवार से सिर टकराने जैसा था उनसे उलझना।
"चमकउवा कपड़ा पहन लेती है न सब, नो सोचती है कि एकदम हेलेन हो गए।" मुन्नी का जुमला था यह।
"और छूंछी जरूर पहनती हैं सब। सोचती हैं, नकबोल सुंदर लगने लगेगा..." सुनाकर कहती चमटोली की लड़कियों को।
और वे थीं भी तो बिल्कुल अलग-सी। एक अपना गोल था उनका। साथ-साथ निकलतीं स्कूल जाने के लिए। भेड़ों की रेवड़ की तरह टकराते हुए चलतीं एक-दूसरे से मानो डर हो कि कोई टोके न कि अपने हिस्से की जमीन और हवा से ज्यादा जमीन और हवा छेंक रही थीं। हँसी को छुपा लेने की कोशिश करते हुए हँसतीं। चेहरे पर 'मुझे मारना मत' की-सी बेचारगी का भाव होता, जो गलियों और चौराहों में पड़े बीमार कुत्तों के चेहरों पर होता है। उन्हें अच्छा नहीं लगता होगा कि कोई उन्हें दूसरों के सामने गाली दे या अपशब्द कहे, पर उनके घरवाले उन्हें कहीं भी, किसी के सामने गरियाने लगते। एक दिन अचानक स्कूल जाने वालियों में दिखाई देना बंद हो जाता उनमें से किसी का और किसी को जिज्ञासा नहीं होती, कहां गइ? जिसके बनिहार-चरवाह होते उसके बाप या भाई, बस उसे पता होता कि शादी हो गई थी उसकी।
दमयंती अलग हो गई थी उनसे। उनके साथ रहते हुए भी उनकी तरह नहीं चलती, उनकी तरह नहीं हँसती। मुंहफट थी। खट से जवाब दे देती। वसुधा की टोलेवालियों को गहरा मलाल था इस बात का कि सब कुछ देखते-सुनते हुए भी कुछ कर नहीं रहे थे उनके बाप और भाई। कभी-कभी वही सोचतीं कि मिल-जुलकर लसार दिया जाए रामगिरिहीया की बेटीया को, पर सोचती ही रह गईं। धीरे-धीरे उनके लिए बहुत खतरनाक चीज हो गई दमयंती।
वसुधा को सचमुच बहुत आश्चर्य हुआ था दमयंती को करीब से जानकर। पढ़ने-लिखने में ही ठीक-ठाक नहीं थी, संवेदनशील और चिंतनशील भी थी वह। कभी-कभी वसुधा महसूस करने की कोशिश करती उसकी पीड़ा—इस विडंबना की पीड़ा

कि संवेदनाओं का अकूत वैभव हो जिसके पास, लोग सोचें, वह महसूस ही नहीं करता दुःख या अपमान।

परिचय के शुरुआती दिनों में दिक्कत जरूर हुई थी दमयंती के भावुक बड़बोलेपन के कारण। जब वह रटी-रटाई बातें बोलती। नारों जैसी बातें। मुन्नी की ही तरह वह भी पकड़े रहती थी अपनी जातीय पहचान को। या शायद वसुधा ही आजाद नहीं हो पाई थी अपनी जातीय पहचान से! लेकिन समय बीतने के साथ सब कुछ सहज हो गया था उनके बीच।

"आपका भी रामगियान पांड़ेवाला ही हाल होगा, तब समझिएगा। माटी का माधो बनना निकल जाएगा।" देवता पांड़ेबो फुफकारतीं, "सब कोई अपने-अपने जात से मिलकर रहने में लगा हुआ है और ई दुसमन बनाने में लगी हुई है।"

"ई सब बात अनपढ़ आदमी को नहीं बुझाएगा।" देवता पांड़े हँसकर टाल देना चाहते।

"कुजात काढ़ देगा कल तो कर लीजिएगा बेटी का बियाह?" अपनी बातें बेअसर होता देख ऊंची से ऊंची आवाज में चीख पड़तीं देवता पांड़ेबो।

"वसुधा की माई को समझाना बहुत मुश्किल है, भउजी।" जब भी किसी गहरी उलझन में पड़ते हैं, सलाह के लिए रामज्ञान पांड़ेबो के पास चले आते हैं देवता पांड़े। उन्हें विश्वास है, कोई गलत सलाह नहीं दे सकतीं रामज्ञान पांड़ेबो।

रामज्ञान पांड़ेबो फैसला नहीं कर पातीं, क्या सलाह दें। दयाशंकर का भी तो वसुधा वाला ही हाल था।

"लइका-लइकी बड़ा हो जाए और अपना भला-बुरा नहीं समझे तो क्या कर सकता है कोई?" कहतीं।

"यह भी कहना तो, भउजी, ठीक नहीं है न कि अपना भला-बुरा नहीं सोच रहा।"

'हे प्रभु!' रामज्ञान पांड़ेबो के मन में प्रार्थना गूंज उठती है देवता पांड़े का विश्वास देखकर, 'धोखा मत देना बेचारे देवता पांड़े को। सीधा आदमी है।'

"वसुधा बहुत समझदार लड़की है।" कहतीं।

"वही न कहते हैं, भउजी, कि पहलेवाला जमाना अब नहीं रहा। पहले था कि बाप भी अनपढ़, बेटा-बेटी भी अनपढ़। तो होता था कि भाई, जो बूढ़-पुरनिया कहे, वही सही है। और अब है कि हम मैट्रिक फेल और बेटी फर्स्ट डिवीजन से पास। तो उसका भी सुनना पड़ेगा कि नहीं?"

"कौन नहीं सुन रहा है अपने जमलका का? अपने जमलका से बचकर कहां जाएगा कोई? चाहे विद्वान हो, चाहे बउराह।"

"ठीके बोल रही हैं।" देवता पांड़े थोड़ा अकचका-से गए हैं इस उग्र प्रतिक्रिया से।

पर वसुधा की कथनी या करनी से कुछ भी लेना-देना नहीं है इस प्रतिक्रिया को। ये मन के घाव हैं रामज्ञान पांड़ेबो के जो रह-रहकर चसकने लगते हैं। एक ऐसी औरत के मन के घाव, जिसका हर विश्वास टूटा।

देवता पांड़े चले गए हैं। रामज्ञान पांड़बो को अफसोस हो रहा है कड़वी बात बोल देने का। पर मन ही ऐसा अउंजाया रहता है कि बेकाबू हो जाता है। देवता पांड़े भी शौक से थोड़े ही कह रहे होंगे ये बातें। थक-गए होंगे समझा-बुझाकर। नहीं मानती होगी। दयाशंकर ही कहां सुनते हैं उनकी!

"तुम अपनी माई के कहे को लेकर सीरियस मत हो जाया करो, वसुधा।" दमयंती कहती, "हमको मालूम है, और कोई भी तुम्हारे जैसा नहीं है।"

"अनपढ़-अशिक्षित लोग हैं न।"

"पढ़े-लिखे तो और भी गए-गुजरे हैं। धर्मग्रंथ लिखने वाले तो पढ़े-लिखे ही रहे होंगे न?"

"गलत लिखा है?"

"तुम बोलो।"

"कामरेड नन्हकू क्या बोलते हैं?"

"जो भी बोलते हों, गलत बोलते हैं?"

"जो व्यवस्था बदलने की बात करता है, वह दूसरों को बेवकूफ और अपनों को अभागा लगता है।"

"यह किसका डायलग है?"

"अपना है कामरेड। सबकी किस्मत में सुनाने वाला नहीं होता।"

डीह पर लहराती सरसों की पीली कतारों के बीच दुनिया के महानतम चित्रकार के सबसे खूबसूरत चित्र-सी लगती हैं ये हँसती हुई लड़कियां—दिनेश सिंह अपनी आत्मा के निगूढ़तम कोने में सहेज लेना चाहते हैं यह चित्र।

"देखना बुचीया, अब सब तुम्हीं को संभालना है।" पक्षाघात के धावे के बाद खाट पकड़ ली थी रामज्ञान पांड़े ने तो सुना गए थे बड़े भाई।

चूड़ामन पांड़े खबर मिलने के बाद भी नहीं आए थे। गणपति पांड़े गाते चल रहे थे कि ऐसा उजड़ गए थे बेटियों की शादी में कि दूसरे की सुध लेने की सुध ही नहीं थी उनको। कहा, देह से जो हो सकता था, तैयार थे करने को। चूड़ामन पांड़े के नहीं आने पर फुसफुसाती हुई, गांव से कह रही थी चूड़ामनबो कि दयाशंकर हिस्सा जोत रहे थे मां-बाप का, सो यह उनका कर्तव्य था कि इलाज कराएं। और दयाशंकर चोखा जैसा मुंह लटकाए बैठ जाते इलाज का प्रसंग निकलने पर। कोई कुछ कड़वा बोल देता तो टेपुना भी चुआने लगते—"तुम्ही बोलो, माई, क्या करें?"

इस 'क्या करें' का आशय होता—विमला और मुन्नी की शादी की चिंता करें कि इलाज कराएं बाप का?

"दयवा को मना काहे नहीं करती, माई? पूरा गांव थूक रहा है।" सुशीला जब से आई है गांव, यही रट लगाए हुए है।

लेकिन थूक रहा है तो क्या करें रामज्ञान पांड़ेबो। दूध पी रहे हैं दयाशंकर कि

समझाना पड़े कि भौजाई से गलत संबंध रखने पर थूकेगा गांव? उन्हीं से पूछकर गणपति महादेव सिंह का दुआर अगोरे रहते हैं दिन-भर? चूड़ामन पांड़े उन्हीं से पूछकर बाप-माई का बैरी हो गए? गांव उन लोगों पर नहीं थूकता?

"अभीये नहीं कसोगी लगाम तो ढेरी हो जाएगा, माताराम।" सुशीला ने फिर यही चर्चा छेड़ दी है, "विभूति पंड़इया ऐसा-ऐसा गंदा अफवाह फैला रहा है कि..."

"तो तुम्हीं काहे नहीं मना करती हो?" सुशीला के एक साल के बच्चे को पैरों पर लिटाकर तेल चुपड़ती रामज्ञान पांड़ेबो झुंझला उठी हैं।

सुशीला मुंह फुलाकर साग सुधारने में जुट गई है। खटोले पर लेटे रामज्ञान पांड़े आंगन के आसमान में तैरते बादलों को देख रहे हैं टुकुर-टुकुर। ढेर सारी लार बहकर गालों पर ठहर गई है। मक्खियां मंडरा रही थीं।

"देख रही हो भछनी को? वहीं बैठी हुई है और हुलका नहीं रही है।" रामज्ञान पांड़ेबो को विमला के ऊपर गुस्सा आ गया, "जैसा बेटा, वैसी बेटी!"

"बेटी सबको अपने बेटों से मत मिलाओ, माताराम।" सुशीला पिता के गालों पर बही लार पोछकर हुलका आई है मक्खियां—"ई बेचारी तो अपने परेसान है। पता नहीं, क्या कर दिए हैं भगवान कि बस ही नहीं रहता अपने ऊपर।"

चुप्पी छा गई है आंगन में। छानी पर बैठा कौआ कांव-कांव किए जा रहा है। खपड़े का एक टुकड़ा लेकर उसे भगाने के लिए दौड़ी है चेतना।

"जो बाकी बच गया है, उसको भी फोड़ेगी।" रामज्ञान पांड़ेबो को चेतना के ऊपर गुस्सा आ गया है। बस एक ही कमरा बच गया है घर में, जो नहीं चूता। पता नहीं, अगली बरसात तक यह भी रह जाएगा कि नहीं काम लायक!

"तुम कुछ भी कहो, माताराम, दयासंकरा है एक नंबर का गैरजिम्मेदार।" सुशीला फिर उसी मुद्दे पर लौट आई है।

"माई से मत बोलो, दीदी। खराब लग जाएगा। सरवन कुमार समझती है अपने बबुआ को।" विमला बोली।

"घर का मरम्मत नहीं करवाता कि बाबूजी का इलाज करवाना है, बाबूजी का इलाज नहीं करवाता कि बिमला और मुन्नी का बियाह करना है। कुछ भी कहां कर रहा है?"

"कर कैसे नहीं रहा है? नन्हकूआ के यहां बैठकर चिलम सोख रहा है, बोतल ढरका रहा है, गोसंइयाबो के साथ रास रचा रहा है।" सुशीला के सवाल का जवाब विमला ने दे दिया है।

"एक चमेटा लगेगा मुंह में, बस बढ़-बढ़कर बोलना बंद हो जाएगा।" रामज्ञान पांड़ेबो की जलती हुई आंखें ठहर गई हैं विमला के उतेजना के कारण लाल हो गए चेहरे पर, "दयासंकरे का दोस है कि...कि..." मुंह में आई बात बड़ी मुश्किल से रोक पाई हैं बाहर आने से।

"सब उसी डोमड़े का दोस है।" चीखते हुए उछलकर खड़ी हो गई है विमला। उसकी पूरी देह कांप रही है मलेरिया के मरीज की तरह।

आंगन के एक कोने में तुलसी माई की गाछ के आगे न जाने कितने घंटों से हाथ जोड़कर बैठी गणपतिबो का ध्यान टूटा है। रामज्ञान पांड़े के मुंह से अजीब-सी गों...गों...की डरावनी आवाजें निकलने लगी हैं विमला की चीख सुनकर। गणपतिबो लपकती हुई आई है उनके सिरहाने के पास और हाथ फेरने लगी है उनके माथे पर। विमला पैर पटकती हुई अंदर चली गई है अपने कमरे में।

"इस पागल के सामने जरूरी था ई सब बात चलाना?" क्षण-भर को घबरा गई रामज्ञान पांड़ेबो की आंखें छलछला आई हैं।

"अपनी तुलसी माई से कुछ अच्छा मांगो न, भउजी!" सुशीला की आंखों में भी आंसू आ गए हैं।

"हम तो बूची...का कहें...।" अथाह दीनता का भाव पसर गया है गणपतिबो के सूखे हुए, सांवले चेहरे पर। चरम विवशता का। 'हमारी ही सुनता तो होता यह सब?' की पीड़ा का भाव।

"बाप रे! सधुआइन को मत उकसाओ अब।" चेतना बोल पड़ी है, "नहीं तो शुरू हुआ दुःख का गढ़पुराण तो..."

"ई भी कम बनेचर नहीं हुई है।" रामज्ञान पांड़ेबो ने डांटा चेतना को।

"लेकिन गोसंइयाब्बो वाली बतीया में कुछ न कुछ है, माई?" सुशीला घूम फिरकर उसी मुद्दे पर आ जाती है।

"बिभूति पंड़इया को तुम कम लांगा मत समझना, बूची।" सास को जवाब देते नहीं देखा तो गणपतिबो बोली, "अपने कुकरमी है तो सोचता है, सारा संसार वैसा ही है।"

"सधुआइन भी ठकुरसुहाती ही बतियाने लगीं।" सुशीला को यह सोचकर गुस्सा आ रहा है कि सच का सामना करने से बचना क्यों चाह रहे हैं घर के लोग। अगर ऐसा ही दूध का धोया है दयाशंकर तो जाता क्यों है विभूति पांड़े के आंगन में बजबजाते कीचड़ में लोटपोट होने? बड़का ज्ञानी है गोसांईबो कि ज्ञान सीखने जाता है उसके पास?

सुशीला के बच्चे ने रोना शुरू कर दिया है।

"अच्छा छोड़ो, जो करेगा जैसा, भरेगा एक दिन।" इस प्रसंग से बाहर निकलने का मौका मिल गया है रामज्ञान पांड़ेबो को।

रामज्ञान पांड़ेबो चाहती हैं, किसी तरह लोग भूल जाएं यह प्रसंग। और विभूति पांड़े ने ठान लिया है कि उनको बेपर्दा करवा दिया है दयाशंकर ने तो दयाशंकर को भी नहीं छोड़ेंगे बिना बेपर्दा किए हुए। लाठी लेकर हंकड़ने लगते हैं आंगन में; गोसांईबो को गरियाने लगते हैं दयाशंकर का नाम ले-लेकर।

"ई मत सोचना डंड़टूट राम कि डर जाएंगे तुम्हारे लाठी भांजने से।" गोसांईबो चीखती।

"बेटा से बेइज्जत करवाई हो न रे छीनरी...देखते हैं, कैसे पहुंच जाता है दयासंकरा।"

"तुम्हारे साथ सोने से तो अच्छा है, बांझ रहना।"

"श्री राम हरे, घनस्याम हरे..." दोनों कानों में उंगलियां ठूसे, भजन के बोल गुनगुनाने लगती हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"हमारे ऊपर केवल इसी बात का खीस है विभूति चाचा को कि बताए काहे गोसाईं भइया को कि कुछ गड़बड़ है।" दयाशंकर सफाई देते हैं टोलेवालों को, "लेकिन सवाल है कि जब एक औरत कह रही हो और वह भी अपने गोतिया-दयाद की, कि उसके साथ अन्याय हो रहा है, तो चुप रहेगा आदमी?"

"एगो तुम्हीं हो सबको देखने-सुनने वाले?"

"तुम भी, माई...ऐसा बात करती है कि...।" दयाशंकर चिढ़ जाते तो चुप हो जातीं रामज्ञान पांड़ेबो।

"हमको, मंझिलो, दयासंकर का रहन भी ठीक नहीं लग रहा।" श्रीराम पांड़ेबो अपने सबसे बड़ी होने के जोम में, जिस किसी पर भी कोई आरोप लगाना हो, सीधे लगातीं—"मन साफ है इसका तो कूद-कूदकर जाता काहे को है उसके आंगन में?"

"बूढ़ मानिए नहीं रहा है तो जवान मानेगा आपके मना करने से?" चिढ़ गई थीं रामज्ञान पांड़ेबो। अपने बबुआ-बबुई लोग को नहीं देखना है, दयाशंकर का रहन देखने चली हैं।

"विभूतिया को तो मुअली का मार मरवाएंगे गोसंइया से...नेटूआ का नाच किए हुए है आंगन में...।" लाठी ठक्-ठक् बजाते हुए दूसरे आंगन की ओर बढ़ गई थीं श्रीराम पांड़ेबो।

दूसरे आंगन में भी यही चर्चा चल रही होती कि क्या खेल चल रहा था विभूति पांड़े और दयाशंकर पांड़े के बीच।

अपने मित्रों और चेले-चपाटियों से छुपाते भी नहीं थे दयाशंकर कि कैसा खेल था यह।

"कोई होल्ड करने वाली गोली दीजिए, भइया।" डा. राघव पांड़े से बोले एक दिन।

"होल्ड करने वाली गोली?" आंखें चौड़ी कर पूछ राघव पांड़े ने।

"थका देती है एकदम से।"

"देखना, सारा वीर्य गोबर में ही न चला जाए।" राघव पांड़े ने चेताया होल्ड करने वाली गोली देते हुए।

दयाशंकर हीरो थे अपने चेले-चपाटियों की नजर में। अपने हीरो के सम्मान में वे विभूति पांड़े के प्रति सहानुभूति जताते, "कोई देख रहा हो कि उसके खूंटे पर की गाय को कोई दूसरा दूह रहा है तो हल्ला नहीं करेगा बेचारा?"

विभूति पांड़े कहते, "अपना बेटा ही बउड़म निकल गया साला, तो आन कोई को का दोस दें!"

"कोढ़ फूटेगा, कोढ़।" सुनकर दांत पीसने लगते श्रीराम पांड़े। उनके अग्रज।

"पहले ढींढ़ सम्हालिए अपना।" विभूति पांड़े फन काढ़ते।

"अरे मूढ़, सुना नहीं है—अनुज बधू भगिनी सुत नारी, इन्हहिं बिलोकत पातक भारी?"

"तो पांडु और धृतराष्ट्र कैसे पैदा हो गए?"

"तुम वेदव्यास है रे, पातकी?"

"वेदव्यास आदमी नहीं थे? ढेर धरम-करम मत सिखाया कीजिए हमको..." विभूति पांड़े जाकर दूर बैठ जाते श्रीराम पांड़े से—"यही हुए हैं धर्म सिखाने वाले।"

लेकिन कभी-कभी रात को मड़ई के बाहर खाट पर अकेले लेटे हुए विभूति पांड़े को डर भी लगने लगता श्रीराम पांड़े की भर्त्सनाओं के बारे में सोच-सोचकर। लगता, घृणा की लपटें उठ रही थीं चरनी पर खड़ी गाय की नीली आंखों से; आकाश के सारे तारे उन्हीं को देख रहे थे वितृष्णा से सुलगते हुए। उठकर बैठ जाते विभूति पांड़े। मड़ई के अंदर चले जाते। रुलाई भी आ जाती किसी-किसी रात। भयानक शोर मचाने लगता अकेलापन। सोचकर कांप जाते विभूति पांड़े कि उनके पहले ही चल बसे श्रीराम पांड़े तो वे अकेले बच जाएंगे दुआर पर। दूसरे सभी अपने-अपने घरों में सोए होंगे और वह अकेले...

"बड़का बाबूजी का बनिहरवा कह रहा था कि रात को रो रहे थे विभूति पांड़े।" गणपतिबो खबर लाई थी।

"भगवान करे कि और कलपे।" सुशीला बोली।

"दयाशंकर राम बच जाएंगे, ई मत सोचना।" विमला बोली।

सुशीला जाकर रामज्ञान पांड़ेबो के पास बैठ गई है सटकर। बस यूं ही। उसे लगा, माई के साथ होना चाहिए किसी को।

3

अन्हरी की दुकान के सामने मचिया पर बैठकर चमटोली के बच्चों का 'बूला-बूला' खेलना देख रहे हैं अनजानाजी। अब भला खुद उनके बच्चों को ही कहा जाए कि खेलो इनके साथ, तो मानेंगे बात!

"अभी बहुत टाइम लगेगा, बाबा।" बगल में बैठे धनजी पांड़े से बोले, "एगो सिगरेट पी लें?"

"वही निरालाजी वाला दुखवा है।" सिगरेट सुलगा ली तो बोले, "कविता का युग बदल गया, लेकिन इन लोगों का समय नहीं बदला।"

"बदल जाएगा। अब लग गए हो तुम लोग, तो बदल ही जाएगा।" धनजी पांड़े बोले।

वैसे धनजी पांड़े चमटोली के बच्चों के वर्तमान और भविष्य का लेखा-जोखा जानने के लिए नहीं पहुंचे हुए थे वहां। उनका नया कार्यपालक अभियंता हरिजन था और अनजानाजी के मार्फत वह उससे संबंधों को प्रगाढ़ बनाने की जुगत में लगे हुए थे।

*"धूप तेज थी, लेकिन फिर भी जाना था।
दुखिया को सुखिया के लिए तेल लाना था।*

"निरालाजी जो बोल गए, वही चल रहा है आज तक।" अनजानाजी लेकिन गंभीर चिंतन की अटारी से नीचे उतरने को तैयार ही नहीं हो रहे, "बदल जाए, तभी मानिए कि बदल गया।"

धनजी पांड़े को उकताहट होने लगी है इस 'दुखिया-सुखिया विमर्श' से। चमटोली के घरों से निकलते धुएं की गंध भी अजीब-सी लग रही है। पता नहीं, ऐसी क्यों होती है यह गंध! मूस-तूस पका रहे होंगे साले।

"हम तो सुने कि सुखिया लोगों का तेल चुआने में लगे हुए हो जी तुम!"

धनजी पांडे छेड़ने ही जा रहे थे अपने हरिजन अधिकारी से भेंट-मुलाकात की चर्चा कि पता नहीं कहां से नौलाख महतो टपक पड़े थे बीच में।

रोआं-रोआं दहक उठा है धनजी पांड़े का।

"देखिए, देखिए, देख लीजिए, अनजनवा को कइसे चढ़ा रहे हैं नौलाख भाई..." कछुए की घेंच जैसी बाहर निकल गई है अनजानाजी की घेंच और गिलगिला उठे हैं, "कि गिरे तो हाड़-गोड़ छितरा जाए।"

"ए भाई, जो सुने रहे हैं, वही न कह रहे हैं।" नौलाख महतो आकर उनके सामने खड़ा हो गए हैं, दोनों पैर फैलाकर, हाथ झुला-झुलाकर ताली बजाते हुए।

"हमारा फिलॉसफी, नौलाख भाई, यह नहीं है कि सुखिया को दुखिया बनाया जाए। ई नन्हकू सिंह का फिलॉसफी है कि अपने गांड़ में डंडा हो रखा है, तो दूसरे के में भी गाड़ दो और थपरी बजाओ कि समानता कायम हो गई। हमारा फिलॉसफी है कि सुखिया रहे सुख से, लेकिन जो अधर-सूखे, वेश-रूखे हैं, उनको भी बिसरा न दिया जाए। कहिए, गलत फिलॉसफी है?" अनजानाजी बोले।

"जो गलत कहे इस फिलॉसफी को, चूतिया ही न कहना पड़ेगा उसको?" नौलाख महतो बोले, "लेकिन यह भी सच है कि चूतिया को चूतिया कहने को तैयार नहीं हैं इस गांव के लोग। मानते हैं कि नहीं, बाबा?"

"ए भाई, ई राजनीति का चक्कर हमको नहीं बुझाता है।" धनजी पांड़े चलने को हुए। बाद में आएंगे बात करने अपनी समस्या के बारे में। नौलाख महतो के आगे नहीं करेंगे। बड़का जातिवादी हुआ है साला कोइरी का जामल। काम बिगाड़ने के फेर में पड़ जाएगा।

"इनको खाली मुद्रा कमाने का चक्कर बुझाता है।" उनके चले जाने के बाद अनजानाजी बुदबुदाए, "चाहते हैं कि फोकट में ही सब काम हो जाए।"

"बभना सब तो और भी अनेरिया पॉलटिक्स कर रहा है। ऊपर-ऊपर कहता है कि खिलाफ हैं नन्हकूआ के और दयासंकरा का मन बढ़ाए हुए है।" नौलाख महतो ने कहा, "ई साला सबका काम नहीं करना है फोकट में।"

"देखिए, क्या होता है!" नौलाख महतो से अब पिंड छुड़ाना चाहते हैं

अनजानाजी। उनके अगड़ा-पिछड़ावाद में मन नहीं रमता उनका। अनजानाजी की राजनीति मुठभेड़ की राजनीति नहीं है। "कुछ काम से चले थे?" पूछा।

"काम से तो चलबे किए थे, बाकी चमटोली को कम से कम अपने कब्जे में रखो, ओमप्रकाश भाई! देख रहे हैं कि नन्हकूये के पीछे लग गया है सबका सब।" चेतावनी उछालकर अपने बनिहार सिबचन के घर की ओर बढ़ गए हैं नौलाख महतो।

अनजानाजी खुद परेशान हैं कि कहीं अपने गांव में ही सफाचट न हो जाए उनका जनाधार। जगहँसाई हो जाएगी। जिसको मन करेगा, वही कह देगा कि अपने ही टोले में तो कोई पूछता नहीं है और टिकट मांगने चले हैं। लेकिन नौलाख महतो के साथ मिलकर उन्हें नहीं करना है यह काम। नौलाख महतो रामप्रवेश चौधरी की गोटी फिट करने में लगे हुए हैं। अनजानाजी अपने तरीके से करेंगे यह काम।

फुलझरी और पटाखे लेकर आए हैं चमटोली के बच्चों के लिए। दमयंती भी देखे कि वही हैं कि चमटोली में भी दीवाली मनेगी इस साल। नन्हकू सिंह का दुआर अगोरने से कुछ नहीं होगा।

चमटोली में असर भी हुआ है इस खबर का। लोग घूम-फिरकर देख आते हैं रामगिरिही के आगन में सूखते पटाखे। रामगिरिहीबो तो परेशान है चमटोली के बच्चों को हुलकाते-हुलकाते।

"ई जोगाड़ कौन इस्कीम का है हो?" सुकुमार पंडित इस आशा के वशीभूत पहुच जाते हैं ठकुरसुहाती बतियाने कि किसी न किसी इस्कीम के तहत उनके लिए गांजे की एक पुड़िया का इंतजाम भी किया होगा अनजानाजीउवा ने।

अनजानाजी को खुशी होती है इन लोगों के आने से। यह देखकर कि पैसा और पोजीशन मिल जाने पर कैसे पानी भरने चली जाती है मनु महाराज की वर्ण-व्यवस्था। बोले, "समझ जाइए कि कल्याण विभाग वाले पहुंच गए थे कहने कि दिवाली मनवाना भी कोई कार्यक्रम है भला। कहने लगे कि इस खर्चे को मंजूरी नही मिलेगी। हम बोले कि दिवाली मनाने के लिए दु ारा बच्चा बनेगा ई लइकवा सब? नियम नहीं है तो सुधार दीजिए नियम। समझ जाइए, बाबा, कि लकीर के फकीरवाला हिसाब-किताब है। कुछ नया कीजिए कि हेडेक चालू। हम तो परेशान हैं नौकरशाही से।"

"लेकिन कुछ उपाय हो जाएगा ।?"

"बोल के तो आ गए हैं कि अगले साल होली भी मनवाएंगे।"

"इससे तो संस्कृति को बल मिलता है। कल्याण विभाग वाला टेढ़-टाबुक काहे बतिया रहा है?"

"असली बात जानते हैं, क्या है? कुछ लोग परपरा-विरोध को ही नई परंपरा समझने लगे है। हमारे कुछ भाई कहते हैं, मनु बदमास थे। हम कहते हैं कि उस आदमी के दिमाग का लोहा मानो कि ऐसा सिस्टम बना दिया, जो हजार साल चला। इन लोगों से हजार सेकेंडवाला सिस्टम भी बन जाए तो चूतिया कहिएगा हमको।"

"सब सिस्टम अच्छा-बुरा होता है।"

"पिछली बार महिला जागरूकता वाले अभियान के सिलसिले में गए थे दिल्ली तो एगो नया हल्ला सुने कि दलित सबको बौद्ध बनाना है। हम बोले, बौद्ध नहीं, बुद्धू बना रहे हैं आप लोग।" अनजानाजी रौ में आ गए हैं, "आज तक अमेरिका में साले कालेराम लोग को बराबरी का दर्जा नहीं मिला। कोई कह रहा है कि मुसलमान बन जाओ?"

"कहेगा तो मिसाइल नहीं हूल देगा करेजवा में।" सुकुमार पंडित भी गंभीर हो गए हैं—"संस्कृति को चारों तरफ से खतरा है, भाई। और इसका कारण है हिंदू लोगों की कमजोरी। एटम बम हो, किसिम-किसिम का मिसाइल हो, ताकत हो कि बॉर्डर क्रॉस करके हल्ला बोल दिया जाए, तो देखो, कौन बोलता है।"

जब से बाबरी मस्जिद ढाहने के अभियान में शामिल होकर लौटे हैं सुकुमार पंडित, एक नई ठसक से बतियाते हैं धर्म और संस्कृति के बारे में मानो एक छोटे-से शिवाले के पिद्दी पुजारी नहीं, वरन् कोई आला दर्जे के धर्मरक्षक हों।

अनजानाजी औपचारिक तौर पर एक एनजीओ वर्कर होने के साथ ही साथ कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे, इसलिए उनके लिए कतई जरूरी नहीं था सुकुमार पंडित के सुर में सुर मिलाना, पर अनजानाजी की स्टाइल नहीं है यह कि फालतू की बहसों में उलझो, सो भी सुकुमार पंडित जैसे फटकचंद गिरधारियों के साथ।

"गांव की राजनीति गड़बड़ा रही है, महाराज। और बाबाजी लोग का रोल भी सही नहीं लग रहा हमको।" उन्होंने बात बदल दी।

"नन्हकू को तो ठोरा बाबा ठीक करेंगे। कह रहा था कि करहा-करही को जल ढारने से क्या होता है।" सुकुमार पंडित ने कहा।

"दमयंतीया को भी बिगाड़कर माटी कर दिया, नहीं तो मोमबत्ती का टुकड़ा थी ई लड़की। हम तो बोल दिए थे रामगिरिही काका को कि कम से कम बीडीओ-सीओ बनाकर दम लेंगे इसको। लेकिन सलाम सुने किसी का तब तो!"

"वशीकरण आजमाओ। नहीं तो मर्द आदमी जैसा एक दिन दे दो एक पटकनीया!" अनजानाजी के करीब सरक आए हैं सुकुमार पंडित, मानो कोई मंत्र दे रहे हों।

अनजानाजी का हाथ कुर्ते की बगलवाली जेब में गया तो दो पुड़ियों के साथ बाहर आया। बात ही ऐसी छेड़ दी थी सुकुमार पंडित ने कि काम एक पुड़िया से फरियाने वाला नहीं था।

"असल में जानते हैं, बाबा, हमारा स्वभावे नहीं है जोर-जबरदस्ती वाला।"

"करना पड़ता है कभी-कभी। हमीं लोग क्या किए? देखे कि नहीं सलाम सुन रहे हैं मौलवी लोग, तो ढाह दिए चढ़कर।"

"ढाह दें?"

"तो और क्या।"

"आप भी, बाबा, जो हैं न!" गिलगिलाते हुए हथेलियों को बहुत देर तक मलते रहे अनजानाजी मानो साक्षात् दमयंती आ गई हो हथेलियों में।

"अपना करतब करते जाना है, एक दिन दमयंतीया को भी बुझा ही जाएगा!

ऊपर वाला सब देखता है।''

"नहीं भी देख रहा हो तो अपना मन तो साफ है न।''

"देख कैसे नहीं रहा है।'' सुकुमार पंडित ने दुलार-भरे गुस्से से देखा अनजानाजी को, "नहीं देखता तो हीरो नं. वन बना देता ओमप्रकाश अनजाना को।''

"सही बात।'' सिबचन दुसाध खोजते चले आए थे अनजानाजी को।

"सिबचनजीउवा का भी उद्धार कर दो, हीरो।'' सुकुमार पंडित ने चलते-चलते यह अनुशंसा उछाल दी, "बड़ी सरधा से बेचारा पढ़ा-लिखा रहा है लइकवा को।''

अनजानाजी को ऐसी खुमारी में धकेल देती हैं ये बातें कि भूल ही जाते हैं क्षण-भर को कि वे और कुछ नहीं, निहायत ही बदजात आदमी हैं। उन्हें लगता, 'राम की शक्तिपूजा' में ध्यान-मग्न भूधर पर अंधकार उगलते आकाश के विरुद्ध अकेली खड़ी मशाल का जो विलक्षण बिंब रचा है निराला ने, उन्हीं के लिए रचा है।

"अपने तरफ से तो उठा नहीं रखे हैं हम, बाबा ..अब ओमपरगास भाई का मर्जी... ।'' सिबचन का रिरियाना शुरू हो गया है।

"तो ईहो सुनते जाइए, बाबा, कि स्पेसल कोचिंग का इंतजाम किए हैं परदीपवा के लिए। सिबचन भाई का काम सुतार हो गया ही समझिए।'' अनजानाजी ने थोड़ी दूर चले गए सुकुमार पंडित को सुनाकर कहा।

"भनजनवा का बतकही सुने हैं कि नहीं इधर?'' अपने टोले पहुंचे तो सुदर्शन पांड़े को सुनाया सुकुमार पंडित ने, "कह रहा है, सिबचना के लइकवा को स्पेसल कोचिंग दे रहा है।''

"इसका माने?'' सुदर्शन पाड़े उड़ीस झाड़ने में लगे हुए थे अपनी खाट से।

"माने कि कोंचिंग।'' भैंस को सानी गोतते उनके छोटे बेटे भंडारी ने बतलाया, "आराम से नहीं घुस रहा हो दिमाग में, इसीलिए कोचिंग।''

"मनबढ़ हो गया है साला गांव का रेज सब।'' सुदर्शन पांड़े बोले और हाथ का डंडा खटिये की ओरचन पर पटकने लगे।

"सिबचना बकलंड है। अनजनवा उसकी बेटीया के फेर मे पड़ा हुआ है—तेतरी के।'' भंडारी ने यह नया रहस्योद्‌घाटन किया।

"हम तो देखे चूचग उठा के चलते हुए, तबे सोवे कि हाल डावांडोरा है इसका।'' विभूति पांड़े बाहर आ गए हैं अपनी मड़ई के।

"शिव, शिव!'' कसैलापन फैल गया है श्रीराम पाड़े के चेहरे पर, "पातकी कहीं का। तुम लोगों के डर से लइकीया सब मकइया बनके चलने लगेगी रे डोमड़ा सब!''

"आन्हर कुक्कुर बतासे भूंके।'' विभृति पांड़े बुदबुदाए और बुदबुदाकर वापस मड़ई में चले गए।

"सिबचना भी, पुजारीजी, हमारे ही जइसा मुह के भरे गिरेगा एक दिन। ई बेटीफोरवा सुरेसवा को डाकधरी पढ़ाने में गूह सरक गया हमारा, और देखिए रहे हैं

फुलपैंट उतरिए नहीं रहा है चूतड़ पर से!" सुदर्शन पांड़े बोले, "सिबचनो कंहरेगा एक दिन हमारे ही जइसा।"

"ई सब ऊंच-नीच तो लगा ही रहता है जी जिंदगी में, हम ई कह रहे थे कि अनजनवा को बुझा रहा है ई बात कि टोला-महल्ला के लड़का-लड़की सबको हेल्प करें और एक ई अपने हीरो हैं श्रीभगवान सिंह, उनसे इतना भी नहीं संपर रहा कि कम से कम स्कूलवा का मरम्मत करवा दें।"

इसके पहले कि श्रीराम पांड़े फिर उबल पड़ें सुदर्शन पांड़े के कहे पर, सुकुमार पंडित ने चर्चा को गांव के बड़ों की व्यापक हित-चिंता की ओर मोड़ दिया।

"खूनचूसवा है जी साला।" सुकुमार पंडित समझ नहीं पाए, सुदर्शन पांड़े किससे नाराज थे—उड़ीस से कि श्रीभगवान सिंह से?

"लेकिन 'गज्जब' कमा रहा है।" भंडारी ने जानकर 'गजब' को 'गज्जब' कहा।

"पुजारी का काम है कि नेम-धरम का बात बतियाए तो लगता है ईहो पजेड़ हो गया पुजारी से।" श्रीराम पांड़े लोटा उठाने के लिए झुके तो डर हुआ सुकुमार पंडित को कि चलाने वाले थे उनके ऊपर और झटपट फूट लिए वहां से।

"ई साले पुजारी राम का गांड़ फटने लगने लगता है श्रीभगवान सिंहवा का नाम सुनकर।" सुदर्शन पांड़े को हँसी छूट गई है सुकुमार पंडित को दुलुकीया चाल से जाते हुए देखकर।

सुदर्शन पांड़े सोच ही नहीं सकते कि श्रीराम पांड़े भी कोई डरने की चीज हैं।

"श्रीभगवान सिंहवा बोखार छोड़ाएगा ई पुजारी राम का। बहुत बोल रहे हैं।" भंडारी बोला, "काल्हे खिसियाए हुए था।"

"खिसियाने से नहीं न हो जाएगा। बेचारा हक मांग रहा है अपना।" विभूति पांड़े फिर बाहर आ गए हैं मड़ई के, "इसकी मौगी को भी हथियाए हुए है और मंदिर-वाले खेतवा का हिस्सा भी हड़पे जा रहा है। ई तो दिन पातर हो गया है, इसलिए कम बोल रहा है बेचारा।"

"इसकी मौगी भी कम चलबीधर नहीं है, काका।"

श्रीराम पांड़े चले गए हैं, इसलिए यह चर्चा अब निर्विघ्न रूप से हो सकती है।

"चूड़ामनजीउवा के भी साथ कुछ चल रहा है का हो?" विभूति पांड़े करीब खिसक आए हैं सुदर्शन पांड़े के।

"चल नहीं रहा है तो सनके हुए हैं कि साथे बहरा ले गए थे?"

"वीरभोग्या वसुंधरा!" एक आह निकली विभूति पांड़े के गले से।

"इसी बात पर न श्रीभगवान सिंहवा गरम है।" भंडारी फिर शामिल हो गया है चर्चा में।

"जा हो सुकुमार पंडित!" फिर एक आह निकली विभूति पांड़े के गले से।

दरअसल सुकुमार पंडित के बारे में सोचकर गांव में सभी को गुस्सा आता है उनके ऊपर।

कुंवरपुर के दामाद थे सुकुमार पंडित। अपने ससुर की मृत्यु के बाद कुंवरपुर में ही बस गए थे। बीस-बाइस बीघा टोपरा मिला था हिस्से में। सब बेच दिया धीरे-धीरे। नवाबों के-से अंदाज में रहते। जब गांव में चाय भी कम ही लोग पीते थे, वह कॉफी पीते और दूसरों को भी पिलाते—जो भी सामने पड़ जाए। गुनी और बिक्रमगंज में नाश्ते और मिठाई की पसंदीदा दुकानें थीं उनकी। सुधाकर पंडित जम जाते बेंच पर पालथी मारकर और जान-पहचान का जो भी नजर आ जाता, उसे डपटकर आवाज देते—"ई नहीं कि आके दू गाल बतियाएं, कुछ खा-पी लें, तो भागे जा रहे हैं। बड़का लाट हुए हैं।" और रसगुल्ला चल चुका होता तो पनतुए का ऑर्डर दिया जाता।

उठवना पर दूध आता था उनके यहां और ग्राइपवाटर और विटामिन की बोतलें पूरा खत्म होने के पहले ही फेंक दी जातीं घूरे पर। शाम को पेट्रोमैक्स जलता उनके दुआर पर और रेडियो दिन-भर बजता रहता। उनकी सास समझाते-समझाते कूच कर गईं इस दुनिया से कि 'खेत बेचके खाइल और पुअरा के तापल बरोबर होला।'

और अंततः वह दिन भी आया, जब बेचने को एक धूर भी नहीं बचा सुकुमार पंडित के पास। ऐसी शामें भी गुजरने लगीं, जब चूल्हा नहीं जलता घर में। दोनों बेटियां टूअर की तरह टोले में घूम-घूमकर खाना मांगने लगीं। सुकुमार पंडितबो कूटने-पीसने का काम करने लगीं दूसरे घरों में। उनका दस बीघा खेत चूंकि जोगी सिंह ने ही खरीदा था, सो दया करके अपने शिवाले में पुजारी रख लिया उन्हें। श्रीभगवान सिंह को उनकी पत्नी पर दया आ गई और देने-लेने लगे कुछ न कुछ। पंद्रह वर्षों के अंदर ही यह रूप धारण कर लिया था सुकुमार पंडित की जिंदगी ने।

चूड़ामन पांड़े ने समस्या खड़ी कर दी थी। चूड़ामनबो ने चूंकि गांव की संपत्ति की देखरेख का जिम्मा उठा लिया था और दोनों बेटियां शहर में रह रही थीं उनके साथ, एक औरत की जरूरत थी उन्हें जो उनके शहर वाले घर को संभाल सके। सुकुमार पंडितबो राजी हो गई थीं यह काम सम्हालने को। बदले में दो बीघे की पैदावार मिल जाती थी सुकुमार पंडित को। और एक बार फिर साफ-सुथरे कपड़ों में मजमुआ सेंट महकाते, पान चबाते हुए दिखाई देने लगे थे सुकुमार पंडित।

"भंड़ुआ कहीं का!" लोग मुंह बिचकाते रहते थे, पर उनके मुंह बिचकाने की फिक्र न कभी पहले की थी सुकुमार पंडित ने, न अब करते।

और अब तो एक नया राग भी जागा था चेतना में—हिंदू धर्म और संस्कृति को बचाने का! बिक्रमगंज और गुनी में होने वाली विश्व हिंदू परिषद् की बैठकों में जाने लगे थे। मंदिरों के उद्धार की बातें करने लगे थे।

श्रीभगवान सिंह चिढ़े हुए थे।

श्रीभगवान सिंह से गांव के लोग चिढ़े रहते। पर गांववाले तो अपने देश के लोकतंत्र से भी चिढ़े रहते थे! अपने युग से ही चिढ़े रहते थे। पर चिढ़े रहने वालों से तो नहीं न चलता दुनिया का काम! चलने वालों से चलता है। उनकी बदौलत चलता है, जो हर कीमत पर

आगे बढ़ते रहना चाहते हैं। श्रीभगवान सिंह निरंतर आगे बढ़ते जाने की कोशिश में लगे हुए ऐसे ही जीव थे। नासमझ था कुंवरपुर, जो मुंह फुलाए बैठा था।

बीसवीं सदी के आठवें दशक के आते-आते लगने लगा था सरकारी अर्थशास्त्रियों और नीति-निर्माताओं को कि 'ट्रिकल डाउन थियरी' से काम नहीं बनेगा ग्रास रूट का और गरीबी और बेरोजगारी पर सीधे हमले की विचारधारा की कोख से एक के बाद एक कई जवान योजनाएं लुढ़कीं और अंगड़ाइयां लेने लगीं थीं सरकारी दफ्तरों में। ठोक-ठेठाकर देखने पर पता चला, जन्मांध पैदा हुई थीं वे। उनकी उंगली पकड़, उनके सहारे कहीं नहीं जाया जा सकता था गड्ढे के सिवा। उनकी कलाई थाम उन्हें जहां चाहे, ले जाया जा सकता था।

श्रीभगवान सिंह उनमें से कइयों को लेते आए थे कुंवरपुर। कुंवरपुर में जहां-तहां श्वेत, नीली और हरित क्रांतियों के जो कंकाल दिख जाते थे, उन्हीं के बिखेरे हुए थे।

आईआरडीपी उन्हीं में से एक थी।

बताया गया था कि गरीबी रेखा के नीचे वालों के लिए थी, पर गरीबी रेखा के ऊपर वालों को ही इस कदर भा गई थी कि घेर लिया था श्रीभगवान सिंह को—"ई कठपुतरी कहां से ले आए, बबुआन?"

"ए भाई, ई आप लोगों के लिए नहीं है।" श्रीभगवान सिंह झुंझलाए।

"दिल में घाव करने वाला बात मत कीजिए, ए बबुआन। सब आप ही के हाथ में है। लिखवा दीजिए सार बही-खाता में कि पोरसा-भर नीचे हैं हम गरीबी रेखा के। और जो भोंसड़ीयावाले कहते हैं कि नीचे नहीं हैं, सच पूछिए तो लंठई कर रहे हैं। नहीं तो देखिए रहे हैं आप कि केतना सकेता में जी रहा है आदमी।"

श्रीभगवान सिंह हँसने लगते दिल को खुश कर देने वाली ऐसी दलीलें सुनकर।

समझाया अपने लोगों को कि जिस प्रकार मटुकबो पर चढ़ेंगे दूधनाथ सिंह ही, पर इसके लिए जरूरी है कि उसकी शादी हो मटुक के साथ और वह मटुकबो कहलाए, उसी प्रकार इस आईआरडीपी का भी भोग आप ही लोग करें, पर गांठ इसकी किसी गरीबी रेखा के नीचे वाले के साथ जरूर बंधनी चाहिए।

"ई साला सरकारी ऑफिसवोवाला सब परम स्वतंत्र नहीं हैं न जी, जैसा सोचते हैं आप लोग। पचास गो कुक्कुर हांव-हांव किए रहता है कपार पर। सरकार तो एक महाचुतियापे का नाम है न। दस गो ऑफिस खोल दिया कि काम कीजिए और दस गो खोल दिया कि हर काम में अड़ंगा लगाइए। उसके ऊपर दस गो इसलिए खोल दिया कि काम हो जाने पर हजार ठो छीप काटिए उसमें, नोचिए-बकोटिए।"

"ई तो अपना गांड़ अपने मार लेने वाला हिसाब हो गया न जी? एके बार सुरूवे में सोच लेना चाहिए था कि ठीक करना है कि बेठीक। ई कवन बात हुआ कि अपने कहेंगे भागो और भों-भों करने लगेंगे पीछे से?"

"भों-भों तक तो चलता भी है, महाराज, भभोरन भी हो जाता है न कभी-कभी। बबन मोचीया याद है न आप लोगों को? बीडीओ था अपने यहां। सुने कि जेल में

कबीरबानी पढ़ रहा है आजकल। कबीरपंथी था एकरी बहिन का...अझुरा गया।''

''दिल का अच्छा आदमी था।''

''दिल नहीं देता न काम।''

''तो आप ही बताइएगा न, भइया, कि क्या देता है काम?'' बलराम सिंह ने गोह की तरह गह लिए थे श्रीभगवान सिंह के चरण, ''जो कहिएगा, वही करेंगे।''

धीरे-धीरे गुनी ब्लॉक में ऐसा ही रुतबा हो गया था श्रीभगवान सिंह का। जब तक श्रीभगवान सिंह नहीं समझाते, लोगों की समझ में ही नहीं आतीं विकास योजनाएं। श्रीभगवान सिंह को बनना ही पड़ता था जनता के साथ सरकार के संवाद का माध्यम। बल्कि खुद सरकार भी उन्हीं के ऊपर निर्भर रहने लगी थी सूचनाओं के लिए। कोई उलझन घेर लेती नए आए बीडीओ-सीओ को तो ऑफिस के कर्मचारी कहते, ''श्रीभगवान बाबू को बुलवा लिया जाए।''

सरकारी कार्यालयों में जब दम तोड़ बैठा था गार्ड फाइल रखने का रिवाज, श्रीभगवान सिंह अपनी गार्ड फाइल मेनटेन करते। सीओ को जानना होता कि जाति प्रमाण-पत्र के मामले में लेटेस्ट सर्कुलर कौन-सा है तो श्रीभगवान सिंह को याद करते। श्रीभगवान सिंह निकालते अपना पोथा और वह सर्कुलर उसमें होता कहीं न कहीं।

''एगो पार्टी खोजो पहले।'' बलराम सिंह को कहा श्रीभगवान सिंह ने।

''फिरंगी के नाम पर दिलवा दीजिए।'' बलराम सिंह तपाक से बोले।

''ईहे न बड़का प्रौबलेम है। हम सोच रहे हैं रोजगार-धंधा के जोगाड़ के बारे में और तुम लौंडाबाजी के फेर में हो। नरेश चाचा भी खिसियाएंगे।''

''लवंडा कलाकार नहीं होता?'' बलराम सिंह आहत हो जाते हैं फिरंगी को लवंडा कहे जाने पर। लेकिन लोग थे कि उसे यही कहते, बल्कि लवंडा के साथ फवंडा भी लगा देते।

''क्या सलाह देते हैं, काका?'' दालान के दूरवाले कोने में चौकी पर लेटे माछी हुलकाते जंगी सिंह से पूछा श्रीभगवान सिंह ने।

''जाकी रही भावना जैसी।'' जंगी सिंह बोले। फिरंगीया उन्हें ही कम अच्छा लगता है कि बलराम सिंह को दोष दें?

''बचपने से सरधा था मन में, भइया, कि अपना तबला, हरमुनियम और कलारनेट खरीदेंगे। अब आप ही चाहिएगा तो पूरा होगा।'' बलराम सिंह घिघियाए।

''हरमुनियम खरीदने के लिए आईआरडीपी?'' श्रीभगवान सिंह अकचकाए।

''जाने दो बचवा, पुन्न का काम है। नौकरी-चाकरी लगिए नहीं रहा, बजाने का रियाज हो जाएगा तो नौटंकी-सौटंकी में ठोक-ठेठाके कमा लेगा दू-चार पइसा।''

और जंगी सिंह की इस मार्मिक अपील के बाद तय हुआ कि तबला-हरमुनियम के नाम पर क्या निकालना है लोन, गाय के ही नाम पर निकलवा लिया जाए। बलराम सिंह खरीद लें एक तबला और हारमोनियम; फिरंगी का मन हो तो नया चमकउवा ब्लाउज और घुंघुरू खरीद ले अपने लिए। और जो बच जाए, उसको और कागज-पत्तर

को श्रीभगवान सिंह देख लें।

"सुन रहे हैं न, चाचा, ई बकतंग? ई बाचा लोग बजाएं हरमुनियम और हम कागज-पत्तर सरिआएं।" श्रीभगवान सिह मुदित हैं अपनी कामयाबी और पहुंच के बारे में सोचकर। खींच-तानकर बीए करने के बाद अपने एक इंजीनियर रिश्तेदार के यहां रहने लगे थे इस आस में कि चपरासी-खलासी रखवा देगा कहीं। घोड़ा बनकर पिठ़इंया घुमाया था उसके बच्चों को; टिफिन पहुंचाया था उसका। दाल नहीं गली तो सेना में भर्ती के लिए दौड़े गए थे। सेनावालों ने यह कहकर वापस लौटा दिया था कि टांगें टेढ़ी थीं। उनके पिता जोगी सिंह गरम हो गए थे—"गांव पर सौ बिगहा खेत अछईत और दुनिया-भर को देह का पय दिखाते चल रहा है साला नालायक।"

लेकिन श्रीभगवान सिंह ने तय कर लिया था, धनखेती में शरीर नहीं गलाना है। पुलिस में भर्ती के जोगाड़ में लग गए। एसपी तक घूस भी पहुंचा आए। आश्वासन भी दे दिया था उसने कि फेल नहीं होने देगा फिजिकल में, पर मक्कार निकला। फिजिकल में फेल हो गए श्रीभगवान सिंह और एसपी ने उसी बिचौलिए के माध्यम से घूस के पैसे वापस कर दिए। श्रीभगवान सिंह को बाद में पता चला कि भर्ती के लिए आए तमाम लोगों से पैसे ले लिए थे उसने। जिनका हो गया, रख लिया उनका, बाकियों का लौटा दिया।

श्रीभगवान सिंह ने तब फैसला किया खद्दर डाटने का। खद्दर डाटकर ब्लॉक ऑफिस के आगे स्थित चाय-पकौड़ी बेचने वाली झोपड़पट्टी में अड्डा जमाने का; रंगबाजों के साथ आमदरफ्त बढ़ाने का; उनकी मोटरसाइकिलों पर घूमने का; एक मोटरसाइकिल खरीदने का; नारद सिंह की मोटरसाइकिल के पीछे-पीछे उसे घुमाने का। तब श्रीभगवान सिंह को ही कहां मालूम था कि एक दिन ऐसा रंग लाएगा यह फैसला!

"हमारा तो मन करता है न काका, कि साले समूचे रेज टोला को भेंटवा दें कुछ न कुछ, बाकी कुछ हरामी लोग के चलते महटिया जाते हैं।" जंगी सिंह से बोले, "अनजनवा कहता है कि 'बांधो न नांव इस ठांव बंधु' तो गलती नहीं कहता है।"

"अनजनवा के कहने से का होगा? गांव जयजयकार कर रहा है। चुन-चुनकर अपने आदमी को फयदा करवा देना है।" जंगी सिंह ने कोई गूढ़ बात बताने के भाव में कहा, "धीरे-धीरे सबको बुझा जाएगा कि किसके पीछे चलने में फायदा है।"

"छत्तीसवा को भी तो अपना ही आदमी न समझे थे हम लोग?"

"हां, तो कहां जा रहा है छत्तीसवा? कहीं नहीं जाएगा।"

"हमको भइया आप छत्तीसवा से मत मिलाइए।" बलराम सिंह गिड़गिड़ाए।

"गऊ माता के लिए गऊग्रास नहीं काढ़ेगा हो?" जंगी सिंह बोले।

"जो कहिए सो!" बलराम सिंह ने टंकार दी।

"सांझ को लिट्टी-चोखा, घीव में चभोरकर।" कहा और मुंह में भर आई लार को घोंट गए जंगी सिंह।

बलराम सिंह फिरंगी की खोज में निकले। फिरंगी कल ही पहुंचा था गांव और

वापस जा रहा था आज।

"खिसियाए हुए नहीं हो न, फिरंगी?" बलराम सिंह की आवाज को पता नहीं क्या हो जाता है उसके सामने। हेलेन और बिंदु होकर रह जाती है।

"किस बात पर, बबुआन?" फिरंगी चहका। आंखों पर गहरे काले रंग का गोग़ल्स चढ़ा रखा था। बलराम सिंह उसकी आंखों में नहीं झांक सके।

"दू मिनट बैठ नहीं सकते अपने बबुआन के लिए?"

"आप भी जो हैं न, बबुआन...हरमेसा तरंगे में रहते हैं।" फिरंगी हँसा, "लौटना है, नहीं तो भरपेट बतियाते।"

"आजे लौटना है?" दर्द तिर आया है बलराम सिंह की आंखों में।

"बताइए न खड़े-खड़े। बढ़िया तो लग रहा है।"

"जानते हो कि कष्ट होता है तो बम काहे को पटक दिए कि आजे लौटना है?"

"अच्छा बोलिए न, क्या बोल रहे थे?"

"बोलने का हूब छोड़े हो कि बोलें, बाकी बोल रहे हैं। एगो तबला और हरमुनियम का जोगाड़ कर लिए हैं तुम्हारे नाम पर।"

"हमारे नाम पर?" अचरज में पड़ गया फिरंगी और दोनों हाथ कमर पर जमाए आंखें चौड़ी किए हुए देखने लगा उन्हें।

गजब! कुछ देर तक तो उसकी यह नई स्टाइल ही देखते रह गए बलराम सिंह।

"एगो लोन पास करवाए हैं। बाबू साहेब लोग के नाम पर तो आजकल गारीए मिलता है केवल, सो तुम्हारे नाम पर ले लिए।"

"पास करवाइए लिए तो का कहें, बाकी रियाज कहां होता है आपसे? तीन ताल भी काबू में नहीं आया ठीक से।"

"हमारा पोजिसन बहुत नरभस है, फिरंगी। बहुत प्रेसर में जी रहे हैं हम। जिसको देखो, बोल देता है दू बात। देखिए रहे हो, करहा कांछ रहे हैं।"

"काम से कभी पीछा छूटने वाला है, बबुआन?" फिरंगी की आवाज में भी खिलंदड़ेपन की जगह कोमलता ने ले ली है।

"कुछ तुम भी ले लेना।" बलराम सिंह उसके कंधे सहलाते हुए बोले।

"कभी ना किए हैं आपको।" फिरंगी ने भी उतने ही प्यार से कहा।

गांव की औरतें देखते ही घेर लेती हैं उसे। मिसरी, बतासा, गुड़, लकठो, जो भी हो घर में, देतीं खाने को और गाने सुनाने, नाचकर दिखाने का निहोरा करने लगतीं।

"नाचना किसको नहीं आता, चाची?...सबको आता है..." फिरंगी चोन्हाने लगता।

"बात मत बनाओ।" चाचियां लाड़ दिखातीं।

"आपको नहीं आता है?...कपरा पर हाथ रखकर देखिए तो..."

"भाक् बदमास।" चाचियां लजा जातीं।

"इसमें लजाने का क्या बात है? भगवान नहीं मोहिनी रूप धरे थे?"

'हाय रे क़रम! बाप सधुआ गया और बेटा लवंडा निकल गया...बेचारी

सूबेदारबो।' बूढ़ियां कहतीं, जिन्हें अपने घर की औरतों का फिरंगी से रस ले-लेकर बतियाना अच्छा नहीं लगता।

"रोजी-रोटी के फेर में न लगा हुआ है आदमी, चाची!" चाचियों से अनुमोदन मांगते हुए अपने पेशे का कोई गाना सुना देता फिरंगी या मूड बन जाता तो दो ठुमके भी लगा देता।

औरतें पल्लू से मुंह ढांपे हँसने लगतीं।

बलराम सिंह के पिता नरेश सिंह का खून खौलता रहता है फिरंगिया की चर्चा सुन-सुनकर। मन करता है, घर छोड़कर चले जाएं कहीं। लेकिन कहां? जब तक नौकरी थी, तब नहीं सोचा इस बारे में तो अब क्या होना है सोचकर। जमीन भी तो नहीं खरीदी किसी शहर में। साथ वाले कहते थे कि गांव-गंवई में मन नहीं लगेगा, नरेश भाई, तो ध्यान नहीं दिया उनकी बातों पर। पर मालूम भी तो नहीं था उस समय कि ऐसे निकल जाएंगे बेटे!

"बुढ़ारी में लड़के याद आए हैं। तीस बरस के बाद।" मंझिला गुर्रा उठा था।

नरेश सिंह मुंह देखते रह गए थे बेटे का। अंजोरिया रात का आकाश चांदी की हँसी हँस रहा था। और नरेश सिंह के चेहरे पर राख पुतती जा रही थी। अंधेरा छाता हुआ-सा लग रहा था आंखों के सामने। नरेश सिंह सोच रहे हैं, इस दुःख ने कभी पहले क्यों नहीं विदीर्ण किया उन्हें? परिवार पर ध्यान नहीं देने का दुःख। मंझिला बिक्रमगंज के सिनेमा हॉल में गेटकीपर हो गया था और छोटका गोसांई पांड़े के साथ रहकर कंडक्टरी के गुर सीखने के लिए खलासीगिरी कर रहा था।

नरेश सिंह की आंखें खलिहानों की ओर चली गई थीं। खलिहानों में सोना दमक रहा था। पर उनमें से कोई भी उनका नहीं था। एक वक्त था, जब उनके परिवार का गल्ला भी मस्त हाथी जैसा दिखता था।

"खेती क्यों तोड़ दिए आप लोग?" अपने छोटे भाई महादेव सिंह से पूछा।

"लइका-फइका लोग का मने नहीं लगता और हमसे भी नहीं संपरता अब।" महादेव सिंह ने जवाब दिया।

"देवता बाबा अकेला प्राणी हैं और सम्हाले हु ; हैं। कितना अच्छा लगता है!"

"ए भाई, सब कोई देवता बाबा जइसा मुअल माटी का नहीं है न। हमसे तो नान्ह सबका टंडेली बरदास्त नहीं होता। देख लेंगे अकड़ते हुए तो एक कनवा खून खड़े-खड़े जल जाएगा।" महादेव सिंह का जवाब था।

"अपने तो एकदम से बहरा खिल गए...नास दिए सब...अब खेती सरियाने चले हैं! स्वार्थी आदमी...!" मंझिला भी अपने चाचा की बोली बोलने लगा था, इसके बावजूद कि उसे फूटी आंखों भी नहीं सुहाते थे महादेव सिंह।

नरेश सिंह की बोलती बंद हो गई थी।

महादेव सिंह सोचते कि गरज नरेश सिंह को है तो जो करना हो, वही करें।

उनकी तो बस चार बेटियां थीं। तीन आराम से रह रही थीं ससुराल में। बूढ़ी को लेकर बस तीन प्राणी बच गए थे उनके परिवार में। जो मिल रहा था खेत 'मनी' पर लगा देने से, काफी था।

नरेश सिंह के बेटों की सोच थी कि भाई की बेटियों को पार लगाने के लिए उनके जीवन को नरक बना दिया था नरेश सिंह ने।

नरेश सिंह का मन कहता है. गलत नहीं कहते लड़के। बहुत बड़ी भूल हो गई थी उनसे।

जब नौकरी में थे, उनके रेलवे के सहकर्मी अपने डेढ़ कमरोंवाले क्वार्टर में रखते थे अपना पूरा परिवार। बेटे-बेटियों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाते थे। खुद क्वार्टर के बगल मे मड़ई डालकर सोते और बच्चों को दो-दो, तीन-तीन ट्यूशन पढ़वाते। नरेश सिंह तब हॅसते थे उनके ऊपर। मजाक उड़ाते थे उनका। और आज खुद ही मजाक बन गए थे!

खलासी और गेटकीपर तक तो फिर भी ठीक था, पर बड़े बेटे ने तो एक लौंडे के नाम कर दी थी जिंदगी।

नरेश सिंह दंग हैं—अचानक इतना कुरूप लगने लगा था अपना ही चेहरा।

"घर का बदनामी हो रहा है, इसका भी खयाल नहीं है तुमको? बाल-बच्चों का?" बलराम सिंह से पूछा आखिरकार।

बलराम सिंह मिट्टी की दीवार में चिपका दिए गए छोटे-से आईने के सामने झुके हुए बालों मे कंघी कर रहे थे चुपचाप।

"कुछ पूछ रहे हैं न हम? चुप थे, इसका मतलब यह नहीं है कि अंधा-बहरा हैं। केवल लाज-लिहाज के मारे चुप थे। लेकिन जब कुछ सोचना ही नहीं है तुमको तो पूछना पड़ रहा है।"

"हमारा मन लगता है संगीत में।" बलराम सिंह का छोटा-सा जवाब।

"संगीत की बात कर रहे ह हम?"

बलराम सिंह ने चुप्पी साध ली है।

"चाहते हो कि घर छोड़कर चले जाए कहीं?"

बलराम सिंह फिर भी नहीं बोलेंगे। प्रतिरोध को निरस्त करने का यही तरीका है बलराम सिंह का—चुप्पी साध लो।

"फिरंगीया नहीं आएगा इस घर में।" नरेश सिंह थर-थर कांप रहे हैं गुस्से के कारण, "और तुम भी नहीं मिलोगे उससे।"

"उसी के नाम पर लोन लिए हैं तो मिलेंगे कैसे नहीं!" आंगन के एक कोने में पीढ़े पर बैठकर चूड़ा-दही सरपोटते छोटका ने बोल छोड़ा।

"कौन हरामजादा लोन दे रहा है तुमको? हम देते हैं उतना। जो भी करना हो, करो। चाहे धुनसार में झोंक दो, लेकिन फिरंगीया से नहीं मिलोगे।"

नरेश सिंह कांप रहे हैं और बलराम सिंह के चेहरे पर ऐसी प्रशांति व्याप्त है मानो नरेश सिंह का बोलना बंद होते ही अभय मुद्रा में हाथ उठाकर अच्छे संभाषण

के लिए आशीर्वाद दे देंगे उन्हें।

"काहे को जान दिए हुए हैं झूठो-मूठो का। भाईजीउवा न बोलेगा, न अपना लाइन छोड़ेगा।" छोटका फ़िर बोला, "कुछ देना है तो हमको दीजिए, एगो कैसेट-ओसेट का दोकान खोल लेते हैं गुनी में।"

मन करता है कभी-कभी कि भागकर किसी आश्रम में चले जाएं। पर वही मन धिक्कारने भी लगता है उनको—कम से कम अब तो ध्यान दो बेचारों पर!

जो कभी नहीं किया, अब कर रहे हैं नरेश सिंह। सुबह चार बजे ही उठा देते हैं घर के सभी बच्चों को। लालटेन जलाकर बिठा लेते हैं पढ़ने के लिए। उन्हें नहीं पता, क्या लिखा है उनकी किताबों में। उम्र के इस पड़ाव पर अब इच्छा भी नहीं होती पन्नों में झांकने की। लालच देते हैं उन्हें कि लेमनचूस देंगे, होली में पीतलवाली पिचकारी खरीद देंगे, नए जूते ला देंगे।

बच्चों के साथ बैठे हुए आज सोच रहे हैं कि संगीत में इतना ही मन लगता है बलराम सिंह का तो अपने पैसे से ही खरीद देंगे हारमुनियम और क्लार्नेट। कोई खराब चीज थोड़े ही है संगीत! यह तो फिरंगीया के चलते न...!

नौबत मियां का लाउडस्पीकर गड़गड़ाने लगा है हरिओम शरण का भजन—'मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊं...'

यही तो है आईआरडीपी के लोन का फायदा कि बच्चों के पढ़ने का समय हो तो लाउडस्पीकर बजा दो। सोचा, आज मना करेंगे नौबत मियां को सुबह-सुबह लाउडस्पीकर बजाने से। बच्चों का ध्यान बंटता है। लेकिन कुंवरपुर में आईआरडीपी के हठात् चर्चा में आ जाने का कारण बलराम सिंह का तबला-हारमोनियम या नौबत मियां का लाउडस्पीकर नहीं था, कारण था छत्तीसा का टमटम।

छत्तीसा बेचना चाहता था घोड़ा और श्रीभगवान सिंह का कहना था कि बेचना हो तो बेचे, पर दाम में आधा उनका हुआ। गांव इस मीमांसा में जुटता कि कौन सही था, कौन गलत।

बहरहाल, आईआरडीपी के टमटमों के घोड़े बेचने का किस्सा यह है कि ब्लॉक ऑफिसवालों को 'बिद्या कसम ' समझ में ही नहीं आ रही थी यह बात कि क्या करें कि स्वरोजगार के अवसर पैदा हों गरीबी रेखा के नीचे वालों के लिए। बुद्धि कहती, यह साला रोजगार-धंधे का चक्कर ही नहीं है गरीबों के लिए और सरकार के पोसूआ बुद्धिजीवी कह रहे थे, जरूरी है स्वरोजगार के अवसर पैदा करना। देश के एक भी ब्लॉक में खुद पैदा करके दिखा देते, सो नहीं; उपदेश पेल रहे थे केवल। और उनके ऊपर एक साला मन था अपना, जो बिसूरता ही रहता हमेशा—कार चाहिए हमको, बिल्डिंग चाहिए पटना में! और सबके ऊपर यह साला जनतंत्र था, जिसने अपने वोटरों को पक्का कर दिया था दिखा-समझाकर कि सोझिया और ईमानदार रहोगे तो हाथ मलते रह जाओगे।

इलाके में फिलहाल भाजपा की राजनीति कर रहे बूटन राय ने एक दिन बताया

जहुवाए हुए ब्लॉकवालों को कि नेहरूजी इसीलिए साइंस से भी ज्यादा साइंटिफिक मेंटालिटी पर जोर देते थे। आप लोग भी लोगों में पहले स्वरोजगार की मानसिकता पैदा करते और तब साधन मुहैया कराते तो बात बन जाती और सरकारी धन का हाल स्कूलों में पंद्रह अगस्त को बंटने वाले लकठो या लेमनचूस वाला नहीं होता।

"हम लोगों का कोई 'से' नहीं है न रायजी। ऊपर से जो मन करता है, रेल देते हैं लोग और कहते हैं इंप्लीमेंट करो। फुर्सत मिले सोचने-बिचारने का, तब तो वह हो, जो कहा गया।"

"आप लोगों के सोचने से भी झांट होगा? जब तक रामप्रवेश चौधरीया का तरास कम नहीं होगा, कुछ नहीं होगा।" बूटन राय का एक चमचा बोला।

"हम, लल्लनजी, आपसे सहमत होते हुए भी इस तरह सीधा-सीधा नहीं कह सकते। चोट पहुंचती है आत्मा को। आखिर हम लोग भी तो कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं ही इस स्थिति के लिए।" बूटन राय ने अपनी समस्या बताई, जो देश के बड़े-बड़े लोगों की समस्या जैसी ही थी। आत्मा कचोटती है, पर...

"हम कह रहे हैं कि ऊ साला फेलुअर आदमी से सलाह लेने का जरूरते क्या है?" अवधेश चौधरी ब्लॉकवालों पर गुस्सा गए गलत दरवाजे पर ज्ञान की भिक्षा के लिए कटोरा फैलाने पर—'छछनलो गइली रकटलो हियां, खोईछा मिलल बनउर।'

ब्लॉकवालों को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, पर आगे बढ़ते रहना चाहते थे। नए-नए प्रयोग करते रहते। टमटम खरीदने के लिए लोन देना इसी तरह का एक प्रयोग था। इसके पीछे आर्थिक तर्क यह था कि आवाजाही बढ़ गई थी लोगों की पर बसों तथा ट्रेकरों की संख्या में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई थी। अतः जरूरत थी टमटमों की। केवल यह हिसाब रख पाने में गड़बड़ हो गई कि कितनों की जरूरत थी, सो एकाएक टमटम ही टमटम नजर आने लगे गुनी में। और गुनी के टमटमवालों के पास इसके अलावा कोई काम नहीं रह गया कि लीद सूंघें घोड़ों की, सुरती खाएं, घंटा दू घंटा पर मूतें, स्कूल जाती लड़कियों को निहारें और घोड़ों को गरियाएं, जो ऊब रहे होते खड़े-खड़े। ऊपर से स्कूल जाते लड़के बाल छोड़ते जाते—"चल प्रेमनगर जाएंगे, बतलाओ तांगेवाले...।" सगे-संबंधी सलाह दे जाते कि दिन-भर बैठे-बैठे घोड़े की पाद और हिनहिनाहट सुनने से तो अच्छा था कि दू बिगहा खेत जोता जाए मनी पर। घोड़े भी कहते मानो कि *जो खुद ही बनरिआया हुआ हो, घोड़े रखना शोभा नहीं देता उसे।* सो जिस तेजी से आए थे टमटम, गायब भी होने लगे। घोड़े बिक गए और इक्के उनके दरवाजे पर आईआरडीपी के स्मृति-चिह्नों के रूप में खड़े हो गए।

छत्तीसा ने भी फैसला किया था कि बेच देगा घोड़ा। छत्तीसाबो श्रीभगवान सिंहबो से बोली, *"लोनवा के कगजवा पर तो इनका ही न नाम है, बड़को। जेहल जाएंगे तो यही न जाएंगे।"*

"छत्तीसा मत बतिआओ हमारे पास।" श्रीभगवान सिंहबो गरम हो गईं—"तुम्हारे मरद का ही मुंह सबसे चोख था ब्लॉक में कि लोन मिल गया?"

"हम कह रहे हैं कि चोख था?"

"तब क्या कह रही हो? कह रही हो कि बेईमानी कर रहे हैं मालिक?"

"हे भगवान, हई देखो बड़को को! कह रही हैं, मालिक को बेईमान बना रहे हैं हम।"

"आदमी को अहसान नहीं भुलाना चाहिए, छत्तीसाबो। अहसानफरामोस आदमी के लिए नरको में ठेलाठेली हो जाता है।"

छत्तीसाबो ने लौटकर बताया छत्तीसा को कि आधा लेंगे ही लेंगे मालिक तो एक बार यह विचार कौंधा छत्तीसा के मन में कि जहर दे दे घोड़े को, पर सम्हल गया।

सुदर्शन पांड़े एक ढही हुई दीवार के ढूह पर चुक्का-मुक्का बैठे रियासत मियां की मुर्गी और मुर्गे के संभोग के दृश्य में खोए हुए थे।

"सिरीभगवान सिंह कभी-कभी आग में मूतने वाला काम करते हैं, बाबा। एक नंबर का धोखाबाज आदमी हैं।" छत्तीसा चला आया मन का दुःख बांटने।

"ईहो साली कम नहीं है।" सुदर्शन पांड़े की निगाह मुर्गी पर थी, जो निकल भागी थी मुर्गे की पकड़ से।

"ई साला मियवां का मुर्गवि पिलपिलाहा है।" छत्तीसा को मजा नही आ रहा था।

"पिलपिलाहा तो जो है, ऊपरवाला जानता है उसको।"

छत्तीसा ने नहीं देखा था कि उसी ढूह के पीछे पेशाब करने बैठे हुए थे रियासत मियां। आंड़ पर लोटे का पानी गिराते हुए बोले।

"बड़का कलेजावाला हुए हैं तो जाइए न, मुफ्ते में कहीं से ले न आइए घोड़े के पोंछ का बाल भी। पिलपिलाहा कहने चले हैं।" छत्तीसा उखड़ गया।

"तुम्हीं को मुबारक हो घोड़ा और घोड़े के पोंछ का बाल। हमको नहीं चाहिए।" रियासत मियां बोले।

"ई रियासत मियवां के फेर में मत पड़ना, छत्तीसा।" उसे खैनी की डिबिया निकालते देख बोले सुदर्शन पांड़े बोले, "जला हुआ है भीतरे-भीतर कि माइक मिल गया नौबत मियवां को और इसको कुछ नहीं मिला।"

"थूकते हैं ऐसे माइक पर।" रियासत मियां ने थूकते हुए कहा।

हँसी आ गई सुदर्शन पांड़े और छत्तीसा को। छत्तीसा को तो पता ही नहीं चला कि कब जीत में बदल गई थी उसकी हार।

4

"माई!" चूड़ामन पांड़े दनदनाते हुए बदहवास-से दाखिल हुए आंगन में, "कोई गार्जियन है कि नहीं इस घर में?"

रामज्ञान पांड़ेबो जांत के पास बैठी गेहूं पीसने में लगी हुई थीं मुन्नी के साथ। नजर उठाई तो एक कौआ नजर आया, जो बीट करता तो सीधे उनके सिर पर गिरता।

"दयाशंकर को जो मन में आए, करने का अधिकार किसने दिया है?" चूड़ामन पांड़े महसूस करते हैं यह सवाल करते हुए कि एक बार फिर बौना होने लगा है उनका आत्मविश्वास उस ठंडी वितृष्णा के सामने, जो विकीर्ण होती रहती है रामज्ञान पांड़ेबो की आंखों से।

खड़े है और बैठने को कोई नहीं कह रहा। हल्के विराम के बाद फिर जांत चलाने में जुट गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो। विमला और मुन्नी भीतर कमरे में चली गई हैं।

"भइया आए हैं, माई।" एक वक्त था कि शारदा, सुशीला और विमला एक साथ दौड़तीं कुर्सी लाने के लिए, जो केवल उन्हीं के बैठने के लिए रखी हुई होती। चूड़ामन पांड़े का आना तब संसार की सबसे बड़ी घटना हुआ करता था इस आंगन के लिए।

आंगन के एक कोने में खाट पर लेटे रामज्ञान पांड़े दिख गए हैं चूड़ामन पांड़े को, पर हिम्मत नहीं हो रही उनकी तबियत के बारे में कुछ पूछने की। उन्हें डर है--और भी खौफनाक हो जाएगी वह ठंडी वितृष्णा, जो पूरे आगन को लील चुकी थी धीरे-धीरे।

"कुछ बात है?" गणपतिबो घसीट लाई हैं एक खटोला।

"भइया कहां हैं?" सहारा मिला है चूड़ामन पांड़े को।

"मुह मरवा रहे होंगे कहीं।" गणपतिबो ने कहा।

"यही बोली है सधुआइन का?" कहकर एक बनावटी कहकहा लगा दिया है चूड़ामन पांड़े ने। यह कहकहा ही शायद वापस दिला दे थोड़ा अधिकार-भाव।

गणपतिबो को भी अच्छा नही लगता यह कहकहा। उन्हें लाज भी लगने लगती है चूड़मन पांड़े की बेहयाई पर। जब तोड़ ही लिए राग और नेह के सारे बंधन तो क्या जरूरत है इस ढोंग की।

'पापी है। देखने आता है कि घरवा अभी ढहा कि नहीं।' विमला फट पड़ती है, 'हम तो लुआठी लेकर खदेड़ दें।'

"हरदेउवा क्या कह रहा है, तुम भी नहीं सुनी हो?" चूड़ामन पांड़े ने गणपतिबो से पूछा।

"हरिदुआर काका वाले झगड़वा के बारे में?" गणपतिबो बोलीं।

"ऊ खाली हरिदुआर काका का झगड़ा है?"

"अब का जाने..." गणपतिबो को लगता है, वे बिना माने-मतलब ही पड़ गई हैं बीच में। चूड़ामन पांड़े रामज्ञान पांड़ेबो को देने आए थे ओरहन।

" 'का जाने' का मतलब?" चूड़ामन पांडे ने कड़े कर लिए हैं तेवर, "कह रहा है कि पांच बरस जोते हैं मनी पर खेत, इसलिए नहीं छोड़ेंगे। इसको मामूली बात समझती हो तुम? और अपने दयाशंकर उसी के साथ पोलटिक्स कर रहे हैं। नन्हकूआ के पढ़ाए सुग्गे जैसा अनाप-शनाप बोलते चल रहे हैं। आज हरिद्वार काका के मनीदरहा को ठेन करने के लिए उकसा रहे हैं ये लोग, तो कल हमारा और आपका मनीदरहा

ठेन नहीं पसारेगा, कोई गारंटी है इसका?"

"तो समझाओ दयाशंकर को। तुम बड़का भइया नहीं हो दयाशंकर के?" रामज्ञान पांड़ेबो ने कहा।

"कोई मानता ही नहीं हो भाई तो जबरदस्ती बन जाएं भाई?"

"भाई भाई को भाई नहीं माने, बेटा बाप को बाप नहीं माने, ई तो गलत बात है न?"

चूड़ामन पांड़े महसूस करते हैं इस कटाक्ष का अपनी शिराओं में जहर की तरह उतरना।

"यही बात जब गांव पूछने लगेगा, तब भी यही कह दोगी?"

"कह देंगे कि हमारे बेटा लोग हमारे कहनाम में नहीं हैं, ए भाई लोग। हम तो अपने परेसान हैं। मरद खटिये पकड़ लिया और तीन गो बेटी छोड़ गया हमारे भरोसे।"

'ठीक बोलीं।'—गणपतिबो का मन खुश हो गया है सास का जवाब सुनकर। बड़ा आए थे तरीका सिखाने...

इन्हीं चूड़ामन पांड़े के ओवरसीयरी की परीक्षा में पास हो जाने की खबर पहुंची थी कुंवरपुर तो रामनवमी के जमावड़े में गदका भांज रहे थे रामज्ञान पांड़े। गांव को ईर्ष्या होने लगी थी सीधका बाबा के भाग्य से।

'आज गुल बुताना नहीं चाहिए, मटुक!' दूधनाथ सिंह की दालान में बेर डूबने से सतहवा के डूबने तक चिलम की उगती-बुझती चमक में खोए रहे थे रामज्ञान पांड़े।

'बेटा काम सुतार कर दिया, बाबा। बेकार फिकिर में पड़े रहते थे आप।' दूधनाथ सिंह बोले थे।

दूधनाथ सिंह दोस्त थे रामज्ञान पांड़े के। दोनों को ही अखाड़े में दांव आजमाना, लाठी चलाना और गदका भांजना अच्छा लगता था। कहीं भी जाते तो साथ-साथ जाते।

'ओसियर का बहुत कमीनी है, मालिक, नहीं?' मटुक की जिज्ञासाएं और भी बढ़ा रही थीं मस्ती को।

'इतना खुस थे कि पूछो मत।' रामज्ञान पांड़ेबो सुनाती हैं बेटियों को, 'हम कहें भी कि ढेर आसरा नहीं रखना चाहिए किसी से...तो 'डोमिनीया', 'नेटूइनीया', करने लगते...'

'भइया खराब नहीं थे, माई। पता नहीं कहां से कौड़ी-कमच्छा का जादू सीख के आई थी बिजइया की माई। भेंड़ा बना दिया।'

शारदा को अपने पुराने चूड़ामन भइया याद आ जाते—कॉलेज से गांव पहुंचते ही रहड़ के डंठलों से बना बड़ा-सा झाड़ू लेकर दुआर की सफाई में जुट जाने वाले, बैलों की सानी-पानी खुद करने वाले, सारे गांव के सो जाने तक लालटेन की रोशनी में झुके हुए उसकी कॉपियों को उलटने-पुलटने वाले।

शुरू-शुरू में बहरा जाने को कहती चूड़ामनबो तो उसकी कुटाई कर देते चूड़ामन पांड़े। दो-चार लात जमाकर बाहर दुआर पर चले जाते। लेकिन हार नहीं मानी उसने।

'देखना न, अपने आएंगे मनाने।'

रामज्ञान पांड़ेबो ने शारदा को भेजा था कि जाकर कंघी-चोटी कर दे। चूड़ामनबो फूली हुई बैठी थी मार खाकर। आंगन में घसीट-घसीटकर मारा था चूड़ामन पांड़े ने।

'जब तक पैर पर नाक रगड़कर माफी नहीं मांगेंगे, नहीं मानेंगे।' चूड़ामनबो बोली थी।

शारदा को अच्छा नहीं लगा था। अपने चूड़ामन भइया की ऐसी छवि ही नहीं थी उसके मन में।

'मंतर जानते हैं हम...ससुरा जाने लगोगी तो तुमको भी सिखा देंगे!' मार खाकर भी हँस रही थी चूड़ामनबो।

डर गई थी शारदा। आकर बताया था रामज्ञान पांड़ेबो को।

'अबकी गोजी से कूटेगा, बस, दिमाग रस्ते पर आ जाएगा।' रामज्ञान पांड़े दांत किटकिटाने लगते।

इस आंगन में पैर रखते ही जान गई थीं रामज्ञान पांड़ेबो कि भगवान ने बहुत ही सरल मन दिया था उनके पति को। झूम उठे खुश हो तो और घिर जाए तो बैठ जाए बेबसी ओढ़कर।

'आप काहे गरियाने-बोलने लगते हैं उसको? अच्छा नहीं लगता होगा चूड़ामन को।' समझातीं उन्हें, लेकिन जब तक छाती पर लात मारकर उन्हें दुरदुरा नहीं दिया चूड़ामन पांड़े ने, रामज्ञान पांड़े यही मानते रहे कि केवल उनका हक था चूड़ामन पांड़े पर।

'कोढ फूटेगा चूड़ामन पंड़इया को।' गांव कहता है रामज्ञान पांड़े की चर्चा निकलने पर।

शारदा की शादी में हाथ झुलाते हुए आ गए थे चूड़ामन पांड़े। रामज्ञान पांड़े के होशोहवास गुम हो गए थे। लगा, बारात लौटा ले जाएंगे रामेश्वर तिवारी के बाबूजी। अंग्या मांगने गए लोग बार-बार लौट आते। हरिद्वार पांड़े की चौखट पर जाकर भिखमंगों की तरह घिघियाना पड़ा था रामज्ञान पांड़े को।

पूरा गाव दंग रह गया था चूड़ामन पांड़े की बेहयाई देखकर। लेकिन रामज्ञान पांड़े तब भी मानते रहे कि जरूर सकेता में पड़ गया होगा लड़का। चूड़ामन पांड़े अपना अलग मकान खड़ा कर, लेते गए अपना परिवार, तब भी चले जाते माठा मांगने। चूड़ामनबो झूठ बोल देती कि नहीं है, तब भी सोचते कि जान जाएंगे चूड़ामन पांड़े तो छोड़ेंगे नहीं उसे।

'कभी-कभी हम भी इनको बोल देते थे उल्टा-सीधा, बाकी अफसोसे होता था बाद में। चूड़ामन में प्राण बसता था इनका।' रामज्ञान पांड़ेबो की आंखों में आंसू आ जाते हैं बीते दिनों को याद कर।

'प्राण नहीं बसता तो ई हाल होता।' दयाशंकर उफनने लगते क्रोध से।

'जाने दो, बबुआ, भगवान इसी जनम में सजा दे रहे हैं हम लोगों को।' गणपतिबो कहती थी, 'हमारा हाल देखिए रहे हो...और चूड़ामनबो का भी सब धन अछईत और

बेटा चतुरबउराह निकल गया...दंडे न दे रहे हैं भगवान...'

"तो इसी को फाइनल जवाब समझें न हम?" खटोले से उठ खड़े हुए हैं चूड़ामन पांड़े और जलती हुई आंखों से घूर रहे हैं रामज्ञान पांड़ेबो को।

रामज्ञान पांड़ेबो ने जांत में ही बिला जाने दिया उनके चुनौतीनुमा सवाल को। देखा भी नहीं कि जबड़े सख्त किए हुए, घुंची हुई आंखें लिए, आंगन से कब बाहर चले गए थे चूड़ामन पांड़े। वह तो ध्यान हटाना पड़ा जांत के लयबद्ध घूर्णन से, क्योंकि छानी पर घमासान मचा हुआ था कौओं का।

नन्हकू सिंह का नया पैंतरा था यह। और पूरा कुंवरपुर हिल गया था। हरिद्वार पांड़े दुआरे-दुआरे घूमकर लोगों को आगाह करते चल रहे थे इस नए खतरे से। लोग समझ भी रहे थे कि बहुत बड़ा खतरा था यह, पर इस खतरे के मुकाबले की रणनीति के सवाल पर सोच अलग-अलग ढंग से रहे थे। एका का अभाव था बड़ों में।

"ई सारघेंटी महापातर किसके काम आए हैं कि कोई इनके लिए खड़ा होगा?" तिलंगी सिंह खुश हैं कि बढ़िया अझुरान अझुराए हैं साले कंजड़ राम। लोल रगरा जाता गोबर के हील में तो मजा आ जाता।

"हमारे कन्हैया सिंह न साक्षात् राणा प्रताप का अवतार हुए हैं। कह रहे हैं, अकेले सोझिया देंगे देस-दुनिया को।" पल्टू सिंह अपना दुःख सुनाते चल रहे हैं लोगों को, "मन करता है कि सियार जइसा हुवां-हुवां करने लगें ई छोकड़चोदा के चलते।"

"गांव इस तरह से बोलेगा तो काम गड़बड़ा जाएगा, मास्साब।" कन्हैया सिंह हैरान हैं देखकर कि गांव के बड़ों का हरदेव राम से भी बड़ा दुश्मन हरिद्वार पांड़े ही हो गए थे।

"हरिद्वार बाबा को रोल बदलना पड़ेगा। गांव को विश्वास नहीं है उनके ऊपर। हम सोचते हैं कि सुधाकर या दिवाकर पांड़े आगे आएं तो ज्यादा ठीक रहेगा।" दिनेश सिंह बोले।

"और हम कहते हैं कि अकेले फरियाने दीजिए बभनकटकी को।" रंगू सिंह ने कहा।

"ए भाई, हमको तो बड़ा अजीब लग रहा है आप लोगों का रवैया।" कन्हैया सिंह चिढ़ गए हैं, "ऐसा क्यों सोच रहे हैं आप लोग कि हरिद्वार पांड़े की लड़ाई है यह?"

"ऐसा इसलिए सोच रहे हैं," रंगू सिंह मोर्चे पर आ जमे हैं, "क्योंकि जब तक यह हरिद्वार पांड़े की लड़ाई है, नन्हकूआ को मौका नहीं मिलेगा हंगामा करने का, पार्टी जुटाने का। नहीं तो बड़का मजमा लगा देगा।"

"तो कहिए न कि गंड़फटको लगा हुआ साले बेपेंदी के लोटा के डर से?" आग-बबूला हो गए हैं कन्हैया सिंह, "नांव हँसवा दिए राजपूत जात का।"

"तो तुम क्या कह रहे हो?" अभी तक चुपचाप बैठे छबीला सिंह ने पूछा।

"हम कह रहे हैं कि इसको आखिरी और निर्णायक लड़ाई मानते हुए भिड़ जाया

जाए।" कन्हैया सिंह ने उकसाया।

"तुम यह कह रहे हो कि हरदेउवा हो जाए शहीद, नन्हकूआ हीरो और हम लोग फरार मुजरिम!" रंगू सिंह बीच में ही बोल पड़े।

"एक बात है, कन्हैया भाई! नन्हकूआ को हीरो बनने का मौका नहीं देना है। कोई ऐसा उपाय सोचना है कि उसको अलग रखते हुए ही हल निकल आए।"

छबीला सिंह की यही भूमिका है इस मंडली में—बहस के तापमान को नियंत्रित रखना।

कन्हैया सिंह सहमत नहीं हैं किसी ऐसे उपाय की खोज में निकल पड़ने को, जिसे खोजते-खोजते ही गाड़ी छूट जाए। लेकिन करें तो क्या करें! श्रीभगवान सिंह के पाले में चले जाएं? लेकिन श्रीभगवान सिंह के पाले में भी हालात बेहतर कहां थे!

"चूड़ामन पंड़इया की बेचैनी का कारण जानते हैं?" शिवजी पांड़े हँस रहे थे, "सोच रहा है जवान कि पच्चीस बिगहा टोपरा खरीदना बेकार हो जाएगा। सार विजय पांड़े से एगो घास उगाना भी पार नहीं लगेगा और मनी पर देने पर मनीदरहे ले जाएगा।"

"नौलाख महतोउवा भी अपना पोलटिक्स देख रहा है। सोच रहा है, रेज लाल हो गया तो 'हरा' लांड़ चाटने चला जाएगा।" श्रीभगवान सिंह कह रहे थे।

"अनजनवा भी इसीलिए बेचैन है।" बताया गया।

लल्लन सिंह दूर से ही करना चाहते हैं नजारा। उनके परिवार के ऊपर बोल छोड़ते थे गांव के ये दोनों पूंजीपति लोग जोगी सिंह और हरिद्वार पांड़े, कि कंट्रोल नहीं कर रहा था नन्हकू को। अब करें कंट्रोल! अपने लिए 'चित भी मेरी, पट भी मेरी' वाली स्थिति देख रहे थे लल्लन सिंह। दीया बुता जाए नन्हकू सिंह का तो कहना ही क्या और उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाए ये लोग, तो वे भी कहेंगे कि कुछ नहीं हो सकता इन लोगों से।

"गांव ठीक काम नहीं कर रहा, बचवा।" जंगी सिंह ने एक दिन अपना यह अंतस्ताप श्रीभगवान सिंह की दालान में रखा उनके सामने।

"हम तो तैयारे हैं, चाचा, कि हरिद्वार पांड़े निकालें अपना ट्रैक्टर और राइफल, तो चला जाए साथ-साथ और एक ही दिन में दूनो बिगहा जोत दिया जाए।" श्रीभगवान सिंह बोले।

"लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े वाले स्टाइल में।" चूड़ामन पांड़े ने समर्थन किया।

"तो बोलिए, बाबा! क्या बोलते हैं?" कलक्टर सिंह ने पूछा हरिद्वार पांड़े से।

"हमारा बोलना जरूरी है?" हरिद्वार पांडे मिरमिराए।

"सुधाकर पांड़े भर-जवार कहते चल रहे हैं कि गांव मउगड़ा हो गया है और आप बोलते हैं कि बोलना जरूरी है?" कलक्टर सिंह पिनक गए हैं, "आपको बोलना ही नहीं है कुछ तो सनका हुआ है गांव कि आपका झगरा अपने कपार पर ले लेगा? ई तो कहउता वाला हाल हो गया कि सांप के बीली में हाथ तू लगावै, हम मंतर पढ़ै तानी।"

"हगले गांड़ी परमेसरी आवेली!" आवाज आई दूरवाले कोने से।

टेंगर सिंह बोले थे।

"जाके पानी छू लेंगे करहवा में, तब तो आएंगी न टेंगर भाई?" शिवजी पांड़े को मजा आ गया है टेंगर सिंह का बोल सुनकर।

"जइबो मत करना। नन्हकू सिंहवा का मूत भरा हुआ है करहा में।" बंदरों की तरह खी-खी करते हुए खांसने लगे हैं टेंगर सिंह।

"हे भगवान! बेटा बकलंड, भाई भकचोन्हर!" माथा पीट लिया पल्टू सिंह ने।

"जिसका खून पानी हो जाता है, उसके मुंह में कुक्कुर ही मूतता है।" कलक्टर सिंह फनफनाए हुए चल पड़े हैं।

गांव में कही-सुनी जा रही बातों का ब्यौरा सुनकर नन्हकू सिंह की खुशी का ठिकाना नहीं है, "ई साले कुबेर के नाती का दिमाग फेल करवा दिए कि नहीं, दया बाबा? टेंगरो सिंहवा छेर आया मुंह पर।"

"हड़कंप मच गया है।" दयाशंकर बोले—सावधानीपूर्वक अपने चारों ओर देखते हुए। कोई यहां भी नहीं हो ऐसा जो इस दालान की बतकही दूसरी दालानों तक पहुंचा दे।

"सुधाकर पांड़े राइफल भांज रहे थे कि हाई कोर्ट जाएंगे, थाना बुलाएंगे। पचास मन धान के लिए साले जाएं होई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट। वकीलवा सब हगवा लेगा पचास हजार, बस मन मान जाएगा।" नन्हकू सिंह को जहां देखो, अपनी विजय-पताका फहराती हुई नजर आ रही है।

वैसे एक तमन्ना उनकी यह भी है कि जिस दिन ताकत आ जाएगी हाथ में, मनमाना फीस लेना बंद कर देंगे वकील लोगों का।

"जानते हैं, ई साला उदरपिचास सबके लिए काला लबादा पहनना काहे कंपलसरी कर दिया गया होगा?" नन्हकू सिंह कहते हैं, "आम आदमी को सावधान करने के लिए कि ये काली ताकतें हैं समाज की।"

"गांधीजी और नेहरूजी भी तो वकीले थे?" एक दिन शंका जगी जगनाथ के मन में।

"थे, इसीलिए न जगनाथबो गोबरपथनी और सिपाहीबो मछझोंकनी बनी हुई है।" विषाद की लकीरें खिंच गई थीं नन्हकू सिंह के चेहरे पर—"अब क्या बताएं आप लोगों को कि इसी देश में कैसे रहते हैं कुछ लोग कि जो पानी पीते हैं न आप लोग, गांड़ भी नहीं धोएंगे उस पानी से।"

"हरदेव ठाटेगा हरिद्वार बाबा के सामने?" दयाशंकर के मन का उथल-पुथल बोला। मन जो तय नहीं कर पा रहा था कि उसकी खुशी हरदेव राम की जीत में है कि हार में।

"नहीं ठाटेगा तो क्या करेगा?"

सवाल नहीं, झुंझलाहट थी यह।

"भाग जाएगा मैदान छोड़कर और क्या!" दमयंती को हँसी आ गई है नन्हकू सिंह के झुंझला उठने पर।

और उसे हँसता देख वहां मौजूद सभी हँसने लगे हैं सिवाय इंकलाब के। नन्हकूबो ने उसे यह देखते रहने का जिम्मा दिया है कि दमयंती के साथ नन्हकू का हँसना-बोलना बस वहीं तक सीमित है कि कुछ और भी हो रहा है।

"हमको लगता है कि रेज लोगों को ही घाटा होगा। मनी पर खेत देना बंद कर देंगे लोग।" दयाशंकर ने जवाब दिया नन्हकू के सवाल का।

"तब क्या किया जाए?" नन्हकू ने पूछा।

सवाल वाजिब था—'तब क्या किया जाए?'

"डरकर और चुप रहकर तो देख ही लिया गया इतने सालों तक।" झिझकते हुए दमयंती बोली। कहीं अपनी औकात और समझ से भी बड़ी बात तो नहीं बोल गई!

वाह रे रामगिरिही की बेटी! बड़ी जल्दी पहुंच जाना चाहती हो पतरफुनगी पर। कल तक जो सिखाया जाता था, केवल वही बोलती थी और अब जब कोई नहीं बोल पा रहा, तब बोलना आ गया! जगनाथ को लगता है, नन्हकू सिंह के दुआर पर मौजूद सभी के चेहरों पर हैरत का यही भाव है।

"डरना तो ठीक नहीं है।" दमयंती की हां में हां मिलाई दयाशंकर ने।

"ए महाराज, गरीबों को मारिये न गोली...भोंसड़ीवाले गरीब...साले हरदेव...आप कहते हैं, ठाटेगा हरदेव?...हम कहते हैं कि नहीं ठाटेगा तो क्या करेगा? गूह खाएगा उसके बाद? साले को बनिहार-चरवाह भी रखेगा कोई...क्रांतिकारी, कामरेड हरदेव को?"

"ईहो बात ठीके है।" छांगुर की नसों में बिजली-सी दौड़ गई है सामने की चुनौतियों की कल्पना कर, "हूबे नहीं है ठाटने का तो खड़ा काहे हुए? अब तो कोई पीछे हटा तो हमही मारेंगे।"

नन्हकू सिंह को यह साफ-साफ दिख रहा है, कि उनके सामने बैठा हर शख्स थोड़ा भयाक्रांत है। पता नहीं, क्या लगा है दांव पर कि इतना डरे हुए हैं साले! देखकर क्षोभ होता है नन्हकू सिंह को। पर लड़ाई भी तो इन्हीं के सहारे लड़नी है!

"जमीन पर कब्जा जमाने के पहले दुश्मन के दिमाग पर कब्जा जमाना होता है। उसे डराना होता है, उसकी हिम्मत तोड़नी होती है, उसमें हीनता-बोध पैदा करना होता है।" अपने अनुयायियों को समझाने की मुद्रा अपनाई नन्हकू सिंह ने—"जरा सोचिए, आप लोग कि देह से ताकतवर होने के बावजूद नकचिपटा को कोई पिलपिल, मरियल-सा राजपूत या बाभन गरिया देता है तो काहे चुप लगा जाता है नकचिपटा? इसीलिए न कि उन लोगों ने हीनता-बोध पैदा कर दिया है इसके अंदर, इसके दिमाग पर कब्जा जमा लिया है!"

अनुयायी सुन रहे हैं चुपचाप।

"ठीक बोले कि नही, दमयंतीजी?" अपनी बात कह लेने के बाद कुछ मसखरी

करना चाहता है नन्हकू सिंह का मन।

दमयंती के लजाकर चुप रह जाने पर जोर का ठहाका लगा दिया है दुआर पर बैठे लोगों ने।

दयाशंकर को ईर्ष्या होने लगती है नन्हकू के भाग्य पर। डकैतियों में चलना शुरू किया था तो लगता था, बस कुछ ही बरसों का मेहमान था। और यह कामरेडई की लाइन पकड़ ली थी—बेसिर-पैर की, बहकी-बहकी हुई बातें करता, तो भी अच्छी ही लगतीं उसके अनुचरों को।

"रामगिरिही भाई, आज हम सलाम कर रहे हैं न आपकी बेटी को, कल सारा इलाका करेगा।" घोषणा की नन्हकू सिंह ने।

अपनी जगह पर ही और सिकुड़ गई दमयंती। पर उसके अंदर छिपी किसी और दमयंती का अहसास जरूर जगा जाती हैं नन्हकू सिंह की बातें। एक मीठे आशावाद के उजाले में उड़ने लगती है दमयंती। और अच्छा लगता है उड़ते रहना। भला कौन चाहेगा, ऐसे बदबूदार अंधेरे में उतरना—जो उसका परिवेश था।

"आ गई हंड़वाकर..." उसके लौटते ही बरस पड़ी रामगिरिहीबो—"सबसे पहले तुम्हीं को काटेगा...और बाप-भाई को भी कटवाएगी...झोंटा पकड़कर लसारेगा हरिदुआर पंड़इया...नन्हकू-फन्हकू से नहीं उखड़ेगा उसका...उसका सोर पाताल में है, पाताल में..."

दमयंती ने कोई जवाब नहीं दिया तो रामगिरिही पर टूट पड़ी रामगिरिहीबो—"सब इसी मटीलगना के चलते हो रहा है...नट्टीन जइसा नचाते चल रहा है बेटी को।"

रामगिरिही का सिद्धांत है कि बेहिसाब बोलना चिन्हानी ही है औरत जात का। इसके लिए मारना-पीटना बेवकूफी का काम है—'ई बुड़बकाही वाला काम हम नहीं करते कि खिसियाकर कान-कपार फोड़ दें पहले, फिर अपने ही टेंट से पइसा निकालकर इलाज कराएं।' रामगिरिही कहते।

"काकी का बतीया आप सुन नहीं रहे, काका, लेकिन एकदम सही बात कर रही हैं।" अनजानाजी एक मचिया पर बैठे विल्स फिल्टर के छल्ले छोड़ रहे थे।

"ई मटीलगना को लगता है कि नन्हकूआ राजा बना देगा ई सबको।" रामगिरिहीबो चीखी, "समझा दो बबुई को कि ढेर दुख देगी तो जहर खा लेंगे हम।"

"जहर खाने का जरूरते नहीं पड़ेगा, बोलते-बोलते मर जाएगी।" अनजानाजी के पास जमीन पर ही थसक गए हैं रामगिरिही और उनकी उंगलियों में फंसी सिगरेट को निहार रहे हैं हसरत-भरी निगाहों से।

"सिकरेट इसको मत देना, बबुआ!" रामगिरिहीबो फिर चीखी है, "चिरौरी करेंगे नन्हकू सिंह का और सिकरेट पिएंगे..."

"नन्हकू सिंह का कहनाम है कि जो भी कह रहे हैं, सब लिखा हुआ है देस के कानून में। बेकानून बात नहीं बोल रहे।" रामगिरिही बोले।

"आप हमको देख रहे हैं कि नहीं, काका?" अनजानाजी ने सिगरेट बढ़ा दी है रामगिरिही की ओर, "आज तक एगो ढेला भी चलाए हैं किसी पर? किसी का हिस्सा

छीने हैं? लेकिन कौन बात का कमी है?''

'दलाल कहीं का!' मन करता है दमयंती का कि धक्का मारकर बाहर कर दे अनजाना को। पर उसी की बातों में रस मिलने लगता है रामगिरिही को। सिगरेट को चिलम की तरह सुड़कते, बेवकूफों की तरह सिर हिलाने लगते हैं उसी की बातों पर।

''हम कहते हैं कि साला गुस्सा किसके अंदर नहीं है? हमको अच्छा लगता है कि ये साले हमारे भाइयों को आदमी कम, चमार ज्यादा समझें? लेकिन तब है कि मकसद समाज को बदलना है, उसको खत्म करना नहीं न है!''

''दूसरों का जूठन खाकर और छाड़न पहनकर खुश रहने वालों से समाज नहीं बदलता!'' रहा नहीं गया दमयंती से। भीतर खदकता लावा बाहर आ गया। मनोरमा मिश्र की चमचागिरी कर हरिजन-कल्याण के नाम पर फर्जी संस्थाएं खोल रखी थीं इस आदमी ने। जेल भी गया था महिला छात्रावास की लड़कियों से वेश्यावृत्ति कराने के आरोप में। पता नहीं कैसे-कैसे कागजी अभियानों के नाम पर पैसा झींटते रहता था सरकार से...और बड़ी-बड़ी बातें बघार रहा है!

''देख रहे हो! देख रहे हो न इसका बोली!'' रामगिरिहीबो चीखी, ''दूसरा बाप होता तो अंहड़ देता ई बोलीया पर।''

''ए भाई, कानूने में लिखा है कि अपना-अपना बात कहने का आजादी है आदमी को।'' रामगिरिही बोले।

'एकदम मस्त माल हो गई है, साली!' जलती आंखों से अपनी माई को घूरती दमयंती पर टिक गई हैं अनजानाजी की प्यासी आंखें। रात को सपना बनकर आएगी यह तमन्ना कि उनकी सेक्रेटरी की तरह उनके पीछे-पीछे चल रही है दमयंती और साले बड़े-बड़े नेता लोग रश्क कर रहे हैं उनकी किस्मत पर कि ऐसा नायाब मोती कहां से मिल गया अनजानाजीउवा को!

''नया-नया में नहीं बुझाता, काका! दिमाग उड़ते रहता है।'' बुरा नहीं मान गए होने का बड़प्पन दिखाते हुए कहा अनजानाजी ने, ''नहीं तो, दमयंती ही पूछती नन्हकू सिंह से कि हरिद्वार पांड़े को सोझियाने के पहले ई काहे नहीं आया उनके दिमाग में कि प्रभुदयाल सिंह का बगीचा, जो गैरमजरुआ जमीन पर है, उसको बांट दिया जाए भूमिहीनों में?''

''वह भी बंट जाएगा।'' दमयंती बोली, ''आप जाइए, चलाइए अपना कोचिंग क्लास।''

''हम भी देखबे न करेंगे कि चाभने को कितना आम मिलता है हमारी बबुई को।'' रामगिरिहीबो बोली।

'बस भेंटा जाओ एक दिन...ऊ रगड़ान रगड़ेंगे पटककर कि...' मन ही मन उन उपायों की तलाश में खो गए हैं अनजानाजी, जो घुटनों पर ला गिराए इस मस्त माल को।

''अनजाना अनाप-शनाप बोलते चल रहा है, बाबा!'' सोचा था, नन्हकू सिंह को बताएगी, पर दयाशंकर दिख गए तो रहा नहीं गया दमयंती से।

"क्या बोल रहा है?"

"बोल रहा है कि प्रभुदयाल सिंह का बगीचा क्यों नहीं बंटवा देते नन्हकू सिंह।"

"सो तो सारा गांव कह रहा है।" दयाशंकर ने कहा, "पर असली समस्या यह नहीं है। असली समस्या यह है कि हरिद्वार पांड़े जबरदस्ती घुस गए खेत में, तब क्या होगा?"

"जबरदस्ती कैसे घुस जाएंगे?"

"प्लान तो कुछ ऐसा ही है।"

"नन्हकू सिंह क्या बोले?"

"पूछा नहीं है अभी उनसे।"

मन में आया कि कहे कि लड़ा जाएगा, पर चुप्पी ओढ़ ली। युयुत्सा कभी नजर भी तो आए दयाशंकर में!

"बात करना पड़ेगा नन्हकू सिंह से।" दयाशंकर ने भी नहीं बताई अपने मन की बात।

रंगू सिंह और छबीला सिंह पीछे पड़े हुए थे दयाशंकर के कि किसी तरह बिगड़ने से बचाएं हालात को। उन्हें विश्वास है कि नन्हकू सिंह सुनेंगे उनकी। दयाशंकर अगर कहें भी कि एक बार ठान लेने पर किसी की नहीं सुनता नन्हकू सिंह तो उन्हें लगेगा कि बहाना बना रहे हैं।

"हरदेउवा बरजोरी नहीं बतिया रहा है, बाबा?" छबीला सिंह उन्हें घेरने की फिराक में हैं।

"हरिदुआर काका भी तो एकदम चमरचीट ही न हो गए हैं। ई नहीं कि कुछ दे-दिलाकर फुसिला लें...बस, अड़ियाए हुए हैं।" दयाशंकर कोशिश करते हैं बिना कोई वादा किए जान छुड़ाने की।

"मान लीजिए कि दूसरे जगह दू बिगहा खेत दे देंगे हरिद्वार पांड़े तो छोड़ देगा खेत?" छबीला सिंह समझ रहे हैं कि असली मुद्दे को टालना चाह रहे हैं दयाशंकर पांड़े।

"हरदेउवा मान जाएगा, लेकिन नन्हकू सिंहवा मानेगा कि नहीं..."

"अच्छा तो सुन लीजिए एगो हमारा भी बकतंग।" अपनी चिरपरिचित भाव-मुद्रा में आ गए हैं रंगू सिंह—"नहीं मानेंगे तो इस बार टायर पंचर हो जाएगा उनका। बता दीजिएगा कि नारद सिंहवा का पार्टी तैयार हो रहा है।"

"आप नहीं बता सकते?" दयाशंकर हँसे।

"हम नहीं बात करते मनसहका आदमी से।"

"मने मन डेराए हुए हैं, सो नहीं कहते रंगू बाबू।" दयाशंकर हँस रहे हैं।

"अरे, हम तो अनेरिया-बनेरिया आदमी, हमको तो सबसे डरना है...कोई भी डपट दे। बाकी आपको बता देते हैं कि कमजोर मत समझिए उस पार्टी को भी। हँसना भुलवा देगा।"

अब छबीला सिंह भी हँसने लगे हैं रंगू सिंह की बात सुनकर।

"गलत कह रहे हैं?" रंगू सिंह ने एक रोचक मोड़ दे दिया बतकही को, "दयाशंकर बाबा को तो चूड़ामने पंड़इया दू तबड़ाक देगा ढेर बोलेंगे तो।"

"हरिद्वार काका से भी ज्यादा बेचैनी उन्हीं को है।" दयाशंकर को भी अच्छा लगा है यह मोड़।

"डर रहे हैं बेचारे कि गणपति बाबा और विजइया का हिस्सा भी हड़प लेंगे दयाशंकर।"

"डर किसी से नहीं रहे हैं, छबीला भाई। सोच रहे हैं कि बदनाम कर दें दयाशंकर को।" दयाशंकर बोले।

"उनके सोचने से होगा?" छबीला सिंह ने अपनत्व के भाव से कहा।

दयाशंकर के साथ बोल-बतियाकर हिम्मत मिलती है छबीला सिंह को। यह विश्वास बलवान होता है कि कुछ लोग उस तरफ भी हैं, जो कोई बड़ा उथल-पुथल नहीं होने देंगे। विचारधारा के सवाल पर दयाशंकर के साथ कभी कोई बहस नहीं करते छबीला सिंह। कभी-कभी कन्हैया सिंह या सत्यनारायण सिंह छेड़ भी देते वामपंथी उग्रवाद के औचित्य-अनौचित्य का जिक्र, तो बंद करा देते उसे। 'हासिल क्या होना है?' बाद में समझाते उन्हें—'कबिरा एहि संसार में भांति-भांति के लोग!' भला इस संसार में जानता है कोई कि वह जैसा है, क्यों है? कभी-कभी जो लगता है कि जानते हैं, वह भी एक विभ्रम की अवस्था ही होती है।

छबीला सिंह को एक सज्जन, शीलवान और सोच-समझकर बोलने और काम करने वाले आदमी के रूप में जाना जाता है गांव में। भाई नौकरी कर रहे हैं, बच्चे पढ़ रहे हैं, घर की औरतें रहनदार हैं। छबीला सिंह एक संतुष्ट व्यक्ति हैं। फुर्सत के क्षणों में रामचरितमानस, कल्याण और 'मानस शंका समाधान' पढ़ना या दिनेश सिंह की दालान में चले आना।

रामझान पांड़ेबो को भी छबीला सिंह से ही उम्मीद रहती है कि समझाएंगे दयाशंकर को कि जिम्मेदार आदमी को कैसा होना चाहिए। कभी-कभी कहती भी हैं दयाशंकर से कि घर के मालिक को छबीला सिंह जैसा होना चाहिए। पर मति मारी गई हो जिसकी, उसे साक्षात् भगवान का समझाया भी नहीं आता न समझ में। आज बहुत गुस्सा आ रहा है उन्हें दयाशंकर के ऊपर। समूचा गांव खौला हुआ है। तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही हैं। और दयाशंकर हैं कि सुबह से ही गायब हैं।

"कोई पहली बार हो रहा है ऐसा कि कपार पकड़कर बैठी हो?" विमला खीज गई है उनके चिंतातुर होने पर, "दारू ढरका रहा होगा नन्कूआ के दुआर पर, चाहे दमयंतीया का नकबोल निहार रहा होगा...गोसंइयाबो पर पहरा हो गया तो दूसरा खोजेगा न कोई!"

"तुमसे कौन बोला रे रांड़ी, कि कपरबथी है हमको?" नहीं चाहते हुए भी बौखलाकर अप्रिय बोल जाती हैं रामझान पांड़ेबो। और देर तक अफसोस करती रहती हैं। अवश आवेश से तमतमाए हुए विमला के चेहरे में भरी अछोर बेचारगी दिखाई देने लगती है। मन करता है कि उसे इस तरह छुपा लें अपनी गोद में कि किसी और को

दिखाई ही नहीं दे वह। केवल उन्हें महसूस होती रहे उसकी मौजूदगी।

रात अपनी जानी-पहचानी धुन गुनगुनाने लगी थी। विभूति पांड़े लाठी टेकते हुए अपनी मड़ई में जा रहे थे खाना खाकर। शिवजी पांड़े अपनी छत पर टहल रहे थे लंबी-लंबी ढेंकार छोड़ते। कोनेवाले कमरे में बंधी भैंस सींग रगड़ रही थी खूंटे से। गणपतिबो सो गई थीं खा-पीकर—तुलसी माई के चबूतरे पर जलते दीये में अपनी जिजीविषा पिरोकर। चूड़ामन पांड़े की छत पर जगरम हो रहा था।

"ई भला गांव घूमने का टाइम है?" बोलने के बाद देखा रामज्ञान पांड़ेबो ने कि किताब खुला छोड़कर पढ़ते-पढ़ते ही सो गई थी चेतना। लालटेन एक तरफ झुकी हुई थी।

"सबका सब एक ही जैसा।" दौड़ी हैं लालटेन को खटिये से नीचे रखने के लिए। एक ही साथ कई चिंताएं दौड़ी हैं उनकी ओर—जल जाती तो?...कितना किरासन बर्वाद हो गया! इसका भी मन नहीं लगता पढ़ाई-लिखाई में...कहीं सच तो नहीं बोल रही थी रमवती कि एक दिन विजइया के फटफटिया पर बैठकर गई थी स्कूल...

"माई!"

आवाज सुनकर चौंक गईं एकदम से।

'ए राम!' उन्हें लाज लगने लगती है अपने इस तरह अकारण ही बेढंगे खयालों में अपने डूब जाने पर। अपना बूढ़ा और बेमतलब होते चले जाना खड़ा हो जाता है आंखों के सामने अंदर से प्रकट होकर। पूजना तेलीया की माई जैसा—डरावना, घिनौना।

उसे देखते ही गरियाने लगते गणपति पांड़े—"भागती है कि लिलकारें रामपिअरीया को?"

जमीन पर थसकी हुई वह बाहर की ओर निकली हुई बड़ी-बड़ी मटमैली आंखों से देखने लगती ओसारे में सुस्ताती कुतिया को।

"डाईन कर रही है क्या रे बेटीफोरवनी?" गणपति पांड़े जमीन पर लाठी पटकते हुए चीखते।

जवाब में फांय-फांय करता हुआ-सा कुछ निकलता उसके मुंह से। रामज्ञान पांड़ेबो जान जाती थीं, क्या कह रही थी वह—'देख रही हो, बाचाबो, भुसावलवाली के जमलका को?'

"खाना हम नहीं खाएंगे, माई।" चापाकल पर हाथ-मुंह धो रहे थे दयाशंकर।

उन्हें लगता है, अपना मुंह जानबूझकर दूसरी ओर कर रखा है दयाशंकर ने। 'जाने दो, इतना लिहाज तो है कम से कम कि मां-बाप के सामने नहीं आना चाहिए पीकर।' ढाढ़स देती हैं अपने-आपको।

"पूजना की माई मर गई, माई।" कुल्ला करते हुए बोले दयाशंकर और रामज्ञान पांड़ेबो को विश्वास ही नहीं हो रहा अपने कानों पर। अभी कुछ ही क्षणों पहले तो उसका खयाल आया था दिमाग में। कल शाम को ही तो हाथ नचा-नचाकर, बड़ी-बड़ी कीचड़-भरी आंखें मटका-मटकाकर अपनी पतोह की शिकायत कर गई थी— '...फाली मफदवे के फेवा-फत्कार में फहती है...नेदुईन फै...'

पूरब टोल की ओर लग गए हैं उनके कान। हल्का-सा आभास भी नहीं है कहीं रोआं-रोंहट का। यह कैसा जीना हुआ कि जाओ तो रोए भी नहीं कोई! यह क्या गांव हुआ कि सदा के लिए जा रहा है कोई और ढेंकार छोड़ रहा है निश्चिंत भाव से!

"लग रहा है कि पूरा पूरब टोल मर गया।" गुस्सा आ गया है उन्हें।

"मत पूछो। पूजना कहने लगा कि बक्सर-बनारस ले जाने का पइसा नहीं है, यहीं बथान में फूंकेंगे। नन्हकू सिंहवा बिगड़ा तो तैयार हुआ बक्सर ले जाने को।"

"पूजना बोला कि पइसा नहीं है?"

"तब नन्हकू सिंहवा बिना एक सेकेंड सोचे हजार का गड्डी फेंक दिया—मन करे तो लौटाना, नहीं तो समझेंगे, किसी अपने के काम आया।"

"पूजना अइसा बात बोल दिया हो?"

"तो आश्चर्य क्यों हो रहा है तुमको? इनके चूड़ामन बबुआ नहीं बोल दिए कि पैसा नहीं है इलाज का?"

जबड़े कांप रहे थे रामज्ञान पांड़े के। कुछ कहना चाहते थे शायद।

"हम नहीं मरे हैं अभी कि इतना उदास हो गए।" जाकर उनके सिरहाने बैठ गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो। हाथ फेरने लगी हैं माथे पर। उनके जबड़ों का कांपना बंद हो गया है।

"बहुत हुड़गड़ाम सुन रहे हैं, बबुआ। तुम्हारा हाथ नहीं न है हरिदुआर पांड़ेवाले झगड़े में?" सोने की तैयारी करते देखा दयाशंकर को तो उन्हें याद आया कि असली बात पूछना तो भूल ही गई थीं।

"यही चूड़ामन भाई साहब प्रचार करते चल रहे हैं कि सब हमारा काम है।" चादर मुंह पर खींचते हुए कहा दयाशंकर ने, "समझते हैं, चालाकी कर रहे हैं और गांव थूक रहा है।"

'पता नहीं, क्या चाहता है ई दोनो मरद-मेहरारू।' रामज्ञान पांड़ेबो की निगाहें चूड़ामन पांड़े की छत की ओर चली गई हैं। पेट्रोमैक्स की रोशनी में आठ-दस लोग बैठे दिखाई दे रहे थे। पता नहीं, किस-किसको बुला रखा है! क्या षड्यंत्र कर रहा है!

"अफरात पइसा है ई सबके पास, बबुआ! फायदा नहीं है अझुराने में।" बोलीं।

जवाब नहीं दिया दयाशंकर ने। सो गए थे शायद।

सरकार के लिए जागने का वक्त था यह।

संविधान उन्नीस सौ पचास से ही कह रहा था, पर अमेरिका, यूरोप वगैरह भी कहने लगे कि प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण जरूरी है तो सरकार ने कहा, भई, बहुत हो गया आराम, अब कुछ काम होना चाहिए। और जब सरकार कहती है ऐसा, तब नौकरशाहों को मौका मिलता है यह कहने का कि एक अभियान की घोषणा कर दी जाए। सरकार में यह रिवाज नहीं है पूछने का कि जब काम अभियानों से ही होने हैं, तो सारे कामों को अभियानों का ही रूप क्यों नहीं दे दिया जाए?

अभियानों का असली मजा इस तथ्य में निहित होता कि पैसा विदेशों से आता और देश में खाया जाता मिल-बांटकर। तो जब घोषणा हुई कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की परियोजना गुनी प्रखंड में भी कार्यान्वित की जानी है, तब अवधेश चौधरी हंकड़कर बोले—"जवार में कोई है मइयाचोद, जो बता दे कि पहले भी हुआ है इतना बड़ा काम? जिन साले अंगरेजों ने लूटा हमको, उन्हीं के सबसे बड़े बैंक का पैसा खाएंगे और हिसाब मांगेंगे तो फोद थमा देंगे..."

मंधाता मिश्र ने कहा, "एक अलग तरह का उपनिवेशवाद है यह भी। विदेशी पूंजी से देशी दिमाग पर कब्जा करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र!"

"जाके बंगाल को काहे नहीं सिखाते हैं यही बुद्धि?" सुना तो गरमाए अवधेश चौधरी, "बंगलीया सब तो अपने 'दिल का दरवाजा, खुल्ला है राजा' गाते चल रहा है और ई वकील राम आए हैं गुनी में फुटानी करने।"

"एकदम ठीक कहा गया, अवधेश भाई।" अनजानाजी बहुत देर तक हँसते रहे अवधेश चौधरी के वक्तव्य की तारीफ में, "जिसको लतरी हाथ नहीं हो, दहीना हाथ से पानी नहीं छूएगा?"

जब से देश के एक प्रधानमंत्री ने यह माना था कि उनका छोड़ा सौ पैसा जनता तक दस पैसा बनकर पहुंचता था, सरकार इस समस्या के प्रति भी संवेदनशील हो गई थी कि सरकारी अभियानों में आम जनता की भागीदारी किस प्रकार सुनिश्चत की जाए? अधेड़ नौकरशाह डांटने लगे युवा नौकरशाहों को कि परियोजनाओं के क्रियान्वयन में पॉपुलर पार्टिसिपेशन सुनिश्चित नहीं किया जा रहा था। जैसे ही एक और परियोजना लक्ष्य-प्राप्ति के पहले ही दम तोड़ने लगती, सरकार के बड़े-बूढ़े मुंह लटका लेते कि पॉपुलर पार्टिसिपेशन सुनिश्चित नहीं किया गया। कोई नई परियोजना शुरू की जाती और प्रेस वगैरह के द्वारा पूछा जाता कि क्या गारंटी है कि यह भी लक्ष्य-प्राप्ति में विफल नहीं होगी, तो बताया जाता कि पॉपुलर पार्टिसिपेशन पर बल दिया गया है इसमें।

पॉपुलर पार्टिसिपेशन का व्यावहारिक अर्थ यह था कि प्रखंड, पंचायत और ग्राम स्तर पर समितियां बना दी जाएं, जिनमें उन्हीं प्रखंडों, पंचायतों और ग्रामों के लोग रहें। कुछ महिलाएं रहें, कुछ अनुसूचित जातिवाले रहें। परिणाम यह हुआ कि एक और काम आ गया सरकारी अधिकारियों के जिम्मे। माकूल लोग खोजे जाएं इन समितियों के लिए, जो खिचखिच नहीं करें, जो कहा जाए, सुनें। और उन्हीं की तरह मानकर चलें कि बेकार का पचड़ा है समिति-फमिति, होगा वही जो होता रहा है। जनता-जनार्दन पहले से ही माने बैठी होती कि फालतू के कुक्कुरघाउंच में पड़ना है किसी समिति का सदस्य बनना। सो हर गांव में कुछ गिने-चुने लोग होते जो इस तरह की सभी समितियों के सदस्य होते। सरकारी अधिकारी नहर की कच्ची सड़क की धूल से बचने के लिए मुंह पर गमछा लपेटे, फटफटिया पर बैठे-बैठे दुखने लगे चूतड़ के कारण लंगड़ाते हुए लोक-भागीदारी का संदेश लेकर पहुंचते तो उन्हीं कुछ लोगों के नाम बता देते गांववाले। अधिकारी लिख लेते उनके नाम और कभी-कभी तो बिना उनसे मिले हुए ही वापस

चले जाते। जिन लोगों को रख लिया गया होता समिति में, उन्हीं से अनुरोध किया जाता कि कुछ गांववालों के हस्ताक्षर या अंगूठे के निशान ले लें इस प्रस्ताव पर कि उनका चयन गांवसभा की बैठक में किया गया था।

कैसी कमाल की चीज है यह अंगूठे का निशान—यह श्रीभगवान सिंह की तरक्की से जाना था कुंवरपुरवालों ने। नई-नई प्रैक्टिस शुरू हुई थी गुनी ब्लॉक में तो कोई कागज लेकर पहुंच जाते चमटोली, कमकरटोल या नोनियाटोली और अंगूठे का छाप लेना शुरू कर देते। कोई पूछता—'ई का चीज है, मलिकान?'

तो एक रहस्मय मुस्कान छोड़ते हुए मुंह में भरी खैनी की पीक पच्च से थूकते और कहते—'इसी के बदले में एगो हाथीछाप दे देंगे तो क्या कहोगे इसको?'

'प्रभुजी का लीला, ए मलिकान।' अंगूठे के निशान बरसने लगते।

फिर ऐसा हुआ कि कुछ लोगों को लगने लगा कि सही कीमत नहीं लगाई जा रही थी उनके अंगूठे के निशान की और मुंह चमकाने लगे। कहने लगे कि 'खाली एगो हाथीछाप से काम नहीं चलेगा' तो श्रीभगवान सिंह की नजर अपने अंगूठे की ओर चली गई। क्या नहीं है इसमें, जो दूसरे अंगूठों में है? और लोग फिर मंडराने लगे उनके इर्द-गिर्द—'सेवा का मौका दिया नहीं जाएगा, मलिकान?' मन होता तो दो-चार को दे देते सेवा का मौका, वरना लालटेन जलाकर स्याही लेकर खुद ही बैठ जाते चौकी पर। कागज फैला देते सामने और लगाते जाते ठप्पे। दालान के बाहर खड़े लोग देखते रह जाते लार चुआते हुए।

तो कुंवरपुर में यह तय रहा था कि कोई समिति ऐसी हो, जिसमें माल बनाने का स्कोप हो, तो उसके अध्यक्ष श्रीभगवान सिंह हो जाते और जिस समिति में ऐसा कोई स्कोप नहीं होता, उसकी अध्यक्षता देवता पांड़े को सौंप दी जाती। देवता पांड़े 'रसरी आवत-जात ते सिल पर परत निसान' के आदरणीय आशावाद के साथ अपना नया दायित्व सम्हाल लेते।

प्राथमिक शिक्षा परियोजना के लिए एक ऐसी ही ग्राम-स्तरीय समिति बनाने का संदेश पहुंचा तो कुंवरपुर हरिद्वार पांड़े-हरदेव राम विवाद के दिनानुदिन बढ़ते तापमान की चपेट में था। कोई और वक्त होता तो मान लिया जाना कि स्कूल-तस्कूल बनवाना है, रुपया-पैसा बांटना है, सो श्रीभगवान सिंह ही सम्हाल लें यह बागडोर। पर बदले हुए माहौल का बदल जाना तब और भी शिद्दत से महसूस किया श्रीभगवान सिंह के खेमे ने, जब पता चला कि ब्लॉक ऑफिस में पहले ही एक दरखास्त पड़ चुकी थी कि श्रीभगवान सिंह को समिति में नहीं रखा जाना चाहिए!

"इसी को न कहते हैं, बाबा, लंगई!" श्रीभगवान सिंह ने चूड़ामन पांड़े से कहा।

"हम तो, भाई, कब से कह रहे हैं कि कंट्रोल नहीं किया गया तो बिगड़ जाएगा मामला।" चूड़ामन पांड़े का मुंह लटक गया है।

"बता देते हैं आपको...खाली पता-भर चल जाए हमको कि किसका हैंडराइटिंग है।" श्रीभगवान सिंह के हाथ में उस दरखास्त की छाया-प्रति झूल रही है जो ब्लॉक

ऑफिस में दी गई थी, "गट्टा नहीं उतरवा लिए तो नाम बदल देंगे।"

लोग उत्सुक हो गए हैं जानने को कि किसकी हैंडराइटिंग है।

"दमयंतीया का है।" कलक्टर सिंह का महेंदरा किलक उठा है, "एकदम सोरहो आना उसी का है!"

"है तो का है रे बेटीया..." जोगी सिंह गरजे, "कोई मार-काट का बात करेगा हमारे दुआर-दालान में तो ठीक नहीं होगा!"

"आप ही लोग डुबाइएगा।" श्रीकमल सिंह को गुस्सा आ गया है अपने बाप के व्यवहार पर, "उधर हरिद्वार पांड़े सटकाए हुए हैं पोंछ और इधर..."

"हम का कहें, ए जंगी भाई!" और भी तैश में आ गए हैं जोगी सिंह, "रामबिलसवा और हरिदुअरवा का परिवार बुड़बक बना रहा है ई सबको। तरकूल पर चढ़ा दिया है ई सबको और अपने बील में लुका गया है।"

"धरम कहता है कि जो भी बोले, गांव एक साथ बोले।" जंगी सिंह ने अपनी समझ से एक बहुत बड़ी बात कही।

"गांव नहीं बोलेगा तो चुप लगा जाएंगे हम?" श्रीभगवान सिंह गरजे।

"फालतू का बहस छोड़िए आप लोग। रामगिरिही और दमयंतीया को बोलवाइए यहां कि क्या सोचकर लिखी।" चूड़ामन पांड़े ने कहा, "और जो-जो सहमत नहीं हैं, उनसे कहा जाए कि हाथ उठाएं और अपने घर जाएं।"

नवहों की टोली में उमंग की तरंग दौड़ गई है चूड़ामन पांड़े का प्रस्ताव सुनकर।

बर्दाश्त नहीं हुआ जोगी सिंह से तो चले गए उठकर।

"लंगटे घुमा दिया जाए साली को गांव में।" महेंदरा बोला।

"रामगिरिहीया हुड़ूका बजाएगा और दमयंतीया नाचेगी।" गौरीशंकर ने कहा और एक झन्नाटेदार तमाचे के झटके से उबरने के बाद देखा कि किसी ज्वरग्रस्त मरीज की तरह कांप रहे थे रंगू सिंह।

"तुमको इतना ताकत हो गया है, रे बहनचोद, कि लंगटे नचाएगा किसी की बेटी को? तुम्हारी बहिनिया को नचाएगा कोई तो कैसा लगेगा, रे बाहनचोद?"

"तो ई मत बूझिए कि नहीं नचाएगा।" गौरीशंकर चीखा सिर के उस हिस्से को सहलाते हुए, जहां लगा था तमाचा।

"एक बात आपको बता देते हैं, चूड़ामन बाबा कि अपना भ्रष्ट दिमाग अपने ही पास रखिए।" रुख चूड़ामन पांड़े की ओर किया रंगू सिंह ने, "हमारे बाल-बच्चा को बिगाड़िएगा तो जो नहीं होना चाहिए, हो जाएगा!"

"हम कह रहे थे कि नहीं, रे बेटीयाचोद?" जोगी सिंह हांफते हुए वापस आ गए हैं दालान में, "कह रहे थे कि नहीं कि ई सब बात मत करो यहां?"

"अन्हरीया मजिस्ट्रेट है रंगू सिंहवा।" वातावरण को सहज बनाने के लिए कहा जंगी सिंह ने, "बिना जिरह सुने, फैसला सुना देता है।"

रंगू सिंह बिना कोई जवाब दिए चल पड़े हैं वहां से। नालायक औलादों का दुःख

फिर हरा हो गया है।

रंगू सिंह को तोड़कर रख देता है यह दुःख। गौरीशंकर सिंह को 'धुआं सिंह' कहकर पुकारते हुए सुनते किसी को तो लगता, उंगली घुसेड़ दिया हो किसी जिंदा जख्म में। लेकिन लोग तो वही कह रहे थे, जो सच था। और अब तो सर्वेश सिंह का भी एक नाम पड़ गया था—'रसिकजी!'

"आप ही बताइए न, मास्साब, क्या करे आदमी इन लोगों को आदमी बनाने के लिए? ताला लगाकर नहीं न रख सकता घर के अंदर? अपने समाज से बचकर कहां जाए कोई?" लगता, रो पड़ेगे रंगू सिंह। उनकी आंखें डबडबा जातीं।

दिनेश सिंह और छबीला सिंह जैसे लोग कह देते कोई मलहम जैसी बात, पर किसी-किसी दिन चोट पहुंचाने वाली बात भी कह जाता कोई—"इसी समाज में रहकर देवता बाबा की बेटी टॉप कर सकती है, छबीला सिंह का बेटा पढ़ सकता है...और आपके बेटे का दुश्मन हो जाता है यही समाज?"

"एक-दू गो अपवाद का उदाहरण देकर तुम सच्चाई को झूठ बना दोगे, रे बेईमान कहीं का?" व्यथित होकर ऊटपटांग बातें करने लगते रंगू सिंह।

गौरीशंकर सिंह को इस बात का कोई गम नहीं है कि उसके पिता क्या सोचते हैं उसके बारे में। उसकी मंडली के किसी भी सदस्य को कोई गम नहीं है अपने पिताओं की दुश्चिंताओं का। यह मंडली, जिसमें जोगी सिंह के श्रीकमल सिंह के अलावा कलक्टर सिंह का महेंदरा, रंगू सिंह के गौरीशंकर सिंह, लल्लन सिंह के टुनटुन सिंह, दूधनाथ सिंह के आमोद सिंह, हाकिम सिंह के मनोज सिंह इत्यादि शामिल हैं, नारद सिंह को सद्दाम हुसैन और कर्नल गद्दाफी की तरह फलते-फूलते देखना चाहती है। जब भी वीरप्पन को पकड़ने में सरकारी तंत्र की विफलता की खबर आती है, मंडली खुश हो जाती है। जब भी कोई कैदी हाजत या जेल से फरार होता है, मंडली जयजयकार कर उठती है। जब भी किसी मुठभेड़ में हताहत होने वाले पुलिसकर्मियों की संख्या अपराधियों से अधिक होती है, इस मंडली को सुकून मिलता है। फिल्मों में जब कभी भी पुलिसवालों को नकारा और बेवकूफ दिखाया जाता है, मंडली का ताली बजाने का मन करता है। मंडली मानती है कि खलनायक ही नायक है इस युग का।

राज्य लोक सेवा आयोग में धांधलियों की खबर आती है तो संतोष होता है मंडली को कि कोई गलती नहीं कर रही थी किताब-कॉपी को लात मारकर। जब भी कोई मंत्री या नौकरशाह जेल जाता भ्रष्टाचार के आरोप में, मंडली का भरोसा और पक्का हो जाता कि नैतिकता बस दिखावे की चीज रह गई थी। मंडली 'नूतन कहानियां' और 'सच्ची कथाएं' पढ़कर आश्वस्त हो जाती कि सारा संसार रस का लोभी था। मंडली नहीं मानती कि फैशन शो देखने जाने वाले फैशन देखने जाते हैं; कि दारू पीकर बड़ी-बड़ी पार्टियों में थिरकने वालों की संभ्रांतता बड़ी होती है दारू के नशे से। मंडली नहीं चाहती कि उपदेश दे कोई। जिंदगी से संजीदा शिकायत तभी होती है मंडली को, जब साली दारू जैसी चीज के लाले पड़ जाएं।

मंडली के हर सदस्य का पिता सोचता कि मंडली का हर दूसरा सदस्य उसके बेटे को गुमराह कर रहा था। मंडली, लेकिन, एकमत थी कि असमय ही सठियाने लगे थे उनके पिता।

"जानते हैं, चूड़ामन बाबा!" चूड़ामन पांड़े का संताप हरने के लिए श्रीकमल सिंह बोले, "कुंवरपुर के बड़का लोगों को रेज और नन्हकूआ से ज्यादा ईर्ष्या-द्वेष एक-दूसरे से ही है। और इसी में मारे जाएंगे एक दिन।"

"इसमें भी हमारे अनुज दयाशंकर का ही असली रोल है। आजकल घंटों बैठकी चल रही है रंगू सिंह और छबीला सिंह के साथ।" चूड़ामन पांड़े ने आहत हो गए होने की-सी भाव-मुद्रा ओढ़ रखी है।

"ई साला सब मिलजुलकर फैसला किया है कि श्रीभगवान सिंह का नेतागिरी भुलवा देना है।" शिवजी पांड़े सांय-सांय करती-सी आवाज में बोले।

"माने कि नन्हकूआ से मिल गया है?" श्रीभगवान सिंह ने पूछा।

"नन्हकूआ से नहीं मिला है, पर प्लान यही है कि श्रीभगवान सिंह को नीचा दिखा दिया जाए।" शिवजी पांड़े ने कहा।

"केवल श्रीभगवान सिंह को ही नहीं, हमको भी।" चूड़ामन पांड़े बोले, "गोसाई पंड़इया बोल छोड़ रहा था कि आखिर कितना दिन चलेगा जगरम।"

"हम कहते हैं कि ई ससुरी दू कौड़ी की समिति का परधान नहीं बनेंगे तो मर जाएंगे सिरीभगवान?" जोगी सिंह फिर खो बैठे हैं आपा।

"जहां तक हमको सुनने में आया है, जगदीश सिंह का नाम समिति के अध्यक्ष के लिए बढ़ा रहा है ई लोग।" जोगी सिंह के गुस्से को नजरअंदाज करते हुए सूचना दी शिवजी पांड़े ने, "कम दिमाग नहीं लगा रहा है।"

"देखिए, हम चेता रहे हैं आप लोगों को कि सारा दिमाग दयाशंकर का है!" चूड़ामन पांड़े बोले।

"सब बुझिए रहे हैं तो फरिया काहे नहीं लेते हैं दयाशंकर से? लाद दीजिए साले पर दस कित्ता केस।" जोगी सिंह फिर टपके बीच में।

"रहिए न भाई, गजब किए हुए हैं आप तो!" जोर से झुंझला उठे हैं श्रीभगवान सिंह, "देख रहे हैं कि साला प्रौबलेम बढ़ते जा रहा है और..."

"कोई दम नहीं है प्रौबलेम में, भइया।" महेंदरा ने प्रस्ताव रखा, "एक दिन बोलाइए नारद सिंहवा को, दिवाली मनवा दिया जाए सारघेंटी सबकी।"

"करने वाले को बोलना कम चाहिए।" जंगी सिंह ने डांटा।

"उन लोगों के कैंडिडेट जगदीश सिंह हैं तो हम लोगों के ओमप्रकाश अनजाना।" श्रीभगवान सिंह ऐसे उत्साहित हो गए हैं यह घोषणा करते हुए मानो अकस्मात् कोई कुंजी मिल गई थी सफलता की, "अनजानाजीउवा बनेगा प्रधान!"

"तो बनने दीजिए न।" नन्हकू सिंह को बेतरह गुदगुदा गई है यह खबर।

"अनजाना को?" दमयंती को विश्वास नहीं हो रहा अपने कानों पर।

"साले श्रीभगवान सिंह तो नहीं बनेंगे न।"

"कोई फर्क नहीं हैं दोनों में।" दमयंती को रत्ती-भर भी रास नहीं आ रहा नन्हकू सिंह का यह रवैया।

दयाशंकर भी चकित हैं नन्हकू सिंह के इस पाला-पलट पर। खुद ही कहा, राजपुताने से ही तैयार कीजिए किसी को और बहुत समझाने-बुझाने के बाद जब तैयार हो गए बेचारे जगदीश सिंह तो अब ये कह रहे हैं, अनजाना को ही बन जाने दीजिए!

"बहुत फर्क है।" नन्हकू सिंह ने कहा।

"लेकिन जगदीश सिंह को धोखा देना ठीक नहीं होगा।" दयाशंकर ने प्रतिवाद किया।

"कौन कह रहा है धोखा देने को जी?" चिढ़ गए हैं नन्हकू सिंह, "हम यह कह रहे हैं कि उस हाथ में भी लड्डू ही है।"

"अगर आप बोलेंगे इस तरह तो चमटोल अनजाना के साथ हो जाएगा!" अपनी विश्वसनीयता संकटापन्न दिख रही है दयाशंकर को। रंगू सिंह, छबीला सिंह, दिनेश सिंह, सबके सब गद्दार समझने लगेंगे उन्हें। उनसे वादा किया है उन्होंने कि रेजों का पूरा समर्थन मिलेगा जगदीश सिंह को।

"पागल हैं कि बोलेंगे ऐसा? केवल आपसे बोल रहे हैं कि मजा आ गया।" नन्हकू सिंह ने आश्वस्त किया उन्हें और सीटी बजाने लगे।

ढलती सांझ की मंद गति से बहती हवा में रामबिलास सिंह के दुआर तक पहुंच रही है सीटी की सुरीली आवाज—'ए गंगा मइया तोहे पिअरी चढ़इबो, पिअवा से करि दे मिलनवा...।' बेटे की आवाज।

रामबिलास सिंह बंध गए हैं इस आवाज से। उनके बेटे की आवाज है यह!

"जाने दीजिए, रामबिलास भाई, रास्ता भले ही गलत पकड़ा गया हो, पूरे जवार को हिला के रख दिया है जवान ने।" रामबिलास सिंह को उदास होते देखा तो कहा सुदर्शन पांड़े ने, "बहुत ऊपर जाएगा।"

"क्या देवता, यही आसिरबाद सूझा आपको?" लल्लन सिंह भड़क गए हैं, "अरे, आसिरबाद दीजिए कि जल्दीये ऊपर पहुंच जाए।"

बंद हो गई है सीटी की आवाज। पत्नी होती आसपास तो रामबिलास सिंह पूछते उससे—'अच्छा बजा रहा था न?' लल्लन सिंह के आगे कुछ नहीं कहेंगे। लल्लन सिंह बुरा मान जाएंगे। पत्नी भी बिगड़ेगी बाद में—'जो छोड़ गया, अब उससे छोह जताके कलह मत बढ़ाइए परिवार में।'

"आप किसके फेभर में हैं?" सुदर्शन पांड़े ने महसूस किया कि जरूरी हो गया है चर्चा का विषय बदलना, "श्रीभगवान सिंह अनजनवा को आगे बढ़ा रहे हैं।"

"जगदीश भाई सज्जन आदमी हैं।" रामबिलास सिंह बोले, "ज्यादा लाग-लपेट नहीं जानते।"

"सज्जन थे, हैं नहीं..." लल्लन सिंह ने शब्दों को चबाते हुए कहा, "आदमी की

पहचान उसकी संगत से होती है।"

"आप जो समझ रहे हैं ऊ बात नहीं है।" सुदर्शन पांड़े ने कहा।

"तो क्या बात है?"

"हम तो सुने कि बहुत लोग चाहते हैं कि कुछ बदलाव हो।"

"रंगू सिंह, छबीला सिंह, दिनेश सिंह और दयाशंकर बहुत आदमी नहीं होते।" लल्लन सिंह ने निर्णायक स्वर में कहा, "अर्जुन की तरह ध्यान मछली की आंख पर रखिए।"

तब सुदर्शन पांड़े की ध्यान में आया कि घर से लल्लन सिंह के साथ शास्त्रार्थ करने नहीं, बल्कि पूजन साह की दुकान से नमक ख़रीदने निकले थे।

"अब लोहा लगिए गया है तो कुछ होइबे करेगा।" कहा और हड़बड़ाए हुए कदमों से पूजन साह की दुकान की ओर बढ़ गए।

"लंगटा पंडित को देखे हैं, बड़का बाबूजी?" भंडारी ने देख लिया था सुदर्शन पांड़े को पूजन साह की दुकान की ओर बढ़ते हुए, फिर भी पूछा उधर से आते गणपति पांड़े से।

कोई बाहरवाला कुढ़ने लगे सुनकर कि 'भला बताइए, यही तरीका है बाप के बारे में कुछ कहने का?' तो कुंवरपुरवाले बड़े फख्र के साथ बताएंगे उसे कि जो जैसा है, उसको वही कहने का रिवाज है कुंवरपुर में। जो ढकचकर चले उसको 'लंगड़ा', जो ऊंचा सुने, उसे 'बहिरा', जो बात-बात पर झगड़ा करने पर उतारू हो जाए, उसे 'मुंहनोचवा', जो दुबला-पतला हो, उसे 'लुकुड़िया', जो नाटा हो, उसे 'नकघुटरा', जो आम लोगों से थोड़ा अधिक गोरा हो, उसे 'भुअरा', जो काला हो, उसे 'कालिया'...

कुछ दिनों तक तो घरवाले प्रतिरोध करते इस प्रकार के नामकरण का, पर धीरे-धीरे कुछ ऐसे आदी हो जाते इन नामों का कि खुद भी उन्हें इन्हीं नामों से बुलाने लगते। रंगू सिंह सावधान रहते, फिर भी गौरीशंकर की जगह 'धुआं सिंह' निकल जाता मुंह से। कलक्टर सिंह तो महेंदरा को बेधड़क कहते—'बल्लमजी!' यह जानते होने के बावजूद कि 'बल्लम' का मतलब था 'डबल बलम' यानी कि महान् लड़कीबाज। अगर भंडारी कहता भी किसी से कि 'बाबूजी को देखे हैं कहीं?' तो जवाब देने के पहले वह पूछता ही पूछता, 'लंगटा बाबा को?'

इसलिए गणपति पांड़े ने भंडारी के प्रश्न में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं देखा और प्रसन्न भाव में बताया कि कुछ देर पहले तक तो उन्हीं के साथ थे, चित्रकूट के घाट पर चंदन घिस रहे थे। अब कहां क्या कर रहे थे, उन्हें नहीं मालूम।

"अइसा नालायक बाप सायदे किसी का हो।" भंडारी ने बताया और वहीं खड़े-खड़े सुनाया सुदर्शन पांड़े को कि 'कहेंगे कि निमक नहीं है तरकारी में तो हग देंगे थरिया में।'

श्रीराम पांड़े सुन लेते हैं ऐसी बातें तो मन घिना जाता है उनका। 'हे नाथ नारायण वासुदेवा' का जाप शुरू कर देते हैं तत्क्षण।

"औलाद सबका विचार-व्योहार खराब हो गया, तिलंगी भाई।" कभी-कभी दुःखी होकर सुनाते अपने पुराने मित्र तिलंगी सिंह को, "जरूर पाप किए होंगे उस जनम में।"

"ईहि सब सोच-सोचकर न गुरदा खराब कर लिए।" गुस्सा जाते तिलंगी सिंह, "जिसको डोमड़ा बना दिए हैं भगवान, आपके समझाने से विप्र हो जाएगा?"

"हमारा पॉलिसी एकदम साफ है, ए सिरीराम बाबा।" तिलंगी सिंह कहते, "जो हमारा लिहाज नहीं करेगा, उस निमकहराम का लिहाज हम भी नहीं करेंगे। ऊ चाहे कोई हो। कोई एक चाल तिरछा चलता है तो हम दू चाल तिरछा चलते हैं।"

"सुख मिलता है ऐसा करने से?"

"आपको भेंटा रहा है सुख?"

"जिंदगी में कहां है सुख!"

"आप दर्सन बघारने में ही रह जाइएगा।" तिलंगी सिंह बिगड़ जाते श्रीराम पांड़े के मिरमिराने पर, "खंखारकर डपट देते एक दिन कि हमारा हिस्सा देकर अलग कर दो हमको, बस देखते कि कैसे रास्ता पर आ जाते हैं सुदरसन और उनके जनमतुआ।"

ऐसा नहीं है कि श्रीराम पांड़े को दमदार नहीं लगती थीं तिलंगी सिंह की बातें, पर उनसे नहीं होगा यह कि अपने छोटों से जुबान लड़ाएं, गाली-गलौज करें। पूरी जिंदगी परिवार के सर्वमान्य मुखिया की तरह रहे हैं। एक विशेष दर्जा रहा है उनका परिवार में। दूसरों के लिए सब्जी बने, नहीं बने, उनके लिए जरूर बनती। दूसरे भले फटे-चुटे, गंधाते लेनों-लुगरी पर सोएं, उनकी खाट पर झक्क-झक्क साफ चादर बिछी रहती। घर का दो साल का बच्चा तक जानता कि उस पर केवल श्रीराम पांड़े ही बैठ सकते थे। टोले की लड़कियां कतराती थीं उनके सामने पड़ने से। किसी को भी देख लेते गली में खड़ा हो बतियाते या दुआर पर ती-ती, ती-ती खेलते तो जलती हुई आंखों से तब तक घूरते रहते उसे, जब तक वह विलीन नहीं हो जाती अपने घर के अंदर। टोले की शादीशुदा लड़कियां मैके आतीं और उनके सामने पड़ जातीं तो उन्हें डांटकर बुलाते अपने पास और मानस की किसी चौपाई का अर्थ पूछ लेते। अर्थ मालूम भी होता तो मारे डर के नहीं बता पातीं लड़कियां।

अब मन करता है उनका कि लड़कियां आएं तो उनके पैर छूने भी आएं। उन्हें आशीर्वाद देने, उनसे बातें करने का मन करता है श्रीराम पांड़े का; पर नहीं आतीं।

"डरती हैं आपसे।" हँसती हैं श्रीराम पांड़ेबो।

'केवल अपनी औलादों को ही नहीं लगता डर।' श्रीराम पांड़े उदास आंखों से देखने लगते हैं प्रभुदयाल सिंह के बगीचे तक फैला हुआ बधार। और जब भी देखते हैं उस बधार को, उदय पांड़े की याद आ जाती है। पता नहीं, कहां गुम हो गया था रूठकर! सुदर्शन पांड़े दिखे तो याद आया कि चूड़ामन पांड़े ओरहन दे गए थे कि दयाशंकर के उकसाने पर बोल छोड़ रहे थे उनके ऊपर।

"केस ठोक देगा दू-चार कित्ता, बस निकल जाएगा बोल छोड़ना।" घायल भैंसे की तरह एक हूंफ निकली उनके मुंह से।

"कौन ठोक देगा?" एक थके हुए आदमी की-सी आह निकली सुदर्शन पांड़े के मुंह से।

"मलाई खाने को दे रहा है दयाशंकरा?"

"उसी का हूब है मलाई खिलाने का हमको?"

"तब काहे को राड़ पसार रहे हो चूड़ामन के साथ?" क्रोध का ऐसा ज्वार उमड़ा अचानक कि श्रीराम पांडे का कलेजा उछलने लगा पसलियों के अंदर। सांसों का आवागमन अवरुद्ध होता-सा लगा।

"चूड़ामन का बोखार तो नन्हकू सिंहवा छोड़ाएगा।" जमीन पर बिछे सपटे पर चित लेट गए हैं सुदर्शन पांड़े। बिना देखे कि इस मुद्दे पर कितना परेशान हैं श्रीराम पांड़े।

"ले आए निमक?" नाद के साथ बने चबूतरे पर बैठकर पगहा बटते सुरेश ने पूछा।

"एकरी माई का..." जांघों के अंदरूनी हिस्सों में हरकत करते चीलड़ को गाली दी सुदर्शन पांड़े ने।

उनके दोनों हाथ चीलड़ की तलाश में जुट गए हैं। श्रीराम पांड़े ने मुंह दूसरी ओर कर लिया है।

"हमारे डाक्टरिया के बारे में कुछ सोच रहे हैं कि नहीं आप लोग?" सुरेश ने दूसरा सवाल पेश किया।

"महीना-भर पगहे बटते रह जाइएगा तो पिआ जाएगी भैंसीया, चाभते रह जाइएगा दूध-दही।" पैर पटकते हुए अधबटा पगहा सुरेश के हाथों से छीन ले गया भंडारी और सटाक् से चला दिया भैंस के पीछेवाले पैरों के बीच में घुसकर उसकी थन तक थुथुन पहुंचाने की कोशिश करती पाड़ी की पीठ पर। अपना बेसवाल चेहरा लिए हुए किनारे खड़ी हो गई वह भैंस के पैरों के बीच से निकलकर। भैंस ने सिर घुमाकर पुचकारना चाहा उसे, पर वह दूर खड़ी थी उसकी पहुंच से।

"ढेर खटर-पटर करोगी तो तुमको भी देंगे एक पगहा।" भंडारी गुस्साया भैंस के ऊपर।

"कसाई कहीं का!" श्रीराम पांड़े बुदबुदाए।

"पिआ दें?" भंडारी ने सुन लिया था।

"पिआ दे न रे बोका कहीं का।" सुरेश उखड़ गया है भंडारी के ऊपर, "सीरियस बात हो रहा है तो पिआ दें, पिआ दें, किए हुए है।"

"कीजिए सीरियस बात।" भैंस पेन्हा गई थी, सो बाल्टी घुटनों में दबाए दूध दुहने बैठ गया है भंडारी।

"हम देख रहे हैं कि कोई भी नहीं सोच रहा है हमारे प्रौबलेम के बारे में।" सुरेश ने सीरियस बात की कड़ी पकड़ी।

"डाक्टरई के बारे में हम क्या सोचें, रे गदहपेंच? हमीं डिगरी लिए हैं?" सुदर्शन पांड़े बोले। एक चीलड़ आ गया था पकड़ में। उसी का नाचना देख रहे थे हथेली पर।

"डाक्टरई खाली डिगरी से होता है?"

"चीलड़ से, कुछ भी कर ले, नहीं होता।"

"आंड़ खंखोरने से भर गया हो पेट, तो सुन लीजिए कान खोलकर!" सुरेश चीखा "और बर्दास्त नहीं होगा हमसे!"

श्रीराम पांड़े भयातुर हो खेतों में और दूर-दूर तक फेंकने लगे हैं निगाहें। उन्हें डर लगने लगा है इन लोगों से। किसी दिन खाट ही उलट दें उनकी, तो क्या कर लेंगे?

"बरदास्त किस बेटीयाचोद से हो रहा है?" चीलड़-मर्दन के बाद उंगलियों को सूंघ रहे थे सुदर्शन पांड़े। "एकरी महतारी का...खून पीने चले थे..." कुछ हासिल कर लेने की खुशी चमक रही थी उनके चेहरे पर।

"हमको दवाई, ब्लड प्रेशर नापनेवाला मशीन और पानी चढ़ाने के इंतजाम के लिए पैसा चाहिए; और जल्दी चाहिए!" सुरेश ने अंतिम फैसले के टोन में कहा।

"बिना फालतू के टंट-घंट के नहीं हो सकता डाक्टरई?"

"दिखाइए न करके।"

"तुम खाली रोग का लच्छन देखकर दवाई लिखने का फीस लो। जिसको मन होगा खाने का, दुकान से खरीद लेगा।"

"तो आप ही दीजिए न फीस...बता रहे हैं कि दिमाग फेल हो गया है आपका!"

"सांच कहे सो मारा जाए।" चटाई के पास ही लेटे हुए कुत्ते की नकल करते हुए दोनों पैर ऊपर की ओर किए हुए लेट गए हैं सुदर्शन पांड़े और देखने लगे हैं कि एकदम उसी के जैसी मुद्रा हो गई है कि नहीं।

"मेहरारू का सपना देख रहा है सरवा।" निगाह अटक गई है उसकी जननेंद्रिय की जगह उगी लाली पर और अनायास उमड़ पड़े जोश में एक जबर्दस्त लात जमा दी है उसे।

'निसाचर कहीं का!' माथे पर बंधी पगड़ी से कान ढंक लिए है श्रीराम पांड़े ने। पेशाब उतर रही है पेट से लटकते थैले में। इन्हीं में से कहना होगा किसी को, खाली कर आए।

"कान मत तोपिए। जो कहना हो, कहिए साफ-साफ।" सुरेश ने रुख अब उनकी ओर किया है।

"समझदार आदमी का काम था कि श्रीभगवान सिंह से मिलकर कुछ लोन-वोन का जोगाड़ कर लें तो घरवे में खजाना ढूंढ़ रहे हैं।" श्रीराम पांड़े ने थोड़ी नरमी दिखाई।

"डाक्टरई के लिए लोन नहीं मिलता।"

"गाय खरीदने के लिए मिलता है न लोन? साला बलराम सिंहवा गाय खरीदने के नाम पर लोन निकालकर तबला-हरमुनियम खरीद सकता है और ई दवाई और आला नहीं खरीद सकते।" भैंस को दूह-दाहकर फुर्सत में हुए भंडारी ने कहा और सुदर्शन पांड़े को धकियाते हुए उनकी बगल में लेट गया चटाई पर।

"बेईमानी-शैतानी का बात हमसे मत किया करो। बलराम सिंहवा तो लवंडा भी

रखे हुए है, हम भी रख लें?" सुरेश फिर चीखा।

"तब चुपचाप लिखो दवाई।" सुदर्शन पांड़े बोले।

"ए भाई, बतीया काहे नहीं समझ रहे हैं आप लोग? फायदा दवाई लिखने में नहीं, बेचने में है। राघव पंड़इया और जयराम सिंहवा क्या कर रहा है, दिखाई नहीं देता आप लोगों को? दस पइसा का गोली दू रुपया में देता है और कहता है, देखाई का फीस माफ। और आप लोग कह रहे हैं, देखाई का फीस मांगो। कोई आएगा देखाने?"

"तो तुम बनाओ न भाई दवाखाना, लेकिन कपार मत खाओ हमारा। पहिले से ही दुनिया-भर का ढील भरा हुआ है।" सुदर्शन पांड़े अनसाए।

"तो ठीक है, फैसला ही हो जाए अब।" नाद के पास बने खूंटे से टकराकर खूंटे को गरियाते हुए चला गया सुरेश।

"इसका बतकही सुन रहे हैं कि नहीं, चाचा?" उसके चले जाने के बाद विभूति पांड़े को आवाज लगाई सुदर्शन पांड़े ने।

"मउगी सिखा रही होगी।" अपनी मड़ई के अंदर से ही विभूति पांड़े ने उछाल दिया अपना मंतव्य।

"बाप के पास एगो धोआ धोती भी नहीं है कि लगन-परोजन हो, तो जाए पहनकर। और बाबू डाक्टर बनने चले हैं।"

"एतने सवख है डाक्टर बनने का तो बेच दे मउगी का गहना।"

"ई डंड़टूटा को कहो कि अपना दिमाग अपने ही पास रखे।" श्रीराम पांड़ेबो आ धमकी हैं परिदृश्य में, "किस्मत में लिखा होगा हमारे बाबू का डाक्टर बनना तो ई डंड़टूटा के सरापने से नहीं रुकेगा।"

श्रीराम पांड़े खाली आंखों से देखे जा रहे हैं इस बेटों-नातियोंवाली को। एक बेटा ऐसा कि नौकरी लगने के बाद भूल ही गया कि उसका मां-बाप भी था कोई; एक अचानक ऐसे गायब हो गया एक दिन कि पता ही नहीं चला कहां खो गया; और जो था साथ में, ऐसा कि बेटा कहने का मन ही नहीं करे; फिर भी इतना अनुराग!

"चुपचाप सुनते रहते हैं आप?" श्रीराम पांड़ेबो ने शिकायती लहजे में कहा उनसे।

"क्या बोलते?"

"डांटना नहीं चाहिए था डंड़टूटा को?"

"छोड़ो।"

"कुछ दे दीजिए सुरेसवा को।"

कोई जवाब नहीं दिया श्रीराम पांड़े ने।

"चल जाएगा डकधरइया तो घर में कलह भी कम होगा।"

"नहीं चला तो?"

"यही आसिरवाद दे रहे हैं?"

"हाथ खाली कर देंगे तो यहीं बथान में फूंक देगा सब।"

"बाकी दोनों ने तो जिंदा रहते मुर्दा मान लिया। अब यही सब न साथ रह गया

है। चाहे जो करे।" आंखें छलछला आई हैं श्रीराम पांड़ेबो की—"बड़ी घिघिया रही थी सुरेसवाबो।" उन्होंने पति को उम्मीद-भरी आंखों से देखा।

"दे देते हैं।" एक बेहद ठंडी आवाज निकली श्रीराम पांड़े के गले से। बर्फ से भी ठंडी, "लेकिन डाक्टर बनने लायक नहीं है ई सब।"

"रघउवा था डाकधर बनने लायक? लेकिन बन गया न! भगवान चाहेंगे तो..." श्रीराम पांड़ेबो खुश दिख रही हैं।

श्रीराम पांड़े के चेहरे की रेखाएं भी थोड़ी कोमल हो गई हैं उन्हें खुश देखकर। दूसरों को बताने में लाज लगती है, पर सच यह है कि कभी-कभी अब भी जागी आंखों से सपने देखते हैं श्रीराम पांड़े। आराम मिलता है एक खुशनुमा दुनिया में विचरते हुए, जिसमें सुरेश एक बड़े डॉक्टर के रूप में नजर आता है, सुदर्शन पांड़े एक संभ्रांत व्यक्ति की तरह व्यवहार करते हैं, ददन पांड़े परिवार के साथ गांव आए हुए होते हैं और उदय पांड़े के ठिकाने का पता चल गया होता है...

"सुरेस बाबा का दिमाग, मालिक, गांव के सब डाकधर लोग में तेज है।" उनके बनिहार रूपलाल ने भी हिमायत की इस निर्णय की, "राधव बाबा और जयराम सिंह अब ठगी के धंधा में लग गए हैं और बाकी सबको तो कुछ बुझइबो नहीं करता है। अंदाजीफिकेसन पर काम करता है।"

"देखो, क्या होता है।" कहा और आंखें मूंद लीं श्रीराम पांड़े ने।

कुंवरपुर का हाल ऐसा हो रहा था कि मरीजों से ज्यादा डॉक्टर हो जाते कुछ दिनों में। और इस असाधारण परिस्थिति के उत्पन्न होने का कारण थी सरकार की देशी चिकित्सा-पद्धतियों को उनका वाजिब स्थान दिलाने की चिंता। इस चिंता की कोख से ही आयुर्वेदिक और होमियोपैथी की वो डिग्रियां निकली थीं, जो कुछेक हजार रुपये खर्च करने वाले शिक्षित बेरोजगारों को आसानी से मिल जाती थीं। एक नेमप्लेट, एक साइनबोर्ड और एक चमड़े का बैग लेकर गांव वापस लौट आते थे देशी डॉक्टर और अपने गांव या गांव के पास की चट्टी में एक दुकान खोलकर बैठ जाते। इंतजार करने लगते कि सरकारी चिंता की कोख से कुछ वैकेंसियां भी निकलें, नाकि घर बैठे वेतन उठाने तथा सरकारी औषधालयों के लिए आने वाली जड़ी-बूटियां बाजार में बेचकर माल बनाने के दोहरे सुख का लुत्फ उठा सकें।

सरकार अलग तरीके से सोचती थी। सरकार सोचती थी कि देशी चिकित्सा-पद्धति वाले ये डॉक्टर वही काम करेंगे, जो शिक्षा के क्षेत्र में पैरा-टीचर्स कर रहे थे। सरकार दरअसल परेशान थी। सरकार चाहती थी कि स्वास्थ्य-सुविधाएं देश के कोने-कोने तक पहुंचें, लेकिन अंग्रेजी डॉक्टर केवल उन कोनों तक पहुंचने को तैयार थे, जहां पक्की सड़कें और स्टार प्लस पहुंचे हों। सरकार चूंकि हाथ पर हाथ धरे बैठी नहीं रह सकती थी, उसने सोचा, ये गैर-अंग्रेजी डॉक्टर भरेंगे उन कोनों को, जिन्हें खाली छोड़ दिया था अंग्रेजी डॉक्टरों ने।

इन गैर-अंग्रेजी डॉक्टरों ने कालांतर में अंग्रेजी दवाइयां लिखना और अंग्रेजी उपचार क्यों और कैसे शुरू कर दिया—यह सरकार भी सोचेगी कभी, लेकिन कुंवरपुर में रोजगार के एक अहम और आकर्षक जरिये के रूप में स्थापित हो गई थीं आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक कॉलेजों की डिग्रियां। गांव के पांच-छः लड़के ऑलरेडी बन चुके थे डॉक्टर और पांच-छः बन रहे थे अभी। रंगू सिंह तो हमेशा चौकन्ना रहते कि उनका ध्यान दूसरी ओर देखकर कहीं कोई सूई न घोंप दें ये डॉक्टर और 'फीस बाद में दे दीजिएगा!' कहते हुए आगे बढ़ जाएं।

एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई में नियम था विभिन्न विषयों में स्पेशलाइज करने का, पर इन डिग्रियों में पता नहीं क्या खूबी थी कि डिग्रीधारी किसी भी रोग का इलाज करने का बीड़ा उठा लेते! राघव पांड़े ने एक दिन गणपति पांड़े के चहू का दांत उखाड़ डालने का बीड़ा उठा लिया। सुतरी बांधकर झटके के साथ खींचा दांत को तो मसूढ़े का एक टुकड़ा भी बाहर आ गया उसके साथ। खंखार के साथ खून थूकते गणपति पांड़े ने गालियों की बरसात-सी कर दी थी राघव पांड़े पर। शिवजी पांड़े को सामने आना पड़ा था बेटे के बचाव में। कहा, "हमको ई बताया न जाए जरा कि गलती बड़का-बड़का डॉक्टर लोग से नहीं होता?"

"होता है, लेकिन ई तो जानबूझकर गलती करना हुआ न?"

"राघव पांड़े का बुलाने गए थे गणपति पांड़े को कि आइए हमी से चहू कबरवाइए?"

"ए भाई, टेंट में पइसा नहीं हो तो क्या करे आदमी? कहां जाए?"

भारतीय लोकतंत्र का सबसे अहम सवाल आ गया था सामने—कहां जाए? क्या करे आदमी?

राजनीतिक दलों से पूछा जाता—क्यों देते हैं अपराधियों को टिकट, तो यही सवाल पूछ देते—'विपक्ष बाज ही नहीं आ रहा राजनीति के अपराधीकरण से, तो क्या करे आदमी?' जनता से पूछा जाता—क्यों देती है अपराधियों को वोट, तो यही उलझन रख देती सामने—'सब एक ही-से हैं तो क्या करे आदमी?' राजनेताओं से पूछा जाता—गलत लोगों से क्यों लेते हैं चंदा, तो पूछने वाले से ही पूछ बैठते—'तो किससे लें? सही लोगों के पास है पैसा तो बताइए, उन्हीं से ले लेते हैं।'

राघव पांड़े के विरोधी भी चुप लगा गए थे।

नन्हकू सिंह की तरफ से छूटा था यह बोल कि 'कपार छीलकर, मुंह में करिखा पोतकर, गदहा पर बिठाकर पूरे गांव में घुमा दिया जाना चाहिए मास्टर के बबुआ को!' पर इसी बोल के कारण राघव पांड़े को ताकत मिल गई थी अपने उखड़ते पांव फिर से जमाने की। शिवजी पांड़े ने यह प्रचार शुरू कर दिया था कि सुरेश पांड़े की डॉक्टरी जमाने के लिए गणपति पांड़े को मोहरा बनाया था नन्हकू और दयाशंकर ने।

गांव में जो दूसरे डॉक्टर थे, उनमें सबसे बेहतर जानकारी तो थी ही राघव पांड़े की, सेक्स गुरू भी थे जवार के नवहों के। उनकी चिकित्सा-पद्धति ही ऐसी थी कि बिना

सेक्स-संबंधी चर्चा के कपरवथी का इलाज भी असंभव था। कपरवथी की शिकायत लेकर आए नवहे से उनका पहला प्रश्न होता—कितना बार मूठ मारे? पेटदर्द से परेशान औरतों को बताना पड़ता, अंतिम बार सहवास उन्होंने कब किया? पति को शीघ्रपतन की समस्या तो नहीं है? सहवास के बाद अंदरूनी हिस्सों में जलन या खुजली तो नहीं होती? ये अगले सवाल होते। जो शरमातीं उन्हें जोर से डपट देते राघव पांड़े—"तब जाओ, दिखा लो दूसरे से। हम हैं कि रोग पकड़ने के फेर में हैं और इनका गाल लाल हो रहा है..."

शरमानेवालियों को यह अपराध-बोध जकड़ लेता कि वे गलत जगह जाहिर कर बैठी थीं अपने मन की कमजोरी। कोई-कोई जिद्दी या अक्खड़ होतीं उनमें से। उसका भी उपाय था राघव पांड़े के पास। एकदम से विहँस उठते—"तुम्हारे भइया न हैं रे, बूचिया...ऐसे ही, बिना ठीक किए जाने देंगे अपनी बहन को..." बहन समझ भी गई होती कि कुछ गलत हो गया था उसके साथ तो उसकी प्रतिक्रिया संयत हो जाती। अपनी फ्रॉक सीधी और सलवार ऊपर कर चली जाती चुपचाप।

"एक बार भी धोखा नहीं हुआ?" उनके शिष्य पूछते।

"किसी को आराम पहुंचाओगे, तो धोखा काहे होगा?"

उनके शिष्य सोचते, किस्मत का सांड़ है राघव पंड़इया।

रामज्ञान पांड़ेबो भी जानती थीं कि पनछुछुर स्वभाव के आदमी थे राघव पांड़े, पर दूसरा कोई रास्ता ही नजर नहीं आ रहा था। विमला के उत्पात को घर की सीमाओं तक सीमित रखना दिन ब दिन मुश्किल होता जा रहा था। और दयाशंकर को नन्हकू सिंह की राजनीति के उलझे तार सुलझाने से ही फुर्सत नहीं थी। 'पता नहीं क्या सोचता है?' किसी-किसी दिन अपने अकेले क्षणों से जूझते हुए बहुत घबरा जातीं रामज्ञान पांड़ेबो। कहीं यह तो नहीं चाहता कि एकदम पागल ही हो जाए विमला, ताकि शादी-ब्याह की चिंता से मुक्ति मिल जाए! इलाज के लिए न बाहर ले जाता है कहीं, न राघव पांड़े से ही कुछ पूछने देता है!

रामज्ञान पांड़ेबो ने फैसला कर लिया है कि कम से कम इस मामले में तो नहीं सुनेंगी दयाशंकर की। राघव पांड़े से पूछेंगी विमला की समस्या के बारे में। आखिर पूरा जवार उसे डॉक्टर मानता है कि नहीं! दयाशंकर को तो गुटबंदी प्यारी है, पर उन्हें तो चिंता करनी है न अपनी बेटी के बारे में।

"जा हो दयाशंकर!" बददुआ निकलते-निकलते रह गई थी मुंह से।

"हरदेउवा टूट गया, कामरेड मिल गया हरिदुआ पंड़इया से।" जगनाथ खबर लाया था।

"लौंड़े से टूट गया।" नन्हकू सिंह सुनना नहीं चाहते थे क्या हुआ, और सुनना भी चाहते थे।

"लालच देकर फोर लिया हरिदुआर पंड़इया। दू बिगहवा छोड़वा के पांच बिगहा दे दिया दोसरा जगह।"

"तीन बिगहा का फायदा हुआ कि नहीं, रे बकलंड?"

"हुआ, लेकिन बहुत खराब लग रहा है। मुंह बिराएगा अब हम लोगों को।"

"मुंह खोलने लायक छोड़ेंगे तब न मुंह बिराएगा रे भोंसड़ीयावाला सब?" खूनी खरोचों से खचित नन्हकू सिंह की चीख चीरती चली गई कमरे की हवा को, "देखो न कैसे हलुआ टाईट करते हैं श्रीभगवनवा का। नेतागिरी भुलवाते हैं माधड़चोद का।"

कैसे?

एक अनकहा सवाल तैरने लगा है कमरे की बौखलाई हुई हवा में।

इंकलाब ने बिना कुछ कहे दारू से भरी गिलास थमा दी है नन्हकू सिंह को और राइफल लेकर फर्श पर बैठ गया है पालथी मारकर।

कुंवरपुर में कोई नहीं जानता, कहां घर है इंकलाब का, यहां कैसे आया, क्या जात है उसकी? शुरू-शुरू में समझा था लोगों ने कि पठान था। पर गलत समझा था। रोज शाम को माथा टेकने जाता काली माई को। और कहीं नहीं जाता कुंवरपुर में। परछाईं की तरह चिपका रहता नन्हकू सिंह के साथ। न तो दुःखी होने वाली बात पर दुःखी होता, न खुश होने वाली बात पर खुश। छांगुर 'पत्थर का सनम' कहता था उसको।

"हरदेउवा, लेकिन, एक नंबर का माधड़चोद निकला हो।" मानो दारू अंदर जाने के बाद परिस्थिति का सच भी उतरा हो अंदर। नन्हकू सिंह ने एक लंबी उच्छ्वास छोड़ी।

"छोड़ेंगे नहीं साले को।" छांगुर गुर्राया।

"नहीं, नहीं, उसको कुछ मत करो।" नशे के कोहरे को नन्हकू सिंह ने हटाया चैतन्यता के ऊपर से, "सौ गो लाचारी होता है गरीब आदमी का।"

"हमको तो अपनी हार भी नहीं दिखाई दे रही इसमें।" दयाशंकर बोले "यह भी कोई कम बड़ी बात है कि कई दिनों से बल-प्रयोग की तैयारी के बावजूद खेत जबरन छीनने की हिम्मत नहीं हुई किसी की?"

"लेकिन सिद्धांत तो हार गया न, बाबा।" नन्हकू सिंह ने कहा।

"पूरी तरह तो नहीं हारा, पर हां..."

"इस बार चुप नहीं बैठना है। एकदम चुप नहीं बैठना है।" नन्हकू सिंह ने लगभग डपट दिया दयाशंकर को।

"चुप तो नहीं बैठे हैं हम लोग..."

"आसमान तक गड़गड़ाहट मचा देना है इस बार।" नन्हकू सिंह ने कहा, "श्रीभगवान का पानी उतार लेना है।"

"चापाकल का पैसा खा गया, मालूम है आप लोगों को?" नन्हकू सिंह ने अपनी दालान में मौजूद लोगों पर निगाह दौड़ाई।

"दस गो चापाकल पास हुआ था गांव के लिए। केवल तीन लगवाया—एक अपने दुआर पर, एक स्कूल में और एक चमटोली में। सात गो चापाकल का पैसा डकार गया।"

किसी को भी आश्चर्य नहीं हुआ इस खबर से। आश्चर्य इस बात से हुआ कि

चापाकल का हजम किया हुआ पैसा श्रीभगवान सिंह से हगवाने की बात कह रहे थे नन्हकू सिंह। कुछ ज्यादा ही बड़ी बात नहीं कह रहे क्या? दालान में बैठे लोगों की आंखें पूछ रही थीं एक-दूसरे से।

"नन्हकू सिंहवा बहुत भड़का हुआ है...समझाए थे लेकिन..." और भी ढेर सारी सूचनाएं थीं दयाशंकर के पास।

रामज्ञान पांड़ेबो कुछ नहीं बोलीं। मन का हाहाकार ही थोड़ा और उग्र हो गया। बहन की जिंदगी खराब होने को है और भाई हरदेउवा के टूटने और नन्हकू के भड़कने में रमा हुआ है।

अतीत की काली स्मृतियां भी उमड़ी चली आती हैं उदास क्षणों में...

सुशीला हुई थी, तभी हाथ जोड़ दिए थे उन्होंने—अब और नहीं...गणपति और चूड़ामन सौतेले थे, पर स्वीकार थे उन्हें। पर बेटों की भूख थी रामज्ञान पांड़े को। दयाशंकर के होने के बाद भी शांत नहीं हुई वह भूख। विमला, मुन्नी, चेतना...

"इतना सुंदर-सुंदर बेटा-बेटी हुआ है और नखड़ा करती है नेटूइनीया।" जिद्द पकड़ लेते रामज्ञान पांड़े।

रामज्ञान पांड़े जरा भी नहीं सोचते थे भविष्य के बारे में।

"आपका दुलरुआ भी आप ही के जैसा हो गया।" गुस्से में होती हैं तो सुनाती हैं अशक्त पड़े रामज्ञान पांड़े को।

"हम तो पहले ही चेताए थे नन्हकू को कि हरदेउवा नहीं ठाटेगा हरिद्वार काका के सामने।" दयाशंकर मुन्नी को सुना रहे हैं।

"दमयंतीया तो अइसा न बढ़-बढ़कर बोल रही थी जैसे कि गांव का सब खेतवे चमटोली का हो जाएगा।"

मुन्नी खुश है यह खबर सुनकर—"मुंह बन गया होगा।"

"दमयंतीया-फमयंतीया को बुझाता है कुछ!"

"तबो तो ऊहे सब के साथ रहते हो।" रामज्ञान पांड़ेबो ने कोशिश की थी कि तिताइ नहीं आए आवाज में, पर आ गई थी।

"अपने ही फायदे के लिए रहते हैं, माताराम। नहीं तो जो हाल है चूड़ामन भाई और उनकी मेहरारू का, गांव में रहना मुश्किल हो जाएगा।"

"एक नंबर का लबार है। दारू पीने का मन करता है तो जाता है और चूड़ामन को दोस देता है...बुड़बक बनाने चला है हम लोग को..." विमला ने धिक्कारना शुरू कर दिया है दयाशंकर को।

"दवइयो का कुछो असर नहीं है, बबुआ!" रामज्ञान पांड़े की आवाज भीग गई है, "दिन-रात बेचैन रहती है।"

"इतना जल्दी असर होता है?" दयाशंकर झुंझला उठे हैं, "लगातार दो महीना खाने को कहा है।"

खा तो रही है छौ महीना से। पता नहीं, कहां से ले आता है सरंडी दवाई! भीतर ही भीतर उबल रही हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"एक बार किसी बड़का डाकधर को दिखा देते हैं। मन डेरा रहा है।" घिघियाईं।

"सबका सब ठग है साला। बड़का महाजाल फैला देगा। और अझुरा जाएगा काम।"

रामज्ञान पांड़े भी यही करते थे। टालते जाते थे समस्याओं को, जब तक विकराल रूप धारण नहीं कर लेतीं।

दुआर पर चले गए थे दयाशंकर। दुआर पर लोग व्याकुल हो रहे थे हरदेव-हरिद्वार प्रकरण का रेशा-रेशा खोल डालने को।

रामज्ञान पांड़ेबो फिर अकेली थीं अपने अंतस्ताप के साथ—दयाशंकर को गालियां देती विमला को चुप कराने की असफल कोशिश करते हुए।

उन्हें मालूम है, विमला तभी चुप होगी, जब जी चाहेगा उसका।

चापाकल कांड के पोस्टर गांव की अधिकांश दीवारों पर लगे हुए थे।

डोलडाल के लिए भिनसहरा होने से पहले ही घर से बाहर निकली औरतों ने लौटकर बताया अपने घर के मर्दों को कि बाहर पता नहीं, कैसा तो पोस्टर लगा हुआ था। मर्दों ने देखा कि सबक सिखाने का संकल्प व्यक्त किया गया था चापाकल कांड के मुजरिमों को।

मुर्गे की बांग की जगह श्रीभगवान सिंह का अपने दुश्मनों को गालियां देना सुना गांववालों ने। दयाशंकर अपने कमरे की चौखट तक ही पहुंचे थे कि दरवाजा छेंककर खड़ी हो गईं रामज्ञान पांड़ेबो। दयाशंकर वापस अंदर चले गए कमरे में।

कुछ ही देर में भयंकर शोर से भर गया था गांव। एक ही साथ सारी की सारी गलियां चीखने लगी थीं। दीवारों से पोस्टर फाड़ने का काम शुरू हो गया था। अफरा-तफरी-सी मची हुई थी। जिसे कोई मतलब नहीं होना चाहिए था हौल-खौल से, वह भी उत्तेजित था। गणपति पांड़े नाहक ही लाठी लिए हुए बाहर-भीतर किए जा रहे थे।

"जाना हो तो तुम भी जाओ चूड़ामन के साथ पार्टी बनकर। यहां कूद-फांद मत करो।" गुस्सा आ गया है रामज्ञान पांड़ेबो को।

लाठी पटकते हुए, फनफनाते हुए बाहर चले गए हैं गणपति पांड़े।

"वाह रे सींकिया पहलवान!" हँसी आ गई है गणपतिबो को।

"नन्हकूआ का टेटिहई देख रही हो, मंझिलो?" श्रीराम पांड़ेबो आ गई हैं लाठी ठक्-ठक् करते, "इसमें तुम्हारे बबुआ का भी दोस है।"

"दयाशंकर का नाम लेगा कोई तो कुक्कुर मूतेगा उसके मुंह में।" फट पड़ी हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"तुम्हारा डर लगा हुआ है हमको कि नहीं बोलेंगे..." बड़बड़ाते हुए उल्टे पांव लौट गईं श्रीराम पांड़ेबो।

टोले की सभी दीवारों के पोस्टर फाड़ दिए थे चूड़ामन पांड़े ने, पर अपने पुराने घर की दीवारों को छोड़ दिया था। रामज्ञान पांड़ेबो ने खुद फाड़ दिए हैं सारे पोस्टर।

छांगुर ने गट्टा पकड़ लिया है श्रीकमल सिंह का। छाती तानकर खड़ा हो गया है पोस्टर के सामने। चूड़ामन पांड़े ने एक करारा तमाचा जड़ दिया है उसके गाल पर। छांगुर घर के अंदर भागा है हथियार लाने। चिरई ने बाहर से बंद कर दिया है दरवाजा। कमकर टोल का प्रतिरोध टूट गया है। लोग खुद उतारने लगे हैं पोस्टर। श्रीभगवान सिंह हंकड़ रहे हैं चमटोल और कमकरटोल के संधिस्थल पर खड़े बरगद के नीचे।

रामगिरिहीबो भी दौड़ी है अपने घर की दीवार से सटा पोस्टर फाड़ने। दमयंती ने दबोच लिया है उसे—"मर जाएंगे, मगर नहीं फाड़ने देंगे।"

"बूरी में बंदूक कर देगा, रे रांड़ी।" रोने लगी है रामगिरिहीबो, "जानती नहीं है तुम, कितना कठकरेजी है जोगीया का परिवार।"

सास को निस्सहाय देख भरोसाबो ने फाड़ना शुरू कर दिया है पोस्टर—"अपने भतार खातिर हमारे भतार को मरवाएगी, हो काली माई...ई बिहुनी को कोढ़ फूटेगा, हो लोगो..."

श्रीभगवान सिंह का सबसे छोटा भाई दौड़ा आया है हांफते हुए—"जल्दी चलिए, भइया...गिरोह का जुटान हो रहा है उधर से..."

श्रीभगवान सिंह घर की ओर दौड़ पड़े हैं।

दूधनाथ सिंह की दालान के सामने, गांव के चौक पर भाषण चल रहा था नन्हकू सिंह का। बैल सहमे हुए, पूंछ सटकाए, कान समेटे खड़े थे अपनी नादों पर। कुत्ते भागकर दूर खलिहानों में जा छिपे थे। अपने-अपने घरों के मर्दों को घर से बाहर होने के कारण गालियां दे रही थीं औरतें। बच्चे घटना-स्थल पर नहीं पहुंच पाने के कारण घरों में बंद, अपनी मांओं को गालियां दे रहे थे।

"तुम्हारे पास क्या प्रमाण हैं, रे माधड़चोद! कि हम पैसा खाए हैं चापाकल का?" श्रीभगवान सिंह चिंघाड़े।

"तो कौन खाया है, रे माधड़चोद?" भाषण देना बंद कर गाली के जवाब में गाली दी नन्हकू सिंह ने।

गोया गाली देने की प्रतियोगिता हो रही हो दोनों के बीच, मुद्दा भूलकर एक-दूसरे की मां-बहनों से निबटने में लग गए हैं दोनों।

"हां, खाए हैं। कह रहे हैं कि खाए हैं। क्या बिगाड़ लेगा हमारा? दम है तो एगो बार उखाड़ के भी दिखा दो हमारा!" श्रीभगवान सिंह ने लाइन बदली।

"पहले गांव तो सुन ले...नेताजी कहलाते हैं माधड़चोद और गांव के चापाकल का पैसा गड़क जाते हैं...कहाए के बुलबुल, लीले के गूलर..."

जोगी सिंह के कानों में पड़ रही हैं ये आवाजें और लाज लग रही है उन्हें। खुलेआम चोर कह रहा है रामबिलसवा का बेटा और इस सिरीभगवनवा के पास कोई काट नहीं है।'

"चापाकल का पैसा वापस करो...वापस करो...!" नारेबाजी शुरू हो गई है नन्हकू सिंह की तरफ से।

"मास्साब!" छबीला सिंह की आवाज कांप रही है, "देख रहे हैं कि गोली अब चली कि तब।"

"देख रहे हैं, रामगिरिहीया की बेटीया कैसे हाथ फेंक-फेंककर नारा लगा रही है।" रंगू सिंह का ध्यान गला फाड़-फाड़कर नारे लगाती अकेली नारी आवाज की ओर चला गया है।

"ए भाई, जो भी हुड़दंग करना हो, अपने दुआर पर कीजिए आप लोग। चाहे गांव के बाहर जाकर फरियाइए।" दूधनाथ सिंह आकर खड़े हो गए हैं दोनों दलों के बीच।

"इसको आप हुड़दंग कहते हैं, काका?" नन्हकू सिंह बोले, "कबूलवाए कि नहीं ई धीचोदा से कि चापाकल का पैसा खाया है? गांव साथ दे तो मुंह में कांड़ी डालके बाहर निकाल लें एक-एक पैसा।"

"ई गांव रसातल में जाएगा अब।" कन्हैया सिंह को रुलाई-सी आ गई है नन्हकू सिंह के पीछे से उठते तुमुल नाद के जवाब में श्रीभगवान सिंह की तरफ से आती इक्का-दुक्का आवाजें सुनकर।

'क्या करते,' बाद में लोगों को सुनाते फिरेंगे दूधनाथ सिंह, 'देखे कि चढ़ते चला जा रहा है नन्हकूआ, तो कहे कि ए मन, चलो, नहीं तो आज रेज सब चढ़ जाएगा एगो छत्री के बच्चा पर।'

मुसमात खुश हैं। बहुत खुश हैं।

"देखी कि नहीं, ए सूबेदारबो, जोगीया कइसे डेराया हुआ था!"

"नाजायज करेंगे तो डेराएंगे नहीं, मलकिनी। गौरमिंट का सब पइसवे खा गए हैं, आज तो परमान न मिल गया इसका।"

"बाकी नन्हकू सिंह भी जियादती कर दिए।" थोड़ा रुककर, कुछ सोचने के बाद सूबेदारबो बोली।

पता नहीं, मुसमात भी मन ही मन कहीं यह सोचकर दुःखी नहीं हो रही हों कि बहुत मन बढ़ गया है नान्ह सबका!

"इसको जियादती कहती हो तुम?" आंगन की धूप में एक पुरानी साड़ी पर अदौरियां पारती मुसमात की त्योरियां चढ़ गई हैं, "तुम्ही लोग जैसा आदमी कमजोर बनाता है आदमी को।"

"गरीब आदमी झगरा-झुगरी से डेराता है, मलकिनी।"

"डरपोक आदमी डेराता है। निर्लज्ज और लीचड़ आदमी डेराता है...बात करने चली है।"

चुपचाप आंगन लीपने में लग गई है सूबेदारबो। मुसमात का असली दर्द जानती है वह। नान्ह जात और नन्हकू सिंह से कोई मतलब नहीं है उन्हें। किसी तरह जोगी

सिंह का परिवार मटियामेट हो जाए। बस।

"सिरीभगवनवा का, लेकिन, मुंह करीया हो गया होगा, नहीं? एक नंबर का सुरुतवाला निकला है।"

"मरद होंगे तो गर्दन उठाके नहीं चलेंगे अब।" सूबेदारबो बोली।

"मरद कहती हो ई सब को...कुक्कुर है कुक्कुर।" अदौरियां पारना छोड़ लोई से सना हाथ लिए आंगन में टहलने लगी हैं मुसमात। मन में भरती जा रही दुर्निवार बेचैनी बैठने नहीं देगी उन्हें। लाख चाहती हैं, भूल जाएं जिंदगी के उस हिस्से को, पर नहीं भूल पातीं। वही पुरानी आवाजें गूंजने लगती हैं चेतना में...

'देख रहे हैं भइया, कैसे अड़ियाई हुई है छीनरी!'

'जा तोरा बहिनी के...एगो मेहरारू छक्का छुड़ाए हुए है...' जोगी सिंह चौखट पर खड़ा था दुनाली लिए हुए, 'झोंटा काहे को पेर रहा है...चूंचीया पकड़ न, रे साला! पिहूद दे...अपने भागेगी...'

"सूबेदरवाबो!" चीख पड़ी हैं मुसमात। सारे रोयें दहक उठे हैं देह के।

सूबेदारबो पता नहीं कब चली गई थी आंगन लीप-लापकर।

"भछनी।" अधूरे पड़े काम याद करने की कोशिश करने लगी हैं मुसमात किसी केस की तारीख तो नहीं पड़ने वाली...सूबेदरवा लौटा कि नहीं गोला पर से...पर कमबख्त मन अड़ियल बैल की तरह उधर ही जाना चाहता है...

'आदमी के मनवे में सब है, दुलहिन।'

'दुलहिन मत कहिए, बाबा!' तड़प उठी थीं मुसमात, 'दुलहिन मत कहिए!'

लेकिन भृगुनाथ सिंह जब तक जिए, दुलहिन ही कहते रहे उन्हें।

'आत्मा परमात्मा की दुलहिन नहीं तो क्या है, बोलो?...कबीरदास कहते हैं, दुलहिन गावहु मंगलाचार...रोती है...पगली कहीं की...'

'मन नहीं मानता, बाबा...मन करता है कि हम भी चले जाएं...'

'यही तो समझा रहे हैं कि मनवे में सब है...बस उसी को काबू में कर लेना है एकदम कसके...डोले कि ठीक नहीं होगा...होप्प...अइसे।' हँसने लगे थे भृगुनाथ सिंह।

और एक दिन हँसते हुए ही कूच कर गए थे इस दुनिया से—'पिया के नगरीया बड़ी दूर हो, कइसे जइबू गुजरिया...' गाते थे हमेशा और फटाक् से चले गए थे।

लेकिन जाते-जाते एक मुश्किल जिंदगी जीने की ताकत देते गए थे मुसमात को। उनके जाने के बाद फिर किसी के आगे नहीं रोईं मुसमात। किसी को भी नहीं बताया--उन्हें भी डरावना लगता है अकेलापन।

"अजबे खल का जीव हैं, ए मलकिनी।" सूबेदारबो छबीला सिंह के यहां पहुंच गई है बताने कि आज के फसाद के बारे में क्या कहा मुसमात ने।

"खुश होंगी, नहीं?" छबीला सिंह की माई ने पूछा।

"कह रही हैं, खुश होंगी!" सूबेदारबो भरपूर मजा लेगी इस मजमे का, "नान्ह

सब को गरिया रही थीं कि नरेटी काहे नहीं चांप दिया सिरीभगवान सिंह का। हम बोले, एतना आसान नहीं है बबुआन लोग को डोला देना तो...जाने दीजिए..."

"बात नान्ह और बबुआन का नहीं है, सूबेदारबो।" छबीला सिंह की माई जानती हैं, एक नंबर की घरघूमनी है सूबेदारबो। दूसरे आंगन में पहुंच जाएगी यहां की बातें लेकर। सावधानी बरतते हुए बोलीं, "बात यह है कि जो दूसरे के लिए गड़हा खोदेगा, एक दिन अपने भी गड़हे में गिरेगा। कलह बढ़ाने वाला काम नहीं करना चाहिए आदमी को।"

"हां, तो नन्हकू सिंह भी कम झंझट बढ़ा रहे हैं, मलकिनी!" पता नहीं कहां की तो समझदार औरत बन गई है सूबेदारबो, "बलौक का झगड़ा गांव में किया जाता है?"

"और इतना ही बड़का नेता हैं तो जाएं, अपने लिए भी पास करवा लें कोई इस्कीम।" रसोईघर के पास पीढ़े पर आधा लिलार घूंघट से ढककर बैठी दीपनारायण सिंहबो बोलीं, "श्रीभगवान भाई गांव नहीं तो कम से कम अपने परिवार का काम तो कर रहे हैं न। बाकी लोग तो केवल गाल बजाते चल रहे हैं।"

सूबेदारबो ने देख लिया है छबीला सिंह की माई के चेहरे पर उभरा क्षोभ का भाव। डांटता हुआ-सा दीपनारायण सिंहबो को—क्या जरूरत है यह सब किसी दूसरे से कहने की? सूबेदारबो सुनाएगी गांव की दग्ध आत्माओं को कि अब ढेर दिन तक छबीला सिंह का मलिकांव भी नहीं चलेगा। चन्न-चन्न बोलने लगी हैं दीपनारायणबो। गांव बेताब है यह खबर सुनने को। हर महीने पहुंचने वाले मनीऑर्डर के चलते छबीला सिंह के चेहरे से चू पड़ने वाली खुशी बर्दाश्त नहीं हो रही उससे। सूबेदारबो बताएगी कि गरम होने लगा है मामला तो उमगित हो जाएगा। कुंवरपुर का यह रिकॉर्ड टूटने से बच जाएगा कि ऐसा कोई घर नहीं हुआ, जो नहीं टूटा।

"दुलहिन का कहना भी जबून नहीं है, मलकिनी।" बोली सूबेदारबो।

"चोरी के धन से संस-बरकत नहीं होता, सूबेदारबो।"

"और हम तो देख रहे हैं, अम्माजी, कि केवल चोरी करने वालों को ही बरकत है।"

"तुम काहे नहीं देखोगी।" गुस्सा आ गया है छबीला सिंह की माई को, "घरवे में बैठे-बैठे सब देख लेना है।"

"सब काम नहीं होता सबसे।" छबीला सिंहबो ने बीचबचाव की भाषा अपनाई।

उन्हें भी दिख गया होगा सूबेदारबो के चेहरे पर उभचुभ करता कौतूहल का भाव।

दीपनारायण सिंहबो भी समझ गई हैं इशारा। साग सुधारने में जुट गई हैं चुपचाप।

"आजकल तो सब सुबीधवे सरकार नान्हे जात सब को दे रही है, तबो मुंह काहे फुलाए हुए है निसतनिया सब..." बड़बड़ाते हुए बाहरवाले दरवाजे की ओर चल दीं छबीला सिंह की माई।

सूबेदारबो के लिए इशारा था यह कि बहुत हो गया बतरस।

इस आदत के लिए शिकायत होती है छबीला सिंह के परिवार की। उनके घर की औरतें न तो जाती हैं किसी के यहां, न छबीला सिंह चाहते हैं कि कोई आए उनके यहां। उनके घर के लड़कों तक को नहीं देखा गया दूसरों के दुआर पर उठते-बैठते हुए।

"डरता है कि ढेर आवाजाही रखने देंगे तो कौनो लकड़ी लगा देगा घरवा में।" तिलंगी सिंह हँसते हैं।

एक वक्त था जब छबीला सिंह के समुन्नयन से जलते थे तिलंगी सिंह। पर जब से खटपट हुई है कलक्टर सिंह से, आत्मीयता रखने लगे हैं उनके परिवार से। अपने नाती-पोतों को तो छूते भी नहीं, पर छबीला सिंह के घर के बच्चों को बुला-बुलाकर खिलाते हैं गरी-छोहारा।

"प्रायश्चित क्या कर रहे हैं, बबुआन?" लोग पूछ देते मजाक में।

"तुम्हारा नाती-बेटा सब भी लखैरा हो जाएगा, तब समझोगे।" तिलंगी सिंह कहते।

"हमारे नाती सबको कहिएगा कुछ तो ठीक नहीं होगा। बेटा से करना है झगड़ा तो करते रहिए।" तिलंगी सिंहबो गुस्सातीं।

"ई भिखइनिया सोचती है कि लल्लो-चप्पो करती रहेगी कलक्टरबा का, तो दाल में माठा दे देगा इसको।" तिलंगी सिंह और भी जलाने वाली बातें कहने लगते।

"बुढ़ारी में माठा पीके, पता नहीं, का करेंगे।" कलक्टर सिंह जोड़ का तोड़ प्रस्तुत करते।

"देख लिए कि लइकाई में गोरस पिलाने से सूअर हो जाता है आदमी तो क्या करें।"

"एक दिन सिरीराम बाबा वाला हाल आपका भी होगा। तब हमी काछेंगे गूह-मूत। माठा पीकर और महकाइएगा।"

"जिस दिन साले तुम छू दिए देह, जहर खा लेंगे, जहर!"

बाप-बेटे के बीच का घमासान अशालीन और अश्लील होता चला जाता।

तिलंगी सिंहबो सुनती रहतीं चुपचाप। घमासान थम जाता तो अपने बेटे-नातियों के बीच चली जातीं।

"का हाल है, सूबेदारबो?" सूबेदारबो दिख गई छबीला सिंह के घर से निकलते हुए तो पूछा तिलंगी सिंह ने।

गांव कहता है, एक जमाना था, जब चांद और चकोर वाला रिश्ता था इन दोनों के बीच।

"परीच्छा सिंहबो का हाल हरमेसा एके जइसा रहता है।" सूबेदारबो बोली।

"सुने कि मोतीचूर बंटवा रही हैं अपने मंदिरवा में?"

"ई बात तो हमको नहीं मालूम।" खुला का खुला रह गए मुंह को हथेली से ढांपे हुए सूबेदारबो करीब खिंची चली आई हैं।

महेंदरा देख लेगा तो 'बचपन की मौहब्बत को...' गाने लगेगा।

"ठीक कर रही हैं परीच्छाबो।" तिलंगी सिंह बोले, "राजपूत जात का नाक कटवा दिया जोगीया के जामल ने। कह रहे हैं सारघेंटी कि बदला लेके रहेंगे। और हम कह रहे हैं, मारल मरद कुछ नहीं कर सकता।"

सूबेदारबो सोच रही है, जरा भी नहीं बदले तिलंगी सिंह। वही टेढ़ा दिमाग, वही

जिद्दी स्वभाव। वही कड़वा बोलने की आदत।

"जाने दीजिए, ए बबुआन। हमको तो बहुत डर लगता है।"

"ई जाने देने वाला बात नहीं है, सूबेदारबो। ई अइसा बात है कि कुछ नहीं किए राजपूत लोग तो कल राह चलते कुक्कुर भी खींच देगा पंछूटा।" तिलंगी सिंह ने कहा।

तिलंगी सिंह के दिमाग में आती ही नहीं यह बात कि सूबेदारबो को बुरी लगेंगी ऐसी बातें।

एक समय था, जब कोई नान्ह प्रतिवाद करे किसी प्रतिवाद-योग्य बात का, तो कह दिया जाता, 'नान्ह को नान्ह नहीं तो गांधीजी कहेगा आदमी?' तिलंगी सिंह सोचते हैं, सूबेदारबो अभी भी उसी समय में जी रही थी।

"समय बदल गया, भइवा।" जगनाथ गिलगिलाते हुए घूम रहा है कमकर टोले में। पर चमटोली और नोनियाटोली की ही तरह कमकरटोले में भी आहत और अपमानित हैं लोग। फैसला नहीं कर पा रहे—उनका कितना है जगनाथ का यह बदला हुआ समय। उन क्षणों की स्मृति गई नहीं चेतना से, जब बदहवास-से वे खुद ही फाड़ने लगे थे पोस्टर।

"ढेर बढ़-बढ़कर बोलना ठीक नहीं होता, जगनाथ भाई।" सिबचन ने कहा, "पूरे रेजटोल में बस एक परानी था, जो बोल रहा था...ज्यादा नहीं बोलेंगे।"

"ई बात बोला कोई माधड़चोद तो काट देंगे।" छांगुर ने दहाड़ लगाई।

"राइफल चमकाना कैसा छूट गया बाबू साहेब का!" सिपाही ने भी डपट दिया सिबचन को।

"हम कह रहे हैं कि बाहर से केतना टाइम आएगा आदमी और हथियार?" छत्तीसा ने सिबचन की तरफदारी की।

"अब आप ही लोग रंग खराब करने में लग जाइएगा तो..." नंदलाल दुःखी हो गया है, "चाहते हैं, एके दिन में सब हो जाए।"

"लेकिन मान लिए कि दम है दमयंती में।" नकचिपटा बोला।

रामगिरिही ने होठों पर उंगली रखकर इशारा किया, जोर से नहीं बोलने का। भूखी शेरनियों की तरह लड़-भिड़कर अभी-अभी ही चुप हुई थीं माई-बेटी।

"मुसमात मोतीचूर बंटवा रही हैं रे?" सूबेदारबो भी पहुंच गई है अपने टोले में। एक काले-कलूटे, कमर से बार-बार फिसल जाती पैंट को बार-बार सम्हालते लड़के से पूछा।

"ले मजा! काकी आज दूसरे से पूछ रही हैं मुसमात के बारे में।" आश्चर्य व्यक्त किया गया।

"बबुआन सब बहुत गरम है भीतरे-भीतर।" सूबेदारबो ने खबर दी।

"बाहर से देख लिए न आज, भीतर से भी देख लिया जाएगा।" नकचिपटा बोला।

जैसे-जैसे शाम ढलती जाती थी, यह धारणा बलवती होती जाती थी कुंवरपुर के रेजों के बीच कि कुंवरपुर के इतिहास की पहली लड़ाई हुई थी आज, जिसमें गांव के

बड़कों के खिलाफ जीत हासिल हुई थी उन्हें।

धन्न हैं नन्हकू सिंह!

रात के नौ बजे के आसपास 'नन्हकू सिंह जिंदाबाद' का नारा सुना लोगों ने। छांगुर ने नशे की झोंक में उछाल दिया था यह नारा।

नन्हकू सिंह ने भी सुना। और करीब खींच लिया अपनी घबराई हुई औरत को, "अब तो यही सुनना है जिंदगी-भर।"

5

मटुक बैठे हुए हैं कांपते हाथों में सिर थामे हुए। गुस्से में लाठी चला दी थी छांगुर ने। पीठ सीधी नहीं हो रही थी।

"छंगुरा सलामे नहीं सुनता, ए बाबाबो...और ऊपर से दयासंकर बबुआ भी लहका देते हैं उसको..." मटुक को भी दयाशंकर से ही शिकायत थी!

"नहीं सुनता तो काहे को पड़े हुए हो उसके फेर में? चुपचाप राम-राम करते बाकी समय काट देना है।"

"मनवा नहीं न मानता, बाबाबो।" उठने की कोशिश में एक घुटी हुई-सी कराह निकल गई है मटुक के गले से। बेशक चोट ज्यादा लगी थी।

"ऊपर पड़े ऐसे बेटों को!" मन में एक गहरी वितृष्णा उमड़ आई है गांव के हालात के बारे में सोचकर।

"लंगड़ी बिलार, घरे में सिकार। बापे मिल रहा है सियार लोगों को जवानी देखाने को।" मटुक बोले।

मटुक को एक हाथ कमर पर टिकाए, लड़खड़ाते हुए कदमों से जाते हुए देख रही हैं रामज्ञान पांड़ेबो। देह नहीं चलती, पर अपने सीधका बाबा का हाल जानने जरूर पहुंच जाते हैं हफ्ता-दस दिन में एक बार। बेटों को भारी लग रहा था बापों के साथ निभा पाना, पर मटुक निभाए जा रहे थे अपने पुराने मलिकार के साथ।

ऐसा एक भी काम नहीं था सीधका बाबा का, जो बिना मटुक के सहयोग के हुआ हो। सुनने का समय हो किसी के पास तो एक-एक कर गिना देंगे मटुक—चूड़ामन बाचा के होस्टलवा में चाउर लेकर गए थे, तो...सारदा बुचीया के लिए लइका देखने निकलते थे, तो...सोसिला बुचीया के बियाह में हुड़गड़ाम मचा था, तो...गनपतिबो का कपार फोड़ दिया था गनपति बाचा ने, तो...बहरा जाने के लिए अठान धरना पड़ गई थी चूड़ामनबो, तो...

गांववाले हँसते कि रामगियान बाबा को बनिहार भी उन्हीं के जैसा सोझबक और देहचोर मिल गया था। खेतों में खटने से ज्यादा ध्यान रहता जमावड़ेबाजी पर। अपने मालिक के पास ही बैठे रहते जमीन पर। गुल बनाते, चिलम तैयार करते, कोई रोचक प्रसंग आता तो मालिकों की मनमाफिक कोई छोटी-सी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते।

रामज्ञान पांड़ेबो अनसातीं कभी-कभी, तो रामज्ञान पांड़े की ही तरह मटुक भी कहते—'भर जिनिगी तो कामे न करना है, मलकिनी!'

सच तो यह है कि मटुक की कहानियों में अपनी जिंदगी से ज्यादा रामज्ञान पांड़े की जिंदगी ही समाई रहती है। उनकी अपनी खुशी के क्षण भी वही थे, जो रामज्ञान पांड़े की उपलब्धि के क्षण थे।

'चूड़ामन बाचा का हुआ था ओसियरी में तो रामनवमी के दिन ऊ गदका भांजे थे बाबा कि रोआं खड़ा हो गया था देखकर...ऊ सुख अब दोबारा नहीं भेंटाएगा जिनिगी में।' मटुक कमकर कहते।

मटुक की परेशानियों का सबब भी रामज्ञान पांड़े की परेशानियां ही होतीं। उनकी अपनी परेशानियां तो 'दया' थीं रामजी की। चार औलादें पैदा होते ही मर गईं तो दफना आए बथान में। दूधनाथ सिंह फांदने लगे आंगन की दीवार तो उसे भी माया के नाम ही दर्ज कर दिया—'तिरिया चरित्तर बुझना बहुत मोसकिल काम है, बाबा, पूछते हैं तो फेंकरने लगती है...।'

होली के दिन उधर सम्मत जलता और गांव का हुजूम चीखता—'होल्लरी, होल्लरी, मटुकबो की धोकरी...'

'बउराह से बियाह का ईहे न नतीजा होता है।' लुकार भांजती भीड़ घर के सामने से गुजरती तो मटुकबो कोसती अपने भाग्य को, 'इसका बतरस सुनकर धोखा खा गए बाबूजी।'

'नहीं तो तुम्हारा बियाह डुमरांव महाराज से हो जाता कि।' मटुक मजा लेते।

जब रामज्ञान पांड़े कहते, 'बड़ा खराब समय आ गया है' तो मटुक भी कहते कि 'खराब समय आ गया है।'

चिरई तो एकदम उन्हीं के ऊपर चला गया था, परंतु छांगुर बहुत मेहनती और जोगाड़ी तबियत का निकल गया था। दबंग भी था। और विश्वस्त अनुचर हो गया था नन्हकू सिंह का। डकैतियों में नन्हकू के साथ ही चलना शुरू किया था उसने भी। घर की माली हालत सुधरने लगी थी उसकी जायज-नाजायज हरकतों के कारण। रामज्ञान पांड़े का घर ढहता जा रहा था, पर अपने घर में दो पक्के कमरे खड़े कर लिए थे उसने। बैल खरीद लिए थे; दो-दो लगहर रखने लगा था। रामज्ञान पांड़ेबो क्या बताएं मटुक को कि उनके दुःखों से बहुत बड़े हो गए थे उनकी बाबाबो के दुःख—इतने बड़े कि कोई राह ही नहीं दिख रही थी उनसे बाहर आने की।

विमला की हालत देखकर तो होशोहवास ही गुम हो जाते हैं उनके।

खटिये पर अधनंगी बैठी हिंस्र आंखों से घूरे जा रही थी सामने की दीवार पर टंगे शिव-पार्वती के कैलेंडर को।

"क्या देखने आई है?"

'यह किसकी आवाज है!' रोंगटे खड़े हो गए हैं रामज्ञान पांड़ेबो के।

"देख!" अपनी दोनों टांगें फैला दी हैं विमला ने।

"हे भगवान!" वहीं चौखट पर थस्स से बैठ गईं रामज्ञान पांड़ेबो। "बुचीया!" कमजोर-सी आवाज निकली है गले से, "जल्दी से बुला लाओ राघव भइया को।"

मुन्नी दौड़ी है राघव पांड़े को बुलाने।

"कौन-सा पाप किए थे पिछले जनम में कि ऐसे बेटे मिले?" टुकुर-टुकुर ताकते पति से पूछा, "कौन पाप किए थे?"

जबड़ों में हरकत हुई रामज्ञान पांड़े के। मानो पूछा हो, "और तुम?"

"हम तो हजार जनमों की पापीन हैं।" आंखों में आंसू उबल पड़े हैं रामज्ञान पांड़ेबो के।

मुन्नी लौट आई है। राघव पांड़े नहीं मिले। गांव में निकले हुए थे।

अब बेटियों को कहां-कहां दौड़ाएं राघव पांड़े को खोजने के लिए! घर के बबुआ तास खेल रहे होंगे कहीं। और बड़का बबुआ महादेव सिंह के दालान में चौकी तोड़ रहे होंगे।

"जरा राघव पांड़े को देखोगी, गनपतिबो?" कहना चाहती थीं कि दयाशंकर को पता नहीं लगना चाहिए, पर कैसे कह दें। माना, सधुआइन हो गई है, पर गलती से भी कभी कह बैठी चूड़ामनबो से कि दयाशंकर से छिपाकर राघव पांड़े को बुलाया जाता है विमला के इलाज के लिए तो पूरे गांव को बता आएगी नमक-मिर्च लगाकर।

गणपतिबो चली गई है राघव पांड़े को खोजने। धीरे-धीरे खुद ही थिर होती जा रही है विमला। बिस्तर से उठकर कपड़े ठीक कर लिए हैं। आईने के सामने खड़ी होकर बाल संवार रही है।

पता नहीं, क्या हो जाता है रह-रहकर! पूछने पर बताती भी नहीं है किसी को। राघव पांड़े कहते हैं—'कमजोरी है और थोड़ा भटकाव है मन का।' रामज्ञान पांड़ेबो सुनती हैं—'घर में बिठाकर बुढ़वाओगी बेटी को तो भटकेगा नहीं उसका मन?'

"का चाची, सुने कि कुछ गड़बड़ा गया है बुचिया का तबियत?" राघव पांड़े आ गए हैं बैग लटकाए।

"मन नरभसा जाता है, बबुआ।"

"मन नरभसा जाता है!" हँसने लगे हैं राघव पांड़े, "आपको तो बताए ही हैं, कोई प्रौबलेम नहीं है।"

राघव पांड़े पैर रखते हैं चौखट के अंदर और दिल डूबने लगता है रामज्ञान पांड़ेबो का। अजीब-सी बेकली से भर जाता है। लंगड़ा-लूला, अंधा-बहरा, कोई भी मिल जाए और चलता कर देंगी विमला को। दयाशंकर को नहीं मिलता लड़का तो खुद ढूंढ़ेंगी। पर अब एक दिन के लिए भी विमला को घर में नहीं बिठा रखेंगी।

"राघव!" अनायास एक कड़कदार, खबरदार करती-सी आवाज निकल गई है उनके गले से।

"क्या, चाची?"

"कुछ नहीं।" कहा और लुढ़क गईं खटोले पर।

"आप घबराया मत कीजिए, चाची।" राघव पांड़े बाहर आ गए हैं कमरे के।

रामज्ञान पांड़ेबो जानती हैं, दूसरे कमरे में पल्ले से सटी मुन्नी देख रही होगी सारा दृश्य। एक दिन सभी देखेंगे।

"कोई बात है क्या, भउजी?" देवता पांड़े को जिज्ञासा हो आई है राघव पांड़े को उनके घर से निकलता देखकर।

'इनको भी अभीए आना था।' झुंझला उठीं रामज्ञान पांड़ेबो।

"कोई खास बात नहीं है।" बोलीं।

"खास बात क्या होगा। रामजी की कृपा रहनी चाहिए।" देवता पांड़े बोले, "गांव गरम हो रहा था, वह भी, प्रभुजी की दया से ठीक ही हो चला है।"

"बबुआन ग्रुप कोई खुराफात नहीं करे, तब तो!"

"प्रभुजी चाहेंगे तो अब नहीं होगा कुछ।"

"और प्रभुजी नहीं चाहेंगे तब?" गणपतिबो को हँसी आ गई है देवता पांड़े के भोले आशावाद पर।

"हई देख लीजिए। एगो हमारी मलकिनी हइए हैं उल्टा बोलने वाली, अब ई भी वही भाषा बोलने लगीं।" दुलार-भरी झिड़की के अंदाज में कहा देवता पांड़े ने।

"क्या बोलती हैं, मलकिनी?" देवता पांड़े का मन रखने के लिए पूछ लिया रामज्ञान पांड़ेबो ने, वरना मन में तो उन्हीं आवाजों का जंगल गूंज रहा है, जो सुनी हैं उन्होंने। विमला के गले से निकलती हुई उत्तेजना और आप्यायन की मुखर ध्वनियां!

"मलकिनी कोपभवन में चली गई हैं कि जब तक दमयंती से बोलना नहीं छोड़ेगी वसुधा, अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगी।"

"दमयंतीया बहुत बिगड़ा हो गई है, चाचा।" गणपतिबो ने मानो सावधान किया देवता पांड़े को, "लाज-सरम छूकर भी नहीं गई है उसको।"

"तुम कहती हो तो मान लेते हैं—ठीक बात है, लेकिन ई बताओ कि बाल-बच्चा को जी-जान से काहे पढ़ाता-लिखाता है आदमी? इसीलिए न कि होशियार बने, सही-गलत का फैसला कर सके?"

रामज्ञान पांड़ेबो समझ गई हैं, क्या सुनना चाहते हैं देवता पांड़े। वसुधा भी कभी कोई गलती कर सकती है, यह बात देवता पांड़े मान ही नहीं सकते। या मानते भी हों, तो सुन नहीं सकते।

"कभी-कभी नया में नहीं बुझाता कोई-कोई बात।" गणपतिबो बोलीं।

"पहिलेवाला जमाना अब नहीं रहा, गनपतिबो।" देवता पांड़े ने कहा, "ई सब लड़का-लड़की तो इतना मोटा-मोटा किताब पढ़ रहा है कि पहले का ऋषि-मुनि पूरी जिंदगी में नहीं पढ़ते होंगे। गलत कह रहे हैं, भउजी?"

"अब अपना भला-बुरा तो देखना ही पड़ेगा न बुद्धि हो जाने पर।"

"तो जरा समझाइएगा हमारी मलकिनी को। अठान धरना पड़ी हुई हैं।"

कितनी खुशनसीब हैं वो औरतें, जो अठान धरना पड़ सकती हैं, रूस-फूल सकती

हैं। अपने-आपको ही समझाना नहीं पड़ता है जिन्हें, अकेले ही नहीं बिचरना पड़ता अपने मन के बियावान में।

"आपका तबियत कुछ गड़बड़ लग रहा है आज।" देवता पांड़े कह रहे हैं।

"नहीं, नहीं, एकदम ठीक हैं हम।" हड़बड़ा गईं रामज्ञान पांड़ेबो, "कुछ काम याद आ गया था अचानक।"

"जब तक जिंदगी है, फुर्सत नहीं मिलना है काम से।" देवता पांड़े बोले और सोचते रहे वहीं खड़े-खड़े कुछ देर तक कि कौन-सा काम पहले फरिया लेना ठीक रहेगा।

रामज्ञान पांड़ेबो को शिवजी पांड़ेबो याद आ गई थी अचानक। कुछ उल्टा-सीधा सुना गई थी गणपतिबो को। गणपतिबो तो बताएगी नहीं, पर राघव पांड़े के उनके यहां आने के बारे में ही जानना चाह रही थी कुछ।

"शिवजीबो क्या पूछ रही थी, हो?" देवता पांड़े ओझल हो गए आंखों से तो पूछा।

"बड़ी बदमास है, अम्माजी!" गणपतिबो बोलीं, "सबको तो दूसती ही रहती है। हमारा धरम भी भरस्ट करती है आल-जाल बतियाकर।"

सोचा, खोद-खोदकर उगलवा ही लें गणपतिबो से सारी बातें, फिर अच्छा ही लगा कि नहीं बताना चाह रही थी। बता ही देती तो क्या कर लेतीं! शिवजीबो से मुंह लगाने की हिम्मत नहीं थी उनमें।

शिवजी पांड़ेबो—भारी-भरकम देहवाली। देह से हमेशा दही-मठ्ठे की खट्टी बू आती रहती। उन्हें कभी भी बैठकर सुस्ताते नहीं देखा गया। गठिया की पुरानी शिकायत है, पर दिन-भर चलती हैं। झुककर काम करने या कोई भारी चीज उठाने की मनाही है, पर मन-मन-भर का बोरा अंकवार में लादे दुआर पर से कोठिला वाले घर में पहुंचा आती हैं। राघव पांड़े अनसाते कभी-कभी कि डांड़ में दरद बढ़ा तो दवा-बीरो नहीं करवाएंगे, पर यह मानो प्रोत्साहन होता। शिवजीबो सचमुच पाई-पाई संचतीं। भात बनाने के लिए राघवबो चावल नाप चुकी होतीं, फिर भी धोने के पहले एक बार खुद नापतीं। और हरेक बार पता चलता कि जरूरत से ज्यादा नाप दिया था राघवबो ने। उनका बनिहार रिगिर किए रहता थोड़ा और भात के लिए और शिवजीबो चार-पांच बार झमककर आतीं चुहानी से, पर बनिहार राम के छीपे में आठ-दस दानों से ज्यादा का इजाफा नहीं होता। अंतिम बार तो खाली हाथ ही झाड़ देतीं उसके छीपे के ऊपर और डपट देतीं—'अब का पूरा चुहनीवे तुम्हीं को परोस दें? लइका-फइका सब भूखे रहेगा?'

'ए महाराज, आपसे बोलना ही बेकार है' की प्रतीति पर पहुंचे बनिहार राम छीपे में पड़ा भात का ढेला फोड़ने में जुट जाते।

यह ढेलों जैसा भात बनाने की प्रविधि भी शिवजीबो ने पाई-पाई संचने के अभ्यास के क्रम में ही सीखी थी। अनुभव से जाना था उन्होंने कि भात गीला हो, फरहर नहीं हो तो कम खाते हैं लोग। पेट कम से ही भर जाता है।

अपने बच्चों को बिना सब्जी के ही रोटी या भात खाने की ऐसी पुरजोर आदत लगा दी थी कि दूसरे के यहां भोज-भात के मौकों को छोड़कर वे देने पर भी नहीं खाते

सब्जी। नून-तेल और हरी मिर्च से काम चला लेते। थोड़ी-सी सब्जी, पर बनाती जरूर थीं शिवजीबो। और आंगन में गांव या टोले की कोई औरत बैठी हो और उस समय कोई खाना खाने बैठा हो तो उसकी थरिया में डाल जातीं—'बिना साग-सब्जी के इन लोग को दूकेगा ही नहीं न। किसिम-किसिम का चाहिए रोज-रोज।'

उनका यह ढोंग सभी जान गए थे, पर किए जाती थीं शिवजीबो।

केवल राघव पांड़े ने कपड़े-लत्ते के क्षेत्र में उनके मितव्ययिता संबंधी प्रयोगों की परवाह नहीं की थी, वरना शिवजी पांड़े तो स्कूल में नहीं हों तो गमछे में ही नजर आते। गमछा भी ऐसा कि चुक्का-मुक्का या पालथी मारकर बैठ जाने पर नहीं होने जैसा हो जाता। बालचन पांड़े का गमछा तार-तार हो गया था, पर लपेटे रहते अंडरवियर के ऊपर।

"ई बाबा, फैसन खातिर नाधे हुए हैं?" मजाक करते लोग।

"जाओ, जाओ, हम भी ढेर देखे हैं महीनका लोग को।" शिवजीबो डपट देतीं मजाक करने वालों को, "हमको सवख नहीं है महीनका कहाने का।"

"अपना औकात देखिये के चलना चाहिए आदमी को। ई नहीं कि पेन्हने को लूगा न लत्ता और पहन लें नौ भर का मंगटीका।" समझातीं, "रामगियान काका महीनके बनने के फेर में न बिला गए? बेटी सब तवां गईं। हमारा देख लीजिए। रधीकवा चौदहों का नहीं हुई कि पार लगा दिए। मधुरी पंद्रह होते-होते चली गई। और इस साल तारावा का भी जोगाड़ बइठाकर ही दम लेंगे।"

शिवजीबो अपनी बेटियों की शादी फटाफट होते जाने और उससे भी ज्यादा रामज्ञान पांड़ेबो की बेटियों की शादी नहीं हो पाने में परमानंद को उपलब्ध होतीं। और अपने इस आनंद के कांटे रामज्ञान पांड़ेबो के जख्मों में चुभोने का लोभ उनसे संवरण नहीं हो पाता। किसी न किसी बहाने, कोई दूसरा बहाना नहीं हो तो गणपतिबो के साथ बैठकर बीड़ी के सुट्टे लगाने के बहाने ही आ जातीं।

"तारावा के लिए लइका देखने निकले हैं।" अपनी भारी देह को पीढ़े पर जमाने के प्रयत्न में कंहरते हुए बोलीं।

"तय हो गया?" गणपतिबो ने यूं ही पूछ लिया।

गणपतिबो को न अब किसी के सौभाग्य से ईर्ष्या होती है, न दुर्भाग्य से पीड़ा। उनके अपने अंतस्तापों ने उन्हें इस कदर झुलसा दिया है कि जले हुए ठूंठ की तरह मौसमों से बेखबर रह जाती हैं गणपतिबो।

"बड़ा मांग हो गया है, दीदी—एक लाख रुपया और मोटर साइकिल। मासटर साहब हदस रहे थे, बाकी हम बोले कि बेटे-बेटी के खातिर न सब करता है आदमी।"

"तुमसे तो बड़ा संपरता है हो, रधीकवा की माई। भंडरीया कह रहा था कि चाची दंवरी भी करवा देती हैं।"

"भंडरीया कह रहा था?" अपनी समझ से तारीफ ही की थी गणपतिबो ने, पर बात चुभ गई थी शिवजीबो को, "ईहि देखने में, दीदी, देखिएगा बिला जाएगे सुदरसन के बबुआ लोग। अपना काम करने में लाज है, बाकी मेहरारू को महीना-भर से

कुकुरढांसी हुआ है, उसमें लाज नहीं है! देखिएगा, इसको भी मुआएगा बिना दवा-बीरो के।'' अपमानित सांढ़नी की तरह हूंफने लगी हैं शिवजीबो।

''बड़ाइये कर रहा था। अपनी मउगी को कह रहा था, अंगनवा लीपने में भी पटीदारी करती है सुरेसवाबो के साथ। उसी बात पर।'' गणपतिबो ने अपना मंतव्य साफ किया।

''ई का बड़ाई करेगा, दीदी? लांगा है। धरमसिलवा खोरी-खुरहेंटी कोड़ते चल रही है गांव का। बियाह नहीं करना चाहिए ई सबको? तारावा से पांच-छः बरिस जेठ होगी।''

चुपचाप बीड़ी सुड़कने लगी हैं गणपतिबो। महाराजजी बोले हैं—परनिंदा बहुत अधम चीज है।

''बियाहे उपाय है?'' रामज्ञान पांड़ेबो तिजुक गईं, ''बियाह के बादो जो कोड़ रहा है, उसका का करोगी? दूसरा कर दोगी?''

''जो अपने हाथ में है, ऊ तो आदमी करेगा न, चाची?''

''भगवान जिसको जो सोभाव ।देए हैं, वही रहेगा।'' निर्णयात्मक स्वर में कहा रामज्ञान पांड़ेबो ने।

पर अब मजा आने लगा है शिवजीबो को।

''मास्टर साहेब, चाची, बोलते हैं कि दया बबुआ भी उनके साथ चल चलते तो घड़ी-संजोग देखकर बिमला बूची के बारे में बातचीत किया जाता।'' सीधी चोट की!

''मास्टर साहेब के बोलने से नहीं न होगा। जब चाहेंगे भगवान, होगा।'' खरा-सा जवाब रामज्ञान पांड़ेबो का।

''बड़ा घूमना पड़ता है, चाची। गोड़ खिया जाता है।''

''कहते मत चलिए कि पंद्रहे बरस की है तारावा, नहीं तो पुलिस-ओलिस को बता देगा तो फंस जाइएगा।'' विमला फट पड़ी है।

''पुलिस के डर से बेटी नहीं न बुढ़वाएंगे।''

''तो कानून बनवा दीजिए कि जो भी बेटी बिआए, साथ-साथ दामाद भी बिआए!''

गणपतिबो को हँसी छूट गई है विमला की बात पर।

''हँस रही हैं, दीदी? ईहि बोली है बेटी का?'' शिवजीबो की भिड़ंत की मुद्रा।

''ए भाई! ई तो बभनटोल की बेटी-पतोह, सबका सब बहेंगवा हो गई हैं।''

रामज्ञान पांड़ेबो ने आंखें तरेरीं, तो हट गई विमला।

''विमला का जबान लेकिन बहुत चल रहा है, चाची। ई कोई बात नहीं है कि जो...''

''अब ढेर अनट मत बतिआओ, ए सीवजीबो। गोब्बर फेंकोगी दूसरे के ऊपर तो तुम्हारे ऊपर भी फेंकेगा। चल्हांको फूआ बनना खाली तुम्हीं को नहीं आता।''

''चल्हांको फूआ बन रहे हैं हम? और का अनट बतियाए?'' मूड में आ गई हैं शिवजीबो। उघट-पघटकर ही दम लेंगी आज! सब निमनका बनना निकाल देंगी। ''कहिए कि घर में कोई शासन करने वाला नहीं है, सो सब कोई अपने मन का हो गया है। नहीं तो मास्टर साहेब सुन लेते ई बोली तो...''

"मस्टरवा शासन करने वाला है...नेटूआ, कुकरमी!" विमला चीखी।

"ई रांड़ी के तो बोली का कोई हिसाबे नहीं है जी!"

"मस्टरवा शासन करने वाला है? छोटा-छोटा बच्चा सबसे जूजी पकड़वाता है, फोता सोटवाता है और शासन करने वाला है..."

"और दयाशंकरा नहीं सोटवाता है? गोसंइयाबो का आरती उतारने जाता है?" शिवजीबो ने पंचम में चीखना शुरू कर दिया है।

रामज्ञान पांड़ेबो विमला की ओर झपटी हैं।

"ईहे राड़ पसारने आई थी?" गणपतिबो झुंझलाईं।

"हम तो एगो बाते न कह रहे थे, दीदी, कि गरियाने लगी रांड़ी!"

"अब तुम जाओगी कि कूंचा लेके खदेरने पर जाओगी?" रामज्ञान पांड़ेबो चीखीं।

"तले आप बुढ़वाइए बेटी और गारी दिवआइए गांव-भर को।" लंबे प्रयास के बाद आज मौका मिला है सो सब बोल देंगी शिवजीबो, "बाकी राघव को मत फसाए कोई। सब कोई इसी फेर में लगा रहा कि लेहाजी है, सो मुफ्ते में दवा-बीरो करा लो।"

"इससे मत न बोलिए, अम्माजी! इसको तो रघउयेबो कांड़ेगी लसार-लसार के। रघउवा पेंच में है तो लउंडी बनाए हुए है उसको। देखते न रहिए इसका का हाल होता है..." गणपतिबो भी अपनी सास की तरफ से कूद पड़ी हैं मैदान में, "बीड़ी पीने आती है बिहूनी और..."

शिवजीबो विजेता भाव में गालियां देते हुए चली जा रही हैं अपने घर की ओर। टोले की जो भी औरत मिल जाती है, उसे सुनाते हुए कि 'बैठके प्रेम से गणपतिबो को बता रहे थे तारावा के बियाह के बारे में, तले हई वूढ़िया बिमली गारी देने लगी!'

चूड़ामनबो को बस इधर-उधर से सुनकर संतोष नहीं होगा। शिवजी पांड़े के यहां पहुंच जाएगी। भरपेट सुनेगी—किसने क्या कहा, कैसे कहा।

"ई मछझोंकनी का झोंटा नहीं पेर दी, चाची?" झगड़े में गोसांईबो का नाम उछला होने की खबर सुनकर विभूति पांड़े की बड़ी बहू हरिबो चीखने लगी है, "जोम देखाने आई थी न कि भतीए बेटी सबके लिए भतार खोज रही हैं? खोजे न! कितना भतार खोजती है। रघउवाबो चार गो छेरी है न! कहती है, जब तक बेटा नहीं होगा, छेरते रहेंगे।"

रामज्ञान पांड़ेबो जानती हैं, कुछ और नहीं, बस मजा लेने की कोशिश है यह। चौखट पर बैठीं एकटक देखे जा रही हैं अपने आंगन के ऊपर का आकाश। आखिर इतना निष्ठुर क्यों हो गया है ईश्वर!

गणपतिबो भी दुःखी हैं। व्रत रखा था कि कोई अपशब्द नहीं बोलेंगी किसी को भी। व्रत खंडित हो गया था।

टेंगर सिंह जा रहे थे अन्हरी की दुकान से बीड़ी का एक बंडल खरीदने, पर नजर सामान से लदी बैलगाड़ी और उसके आगे-आगे चलते संकटा सिंह पर पड़ गई तो उन्हीं की ओर बढ़ गए।

"ई का है, भइयवो?" चीनी के बोरे में उंगली गड़ाते हुए पूछा।

"जरूरी है सब बात बताना?" संकटा सिंह अनसाए।

सिर पर नाचती तीखी धूप से भी ज्यादा दुःख मन में ऊधम मचाता यह अहसास दे रहा है कि गांव की राजनीति में खलबलाहट नहीं मची होती तो यह सारा माल आसानी से डेढ़गुनी कीमत पर गुनी में ही बेचा जा सकता था। अपने पिता जगदीश सिंह से भी खासा नाराज हैं संकटा सिंह। बुढ़ापे में नेतागिरी का शौक चर्राया था। गांव में शिक्षा का स्तर सुधारने चले थे। दुकान निकल गई हाथ से, तब समझेंगे।

"दे दोगे एक फांका तो घट जाएगा तुम्हारा?" टेंगर सिंह उंगलियों से चिपक गई मिठास चाट रहे हैं।

"यहीं खोल दें, बीच रास्ता?" संकटा सिंह गुर्राए।

"ई बीच रास्ता खुलने वाला चीज नहीं है, ए टेंगर भाई। ई खाली साहजी लोग के गोदाम में खुलता है।" अपनी छत की मुंडेर पर बैठकर खरिका से दांत खोदते शिवजी पांड़े ने बोल छोड़ा।

"हां, ए टेंगर भाई, हम उन लोगों में से नहीं हैं जो बीच रास्ता खड़ा हो जाएं खोलकर।" संकटा सिंह ने जवाबी बोल छोड़ा, "और ई भी कह देते हैं कि जो ऐसा करते हैं, उनके खुले हुए में बांस करना भी आता है हमको।"

"ए टेंगर भाई, पूछिए न बिलैक बाबू से कि छः महीना पर आता है कोटा?"

"और एगो बभनकटकी से ई भी पूछ लीजिए कि स्कूल के टाइम छत पर बैठकर खरिका से दांत खोदा जाता है?"

"बाबूजी का पेट भर गया न मास्टर सब को टाईट करने से?"

"ए भाई, इससे कोई पूछता काहे नहीं है कि छत पर बैठकर मूठ काहे मार रहा है स्कूल के टाइम?" संकटा सिंह बैलगाड़ी के इर्द-गिर्द जमा हो गए लोगों से बोले।

"चापाकल का हिसाब मांग रहे थे न तुम लोगों के राजाजी? किरासन और चीनी का नहीं मांगेंगे?" शिवजी पांड़े ने अपने बनिहार से पूछा।

बनिहार डरकर भूसाघर में घुस गया।

"ई साला हरामखोर को तो, काम करे चाहे नहीं, महीना दे देती है सरकार। तुमको भी देती है?" जगदीश सिंह ने डपटा संकटा सिंह को।

"बोखार छोड़ा देंगे ब्लैक करने वालों का...और जो साले चुप रहेंगे, दोगला समझेंगे उन लोगों को..." शिवजी पांड़े चीखने लगे हैं छत पर खड़े होकर।

संकटा सिंह आगे बढ़ गए हैं उन्हें चीखता छोड़कर।

"एक फांका दे देते तो नहीं न होता झमेला?" उनके पीछे-पीछे चलते टेंगर सिंह ने एक अंतिम कोशिश की।

"मिल गया भीख?" कन्हैया सिंह गुर्राए।

"चिनिया रोग हो जाता है चीनी खाने से।" कहा और अन्हरी की दुकान की ओर बढ़ गए टेंगर सिंह। बीड़ी की याद आ गई थी। पता नहीं आज वह भी मिले

कि नहीं। उधार का नाम सुनते ही भड़क जाती है अन्हरी। अपने दोनों हाथ डैनों की तरह फैलाकर टटोलने लगती है आसपास की चीजें।

टेंगर सिंह भंजाते जा रहे हैं मन ही मन कि कैसे फुसिलाएंगे अन्हरी को। एक बार तो यह आइडिया भी आया था उनके मन में कि शादी कर लें उससे। जंगी सिंह से सलाह भी मांगी थी इस मुद्दे पर। 'जब साला कोई राजपूत तैयार ही नहीं है बेटी देने को तो हरज का है इसमें? सुने हैं कि जमराज बहुत खिसियाते हैं, भइया, हाड़े हरदी नहीं लगने पर।' कहा था उन्होंने जंगी सिंह से।

जंगी सिंह को लगा, मजाक उड़ा रहे थे उनके कुंवारा रह जाने का। गाली देकर भगा दिया था। पल्टू सिंह गांववालों को गाली देने लगे थे, जो गुमराह कर रहे थे उनके सोझबक भाई को।

टेंगर सिंह की मनोकामना अधूरी रह गई थी।

बाद में लोग कहते उनसे कि 'जंगी सिंह से बात करके ही आप काम बिगाड़ लिए अपना।' तो टेंगर सिंह अपार निष्कपटता के साथ बताते अपने मन की बात, 'हम तो सोचे थे, भाई, कि जब हेडलाइटे साफ है ससुरी का तो कबो-कबो बेचारे जंगी भाई भी काम चला लिया करेंगे, लेकिन ई साला टुअरघेंट उल्टे समझ लिया।'

पल्टू सिंह शिवजी पांड़े से नाराज हैं टेंगर सिंह का इस्तेमाल इस झगड़े में किए जाने के कारण, पर नन्हकू सिंह विरोधी खेमे में खुशी है शिवजी पांड़े के इस कारनामे से।

'जय रघुनंदन, जय घनश्याम, बेटा-बेटी एक समान...'

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों से अपने इस नए भजन की प्रैक्टिस करवाते अनजानाजी हुचक-हुचककर हँसने लगे हैं शिवजी पांड़े को देखकर।

"मोहड़ा पर खड़ा करके भाग गए न सब लोग?" झूठा गुस्सा शिवजी पांड़े का।

"भाग नहीं गए, बाबा, भगदड़ मचा दिए।" अनजानाजी ने कहा, "देखते रहिए क्या हाल होता है बाबू संकटा सिंह का।"

"सुने हैं, कहीं निकला है छबीला सिंह के साथ।"

"छबीला सिंह के पास काट नहीं है इस मंत्र का।"

"लेकिन हमको तो तुम लोग डाल न दिए फेर में? सुन रहे हैं, स्कूल का औचक निरीक्षण करवाने के फेर में है अपोजिट पार्टी।"

"निरीक्षक महोदय का हूब है कि कुंवरपुर पहुंच जाएं! आला कमान को टाईट किए हुए हैं हम लोग।"

पढ़ाई-लिखाई का कार्यक्रम ठप्प हो गया था दोनों के बीच छिड़ गई बतकही के कारण। कुछ बच्चे ध्यानपूर्वक उनकी बतकही सुनने में लगे हुए थे और कुछ 'तोरा मइया की...तोरा बहिनिया की...' का गुंजार करते हुए चोर-सिपाही, राजा-मंत्री, ओक्का-बोक्का-तीन तड़ोका या कागज के बॉल का रोका-रोकी खेलने में लग गए थे। जो ज्यादा प्रतिभाशाली थे, क्लास रूम के बिना पल्लेवाले जंगले से कूदकर बाहर बुढ़िया कबड्डी खेलने चले गए थे।

"लाओ तो रे छड़ी जरा-सा।" शिवजी पाड़े ने देखा यह दृश्य तो कड़के।

विद्यार्थी अपनी-अपनी जगहो की ओर भागे और शांति छा गई। छात्राएं दुल्हा-दुल्हिन खेल रही थीं और उसमे बिल्कुल ही हल्ला नही हो रहा था, सो पूर्ववत् खेलती रहीं।

"सरकार भी एक नबर का ढकोसला ही न है, अनजाना।" अपने स्कूल को हिकारत-भरी आखों से देखते हुए कहा शिवजी पांडे ने, "बताओ! एगो मास्टर के मान का है चार कक्षाओं को पढाना?"

छात्र-छात्राओ ने देखा कि बातचीत उन्हीं को देखते हुए हो रही थी तो जोर-जोर से अनजानाजी का सिखाया हुआ भजन गाने लगे—'जय रघुनंदन जय घनश्याम बेटा-बेटी एक समान...'

"तुम्हारा है?"

"ऐसे ही रचते रहते है कुछ। क्योकि जो नही रचेगा, कैसे बचेगा।"

"यह भी तुम्हारा है?"

"नही महाराज, सुना हुआ है कही।" अनजानाजी हंसने लगे।

"कोई नया फ्रॉड है?"

अनजानजी और जोर से हँसने लगे।

"ठीके है भाई, तुम्ही लोग का चलती है।"

"फ्रॉड मत कहिए, बाबा। पाप लगेगा। महिला सशक्तीकरण की मुहिम चल रही है। उसी का हिस्सा है।"

"तो महिला सब अब क्या करेगी? भूसी नहीं झोंकेगी?"

"नीचे नहीं सूतेगी। नया-नया आसन सिखाया जा रहा है!" कहकर खी-खी-खिक्-खी-खीक्...की एक लबी धार छोड़ी अनजानाजी ने।

शिवजी पाड़े ने देखा, कुछ लडके गौर से सुन रहे थे उनकी बतकही और मुस्कुरा रहे थे।

"किताब में मन नहीं लग रहा है, रे दुष्ट?" झपटकर कान पकड़ लिया उसमें से एक का।

नोनिया टोले का लड़का था। शिवजी पाड़े पहले से ही चिढ़े हुए थे उससे। हिंट करते रह गए थे कि पैर दबाते समय जाघों के एकदम ऊपरी भाग तक ले जाए हाथ, पर घुटनो से ही नीचे लिए चला जाता था।

"तीन साल से साला चौथी में है। परीक्षवे छोड़ देता है।" कान खीचते हुए ही खड़ा कर दिया उसे।

"छोड़िएगा कि नहीं?" लड़का केंकिआया।

शिवजी पांड़े और जोर से मरोड़ने लगे उसका कान।

"तोरा मइया की..." रोते हुए उनकी बाह में दात गड़ाने की कोशिश की उसने और भाग खड़ा हुआ कान छुड़ाकर।

"देखे न? यही तो हैं साले विद्यार्थी।" निर्लिप्त भाव से कहा और आंखों में बनावटी गुस्सा समोए घूरने लगे एक ही कमरे में बैठी चारों क्लासों को।

"सब ऊपर वाले की लीला है।" अनजानाजी बोले।

"तो चलो, आज तुम्हीं सम्हालो।" शिवजी पांड़े स्कूल अनजानाजी को सुपुर्द कर चलने को हुए।

"लइकीया सब सुरक्षित तो है न?" मुड़कर पूछा।

"आप भी गुरुदेव!" अनजानाजी के चेहरे पर एक मोहक मुस्कान छा गई, जो कह रही थी—कोई गारंटी नहीं है...

अपोजिट पार्टी—यानी संकटा सिंह छबीला सिंह के साथ—जिला मुख्यालय पहुंची हुई थी अपने खिलाफ पड़ी दरखास्त की खोज-खबर लेने। छबीला सिंह के अनुज दीपनारायण सिंह के चचिया ससुर श्री राधेश्याम सिंह ऐडिशनल कलक्टर थे समाहरणालय में। राशनिंग का काम भी वही देख रहे थे। उन्हीं से मिलना और मिलकर बचाव का रास्ता निकालना था।

"ए भाई, हमको तो फंसा दिए न आप लोग?" संकटा सिंह अपनी शिकायत के साथ हाजिर हो गए थे दिनेश सिंह की दालान में, "ई तो ठीक बात नहीं न है—हेल बांड़ा हेल, हम पोंछ अलगवले बानी। बांड़ा हेल गया और दूसरे लोग पोंछ सटकाने के फेर में हैं!"

संकटा सिंह गांव में सबसे कहते चल रहे थे यह बात।

"ई छबीला सिंहवा बड़का गरूड़जी महाराज समझता है अपने-आपको; हरमेसा दोहे-चौपाई में बात करता है! उसी से पूछो न कि कउवा जइसा डेराकर भागना था तो झगड़ा काहे को लगाया?" पल्टू सिंह गुर्राए, "कन्हइया को तो खैर, भेंटे नहीं है बुद्धि से।"

छबीला सिंह फंस गए थे।

"हम ई कब बोले थे मास्साब, कि संकटा सिंह के सब कुकरम को जायज ठहराते चलेंगे?" उद्विग्न थे छबीला सिंह।

छबीला सिंह की खूबी रही है यह कि कभी भी सीधे तौर पर भाग नहीं लेते गंवई झगड़ों में। अलग रहकर ही नजारा लेते हैं। कोई सलाह मांगता हो तो दे देते हैं। पर ऐसा हल्ला मचा रखा था संकटा सिंह ने कि...फिर सोचा, चलो, इसी बहाने जान जाएंगे गांववाले कि बड़े-बड़े ओहदों पर काबिज थे उनके संबंधी।

"संबंधी हैं।" चपरासी को बताया।

चपरासी 'जाइएगा, तो जाइए न महाराज' वाली मुद्रा में पुराने अखबार का पंखा झलता रहा।

"गर्मी है।" कमरे में जाने के पहले उसके प्रति सहानुभूति जताना जरूरी लगा छबीला सिंह को।

"ई साली सरकार के जो अफसर हैं न, सबके सब लतखोरी लाल हो गए हैं। कोई गरदन नहीं पकड़ेगा जब तक, दिखाई नहीं देगा इनको कि रूदल राम को भी गरम

लगता है।" सरकार के अफसरों के बारे में एक नई बात बताई चपरासी ने।

राधेश्याम बाबू के कमरे के फर्श पर जो दरी बिछी हुई थी, कभी बेशक यह सोचकर बिछाई गई होगी कि प्रभावशाली लगेगा कमरा। अब अगर हटाई नहीं जा रही थी तो महज इसलिए कि इतनी-सी जहमत भी कौन उठाए। जहां-तहां से फटी हुई, धूल-धक्कड़ से अंटी, अपने उड़े हुए रंग के साथ पड़ी हुई थी। ऐसा अक्सर होने लगा था कि कमरे के अंदर दाखिल होते आदमी का पैर उसके किसी फटे हुए हिस्से से उलझ जाता और वह गिरते-गिरते बचता या लड़खड़ाते हुए धड़ाम से राधेश्याम बाबू के टेबुल से आ टकराता। उस वक्त सोचा जाता कि हटा ही देना ठीक रहेगा इसको। फिर पता नहीं कैसे, बात आई-गई हो जाती। नाजिर को खोजा जाता तो वह डी.एम. साहब के बंगले गया होता या सर्किट हाउस मे किसी खद्दरधारी की अगवानी के इंतजाम में जुटा होता। राधेश्याम बाबू के चपरासी को झिड़क देता—"सब काम छोडकर दरी हटवाने चलें इनके साहब का!"

'जानते हैं, छबीलाजी, सिस्टमवे कोलैप्स कर गया है एकदम से।" राधेश्याम बाबू को कहना पड़ा क्योंकि संकटा सिंह का पैर उलझ गया था एक फटे हुए हिस्से से और गिरते-गिरते बचे थे।

अपने मित्रों और संबंधियों को यह बताना हॉबी है राधेश्याम सिंह की कि एक जमाना था, जब उत्साह से भरे हुए होते थे वे। बात-बात पर फायरिंग करवा देते थे, बडा से बड़ा अतिक्रमण चुटकी बजाकर हटवा देते थे, कैसी भी भयकर बाढ़ हो, रिलीफ बटवा-कर ही दम लेते थे, अपने आगे कुछ समझते नहीं थे एम एल ए -फेमेले को। पर समय ऐसा बदल गया था और सिस्टम ऐसा कोलैप्स कर गया था कि जानबूझकर 'अखमूदवा' और 'कमसुनवा' बन गए थे।

"हा, तो भूत लगने पर सरसो मे झाड़ा जाता था पहले, अब सरसो पर ही भूत चढ गया। कोई क्या करेगा इस माहौल मे?" छबीला सिह ने उनका वही वीरता-प्रसंग सुनने के बाद कहा।

"सब भगवान भरोसे चल रहा है। कहा राधेश्याम सिंह ने और सप्लाई के बड़ा बाबू को बुलाने के लिए घटी बजा दी।

"सकटा सिंह बेचारे गांव के पोलटिक्स मे पकड़ा गए है, नही तो सीधा-सादा आदमी हैं बेचारे।" छबीला सिंह ने बताया।

राधेश्याम सिह ने कुछ नहीं कहा। इंतजार करने लगे बड़ा बाबू के आने का। बडा बाबू बताएंगे, तभी तो जानेंगे न बेचारे कि क्या कहना है।

बड़ा बाबू ऐसे आए मानो झाड़ा फिरना बीच में ही छोड़कर बिना पानी-वानी छुए हुए ही चले आए हो। चेहरे पर ऊब का बहुत गझिन भाव था, जो कुर्सियों पर काबिज देहाती मूर्तियों को देखकर और भी गहरा हो गया था। सेक्शन मे लौटकर बताएंगे अपने मातहत किरानियों को कि सारी गलती भोंसड़ीवाली सरकार की है, जो होम डिस्ट्रिक्ट मे पोस्टिंग कर देती है अफसरों की। राधेश्याम सिंह का ही हाल देख लीजिए। दो-चार ढहे-ढिमलाए हुए बाबू साहेब लोग पहुंचे ही रहते हैं रोज का रोज। 'क्या है भई?' तो

गांव के हैं, तो ममहर के हैं, तो...

"इनका केसवा देखें, बड़ा बाबू?" जैसे देवदास घारो से बोलता होगा, राधेश्याम सिंह बोले।

कुर्सी पर 'अब गिरा कि तब गिरा' वाले अंदाज में बैठे बड़ा बाबू की पेशानी पर लाजमी था, परेशानी-भरी धारियां उभरें, क्योंकि उन्हें बताया ही नहीं गया था कि किस केस के बारे में हो रही थी चर्चा।

"अरे, वही कुंवरपुर के संकटा सिंहवाला! दरखास्त पड़ा है जिसमें? कलक्टर साहब पूछ भी रहे थे कल। गुनीवाले विधायक बोले होंगे कुछ।" राधेश्याम सिंह ने तफसील से जानकारी दी केस के बारे में।

बड़ा बाबू मुस्कुराने लगे उनकी ओर देखकर।

"प्रोबलेम है कुछ?" राधेश्याम सिंह ने पूछा।

आदमी से चमगादड़ बनते चले जाने की प्रक्रिया में फंसे संकटा सिंह ने छबीला सिंह के कंधे पर हाथ रखा—कुछ कहिए।

"गांव साथ है संकटा सिंह के।" छबीला सिंह बोले।

"गांव के साथ रहने से नहीं न होगा, बाबू साहेब।" बड़ा बाबू ने कहा, "अभिलेख जो कहेंगे, उसको तो मानना पड़ेगा न।"

"आप लोग रिकॉर्ड ठीक नहीं रखते, बहुत गलत बात है।" राधेश्याम सिंह को लाइन मिल गई है चर्चा की, "रिकॉर्ड ही ठीक नहीं रहेगा तो क्या कर सकता है कोई भी।"

"रिकॉर्ड तो, सरकार, पूरे जिले में देख लिया जाए, तो ऐसा ही मिलेगा।"

"आपके लिए पूरा जिला देखने निकल जाएं हम?" संकटा सिंह का तर्क सुनकर नाराज हो गए राधेश्याम सिंह, "गलती को रियलाइज करना चाहिए तो यथार्थवाद समझाने लगे हमको।"

"ऐसा न समय आ गया है कि ठीक से चला जाए, तब भी दिक्कत, बेठीक से चला जाए, तब भी दिक्कत।" छबीला सिंह ने समस्या विशेष को छोड़ सार्वभौम सत्य की ओर निगाह कर ली। और कोशिश की कि कथन में निहित विडंबना का भाव चेहरे पर भी दिखने लगे।

राधेश्याम बाबू ने कलाई घड़ी की ओर देखा, क्योंकि सामनेवाली दीवाल में लटकती घड़ी बंद थी। उसके बंद हो जाने के कारण ढेर सारा झोल जमा हो गया था उसके ऊपर कि झोल जमा हो जाने के कारण बंद हो गई थी, यह भेद कार्यालय में कोई नहीं जानता। उसके बंद हो जाने के किसी अन्य कारण के बारे में भी किसी को कुछ नहीं मालूम। बस बंद हो गई है और लटक रही है। जिस खूंटी से लटक रही है, जब तक वह खूंटी है, लटकती रहेगी।

"ठीक है, देखते हैं, क्या हो सकता है।" राधेश्याम बाबू ने बड़ा बाबू को देखते हुए कहा, "नहीं, बड़ा बाबू? अभी तो कुछ भी फाइनल तौर पर कहना ठीक नहीं रहेगा?"

बड़ा बाबू ने 'ठीक कहा गया' की मुद्रा में सिर हिलाया और संकटा सिंह को

एक मधुर मुस्कराहट से भिगोते हुए चले गए। आश्चर्यजनक रूप से संकटा सिंह ने वही सुना था, जो कहा गया था—'अकेले मिलिएगा।'

बोले, "ई लड़ाई तो अब चलेगा ही, छबीला भाई! हित से कहकर एक दिन इंसपेक्शन करवा दीजिए स्कूलवा का। मिड डे वाला सब चावल अकेले खा रहा है शिवजी पंड़इया।"

लेकिन छबीला सिंह ने तय कर लिया है कि इसके आगे अब उन्हें कोई सरोकार नहीं रखना है इस झगड़े से। इसके आगे बाबू संकटा सिंह जानें और उनका काम जाने।

मुसमात, लेकिन, नहीं सोच रही थीं इस तरह से। मुसमात दुःखी थीं संकटा सिंह के अकेला पड़ जाने से।

"इस गांव का राजपूत सब एक नंबर का दोगला है, सूबेदारबो।" कहा, "बेचारे संकटा को फंसा के मजा ले रहा है।"

"संकटा सिंह तो बेचारे झूठमूठ का अझुरा गए।" सूबेदारबो ने हां में हां मिला दी।

"और शिवजीउवा तो खानदानी नेटुआ है। बभना सब भी बड़का पातकी है इस गांव का।"

"परसासन न साथ में है उन लोगों के, मलकिनी।"

"बेऽऽ!" डांट दिया मुसमात ने, "परसासन रंडी का जात होता है रे। जो पइसा खरच करेगा, उसी के आगे-पीछे नाचेगा।"

'बाप रे!' मसाला पीसना छोड़ मुसमात का चेहरा देखने लगी है सूबदारबो—'कौन कहता है, औरत है यह!'

"हार मत मानना, बचवा! गांव में हम लोगों को रहना मुश्किल कर देगा जोगीया का परिवार।"

मुंह खुला का खुला रह गया है संकटा सिंह का। यह बात तो कभी सपने में भी नहीं सोची थी उन्होंने कि मुसमात उठा लेंगी उनकी लड़ाई लड़ने का बीड़ा। सूबेदारबो बुलाने पहुंची थी। सोचा था, एकाध लीटर किरासन के लिए कहेंगी मुसमात। और मुसमात उनके आत्मसम्मान और गांव के भविष्य की बात कर रही थीं!

"ई कोई बात हुआ, चाची, कि गांव में कोई भी सभा-समिति बने तो श्रीभगवान ही उसके कर्ता-धर्ता होंगे?" विस्मय की इसी मुद्रा में कहा उन्होंने।

"छोड़ो न ई सब बात।" मुसमात ने कहा, "तुम्हारे ऊपर दिलवाया है न दरखास्त? तुम भी दे दो दरखास्त कि सात गो चापाकल का पैसा खा गया।"

"किसको?" संकटा सिंह डर गए हैं मुसमात के चेहरे की दृढ़ता देखकर।

"हमारा वकील बताएगा ई सब...और सब खरचा हम करेंगे। तुम केवल मरद के बच्चा जैसा भागना नहीं।"

संकटा सिंह भागना चाहते थे दरअसल। श्रीभगवान सिंह के साथ सीधी टक्कर की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे।

"या तो जेल जाए या नाक रगड़े तुम्हारे आगे, या अपनी दरखास्त वापस ले।" एक जबर्दस्त लुभावना चारा फेंका मुसमात ने और उसे पकड़कर झूल गए संकटा सिंह।

"सबका सब लालची है, रे सूबेदारबो।" आने वाले कल की तैयारियों में व्यस्त हो गई हैं मुसमात, "लेकिन गांव में हल्ला मत मचा देना पहले ही।"

और सूबेदारबो चिंता में पड़ गई है कि कल पूरे दिन पेट में कैसे रख सकेगी इतनी बड़ी बात! इतनी बड़ी बात कि सुनते ही होशोहवास गुम हो जाएंगे श्रीभगवान सिंह के। हड़कंप मच जाएगा ब्लॉक में, बाछें खिल जाएंगी नन्हकू सिंह की।

"ए दया बाबा, मुंह फुलाए हुए थे न हमसे?" खुशी का ठिकाना नहीं है नन्हकू सिंह की, "देखिए, कइसा बरियार लकड़ी लगाए हैं। अपने में भिड़ गया सब।"

"जगदीश सिंह को खड़ा करने वाला आइडिया हमारा था।" दयाशंकर बोले।

"इसीलिए न इतना दुलार करते हैं आपको। नहीं तो पूछ लीजिए सिपहीया और छंगुरा से कि कितना खफा था आपसे?" मस्ती के मूड में हैं नन्हकू सिंह—"कह रहा था कि फिरंट हो गए हैं दयाशंकर बाबा।"

दयाशंकर भी राहत महसूस कर रहे हैं इस अप्रत्याशित घटना-क्रम के कारण। उन्हें सचमुच मुश्किल होने लगी थी नन्हकू सिंह और अपने ग्रुपवालों को यह समझाने में कि अंतर्धान क्यों हो जाते थे असली मौकों पर। अब कोई नहीं पूछेगा यह सवाल।

"का बाबा!" श्रीभगवान सिंह खड़े हैं सामने, "हम समझे थे कि मरद आदमी को हमारे सामने खड़ा कर रहे हैं! आप लोग तो साला एगो मउग को खड़ा कर दिए! शिखंडी को!"

"तब किस बात का डर है?"

"डर और हमको? आप भी मेहरमउग जइसा बतियाने लगे, देख रहे हैं कि।"

सत्यनारायण सिंह देख रहे हैं—रोका नहीं गया तो बढ़ जाएंगी बात।

"हीरो लोग को फरियाने दीजिए, बाबा। आप आइए इधर।" दयाशंकर को आवाज दी उन्होंने।

"तो इस बार हीरो और जीरो का फैसला हो ही जाएगा, सतनारायण भाई!" श्रीभगवान सिंह ने सत्यनारायण सिंह के बहाने अपने सभी दुश्मनों को सुनाया।

जोगी सिंह के घर की औरतें देखती हैं मुसमात को तो गालियों की झड़ी लगा देती हैं।

"ऐ रांड़ी!" ध्यान नहीं देतीं तो आवाज देती हैं पीछे से।

"दस-दस गो बियाओ और मांगे धूर बहारो।" आशीर्वाद देती हैं मुसमात।

6

कुछ लोग आदतन सुलहपसंद होते हैं। शांति और सद्भावना के लिए प्रयास करना आदत होती है उनकी। ऐसे प्रयासों के लिए पुरस्कार का प्रावधान नहीं हो, तब भी वे चूकते नहीं ऐसे प्रयास करने से। दिनेश सिंह एक ऐसे ही आदमी थे कुंवरपुर में।

जैसे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शांति-सुलहपसंदों को लगता है कि शांति के लिए यात्राएं और दौड़ आयोजित करने से अशांति दूर हो जाती है, दिनेश सिंह को विश्वास था कि गांव में एक नाटक किया जाए मिलजुलकर तो तनाव और दुराव का माहौल दूर हो जाएगा। लोगों का ध्यान झगड़ा-फसादवाले मुद्दों से हटेगा और कुछ अलग तरह के मुद्दे मिलेंगे बातचीत करने को।

एक समय था जब एक महान् रंगकर्मी के रूप में अपनी पहचान बनाना महत्त्वाकांक्षा हुआ करती थी दिनेश सिंह की। इस महत्त्वाकांक्षा के अनुरूप प्रयास तो नहीं हो सका उनसे, पर रंगकर्म के प्रति प्रतिबद्धता बनी रही। जवार में जहां कहीं भी किसी नाटक के मंचन का विचार होता, दिनेश सिंह याद किए जाते।

"महत्त्वाकांक्षाएं घर-परिवार, अग्रज-पूर्वज वगैरह को खुश रखते हुए पूरी नहीं की जा सकतीं, छबीला भाई।" अपने परम मित्र को कभी-कभी बताते हैं अपने मन की पीड़ा, "हम हमेशा ही जिम्मेदारी और 'भइया क्या सोचेंगे' के अहसास से दबे रहे। और जो आदमी दूसरों की राजी-खुशी देखने लगे, अपनी मौलिकता अनदिखी रह जाती है उससे।"

इस मामले में छबीला सिंह हैं चिंतन के एकदम विपरीत ध्रुववाले आदमी। उनके लिए घर-परिवार की जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निबाह देने से बड़ी उपलब्धि कुछ भी नहीं है जिंदगी में। दिनेश सिंह की पीड़ा नहीं आती उनकी समझ में, पर सुन लेते चुपचाप। मान लेते हैं कि कोई गहरी बात कह रहे होंगे मास्साब।

"भइया ने कूट-कूटकर दिमाग में यह बात भर दी थी कि पढ़-लिखकर नौकरी नहीं खोजी तो भीख मांगने लगेंगे हम लोग। पढ़ाई के अलावा कुछ भी करने में मन अपराध-बोध से भरा रहता था।"

"तो यह भी सोचिए कि कहां से कहां पहुंच गया परिवार। रत्नेश सिंहवा के बेटों का कोई जोड़ नहीं है जवार में।"

"जोड़ तो नहीं है!" एक लंबी उच्छ्वास छोड़कर मौन हो जाते दिनेश सिंह। कितना कठिन है, अच्छे-बुरे का फैसला करना!

रत्नेश सिंह ने अपने बेटों को भी वही सिखाया, जो उन्हें सिखाया था। पूरी तरह वे नहीं सीख पाए, सो केवल मास्टर होकर रह गए हाईस्कूल में। उनके बेटों ने पूरा का पूरा सीखा उनका सिखाया, सो दोनों अमेरिका पहुंच गए इंजीनियर बनकर। बेटी ने उनसे भी ज्यादा सीखा और एक गुजराती लड़के से शादी कर इंग्लैंड में ही डाक्टरी करने लगी। रत्नेश सिंह ने उन्हें कभी गांव नहीं आने दिया बड़ा होने पर। जानने नहीं दिया कि चाचा, मामा, फूआ और फूफा क्या होते हैं। अपने से बड़ों का पैर नहीं छूते उनके बेटे-बेटी। अपनी मां को बेवकूफ समझते। रत्नेश सिंह को भी डपट देते उनके पिछड़े और प्रतिगामी खयालों के लिए, जबकि खुद रत्नेश सिंह ने प्रगतिशील दिखने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी अपने हिसाब से। रत्नेश सिंह उन्हें सुनाते कि कितना स्ट्रगल करके आए थे ऊपर—एक ही धोती थी, जिसे धोकर सुखाना पड़ता था स्कूल से आने पर। उसका एक छोर पेड़ की टहनी से बांधकर जोर-जोर से हिलाते थे दूसरा छोर हाथ में पकड़कर। हवा नहीं चलती

तो उसकी मनुहार करते 'एक पवन्ना, बह पवन्ना, दू पवन्ना, बह पवन्ना...' कहते हुए। उनके बेटे-बेटी को कोई खास बात नजर नहीं आती उनके स्ट्रगल की कहानी में। मुंह बिचका देते—स्ट्रगल करके हुए भी तो प्रोफेसर!

रत्नेश सिंह की आदत थी, एक-एक पैसे का हिसाब करने की। हिसाब सही नहीं हो तो नाराज हो जाने की। उनके बेटे भी उतने ही पक्के निकले थे हिसाब-किताब में। बड़े की बारात जाने वाली थी और रत्नेश सिंह के साथ बहस में उलझ गया था वह अपने डॉलरों के हिसाब को लेकर।

"नए एज के लड़के हैं ये। प्रैक्टिकल और हार्ड-हेडेड।" उनकी तारीफ में कहते।

साल-दो साल में खुद एक बार कुंवरपुर आते रत्नेश सिंह। गांववालों को अमेरिका की कहानियां सुनाते। कुंवरपुरवालों को उन्हीं की बदौलत मालूम थी डॉलर के मुकाबले रुपये की पिद्दी औकात।

"माने कि कहिए कि एक तरह का स्वर्ग ही है धरती पर।" लोग कहते उनकी अभिभूत कर देने वाली कहानियां सुनकर तो खुशी होती उन्हें।

रत्नेश सिंह मानते रहे हैं कि एक असफल आदमी हैं दिनेश सिंह। कोई कर्मठ और जीवटवाला आदमी होता तो डॉक्टरेट वगैरह कर लेता और कॉलेज में चला जाता, गांव में नहीं बैठता। गुनी या विक्रमगंज में रहता और ट्यूशन पढ़ाकर वेतन से ज्यादा कमा लेता। रत्नेश सिंह का मुंह कड़वा हो जाता था उनके बैठके में उपन्यासों, कहानियों और कविताओं की किताबें देखकर।

'कम से कम बच्चों को मत पढ़ने देना यह सब।' दिनेश सिंह को डांट देते।

रंगू सिंह ने उनका नाम रख दिया था 'डॉलर सिंह' और उनके प्यारे देश का 'डॉलरपुर।'

"ए भाई, कोई हो गया हो लाट तो हो जाए, लेकिन हमको तो कोई चुनने को कहेगा तो अपने मास्टरसहेबवा को ही चुन लेंगे।" रंगू सिंह कहते आत्मीयता से पगी हुई बात और चाय बनाने का मन नहीं भी हो रहा होता तो स्टोव पर केतली चढ़ा देतीं दिनेश सिंहबो।

दिनेश सिंह ने दयाशंकर को बताया—'घासीराम कोतवाल' के मंचन की योजना थी और इरादा यह था कि गांव के सभी टोले के लोग इसमें भाग लें।

"वसुधा और दमयंती से भी कह रहे हैं भाग लेने को। कुछ ऐसा काम करना है कि पूरा जवार लोहा मान जाए कुंवरपुर का।"

"आप कहेंगे तो कोई भी मान जाएगा, मास्साब। हमको तो वर्ग-शत्रु का दर्जा दे दिया है कुछ लोगों ने।" दयाशंकर ने कहा।

"किसी विचारधारा विशेष से जुड़ाव का मतलब यह नहीं होता कि आदमी की साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिरुचियां व्यर्थ हो गईं। राजनीति अपनी जगह, समाज और संस्कृति अपनी जगह।"

"वसुधा, दमयंती वगैरह से बात की आपने?"

"उनसे भी कर लेंगे। पहले पूरी योजना तय हो जाए।"

"हम आपके साथ हैं, मास्साब। कुछ लोगों को आपत्ति हो तो नेपथ्य में ही रखिए हमको, पर यह काम सफल हो।" दयाशंकर ने उदारता का प्रदर्शन किया, पर एक झुरझुरी-सी भी महसूस की देह में। क्या वसुधा सचमुच तैयार हो जाएगी नाटक में भाग लेने को? अचरज भी हो रहा है उन्हें कि दमयंती से बात की है दिनेश सिंह ने।

"सुना कि तुम भी रोल कर रही हो 'घासीराम कोतवाल' में?" दमयंती से मुलाकात होते ही पूछा।

"मास्साब कह रहे हैं।"

"और सुना, तुम्हारी सखी भी कर रही हैं?"

"सखी के बारे में हमको नहीं मालूम।"

"हमको भी कह रहे हैं मास्साब। अच्छा नाटक है।" दमयंती की आंखों को पढ़ना चाह रहे हैं दयाशंकर।

"बिना आपके कुंवरपुर में हो सकता है कोई नाटक।" दमयंती बोली।

"लेकिन डर इस बात का है कि कहीं वसुधा न बिदक जाए यह खबर सुनकर।" दयाशंकर को अब रस मिलने लगा है बतकही में, बार-बार वसुधा का नाम लेने में।

"वसुधा को किसी से डर नहीं लगता।"

"डर नहीं...मतलब..."

"विमला दीदी के लिए कोई लड़का देखने गए थे न? बाबूजी बता रहे थे।"

"जानती हो, ऐसा भागे दयाशंकर पांड़े, धुएं जैसा मुंह बनाकर, जैसे मधुमक्खियां पीछे लग गई हों।" दमयंती हँस रही है वसुधा को दयाशंकर के साथ हुई बातचीत का ब्योरा सुनाकर—"लेकिन कुछ न कुछ बात है, वसुधा।" हँसते हुए ही बोली।

"क्या बात है?"

"दयाशंकर पांड़े मन ही मन चाहते हैं तुमको।"

"जो लोग भेंड़ों-बकरियों तक का चहेंटते चलते हैं, भला हमको या तुमको नहीं चाहेंगे?"

"छिः!"

"छिः क्या कर रही हो? कोई बकरी जोर-जोर से मिमिया रही हो तो समझ लेना कुंवरपुर का कोई नौनिहाल लगा होगा उसके साथ।"

"वसुधा!"

"तुम क्या सोचती हो? तुम्हारे कामरेड दयाशकर नहीं हैं ऐसे?"

"तुम्हारी सखी, तुम्हारे कामरेड...पता नहीं, कितने लोग हमारे हो गए हैं यहां!" संजीदा हो गइ है दमयंती।

"हम तो हैं ही।"

"तुम कितने दिन रहोगी? इंजीनियरिंग में चयन हुआ और निकल जाओगी।"

"ऐसे कह रही हो, जैसे अकेले हम ही हों परीक्षा देने वाले।"

"आईआईटी में न हो, पर कहीं न कहीं तो हो ही जाएगा।"

"हो जाएगा तो तुम्हारे लिए नहीं रुकेंगे।" वसुधा ने कहा।

दोनों ही कोशिश कर रही थीं कि गमगीन और बोझिल नहीं हो वातावरण, पर आंसू छलछला आए थे दमयंती की आंखों में। एक दिन आएगा...वह दिन, जब वसुधा नहीं होगी कुंवरपुर में!

वसुधा चुपचाप इंतजार करने लगी है उसके सहज होने का।

कभी-कभी लगता है वसुधा को कि एक अंधी और अंतहीन दिशा में चल पड़ी है दमयंती। उसने टोका तो नहीं उसे उस दिशा में जाने से, पर मन जरूर भारी हो जाता है सोचकर। इंटर की परीक्षा की तैयारी भी ठीक से नहीं की। इंजीनियरिंग की परीक्षाओं में बैठने का विचार ही त्याग दिया। पता नहीं, किस बात की जल्दी थी!

"लड़कियों की दोस्ती का कोई मतलब नहीं होता।" दमयंती बोली थोड़ी देर के बाद।

"दूसरे के खूंटों पर बंधने वाली भैसों की दोस्ती का कुछ मतलब नहीं होता।"

"हां...खूंटों से तो बंधना ही है न!"

"ऐसे कह रही हो, जैसे भा गया हो कोई खूंटा।"

"खूंटे तुम्हारे लिए उछल रहे हैं तो हमारे भा जाने से क्या होगा!"

देवता पांड़े की खलिहान में घंटों बैठी रहती हैं दोनों। इस बात से बेपरवाह कि गांव, घर, किसी को भी अच्छा नहीं लगता उनका साथ-साथ बैठना, सिवाय दिनेश सिंह के।

"दिनेश सिंहवा सनक गया क्या जी?" चूड़ामन पांड़े गांव पहुंचने के बाद सबसे अधिक उद्विग्न इस खबर से हुए हैं कि दयाशंकर और दमयंती रोल कर रहे हैं नाटक में—"यह तो एक तरह से मन बढ़ाना हो गया न उन लोगों का? उनके आगे झुकने जैसा नहीं हुआ?"

"हुआ। एकदम हुआ। लेकिन गांव के बबुआनों और बाभनों को हमको-आपको हराने में ही ज्यादा मजा आता हो तो क्या कीजिएगा?" श्रीभगवान सिंह संकटा सिंह के साथ मजबूरी में किए गए समझौते का दंश नहीं भूल पाते। मुसमात की उनको जेल भिजवाने की मनोकामना पूरी नहीं हो सकी थी, पर संकटा सिंह के खिलाफ दी गई दरखास्त वापस लेनी पड़ी थी।

"हमारे अनुज तो किस लालच में रहते हैं, जानते ही हैं आप लोग, पर मास्साब समझदार आदमी हैं। बात करना जरूरी है उनसे।" चूड़ामन पांड़े सारे महत्त्वपूर्ण दुआर घूम आए हैं।

"रंगू सिंह को सही लग रहा है यह सब?" पूछा उन्होंने।

"एकदम सही लग रहा है।" रंगू सिंह ने कहा।

"क्या सही लग रहा है?"

"गलत क्या लग रहा है?"

"नन्हकू सिंह के आगे नाक रगड़ना गलत नहीं है?"

"हम तो साला अपने मनवे में झांकते हैं तो एगो चूड़ामन मन नज़र आ जाता है, एगो नन्हकू मन। दूसरे के आगे नाक रगड़ने का कहां सवाल है।"

"वाह! रंगू भाई, वाह!" झूम उठे हैं दिनेश सिंह, "ऐसी बात बोल गए कि कोई क्या बोलेगा अब ब्रहमांड के किसी भी कल्प या मन्वंतर में।"

"डायलग बोलना हमको नहीं आता है?"

"आप क्या डायलग बोलिएगा, ए चूड़ामन बाबा! जो बाप का नहीं हुआ, अपने समाज का होगा?" मन की बात कह दी रंगू सिंह ने।

सदमे की-सी हालत में क्रोध के कारण थर-थर कांप रहे हैं चूड़ामन पांड़े।

बस यही एक बात है कि बोलती बंद हो जाती है चूड़ामन पांड़े की। तर्क करने की सारी क्षमता जाती रहती है। कलक्टर सिंह जानते हैं, उन्हें हस्तक्षेप करना होगा चूड़ामन पांड़े को इस संकट से उबारने के लिए।

"अपने बाप का कौन हुआ और कौन नहीं हुआ, इसका फैसला रंगू सिंह और कलक्टर सिंह नहीं न करेंगे।"

"छोड़िए न, कलक्टर भाई।" चूड़ामन पांड़े बोले, "अपने बारे में दूसरे से नहीं जानना है हमको। लेकिन इतना भले जान गए कि ई गांव जाएगा जरूर तेलहंडा में।"

"ए महाराज, बेचारे मास्साब एगो नाटक क्या करने चले, एक से एक शाप देने लगे आप लोग।" छबीला सिंह क्रुद्ध गए हैं—"शुभ-शुभ बोलिए!"

कन्हैया सिंह को चूड़ामन पांड़े की बात ही जंच रही थी, पर चुप थे मित्रता का खयाल कर।

"वसुधा की माया में अझुराए हुए हैं मास्साब। उसी को खुश करने के लिए कर रहे हैं यह सब।" छबीला सिंह से कहा मौका देखकर, "नहीं तो दमयंतीया कहां की नामी आर्टिस्ट है कि उसको रखना जरूरी है?"

छबीला सिंह नहीं बोले कुछ।

"सांच बात सदुल्ला कहे, सबके चित से उतरल रहे।" कन्हैया सिंह बुदबुदाए।

"प्रमाण मिल जाए तो दिखा देना, दिनेश सिंह के दुआर पर बैठना छोड़ देंगे।" छबीला सिंह ने झिड़क दिया कन्हैया सिंह को।

पर दिनेश सिंह का असली अभिशाप यह था कि दूसरे खेमे में भी कोई रंगू सिंह और छबीला सिंह नहीं था, जो नन्हकू सिंह को समझा सके।

"नन्हकू सिंहवा चूतिया आदमी है, खाली चूतियापा करते रहता है, नहीं रे सिपहीया?" नन्हकू सिंह गरजने लगे थे नाटक की खबर मिलते ही।

"कौन चूतियापा कर रहा है, यह तो वही जानता है।" सिपाही बोला।

"इस तरह का शांति और सद्भावना का नाटक तो इन लोग युगों से कर रहा है। मनुस्मृति क्या है...गीता क्या है...मानस क्या है? नाटक नहीं है? दमयंतीजी चमईन बनी रहें, रामगिरिहीं एक धूर धरती के लिए तरस जाएं, पर तुलसी बाबा लिख दें—'सिय

राम मय सब जग जानी' यह नाटक नहीं है?"

"मास्साब बोले..."

"मास्साब दलाल हैं उन लोगों के।" दमयंती की बात पूरी होने के पहले ही चिंघाड़ उठे नन्हकू सिंह, "मास्साब यह क्यों नहीं बोलते कि न्यूनतम मजदूरी मिलनी चाहिए मजदूरों को, सीलिंग की जमीन बांट दी जाए भूमिहीनों में, जाति-आधारित समाज खत्म किया जाए?"

चेहरा लाल किए हुए, सिर झुकाए चुपचाप बैठी हुई है दमयंती।

दयाशंकर उत्तेजित हो गए हैं—"हमारे तो जैसे आप बंधु हैं, मास्साब भी बंधु हैं!"

"तो आप हमारे बंधु नहीं हुए।" नन्हकू सिंह ने घोषणा की।

"गांव-समाज का बात है, लिहाज में पड़ जाता है आदमी।" रामगिरिही ने कहा डरते-डरते।

"तो धीरे-धीरे क्या बोल रहे हैं? बोलिए न कि चूतिया हो तुम, नन्हकू सिंह!"

"ठीक है, नहीं रोल करेंगे उनके नाटक में। अब तो ठीक है?" तड़पकर कहा दमयंती ने।

"ठीक कैसे है! अब तो और खराब हो गया। अब तो कहेंगे दयाशंकर बाबा कि डिक्टेटर हो गया नन्हकू सिंहवा।"

"हम केवल इतना कहेंगे कि लड़ाई विचारधारा से है, व्यक्तियों से नहीं।" दयाशंकर ने कहा, जानबूझकर थोड़ा मुस्कराकर। नन्हकू को भरोसा हो जाना चाहिए कि चैलेंज नहीं किया जा रहा उसकी लिडरई को, वरना कम नहीं होगा अंतर्दाह।

"अच्छा, सिद्धांत-ओद्धांत का बात छोड़िए, इस बात पर गौर कीजिए कि गांव में सौहार्द कायम किया जा रहा है और इस बात की जरूरत कोई नहीं समझता कि नन्हकू सिंह से बात की जाए। दमयंती से बात हो सकती है, दयाशंकर से हो सकती है, पर नन्हकू सिंह से नहीं। यह क्या है?"

'बेचारे मास्साब!'—दयाशंकर ने सोचा।

"है क्या, वामपंथी एकता को तोड़ने की साजिश!" नोनियाटोले के नंदलाल ने कहा।

"उधर अनजनवा फेर में लगा हुआ है सेंधमारी के, नौलाख महतो अलगे पिछड़ा-अगड़ा कर रहे हैं और एगो नया मोर्चा खुल गया...इस खेल को समझना है, बाबा।" दयाशंकर से अपील की जगनाथ ने।

आज के पहले खुद को कभी भी इतनी बेवकूफ और गैरजिम्मेदार नहीं महसूस किया था दमयंती ने। सोचा ही नहीं था कि कोई कमी थी उसकी प्रतिबद्धता में। आज पहली बार महसूस कर रही है वह कि जो राह उसने चुनी है अपने लिए, बहुत ज्यादा विकट है उसकी कल्पना से। शायद वसुधा की दोस्ती के लिए भी जगह नहीं हो उसमें।

दमयंती की सबसे बड़ी समस्या यही है कि वसुधा को कैसे बताएगी कि मास्साब का नाटक छोड़ रही है वह। वसुधा को जरूर बुरा लगेगा। काश! कुछ दिनों के लिए

कुंवरपुर से बाहर चली जाती वह। या बीमार ही पड़ जाती।

दमयंती को पता नहीं था उस समय कि अगली ही सुबह शिवजी पांड़े के खेत में बने कुएं में एक बच्चे की लाश तैरती दिखेगी, जो सूबेदारबो के बेटे गुड्डुआ की होगी। आठ बरस के उस बच्चे का गला घोंटकर कोई फेंक देगा कुएं में।

"हे ठोरा बाबा...जो हमारे बबुआ का ई दसा किहीस है, संझवत्त दिखाने वाला भी नहीं बचे उसके खानदान में...ए काली माई...बर्बाद हो जाए निसंतनीया..." लाश को गोदी में रखकर विलाप कर रही है सूबेदारबो।

गांव स्तब्ध है।

"हे कोटि-कोटि देवता...जो बदमास हमारे खानदान पर कलंक लगाना चाहता है, पानी भी नहीं मिले उसको मरते वक्त..." शिवजी पांड़ेबो ने अलग ही कोहराम मचा रखा है।

"ऐसे में धीरज से काम लेना चाहिए, सूबेदारबो! बिना जाने-परतियाए नहीं बोलना चाहिए कुछ।" तिलंगी सिंह आगे आए समझाने।

"हम भी तो यही कह रहे हैं, चाचा।" फिरंगीया बोला।

"ई लवंडा का बात नहीं सुनना, काकी।" सिपाही चीखा, "मडर का केस है, मडर का।"

"अपनी लैला से बतियाने गए थे?" कलक्टर सिंह दांत पीस रहे हैं तिलंगी सिंह के वहां जाने पर।

"ईहि निसंतनीया बढ़िया होता तो ई हाल होता हमारे बाबू का..." फिरंगी पर बरस पड़ी है सूबेदारबो, "ई तो खुस हो रहा होगा मन ही मन कि हमारे बाबू का हिस्सा भी खाएगा अब..."

"जब तक डी.एम., एस.पी. नहीं आएंगे, लास कोई नहीं छूएगा।" जैसे अखाड़े में पहलवान घूमते हैं, लाश के चारो ओर चक्कर लगाने लगा है सिपाही।

जोगी सिंह ने माथा पीट लिया है अपना। सारा गांव सोचेगा, उन्हीं के परिवार का काम है यह।

देवता पांड़ेबो हाथ जोड़कर बैठ गई हैं तुलसी के धूल-धूसरित पौधे के आगे। पिंड छूटा 'घासीराम कोतवाल' से।

"इसी बात का डर था।" हताशा की गहरी मटमैली परत आसानी से देखी जा सकती है दिनेश सिंह के चेहरे पर। हठात् वसुधा का चेहरा कौंध गया है चेतना में। अब शायद और कभी भी उतना करीब होना संभव नहीं हो जिंदगी में। वह अद्भुत लड़की है। दिनेश सिंह का मन ललच जाता है हर दूसरे आदमी को बताने को। उसकी आवाज़, उसकी गंध, उसकी मेधा, उसका साहस, उसकी सृजनात्मकता, उसका परिवेश-बोध, उसकी स्निग्ध आत्मीयता...

धत्! खुद को दुत्कारा दिनेश सिंह ने। एक बच्चे की लाश के पास खड़ा होकर एक लड़की के बारे में सोच रहे हैं।

लेकिन दूसरे भी तो अपने मतलब की बात ही सोच रहे थे।

दमयंती राहत की सांस ले रही थी कि कोई सफाई नहीं देनी पड़ेगी वसुधा को। दयाशंकर खुश थे कि दोहरी प्रतिबद्धता के अंतर्विरोधों के बीच पिसने से बच गए थे। मुसमात सोच रही थीं—अब इस बार कैसे बचेंगे जोगी सिंह और उनके लल्ले।

थाना पहुंच गया था। घटना-स्थल और लाश का मुआयना किया जा चुका था।

"क्या बोलती है, सूबेदारबो? बोल!" मुसमात ने कड़कती हुई आवाज में पूछा।

"हम क्या बोलें, मलकिनी?" सूबेदारबो रोने लगी।

"बोल कि जोगीया का परिवार ढठीया दिया हमारे बच्चे को। और पैसा के बारे में मत सोच। जोगीया चाहता था, एगो कौआ तक नहीं झांके हमारे आंगन में। इस बात का बहुत दुःख था उसको कि तुम नहीं भागीं हमारा साथ छोड़कर। तुम्हारे नहीं, हमारे बेटे को मारा है जोगीया ने!"

गुनी का दरोगा पहचानता है मुसमात को।

"किसी के दबाव में तो नहीं न बोल रही?" डपटकर पूछा सूबेदारबो से।

"तुम देखी थी कि श्रीभगवान सिंह थे?" प्रतिवाद किया फिरंगी ने।

"ई हमारा बेटा नहीं है, ए सरकार। लवंडा है, लवंडा! पइसा लेकर डांड़ हिलाता है लंठ-लबार सबके सामने।" सूबेदारबो ने गालियां देना शुरू कर दिया है फिरंगी को।

"सब ई साली मुसमतिया का सिखाया हुआ है, दरोगाजी! ज़मीन का झगड़ा है हम लोगों का।" जोगी सिंह चीख रहे हैं, "एक नंबर की झूठी है हरामजादी। खाली झूठमूठ का केस करवाती रहती है हम लोगों के ऊपर..."

"ई चाची, ठीक काम नहीं है।" लुटे-पिटे-से अंदाज में मुसमात से कहा फिरंगी ने।

"बेचैन काहे हो रहे हो इतना? दरोगाजी बिना जांच किए थोड़े ही दे देंगे रिपोट।" मुसमात बोलीं।

"यह तो प्राथमिकी है केवल। पूरी जांच होगी।" दरोगाजी ने कहा।

"समझिएगा, दरोगाजी कि हमारा पूरा धन सूबेदारबो का है।" मुसमात ने कहा।

"देखिए! आपको भी लालच दे रही है हरामजादी।"

"हमारे सामने एक महिला को इस तरह गाली नहीं दे सकते आप।" दरोगाजी कड़के, "बहुत गलत बात है।"

सुधाकर पांड़े फुसफुसाए कान में कि "हटिए, नहीं तो अरेस्ट भी कर सकता है!" तो कांपते पैरों को जैसे-तैसे जमीन पर रोपते जोगी सिंह भागे वहां से।

वैसे यह वहम ही था सुधाकर पांड़े का। दरोगाजी गिरफ्तारी और जांच नहीं, बल्कि मुसमात के पैसे के बारे में सोच रहे थे।

गांव में केवल एक शख्स था, जिसे विश्वास था कि गुड्डुआ को नन्हकू सिंह ने मरवाया था। छबीला सिंह ने दिनेश सिंह को बताया, "मुसमात काम बिगाड़ रही हैं, मास्साब।"

पर काम बिगड़ चुका था। नन्हकू सिंह रह-रहकर हँस पड़ते थे इंकलाब की ओर

देखकर—"खेत खाए जोलहा, मार खाए गदहा।" कहा और खुद ही उंगली रख ली अपने होठों पर। बोलना नहीं है।

लोग कहते थे, यह लड़की कुछ न कुछ करेगी जरूर। उस लड़की ने इतना बड़ा काम कर दिया था कि हलचल मच गई थी पूरे जवार में। देवता पांड़े आंखों में आंसू भरे, दोनों हाथ जोड़े, बधाइयां बटोरते चल रहे थे। वसुधा आईआईटी की प्रवेश-परीक्षा में पास हो गई थी। पचपनवां रैंक आया था।

'पूरे देश में केवल चउवन छात्रा-छात्राएं ऊपर हैं उसके।' लोग ऐसे समझते इस स्थिति को।

"अभूतपूर्व...गुनी में पढ़कर...न भूतो न भविष्यति..." लोग व्यक्त कर जाते आनंदमय विस्मय का भाव और नए सिरे से भर आतीं देवता पांड़े की आंखें।

रंगू सिंह सूनी आंखों से, पता नहीं कितनी देर से, निहारे जा रहे हैं सूना आकाश। उनका भी सपना था—बेटे ऊपर, बहुत ऊपर ले जाएं परिवार का नाम; आकाश में खिला दें।

नीचे गली से सर्वेश की आवाज आ रही है और उसके दोस्तों की। रोज आती है, पर आज सुन रहे हैं रंगू सिंह।

"एगो लड़की आईआईटी में चली गई और ई सार को जोड़-घटाव नहीं बुझा रहा..." चिढ़ा रहे हैं किसी लड़के को।

"बुझाता नहीं है हमको?"

"तो बताओ न, एक और एक कितना होता है?"

"दो।"

"दस होता है, दस। विस्वास नहीं है तो जाके पूछ लो भोलवा की मउगी से।" सर्वेश हँस रहा है ताली बजा-बजाकर।

रंगू सिंह रो रहे हैं। पत्नी घबरा गई हैं देखकर—"तबियत ठीक नहीं है क्या?"

"अइसा औलाद.." गले में ही अटक गए हैं बाकी शब्द। आंखें बंद कर ली हैं रंगू सिंह ने।

रंगू सिंहबो जानती हैं, क्या करना होता है ऐसे मौके पर—चुपचाप इंतजार करना होता है उनके सहज हो जाने का।

"भउजी!" देवता पांड़े खड़े हैं चौखट पर, "आपके आशीर्वाद से काम हो गया वसुधा का।"

'हमारे आसिरबाद से!' मानो किसी गहरी निद्रा से जागीं हों रामज्ञान पांड़ेबो।

"बिना बड़ों के आशीर्वाद के होता है इतना बड़ा काम?"

गनीमत थी कि देवता पांड़े तक नहीं पहुंच पाई थी उनकी अवसन्नता। कितना बुरा लगता उन्हें!

"आपको राजा बना दिए भगवान।" उन्होंने संभाला अपने-आपको। कितना भी

बड़ा हो अपना दुःख, दूसरे के सुख में तो शरीक होना ही चाहिए न!

"हां ए भउजी, बेटी नहीं, देवी है, देवी..."

'अरे रांड़ी!' सिर पकड़कर बैठ गई थीं रामज्ञान पांड़ेबो। चइला लेकर दौड़ी थीं राघव पांड़े के पीछे-पीछे। राघव पांड़े भाग गया था...

आज ही के दिन यह भी पता चलना था! आज कम से कम देवता पांड़े की खुशी से तो खुश हो लेतीं।

'कब पता चला रे, हरामजादी?' झोंटा पकड़कर झिझोड़ रही थीं विमला का कि अचानक आक्रामक हो गई थी वह। धक्का दे दिया था जोर से। कमरे के कच्चे फर्श पर धड़ाम से गिरी थीं रामज्ञान पांड़ेबो।

'दयासंकरा का झोंटा काहे नहीं पेरती हो? गोसंइयाबो के यहां जाता है तो अच्छा लगता है?' विमला गुर्राई थी...

"कहती है, कमपूटर पढ़ेंगे। ऊ भी दिल्ली में। हम लोग के बुझाने के मान का नहीं है।" देवता पांड़े कह रहे हैं।

...कूल्हे की चोट अभी भी चसक रही है...

"आएंगे।" कहा।

"अरे, ऊ अपने आएगी। बोली, भउजी का आशीर्वाद जरूर लेना।"

देवता पांड़े चले गए हैं।

...दयाशंकर को बताएं! बोलेगा, हम तो हमेशा मना करते थे। तुम्हीं पापिन हो। चोरी-छिपे बुलाती थीं। क्या जवाब देंगी? और जवाब देकर भी क्या मिल जाएँगा? उसी हरामजादे राघव को क्यों नहीं कहें कि कहीं से दवाई लाए पेट गिराने की...कहीं भाग न गया हो गांव छोड़कर...रामज्ञान पांड़ेबो बेचैन कदमों से टहल रही हैं आंगन में।

रंग क्यों बदलने लगा है आकाश का! ऐसा काला, विद्रूप-सा क्यों लगने लगा है अचानक? और उनकी ओर गिरा क्यों चला आ रहा है? दयाशंकर...मुन्नी...चेतना...कहां चले गए सब के सब? उनके अंदर से क्या उग रहा है यह! काला, वीभत्स, इतना काला क्यों हो गया उनका ब्रह्मांड! रामज्ञान पांड़ेबो महसूस करती हैं बाहर की ओर निकलने लगे हैं उनके दांत। चीख रही हैं मदद के लिए—अपनी बच्ची का खून नहीं पी सकतीं वे...काला ब्रह्मांड सोखता चला जा रहा है उनकी चीखें...

"पी जाओ!" उन्हें लगा, वे हँसना चाहती हैं उसका असमंजस देखकर, जैसे डाकिनियां-डाइनें हँसती होंगी।

"क्या है?" विमला बोली।

"पेट गिराना होगा।" मानो अपने ढोंग पर दांत किटकिटाकर हँसना चाहती थी पिशाचिनी।

विमला पी रही है गटागट।

"सो जाओ।" कमरे के बाहर आ गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो। सिकड़ी लगा दी है बाहर से।

"माईऽऽऽ!" एक घुटी हुई चीख आई है बंद दरवाजे को छेदती हुई।

ओकर दुआर पर खड़ी हो गई हैं। इसी दुआर पर विमला को कंधे पर बिठाए हँसते रहते थे रामज्ञान पांड़े।

"अरे विमला बुचीया चिचिया रही हैं, चाची...अजीब तरीका से..." *पड़ोसवाले* आंगन से हरिबो आई है दौड़ी हुई।

एक भयानक डर चीरता चला गया है उनकी हड्डियों को। कहीं बच गई विमला तब?

खड़े-खड़े ही धड़ाम से गिर पड़ी हैं रामज्ञान पांड़ेबो। कुछ नहीं हुआ है उन्हें। बस किसी तरह उन्हें रोकना है हरिबो को अंदर जाने से।

हरिबो श्रीराम पांड़े के घर की ओर दौड़ी है।

रामज्ञान पांड़ेबो महसूस करती हैं अपने चेहरे पर पानी के छींटे।

"माईऽऽऽ..."

रोंगटे खड़े हो गए हैं उनके। विमला तो नहीं है! बैठ गई हैं चौंककर। मुन्नी थी। रो रही थी—"जहर खा लीं विमला दीदी!"

जो भी आ रहा था, अंदर से रोता आ रहा था। साहस मिला रामज्ञान पांड़ेबो को। रामज्ञान पांड़े की आंखों से भी आंसू बह रहे थे।

"इसे भी खा जाओ!" भीतर का काला ब्रह्मांड बोला।

"नहींऽऽऽ..." एक जोर की चीख के साथ आंगन में ही चुक्का-मुक्का बैठ गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो। पूरी देह कांप रही है।

"दिमाग गड़बड़ा गया था, नहीं?"

"जो भी हुआ था, बहस करने का टाइम नहीं है अब।" दूधनाथ सिंह गुस्साए, "फूंकने का तैयारी किया जाए।"

"भगवानजी बहुत दुःख दे रहे हैं बाबा, लेकिन फिकिर नहीं करना है। ई माया के व्योपार में सुखी कोई नहीं है। मन चंगा बच जाए, बहुत है..." अपने पुराने संघतिया की दुर्दशा देखकर उन्हें समझाते-समझाते ही रो पड़े हैं दूधनाथ सिंह, "बहुत दुःख दे रहे हैं भगवान...एतना सीधवा आदमी को..."

'क्या करते? इन दोनों का जीवन भी बर्बाद हो जाता!' पति को बेचारगी-भरी आंखों से देख रही हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

अपने दोमंजिले मकान की छत पर खड़ी होकर गांव की औरतों को गाली दे रही है चूड़ामनबो। किसी ने कह दिया था कि चूड़ामन जैसा भाई हो तो कोई भी लड़की जहर खा लेगी।

"हमीं हिस्सा खा रहे हैं बहिन सबका कि हमको कह रही है रे बिहूनी सब? जो खा रहा है, उससे पूछो!"

"सब गिट्टी-सिरमिट खा गई सरकार का और कहती है हिस्सा खा रहे हैं बहिन सबका?" टेंगर सिंह ने मोर्चा सम्हाल लिया है।

किसी ने चिढ़ा दिया था उन्हें कि दूसरे सारे अधकपारी मरे जा रहे थे जहर खाकर और एक वो थे कि बोझ बने हुए थे पल्टू सिंह के परिवार पर।

"पगलेट आदमी से नहीं बतियाते हम।" चूड़ामनबो ने फुफकार छोड़ी।

"तुम्हारा तो अपने बेटवा पगलेट है।"

"धांस देंगे गोजी।" विजय चीखते हुए दौड़ा।

"गोजी का फिकिर नहीं रहता हमको।" कहा टेंगर सिंह ने और चल दिए।

"चोरी के पइसा से दूमंजिला पीट लिए तो ई हो गए चाल्हांक और हम एक फांका चीनी भी नही फांके चोरी का तो पगलेट हो गए। वाह रे, वाह!" चलते-चलते कहा उन्होंने, "देवता बबवा की बेटीया बन जाती है कलक्टर तो डांड़ में रस्सा लगवाएंगे साले बेइमान लोग के।"

ये ऐसे दिन आए हैं कुंवरपुर में कि अघा-सा गया है बतरस करते-करते। विमला के मुद्दे पर अनुमानों और मीमांसाओं का दौर बंद होने को होता है कि वसुधा का जिक्र छिड़ जाता है।

"कौन नौकरी लगेगा हो देवता पंड़इया की बेटीया का?" प्राणायाम की मुद्रा में बैठे तिलंगी सिंह ने पूछा।

"पूछिए मत, बाबा!" कलक्टर सिंह के आयुर्वेद पढ़के आए बेटे पंकज सिंह ने बताया।

"तो तुम का हई चाम का झोरा लटकाए गंउवे में डोल रहे हो? ई नहीं कि ऊहे पढ़इया पढ़ें।"

"आप काहे नहीं बन गए डाक्टर राजेंदर प्रसाद?" कलक्टर सिंह बोले।

तिलंगी सिंह ने एक नासिका द्वार बंद कर सांस ऊपर खींच रखी थी। तिलमिलाकर बोलना चाहा कुछ और सांस हलक में उतर गई। छटपटाते हुए चौकी से नीचे आ गिरे।

"कहते हैं कि प्रानायाम करते समय इनसे मत बोला कीजिए कुछ।" पंकज सिंह दौड़े पिता को डपटते हुए।

तिलंगी सिंह हांफ रहे थे जमीन पर चित लेटे हुए।

"ई साला नालायक सबके लिए जान नहीं देना है, भइया!" दूधनाथ सिंह आ गए हैं कंधे पर सत्यनारायण सिंह के दो साल के बच्चे को बिठाए हुए—"हमारे बबुआ कहते हैं कि आरक्षन हो गया, बड़ा जातवालों को नोकरी नहीं मिलेगा। हम पूछते हैं कि अरे, बेटीफोरवना, देवता बाबा की बेटीया के लिए नहीं हुआ है आरक्षन?"

"सब कहने के लिए है।" पल्टू सिंह ने असंबोधित होते हुए भी हामी-भर दी है।

"आरक्षन है तो ई सिधनथवा का छौंड़ा जगनथवा काहे दुआर अगोरे हुए है?" श्रोता मिल गया है तो आवाज ऊंची हो गई है दूधनाथ सिंह की, "रूपललवा का नंदललवा बी.ए. पास होके काहे ई कोठिला का धन ऊ कोठिला कर रहा है?"

"सबका सब करमकोढ़िया है साला।" पल्टू सिंह बोले।

रामबिलास सिंह की दालान में चर्चा इस मोड़ पर पहुंच रही थी कि हालात अगर ऐसे थे तो क्यों थे?

"सब महटरवा सबका दोस है।" महादेव सिंह कह रहे हैं, "खाली भर-भर छीपा भात खाता है और ठेस-ठेस पादता है स्कूल जाकर। लड़कवा सब बेचारा कहां जाएं?"

"बिना पढ़ाए ही चांद पर चला गया आदमी?" शिवजी पांड़े ने प्रतिवाद किया।

"आपके पढ़ाए कोई बटोहिया लख तक भी पहुंचा है?"

"सूअर के चाम से ढोल नहीं बनता।" शिवजी पांड़े चल दिए हैं अपनी स्थिति स्पष्ट कर।

"देख लीजिएगा आप लोग," आपा खो बैठे हैं महादेव सिंह, "कल्कि अवतार होगा तो भगवान सबसे पहले महटरवे सबको काटेंगे।"

"कल्कि अवतार नहीं होगा का जी?" गणपति पांड़े को अकस्मात लगता है कि देर हुई जा रही थी प्रभु को आने में।

"पढ़-लिखकर बड़ा अफसर हो जाना बूची, तो नोकरी लगवा देना हमारे लइकवा का।" निहोराबो वसुधा ने पास पहुंच गई है फरियाद लेकर।

"अभी गए भी नहीं कहीं और हाकिम भी हो गए।" वसुधा को हँसी आ गई है निहोराबो की फरियाद सुनकर।

"निहोराबो का एडभांस बुकिंग हो गया। सहदेउवा एक नंबर पर रहेगा।" देवता पांड़े उमगित हैं।

"बूची की माई के साथ बेईमानी करेगी और बूचीए से बेटा का नौकरी भी लगवाएगी! वाह रे वाह!" देवता पांड़ेबो बोलीं।

"ई पंडिताइन को तो घुमा-फिराकर एके बतीए सूझता है—एके गीतीया सारी रतीया।" निहोराबो पिनक गई, "भगवान टोकरा धर देते कपार पर, तब बुझाता।"

"सब कोई किसाने को लूटने में लगा हुआ है, निहोराबो।"

"तबे न निहोराबो बड़का अटारी पीट ली है।"

"अटारी पीटी हो चाहे नहीं, हमारा दाम तो दबा रही हो न?"

"आप भी पंडिताइन!" निहोराबो को हँसी आ गई है देवता पांड़ेबो का लटका हुआ मुंह देखकर, "देहात में आजकल नरकारी खाने का हूब है किसी का? चार कोस जमीन चलने पर भी आधा वापस लाना पड़ता है ढोकर।"

"माने कि घाटा हो रहा है तुमको?"

"तो और क्या!"

"तब छोड़ दो, जाने दो।"

"आपके जइसा घर में बैठना नहीं न लिखा है हमारे भाग में। देवता बाबा रानी बनाके रखे हुए हैं तो मुंह से बकार निकल रहा है।"

यही प्रक्रिया अमूमन रोज दुहराई जाती। वसुधा देखती, माई का मन रोज खट्टा हो जाता। निहोराबो रोज घोषणा कर जाती कि सब्जियां नहीं बिकीं या करार हुए दाम पर नहीं बिकीं। देवता पांड़े कहते हैं, भाग्य मनाओ कि बेच आती है। पर देवता पांड़ेबो

को अच्छी नहीं लगती निहोराबो की बेईमानी।

"अच्छा छोड़ो, आज का दिन झगड़ा-गेंगा करने का नहीं है।" देवता पांड़े बोले।

"हम कहां कह रहे हैं कुछ? हम तो वसुधा बूची से कह रहे थे।" निहोराबो बोली।

वसुधा का पूरा अस्तित्व झनझनाहट से भर गया है आस्था के ये मीठे बोल सुनकर।

"सुनो तो, बबी।" मुसमात ने देख लिया है उसे।

"बैठो।" एक फुलहा तश्तरी में काजू, किशमिश और छोहारे के छोटे-छोटे टुकड़े रख दिए हैं उसके सामने।

"क्या बनने का मन है?" नेह-भरी आंखों से निहार रही हैं उसे।

"एस.पी. बन जाना।" खुद ही बोलीं।

वसुधा सुन रही है चुपचाप।

"पैसा का काम हो तो हमको बताना। जज्ञ में हमारा भी हिस्सा हो जाएगा।"

अपनी आंखें भीगती हुई महसूस करती है वसुधा। मुसमात का अछोर अकेलापन अपनी पूरी भयावहता के साथ समाता चला गया है उसके भीतर। कितना निष्ठुर होता है ईश्वर! किसी-किसी को सूई की नोक-भर जगह भी नहीं देता अपनी ममता का आंचल फैलाने को।

"एक बात याद रखना—मरद जात कुत्ता होता है। अपने को कभी कमजोर मत होने देना। खड़ा हो जाओगी तो कुत्ता जैसा पोंछ दबाकर भाग जाएगा। छाती देखने के लिए लार चुआएगा, लेकिन औरत छाती तानकर खड़ा हो जाए तो रामायन बांचने लगेगा। हमेशा छाती तानकर जीना!"

वसुधा चुपचाप सुन रही है एक स्त्री की अस्मिता का विस्फोट। वसुधा जानती है, अपने कहे हुए हर अक्षर को जिया है इस औरत ने।

"जो बुझाए सो करना, इस बुढ़िया के बकबक को भूल जाना!" वसुधा को विचारमग्न हो गया देख मुस्कराने लगी हैं मुसमात।

घर लौटते हुए यह खयाल आता है वसुधा के मन में कि कोई अच्छी नौकरी मिल जाएगी तो मुसमात को ले जाएगी अपने साथ। ढेर सारा आकाश देगी ममता का आंचल फैलाने को।

लेकिन दमयंती कहां चली गई अचानक? जब से रिजल्ट निकला है, दमयंती को ही खोज रही हैं उसकी आंखें। अभी तक तो नहीं कहा कुछ, पर कुंवरपुर छोड़ते वक्त उससे कहेगी कि जिस रास्ते पर वह चल रही थी उस पर चलते जाने की नियति के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचे। मेधावी थी, दृढ़प्रतिज्ञ थी। भले ही इस बार खराब हो गया था रिजल्ट, कोशिश करने पर अच्छा कर सकती थी। पर मिले तब तो!

"सुनेगी तो बड़ी खुस होगी, बूची, लेकिन..." रामगिरिही बता रहे हैं, "आबकारी विभगवा में सिपाही हैं उसके मामा...वहीं गई थी अपने मामी का बीमारी के बारे में सुनकर और अपने बीमार पड़ गई...का दो, जौंडीस हो गया है...बाकी, हम खबर पहुंचाइए के मानेंगे..."

"ई खबर रुकने के मान का नहीं है, रामगिरिही।" देवता पांड़े उभ-चुभ हो रहे हैं खुशी के मारे।

"एकदम ठीक कहा गया बाबा! किस माई के लाल का मजाल है कि ई खबर को रोक दे।" रामगिरिही ने एक चुरुआ खुशी और डाल दी उस खुशी में।

बाद में याद करेंगे देवता पांड़े कि जिन दिनों उगा था वसुधा का भाग्य-सूर्य, कितने अंधियारे बादल छाए हुए थे कुंवरपुर के आकाश में। दस दिनों के अंतराल में ही एक के बाद एक तीन मौतें हुई थीं। तीनों ऐसीं कि जाने वालों के जाने का वक्त बहुत दूर लगता था।

गांव स्तब्ध रह गया था शिवजी पांड़े का चीत्कार सुनकर—"चूड़ामन भाई को ले गया रे बाप..."

मुश्किल से शाम के सात बज रहे होंगे उस समय और गांव की आधा आबादी दिशा-मैदान के लिए बधार में ही बिखरी हुई थी।

गांव के सभी ट्रैक्टरों की हेडलाइटें जला दी गईं। छतों पर से दर्जनों सर्चलाइटें रोशनी फेंकने लगीं बधार में।

"भाई हो!" गणपति पांड़े का आर्तनाद सुनकर खेतों में जिधर-तिधर कुछ ढूंढ़ते लोग उनकी तरफ दौड़े। चूड़ामन पांड़े की सिरकटी लाश करहे में पड़ी हुई थी।

"ई सब क्या हो रहा है जी?" खून देखकर चक्कर आ रहा है छबीला सिंह को। मेड़ पर बैठ गए हैं।

चूड़ामनबो लिपट गई है लाश से और विलाप करने लगी है। उसी विकलता से, जिससे कमाऊ मर्द के जाने पर करती हैं भ्रष्ट अधिकारियों की बेवाएं। पति के चले जाने का मारक दर्द तो होता ही है इस विलाप में, यह दर्द भी होता है कि अब और अंडे नहीं दे पाएगी यह सोने के अंडे देने वाली मुर्गी।

"ए बबुआ, अब तो हो गया न कलेजा ठंडा? अब तो कमा-कमाकर नया-नया कित्ता नहीं न बनवाएंगे साहेब? अब तो भिखईन हो गए न हम?..." दयाशंकर पर निगाह पड़ते ही फट पड़ी है।

"ई सबका कह रही है, रे छीनरी..." गणपति पांड़े चिल्लाए, "हमारा भाई मर गया और राजपाट याद आ रहा है छिनार को।"

"बदला लेकर रहेंगे।" विजय ने एक हवाई फायर कर दिया है अपने देशी कट्टे से।

विजय की ओर झपटे हैं कुछ लोग और जमीन पर पटक दिया है कट्टा छीनने के लिए। पति की लाश को छोड़ बेटे को बचाने दौड़ी है चूड़ामनबो।

दयाशंकर पत्थर की मूर्ति की तरह एकटक देखे जा रहे हैं भाई की लाश को। मन कह रहा है—नन्हकू सिंहवा का काम है यह।

और भीड़ के एक कोने में खड़े नन्हकू सिंह सोच रहे हैं, उनका नहीं तो किसका काम हो सकता है यह?

श्रीभगवान सिंह एक डरावने शून्य का अनुभव कर रहे हैं। रेजों की उद्दंडता और नन्हकू सिंह की राजनीति के दूरगामी परिणामों को जितना चूड़ामन पांड़े ने समझा था, कोई नहीं समझ पाया था। और दूसरों की तरह शुतुरमुर्गीय आश्वस्ति में जीने वाले जीव नहीं थे चूड़ामन पांड़े।

ऐसी अफरा-तफरी मची हुई थी कि किसी को यह देखने की फुर्सत भी नहीं थी कि एक ऐसा शख्स भी है, जो रोना चाहता है गला फाड़-फाड़कर और रो नहीं पा रहा। रामज्ञान पांड़े डबडबाई आंखों से घूरे जा रहे हैं कमरे का खपरैल छप्पर।

"किसके लिए रो रहे हैं?" रामज्ञान पांड़ेबो आकर बैठ गई हैं सिरहाने।

कोई हरकत नहीं होती जबड़े में।

"आपके लिए तो वह कब का मर गया था। बोलिए, गलत कह रहे हैं?"

दोनों ही नाराज रहा करते थे उनसे—विमला और चूड़ामन। दोनों ही सोचते थे, दयाशंकर को पलकों पर बिठाए रखती हैं वे। दोनों गूंजा करेंगे उनके एकांत में; उनकी भर्त्सना करेंगे।

"हमारे ऊपर तो आपको शक नहीं है न, बाबा?" नन्हकू सिंह ने पूछा।

"दिमाग काम नहीं कर रहा।" दयाशंकर ने 'नहीं' भी नहीं कहा।

"कुछ दिखाई दे रहा है इंकलाब?"

"बगीचा में नारद सिंह के गिरोह का अड़ान रहता है।"

"नारदा नहीं मारेगा चूड़ामन बाबा को।" नन्हकू सिंह ने कहा।

चूड़ामनबो ने विजय का पैर पकड़-पकड़कर यह शपथ खिलवाई है उससे कि कुछ लोग उसे उकसाएंगे इस केस में नन्हकू सिंह का नाम देने को, पर नहीं देना है। अब जबकि नहीं रहे साहेब, फूंक-फूंककर चलना है। पार्टी पोलटिक्स में नहीं पड़ना है। विजय का घर से बाहर निकलना भी बंद कर दिया है उसने। रोती भी है तो रात को तकिये में मुंह छिपाकर। बिना आवाज किए। उत्तेजित हो जाता है विजय। दयाशंकर और जिस-तिस को उड़ा देने की बातें करने लगता है।

"नन्हकू भाई!" देख लिया कि सभी चले गए तो छांगुर, बोला, "चूड़ामन को काट दिए हम।"

"क्या!" चौकी से उछलकर खड़े हो गए हैं नन्हकू सिंह और आंखें फाड़-फाड़कर देखे जा रहे हैं उसे।

"सोच के नहीं गए थे, लेकिन..."

"लेकिन?"

"थप्पड़ भी मारा रे?" अपनी औरत से वह न जाने, कितनी ही बार पूछ चुका था ये सवाल, "का बोली थी विजइया की माई?"

नहीं बताती तो पीटने लगता उसे।

"बोली कि हमको तो चूड़ामन जइसा मरद मिल जाए तो खुरहेंटीए में लोट जाएं।"

"तो तुम का बोलीं?"

"बोले क्या! बोले कि हमको नहीं रहना है आपके यहां।"

"बोली थी सचमुच कि चियारकर पड़ गई थी, रे छीनरी?"

"तुम्हीं जानते हो, नहीं बोले थे?"

"तब क्या हुआ?"

"तब आकर नोट हिलाने लगा था मुंहवा के आगे—जब तक हाथीछाप है चूड़ामन पांड़े के हाथ में, सौ गो तैयार हो जाएंगी उघारने को।"

"उसके बाद?"

"बोले कि दूसरे को दिखाइएगा हाथीछाप, तो तड़ से थप्पड़ चला दिया।"

छांगुर के दिमाग से उतरते ही नहीं थे चूड़ामन पांड़े। लोग कहेंगे, मटुकबोउवा की पतोहीया भी उसी के जैसी हो गई। जैसे सुकुमार पंडितबो के ऊपर बोलते थे बोल, उसके ऊपर भी बोलेंगे।

"हमसे बरदास्ते नहीं हुआ, नन्हकू भाई।" कुछ बहुत खतरनाक कर गुजर गए होने की दहशत छांगुर अब महसूस कर रहा है हड्डियों में, "चापाकलवाले झगड़े के दिन हमको भी मारा था थप्पड़।"

"अकेले थे?"

"चार-पांच ठो साथी था बाहर का।"

"चार कि पांच?" चीख-से पड़े हैं नन्हकू सिंह।

"पांच।"

"मुंह नहीं न खोलेगा?"

"अब जो हो!" दीवार से पीठ सटाए फर्श पर पसर गया है छांगुर।

"जो क्या होगा! मुंह खोला किसी ने तो गए तेलहंडा में।"

पता नहीं क्यों, आज डर लग रहा है नन्हकू सिंह को। लग रहा है कि कुछ ज्यादा ही फैल गया है जाल। कहीं अपने ही पैर न उलझ जाएं इसमें।

"घूमना-फिरना एकदम बंद कर दो कुछ दिनों के लिए।"

नन्हकू सिंह सोच रहे हैं, कुछ दिनों के लिए खुद भी बंद कर देंगे जमावड़ा लगाना, पोलटिक्स बतियाना। कहीं चले जाएंगे पत्नी के साथ। घुमा लाएंगे। घर में पड़े-पड़े डरती रहती है बेचारी।

7

दयाशंकर को पकड़ ले गई थी पुलिस। गुनी से बाजार करके लौट रहे थे कि रास्ते में ही रोक लिया था। कहा, पूछताछ करनी थी केवल, पर रात-भर हाजत में रखने के बाद जेल भेज दिया था।

"छूट जाएंगे, भाई, छूट जाएंगे।" पूरा वृत्तांत सुन लेने के बाद बोले मंधाता मिश्र, "एफआईआर में नाम ही नहीं है। कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड है ही नहीं। कोई ठोस

या तरल सबूत भी नहीं पुलिस के पास तो केवल रामप्रवेश चौधरी के चाहने से बेल होना नहीं न रुकेगा।"

"मंधाता मिसिर अपने आदमी हैं, चाची, और बहुत दबंग वकील हैं। बोले हैं, छूट जाएंगे बाबा।" जगनाथ आ गया है हिम्मत बढ़ाने।

"पइसा?" रामज्ञान पांड़ेबो ने पूछा।

"मंधाता मिसिर के पास पइसा का कमी नहीं है, चाची।" जगनाथ को गर्व की अनुभूति हो रही है यह बताते हुए कि अपने लोग केवल कुंवरपुर में ही नहीं, बाहर भी हैं और प्रभावशाली हैं।

"यह भी एक अनिवार्य हिस्सा है सार्वजनिक जीवन में सक्रियता का।" दयाशंकर की जमानत हो जाने पर मुदित हैं मंधाता मिश्र।

"नौलखवा कंबल ओढ़कर घीव पीने के फिराक में रह रहा है। धावा बोलना होगा एक दिन।" नन्हकू सिंह बोले।

"जिसके ऊपर भी बोलना हो धावा, बोलिए, पर ध्यान रखिए कि मुद्दा व्यक्तिगत नहीं हो, और वाजिब हो।"

बाद में दयाशंकर को समझाएंगे मंधाता मिश्र कि जो लंबी रेस का घोड़ा होता है, नन्हकू सिंह की तरह हड़बड़ाकर, उत्तेजना की स्थिति में काम नहीं करता। व्यक्तियों का अहम् ही ले डूबा साम्यवाद को। सच्ची लड़ाई व्यक्तियों नहीं, निहित स्वार्थों के खिलाफ होती है।

सच्ची लड़ाई, पता नहीं, थी भी कि नहीं किसी के दिलो-दिमाग में! उसी दिन कुंवरपुर लौट आए थे दयाशंकर।

"पावर हो जाने से दिमाग नहीं न हो जाता जी।" श्रीभगवान सिंह रामप्रवेश चौधरी और नौलाख महतो के ऊपर गरम हो रहे हैं दयाशंकर के लौट आने की खबर सुनकर—"ई साले कोईरी-कमकर लोग से कुछ नहीं होगा। बोले थे कि भीतर करवा दीजिए कम से कम छौ महीना-साल-भर के लिए तो..."

"सतनारायण सिंह न काम बिगाड़ दिए। गोड़ छान लिए विधायकजी का। घिघियाने लगे कि दयाशंकर का हाथ नहीं है मर्डर में। बेचारे दरबान जइसा मौजूद रहते हैं बैठका में। विधायकजी को सुनना पड़ा।" नौलाख महतो सफाई देते चल रहे हैं।

"ई साला सतनरयना भी..."

"दूधनाथ भाई बोले होंगे, बचवा!" जंगी सिंह बोले, "पुराना संघतिया होने के फेरा में पड़े हुए हैं।"

श्रीभगवान सिंह चाहते थे कुछ बोलना, पर कलक्टर सिंह ने इशारा किया चुप रहने का तो नहीं बोले। कलक्टर सिंह नहीं चाहते थे कि नौलाख महतो के आगे बातें हो राजपुताने के अंदरूनी झगड़ों की।

"नौलखवा को कम नहीं समझना है, श्रीभगवान भाई। नन्हकूआ से कम बड़का सुरूतवाला नहीं है।"—नौलाख महतो चले गए तो बोले, "हमको तो लगता है कभी-कभी

कि कहीं यही भीतरघात न किया हो चूड़ामन बाबा के साथ। दोस्ती में कुस्ती।''

''कर भी सकता है। मांग करवाया होगा कुछ; नहीं माने होंगे तो हिंट कर दिया होगा कि उठा लो।'' जंगी सिंह ने हामी भर दी।

इस इलाके के अपहरण उद्योग के एक बड़े सूत्र के रूप में फैल रही नौलाख महतो की ख्याति की ओर इशारा कर रहे हैं जंगी सिंह। जवार के सबसे बड़े पनहा थामने वाले के रूप में प्रसिद्ध हो रहे थे नौलाख महतो।

''हम तो सुने हैं कि गिरोह सबका अड़ान भी रहने लगा है इसके यहां।'' जंगी सिंह ने अपनी बात को आगे बढ़ाया।

''जाने दीजिए, काका, बहुत मछली है समुंदर में। एगो और मगरमच्छ हो जाने से भी कोई अंतर नहीं आएगा।'' श्रीभगवान सिंह ने निश्चिंतता के भाव से कहा।

कुछ पक रहा था उनके दिमाग में, जिसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताना ही अच्छा समझा उन्होंने।

सत्यनारायण सिंह अगली सुबह डोलडाल के बाद दतुअन चबाते हुए पहुंचे अपने पोखरे के पास तो भेद खुला कि क्या पक रहा था श्रीभगवान सिंह के दिमाग में।

रात को किसी ने जहर डाल दिया था पोखरे में। यह पहली फसल होने वाली थी और मरी हुई मछलियां उतरा रही थीं पानी की सतह पर। ठहरे हुए उदास पानी को देखकर उदास होने लगे थे लोग।

अपने अनाम दुश्मनों को गाली देते-देते थक गए तो लगभग विक्षिप्त आदमी की तरह दौड़-दौड़कर पोखरे के चारो ओर लगे शीशम के छोटे-छोटे पौधे उखाड़ने लगे थे सत्यनारायण सिंह—''ले तोरा माईचोदो...ले जाओ इसको भी...''

''हम तो पहले ही से कह रहे थे साले नालायक को कि नहीं पड़ना है ई सब फेर में...तो लोन लेने चले गए...नेता बनते हैं...अब पता नहीं, कहां से भरेंगे लोन...अपनी गंड़ीया से भरेंगे...'' उखड़े हुए पौधे देखते ही दूधनाथ सिंह भी दहाड़ने लगे।

''काम तो बेचारा बहुत बढ़िया किया था, बाकी अइसा न गंड़मरव्वलवाला जमाना आ गया कि बढ़िया माने चूतिया।'' जगदीश सिंह ने जरूरी समझा अपने गोतिया के समर्थन में आगे आना। गांव का क्या भरोसा! गाना शुरू कर दे कि उनकी ही ईर्ष्या का जहर था यह।

''चूतिया कौन है, ई तो चाचा, हम देखा देंगे कुंवरपुर को।'' सत्यनारायण सिंह गरजे।

''कुछ नहीं होगा तुमसे।'' दूधनाथ सिंह भी गरजे।

''काहे नहीं होगा?''

''काहे कि करमअभागा आदमी से कुछ नहीं होता।''

''आपको लगता है कि हमको शौक लगा है नौकरी नहीं करने का?''

''दीपनरयना सरंडीये कॉलेज में पढ़ाते-पढ़ाते सचमुच का पोरफेसर हो गया और ई सारघेंटी लगे भी एगो कॉलेज में तो कॉलेजवे बंद हो गया। बताइए, करमअभागा नहीं कहें तो क्या कहें इसको?''

"जो कहिए आप, लेकिन सतनारायणजीउवा का दोष नहीं है इस बार।" बाप-बेटे की तकरार को देवता पांड़े ने रोका, "हम कहते हैं कि, रामजी की दया से, कोई कितना बार बदमासी करेगा?"

"मनवा न उदास हो जाता है, बाबा। पूंजीपति नहीं बनने का दुःख किसको लगा है यहां।" दूधनाथ सिंह को अब होता है अहसास कि नाहक ही तमाशा बने हुए थे।

अनजानाजी ने हमेशा की तरह कुंवरपुर के बारे में अपना अनुभवसिद्ध ज्ञान निराला की पंक्तियों के माध्यम से परोस दिया—"बांधो न नाव इस ठांव बंधु...हँसता है सारा गांव बंधु।"

"बाप रे बाप!" अपना यह मंतव्य व्याख्यायित करते समय अपनी दोनों मुट्ठियों में अपने माथे के बाल जकड़ लेते हैं अनजानाजी, "हम तो कान पकड़ लिए हैं कि भीख भी मांगना हो तो कुंवरपुर में नहीं मागेंगे।"

"तब काहे को ललचाए हुए हैं ग्राम शिक्षा समिति के परधानी के लिए?"

"कौन ललचाया हुआ है? हमको फुर्सत है ई फालतू के काम के लिए?"

"तो श्रीभगवान सिंह ऐसे ही बढ़ा दिए आपका नाम?"

"श्रीभगवान सिंह से पूछिए।" अनजानाजी बोले और निराला की पंक्तियां गुनगुनाने लगे—'बांधो न नाव इस ठांव बंधु...'

"ई काम श्रीभगवान का है। और नौलखवा का भी हाथ है इसमें।" नन्हकू सिंह ने घटना के बारे में सुनते ही उद्घोषणा कर दी।

जंगी सिंह डर गए कि कोई पक्का सबूत न लग गया हो नन्हकू के हाथ।

"अंदाजीफिकेशन मार रहा है।" श्रीभगवान सिंह ने भरोसा दिलाया उन्हें।

"ई साला सत्ता का दलाल सब साबित करने में लगा हुआ है मिल-जुलकर कि हमारे चलते अशांत है कुंवरपुर। जनवाद को बदनाम करना चाहता है साला कमीशनखोर सब।" नन्हकू सिंह दूधनाथ सिंह के दुआर पर पहुंच गए हैं अपनी बात लेकर, "आप केस कीजिए, चाचा, सबूत हम जुटाएंगे।"

हाथ जोड़ दिए हैं दूधनाथ सिंह ने—"हमारे कंधा पर से बंदूक मत चलाओ, बचवा। गरीब आदमी हैं, कबर जाएंगे। दिमाग पहले से ही गरम हो रहा है सोच-सोचकर कि पचास हजार का लोन कहां से भरेगा सतनरयना?"

"इस प्वाइंट पर तो आप बेकारे माथा गरम कर रहे हैं। सरकार में कहां दम है कि लोन वापस ले ले; बाकी इस बात का अफसोस रह जाएगा कि गुंडई करने वाले बच गए साले।" हताश लौट आए नन्हकू सिंह।

अपना ही पैसा वसूल कर पाने में सरकार की विफलता के लिए उसे गाली देने वालों की कमी नहीं थी समाज में। अर्थशास्त्री खासा चिंतित थे कि टैक्स कलेक्शन नहीं होगा, लोन रिकवरी नहीं होगी तो पैसा कहां से आएगा देश चलाने के लिए; पर सरकार की मजबूरी थी कि देने वाले दे ही नहीं रहे थे तो क्या करती बेचारी! मांगने जाती तो घुड़क

देते—पहले रूल सिंपलीफाई करो। नक्सलवादी तो थे नहीं कि गोली चलवा देती उनके ऊपर। एक मुश्किल काम में लग जाती बेचारी। नए नियम बनाओ, पुराने बदलो, प्रस्तावित नियमों के संतोषजनक नहीं होने पर उनकी नाराजगी झेलो—ए ड्रॉप इन ओसिन...काम नहीं चलेगा! जस्ट लुक ऐट अमेरिका...सरकार नहीं कह पाती उनसे कि 'एंड व्हवाई डोंट यू लुक ऐट इंडिया?' या कहती भी तो इतनी मुलायमियत के साथ कहती कि सुनने वालों को लगता, मजाक में कह रही है। सरकार की मजबूरी थी—उन्हीं के पैसे से आयोजित सेमिनारों में भला उन्हीं को कैसे कह दे तीखी-तुर्श बातें!

और जनता भी, जो इस मुद्दे पर जरा भी आंदोलित नहीं होती कि जो दे सकते थे, क्यों नहीं दे रहे थे टैक्स या जो लौटा सकते थे, क्यों नहीं लौटा रहे थे लोन, एकदम से सड़कों पर आ जाती अपने टैक्स-फैक्स नहीं देने के अधिकार के सवाल पर। दूसरे मांगें तो सांस लेने की कीमत भी दे दे, लेकिन सरकार की क्या मजाल कि स्कूलों और अस्पतालों के लिए फीस मांग ले! सरकारी कर्मचारी चाहें तो नजर उठाकर देख लेने-भर के लिए घूस मांग लें, लोफर-लपाड़े किसी भी पूजा या जागरण के नाम पर चंदा मांग लें, अपराधी चाहें तो जितनी फिरौती मांग लें, पर सरकार मांगेगी तो नाराज हो जाएगी जनता। चक्का जाम कर देगी, जनता-कर्फ्यू लगा देगी। जो सारे टैक्स माफ कर देने को कहेगा, उसे गद्दी पर बिठा देगी।

कुंवरपुर की जनता भी इसी देश की जनता थी। मानती थी कि सरकार को टैक्स-ओक्स मांगने या लोन वसूलने के काम में ज्यादती नहीं करनी चाहिए। ठीक है, महीना मिलता है मांगने का तो कह दीजिए एक बार, लेकिन यह मतलब नहीं हुआ इसका कि पीछे ही पड़ जाइए। इसलिए जब लोगों ने नौबत मियां की समस्या के बारे में सुना तो थोड़ा अकचकाए। आई.आर.डी.पी. वाला लोन वापस नहीं करने के कारण नौबत मियां को नोटिस मिली थी और चौकीदार बता गया था कि मामला सीरियस था। नहीं जाने पर वारंट निकल सकता था।

"फेर में पड़ गए न नौबत?" दूधनाथ सिंह फिर घबराने लगे हैं। नौबत मियां को तो बस पंद्रह हजार लौटाना है। पचास हजार कैसे लौटाएंगे बाबू सत्यनारायण सिंह!

"मत पूछिए, बबुआन। फयदा एको पइसा नहीं और चोर बन गया आदमी।"

"कोई दे रहा है कि तुमसे ले लेंगे?" श्रीभगवान सिंह ने झिड़क दिया नौबत मियां को।

"लेकिन बोलहटा आया है तो जाना तो पड़ेगा ही न?" नौबत मियां घबराए हुए हैं।

"जाना क्या, कुछ सरकाना भी पड़ेगा, लेकिन ई मत सोचना कि लोन वसूली के लिए वहां मर रहा है कोई। किरनीया को थमाना दस-बीस...तीन महीना के बाद का डेट दे देगा।"

"फिर तीन महीना के बाद?"

"तले कलक्टर बदल जाएगा, मामला सेरा जाएगा।" श्रीभगवान सिंह ने कहा

और गैंडे की तरह मुंह फाड़कर जम्हाई लेते हुए चलता कर दिया नौबत मियां को। पर चिंतित भी हुए मन ही मन कि आखिर उनके लोगों तक कैसे पहुंचने लगी थी नोटिस?

"अब ईहे होगा, अरुण बाबू?" पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर से पूछा।

"क्या हुआ?" बैंक मैनेजर नौकरी के चंद बचे सालों में कोई पंगा नहीं मोल लेना चाहता था। घबरा गया।

"चुन-चुन के हमारे आदमी सबको ही नोटिस भेजवाया जा रहा है। कुछ गलती हो गया है हमसे?"

"ए भाई, आप तो हदसा ही दिए जी एकदम से।" अरुण बाबू की छाती सचमुच धड़क रही थी।

"कलक्टर साहेब न फोकस बनाने में लगे हुए हैं।" धड़कन सम हो गई तो बोले, "हम तो बोले भी कि ई दस-पंद्रह हजरीया सबको पकड़ने में कुछ नहीं रखा। जितना आएगा उतना नोटिस तामील कराने में ही चला जाएगा। पर कलक्टर कलक्टर है!"

"फोद है।" श्रीभगवान सिंह बोले।

अरुण बाबू ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

पर अरुण बाबू गलत नहीं कह रहे थे। कलक्टर साहब के सामने एक गंभीर समस्या खड़ी हो गई थी। नौबत मियां खड़े थे सामने और कह रहे थे कि टेंट में कुछ हइए नहीं है तो क्या दें। जेल भेज देने की धमकियों का भी कोई असर नहीं हो रहा था।

"कुछ है ही नहीं तो जहां भेज दें, हुजूर!" नौबत मियां की आंखें डबडबा आई हैं। दुर्गति करवा दिया श्रीभगवान सिंहवा ने। ऐ रहमदिल खुदा! लाज बचाना।

श्रीभगवान सिंह के कहे मुताबिक उन्होंने डेट देने वाले किरानी को पचास रुपये पकड़ाकर डेट तीन महीने बाद फिक्स कराने का आश्वासन भी ले लिया था, पर तभी हड़कंप मच गया था। कलक्टर ने खबर भिजवाई थी कि सारे केस वे खुद देखेंगे। हड़बड़ी में डेटवाला रजिस्टर लिए-दिए ऐसा भागा वह किरानी कि रुपये वापस मांगने का मौका भी नहीं मिला।

"कम से कम एक हजार रुपये आज दे दें तो जाने देंगे।" कलक्टर ने कहा।

"पचहत्तर रुपया लेकर चले थे, हुजूर, पचास उठ गए।"

"पचहत्तर रुपया लेकर क्या सोचकर चले थे?" कलक्टर चीख पड़े।

कलक्टर दरअसल यह सोचकर परेशान थे कि जेल भेजें भी तो कैसे भेजें? बैंक मैनेजर ने जेल में इनके भरण-पोषण का खर्च जमा ही नहीं किया था, जो नियमानुसार जरूरी था। "...ब्लडी नियम..." कलक्टर साहब इस नियम पर गुस्सा गए।

"पांच सौ दे दो कम से कम।" बोले।

"कुछ मोहलत दिया जाए।" नौबत मियां को पहले ही जैसा डर नहीं लग रहा अब।

"कितने दिन का?"

"छौ महीना का, हुजूर।"

"क्या?" कलक्टर, एक बार फिर चीख पड़े। घंटी दबाई तो दबाए रह गए।

चपरासी पहले से ही खड़ा था कमरे में।

"बैंक मैनेजर आए कि नहीं?"

"कहां आए!" चपरासी ने कहा।

"सब साले मिले हुए हैं...बेईमान..." चरम असहायता के अहसास से उत्पीड़ित कलक्टर गालियां देने लगे व्यवस्था चलाने वालों और जनता को।

"इन्हीं लोग का तो सब बिगाड़ा हुआ है, हुजूर। ब्लॉक और बैंक में खाली दलाली हो रहा है।" चपरासी ने भी अपने हिस्से का अक्षत फेंक दिया नैतिक उद्विग्नता की पवित्र अग्नि में।

"दलाली हो रहा है तो जेल जाएंगे साले चोर सब..." कलक्टर गुर्राए। एक निरुद्देश्य गुर्राहट।

नौबत मियां को थोड़ी दया भी आ गई अपने नौजवान कलक्टर के ऊपर। सरकार के खजाने में कुछ रुपया डाल पाने की हसरत रही होगी बेचारे की। पैसे होते तो कुछ जरूर दे देता—नौबत मियां ने सोचा।

लौटकर बताया दूधनाथ सिंह को कि लोग जो कहते थे नहीं डरने वाली बात, पक्की थी।

"कलक्टर से मिले?" दूधनाथ सिंह का अचरज का भाव, अचरज कम, आश्वस्त होने की कोशिश ज्यादा था कि पोखरे के लिए उठाए गए लोन को वापस करना जरूरी नहीं था।

"बेचारे कलक्टर तो नीयत के खरे आदमी लगे, लेकिन हमको लगा, अकेले हाथ-गोड़ चला रहे हैं।"

"अपने ही लोगों का नीयत न खराब हो गया है, नौबत! चाहते हैं, सब कोइए अझुरा जाए। बेचारे सतनारायन का बिगाड़े थे किसी का कि..."

"सुना जा रहा है कि जो दयाशंकर पांड़े के लिए पैरवी किए, उसी का बदला ले रहे हैं लोग।" बोल जाने के बाद पछता रहे हैं नौबत मियां कि क्या जरूरत थी बोलने की। पूछार-ओछार की नौबत आ जाती तो फंस जाते नाहक।

"अरे ऊ बघवा-बकरिया के कहनिया वाला हाल है हो। दबाने का मन हो तो बरियरका को दस गो बहाना मिल जाता है।" दूधनाथ सिंह ने ऐसी ठंडी आवाज में किया अपने अबरका होने का बयान कि नौबत मियां को लगा, वे गलती कर रहे थे श्रीभगवान सिंह और नौलाख महतो की ताकत को कम आंककर।

"ए काली माई!"

एक मर्दाना आवाज टकराई है उसके कानों से।

भला यह भी कोई तरीका है किसी को पुकारने का, उसने सोचा और मुड़कर देखा आवाज की दिशा में।

उसे ही पुकारा जा रहा था।

"सुनाई नहीं देता?" गुनी थाना के इंचार्ज शिवेंद्र सिंह ने फटफटिया इस अंदाज में रोका था उसके ठीक सामने गोया ब्रेक मारने में सेकंड-भर की भी देरी हो जाती तो उसकी दोनों टांगों को चीरता चला जाता उसका अगला पहिया।

घबरा गई है दमयंती और अपने चारो ओर निगाहें दौड़ाने लगी है घबराकर। दरोगा ऐसे क्यों कर रहा है, उसकी समझ में नहीं आ रहा। वह तो आज ही लौटी है अपने मामा के यहां से। एक लंबी बीमारी के बाद। इस अवसाद से तरबतर कि अब गुनी या कुंवरपुर, कहीं भी नहीं दिखेगी वसुधा।

"बैठ जाओ।" फटफटिया की पिछली सीट की ओर इशारा किया शिवेंद्र सिंह ने, "कुछ बातचीत करना है तुमसे।"

"क्या पूछना है?" वह चौकन्नी आंखों से पढ़ने की कोशिश कर रही है शिवेंद्र सिंह के चेहरे पर लोटते भावों को।

"क्या पूछना है! जहां तुम कहोगी, वहीं थाना खोल देंगे?"

"हम अपने आ जाएंगे।"

"देने को कह रहे हैं रे माधड़चोद कि इतना छाव दिखा रही है?" शिवेंद्र सिंह कड़के।

शिवेंद्र सिंह पुलिस अधिकारियों के उस वर्ग के जीव हैं, जिन्हें हँसी आ जाती है मंत्रियों को शपथ लेता हुआ देखकर—'मैं, बिना भय और पक्षपात के...' वर्तमान भारत के अलिखित संविधान में अक्षर आस्था है उनकी। भय और पक्षपात—ये दो मूल सिद्धांत हैं उस संविधान के। सत्ता से भय और सत्ता के प्रति पक्षपात। लोक सेवा आयोग ने उनकी जिस योग्यता के कारण चुना है उन्हें, उस योग्यता को भी सिद्ध करना है उन्हें। आयोग को दिए गए चढ़ावे का दसगुना वसूल लेना है।

शिवेंद्र सिंह कहते हैं, स्वजाति और सत्तारूढ़ दल, इन दोनों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में कोई कमी दिखे किसी को तो उसी समय कनैठी दे सकता है उन्हें।

धर्मवीर आयोग की सिफारिशें लागू करने, पुलिस ऐक्ट में सुधार करने, पुलिस को स्वायत्तता देने जैसी बातें करने वाले पुलिस के अपने साथी बेवकूफ लगते हैं शिवेंद्र सिंह को। अपने स्थानीय विधायक और मंत्री ही अच्छे लगते हैं उन्हें। सीधी-सरल बातें करने वाले—इस हाथ से दो, उस हाथ से लो।

शिवेंद्र सिंह को जो सीधी-सरल बात कही थी रामप्रवेश चौधरी ने वह यह कि "कुंवरपुर का दो-चार आदमी कुछ ज्यादा ही हीरो बन रहा है, जरा देख दीजिएगा।"

दमयंती से वही कह रहे थे शिवेंद्र सिंह—"हीरोइन समझती हो अपने-आपको?"

"वर्दी पहन लिए हैं तो गाली दे दीजिएगा आप किसी को भी?"

चूड़ामन पांड़े की हत्या और दयाशंकर की गिरफ्तारी की खबर सुनने के बाद गुनी के बजाय टेढ़का पुल पर उतर जाना ही उचित लगा था उसे। और टेढ़का पुल पर यह चांडाल खड़ा था!

"बड़ बतिअवले, नान्ह लतिअवले।" लपककर उसकी कलाई जकड़ ली है शिवेंद्र

सिंह ने—"अब दौड़ो फटफटिया के साथ।"

"छोड़ दीजिए नहीं तो..." मानिक की मड़ई की ओर देखा बेचारगी-भरी आंखों से। मानिक होगा तो जरूर आएगा मदद को। "मानिक भइयाऽऽ...!" वह चिल्लाई।

फटफटिया स्टैंड पर खड़ा कर उसे मानिक की मड़ई की ओर ही खींचना शुरू कर दिया है शिवेंद्र सिंह ने—"चलो न, भेंट कराते हैं यार से!"

मड़ई में बैठे लोग गंदे-गंदे बोल छोड़ रहे थे। दमयंती समझ गई है, किसी गहरे षड्यंत्र में फंस गई है वह।

"हम तो आज ही आ रहे हैं बाहर से।" घिघिआई।

बस दो-तीन झटकों में ही मड़ई के अंदर होगी वह। भेड़ियों की तरह उसे चींथकर रख देंगे ये लोग।

"और कुंवरपुर में जो मर्डर पर मर्डर हो रहा है?...कौन करा रहा है?...क्या नाम है तुम्हारे भतार का?...नन्हकू सिंह—उस माधड़चोद के तो गांड़ में गोली मारेंगे इसी पिस्तौल से..." शिवेंद्र सिंह हांफ रहे हैं उसे खींचने के श्रम के कारण, "जैसे ई साले मानिक का हलुआ टाइट किए हैं, उसका भी करेंगे—ई भी बहुत चालू हुए थे साले कमकर राम..."

"देखिएगा...इज्जत का सवाल है, सरकार..." मड़ई में हँस रहे थे लोग।

"कानून हाथ में लीजिएगा आप?" बुरी तरह हांफ रही है वह।

"अभी बताते हैं, क्या-क्या लेंगे।"

"हरामी कहीं का।" कोशिश की थी उसने कि अपनी उंगलियां घुसेड़ दे दरोगा की दोनों आंखों में, पर चूक गई थी। हाथ छुड़ाकर भागने की कोशिश में घिसटती चली गई थी पक्की सड़क पर।

"देखिए...देखिए...इस साली को...पिस्तौल लेकर घूमती है...मर्डर करवाती है छीनार!" एक टमटम से उतरे पंद्रह-बीस लोगों के हूजूम को अपनी जेब से निकालकर एक पिस्तौल दिखाया शिवेंद्र सिंह ने। बूट से मसल रहे थे उसकी जांघ को।

दमयंती की हिम्मत नहीं हो रही सिर उठाकर देखने की; एक बार फिर भागने की कोशिश करने की। पता नहीं, कौन-कौन देख रहा हो उसे बूट से रौंदा जाता हुआ! कुंवरपुरवाले भी हों शायद! हो सकता है, खुश हो रहे हों।

"उठती है कि नहीं अपने से?" उसकी कांख में अपना हाथ घुसेड़ दिया है शिवेंद्र सिंह ने, "देख रहे हैं, कितना जिद्द है साली को...कुंवरपुर के सब मर्डर में हाथ है इसका..."

"लेकिन आप क्या तमाशा किए हुए हैं यह?" एक कड़कती हुई आवाज सुनाई दी है उसे। उन आवाजों से अलग, जो झोपड़ी से आ रही थीं।

दमयंती को लगा, पहचानती है वह इस आवाज को।

"देखिए, अब ई एकरा बहिन का...नेताजी आ गए!"

"जबान सम्हाल के बात कीजिए।"

मंधाता मिश्र हैं। पहचान गई है दमयंती। पहली बार स्टेज पर चढ़कर गाया था उसने तो माथे पर हाथ रखकर उसे पचास रुपये का एक नोट दिया था मंधाता मिश्र ने।

"क्या सम्हाल के बात करें?" मंधाता मिश्र की ओर लपके हैं शिवेंद्र सिंह, "डकैती और मर्डर होगा तो नरेटा फारने लगिएगा कि कानून-व्यवस्था चरमरा गई है और डकैत को पकड़ेंगे तो टंडेली बतियाने आ जाइएगा, नहीं?"

"यही तरीका है डकैत पकड़ने का?"

"तो इससे पूछ न रे भोंसड़ीवाला कि बोले थे कि नहीं, चुपचाप कायदे से चलने को?"

"जो इस बच्ची को बोले डकैत, वह है भोंसड़ीवाला।" मंधाता मिश्र भी चीखे।

"क्या बोला रे माधड़..." पिस्तौल हाथ में आ गई थी शिवेंद्र सिंह के, पर बीच-बचाव के लिए पहुंच गए थे मड़ई में बैठे लोग, "पहचानने में फेर हो गया है, सिवेंदर बाबू! मिसिरजी अपने ही आदमी हैं..."

अब तक लगभग तीस-चालीस लोग जमा हो चुके थे घटनास्थल पर। दमयंती अभी भी बैठी हुई थी सड़क किनारे। शिवेंद्र सिंह को डर हुआ कि भीड़ को उनके खिलाफ भड़का सकते थे मंधाता मिश्र।

"हमारे रहते, सुन लीजिए नेताजी, डकैत, मर्डरर और नक्सलाइट नहीं रह सकेंगे गुनी में।" कहा और ताबड़तोड़ किक मारने लगे फटफटिया को।

बाद में उन्हें चिढ़ाएंगे अवधेश चौधरी वगैरह। दमयंतीया के साथ झाकाझूमर करने की क्या जरूरत थी? टैक्टफुली बुलाते तो खुद ही चली आती।

"जल्दी से निकल जाया जाए यहां से!" मंधाता मिश्र बोले, "कोई ठीक नहीं है इन हरामजादों का।"

पत्थर बनी बैठी हुई है दमयंती।

"दमयंती!" मंधाता मिश्र को आशंका हुई कि कहीं अंदरूनी चोटों के कारण तो ऐसा नहीं कि वह खड़ी नहीं हो पा रही, "कोई दिक्कत नहीं है न?"

"हम चले जाएंगे।"

"पागल कहीं की! मजलूमों की लड़ाई लड़ने चली है और हिम्मत हारती है।"

"आज हमको मार देता ये लोग।" जीप में बैठते ही उसे रुलाई आ गई है। अब जबकि टल चुका था संकट, उसकी प्रतीति अपनी समस्त भयावहता के साथ खड़ी थी उसके सामने।

"गांधीजी को तो प्लेटफॉर्म पर धकेल दिया गया था ट्रेन से। क्या हुआ? खड़े हो गए उठकर और खात्मा कर दिया आंग्ल साम्राज्य का..." मंधाता मिश्र कह रहे हैं, पर डरे हुए भी हैं। डर इस बात का था कि कहीं फोर्स लेकर वापस न आ जाए शिवेंद्र सिंह। जैसे ही पीछे से किसी गाड़ी के आने की आवाज सुनाई देती है, आंखें अपने-आप उधर ही चली जाती हैं।

"मानिक का क्या हुआ?" रुलाई रुक गई तो पूछा दमयंती ने।

"हुआ क्या, कुछ नहीं होगा। जैसे तुम्हारे गांववाले दयाशंकर को फंसाया था झूठे केस में, उसको भी फंसा दिया। दम नहीं है केस में। छूट जाएगा।"

"बाबूजी को खबर..."

"हो जाएगी।" कहा और मुस्कराने लगे मंधाता मिश्र, "तो अब दमयंती से भी डरने लगी रामप्रवेश चौधरी ऐंड कंपनी।"

जीप विक्रमगंज में प्रवेश कर रही थी, इसलिए शिवेंद्र सिंह के पलटवार का डर भी जाता रहा था।

टेढ़का पुल पर घटी घटना के कई ब्योरे पहुंचे हैं कुंवरपुर। श्रीभगवान सिंह के गुट के फैलाए ब्योरे के अनुसार, सड़क किनारे एक पुलिया के नीचे पिस्तौल लिए बैठी थी दमयंती कि नजर पड़ गई थी राउंड पर निकले शिवेंद्र सिंह की। बस, पकड़ लिया था दौड़ाकर। पर उसी समय उसके दूसरे साथी भी पहुंच गए थे वहां और जबरन छुड़ा ले गए थे उसे।

एक अन्य ब्योरे के अनुसार, सड़क किनारे बनी झोपड़ी में चकल्लस कर रही थी शिवेंद्र सिंह के साथ कि देख लिया था कुछ लोगों ने। बस, हल्ला मचा दिया था।

घटना का कमोवेश सही ब्योरा भी पहुंचा था, लेकिन झूठे ब्योरे ही लुभा रहे थे लोगों को। खुश भी थे बभनटोल और राजपुताने के लोग कि दुश्मनों के छक्के छुड़ाने में जुट गई थी श्रीभगवान सिंह की मंडली। दयाशंकर के बाद दमयंती की भी दुर्गति हो गई थी। किसी तरह साले नन्हकू सिंह आ जाते लपेट में तो मजा आ जाता।

"शिवेंदर सिंहवा डिकलेयर किया है कि एक न एक दिन लुढ़काएंगे इनको।" कन्हैया सिंह ने बताया, मानो किसी आकाशवाणी के बारे में बता रहे हों।

"इसी बात पर न 'बेपेंदी का लोटा' कहते हैं इसको?" पल्टू सिंह पिनक गए, "कोई भी सिंह चाहे सियार क्या बोले किसी के बारे में, उससे क्या लेना-देना है इसको?"

कन्हैया सिंह के बेपेंदापन का वृत्तांत गांववालों को अनेकों बार सुना चुके हैं पल्टू सिंह।

अपने विद्यार्थी-जीवन से ही सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहे हैं कन्हैया सिंह। बिक्रमगंज कॉलेज में पढ़ रहे थे तो 'अब्दुल गफूर हाय! हाय!' करते हुए लाठियां खाई थीं चउहत्तर के आंदोलन में।

"पूरा दो हजार रुपया लगा था इलाज में।" पल्टू सिंह बताते हैं, "और फायदा दू पइसा का भी नहीं हुआ।"

जनता पार्टी से मोहभंग हो गया देश का तो कन्हैया सिंह का भी हो गया। नौकरी लगने की आस जाती रही तो किसानों के हितों की याद आई और चौधरी चरण सिंह के लोकदल, जो बाद में 'दमकिपा' में बदल गया, की राजनीति करने लगे।

"ई सरवा जवार का अकेला छत्री था जो दमकिपा-नकचिपा का झंडा उठाए हुए था।" चार्जशीट का पन्ना पलटते हैं पल्टू सिंह, "इसके कारण बेटी के बियाह में दिक्कत होने लगा था हमको।"

फिर एक वक्त वह भी आया, जब सब कुछ छोड़ 'संजय विचार मंच' में शामिल हो गए कन्हैया सिंह।

"इसको पाड़ावाला काम नहीं कहिएगा तो क्या कहिएगा?" पल्टू सिंह पूछते हैं।

'संजय विचार मंच' भी छोड़ दिया कन्हैया सिंह ने। महेंद्र सिंह टिकैत से प्रेरणा लेकर इलाके के कुछ संपन्न किसानों ने किसान संघर्ष समिति बनाई तो उसकी सभाएं आयोजित करवाने में लग गए। संघर्ष धीरे-धीरे गायब होता चला गया किसान संघर्ष समिति से और केवल समिति बच गई अंततः, जिसमें जगह नहीं रही कन्हैया सिंह जैसों के लिए।

"अब हालत यह है कि तीन-तीन गो बेटी बार दिए हैं और आमदनी अठन्नी भी नहीं है। अनजनवा यही सब आल-जाल करके पक्का मकान बनवा लिया बिक्रमगंज में और..." पल्टू सिंह की पीड़ा के अलग-अलग आयाम!

"सच्चे आदमी का दुःख समझने को कोई तैयार नहीं है, छबीला भाई।" बाप के ताने सुन-सुनकर मन भारी हो जाता तो मित्र-मंडली के पास चले आते कन्हैया सिंह, "कहते हैं, अनजनवा जइसा काहे नहीं कमाते? पइसा के लिए अनजनवा बन जाए आदमी?"

"अनजनवा से याद आया जी," सत्यनारायण सिंह ने आवाज फुसफुसाहट की हद तक धीमी कर ली है, "जोर-शोर से प्रचार कर रहा है कि दमयंतीया को रखनी बनाने के फेर में हैं मंधाता मिसिर।"

"अपने लगा होगा फेर में। नहीं मिली तो प्रलाप कर रहा है।" छबीला सिंह औरतबाजी संबंधी चर्चाओं को इसी तरह समाप्त कर देते हैं खटाक् से।

दयाशंकर के कानों में भी पड़ी हैं अनजानाजी की बातें। रामगिरिही भी शायद इसीलिए बेचैन थे दमयंती से मिलने को।

"सुने मलिकार कि मलिकार नहीं होते तो ढठिया देता बेटी को...।" मंधाता मिश्र के पैर पकड़कर रोना शुरू कर दिया है रामगिरिही ने, "इसकी माई मना करती थी हरमेसा। हमी से गलती हो गया..."

"दयाजी, अपने काडर को यही ट्रेनिंग दे रहे हैं आप लोग?" मंधाता मिश्र की मुख-मुद्रा गंभीर हो गई है।

"रामगिरिही सज्जन आदमी हैं।" दयाशंकर बोले।

"तो सुनिए, रामगिरिही, जैसे दो बेटियां पढ़ रही हैं न अपनी, दमयंती भी पढ़ेगी यहीं रहकर।"

'अपने घर में रखेंगे?' आंखें पूछ रही थीं दयाशंकर की।

"हम लोगों के साथ रहेगी। हमारे घर में।" मंधाता मिश्र बोले।

"बोझा पड़ेगा आपके ऊपर, मलिकार।" खंड-खंड हो रहा है मन रामगिरिही का। अनजाना की जहर-बुझी चेतावनियां भी याद आ रही हैं और मंधाता मिश्र का अभिभूत कर देने वाला बड़प्पन भी है आंखों के सामने।

"क्या चाहते हैं? गोबर पथवाना?" रामगिरिही को विचार-मग्न देख हँसने लगे हैं मंधाता मिश्र, "रोज बीस आदमी का खाना बनता है हमारे यहां। दमयंती के आने

से खरचा नहीं बढ़ जाएगा।''

''अब हम का कहें, मलिकार।'' फिर रोना शुरू कर दिया है रामगिरिही ने, ''भगवान रेखा भी तो नहीं न दिए हैं हाथ में कि असिरबाद दें...दू-चार गो था भी तो बिला गया खर-खुरहेंटी में...''

''ग्रेजुएशन कर लेगी तो अच्छा रहेगा, रामगिरिही। गांव का माहौल भी ठीक नहीं है अभी। कुछ सोचकर ही कह रहे हैं हम। हर काम का एक वक्त होता है।''

''हमारा किताब-कॉपी भिजवा दीजिएगा।'' दमयंती बाहर आई और बोली, ''अनजाना-फनजाना को नहीं घुसने दीजिएगा घर में।''

दयाशंकर ने देखा, आंखें सूजी हुई थीं उसकी।

''इसका रोना-धोना भी बंद नहीं हुआ है अभी तक।'' मंधाता मिश्र बोले।

दमयंती भीतर चली गई थी इतना-सा बोलकर।

''सही बात यह है, दयाशंकरजी, कि लिडरशीप जब तक इनके बीच से नहीं आएगी—एजुकेटेड, इनलाइटेंड लीडरशीप, असली लड़ाई शुरू नहीं होगी।'' मंधाता मिश्र ने विचारमग्नता की दशा में कहा, ''झोला-टोपी टाइप समाजवाद और वैष्णोजनई मार्का लोकतंत्र से बहुत घाटा हुआ इन लोगों को।''

''आज भी हो रहा है।'' दयाशंकर बोले।

''बिल्कुल हो रहा है। और होता रहेगा। क्योंकि बौद्धिक ईमानदारी तो हम-आप दिखला सकते हैं, पर अनुभूतियां कहां से लाएंगे? और जब तक अनुभूतियों की आंच नहीं समाएगी देह में बहते खून में, असली लड़ाई शुरू ही नहीं हो सकेगी। गलत कह रहे हों तो बोलिएगा।''

मुंशी खबर दे गया कि दो-तीन मुवक्किल इंतजार कर रहे थे बैठके में।

''कमाई का इंतजाम भी होते रहना चाहिए।'' मंधाता मिश्र हँसे और हँसते हुए ही रामगिरिही की ओर नजर फेंकी, ''फालतू के जहुवहट में पड़ने का काम नहीं है रामगिरिही। मंधाता मिसिर तब से लगे हैं इस काम में, जब गाय-बछड़ा छाप को छोड़कर और किसी छापे का नाम तक नहीं सुने होंगे आप लोग।''

'का कहते हैं, बाबा?' रामगिरिही की आंखें पूछ रही थीं।

''मंधाता मिश्र ठीक कह रहे हैं। गांव और गरमाएगा अभी।'' दयाशंकर बोले।

''तनि गांव चलके इसकी माई को भी समझा दीजिएगा।'' रामगिरिही ने अपनी समस्या बताई, ''बड़ी बोलती है।''

''समझ जाएगी तो नहीं बोलेगी।'' दयाशंकर ने कहा था, तब यह बात नहीं आई थी उनके दिमाग में कि नन्हकू सिंह नाराज हो जाएंगे इस बात को लेकर।

''का, बाबा, कुछ दूसरा चीज नहीं मिला फीस देने को?'' नन्हकू सिंह खिन्न थे।

''अपने तैयार थी तो...''

''उसको क्या बुझाता है, महराज? उसको तो मंधाता मिसिरवा कुछ हाई-फंडा फिलौसफी समझा दिया होगा। आपको सोचना चाहिए था न! अब देखिए, यही मुद्दा

था कि इलाके में हलचल मचा देते हम लोग और मुद्दा ही रनिवास में बैठ गया। आठ-दस दिन भी नहीं सम्हाल पाए आप लोग।"

"अभी भी बात की जा सकती है।" दयाशंकर को अब मजा आने लगा है नन्हकू सिंह की खिन्नता देखकर। बिना स्टेपनी के गाड़ी हो गए थे।

"अब तो कुछ भी कहने का मतलब होगा—मंधाता मिसिर से मनमोटाव करना।" नन्हकू सिंह ने आकाश की ओर मुंह किए हुए कहा और दोनों हाथ पीठ के पीछे बांधे हुए टहलने लगे चुपचाप।

"एक विरोध-प्रदर्शन तो होना ही चाहिए।"

"अब छोड़िए विरोध-फिरोध प्रदर्शन। बाद में देखा जाएगा।" नन्हकू सिंह ने कहा और अंदर चले गए।

दयाशंकर ने नन्हकू को नहीं बताया था कि एक और विषय पर भी उनकी बात हुई थी मंधाता मिश्र के साथ। मुन्नी के साथ शादी का प्रस्ताव रखा था मंधाता मिश्र ने।

"नहीं बबुआ, ठीक नहीं है ई बात।" सुनते ही भड़क गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो, "अपना समझते हैं मंधाता मिसिर तो उनको चलाना ही नहीं चाहिए था ई बात। तुम्हारा भी दुर्नाम होगा। लोग कहेंगे, भठ दिया बहिन को।"

"कोई जोर-जबरदस्ती थोड़े है।" दयाशंकर थोड़ा सकते में आ गए हैं इस उग्र प्रतिक्रिया से, "वह तो उनकी पहली औरतिया बेचारी गिड़गिड़ाने लगी कि हम लिखकर देने को..."

"काना, लंगड़ा, भीखार-खंखार, जैसा भी मिले, ठीक है...पर बाल-बच्चावाला नहीं।" आंगन में बेचैन कदमों से टहलने लगी हैं रामज्ञान पांड़ेबो। उनकी बेहद दुखती रग पर ठोकर मार दी है दयाशंकर ने।

"सत्तर-अस्सी बिगहा टोपरा है एकदम सड़क किनारे। जोरदार प्रैक्टिस है। तीनमंजिला मकान है गांव पर। बिक्रमगंज में दोमंजिला मकान है। इज्जत है समाज में!" चेतना को सुना रहे हैं दयाशंकर। उन्हें मालूम है, मुन्नी भी सुन रही है।

"औरतिया कैसी है, भइया?" चेतना ने पूछा।

"अपनी सधुआइन से भी बड़का सधुआइन। गांव पर रहती है। चरक हो गया है देह में, इसलिए बाहर भी नहीं निकलती। एगो बेटी का बियाह कर दिए और एगो को रांची में पढ़ा रहे हैं।"

"बियाह भी कर दिए?"

"पिछला साल किए। सत्रह-अठारह साल की होगी। अपने चालीस-बयालीस के हैं।"

चेतना मुन्नी की ओर देख रही है।

"माई कह रही है, भीखार-खंखार से कर दो।" आंखें बंदकर खटिए पर लेटे दयाशंकर बोले जा रहे हैं, "भंडरीया...नटघुटरा...रंजइया जैसे से..."

"देखने में कैसे हैं?"

"रहो, दिखाते हैं।" अपने कमरे से फोटो लाने चले गए हैं दयाशंकर—"खड़ा होता है जवान काला कोट पहनकर तो लगता है कि कोई खड़ा है!" चेतना को फोटो पकड़ाते हुए बोले।

दयाशंकर पढ़ नहीं पा रहे फोटो देखकर मुन्नी और चेतना के चेहरे पर उगे भाव।

"हमको तो पसंद है, पर माई सुने तब तो।" डरते-डरते कहा।

"भीखार-खंखार से ही करने को सोच रही है तो काहे को सुनेगी।" मुन्नी बोली।

दयाशंकर ने सुना—'हमको भी पसंद है।'

"मुनिया को पसंद है, माई।"

"ई बिहूनी सब तो पता नहीं, कौन जनम का बदला ले रही है।" पति का पैर दबाना छोड़ जलती हुई आंखों से मुन्नी के कमरे को घूरने लगी हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"पहले सुन तो लो पूरी बात।"

"सुन क्या लें हो...सुन क्या लें..." क्रुद्ध नागिन की तरह फुफकार उठी हैं रामज्ञान पांड़ेबो, "बड़ा आए हो सुनाने वाले! साफ-साफ काहे नहीं कहते कि किसी तरह बोझा हटाना है। कहो तो दे दें इसको भी जहर!"

चांद टहलता हुआ ठीक बीचोबीच ठहर गया है उनके आंगन के। मानो वह भी उत्सुक हो जानने को कि देखें, इस उलझन से कैसे बाहर आता है यह परिवार।

"भीखार-खंखार से हमको नहीं करना है ब्याह।" कमरे के अंदर से ही बोली मुन्नी।

"चुप्प...हरामजादी!"

लेकिन चुप नहीं हुई मुन्नी, "छठ करने के लिए पियरी मांगने पर लाठी से पीटता है सुरेसवा। एक दिन दूध पी लेने पर, घर के बाहर धकेल देता है भंडरिया। यही अच्छा लगता है तुमको?"

निःसंज्ञ-सी हो गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो। इसके बावजूद कि खुशगवार ठंडी हवा चल रही थी आंगन में। अंजोरिया दिप-दिप कर रही थी हर तरफ।

"देख रहे हैं न, क्या कह रहा है आपका बेटा-बेटी सब? एकवट गया है भइया-बहिनिया सब।" आकाश के चांद को टुकुर-टुकुर ताकते पति से बोलीं।

"मुनिया सुख में चली जाएगी, माई। राज करेगी।" दयाशंकर ने विनती की, "जीप है, ट्रैक्टर है, टी.वी. है, फ्रिज है; गैस पर खाना बनता है।"

"जो ठीक बुझाए करो।" खुद को सम्हाल लिया है रामज्ञान पांड़ेबो ने। मन का क्या सुनना! दूसरा ही क्या हो गया था मन लायक कि मन रखने की जिद्द करें। बेकार अपने बच्चों को भी अंट-शंट बोल देती हैं। आखिर उन्हीं की समस्या का हल ढूंढने में न लगे हैं बेचारे। जो हाथ में है, कर रहे हैं।

"माई।"

चौंक गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो—'कौन बोला?'

मुन्नी रो रही थी उनके खटिए के पास जमीन पर बैठी।

"अब रोना-धोना मत मचाओ। कोई सुनेगा तो सोचेगा, क्या बात है।" वही

पुरानी रामज्ञान पांड़ेबो बन गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो—जरूरत से बहुत कम लंबी चादर से ढंकती-तोपती हुई घर की इज्जत। और अभी खत्म कहां हुआ है काम? कल कुंवरपुर पूछेगा, 'बेटी का बियाह दोआह से कर रही हो, सीधका बाबाबो?' उसे भी तो जवाब देना होगा। खुद अच्छा नहीं लगा था जिन बातों को सुनना, उन्हीं का हवाला देकर समझाना होगा दूसरों को कि सुख में जा रही थी बेटी।

"इसी को न कहते हैं संयोग?" ऐसे चहक रहे हैं मंधाता मिश्र मानो जवान हों अठारह साल का।

दयाशंकर को उतने अच्छे भी नहीं लग रहे आज। पैंट-कमीज में बंधी रहती थी देह। धोती-कुर्ते में साफ अधेड़ जैसा दिख रहे थे।

"दया बाबा को साधु मत समझ लीजिएगा आप।" नन्हकू सिंह चकित हैं कि आखिर यह कैसी चाल चल रहा है दयाशंकर पंड़इया! पहले दमयंती को पहुंचा दिया, अब मुन्नी को।

"हां जी, सालेजी महाराज?" और खुश हो गए हैं मंधाता मिश्र, "पहले न बताना चाहिए था।"

दारू हलक में ढरकाते हुए दयाशंकर सोच रहे हैं, जब हो ही गया है फैसला तो क्या सोचना—अच्छा है कि बुरा है?

"शिकायत का मौका नहीं देंगे, दयाजी।" मंधाता मिश्र नशे के सुरूर में बोले।

"मुन्नी बचीया जैसी औरत आपको सात जन्मों में नहीं मिलती।" नन्हकू सिंह ने कहा।

"सो तो पता ही चल जाएगा अब।" मंधाता मिश्र ने कैंची बनाई मोटी-मोटी टांगों की तो दयाशंकर का मन किया कि मना कर दें इस रिश्ते से। पर दारू पीते रहे चुपचाप।

दारू अच्छी थी।

"बढ़िया माल है।" नन्हकू सिंह मछली का गोश्त नोचते हुए बोले।

"ब्लैक डॉग है।" मंधाता मिश्र ने बताया।

"लेकिन मुन्नी बचीया पक्का शाकाहारी है।" नन्हकू सिंह पर हावी होने लगा था नशा।

दयाशंकर को अच्छा नहीं लग रहा उनका नशे की हालत में मुन्नी के बारे में बातें करना। पर मना करें भी तो कैसे करें!

"कामरेड लोग भी औरतों के साथ भेदभाव करेंगे तो कैसे चलेगा?" मंधाता मिश्र बोले, "अपने पाएंगे, दूसरे को नहीं पाने देंगे, यह तो बड़ी गड़बड़ बात है।"

"आपकी कामरेडई लेकिन जुझारू नहीं है, मिसिरजी। शिवेंदरा का बाल बांका भी नहीं हुआ, इस बात का बहुत दुःख है हमको।"

"दूर की सोचना सीखिए, कामरेडाधिराज! दूर की।"

"हम नजदीक का ही सोचना चाहते हैं। ढेर दूर का सोचने पर सोचता ही रह जाता है आदमी।"

"क्या करना चाहते थे आप?"

"कम से कम केस जरूर कर देना चाहिए था दमयंती को।"

"हमारी बात मानिए, दमयंती को ईशू मत बनाइए। जो ईशू है, उसी को ईशू रहने दीजिए।"

"क्या ईशू है?"

"फिलहाल तो यही कि सालेजी को समझा दिया जाए कि सीरियस होने की जरूरत नहीं है। दहेज नहीं मांगेंगे।" कहा और जोर का ठहाका लगा दिया है मंधाता मिश्र ने।

नन्हकू सिंह को अच्छा नहीं लगा अपनी बात को इस हल्केपन से दरकिनार कर दिया जाना, पर मौके की नजाकत भांपते हुए चुप हो गए। वैसे भी, आज जो वे हैं, मंधाता-फंधाता मिश्र की कृपा से नहीं हैं। 'अपने भुजबल बैर बढ़ावा' वाली लाइन रही है उनकी। मंधाता मिश्र की तरह संसद में हुई बहसों का जूठन नहीं चुभलाना है उन्हें। अपनी बात अपने तरीके से कहनी है। न परमिशन लेना है किसी से, न पीछे लगना है किसी के।

"दहेज तो दे ही चुके हैं।" फिर भी बर्दाश्त नहीं हुआ तो हँसते हुए ही कहा नन्हकू सिंह ने और झोला-झक्कड़ समेटने लगे।

इशारा मंधाता मिश्र और दयाशंकर, दोनों ही समझ गए थे, पर नजरअंदाज कर दिया उसे।

जिले के नए कलेक्टर जनता की आवाज को करीब से सुनना चाहते थे। प्रखंड-स्तर पर जनता दरबार की योजना बनाई थी और गुनी में पहुंचे हुए थे आज। थाने के परिसर में आयोजन किया गया है दरबार का। कलक्टर यानी नटराजन साहब, जिनकी जाति के बारे में सही-सही जानकारी नहीं मिल पाने के कारण अच्छी-खासी बेचैनी छाई हुई है दरबार-स्थल पर, जरूरत से ज्यादा मुस्करा और हाथ जोड़ रहे हैं। दूसरे अधिकारी गंभीर हैं। भीड़ मानती है, फटी हुई है उनकी। राधेश्याम बाबू 'सब करके देख चुके' वाली परमहंसीय प्रशांति ओढ़े इंतजार कर रहे हैं कि कलक्टर साहब बिराजें अपनी कुर्सी पर तो वे भी बिराजें। बैठने के पहले अपनी टूटी-फूटी हिंदी में उपस्थित जनसमुदाय को बताया कि अच्छे, जागरूक और संवेदनशील प्रशासन के लिए दो चीजें बेहद जरूरी हैं—सूचना और पारदर्शिता।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की अभ्यस्त भीड़ को आदत होती है भाषणों के बीच-बीच में ताली बजा देने की, सो यह अनुमान लगाते हुए कि कलक्टर साहब की इस बात में कुछ था ताली बजाने लायक, ताली बजा दी।

"पीपुल ऑलवेज अप्रिशियेट गुड थॉट्स।" अपनी कुर्सी में बैठने के बाद राधेश्याम बाबू के कान में फुसफुसाए। अब उन्हें क्या बताएं राधेश्याम बाबू कि ठीक इसी मौके पर कोई टुटपुंजिया नेता कह दे आकर कि 'पारदर्सिता-फारदर्सिता हम कुछ नहीं जानते, हमारी जाति को मिलनी ही चाहिए यह सुविधाएं', तो और जोर से तालियां

बजाएंगे ये लोग।

देवता पांड़े नोट करते हैं कि उनकी बारी आई बोलने की तो बोलेंगे कि एक तीसरी चीज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है—'नागरिकों का कर्तव्य-बोध' और कलक्टर से मांग करेंगे कि मूल अधिकारों जैसा दर्जा दिया जाए इस चीज को।

पर भीड़ मनोरंजन में जुट गई है। अवधेश चौधरी ने जैसे ही कहा कि गुनी के सरकारी अस्पताल में डॉक्टरों के द्वारा बिना काम किए वेतन लेने का काम किया जा रहा था, जवार के विभिन्न गांवों से आए लोगों के बीच होड़-सी लग गई यह बताने की कि उनके अपने गांव में कौन-कौन यही काम कर रहा था...डॉक्टर, नर्स, मास्टर, भीएलडबलू, बीडीओ, कर्मचारी...पिपरी के बूटन राय ने कहा कि धांधली हो रही थी आईआरडीपी के कार्यान्वयन में तो लोगों में फिर आपाधापी मच गई बताने की कि उनके गांवों में हरेक काम के क्रियान्वयन में धांधली हो रही थी। लोग खोद रहे हैं एक-दूसरे को, केहुनिया रहे हैं—बोल, बोल ना!

"एक-एक करके बोलेंगे, तभी तो लिखा जा सकेगा?" राधेश्याम बाबू ने अपील की।

"लिखने से नहीं ओराएगा, हुजूर।" भीड़ में से कोई बोला।

"बीच-बीच में होता रहे तो ऐसा प्रोबलेम नहीं होगा।" अपने अधिकारियों का ढाढ़स बंधाया कलक्टर ने, "लेट देम स्पीक।"

"हमारा कहना है कि जब चला ही नहीं सकते कुछ भी तो कुर्सियों को क्यों गंधा रहे हैं? छोड़िए कुर्सी।" भीड़ की आवाज से अलग एक आवाज गूंजी।

"देखिए, इस तरह का लैंग्वेज..."

"लैंगवेज एकदम ठीक है, केवल आप लोग ठीक नहीं हैं।"

उचक-उचककर नन्हकू सिंह को देखने लगे हैं लोग—नन्हकू सिंहवा है कुंवरपुरवाला!

कलक्टर साहब कुछ कहते अपनी टूटी-फूटी हिंदी में, उसके पहले ही एक और कड़कदार आवाज गूंजी—"एक बात हम साफ-साफ बता देते हैं जनता-जनार्दन को...सभा में गड़बड़ी फैलाने का प्रयास बर्दास्त नहीं किया जाएगा...हमको बताया न जाए कि परसासन को जनता के इतना करीब लाने का काम कभी पहले भी हुआ था?"

"विधायकजी के भाई हैं।" शिवेंद्र सिंह, जो कलक्टर की कुर्सी के पीछे खड़े थे, ने बड़े अदब से झुककर बताया। गुस्साते-गुस्साते मुस्कराने लगे कलक्टर—"आप बैठ जाइए, चौधरीजी। हम टैकल करेंगे।"

"क्या प्रोबलेम था आपका?" नन्हकू सिंह से पूछा उन्होंने।

"प्रशासन नाम की चीज ही नहीं है यहां।" नन्हकू सिंह बोले।

"स्पेसिफिक प्रोबलेम बताएं।"

'स्पेसिफिक' का मतलब मालूम होता नन्हकू सिंह को तो खुद ही कलक्टर नहीं बन गए होते! पर प्रोबलेम बताया—"कुंवरपुर के प्राइमरी स्कूल में एक शिक्षक, जो विगत बारह वर्षों से वहीं पदस्थापित है, मिडडे मील का सारा अनाज घर में भरता रहा

है। कोई है देखने वाला?"

"यह नक्सलाइट है, नक्सलाइट! इसको अरेस्ट करवाया जाए।" भीड़ के दूरवाले कोने में बैठे राघव पांड़े चिल्लाए। पर प्रोबलेम नोट हो गया था!

"दूसरों को बोलने का मौका नहीं मिलेगा?"

"इसी गुनी ब्लॉक के अंदर टेढ़का पुल पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की एक भूतपूर्व दलित छात्रा के साथ स्थानीय दरोगा..."

"साला नक्सलाइट सब क्या कर रहा है जी यहां?" अवधेश चौधरी के इशारे पर एक ही साथ कई लोगों ने बोलना शुरू कर दिया है।

"नक्सलाइट है?" कलक्टर साहब ने पूछा।

"जी हुजूर।" शिवेंद्र सिंह ने उसी अदब से बताया झुककर।

नन्हकू सिंह बाहर निकल आए हैं दरबार-स्थल के। दरबार-स्थल में शांति कायम रखने की अपील हो रही है।

"कैसा रहा?" जोर का ठहाका लगा दिया है बाहर आकर, "शिवजी बाबा गए काम से। कलक्टर सहेबवा अपने हाथ से लिखा है डायरी में!"

जगनाथ भी खुश है, "बाकी बादवाली बतीया पहले बोलते तो...!"

"फर्स्ट क्लास!" दयाशंकर भी लपकते हुए बाहर आ गए हैं सभा के।

"रघउवा क्या बोल रहा था, बाबा?"

"पहले बाप जाए जेल, फिर बेटा का भी इंतजाम होगा।"

"डोंट फील डिसहार्टेंड।" कलक्टर समझा रहे हैं अपने मातहतों को, "जिन चार-पांच स्पेसिफिक कंप्लेंट्स को नोट किया गया है, उनमें कल ही ऐक्शन लीजिए ऐंड सी द चेंज। क्रेडिबिलिटी का प्रोबलेम है न!"

शिवजी पांड़े फरार हो गए थे कुंवरपुर से। जिला शिक्षा अधीक्षक टाइप कराके ही लाया था उनके निलंबन का आदेश। स्कूल में ही दस्तखत किया आदेश पर और उस शिक्षिका को थमा दिया, जिसकी हफ्ते-भर पहले पोस्टिंग हुई थी यहां। कुंवरपुर प्राथमिक विद्यालय एक बार फिर सिंगल-टीचर स्कूल हो गया।

"एफआईआर भी होगा।" जाने के पहले बता गया।

अगले दिन लौटे शिवजी पांड़े तो उस शिक्षिका ने निलंबन-आदेश के साथ ही साथ यह सूचना भी दे दी—"एफआईआर भी होगा।"

"कलक्टर की मइया की टीट होगा!" बेसाख्ता निकल गया शिवजी पांड़े के मुंह से। बाद में महसूस किया कि एक महिला के सामने नहीं बोलनी चाहिए थी ऐसी बात।

"हम तो चलिए सस्पेंडे हो गए, अब आप देखिएगा कि कैसा जुल्म है यह?" शिक्षिका से बोले, "पचास किलो के बोरा में चालीस किलो देगा और कहेगा कि कम नहीं बाँटना है। अपने कोठिला में से निकालकर नहीं बांटेगा न आदमी?"

"हमको तो बहुते डर लग रहा है।" शिक्षिका सचमुच डरी हुई थी।

"देखिए, डरिए चाहे नहीं डरिए, नतीजा एक ही होना है तो क्या डरना!"

"फिर भी..."

"फिर भी का यह है कि चोर-चुहाड़, नक्सलाइट-फक्सलाइट सबका चरण छूते रहिए, कुछ नहीं होगा। लेकिन हम तो ऊ आदमी हैं न कि बोखार छोड़ा देंगे इन लोगों का।"

"पहिलेवाला रजिस्टरवा-ओजिस्टरवा..."

"कितना रजिस्टरवा-ओजिस्टरवा ठीक कीजिएगा?" जाते-जाते लौट आए हैं शिवजी पांड़े, "जरूरी थोड़े है कि मिड डे मील वाले में ही सस्पेंड करे। इसको ठीक कीजिएगा तो जवाहर रोजगार योजना में सस्पेंड कर देगा। एगो साला मास्टर मुर्गा-मुर्गी गिनने वाले काम में सस्पेंड हो गया।"

भीगी बिल्ली बनी शिक्षिका कभी अपने स्कूल को देखती थी तो कभी अपने वरिष्ठ सहकर्मी को जो कलक्टर की चेन्नई स्थित 'मइया' और कन्याकुमारी स्थित 'बहिनिया' को अपनी बची हुई जवानी का अर्ध्य चढ़ाते हुए चला जा रहा था।

"कुछ फिकिर नहीं है, श्रीभगवान भाई। आराम से घर बैठेंगे और जो साले हँसेंगे, उनको ऐसा डसेंगे कि पानी तक नहीं मांग सकेंगे।"

"सब जहर हउवे में छोड़ दीजिएगा तो डंसियेगा हमारे फोद से?" राघव पांड़े गुस्सा गए हैं उनके बढ़-बढ़कर बोलने पर।

"हई घड़ी-संयोग देखिए कि दूनो भइवा एक ही साथ सस्पेंड हो गया।" एक निर्बाध हँसी झिझोड़ गई है श्रीराम पांड़े की आम तौर पर शांत पड़ी रहने वाली काया को, "बालचन के जामल पढ़ियो-लिखकर बालचने रह गए।"

घोटोलों की अंतहीन शृंखला के किसी एक घोटाले में निलंबित होकर धनजी पांड़े भी सपरिवार गांव पहुंच गए थे।

"जो कलक्टरा का संघत करेगा, यही हाल होगा उसका।" तिलंगी सिंह बोले।

"आजकल सस्पेंडे होने में फायदा है, चाचा!" कंधे पर कुदाल डाले बगल से गुजरते हाकिम सिंह ने एंक राय उछाल दी।

"तुम कह दोगे कि गांड़ मरवाने में फायदा है, चाचा, और मान लेंगे हम?" तिलंगी सिंह तिजुक गए।

"आंख के सामने परमान हो तो कैसे नहीं मानिएगा?" हाकिम सिंह कुदाल जमीन पर रख चुक्का-मुक्का बैठ गए हैं प्रमाण का ब्योरा देने, "हमारे समधी के छोटका भाई दरोगा हैं कि नहीं, दसिआंववाले? उनको तो हम देखते हैं कि हर दू साल पर सस्पेंड हो जाते हैं और बड़का खटाल खड़ा कर लिए हैं पटना में...दूध बेचकर माल बनाते हैं, फिर वापस नौकरी में चले जाते हैं।"

"लिखके देते हैं कि सस्पेंड कर दिया जाए हमको?"

"लिखके काहे को देंगे? हो जाते हैं।"

"हद्द बतियाते हो तुम भी। गूहगिंजन करते होंगे कुछ, तभी न होते होंगे? अपने से कैसे हो जाएंगे?"

"उनको छोड़िए न भाई! सोच-समझकर होते होंगे। ई दूनो भइवा तो अचक्के में हो गया है। दूअर जैसा मुंह किए हुए है।"

"तो ईहो तो, बाबा, लिखिए न गए हैं गोस्वामीजी कि बेईमानी का धन सैतानी में जाता है।"

श्रीराम पांडे सोच में पड़ गए हैं कि किस कांड में ऐसा लिखा है गोस्वामीजी ने?

"दूनो बतिया तुम्हीं कह रहे हो, हाकिम।" तिलंगी सिंह को बरदाश्त नहीं हो रही हाकिम सिंह की बतकही, "एक तरफ बोल दिए कि ऊ जो तुम्हारे सारघेंटी पेटमघवा समधी हैं, मजे में हैं और इधर कह रहे हो कि बेईमानी का धन...?"

"जो देख रहे हैं, कह रहे हैं।" हाकिम सिंह ने कहा और अपने बड़े लड़के की आवाज की ओर कान लगा दिए, जो दस बांस दूर से ही चिकर रहा था कि काम हरज हो रहा था कुदारी के बिना।

"जाओ, जाओ! ढेर देरी किए तो देबो करेगा दू पैना।" मन की तिताई उगलकर तिलंगी सिंह खुद भी तैयार हुए चलने को, "सब साला तीन-फेरवा बतियाने वाला हो गया है इस गांव में।"

"और कह गया कि गोस्वामीजी लिखे हैं कि..."

"भावार्थ बोल रहे थे।" भंडारी बोला।

"कौन चीज का भावार्थ रे?"

"वो कोई अंगरेजी बोल रहे थे कि माने समझाएं आपको?"

"ए बाबा, आपके जमलका का जमलका सब तो और बड़का कुक्कुर है।" भंडारी को घृणा-भरी आंखों से देखते हुए चुटकी बजाते अपने घर की ओर बढ़ गए तिलंगी सिंह।

"जानते हैं बाबा, कलक्टरवा तो अपने बेटवो को सस्पेंड करवाएगा..." थोड़ी दूर जाने के बाद याद आया कि यह बताना तो भूल ही गए थे। कितना भाग से तो बेचारा का नौकरी लग गया जंगल विभाग में...चोरी करने के लिए उंगली किए रहता है उसको..."

शिवजी पांड़े से कोई पूछता कि 'आप तो सस्पेंड क्यों हुए, यह मालूम है गांव को, पर धनजी बाबा क्यों हो गए जी?' तो शिवजी पांड़े कहते, 'बेईमान है, बेईमान। उधर शहर में सरकार के साथ बेईमानी करता है और इधर गांव में परिवार के साथ।'

"यही देख लीजिए कि हम अफतरा में पड़े हुए हैं अपने और इसकी मेमसाहब घर में घुसते ही हिसाब मांगने बैठ गई कि आलू के खेत वाला हमारा हिस्सा क्या हुआ?" शिवजी पांड़े सुना रहे हैं लोगों को, "और ई साले हमारे भाईजी, जो सारा हिसाब गड़बड़ कर दिए सरकार का, गंभीरा फूआ जइसा कह रहे हैं, हिसाब-किताब ठीक रहना चाहिए...साले गद्दार कहीं के!"

गांववाले हँसते कि बुरे फंस गए हैं बेचारे धनजी बाबा। शिवजी पंड़इया से पार

पाना उनके बस का रोग नहीं है।

"इसके रोआं-रोआं में अइंच-पइंच भरा हुआ है।" पल्टू सिंह कहते हैं, "गेहुंवन, बिसखापड़, गिरगिट और दुमुंहा सांप—इन चारों को मिलाया होगा भगवान ने तब जाकर रचना हुई होगी इस बाभन की।"

गांव में किसी की भी इच्छा नहीं होती कि उसके किसी सर-सवांग से मेल-मिलाप बढ़ाए शिवजी पांड़े। और शिवजी पांड़े की फितरत थी कि जिस घर का जो सबसे कमजोर या निकम्मा आदमी होता या असंतुष्ट होता अपने घर के हालात से, उसी के साथ लग जाते घनिष्ठता बढ़ाने में। गांव में जब कभी भी पधारना होता किसी 'बहरा' रहने वाले का—चाहे वह रत्नेश सिंह हों या वासुदेव सिंह, अनुज सिंह हों या दीपनारायण सिंह, अनंत पांड़े हों या ददन पांड़े—शिवजी पांड़े सुबह-शाम उनके साथ डोलडाल के लिए केवल इसलिए जाते, ताकि बता सकें उन्हें कि उन्हें सही हिसाब नहीं दिया जा रहा था उनके हिस्से के टोपरे से हो रही आमदनी का। लेकिन जब से ठनी थी धनजी पांड़े के साथ, 'जो जोतेगा सो खाएगा' का अलख जगा रहे थे।

"तब वासुदेव सिंहवा को क्या पढ़ा रहे थे उल्टा-सीधा?" हाकिम सिंह गुस्साए।

"गलती हो गया।" उनकी दालान में बैठकर दतुअन चबाते हुए कहा शिवजी पांड़े ने, "एकरी मतारी के...पिकनिक मनाने आते हैं सार लोग होली-दसहरा में। हम लोगों की औरत सबका हेडलाइट खराब हो गया भूंसा झोंकते-झोंकते और ई छीनार-मनार लोग ऑर्डर दे देती हैं कि चाय चाहिए।"

"भवह को गाली नहीं देते, बाबा।" महादेव सिंह ने डांटा।

"भवह भसुर को भैंसासुर कह सकती है?" शिवजी पांड़े गुर्राए।

"इसका एके उपाय है, धनजी बाबा!" बेजार-से दिखते धनजी पांड़े को सलाह दिया पल्टू सिंह ने, "कुछ रुपया-पइसा खरचाकर इसका बदली करवा दीजिए सौ-पचास कोस दूर। न रहेगा यहां, न राड़ पसारेगा।"

पल्टू सिंह नाराज थे क्योंकि टेंगर सिंह को शादी के लिए उकसा रहे थे शिवजी पांड़े।

"एक बात, भाई, हम चुरुकी छूकर पहले ही बता देते हैं," शिवजी पांड़े के कानों तक पहुंच गई थी पल्टू सिंह की सलाह और चीखने लगे थे, "गांव बाद में दोस नहीं देगा हमको। हमारा बदली कराने का सोचे भी अगर ई इंजीनियर का झांट राम तो भिजिलेंसवाला सबको दे देंगे लिखकर। गूह सरका देंगे इनका। रस्सा लगवा देंगे डांड़ में।"

गालियां देना नहीं आता था धनजी पांड़े को। शिवजी पांड़े देते जो गालियां, उन्हीं को दुहरा देते, जैसे आंसू गैस के जो गोले नहीं फटते, उन्हें वापस पुलिसवालों पर फेंकते हैं आंदोलनकारी।

शिवजी पांड़े कहते—"डोमड़ा।"

धनजी पांड़े कहते—"बड़ा डोमड़ा।"

शिवजी पांड़े कहते—"साला मउग।"

शिवजी पांड़े कहते—"साला बड़ा मउग।"

शिवजी पांड़े कहते—"साला बम्मड़ मउगी के फुफुती में बुद्धि खोजता है।"

धनजी पांड़े कहते—"साला बम्मड़ मउगी के फुफुती में भी बुद्धि नहीं खोजता है।"

धनजीबो गुस्सा जातीं—"आप गाली-गलौज क्यों करते हैं? जो बात है, वही बोलना चाहिए।"

"कभी-कभी डोमड़े के साथ डोमड़ा बनना पड़ता है।" धनजी पांड़े बुरी तरह हांफ रहे होते गाली-गलौज के बाद।

"जानते हैं, मउगी से परिमिसन लेने गया है कि अब का करें?" शिवजी पांड़े दुआर पर लेहाड़ी ले रहे होते।

"ई मउगा की मउगी लिख लोढ़ा, पढ़ पत्थर है तो जाए कहां?" धनजी पांड़े अपने कमरे से बाहर आकर चीखते।

"पूछिए न कि बेईमानी किसका परमिसन लेकर कर रहा है?" धनजीबो ठेलतीं पीछे से।

"देखिए, देखिए, सिखा रही है इसको!" शिवजी पांड़े चीख पड़ते, "कल सिखा रही थी कि नादवाला जूठ-कांठ फेंक दो भाईजी के ऊपर और ई मउगा सुन रहा था।"

"कब सिखा रही थी, रे बदमास?" धनजी पांड़े तिलमिला उठते, "भवह के घर में ढुका लगाके सुनता है?"

"ढुका काहे को लगाएंगे, तुम्हारा बेटवा-बेटिया सब बता जाता है।" शिवजी पांड़े झूठ बोलते।

"बोलिए बदमास को कि बेटा-बेटी को सानेगा झगड़ा में तो ठीक नहीं होगा।" धनजीबो से बर्दाश्त नहीं होता झूठ। और शिवजी पांड़े लाठी भांजते हुए जान ले लेने-दे देने की धमकियां उछालने लगते।

अपने पति और बेटे-बेटी को लेकर कमरे में बंद हो जातीं धनजीबो।

शिवजी बंद दरवाजे पर लाठी पीट जाते।

"साली करइत है, करइत! काट के बिली में लुका जाती है। जहर नहीं उतरता रे माई, जहर नहीं उतरता। बिल ढाह देंगे संपीनीया का! मूड़ी कूच के मानेंगे..." शिवजी पांड़े का एकछत्र साम्राज्य हो जाता दुआर और आंगन, दोनों जगह।

धनजीबो बच्चों को समझाने में लगी होतीं कि गंदे लोगों की गंदी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

धनजी पांड़े अकचकाए-से देखते होते पत्नी का यह बदला हुआ रूप।

"भागिए आना था तो झगड़ा काहे को लगाई?"

"हम लगाए?"

"तो कौन लगाया?"

"आपका हिस्सा जबरदस्ती हड़प लेगा और कुछ नहीं कीजिएगा?"

"तो भगाके यहां लुकवा दी?"

"जमीन जान से ज्यादा कीमती है?"

"तब?"

"तब क्या! कुछ उपाय होगा। कितना दिन लंगई से काम चलाएंगे?"

"ऊ जनमते का लांगा है।"

"तो रहे लांगा। आपको लांगा नहीं बनना है।" धनजीबो दृढ़तापूर्वक कहतीं।

दरअसल धनजीबो को डर लगने लगा है शिवजी पांड़े के परिवार से। शिवजीबो की भी हिम्मत बढ़ती जा रही थी। गाली देते हुए ऐसे चली आतीं हुमककर मानो हाथ छोड़ देंगी।

धनजीबो इंटरमिडियेट पास थीं जब शादी हुई थी तो और उनके पिता गार्ड थे रेलवे में। शादी के बाद बी.ए. भी कर लिया था। शांत स्वभाव की थीं और भगतिन थीं। खाली समय में मानस और दूसरे धर्म-ग्रंथ पढ़तीं; कलह से दूर रहना चाहतीं। धनजी को चेतातीं कि कमाएं, पर अंधेरगर्दी में नहीं पड़ें। लेकिन धनजी, जो दूसरे सभी मामलों में मान लेते थे उनकी सलाह, इस मामले में अपने दिमाग से चलते रहे। मन में यह हौंस लिए हुए कि चूड़ामन पांड़े को पीछे छोड़ देना है कमाई में। और फंस गए थे। धनजीबो डर जातीं सोचकर कि कहीं जाने से मना न कर दें बुरे दिन! तब तो छाती पर सवार हो जाएगा शिवजी का परिवार।

दिनेश सिंह की पत्नी को यह दुःख खाए जा रहा था कि एक शिवजी पांड़े थे कि छक्का छुड़ा रखा था धनजी का और एक उनके पति थे, जिन्हें चतुर-चल्हांक ही कहते थे गांववाले, लेकिन गाय बने हुए थे रत्नेश सिंह के आगे।

हादसों की बरसात के बाद बंटवारे की कलह की ठंड से जूझ रहा था कुंवरपुर।

"अपना हक भी नहीं मांगिएगा?" आम तौर पर अपने पति से बहस नहीं करने वाली दिनेश सिंहबो ने पूछा।

"तुम्हारा हक कोई कहां छीन रहा है तुमसे? अपना हिस्सा ही तो हटाना चाहते हैं?" दिनेश सिंह ने समझाया।

"भाईजी जो क़मा-कमाकर बैंक में रखे हुए हैं, उसमें आपका हिस्सा नहीं हुआ?"

"जी नहीं।"

"और आप जो दिन-रात सर्दी-गर्मी-बरसात में अपना पसीना बहाते हैं, खटते हैं, गांव-जवार का गंदा पोलटिक्स बर्दाश्त करते हैं, उसमें उनका हिस्सा होना चाहिए कि नहीं?"

"क्या कहना चाहती हो? यही न कि हम डरपोक हैं, घुइसमुंह हैं, तुमको दुःख दे रहे हैं?" भावुक हो जाते हैं दिनेश सिंह और बातचीत बंद हो जाती है।

जहां तक कुंवरपुर का सवाल है, दिनेश सिंह की पत्नी के सवाल ही उसके सवाल थे। डॉलर सिंह का खेत बेचने का निर्णय राजपुताने में किसी को भी अच्छा नहीं लग रहा।

"[illegible]

थे, "रत्नेश सिंहवा कहता है कि बड़का बेटवा दस हजार डॉलर माने पांच लाख रुपया महीना कमाता है और छोटका, जो पिछले साल गया है, पांच हजार डालर माने अढ़ाई लाख कमाता है। माने कि घर में साढ़े सात लाख रुपया हर महीने आ रहा है। तब खेत बेचके कौन बैंक बैलेंस बनाना चाहता है डॉलर सिंहवा?"

"खेतवा, दीदी, अपने गरीब देवर के लिए छोड़ दीजिएगा, तो कुछ घट जाएगा आपका?" दिनेश सिंहबो ने पूछा अपनी जेठानी से, जिन्हें कुंवरपुर का आकाश अजीब-सा आकाश लग रहा था, हवा अजीब-सी हवा लग रही थी। अमेरिका में सब अलग तरह का था। हवा, आकाश, पानी, घर, बाजार...

"कोई छोड़ रहा है अपना कि छोड़ दें?" कुढ़ गईं रत्नेश सिंहबो। अभागी औरत! मौके का फायदा उठाकर कुछ कहानियां सुन लेती डॉलर की मायानगरी का तो खेत का हिसाब करने चली है।

"आप 'कोई' तो नहीं हैं न, दीदी। पूरे जवार में शोर है कि जो भाईजी के लड़कों ने किया, कोई नहीं कर पाएगा।"

"लड़कों ने किया, सो लड़कों का हुआ, भाईजी नहीं न राजा हो गए। अमेरिका में अपना-अपनी वाला हिसाब चलता है। यहीं यह रिवाज है कि पैर में पत्थर बांधे रहिए। भले ही एक कदम चलना भी मोहाल हो गया हो।"

"आपही की बदनामी होगी। गांव की औरत सब कह रही है कि लड़कवा सब, लगता है, अमेरिका में कुली-कबाड़ी का काम कर रहा है।"

"कहो न कि तुम्हीं कह रही हो। गांव की औरत सबको दोष क्यों देती हो। कुत्ता काटता है कि आदमी यही सब सुनने गांव चला आता है..." जोर-शोर से दिल टूट जाने का राग छेड़ दिया है डॉलर सिंहबो ने।

दिनेश सिंह की पत्नी जानती हैं, सुनेंगे तो गुस्साएंगे दिनेश सिंह, लेकिन मन की बात कह देने के बाद हल्का लग रहा है मन।

"मुंह मत फुलाइए। सब कोई आपके जैसा धर्मात्मा नहीं होता।" पति को उदास देखा तो कहा।

"भइया, पता नहीं, फिर आएंगे कि नहीं, एक बार अमेरिका गए तो।" भावुकता घेर रही है दिनेश सिंह को।

"देखिएगा, कहीं नहीं जाएंगे। या जाएंगे तो यहीं आएंगे लौटकर। केवल खेत बेचने के लिए नाटक कर रहे हैं।" इतने विश्वास के साथ कही यह बात दिनेश सिंहबो ने कि कुछ देर तक उनका चेहरा देखते रह गए दिनेश सिंह।

"हमको तो भीतरघातिए समझते हैं दिनेश सिंह, नहीं तो हमारा तो कहनाम है *कि मिलजुलकर नोटिस दे दिया जाए इन पिकनिक पार्टियों को—कुंवरपुर छोड़ो।" शिवजी पांड़े कह रहे हैं।*

"वासुदेव भाई भेजे थे अपने बड़का लइकवा को, बाबा।" हाकिम सिंह को

बोले कि खेत भी चीन्ह लो बचवा और आके खेती भी करो। बनिहार-चरवाह नहीं मिलेगा अब। और मनी पर लगाकर चैन से बैठ जाने वाला जमाना गया।"

छबीला सिंह इतना डर गए हैं इन चर्चाओं से कि अखंड कीर्तन करवा रहे हैं अपने दुआर पर। 'हरे राम, हरे राम, हरे हरे राम राम' के बेसुरे और उबाऊ अलाप के शोर में जा छुपे हैं। कोई धीरे से आकर बैठ जाता है बगल में तो डर जाते हैं कि बुदबुदा न जाए कान में कि 'दीपनारायण सिंह भी कह रहे थे कि...' जोर-जोर से गाने लगते हैं थपरी बजा-बजाकर—'हरे राम, हरे राम, राम, राम, सीताराम, सीताराम, हरे हरे राम...'

"जानती हो, ई साला डॉलर सिंहवा, वासुदेव सिंहवा वगैरह काहे हड़बड़ाया हुआ है जमीन बेचने को?" उतरती दोपहर की नमकीन धूप में अपने दालान की छत पर पत्नी के साथ बैठे हैं नन्हकू सिंह, "डरा हुआ है कि नहीं बेचे तो मुफ्त में ही एक दिन छीन लेगा नन्हकू सिंहवा।"

"आप भी पटना में खरीद लीजिए थोड़ा जमीन?" नन्हकूबो ने कहा।

"पटना में काहे को?"

"एमेले-ओमेले हो जाइएगा तो काम नहीं पड़ेगा?"

"माने कि हम चल रहे हैं घोड़े की चाल और तुम रानी वाला!" नन्हकू सिंह को गुदगुदा दिया है पत्नी के सपने ने। पैर गोद में रख दिए हैं उसके और गुदगुदी करने लगे हैं पैर के अंगूठे से।

कुंवरपुर फिर उबलने लगा है। नन्हकू सिंह ने घोषणा कर दी थी कि खेत बेचने की छूट नहीं दी जाएगी गैर-खेतिहर जमीन-मालिकों को।

"लागल लड़ाई गढ़ मोहबा की..." फुदकते चल रहे हैं शिवजी पांड़े।

"नन्हकू सिंह सरकार हैं कि घोषणा कर देंगे और..." नौलाख महतो भड़के हुए हैं, "ढेर नाक में धुआं करेंगे तो जवाब दिया जाएगा।"

समझदार लोग समझ रहे हैं कि निशाने पर क्या है नन्हकू सिंह के।

नौलाख महतो फेरा लगाने लगे हैं रेजटोलों का। समझाने की कोशिश कर रहे हैं उन्हें कि वामपंथ के नाम पर जातिवाद कर रहे हैं नन्हकू सिंह। असली मकसद खेत को पिछड़ी जातियों के पास जाने से रोकना है। वरना जब चूड़ामन पांड़े, छबीला सिंह या धनजी पांड़े खरीद रहे थे खेत, तब क्यों नहीं उठाया था यह मुद्दा?

"बस, भइवा, बस।" अनजानाजी का मन प्रसन्न हो गया है नौलाख महतो की इस लाइन पर, "एकदम नस पकड़ लिए हैं!"

"हम लोग राजपूत-बाभनवाला सिहुर-सिहुर टाइप राजनीति नहीं न करते। ऊ हाथ जानते हैं कि जो शक्ति हमारे ऊपर छोड़ोगे, उसी को बीच में ही रोककर तुम्हारे ऊपर छोड़ देंगे।" नौलाख महतो उत्साह से भरे हुए हैं।

"और इस बार काम कंपलीट होना चाहिए, नौलाख भाई।" अनजानाजी रूठे होने के-से अंदाज में बोले, "श्रीभगवान सिंह कहाते तो हैं नेताजी, पर फुल-टाइम दलाल

हो गए हैं। राजनीति उनसे नहीं होगी। कहते रह गए कि संकटा सिंह का लाइसेंस उड़वा दीजिए, चूड़ामन पांड़े वाले केसवा में नन्हकू-फन्हकू सबको लपेटवा देना है, तो जाली मस्टर-रोल बनाने से ही टाइम नहीं है उन्हें। अमेरिका वाला हाल हो गया है इनका। कहाने को है महाशक्ति, लेकिन जो न सो चूंटी काट देता है।''

''श्रीभगवान सिंह का नेतागिरी अब कितने दिन का चीज है? समझ लो—दि एंड! अब नौलाख से मुकाबला है नन्हकू सिंह का।''

''शिक्षा समिति के परधानीवाला मामला भी सलटा लेना है इस बार। हम तो खैर इंटरेस्टेड ही नहीं हैं, लेकिन किसी मन माफिक आदमी को बिठा देना है।''

''श्रीभगवान सिंह को एकदम नहीं।''

''एकदम नहीं।''

'नौलखवा और अनजनवा बहुत मिटिंग कर रहा है गांव में। अल्ल-बल्ल बोल रहा है।' खबर पहुंच गई है नन्हकू सिंह के पास।

''सुन रहे हो तुम लोग, तभी न बोल रहा है?'' नन्हकू सिंह ने कहा।

''कौन सुन रहा है, छुपा हुआ है आपसे?'' छांगुर ने कहा।

''ए भाई, उनको सुनते हुए चुपचाप देख तो रहे हैं न हम लोग?'' आत्म-भर्त्सना के तेवर सिपाही के।

दयाशंकर को अब डर लगने लगा है नन्हकू सिंह से। बात बढ़ते-बढ़ते इस मोड़ पर आ गई थी कि जरूरी लगे तो सीधी कार्रवाई भी की जा सकती थी नौलाख महतो, अनजाना या उनके अन्य समर्थकों के खिलाफ।

''नौलखवा के यहां गिरोहों का अड्डा रह रहा है।'' एकांत मिला तो कहा नन्हकू सिंह से, ''अटैक हो सकता है।''

''हम तो चाहते हैं कि हो।'' इंकलाब को अंदर से दारू लाने के लिए भेजकर फुसफुसाए नन्हकू सिंह, ''बिना खून बहे गर्मी नहीं आएगी।''

''सोचिए, आखिर यह लड़ाई किस बात की है? जमीन पर कब्जे के लिए ही न? दूसरों की तुलना में अपनी ताकत बढ़ाने के लिए ही न? हरेक बार मुकाम पर पहुंचने के पहले ही रुक जाएंगे हम लोग तो लड़ने का माद्दा ही खत्म हो जाएगा इन लोगों में।''

''हम लोगों की लड़ाई में बहुत चालाकी की गुंजाइश नहीं है, बाबा! झूठ बोलकर, ढोंग करके, भिड़ंत को टालकर, बातें बनाकर, ज्यादा दिन तक काम नहीं चलाया जा सकता। हमारे या आपके मन में जो भी हो, ये साले तो हमीं से उम्मीदें बांधे हुए हैं।''

दयाशंकर चुपचाप, हतप्रभ-से सुन रहे हैं नन्हकू सिंह को। कभी कल्पना भी नहीं की थी उन्होंने कि जिम्मेदारी के ऐसे गहरे बोध से भरा हुआ होगा यह आदमी।

सोचते थे दयाशंकर कि नन्हकू का उग्र वामपंथवाद कुछ और नहीं, रंगबाजी की उसकी साहसिक प्रवृत्ति का ही विस्तार था। बिक्रमगंज कॉलेज में दादागिरी, छूरेबाजी की

एक घटना में जेल जाना, राजनीति विज्ञान से ग्रेजुएशन करने के बाद मंटू मियां गैंग के साथ बटोहिया लख पर हुई खूनी भिड़ंत के बाद लगभग एक साल तक गांव से गायब रहना, एक साल के बाद नारद सिंह के ससुर बीरबहादुर सिंह की जमीन पर कब्जे के निष्फल कार्यक्रम में अपने साथियों के भाग जाने के बाद भी अकेले लगभग आधे घंटे तक मोर्चे पर डटे रहने की शोहरत के साथ वामपंथी नन्हकू सिंह के रूप में अवतरित होना—दयाशंकर जब भी विचार करते नन्हकू सिंह के अतीत पर, उन्हें लगता कि इलाके में नारद सिंह के वर्चस्व को चुनौती देने की महात्त्वाकांक्षा के कारण ही नन्हकू सिंह वामपंथी राजनीति से जुड़ गए होंगे। लेकिन आज महसूस कर रहे हैं दयाशंकर कि नन्हकू सिंह को समझने में भूल हो रही थी उनसे। या तो समय बीतने के साथ एक नया आदमी पनप गया था उसके अंदर या वह था ही वैसा, पर नजर नहीं आया था पहले!

"मौका भी अच्छा है। राजपुताने और बभनटोल दोनों को ही न डॉलर सिंह से कोई मतलब है, न नौलाख महतो से।" नन्हकू सिंह ने कहा।

"बेचारे दिनेश सिंह बहुत दुःखी हैं। डॉलर सिंह उन्हीं को षड्यंत्रकारी समझ रहे हैं।"

"सुने कि शिवजीउवा भी जयजयकार कर रहा है हम लोगों का?"

"मारिए गोली, विश्वास करने लायक आदमी नहीं है वह।"

"विश्वास करने लायक को तो आप मंधाता मिसिर के यहां पहुंचा आए।" नन्हकू सिंह की नशे से भारी हो गई आवाज में दर्द था कुछ गंवा बैठे होने का, "लेकिन छोड़िए, जो हुआ सो हुआ। लड़ाई तो लग ही गई है।"

महादेव सिंह के घर के बाद एक पतली पट्टी के रूप में बसी हुई थी कुंवरपुर की चमटोली, जिसमें पचास घर चमारों और लगभग पच्चीस दुसाधों के थे। और दुसाध पट्टी के अंत में, जहां से नब्बे डिग्री का कोण बनाते हुए कमकर टोला शुरू होता था, मुसलमानों के पांच परिवार थे। इसी कोण पर बरगद का एक शानदार, लंबी-लंबी झूलती लटोंवाला पेड़ था, जिसके चारों ओर मिट्टी का गोल चबूतरा बना हुआ था। अन्हरी की दुकान दोनों टोलों के इसी संधि-स्थल पर थी।

सिबचन, भोला और छत्तीसा दुकान के बाहर चबूतरे पर बैठे बीड़ी पी रहे थे कि उन्हें भरोसा दिख गया था बोझा लेकर आता हुआ। भरोसा इंदिरा आवास योजना के तहत बने उस घर तक ही पहुंच सका था, जिसकी छत इसलिए नहीं बन पाई थी क्योंकि कराकट खरीदने का पैसा श्रीभगवान सिंह खा गए थे—जब छत्तीसा ने आवाज दी थी उसे—"भर जिनिगी बोझा ढोते ही रह जाओगे, भरोसा? बहिनीया मनीआडर नहीं भेजती?"

सिपाही ने सुन लिया था यह बोल।

"तुम्हारी मउगी को लेता है सिरीभगवनवा तो कितना देता है?" पूछा छत्तीसा से।

"इसकी मउगी को लेने के बाद इसका भी मारता है।" भरोसा ने वार किया।

रियासत मियां ठठाकर हँसे इस बोल पर।

"दढ़ीया में आग लगा देंगे, मियां राम!" छत्तीसा गरमाया।

"बहस सुरू किए तो बहस करो। आग लगाने का बात काहे करते हो?" रियासत मियां बोले।

"अभी तो आप असली गर्मी देखबे नहीं किए हैं, रियासत भाई। हिलाए हुए है बबुआनी टोल को।" सिपाही ने फिर बोल छोड़ा।

"यहीं से दंवक बुझा रहा है।" रियासत मियां बोले और लाठी चला दी छत्तीसा ने।

रियासत मियां डेढ़ सिलिंडरवाले आदमी थे, लाठी लगते ही 'आह रे बाप' की गुंजार के साथ धरती पर लोट गए। और सिपाही की देशी पिस्तौल चल गई। गोली सिबचन के बाएं कंधे को चूमती हुई निकली और एक छर्रा बगल में लेटे एक कुत्ते को लग गया, जिसने दोनों टोलों को जमा करने का काम अपने ऊपर ले लिया।

अन्हरी की दुकान घेर ली गई थी। सिबचन, छत्तीसा और भोला घिर गए थे। उनके परिवारवाले आ गए थे उनका साथ देने, पर वे भी घिरे हुए थे।

बात टोले के बाहर तक पहुंच गई थी, पर गांव में न श्रीभगवान सिंह और नौलाख महतो थे उस समय, न नन्हकू सिंह और दयाशंकर। गांव इंतजार करने लगा कि कुछ और हो तो सोचे हस्तक्षेप करने की।

"हम भइया मजाक में बोले भरोसा भाई से तो..." छत्तीसा की आवाज कांप रही है।

"मजाके में लाठी भी चला दिए?" जोर का एक तमाचा जड़ दिया है छांगुर ने—चटाक्...

"हमको गारी नहीं दिया था?" गाल सहलाता छत्तीसा रुआंसा हो गया है।

"हाथ छोड़े तो ठीक नहीं होगा, छांगुर!" छत्तीसाबो चीखी।

"रोका काहे नहीं रे?" फिर एक चटाक्...इस बार भोला के गाल पर।

"हम कहते हैं कि मारपीट से फयदा नहीं है, सांती से बात किया जाए और कोई उल्टा बोलता है, तब देखा जाएगा।" चरित्तर दुसाध बीच में आए, "गलती करने वाला और जिसके साथ गलती हुआ, दूनो अपना ही भाई है।"

"भाई कहते हैं ई लंड़चट्टा सब को? जो लड़की गरीब-मजलूम सबके लिए जी-जान लगाकर लड़ी, उसको 'बाई' कहता है भोंसड़ीयावाला और आप भाई कहते हैं इसको?" सिपाही ने कट्टा तान दिया छत्तीसा के सीने पर।

"तुम बोले अइसा?" चरित्तर ने पूछा।

छत्तीसा ने चुप्पी साध ली है।

"अपनी बेटी-बहिन का इज्जत तुम लोग नहीं करोगे तो दूसरा करेगा रे मूतपिअना सब?" रामगिरिही व्यथित हैं दमयंती को 'बाई' कहे जाने पर।

"ई मुंहझउसा से गलती हो गया, काका! माफी दे दीजिए।" छत्तीसाबो ने हाथ जोड़ दिए हैं।

"माफिए है, बाकी..."

"बाकी ई कि आज फैसला हो जाए कि नौलखवा का दलाल कौन-कौन है? जो है, सो बोले।" छांगुर ने कहा, "हम लोग हैं कि चाहते हैं कि आदमी में गिनती हो ई माधड़चोद सबका और ई सबको टोपरा सूझ रहा है। आज फैसले हो जाए।"

"दलाल कोई नहीं है, ए बबुआ। कुछ मजबूरी है आमदी का...नहीं तो नन्हकू सिंह का जयजयकारी तो सब कोइए कर रहा है।" निहोरा ने कहा।

"हां ए काका, ठीके कह रहे हैं।" छत्तीसाबो को अब निहोरा में दिखने लगी है आशा की किरण, "ई मटीलगना को तो बुझइबो बहुत कम करता है। देखे नहीं, घोड़ा बेचवा के सब पइसा हड़प लिया इसका।"

'अब सिकोड़ लो लहर।' जगनाथ ने इशारा किया छांगुर को।

रियासत मियां भी चले आए थे पीठ पर हल्दी थोपवाकर।

"का कहते हैं, रियासत भाई?" छांगुर ने पूछा।

"दूनो ओर से होइए गया खीसा-खीसी। अब सुलह-सपाटा कर लेना ही न ठीक है? दुसमन को खुश करने वाला काम करने में चल्हांकी नहीं न है?" रियासत मियां बोले।

"तो हुमचकर लगा दिया जाए नारा।" जगनाथ ने कहा और जोर का नारा लगा, "नन्हकू सिंह जिंदाबाद...जिंदाबाद...जिंदाबाद..."

उसी नन्हकू सिंह के मारे जाने की खबर सुनकर पूरा गुनी बाजार जमा हो गया था गुनी के थाना परिसर में।

"आपका अखंड कीर्तन तो कमाल कर दिया, ए छबीला भाई।" कन्हैया सिंह की आवाज थरथरा रही है मारे खुशी के।

"कन्हइया सिंहवा भी एक नंबर का पाड़ा है।" छबीला सिंह ने अपनी आदत के मुताबिक आवाज फुसफुसाहट की सीमा तक दबाकर डाट दिया है कन्हैया सिंह को, "जब खुद भगवान बोल रहे हों, नहीं बोलना चाहिए समझदार आदमी को।"

गुनी थाने के बाहर खड़े कुंवरपुर के इन दो बबुआनों को मिल गई है यह खबर कि टेढ़का पुल के पास के सूखे करहे में बोरे में बंधी जो लाश मिली है, किसी और की नहीं, नन्हकू सिंह की है।

"सिवेंदर सिंहवा को चैलेंज करने चले थे..." कन्हैया सिंह बहुत कुछ कहने-सुनने की बेताबी से भरे हुए हैं, पर छबीला सिंह का अनसाया हुआ चेहरा देखकर फिर चुप हो गए हैं।

जबसे यह खबर पहुंची थी कि एक लाश मिली है टेढ़का पुल के पास, नन्हकूबो का मन अशांत था। नन्हकू सिंह को घर छोड़े पांच-छः दिन हो गए थे, पर हिम्मत नहीं हो रही थी अपनी इस आशंका को किसी के सामने जाहिर करने की। लोग सोचेंगे, कैसी कुलच्छन है कि ऐसी अशुभ बात सोच रही है।

"तुमको बताए थे कुछ कि कहां जा रहे हैं?" इंकलाब से पूछा।

"धनंजयजी का नाम ले रहे थे कुछ दिन से, लेकिन..."

"धनंजयजी कौन हैं?"

"एक बार हम भी हो आएं क्या?" इंकलाब ने जवाब न दे, सवाल पूछ दिया।

"कहां से?"

"ई तो लाइने अइसा है कि मन में खटका बना रहता है।" इंकलाब की यह जताने की कोशिश कि घबराने की कोई बात नहीं है, इतनी पिलपिल थी कि मन का डर और बढ़ गया है नन्हकूबो के।

उन दोनों को डीह से उतरते हुए देखा दयाशंकर ने और सोच में पड़ गए, बताएं कि नहीं? नन्हकू की सड़ी हुई लाश देखकर खुद उनकी हड्डियों में ही ठिठुरन समा गई थी।

"किधर का प्लान है?" इंकलाब से पूछा।

"यहीं गुनी में काम था कुछ।" इंकलाब ने बताया।

"सुनो इंकलाब!" थोड़ा आगे बढ़ गए दोनों तो दयाशंकर को लगा, सच्चाई बता देना ही ठीक था। कहीं गुनी में कह देता कोई कि दयाशंकरजी ने नहीं बताया तो पता नहीं क्या सोचती नन्हकूबो!

घूंघट उलट गया है नन्हकूबो के चेहरे का और धड़ाम से गिर गई है वहीं आलू के खेत में।

"दांत लग गया इनका तो..." दयाशंकर ने घबराकर देखा इधर-उधर। कहां मिलेगा पानी!

इंकलाब दोनों हाथों से छाती दबाए बैठ गया है मेड़ पर। हार्ट फेल हो गया क्या साले का! दयाशंकर बेतहाशा दौड़ पड़े हैं हरिद्वार पांड़े की बोरिंग की ओर। चिल्लाना भी शुरू कर दिया है दौड़ते-दौड़ते। उन्हें डर लग रहा है डीह पर इस तरह अकेले दौड़ने में, मानो कोई दबोचने को चला आ रहा हो पीछे से।

नन्हकूबो चित पड़ी हुई है खेत में। साड़ी छातियों पर से हट गई है। लाल कुर्ती में कसी हुई नुकीली छातिया उठ-बैठ रही हैं। दूर-दूर तक हरी मखमली चादर बिछी हुई है चटियल बधार में। इंकलाब को लगता है, यह फैलाव मानो उसकी अपनी आत्मा का हो। ऐसी स्वच्छंदता उसने पहले कभी नहीं महसूस की। नन्हकूबो की छाती की ओर चला गया है उसका हाथ। बेसुध पड़ी हुई उस देह के ऊपर लेट जाना चाहता था वह। पर एक छोटी-सी बाल्टी लटकाए, दौड़ते हुए आते दिख गए हैं दयाशंकर। साथ में चरवाही के लिए डीह पर आए दो लड़के भी थे, जिन्होंने पहले तो समझा कि यह राकस था डीहवाला जो दिन में भी निकल आया था अपनी खोह से, फिर दयाशंकर की आवाज पहचानकर दौड़े हुए आ गए थे।

"होश नहीं आया अभी?" हांफ रहे हैं दयाशंकर।

पानी के छींटे पड़ने और हिलाने-डुलाने के बाद उठकर बैठ गई है नन्हकूबो।

"अब क्या किया जाए, बाबा?"

"हम तो कहेंगे कि अभी गुनी जाना ठीक नहीं होगा।"

"क्यों?"

"घर चलते हैं। गोतिया-दयाद वगैरह को बताना ठीक रहेगा।"

"गोतिया-दयाद से हमको कुछ मतलब नहीं है।" आधा चेहरा घूंघट में छिपाए हुए मुंह दूसरी ओर करके, धीरे-से बोली नन्हकूबो, "हमको गुनी जाना है।"

गहरी चिंता में पड़ गए हैं दयाशंकर। जंच नहीं रही है नन्हकूबो की बात।

"सामाजिक मामले में गांव-घर को साथ लेकर चलना..."

"हमारा कोई गांव-घर नहीं है।" नन्हकूबो कड़की, "ए इंकलाब, चलते हो कि यहीं खड़ा होकर सुनना है गढ़पुरान।"

"आप समझ काहे नहीं रही हैं बात।" दयाशंकर झुंझला उठे हैं, "पोस्टमार्टम होगा, जांच होगी...कहां-कहां दौड़ती फिरेंगी आप? टेंसन भी है।"

"आपको चलना है कि नहीं?" घूंघट अब पूरी तरह हट गया है उसके चेहरे से। आंखों में देख रही है दयाशंकर के।

"इंकलाब!" वेचारगी की मुद्रा में इंकलाब की ओर रुख किया दयाशंकर ने, "समझाओ इनको।"

"इंकलाब क्या समझाएगा जी? आप समझा लिए न? बन गए न गांव-घर का दोस्त?" रौद्र रूप धारण कर लिया है नन्हकूबो ने, "जो भाई समझा अपना, गिलास का गिलास रम पिलाया, ऊ भुला गया और गांव-घर दोस्त हो गया? बड़ी जल्दी जात चिन्हा दिए, बाबा!"

"इस हाल में इनका जाना ठीक नहीं है, इंकलाब।" दयाशंकर डर गए हैं नन्हकूबो का यह रूप देखकर।

"जाइए, जाइए, जाके लुका जाइए बिल में! हमको बोल़ के गए हैं कि शान से रहना! गोतिया-दयाद का हमको जरूरत नहीं है, ए बाबा...बहुत देकर गए हैं।" अपने हाथों में केहुनी तक भरी हुई चूड़ियां दिखाने के लिए दोनों हाथ फैला दिए हैं नन्हकूबो ने, "इन्हीं को बेच देंगे तो गोतिया-दयाद सबको खरीदने-भर का पइसा हो जाएगा।"

दयाशंकर के साथ आए लड़के असली बात समझते ही बेतहाशा दौड़ पड़े हैं गांव की ओर। कुंवरपुर को सबसे पहले बताना चाहते हैं वे कि मर्डर हो गया नन्हकू सिंह का।

लंबे-लंबे डग भरती चली जा रही है नन्हकूबो। और उसके पीछे-पीछे सिर झुकाए हुए इंकलाब। दयाशंकर की हिम्मत नहीं हुई उनका साथ देने की। गांव की ओर चल पड़े हैं पस्त कदमों से। कितना अच्छा होता कि सीधे अपने आंगन में पहुंच जाते!

श्मशान की-सी शांति छाई हुई है कुंवरपुर में। सांझ के झुटपुटे में गांव के पूरबी कोण के सबसे आखिरी छोर पर निर्माणाधीन दोमंजिला मकान ऐसा दिख रहा है मानो सैकड़ों वर्ष पुराना खंडहर हो कोई। पांच-छः घंटे ही बीते होंगे उसकी हत्या की खबर आए हुए और लोग ऐसे याद कर रहे हैं उसे मानो किसी दंतकथा के नायक के बारे में बातें

कर रहे हों। अपने ही घर बदले-बदले हुए-से नजर आते हैं कुंवरपुरवालों को। मानो वह उनके घरों में भी ढेर सारी जगह छेंके हुए था।

"मन का भेद आदमी हमेशा नहीं बता पाता, दिनेश भाई, लेकिन सच कह रहे हैं कि धीरे-धीरे बहुत डर लगने लगा था नन्हकू सिंहवा से।" रंगू सिंह कहते हैं।

"नीम हकीम खतरे जान वाली स्थिति थी। बहुत बड़े रोग के इलाज का दावा था और दवा का ज्ञान अधकचरा था।" दिनेश सिंह बोलते हुए अपनी ही दालान में देखते भी जाते हैं गर्दन घुमा-घुमाकर कि कहीं कोई दूसरा न सुन रहा हो उनकी बातें।

"इस साल तो ऊ चूड़ामन बाबा के मर्डर और फिरंगिया के भइवा के मर्डर के कारण थोड़ा जहुवा गया था, नहीं तो रोपनी के पहले फिर कोई न कोई आग लगाता।" चैन की सांस ले रहे हैं रंगू सिंह। उसके जाने के बाद शायद ढह जाए यह ऊटपटांग-सी, बेमाने-मतलब का हरबोंग मचाती वामपंथी उभार।

"रामबिलास चाचा के घर से कोई गया कि नहीं?" सत्यनारायण सिंह को परम सांसारिक जिज्ञासा हो आई है।

"नन्हकूआबो इंकलबवा के साथ चली गई। किसी को पूछे तब तो!"

"होश होगा बेचारी को?"

"बेचारी!" कन्हैया सिंह को आपत्ति है उसे 'बेचारी' कहे जाने पर, "चोरी की बाली और कंगन पहनकर गरियाती थी रामबिलासबो चाची को। चोरी के सोने के डांड़े में चाभी झुलाते हुए कहतीं थी कि सोन का बालू खत्तम हो जाएगा, हमारा पइसा खत्तम नहीं होगा।"

"लेकिन आपको क्या लगता है, मास्साब? कुछ होगा ई सबसे?" रंगू सिंह का आशय है नन्हकू के चेले-चपाटियों से।

"कभी-कभी ऐसा होता है कि मरने के बाद और भी ताकतवर हो जाता है कोई-कोई।" दिनेश सिंह बोले, "उसकी गैरमौजूदगी करने लगती है वह सब, जो उसकी मौजूदमी में नहीं हो पाता था।"

तीसरी बार सिकड़ी बजने की आवाज आई है अंदर से। उसके तुरंत बाद दिनेश सिंह का बेटा आ गया है, "मां कह रही है, खाना ठंडा हो जाएगा।"

"डर बैठ गया है सबके मन में।" दिनेश सिंह ने बेटे को पुचकारा।

"लेकिन देख लीजिएगा, अब कुछ नहीं होगा ई साले लोग से।" कन्हैया सिंह ने कमर सीधी करते हुए आश्वस्त किया अपने-आपको, "कामरेड दयाशंकर को तो पता चला कि बुखार लगा हुआ है।"

"बाबा बेचारे केवल नाम का रेड हैं।" छबीला सिंह की बात पर हँसी आ गई वहां मौजूद सभी को।

दिनेश सिंह की पत्नी को लगा, पूरे गांव में गूंज गई थी उन लोगों की हँसी।

"और हँसिए जोर-जोर से!" गुस्सा गई हैं पति के ऊपर, "सोचेगा सब कि खुशी मना रहे हैं।"

छबीला सिंह को बाहर गली में आकर महसूस होता है कि सचमुच हर जगह मौजूद थी उसकी गैरमौजूदगी। कहीं से भी नहीं आ रही थी कोई आवाज। भुतही चुप्पी छाई हुई थी गलियों में। अपने जूतों के चें-चें करने पर गुस्सा आ रहा है उन्हें। अपनी बैठका लगाने की आदत पर भी।

सबसे अधिक डरावनी उन घरों की चुप्पी लग रही थी, जिनके लिए मसीहा बनता जा रहा था नन्हकू सिंह। जोगी सिंह के घर की छत पर जमा हथियारबंद लोगों की भी समझ में नहीं आ रहा था, यह खांटी डर था या मौन प्रतिहिंसा? या किसी बड़े उत्पात की गुपचुप तैयारी?

"तुम्हारे टोलवावाला सब का कह रहा है, रे सूबेदरवाबो?" मुसमात ने पूछा। सूबेदारबो को अपने ही यहां रोक लिया है आज की रात। घर और अंदर के सन्नाटे के साथ तो मन कब का राजी हो चुका था, पर आज अचानक सारे गांव का सन्नाटे में डूब जाना तकलीफदेह हो उठा था।

"कोई का कहेगा, मलकिनी?" सूबेदारबो बोली अनासक्ति के भाव में।

"जिंदा था तब तो बहुत जिंदाबाद-जिंदाबाद करता था!"

"नान्ह लोग को बुधिए रहता तो ई हाल रहता?" मर्म की बात कही सूबेदारबो ने, "मनोरमा मिसिर को कम पूजता था ई लोग? कुछ दिन तक अनजनवा का जिंदाबाद नहीं करता था?"

"बदमासी करने के लिए तो हइए है बुद्धि। कहो कि बढ़िया काम करने के लिए नहीं है।" सूबेदारबो के लंबा-लंबा फेंकने पर गुस्सा आ गया है मुसमात को—सीधे मनोरमा मिसिर तक पहुंच गई! मुंह नहीं देखा है अपना।

"छोट आदमी का करेगा बदमासी, मलकिनी? बड़का लोग का बदमसीयो बड़हन होता है।"

"नन्हकू का भूत लग गया का रे?" मुसमात को अब सचमुच गुस्सा आ गया है उसकी साफगोई पर।

"बिना होम-हूमाध किए हुए जला दिया नतिया सब। भूत तो होइबे करेंगे नन्हकू सिंह।" चालाकी से बात का रुख बदल दिया है सूबेदारबो ने।

"मरवाया कौन?"

"जाने दीजिए, मलकिनी! मन कइसा तो हो रहा है।" सूबेदारबो जानती है, अब अपना जोगी सिंह-विरोधी राग छेड़ेगी मुसमात।

"नन्हकूआबो को कुछ आथ-अलम है रे? सुने हैं, बहुरिया बनाकर रखता था नन्हकूआ।"

कोई जवाब नहीं देती सूबेदारबो।

"सो गई का रे?" मुसमात देखती हैं सिर घुमाकर। सो गई थी सूबेदारबो।

"ईहो भछनी सबको आरामे है जिंदगी में। जब मन किया, सो गई।"

मुसमात जानती हैं, उन्हें बहुत देर तक नींद नहीं आएगी आज। नन्हकूबो के

अकेलेपन के बारे में ही सोचती रह जाएंगी।

रामबिलास सिंह को भी नहीं आएगी नींद। मरे बेटे का मुंह तक देखने की हिम्मत नहीं पड़ी। इधर लल्लन सिंह ने ठान लिया था कि कोई वास्ता नहीं रखना था मरे हुए नन्हकू सिंह या उनके परिवार से। और उधर नन्हकूबो कह रही थी, जब तक अंतिम सांस बची रहेगी, आंखें भी नहीं उठाएगी रामबिलास सिंह की दहलीज की ओर।

रामबिलास सिंह बिना आवाज किए रोते रहेंगे देर रात तक।

8

प्रभुदयाल सिंह के बगीचे से थोड़ा हटकर ठोरा बाबा के किनारे स्थित गुंबदाकार टीले पर खड़े पीपल के पेड़ के नीचे बैठे जिस साधु जैसे आदमी को देखा था चिरई कमकर ने, यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया था कि बीस बरस पहले बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ रहा श्रीराम पांड़े का जो मेधावी बेटा अचानक चला गया था घर छोड़कर, वही था वह। कंधे तक झूलते लंबे-लंबे बालों और बेतरतीब बढ़ी हुई दाढ़ी से ढंके, बीते समय की धूल से धूसरित उस चेहरे को देखते ही पैर कांपने लगे थे श्रीराम पांड़े के।

"बबुआ!" कहा था धीरे-से और तिलंगी सिंह के कंधे का सहारा लिए हुए उबलते आंसुओं को रोकने की कोशिश में लग गए थे।

"आप भी, बाबा, कम मायावी नहीं हैं।" तिलंगी सिंह ने देख ली थी उनकी यह कोशिश, "हँसिएगा-रोइएगा नहीं तो घाव हो जाएगा न जी पेटवा में!"

तब डबडबाई आंखों से इशारा किया भंडारी को कि दौड़कर बुला लाए आजी को।

"पहचान नहीं रहे हो का किसी को?" पालथी मारकर निष्पंद-निष्कंप बैठे, बड़ी-बड़ी खुली हुई अनझिप आंखों से पता नहीं क्या देखते उदय पांड़े से पूछा विभूति पांड़े ने।

गांव उमड़ा चला आया था ऊंचे टीले की ओर।

बिना किसी के कहे ही, किसी से सुनी हुई यह खबर उड़ा दी थी किसी ने कि साक्षात् ठोरा बाबा ने ही देह धारण किया था और गांव से टीले की ओर भागते बहुत-से लोग दरअसल उदय पांड़े को नहीं, ठोरा बाबा के अवतार को देखने जा रहे थे।

गणपतिबो ने पहुंचते ही ससुर-भसुर वगैरह की मौजूदगी के खयाल से अपने को आजाद करते हुए 'जय हो ठोरा बाबा' की गुहार लगाई और धड़ाम से गिर पड़ीं साष्टांग दंडवत् की मुद्रा में।

मुस्कान की एक क्षीण रेखा उभरी उदय पांड़े के चेहरे पर।

"कुछ बोलोगे भाई, तभी तो कुछ पता चलेगा हम लोगों को?" सुदर्शन पांड़े ने इस ऊहापोह को हराने के बाद कि 'भाई' कहना ठीक होगा या नहीं, कहा।

उदय पांड़े ने निगाहें पहली बार भीड़ की ओर घुमाईं। श्रीराम पांड़ेबो की भरी हुई आंखों से मिली उनकी आंखें तो सब्र का बांध टूट गया श्रीराम पांड़ेबो का। भजन गाना

शुरू कर दिया रो-रोकर—"भये परगट किरपाला, दीनदयाला, कोसिल्या हितकारी..."

"अब चलते हैं हम।" खीजकर कहा तिलंगी सिंह ने, "ए गो जपखेआ गया तो ई दूसरा आ गया।"

रेज टोलों में खबर यह पहुंची है कि नन्हकू सिंह की आत्मा आ गई थी नया देह धारण कर। जान चली गई थी, पर गांव से जाने को तैयार नहीं था जवान।

इंकलाब ने महसूस किया, झुरझुरी समा गई थी उसकी हड्डियों में।

"चलिएगा? लोग क्या-क्या तो कह रहे हैं!" उसे लगा, वह सफाई दे रहा था अपने शरणदाता को कि फिसला वह जरूर था, पर गिरा नहीं था।

"जिसको आना होगा, यहीं आएगा।" नन्हकूबो ने ठसक के साथ कहा।

उदय पांड़े नाम ही नहीं ले रहे बोलने का।

"कहां-कहां रहे इतने साल, बताओगे कुछ? मौनी बनने से काम नहीं न चलेगा?" विभूति पांड़े गरम हुए।

"आप कहां रहे इतने साल?" पहली बार बोले उदय पांड़े।

एकदम वही आवाज! फिर से रोना शुरू कर दिया है श्रीराम पांड़ेबो ने।

"किन-किन लोकों, स्वर्गों-नरकों में घूम आए?" थोड़ा रुककर फिर पूछा विभूति पांड़े से।

"सही पूछा गया।" भीड़ को मजा आ गया है सवाल सुनकर।

मुस्करा रहा है उदय पांड़े का चेहरा।

सुधाकर पांड़े नजर बचाकर कई आंखों में झांक गए हैं उनकी आंखों को देखने के बाद। और किसी में भी वह सम्मोहन नहीं है अनाम गहराइयों वाला। खुलती-बंद होती हैं तो मानो एक पूरे लोक का कपाट खुलता-बंद होता है। सुधाकर पांड़े को लगता है, कोई अलग दुनिया बसी हुई है उन आंखों में।

"गजब की आंखें हैं।" छबीला सिंह से कहा उन्होंने।

"जोग-साधना से हो जाती हैं।" छबीला सिंह ने अप्रभावित होने का भाव दिया।

"प्रभुदयाल सिंह हैं कि नहीं अब?" पूछा उदय पांड़े ने और रामबिलास सिंह के रोओं को बिजली पुचकारती चली गई मानो। दोनों हाथ जुड़ गए। नहीं भी हो सच, पर कितनी मादक है यह कल्पना कि नन्हकू की आत्मा ने ही देह धरा है।

"गोरस-भात भिजवा देना, माई, घंटा-दो घंटा के बाद। और एगो धोती भी।" टनकती हुई आवाज में कहा उदय पांड़े ने और खड़े हो गए, "किसकी कुटिया है?" बगीचे के रखवार के लिए बनी कुटिया की ओर इशारा किया।

"आपकी है, देवता।" रामबिलास सिंह की कांपती हुई आवाज बोली, "बिराजिए।"

"लजाए हुए हैं सारघेंटी तो नाटक कर रहे हैं।" तिलंगी सिंह बुदबुदाए श्रीराम पांड़े के कान में, "रसरी बंधवाइए डांड़ में और ले जाइए खिंचवाकर। भोजन-छाजन नहीं मिलेगा दू-चार दिन, बस दिमाग दुरुस्त हो जाएगा।"

बांधकर कोई कितने दिन रखेगा किसी को! श्रीराम पांड़े ने दूसरे कान से निकाल

दी है तिलंगी सिंह की सलाह।

"बढ़िया इंट्री मारिस है।" विजय ने गौरीशंकर से कहा, "एकदम 'गाइड' वाला देवानंदवा जइसा।"

और कुंवरपुर के नवहों ने सोचा, मस्ती करने के लिए खराब नहीं है ईहो लाइन।

"सुन रहे हैं कि...सच बात है?" दिनेश सिंह की पत्नी ने पूछा, जो देखने नहीं जा सकी थीं उदय पांड़े को।

"गनीमत है कि कल्कि अवतार नहीं घोषित किया लोगों ने।"

"अवतार नहीं भी तो बड़ा साधु...।" दिनेश सिंह की पत्नी को नहीं भाया दिनेश सिंह का सबसे अलग-अलग दिखने का प्रयास।

पूरा कुंवरपुर उत्तप्त और उत्तेजित है, क्योंकि आज सात दिन हो गए हैं उदय पांड़े को कुटिया में बंद हुए! चिरई, सुकुमार पंडित और बलराम सिंह ने तो अपना डेरा-डंडा ही वहीं जमा लिया था। प्रतीक्षा करते-करते थक गए मड़ई का दरवाजा खुलने का, पर नहीं खुला।

चिरई बता रहा है कि एक अद्‌भुत दृश्य देखा उसने रात को। सुकुमार पंडित और बलराम सिंह सो गए थे बातें करते-करते और वह भजन गा रहा था कि निगाह कुटिया के छप्पर की ओर चली गई थी। दूधिया प्रकाश से नहाया हुआ था छप्पर। "अजबे खल का!" भावविभोर है चिरई, "माने कि का कहें आपको।"

सुकुमार पंडित बता रहे हैं कि चिरई का जोर-जोर से हनुमान चालीस पढ़ना सुनकर आंखें खुली थीं उनकी। वह अद्‌भुत प्रकाश तिरोहित हो चुका था तब तक।

"यही बेवकूफ सब नन्हकूआ का दिमाग खराब किया था, अब बेचारा उदय पंड़इया के पीछे पड़ गया।" रंगू सिंह ने अफसोस जाहिर किया।

"कहीं मर-खप गया भीतरे तो बहुत बदनामी वाला बात हो जाएगा, सुदरसन बाबा!" तिलंगी सिंह ने चेताया और खुद सुदर्शन पांड़े की भी इच्छा थी कि एक बार देख लिया जाए कुटिया का कपाट खोलकर; पर श्रीराम पांड़ेबो किसी को भी नहीं फटकने देंगी कुटिया के दरवाजे के पास। सामने खड़ी हो गई हैं दरवाजे के, "मरेगा तो हमारा बेटा मरेगा, दूसरे का का जाता है?"

ठंडी हवा का एक बावला झोंका आया था ठेरा बाबा की तरफ से—शीतल, स्फूर्तिदायक। नथूने फैल-बंद हो रहे हैं रामबिलास सिंह के। कैसी सुगंध है यह!

"कोई अगरबत्ती जलाया है क्या जी?" देवता पांड़े पूछ देते हैं इस बीच।

"नहीं, नहीं, वही है।" बूढ़े रामबिलास सिंह की थरथराती हुई आवाज चीरती चली गई है सन्नाटे को, "बोलिए, बोलिए, परम पिता..."

"चुप्प।" घुड़क दिया है श्रीराम पांड़े ने।

सुधाकर पांड़े जानते हैं, कोई सुनेगा तो कहेगा, और कितनी रातें आप बैठे हैं यहां? कि कह सकते हैं कि ऐसी ही गंधमाती हवा दूसरी रातों को नहीं बहती? लेकिन मन कह रहा है, कुछ अनूठा जरूर घट रहा है उदय पांड़े के आने के बाद।

"माहौल का भी प्रभाव हो सकता है यह।" दिनेश सिंह की राय है, "सारे मौजूद

लोग एक ही तरह से सोच रहे हों तो उस सोच के अनुकूल ही माहौल बनने लगता है।"

श्रद्धा और शंका के महासमर से जूझता कुंवरपुर हर शाम इस जिज्ञासा से भरा हुआ घर लौटता कि देखें, कल क्या होता है!

लेकिन कुटिया का दरवाजा बंद होने के नवें दिन अनिष्ट की आशंका पूरे गांव को सताने लगी है। हरिद्वार पांड़े को छोड़ दें तो ऐसा कोई नहीं है गांव में जो नहीं आया है कुटिया पर। बंद दरवाजे के बाहर छिड़ी बहस नाम ही नहीं ले रही बंद होने का। हरेक आदमी कुछ कह रहा है अपनी समझ और अनुभवों के आधार पर। सूखे पत्ते भी जैसे बड़बड़ा रहे हैं हवा के झोंकों में। कोयल भी कह रही कुछ—कूऽऽऽ...कूऽऽऽ...

कुंवरपुर में कुछ अलग अंदाज में आया है यह वसंत।

"यह बात मानते हैं कि नहीं कि कितनी बड़ी चीज है धार्मिक श्रद्धा?" छबीला सिंह ने गौर किया है कुंवरपुर के वातावरण में आए वासंती बदलाव के सबसे अहम आयाम पर, "सबको एक जगह ला खड़ा किया है उदय पांड़े ने।"

"लेकिन यह भ्रम की स्थिति है न।" दिनेश सिंह बोले।

"आपसी बैर और ईर्ष्या-मत्सर की स्थिति से फिर भी अच्छी है।"

"सो तो है।" दिनेश सिंह ने मान ली छबीला सिंह की राय।

कुछ और कहने ही जा रहे थे दिनेश सिंह कि एक झटके से खुला था कुटिया का दरवाजा और बाहर आ गए थे उदय पांड़े।

"दूध-भात खाएंगे, माई! लाई है?" एक खनकदार आवाज सुनते हैं लोग, थकान या कमजोरी का लवलेश भी नहीं है उसमें।

चिरई को अब कोई नहीं रोक सकता जयजयकार करने से। ढोंढ़ी का जोर लगाकर चिकर उठा है—'बोलिए, बोलिए! ग्राम-देवता की जय, जय...'

"चिरईया सनक गया क्या जी?" भीड़ के बीच में आ खड़े हुए हैं उदय पांड़े।

"यह माया हम लोगों को बुझा नहीं रहा ठीक से।" सुधाकर पांड़े रोमांचित हैं कि उदय पांड़े ने उन्हीं को चुना उस भीड़ में कुछ कहने के लिए।

"सुना कि नहीं, माई?"

श्रीराम पांड़ेबो लबर-झबर चल पड़ी हैं घर की ओर।

रामबिलास सिंह फैसला करते हैं—चाहे जितना भी कानून बतिआएं लल्लन सिंह, एक लगहर बांध के ही मानेंगे इस पुण्य धाम पर।

"समाधि में चले गए थे, बाबा?" बलराम सिंह ने पूछा।

"कौन चीज में? समाधि में?" विदूषकों की तरह चेहरे को खिचड़ी दाढ़ी और झूलते बालों के बीच कई तरह से बिदोरते-सिकोड़ते हैं उदय पांड़े और एक जोरदार ठहाका लगा देते हैं आकाश की ओर देखते हुए।

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।" धनजी पांड़े ने कहा, "कुछ बताइए हम लोगों को भी।"

"सुनिए!" पीपल के मोटे तने से पीठ टिकाए पालथी मारे बैठ गए हैं उदय

पांड़े। *"वहां उस लौ को देख रहे हैं न!"* पास में ही रखी लालटेन की ओर इशारा किया, *"वैसी ही होती है। लाल, रक्ताक्त, डूबते हुए सूरज की लाली-सी, खिलते हुए गुलाब की नन्ही कली-सी, सुलगती हुई एक अग्नि-शिखा-सी।* अपने ही अंदर की वह मीठी आग अनचखी रह जाती है। और मजे की बात यह कि बेताब होती है चखे जाने को। तुम निगाह-भर करोगे और लपट बन जाएगी। लपकेगी लिपटने को। कुछ आ रहा है समझ में?" हँसना शुरू कर दिया है उदय पांड़े ने, "लेकिन बड़ी छलिया है। बहुत बड़ी छलिया। दिखाएगी प्रकाश की ऐसी डबडब झील कि मन भागेगा उसे भोगने को और एक मदमाती आग के तरल प्रवाह में डूब जाएगा।"

भीड़ के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा। जो समझ भी सकते थे थोड़ा, भाषा के आतंक से भर गए हैं।

"करोड़ों-लाखों सूर्यों की आंच में जलना होता है...लेकिन वह जलना नहीं है। दहन नहीं है, अदहन है। अदहन जानते हैं न? जिसमें दो-चार कच्चे आलू डाल देती है एक औरत और बाहर आती है स्वाद से भरी हुई एक चीज। प्रत्यभिज्ञा से अदहन बन जाती है अंदर की आग। जलाती नहीं, पकाती है।"

चुप हुए उदय पांड़े तो मानो ढलती शाम भी चुप हो गई।

मुंह खुला का खुला रह गया है छबीला सिंह का। ऐसी मीमांसा अंदर की आग की तो उन्होंने न कभी पढ़ी, न कहीं सुनी। दिनेश सिंह भी भरे हुए हैं अचरज से। ज्ञान नहीं भी हो यह, ज्ञान का आरोप ही हो, पर शानदार तो है!

"रंगू भाई, मौलिकता है इस आदमी में।" छबीला सिंह बोले।

"हो सकता है, यही दस लाइनें याद हों।" रंगू सिंह ने मुंह बिचका दिया।

भीड़ प्रतीक्षा कर रही है कि फिर बोलना शुरू करें उदय पांड़े, पर पीपल के तने से उठंगे हुए ही नींद आ गई है उन्हें।

कोई इतना भी निश्चिंत कैसे हो सकता है? आदमी नहीं तो जानवरों का डर तो लगेगा!

सुधाकर पांड़े की आंखों और मस्तिष्क में दूसरा कुछ है ही नहीं उदय पांड़े के सिवा।

हरिद्वार पांड़े परेशान हैं इस बात को लेकर। गुनी की सीमेंट-छड़वाली दुकान तक पर बैठना छोड़ दिया है सुधाकर पांड़े ने।

"ए राधारमण की माई।" अपनी पत्नी से कहा उन्होंने, "ए भाई, घर में जब सब कोई परलोके सुधारने के फेर में लगा हुआ है तो हमी खाली बुड़बकाही वाला काम काहे कर रहे हैं? हम भी जाते हैं, घूम आते हैं बद्री धाम से।"

संदेश चापाकल पर पैर धोते सुधाकर पांड़े के लिए था, इसलिए कोई जवाब नहीं दिया हरिद्वार पांड़ेबो ने।

"हम सनकाह-बउराह हैं का रे कि कोई जवाब भी नहीं दे रहा कुछ?" पत्नी को डांटा हरिद्वार पांड ने।

"तो घूम आइए।" पत्नी ने कहा, "कोई मना कर रहा है आपको?"

"और खेती तुम्हारे अठराजा सम्हालेंगे आकर?"

"तो मत जाइए।"

"काहे? काहे नहीं जाएं? घर में कोई दूसरा मरद-मानुस नहीं है?"

"है काहे नहीं, लेकिन लोफर-लखैरा है तो क्या कीजिएगा!" पति-पत्नी के बीच की बतकही से ऊबकर कहा सुधाकर पांड़े ने।

"सुने कि एक किलो पेड़ा भी पहुंचाया गया है आज?" हरिद्वार पांड़ेबो हट गई थीं बीच से और सीधा संवाद शुरू हो गया दोनों के बीच।

"इसमें सुनने का क्या है? हमीं से पूछ लेते।"

"सुनने का कैसे नहीं है? आलत-फालतू काम पर पइसा उड़ाने के लिए ही दिन-रात खटता है आदमी?"

"आलत-फालतू काम पर उड़ाता है कोई तो गलती करता है।"

"तो तुम क्या कर रहे हो? ई फालतू के काम पर पइसा उड़ाना नहीं हुआ? बुझा नहीं रहा है तुमको कि झूठीया साधू बनकर अपने कंगला भाई-भतीज के खाने-पीने का इंतजाम कर रहा है उदइया?"

"एगो कंगला खा लेता है आपके धन से तो क्या हर्ज है?"

"ठीक है! तो कमाया जाए पुण्य। हम भी कमाते हैं।" हरिद्वार पांड़े पीछे हट गए हैं।

"गांव-भर को सुनाते चल रहे हैं, भउजी, कि सनक गए हैं हम!" उनके चले जाने के बाद माहौल को सहज बनाने की गरज से कहा सुधाकर पांड़े ने, "हम कहते हैं कि भीखार चाहे बहुरुपिया चला आता है साधू बनकर, तो भी कुछ दान-दक्षिणा दे देता है आदमी, तो जो सचमुच का संत जैसा आदमी हो, उसके साथ बोल-बैठ लेना फालतू काम कैसे हो गया?"

"अरे, ई आदीये के खिसियाह हैं।" हरिद्वार पांड़ेबो खुद ही चिढ़ी हुई थीं पति की कमसमझी पर। हिसाब मांगने चले हैं। कह देगा कि तब अलग कर दीजिए हमारा हिसाब, बस मान जाएगा मन।

दरअसल सुधाकर पांड़े की विशेष स्थिति है इस परिवार में। हरिद्वार पांड़े, अनंत पांड़े, सुधाकर पांड़े और दिवाकर पांड़े—इन चार भाइयों के परिवार में बस उन्हीं को कोई संतान नहीं है। उनके साठ-सत्तर बीघे का हिस्सा बाकी तीन भाइयों की औलादों को मिलना है। उनके रूठने या टेढ़ी चाल चलने की आशंका से डर जाता है हरिद्वार पांड़े का परिवार। सुधाकर पांड़ेबो एक किलो चने का सत्तू भी भिजवा दें अपने नैहर तो नींद नहीं आए हरिद्वार पांड़े को। कहीं परिकाने के फेर में तो नहीं है अपने नैहरवालों को!

"हमको तो लगता है कि गांव में डकैती डलवाएगा ई सिरीराम भाई का लइकवा।" जोगी सिंह की दालान में पहुंच गए हैं हरिद्वार पांड़े, "समूचे गांव को बगीचा पर जुटाए रहता है।"

"जबरदस्ती बुला रहा है किसी को?" जोगी सिंह की आंखें ब्लैक ऐंड व्हाइट टीवी के छोटे-से पर्दे पर अटकी हुई थीं। दिल्ली की किसी अदालत से डगमग-डगमग बाहर आ रहे थे नरसिम्हा राव। जोगी सिंह के मुंह से बेसाख्ता ही निकल गया था—'च च च...!'

"च च च च क्या कर रहे हैं?" श्रीभगवान सिंह अनसाए।

"बेचारा बूढ़-पुरनिया को फंसा दिया सब। कौन-कौन करम करके छुट्टा घूम रहा हे साला एक से एक चोर-चूहाड़ सब...और..."

"ऊहो बेचारा एगो पाखंडी के फेर में पड़ गया था।" हरिद्वार पांड़े ने अपनी लाइन पकड़ी, "कौन दूनी स्वामी नाम है उसका।"

"ई मत कहिए, बाबा, कि पाखंडी है। बड़का-बड़का लोग माथा नवाते है उसके सामने।"

"ए भाई, तो हमारे सुधाकर नहीं माथा नवा रहे हैं उदय पाडे के आगे? ई तो अज्ञान ही न कहा जाएगा बड़का लोगों का?"

"अब क्या कहा जाए जी कि अज्ञान है कि क्या है! हमको तो इहे नहीं बुझाता कि ऊ साला झरखंडीया को काहे छोड़ दिया और ई बूढ़-पुरनिया को काहे पेर रहा है?' समाचारवाचक समाचार के अंत में सुर्खियां पढ़ रहा था और पर्दे पर एक बार फिर आ गए थे नरसिम्हा राव।

"यही न लोकतंत्र का बियूटी है।" श्रीभगवान सिंह ने कहा।

"बियूटी है कि विडंबना है, भइया?" कलक्टर सिंह के जयराम सिंह ने पूछा।

"बियूटी है, बाबू, बियूटी!" श्रीभगवान सिंह बोले, "और वह इसलिए कि चाहे जो पाप कर लो, लेकिन पकड़ाओ नही। पकड़ाए तो नरसीम्हा राव वाला हाल हो जाएगा, नहीं तो अरबो दबाकर भी महापुरुष बने रहोगे।"

"हमारा तो, ए हरिदुआर बाबा, ई राय है कि अपने गांव के बबुआ लोग, चाहे आपके हों या हमारे, दिमाग से काम नही ले रहे हैं।" जोगी सिंह तिजुक गए है श्रीभगवान सिंह की बात पर, "आपके सुधाकर को सधुअई का बोखार चढा हुआ है और ई हमारे नेताजी नन्हकूआ के मरने पर मुर्गा कटवा रहे हैं नारद सिंहवा के यहां। चन्हाकी वाला काम कहिएगा इसको?"

"माने कि भगवानो आदमी जइसा गद्दार जीव नहीं बनाए होंगे दुनिया मे।" श्रीभगवान सिंह ने मुंह में भरी खैनी की थूक घोंटते हुए कहा "नारदे सिहवा के चलते आज इज्जत के साथ बइठे हुए हैं दालान में और कह रहे हैं..."

"हमको नहीं चाहिए अइसा इज्जत।" जोगी सिंह बोले।

"आपको नहीं चाहिए, लेकिन हमको चाहिए।" दांत पीसने लगे श्रीभगवान सिंह, "नारद सिंहवा नहीं रहे तो नन्हकूआ के बाद अब नौलखवा मूतने लगेगा आग में। पहले से ही पैतरा दे रहा है कि अबकी बार चुनाव में चलने नहीं देंगे बाबू साहेब लोग का। बूथ कब्जिया लेगा, तो आप बचाइएगा इज्जत?"

"चुनाव तुमको लड़ना है?"

"भगवान चाहेंगे तो एक दिन लड़कर भी दिखा देंगे।"

"सुन लिए न!" हरिद्वार पांड़े से मुखातिब हुए जोगी सिंह, "आपके बबुआ तो खाली पेड़ा-मिठाई ही न पहुंचा रहे हैं! हमारे बबुआ तो खेत बेचवाने वाला इंतजाम सोचे हुए हैं।"

मन में एक नया हौल लेकर लौटे हरिद्वार पांड़े कि कहीं सचमुच टिकट-ओकट न मिल जाए श्रीभगवान सिंहवा को।

"टिकट मिल रहा है सिरीभगवनवा को।" अपने आंगन में जाकर चिंघाड़े।

'तो हम का करें!' आंखों में निरीह असहायता भरे हुए हरिद्वार पांड़ेबो चुपचाप देखती रहीं लंबी-लंबी सांसें ले रहे पति को।

वोट और बेटी दूसरी जातवाले को नहीं देना है—इस सिद्धांत में अक्षर आस्था रही है कुंवरपुरवालों की। कुछ ऐसा जादू ही होता चुनाव के नाम में कि यह बेताबी अपने-आप पैदा हो जाती—देखें, अपनी जातवाला कोई खड़ा हो रहा है कि नहीं।

इस मामले में एक अद्वितीय लोकतंत्र रहा है इस देश का लोकतंत्र—स्थानीय या राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर चुनाव हुए बिना ही लहलहाता हुआ। सो भी ऐसे कि अमेरिकावालों तक को मानना पड़े—भई, सड़कें, खेती, उद्योग, व्यापार, बिजली वगैरह चाहे जिस हाल में हों, आपका लोकतंत्र आपकी लड़कियों जैसा ही शानदार है—नंबर वन! दुनिया का लोकतंत्र नं. वन! दिखाएंगे पाकिस्तानियों, अफ्रीकियों और लोकतंत्र से वंचित तीसरी दुनिया के देशों के सामने घोषणा करता हुआ—देखो नालायको, कितना कुछ जरूरी नहीं है लोकतंत्र के फलने-फूलने के लिए। शिक्षा जरूरी नहीं है, सुरक्षा का वातावरण जरूरी नहीं है...भय, भूख, भ्रष्टाचार—सबके होते हुए भी हरा-भरा रह सकता है यह।

कुंवरपुरवालों ने 'मां कसम' आज तक किसी भी चुनाव में किसी भी पार्टी का मैनिफेस्टो नहीं पढ़ा। उसके उम्मीदवारों की जिंदगी ही ऐसी खुली किताबों की तरह रही है कि कुछ और पढ़ने की जरूरत महसूस नहीं हुई। और इस बार तो और भी नहीं थी। वही पुराने, पहचाने हुए लोग उतरे थे दंगल में—रामप्रवेश चौधरी, मनोरमा मिश्र और बूटन राय। और बमभोला सिंह खड़े थे कांग्रेस के बागी उम्मीदवार के रूप में।

बमभोला सिंह खेत बेचकर चुनाव लड़ने वाले वीर थे। मंच भी अपने ही पैसे से बनवाते और अपनी ही जीपों में लादकर लाए हुए लोगों को सामने खड़ाकर दहाड़ने लगते, "भाइयो और बहनो, देखिए कि क्या हो रहा है चारों ओर? गुनी का सरकारी अस्पताल आवारा जानवरों और ब्लॉक दलालों के कब्जे में है...किसानों को वाजिब समर्थन मूल्य नहीं मिल रहा उनकी पैदावार का...सरकारी पशु-प्रजनन केंद्र के सांड भाग जाते हैं गरमाई गायों को देखकर...पुलिस या तो पॉलिश कर रही है किसी की या करवा रही है...फासीवादी ताकतें मजबूत हो रही हैं...वैलेंटाइन डे नहीं मनाने दिया जा रहा नौज़वानों-नयुवतियों को...भगवाकरण और भूमंडलीकरण का खतरा मंडरा रहा है हम

लोगों के सिर पर और कुछ दूसरे मित्र जातिवाद फैलाकर लड़ना चाहते हैं उससे...''

''बमभोला सिंहवा सबसे फिट कैंडिडेट है।'' बमभोला सिंह का ओजस्वी भाषण सुनने के बाद यह राय बनती और मिनटों में उड़नछू हो जाती—लोग अपनी-अपनी जातवालों की जमात में चले जाते।

कुंवरपुर राजपुताने में लेकिन असमंजस की स्थिति थी इस बार। अपनी दीर्घकालीन रणनीति और नारद सिंह की राजनीति के प्रति प्रतिबद्धता के कारण श्रीभगवान सिंह मनोरमा मिश्र का समर्थन कर रहे थे और कलक्टर सिंह का परिवार खुलेआम समर्थन करने लगा था बमभोला सिंह का।

नारद सिंह को आना पड़ा है सुलह कराने के लिए।

नारद सिंह खुद ही रूठे उठे हुए थे पार्टी द्वारा 'एक युवा नेता' के रूप में अपने दावे को नजरअंदाज कर दिए जाने पर। पार्टी अपनी मजबूरी का रोना रो रही थी। आलाकमान का निर्देश था कि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को टिकट नहीं देना है इस बार। ''पर अगले चुनाव में आपका टिकट पक्का है, नारद भाई!'' नारद सिंह को आश्वासन दिया गया। मनोरमा मिश्र कह भी रहे थे कि उनका आखिरी चुनाव था यह। नारद सिंह के चेलों ने उन्हें उकसाया कि 'मनोरमा बबवा के बचन का कोई भरोसा नहीं है, गुरू। अगले चुनाव के टाइम फिर गोगल्स लगाके और दांत बनवाके हाजिर हो जाएगा।' पर मान गए थे नारद सिंह—'ऐसे भी हम कौन कहें कि किसी बहिनच्चो! ग़मेले से कम हैं।' कहा अपने चेलों से तो वे भी मान गए।

''क्या रे साले गाय के...हम मान सकते हैं और तुम नहीं मान सकते?'' महेंदरा को डांटा।

''हम, भइया, आपसे हाथ जोड़कर खाली ई पूछ रहे हैं कि राजपूत अब राजनीति नहीं कर सकता है इस देस में?'' महेंदरा ने बड़े आर्त स्वर में पूछा।

''हम सोचिए रहे हैं तो जरूरी है तुम्हारा दिमाग लगाना? वैसे भी भगवान किफायते से दिए भी हैं तुमको।'' नारद सिंह ने एक प्यार-भरी धौल जमाई उसकी पीठ पर और श्रीभगवान सिंह के ऊपर गुस्सा गए, ''दरुआ गाय-गोरू को सानी गोतने के लिए मंगवाए हो?''

''यही बतिया हम भी समझा रहे थे इसको।'' दारू की बोतलों के साथ उपस्थित हुए श्रीभगवान सिंह ने कहा।

''भइया कह रहे हैं तो मान ले रहे हैं, पर कलेजा में घाव तो रहिये जाएगा।'' महेंदरा ने कहा।

''बभना सबको नहीं न मनाना पड़ेगा?'' नारद सिंह ने पूछा।

इस पर जोर का ठहाका लगा जोगी सिंह की दालान में।

''दयासंकरा गड़बड़ नहीं न करेगा?''

और भी बुलंद ठहाका लगा इस बार।

''हमको तो नजरे नहीं आया उसके बाद से। सुने कि बियाह ठीक हुआ है।

बियाह करेगा कि राजनीति करेगा?" श्रीभगवान सिंह बोले, "आपकी दया से, भाई, अब दयासंकर-फयासंकर का मजाल नहीं है बोलने का।"

"आपके साधू में कुछ दम है, सुकुमार बाबा?" नारद सिंह मस्ती में हैं अब।

"दम मतलब किस मामले में?"

"सुने हैं, रेज सब भी भक्त हो गया है। मनोरमा मिसिरवा को लाकर माथा टेकवा दें तो फोड़ सकते हैं रेज सबको?"

"देखना पड़ेगा।" कहा सुकुमार पंडित ने। पर देर हो चुकी थी। नौलाख महतो अगले ही दिन रामप्रवेश चौधरी को लेते आए कुंवरपुर और उदय पांड़े के सामने खड़ा कर दिया आशीर्वाद के लिए।

"आसिरबाद दीजिए, बाबा, कि जीतें इस बार तो मंत्री बनें।" उनके पैरों के आगे जमीन पर माथा टिकाते हुए कहा रामप्रवेश चौधरी ने।

सुधाकर पांड़े के मन में यह इच्छा जागी कि जो दाण्ड्यायन ने कहा था सिकंदर से, कुछ वैसा ही उदय पांड़े भी कह दें रामप्रवेश चौधरी से, लेकिन कुछ देर तक शून्य में ताकते रहने के बाद उदय पांड़े ने कह दिया—'कुछ दिया' और प्रसन्न हो गई रामप्रवेश चौधरी की मंडली।

"जीतने के बाद भी इस धाम का खयाल रहना चाहिए, विधायकजी।" बदले में आश्वासन मांगा नौलाख महतो ने, तो 'आप भी क्या बात करते हैं' सदृश भाव छप गया रामप्रवेश चौधरी के चेहरे पर।

नौलाख महतो पहली बार इस तरह का सक्रिय हस्तक्षेप कर रहे हैं गांव की राजनीति में। कुंवरपुर की मतदाता-सूची लिए हुए चक्कर लगा रहे हैं महतो पट्टी, कमकरटोल, नोनियाटोली और चमटोली में।

"मन की बात बताने का मौका नहीं मिलता, भइवा, नहीं तो नन्हकू भइवा के कुछ बात से हमारा विरोध जरूर था, लेकिन दबे-कुचले हुए अवाम के लिए जो कर रहा था जवान, सीना चौड़ा हो जाता था उसके बारे में सोचकर।" नौलाख महतो कह रहे हैं, "ई बात भले दुनिया भूल जाए, आप भी भूल जाएं, हम नहीं न भुला सकते कि 'नान्ह' कह-कहकर किस तरह बेइज्जत किया गया है हम लोगों को। याद नहीं है आप लोगों को कि यही बालचन और विभूति पंड़इया कैसे बेइज्जत किया था हमको? सो काहे भाई? तो इसलिए कि बाबाजी लोग के पांत में एगो हमारे हित का छोटा लइका बैठ गया था। भुलाने वाला बात है ई सब?"

"रेज लोग नौलाख के फेभर में जा रहा है, बाबा।" जगन्नाथ सूचना लेकर आया है।

"भूला गए कि कलक्टर आए थे गुनी में तो क्या हुआ था जनता दरबार में?" दयाशंकर ने कहा और अफसोस भी करने लगे कि क्यों कहा। उनका तो प्रण था कि अलग हो जाना है इस झमेले से, जैसे दूसरे हो गए थे।

जिस दिन बिक्रमगंज में विरोध-प्रदर्शन निश्चित हुआ था नन्हकू सिंह की हत्या

के विरोध में, दमयंती कहीं बाहर गई हुई थी मंधाता मिश्र के साथ। भूमंडलीकरण के सवाल पर पार्टी की कोई बैठक थी कहीं। छांगुर अपनी ससुराल में रहने लगा था। अपने पुराने धंधे में लौट गया था। संतोष राजभर गैंग के साथ चलने लगा था डकैतियों में। बीच-बीच में आता कुंवरपुर तो कोशिश करता कि खबर नहीं हो किसी को उसके आने-जाने की। 'हम लोग काम में लगे हुए हैं, बाबा।' कहता।

दयाशंकर ने नहीं पूछा, क्या काम था वह। नंदलाल ने गुनी में ही खोल ली थी पान-सिगरेट की दुकान। सिपाही ट्रैक्टर चला रहा था नौलाख महतो का और इंकलाब तो भूल से भी नहीं मिलना-जुलना चाहता था नन्हकू सिंह की मंडली के लोगों से।

"तुम्हारा सथिया सब कहां बिला गया, इंकलाब?" नन्हकूबो ताने मारती, "जोस ठंडा हो गया दमयंतीया का?"

"काम में लग गया सब कोई।" इंकलाब मिनमिनाता।

"कहते थे उनसे कि सबका सब खाली फ्री का पाऊच पीने आता है तो सुनते ही नहीं थे। दयासंकरा एक बार भी आया हाल-चाल पूछने? निमकहराम...बेचारा सिपहिया खाली सरियत दे रहा है निमक का, अभीयो आता है..."

"जाने दीजिए, सांती है नहीं आता तो।"

"मौगड़ा कहीं का!" उखड़ गई नन्हकूबो, "कहता है सांती है। हमारा जान सांसत में है और कहता है सांती है..."

इंकलाब से बहुत नाराज थी नन्हकूबो। चाहती थी, पहले की ही तरह भीड़ लगे दालान में। गांववाले नहीं आ रहे थे तो बाहरवालों को बुलाए। इंकलाब चुप्पी साध लेता था।

"बबुआ बड़ा हो जाए तो..." नन्हकू के मरने के चार महीने बाद पैदा हुआ था उसका बेटा। इंकलाब उसी को चिपकाए रहता सीने से।

"चाहता है कि इमको भी मार दे सब?" नन्हकूबो गुर्राने लगती।

सिपाही से कहने लगी थी यही बातें। पुराने साथी कहां थे? दरअसल उसे डर लगा रहता, कि लल्लन सिंह किसी भी समय हमला बोल सकते थे उसके ऊपर। और सिपाही एक नया साथी लेता आया था—नौलाख महतो को। जबर्दस्त माया पसारी थी नौलाख महतो ने—उनकी आंखें भर आई थीं नन्हकू सिंह को याद कर। यह याद कर कि किस तरह श्रीभगवान सिंह, लल्लन सिंह वगैरह ने गलतफहमियां पैदा कर दी थीं उन दोनों के बीच, वरना दोनों तो एक ही लड़ाई लड़ रहे थे!

"इसको तो सिरीभगवान सिंह से भी खराब मानते थे नन्हकू भाई।" इंकलाब परेशान हो उठा था।

"ए इंकलाब, सुन लो साफ-साफ। रहना है तो निमना मन से रहो, उपराजो और खाओ। हमारे ऊपर शासन चलाने का मत सोचो। उनके बाद हमारा मालिक कोई नहीं है। मालिक बनने का सोचोगे तो भगा देंगे।" नन्हकूबो ने इंकलाब को बता दी थी उसकी असली औकात।

"खुद नन्हकूयेबो थामे हुए हैं उसका तो दूसरे को क्या कहा जाए।" जगनाथ उदास है एक महान् सपने को बदली हुई परिस्थितियों की कंटीली झाड़ियों में उलझ-पुलझ गया देखकर।

"हमको, जगनाथ, किसी से कोई शिकायत नहीं है।" दयाशंकर बोले।

मुंह लटकाए हुए अपने टोले लौट रहा है जगनाथ। सोच रहा है, वह भी नाहक ही आंख की किरकिरी बना हुआ है नौलाख महतो की। कोई फायदा नहीं है पार्टी और सिद्धांत की बात करने का।

नौलाख महतो अनूठे उत्साह का अनुभव कर रहे हैं आजकल। सिबचन, छत्तीसा और भोला का कोर्ट मार्शल करने वाले नदारद थे रेजू टोलों से। कांग्रेसी टिकट के एक अन्य प्रत्याशी अनजानाजी भी पार्टी पर गद्दारी का आरोप लगाते हुए रामप्रवेश चौधरी के खेमे में ही आ गए थे। कबूलवाया था रामगिरिही और भरोसा से कि रामप्रवेश चौधरी को ही वोट देंगे। और गांव की दो दबंग विधवाएं तो थीं ही उनकी मुट्ठी में।

चूड़ामनबो 'पाहुन ' कहती थी नौलाख महतो को, क्योंकि नौलाख महतो की ससुराल उसी के गांव के एक टोले में थी। बभनटोलवालों का कलेजा जलता था सुनकर। फिर भी कहती।

"दू-चारगो वोट तो बभनटोल में भी है न हमारा?" नौलाख महतो किसी धाकड़ नेता की तरह कुर्सी पर पालथी मारकर बैठे हुए आनंद ले रहे हैं अपनी बढ़ी हुई औकात का।

"देखते न रहिए, मउसा।" विजय गिलगिला उठा है, "चारा फेंके हुए हैं। वोट और बढ़ेगा।"

"दयासंकरा बिलाई बन गया, अब कौनो बात नहीं है। खाली हथकड़ी और लग जाता..."

"बिअहवा हो जाने दीजिए, तब ज्यादा मजा आएगा। नइकी दुलहिनिया बिरह का गीत गाएगी—"पिअ सूं कह संदेसड़ा, रे भंवरा रे काग...और एगो कउवा भी नहीं मिलेगा संदेसा पहुंचाने को।"

"हां ए पाहुन, दुर्गति करवा दीजिए इसका!" घिघियाने लगी है चूड़ामनबो।

"बड़ी घमंड में रहती है ई बुढ़िया...मांगे धूर बहरवा दीजिए।"

चूड़ामनबो को दुःख है इस बात का कि जब कभी भी आशा बंधी कि पानी उतरेगा रामज्ञान पांड़ेबो का, कुछ ऐसा हो गया कि स्थिति बदल गई। गरीब घरों में गईं भी बेटियां, तो नौकरी लग गई शारदा और सुशीला के पतियों की। विमला का दिमाग कुछ उल्टा चल रहा था तो जहर ही खा लिया अभागिन ने। मुन्नीया को लगी हुई थी भरमाने में, पर विजइया ऐसा सोझबकाह कि झींटती भी रही उसको और हाथ भी नहीं लगाने दिया। रहती तो कुछ नए दावं आजमाती चूड़ामनबो, पर कहां से तो मंधाता मिसिरवा आ गया था हाथ थामने।

"हम, मउसा, आपके लिए बभनटोल का लेडीज भोट पक्का कर दिए हैं।" विजय कह रहा है।

गदहा कहीं का! एगो मुन्नीया को पटाइये नहीं पाया और समूचा बभनटोल का लेटीज भोट पक्का कर देगा! चूड़ामनबो को गुस्सा आ गया है।

"कैसे?" नौलाख महतो ने पूछा।

"है उपाय।" खुश होता है तो गर्दन कछुए की घेंच की तरह आगे-पीछे करने लगता है विजय।

"ए बाबू? मउसा को जिताने के लिए हम लोग का सब सड़ीया-ओड़ीया मत बांट देना बिहूनी सबको।" चूड़ामनबो बोली।

नौलाख महतो को मजा आ रहा है चूड़ामनबो का चोन्हाना देखकर। सोचती है, नौलाख महतो को बुड़बक बना देगी ऐसी हरकतों से! चूड़ामन पांड़े समझती है उनको। जानती नहीं कि नौलाख महतो भी यही खेल खेलते रहे हैं।

"हमारे लिए एगो साड़ी भी नहीं दे सकतीं आप?"

"महटियाइये न, मउसा। उसकामिनी देवी का जादू है हमारे पास।" विजय बोला।

कभी-कभी क्रूर लगता है अपना ही रवैया, पर विजय को मानसिक और मनोवैज्ञानिक रूप से बिल्कुल ही असहाय, अस्थिर बना देने की रणनीति बनाई है नौलाख महतो ने। हमेशा डराते-धमकाते रहते हैं उसे। यह भय बिठा दिया है उसके मन में कि जवार के सारे गिरोह उठाना चाहते थे उसे। पैसे के लिए भी और सुंदर था, इसलिए भी। कुछ देर तक तो विजय उनकी बातों को हल्के-फुल्के अंदाज में सुनता रहता पर जल्दी ही सिकुड़ने लगता आतंकित होकर। नौलाख महतो उसकी सारी गलतियों की आत्म-स्वीकृतियां कराते उससे और उन्हीं का इस्तेमाल करते उसके खिलाफ।

"इसको कंट्रोल में रखना जरूरी है। बहुत सोझिया है।" चूड़ामनबो से कहते।

चूड़ामनबो सहमत होती।

"दूसरे को छोड़ो न, विजयबो हैं कि नहीं हमारी पार्टी में?" कहा उससे।

"भेऽऽऽ।" हँसने लगा विजय।

"इसका मतलब?"

"आपको मालूम नहीं है हम कैसे कंट्रोल करते हैं?" उत्तेजित दिखने लगा है विजय, "मजाल है बात नहीं मानने का?"

"खाली कंट्रोल करते हो कि ऊ सब भी होता है?"

"देखाइए देंगे तो मानिएगा?" हताश दिखने लगा है विजय।

"महेंदरा न कह रहा था कि..."

"महेंदरा झूठा है।"

"गोसांई पंड़इया भी बता रहा था कि..."

"क्या बता रहा था?" गाल लाल हो गए हैं विजय के। पसीना उबल आया है माथे पर।

तनाव के क्षणों में उसके चेहरे की सारी नसें तन जातीं मानो। कान सियार के

कान जैसे खड़े हो जाते।

उसकी बगल में जा बैठे हैं नौलाख महतो—"मन करता है तो हमसे कहो...कहोगे कि नहीं?...दूसरे को नहीं न कहेंगे हम...बोलो, कहेंगे?...विजयबो को भी नहीं कहेंगे!"

नौलाख महतो की गोद में सिकुड़ता चला जाता वह।

"...विजयबो से भेंट नहीं करवाओगे?" नौलाख महतो फुसफुसा रहे हैं उसके कान में।

"आंऽऽऽ!" विजय मानो समझ नहीं पा रहा, हो क्या रहा है उसके साथ। होठ फड़फड़ा रहे हैं। कुछ कहना चाहता मानो, पर कह नहीं पा रहा।

"ठीक है, भाई, मत भेंट कराना।" ऐसे ही क्षणों में अकेला छोड़कर अलग हो जाते हैं नौलाख महतो।

"इसका बस बाहर घूमना छोड़वा दीजिए, पाहुन! फिर अपने ठीक हो जाएगा।" चूड़ामनबो नहीं देख पाती विजय का शोषण और संत्रास। उसे लगता, नौलाख महतो की लल्लो-चप्पो कर वह विजय को न केवल गिरोहों की गिद्ध-दृष्टि से बचा रही थी, वरन् उसके बनडमरू की तरह घूमते रहने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगा रही थी।

किसी और की तो हिम्मत नहीं थी कि नौलाख महतो के मुंह पर कुछ कह सके उनके विधवा-प्रेम की बाबत, पर टेंगर सिंह कह देते—"एगो हमारे लिए भी खोज दो, नौलाख भाई, बड़ी कष्ट में है आदमी...और एगो जंगी भइया के खातिर भी।"

नौलाख महतो ने सोचा था कि बड़ी चाक-चौबंद तैयारी कर रखी थी इस बार और गांव के दो-तिहाई वोट उनके थे, पर बहुत बड़ी खुशफहमी थी यह।

नौलाख महतो ने यह नहीं सोचा था कि सुबह पांच बजे के पहले ही कुंवरपुर की गलियों पर कब्जा कर लेंगे नारद सिंह के राइफलधारी। डोलडाल तक के लिए घरों से बाहर नहीं निकलने देंगे लोगों को। बूथ पर तैनात पुलिसवालों का कहना था कि उनका काम केवल बूथ पर कोई गड़बड़ी नहीं होने देना था। बूथ की सीमा के बाहर क्या हो रहा था—यह देखना उनका काम नहीं था। नौलाख महतो का बेटा, जो पोलिंग एजेंट बनकर बैठा हुआ था बूथ के अंदर, यह देखकर तड़प रहा था कि एक-एक आदमी सौ-सौ वोट मार रहा था और सिपाही कह रहे थे, अंदर क्या हो रहा था, प्रिजाइडिंग ऑफिसर जाने। और प्रिजाइडिंग ऑफिसर बस एक ही बात जानता था—चूं-चापड़ नहीं करना है। ऊपर के लोग कहेंगे कि लिख दो गड़बड़ी की रिपोर्ट तो लिख देना है, वरना चल रहा है जैसे, चलने देना है।

आठ-दस राउंड फायरिंग जरूर हुई महतो पट्टी में, पर बूथ पर कोई नहीं आया। बारह बजते-बजते नब्बे प्रतिशत वोट डाले जा चुके थे मतपेटियों में।

"ईहो काम ठीके हो गया। नौलाख का मन टूटना भी जरूरीये था।" जगनाथ खुश है।

दयाशंकर भी खुश हैं।

"दिमाग ठंडा रखकर काम करना है, जगनाथ! नन्हकू सिंह के साथ-साथ उनका प्रभाव भी चला गया है। अब यह सोचना है कि जरूरी मुद्दों को उनके बिना भी कैसे जीवित रखा जा सकता है। लीडर के जाने पर कुछ लोग इधर-उधर हों, लाजमी है। लेकिन सावधानी से बढ़ा जाए तो लोग वापस भी आ जाएंगे।" दयाशंकर जगनाथ को नहीं, अपने-आपको समझा रहे हैं।

"एक आदमी के चले जाने से कितना फर्क पड़ जाता है!"

"वक्त भी बहुत बड़ी चीज है।" दयाशंकर ने कहा। और जगनाथ और दयाशंकर दोनों को ही लगा कि अब उनके ऊपर मेहरबान हो रहा था वक्त। पहले नौलाख महतो की रणनीति फेल हुई और अब श्रीभगवान सिंह के चेहरे पर कालिख पुत गई है। चुनाव में फिर जीत गए थे रामप्रवेश चौधरी।

चिरई ने कहा, "प्रभुजी महाराज के आसिरबाद से!"

नौलाख महतो, जो घर में मुंह छुपाए बैठे हुए थे चुनाव के दिन से, एकदम गांव के बीच से निकले नया धोती-कुर्ता झाड़कर। कहा, "जब तक हैं, तब तक तो भला ही सोचेंगे कुंवरपुर का; पर यही सोच रहे हैं कि रामपरबेस बाबू को कैसे मनाएंगे।"

अनजानाजी भी खुश हैं। कह रहे हैं कि मनोरमा मिसिर की दुर्दशा का कारण पार्टी द्वारा उपेक्षा थी अधर-सूखे, वेश-रूखे लोगों की। उन्हें मिल गया होता टिकट तो नहीं देखना पड़ता यह दिन।

बूटन राय के समर्थक कह रहे हैं, मनोरमा मिसिर ने काम बिगाड़ दिया उनका और मनोरमा मिसिर के पक्ष वाले कह रहे हैं, जब तक बूटन राय जिंदा रहेंगे, कोई फारवर्ड नहीं बन सकेगा गुनी का विधायक। नारद सिंह एक अलग कारण से खुश हैं। मनोरमा मिश्र नामक अध्याय की समाप्ति हो गई थी इस चुनाव के साथ और अब मैदान उनका था। और चूंकि नारद सिंह खुश थे, श्री भगवान सिंह को भी ज्यादा समय नहीं लगा अपनी निराशा पर क़ाबू पाने में। भले ही उम्मीदवार हार गया था उनका, यह तो हो ही गया था साबित कि नन्हकू के जाने के बाद उनके खिलाफ खड़ा होने की हिम्मत न रेजों में थी, न नौलाख महतो में। मुसमात तक को बूथ पर नहीं जाने दिया था उनके खाड़कुओं ने। ऐसा तो कभी नहीं हुआ था पहले!

"मुंह करिया हो गया है सिरीभगवान सिंह का।" सिपाही नन्हकूबो को सुनाने आ गया है।

"जाने दो, इज्जत बच गया तुम लोगों का।" नन्हकूबो बोली, "नहीं तो उनका नाम तो हँसवा ही दिए थे तुम लोग। हई इंकलबवा को बोले कि चल, कम से कम अपना वोटवा दे आते हैं तो कांपने लगा। पता नहीं, कैसे चलता था उनके साथ।"

"उनका बात छोड़िए। उनका बाते अलग था। इंकलाब-फिंकलाब के साथ चलने का जरूरत नहीं था उनको।" सिपाही को इस कामना ने जकड़ लिया है कि भले ही रुखाई से बोलती हैं, एक न दिन उसकी निष्ठा का प्रतिदान उसे देगी नन्हकूबो। उसके मुंह में लार भरी रहती है नन्हकूबो से बात करते हुए।

इंकलाब धुंआता रहता है अंदर ही अंदर।

"ई तो केवल बक्सा ढोने वाला था। हमको क्या बोलेगा।" गुस्सा गया सिपाही के अहम्मन्यतापूर्वक बोलने पर।

"अच्छा, कौन क्या था, बहस करने का जरूरत नहीं है इसके ऊपर।" नन्हकूबो ने डपट दिया इंकलाब को।

"जीतने का जोम कम हो जाए तो कहना नौलाख महतो से कि इधर भी आ जाएं एक बार। एक भी कागज-पत्तर ठीक नहीं हुआ आज तक..." सिपाही से बोली। अचानक कोई अधूरा पड़ा काम याद आ गया है उसे। भीतर चली गई है लपकते हुए।

गालियां देते हुए निकलेगी किसी को और आकर खड़ी हो जाएगी उसके दुआर पर।

इंकलाब को लाज लगती है उसके इस तरह बउवाने पर। नन्हकू सिंह थे तो दालान में भी शायद ही खड़ी हुई हो कभी।

"ई सूद पर रुपया चलाने वाला काम ठीक नहीं है।" कहा था उसने, "खेत-बधार से ही बहुत हो जाएगा।"

"हम तुमसे सीखेंगे रे बदमास, कि क्या ठीक है, क्या नहीं?" फट पड़ी थी नन्हकूबो, "छाती पर मूंग दलेंगे उनके दुश्मनों की। जो-जो खराब लगेगा उनको, वही करेंगे। तुम नहीं बोलोगे बीच में!"

रामबिलास सिंहबो रिरियाती रह गई थीं, पर सफेद साड़ी नहीं पहनी नन्हकूबो ने। चूड़ियां भी नहीं उतारीं। सोलहो शृंगार कर निकलती थी घर के बाहर। किसी में हो हिम्मत तो देख ले मना करके!

"एक काम, चलो, अच्छा हो गया।" सज-धजकर बाहर निकली तो मानो सूनी पड़ी दालान से कहा, "अब देखना है कि नौलखवा भी गद्दार ही निकल जाता है कि..."

बूटन राय फिर हार गए थे चुनाव। यह उनकी लगातार चौथी हार थी चुनावी समर में। लोग कहते, पार्टी ही गलत चुन लेते हैं बूटन राय और बूटन राय कहते, लोगों से ही भूल हो जाती है पार्टी चुनने में।

"राजनीति में धीरे-धीरे अच्छे लोगों की भूमिका ही समाप्त होती जा रही है। बड़ा अजीब समय आ गया है।" एक उदास समर्थक बोला।

"समय तो जरूर अजीब आ गया है।" बूटन राय बोले।

"अब देखा जाए न कि सिंगल बूथ पर भी नॉर्मल भोटिंग नहीं हुआ और चुनाव आयोग अपनी पीठ थपथपा रहा है कि शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया चुनाव।"

"अभी-अभी तो खुद आपही ने कहा न, प्रोफेसर साहब, कि बड़ा अजीब समय आ गया है!" गावतकिये पर लुढ़के हुए बूटन राय पालथी मारकर बैठ गए हैं, "इस समय का अजीब होना दरअसल इसी डरावनी सच्चाई में निहित है—अशांति का शांतिपूर्वक संपन्न हो जाना। अराजकता को व्यवस्था मान लेने की भूल कर रहे हैं लोग। पछताएंगे।"

"बहुत बड़ी बात कह दी गई। एकदम सही बात।" प्रोफेसर साहब की जैसे आत्मा तक खिलखिला उठी है बूटन राय के इस समय-विमर्श पर।

"आप चुनाव आयोग को क्यों दोष देते हैं? वह बेचारा तो इस दसकंधर तंत्र का एक सिर मात्र है, जिसकी बातों से बाकी नौ सिर इत्तफाक नहीं रखते। यह अपनी जनता तो देख सकती है न कि कौन क्या कर रहा है!"

"जनता लाचार नहीं है, बूटन बाबू?" लल्लन सिंह को लगा, यही मौका है कुंवरपुर मतदान-केंद्र पर एक भी वोट नहीं मिलने के कारणों से बूटन राय को अवगत करा देने का, "कुंवरपुर का केस ही देख लिया जाए न! लगभग आम राय बनने लगी थी कि मनोरमा मिश्र के यथास्थितिवाद और रामप्रवेश चौधरी के जातिवादी उठा-पटकवाद को छोड़कर एक खरी सोचवाले नेतृत्व को चुनना है, पर बंदूकों का खेल शुरू हो गया। बेचारे सुकुमार पंडित पर तो हाथ छोड़ दिया श्रीभगवनवा ने।"

"क्या प्रभु! यह किस वक्त में जीना लिख दिया हम लोगों का!" प्रोफेसर साहब ने मुंह आकाश की ओर उठाकर कहा।

"वक्त बदलने वाली चीज है, प्रोफेसर साहब।" बूटन राय मुस्कराए, "यह और बात है कि कुछ लोग मान रहे हैं कि नहीं बदलेगा।"

"रामप्रवेश चौधरी डायलग मार रहे थे कि तीस साल राज करेंगे।"

"पिछड़ोवाद के नाम पर?"

"सही कहा गया।" व्यंग्य की दिशा को समझते हुए गिलगिलाए प्रोफेसर साहब, "पिछड़ोवाद के नाम पर।"

बूटन राय का यह डायलग प्रोफेसर साहब तक ही नहीं रुकेगा। जवार के सभी भूमिहार-बहुल गांवों तक पहुंचेगा। लोगों से लोहा मनवाएगा बूटन राय की वाक्-चातुरी का।

लल्लन सिंह एकमात्र राजपूत हैं उनके प्रशंसकों की मंडली में। इसके दो कारण हैं—एक तो यह कि चूंकि श्रीभगवान सिंह मनोरमा मिश्र और नारद सिंह के कैंप में थे, उनके लिए असंभव था उस कैंप में रहना और दूसरा यह कि बूटन राय के गांव पिपरी के प्राइमरी स्कूल में ही पोस्टिंग थी उनकी।

"जाने दिया जाए, बूटन बाबू! जनता को रहने दिया जाए पिछड़ों और पिछड़ोवाद के भरोसे। गुनी के शिक्षा-जगत् को जो आपकी देन है, काफी है भावी पीढ़ियों के समझने के लिए कि गुनी का सच्चा नेता कौन था।" लल्लन सिंह ने कहा।

और लल्लन सिंह की ऐसी ही बातों का कमाल था कि गुनी को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की घुट्टी पिलाने का दम भरने वाले बूटन राय बिना छुट्टी-छपाटी के कई-कई दिनों तक स्कूल से गायब रहने पर भी उन्हें कुछ नहीं कह पाते थे।

"स्कूल ठीक-ठाक चल रहा है न?" नाराजगी बहुत बढ़ जाती तो भी अप्रत्यक्ष इंगितों का ही सहारा लेते।

लल्लन सिंह की *अव्यक्त* प्रतिक्रियाओं का रंग-रूप उस समय वही नहीं होता, जो उनके गोले पर होने वाली चर्चाओं के दौरान होता। लल्लन सिंह को अखर जाता

एक शिक्षा माफिया का स्कूल का हाल-चाल पूछना। यह तो नौकरी थी कि क्या-क्या नहीं बरदाश्त करवा देती थी, वरना मुंह पर ही कह देते कि स्कूल का हालचाल जानने के पहले अपने फ्रॉड कॉलेजों और स्कूलों का हालचाल क्यों नहीं देखते?

शिक्षा माफियाओं का जमाना था वह। माफिया अपने या अपने बाप-दादा के नाम पर धड़ाधड़ स्कूल और कॉलेज खोल रहे थे। ऐसे डेंटल कॉलेज खुल गए, जिनके पास दिखाने को प्रबंधकों के दांतों के अलावा कुछ भी नहीं था; ऐसे इंजीनियरिंग कॉलेज खुल गए, जिनमें इंटरमीडियेट थर्ड डिविजन से पास लड़कों को भी 'इंजीनियर विद डिसटिंक्शन' बना देने की कूव्वत थी; ऐसे महिला महाविद्यालय खुल गए, जिनमें किसी-किसी दिन नया कपड़ा पहनकर खुद को दिखाने का मन हो तो आ जाएं महिलाएं और डिग्री ले जाएं; ऐसे टीचर्स ट्रेनिंग खुल गए, जो खेती में मन नहीं लगा पा रहे ग्रेजुएट फटीचरों की खुराक पर—बंद होते हुए भी—खुले रहे।

बूटन राय ने भी देखा कि जवार के युवक-युवतियों में लालसा थी तरह-तरह की डिग्रियां हासिल करने की और सरकार साधन नहीं मुहैया कर रही थी, तो पहले तो 'श्री लूटन राय महाविद्यालय' की नींव डाली अपने पिता के नाम पर। और नींव भी क्या डाली, पहले ही से पुख्ता नींवों पर खड़े थे जो गोले के दो गोदाम, उन्हीं पर तख्ती टांग दी कॉलेज की। कुछ हितैषियों ने हिंट किया कि नाम थोड़ा अटपटा था तो उन्हें मुजफ्फरपुर का 'लंगट सिंह कॉलेज' देख आने की सलाह दे दी—"लंगट से बुरा है लूटन?"

और सचमुच, नाम कौन देख रहा था! तीस-तीस, चालीस-चालीस हजार की थैली लेकर प्रोफेसर बनने के लिए इलाके के पोस्ट-ग्रेजुएट नौजवान हांफते-हहरते हुए पहुंचने लगे। थैली वे बूटन राय को नहीं, इस सपने को अर्पित कर रहे थे कि कॉलेज एफ्लिएटेड होगा एक दिन, फिर कंस्टीचुएंट हो जाएगा...और...और तब क्या...मन हो तो ले लिया, एकाध क्लास वरना धरना-सरना दिया जाएगा यूजीसी का नवीनतम वेतनमान लागू कराने के लिए...चुनाव-प्रचार किया जाएगा अपने कैंडिडेट का...या खुद ही लड़ लिया जाएगा बढ़िया साइत देखकर...

बूटन राय को अपने इस सपने के सिंहद्वार के रूप में देखते थे ये थैलीधारी।

बूटन राय भी बहुत कुछ देखते थे उन्हें प्रोफेसर बनाने के पहले। यह चयन-प्रक्रिया कुछ खास, पर अवाम को अज्ञात सिद्धांतों पर आधारित थी। जैसे यह कि भूमिहार होना चाहिए उम्मीदवार को, ताकि बाबू कुंवर सिंह, मंडल या बाबा अंबेदकर का जाप न करने लगे कालेज में आने के बाद; यथासंभव नजदीकी जवार का नहीं होना चाहिए कि बात-बात पर 'देख लेने-दिखा देने' की बात करने लगे; ऐसा तीसमार खां भी नहीं हो कि यूपीएससी और वीपीएससी की माया में उलझा रहे; यथासंभव खाते-पीते घर का ही हो, ताकि वेतन नहीं मिलने पर गंदी कमीज और तंग पतलून पहनकर कार्टून की तरह न डोलने लगे गुनी में और विषय का जानकार चाहे जैसा भी हो, बोलक्कड़ हो, ताकि बांध के रख सके लड़कों को।

उनके इन सिद्धांतों की जानकारी नहीं होने के कारण ही सत्यनारायण सिंह प्रोफेसर होते-होते रह गए थे लूटन राय कॉलेज में। इंटरव्यू के लिए पहुंचते ही हांकना शुरू कर दिया था कि बस लक्क साथ दे देता थोड़ा तो कलक्टरी नहीं तो डिप्टी कलक्टरी तो गई ही नहीं थी कहीं। अब सोचते हैं अपनी इस मूर्खता के बारे में तो अफसोस करते हैं।

बूटन राय ने अपनी मां के नाम पर 'मनहरनी देवी महिला विद्यालय' भी खोला। कटरे के तौर पर बने थे जो चार-पांच कमरे, गुनी की सबसे मनोहारिणी जगह हो गए। लड़कियों ने सोचा, घर में बैठकर भी ढील ही हेरना है तो घंटा-दो घंटा कॉलेज चलकर ही हेरा जाए। मां-बापों ने सोचा, जब साले चरवाह-बनिहार भी एजुकेटेड वाइफ ही चाहते हैं तो अच्छा ही है कि फांड़ में डिग्री हो जाए बेटियों की। और चल निकला महिला विद्यालय। जवार के होनहार बच्चे, जो अघा गए थे कलियों और टिकोरों पर वशीकरण आजमाते-आजमाते, खिले फूलों की छटा से सराबोर हो गए। गुनी आते तो पैंट के पिछले पॉकेट या कमीज की बांई जेब में एक छोटा-सी ऐनक और कंघी लेकर आते। उस कटरे के आगे से गुजरने के पहले बबरी संवार लेते।

गुनी में एक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज खोलने का निर्णय लिया बूटन राय ने तो यह सवाल उठ खड़ा हुआ था कि अब यह कहां चलेगा भला? बूटन राय ने कहा—कटरे में ही चलेगा। सुबह को महिला कॉलेज, शाम को टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज।

बूटन राय के चमचों ने कहा, "इसको कहा जाता है संसाधनों का समुचित उपयोग—रेशा-रेशा, पाई-पाई, धूर-धूर का उपयोग!"

बूटन राय ने संस्कृत विद्यालय भी खोल दिया गुनी में और सारे जवार के लोग अनुमान ही लगा रहे थे कि अब इसके बाद क्या खोलेगा रायजीउवा, उन्होंने एक होमियोपैथी और यूनानी चिकित्सा कॉलेज भी दे दिया गुनी को।

और यह नमकहराम गुनी था कि एक बार विधान सभा तक भी नहीं पहुंचा सका उन्हें!

"कोई बताए न कि रामप्रवेश चौधरी ने क्या दिया गुनी को?" बूटन राय के प्रशंसक पूछते।

इस पर अवधेश चौधरी का कहना था—"देने से नहीं, लेने से मिलती है सत्ता।"

अवधेश चौधरी के समर्थक भी कहते—"सही बात।"

"ई कवनो बात हुआ कि दुनिया-भर का एकटंगवा और डेढ़टंगवा संस्था खोल दीजिए और भोली-भाली जनता को ठगने का काम कीजिए? भइया तो ई सब जलीहा संस्था को बंद कराने के फेर में हैं।" अवधेश चौधरी भरोसा दिलाते हैं अपने समर्थकों को।

"एगो कॉलेज हमी लोग काहे नहीं खोलते हैं अपना?" नौलाख महतो ने प्रस्ताव रखा।

"आपको फुर्सत है कॉलेज खोलने का? हम तो सुने कि घरे-घर जाकर टूसन पढ़ा रहे हैं आप।" अवधेश चौधरी बोले।

"माने कि जन-संपर्क पर भी कर्फ्यू?"

"जन नहीं, जनाना-संपर्क पर कर्फ्यू!" अवधेश चौधरी ने कहा और पूरी दालान में 'आऽऽ...हा-हा हा-हो, हे भगवान...ऽऽ-हेंऽऽ-हा-हा-हा...' गूंजता रहा कुछ देर तक।

"माने कि अवधेश भाई भी एकदम ताककर तीर मारते हैं। न अगल में, न बगल में, एकदम बीचे ठंइया—गोदनवा गोदब रे बीचे ठंइया..." ' नौलाख महतो ने गाना भी शुरू कर दिया है, "गोदनवा गोदब रे बीचे ठंइयां..."

9

रामज्ञान पांड़ेबो के आंगन में धमाचौकड़ी करती खुशी पर टिकी हुई हैं अपने दोतल्ले मकान की छत पर बैठी चूड़ामनबो की आंखें। शारदा, सुशीला, मुन्नी, सभी आई हुई हैं। गणपतिबो भी उन्हीं में हिलमिल गई है। कैसा पलटा खाया है समय ने कि सबकी सब सुहागिन बनी दयाशंकर की बारात लौटने की प्रतीक्षा कर रही हैं और वह अभागिन बनी अकेली बैठी हुई है मनहूस-से लगते इस घर में। चूड़ामनबो ने आंखें हटा ली है उस आंगन से, जो कभी उसका भी आंगन था।

छत से अंधे कुएं की तरह दिखते अपने आंगन को भी नहीं देखेगी चूड़ामनबो, वरना विजयबो दिख जाएगी किसी अभिशप्त आत्मा की तरह मुक्ति की अंतहीन प्रतीक्षा में दिन ब दिन सूखते हुए। विजयबो को देखते ही उद्विग्न हो उठती है चूड़ामनबो...बाहे के ना बिआए कं, भर छीपा खाए के...एगो भंडरीयाबो है कि भरपेट खाने को भी मिलता होगा कि नहीं, हर साल छेर देती है एगो मूस जइसा लईका और ई रांड़ी के पेट में न जाने कैसा अकाल पड़ा है कि दूध-दही खाइयो के नहीं बियाती...लगता है, खनदानो का नाम बुतवाएगी बिहूनी...इच्छा हो आई है चूड़ामनबो की कि उतरकर दो लात जमा आए बिजयइयाबो की कोख में। जैसे गणपति पांड़े का रेडियो गाने लगता है दो लप्पड़ खाकर, इसकी कोख भी खदबदाए शायद।

चूड़ामन पांड़ेबो पति की मृत्यु के बाद बहुत दुःखी रहने लगी है। आंखें जिधर भी करती है, एक मंजर दिख जाता है, जो उसके अपने घर का मंजर हुआ करता था चूड़ामन पांड़े के जिंदा रहने पर। आठ-दस लोगों की बैठकी लगी हुई है धनजी पांड़े की छत पर। बजकों से भरी तश्तरियां रखी हुई हैं चौकियों पर। चाय की चुस्कियां ले रहे हैं लोग। चूड़ामनबो ने कल्पना की कि कप-प्लेट धनजी पांड़े जरूर किसी आई.बी. से उड़ा लाए होंगे। आंसू आ गए हैं उसकी आंखों में। इस जिंदगी में अब उसे नहीं मिलने वाला यह मौका कि किसी सरकारी क्वार्टर के खिड़की-दरवाजों में लगी खूबसूरत दिखती सिटकिनियां और कब्जे ला सके उखाड़कर; किसी आई.बी. में बिछी सुंदर कालीन कुंवरपुर पहुंचा सके लदवाकर।

धनजीबो की तो बोली सुनकर ही उसकी देह में आग लग जाती है। हिंदी बोलती है बिहूनी! जैसे देखा नहीं है किसी ने कि क्या थी, जब कुंवरपुर आई थी।

"भूतीन जइसा क्या बुदबुदा रही है, मां?" सरिता आ गई है गांव घूमकर।

चूड़ामनबो चौंक गई हैं उसकी आवाज सुनकर। दरवाजा खुलने की आवाज क्यों नहीं आई!

"बिजइयाबो दरौजवा खुला छोड़ दी थी का रे?"

"हर बात में भाभी को ही दोष देना जरूरी है?"

"तुम्हीं हुई है हमारा बोलना देखने वाली?...कितना बार बोले हैं कि पीछे से मत बोला करो इस तरह...एक नंबर की गांवघूमनी हुई है ईहो भछनी...गंउवेवाला सब कहता होगा कि पूरा परिवरवे बनडमरू हो गया..." क्रोध आता है तो बोलती ही चली जाती है चूड़ामनबो—"एगो बेटा छोड़िये गए हैं चतुरबउराह...उधियाते चलता है चेरो-खरवार जइसा। ऊपर से...पूछो न बिजइयाबो से कुछ गया है बताकर?...ईहो बिहूनी कम घुईस नहीं है न...बतइबो किया होगा तो नहीं बताएगी..."

"उसी को बड़ा भाग्यवान समझती हो कि गाली देती रहती हो हमेशा? तुम्हारा बेटा सनकाह-बऊराह है तो उसका क्या दोष है इसमें?" सरिता को गुस्सा आ गया है चूड़ामनबो के प्रलाप पर।

"विजइया पर थोड़ा ध्यान दो तुम। गड़बड़ा जाएगा तो तुम्हीं को कष्ट होगा! भोला-भाला है...ठीक से समझाने पर ठीक हो जाएगा..." चूड़ामन पांड़े समझाते।

उसके बचपन में ही पता चल गया था चूड़ामन पांड़े को कि मंदबुद्धि था वह। क्या-क्या नहीं किया था उसे रास्ते पर लाने के लिए? जाने-माने डॉक्टरों को दिखाया; साधू-संतों के पास ले गए; बाबाधाम, विंध्याचल की देवी, सबकी पूजा की; कुछ समय के लिए पटना के एक आवासीय पब्लिक स्कूल में भी दाखिला करा दिया उसका; पर उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह और बौड़म और बेवकूफ होता चला गया।

चूड़ामनबो को तब समझ में नहीं आती थी अपने पति की चिंता। रामज्ञान पांड़े के परिवार के विरुद्ध विजय का इस्तेमाल वह एक अंधी शक्ति के रूप में करती। गालियां देने को कहती तो गालियां देता, तोड़-फोड़ मचाने को कहती तो तोड़-फोड़ मचाता। चूड़ामन पांड़े अपना रेडियो या कोई सामान दे देते रामज्ञान पांड़े या गणपति पांड़े को तो तूफान की तरह जाता और ले आता झपटकर। शुरू-शुरू में उसे पीट दिया करते थे चूड़ामन पांड़े, पर धीरे-धीरे स्वीकार कर लिया था कि बाजी निकल गई थी उनके हाथ से। चूड़ामनबो ने उसके अंदर कूट-कूटकर भर दी थी यह भावना कि रामज्ञान पांड़े का परिवार बर्बाद करना चाहता था उसे और उसके परिवार को।

"साहेब कहते थे कि..." खाली आंखों से आंगन में झांकते हुए ही बड़बड़ाई चूड़ामनबो।

"हम भी बोलें कुछ?" गुस्सा आ गया है सरिता को।

"बोल न रे, बहेंगवा कहीं की!" दोनों हाथों से अपनी कनपट्टियां दबा रही है चूड़ामनबो।

"भूतिन जइसा बड़बड़ाना बंद करोगी, तभी तो कुछ कहेंगे?" सरिता ठुनकी।

"तनुआ, जानती हो क्या कह रही थी? कह रही थी कि शहर का लड़का लोग दस लाख देने पर भी देहात की लड़की से शादी नहीं करेगा।"

"तुम का बोली?"

"हम तो बोल दिए कि तुमसे ज्यादा शहर देखे हुए हैं हम।"

"धनजीउवाबो सुन रही थी चुपचाप?"

"ऊ तो अपने आंख मटका-मटकाकर हिंदी झाड़ रही है। शिवजी चाचा गुस्सा भी रहे थे कि जब न तब चाय का ऑर्डर देती रहती है।"

"उल्टा पल्ला का साड़ी पहनना हम सिखाए थे ऊ गोबर के चोत को और तुम्हीं को छाव दिखा रही थी?"

"कौन छाव दिखा रहा है, ए बाबाबो?" चूड़ामनबो ने देखा, सिपाही की माई लटकी हुई थी बांस की सीढ़ी पर।

"नीचवे से नहीं बोल सकती थी? एके बार अटारी पर चली आई।" सिपाही की माई को डांटने के बाद उसे एक बार फिर गुस्सा आ गया है विजयबो पर। रोकना नहीं चाहिए था ई बनेचरी को ऊपर आने से? डाका डलवाएगी हरामजादी।

"ई मत सोचिए कि भेद लेने आए हैं।" सिपाही की माई बोली, "आप ही के काम से आए हैं।"

"बड़ा हुई हो हमारा काम करने वाली!" आक्रोश और अपनत्व का घोल बना दिया है चूड़ामनबो ने।

इन दिनों उसने यही तरीका अपना रखा है लोगों से पेश आने का। दुश्मन किसी को भी नहीं बनाना है। रेजों को तो एकदम नहीं। मौका मिलते ही उन्हें भड़का सकता था दयासंकरा।

"सिपहिया कहने को भेजा है कि ट्रैक्टर जा रहा है गोला पर; धान भेजवाना हो तो बता दीजिएगा।" सूचना देकर रूठ गए होने का भाव ओढ़ लिया है सिपाही की माई ने।

"मन अउंजा जाता है, ऐ धरीछनबो! बहुत बोझा आ गया है कपार पर।" धरीछनबो की सखी बन गई है चूड़ामनबो। बीड़ी सुलगाकर एक उसकी ओर बढ़ा दी है।

"रामगियान बाबा की बेटी सब बढ़िया-बढ़िया घर में चली गई है। मुन्नी तो सुने कि जीप में बैठकर आई।" बीड़ी का कश लेकर सिपाही की माई बोली।

"हम तो, हेलिकॉप्टर हो किसी के पास, तब भी बूढ़ और दोआह से बियाह नहीं करेंगे बेटी का।" चूड़ामनबो ने जलकर कहा।

"परिछावन खातिर आपको नहीं आया बोलहटा? सुने कि बी.ए.पास औरत ला रहे हैं दयाशंकर बाबा।"

सिपाही की माई को पता है—चूड़ामनबो को चुभेंगी ये बातें, फिर भी कहेगी।

"असल बाप की बेटी होंगे न, धरीछनबो, तो दयासंकरा का लास उठवाने जाएंगे उसके आंगन में।" बीड़ी के लंबे-लंबे कश लेने लगी है चूड़ामनबो।

"आजकल बी.ए.,एम.ए. का झूठीया डिगरी बेचाता है बाजार में।" सरिता सामने आई अपनी मां की मदद को, "नहीं तो सनका हुआ नहीं है कोई कि एगो भीखार, बेरोजगार को दे देगा बी.ए. पास लड़की।"

सरिता नहीं जानती, सनक गया होने के अलावा भी कई कारण होते हैं ऐसा दामाद उतारने के।

दयाशंकर के ससुर श्री रामनारायण चौबे सचिवालय के किरानियों की उस श्रेणी के जीव थे, जिनका एक ऐसे टेबुल का इंतजार कभी खत्म ही नहीं हुआ, जो उन्हें किरानीगिरी में ही लाट साहबी के जलवे दिखा जाता। दयाशंकर के घर की हालत देखकर एकदम से ना-ना कर उठा था उनका मन, पर दिमाग ने उसे डपट दिया था उसी समय—पइसा न कौड़ी, बीच बाजार में दौड़ा-दौड़ी वाला हाल मत करो। तो समझाने लगे लोगों को कि हिंदी साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. किया है लड़के ने, सो बैठा नहीं रहेगा।

साथी किरानियों ने भी हिम्मत बढ़ा दी—"एकदम निधड़क होकर कीजिए महाराज! कहीं न कहीं लगवाइये दिया जाएगा लग-भिड़कर। इतना दिन सचिवालय में अइसहीं हड्डी गलाए हैं कुर्सी में।"

और रामनारायण चौबे सनके हुए नहीं थे, फिर भी तैयार हो गए थे बेटी कुंवरपुर में बिआहने को।

इधर बी.ए.पास कनिया के साथ लौटे दयाशंकर ने एक नई समस्या खड़ी कर दी थी धनजी पांड़े जैसे जानकार लोगों के लिए। कह रहे थे कि वीमेन्स कॉलेज, पटना, से पास थी उनकी कनिया। वास्तव में 'जे.डी.वीमन्स कॉलेज' से पास थी वह, पर प्रयत्न-लाघव के कौशल के सहारे जे.डी. को विलोपित कर दिया था उन्होंने और धनजी पांड़े जैसों के महमंड में खलबली मचा दी थी।

दयाशंकर पांड़े बहुत खुश हैं शादी के बाद। इतना खुश कि सत्यनारायण सिंह ने पूछा, 'खुश हैं न, बाबा?' तो झूम-से गए बताते हुए—"इक चांद आसमां पर है, इक मेरे पास है।"

सत्यनारायण सिंह ने सोचा, यही हाल होता है देरी से शादी होने पर।

कोई न कोई पूछ ही देता, 'कैसी हैं पंडिताइन?' और दयाशंकर सोच में पड़ जाते, 'कैसे समझाएं?' दूध जैसी भी नहीं, अंवटे हुए दूध जैसी भी नहीं। उपमान नहीं मिलते तो कह देते—'अजबे खल की...हँसती थी तो उसके होंठ नहीं हँसते थे केवल, पूरी देह हँसती थी। झुकती थी तो कमर के पास से नहीं, बल्कि घुटनों को मोड़ते हुए झुकती थी!'

रंगू सिंह डरे कि कहीं यह भी मत बताने लगे दया बबवा कि टट्टी करते समय गाल दाएं हाथ पर टिकाती थी कि बाएं हाथ पर।

रामज्ञान पांड़ेबो डरी हुई थीं यह सोच-सोचकर कि इस पढ़ी-लिखी शहरी लड़की का निर्वाह कैसे होगा उनके टूटे-फूटे घर में!

"मरद ठीक हो तो निबह जाता है, अम्माजी।" अपने लकड़सुंघवा जैसे पति पर आंखें टिकाए हुए कहा गणपतिबो ने।

"कम नहीं हुआ गुस्सा अभी तक?" हँसने लगी है शारदा।
"अब कुछ नहीं बोलते, बूची!" लजा गई हैं गणपतिबो।

जबसे आई है, गणपतिबो में आए बदलाव को देखने में ही लगी हुई है शारदा—पुराने दिनों के उबलते आक्रोश का एक ठंडी, अछोर हताशा में बदल जाना। बिना खाए-पिए दोपहर होने तक तुलसी माई के आगे बैठे रहना, खाना खाकर उदय पांड़े के दर्शन को चली जाना, शाम को लौटकर माड़-भात बना लेना, बीड़ी फूंकते हुए चुपचाप दूसरों की बतकही सुनते रहना। न चेहरे पर रोशनी बची है, न देह में मांस। जीने की इच्छा भी, पता नहीं, बची है कि नहीं!

"नई गोतिनी आई है, एक गीत सुनाइए, भउजी।" जिद पकड़ ली है शारदा ने।
"याद ही नहीं आ रहा।" गणपतिबो हँसती है एक उदास, थकी हुई हँसी।
"गाइएगा कि गुदगुदाएं?"
"अस बरवा खोजलऽ बाबा देहाती, देहाती बरवा..."
"बाक् भउजी! ई भी कोई गाना है!" चेतना ने मुंह पर हाथ रख दिया है उनके और एक चटकीला गीत कढ़ा दिया है टोले की लड़कियों के साथ—"मेरे हाथों में नौ-नौ चूड़ियां हैं, जरा सोचो सजन..."

गणपतिबो चुपचाप सुनने लगी है लड़कियों का गाना और अपने अंदर का विलाप—'बुसट न लावे जाने, घड़ियो न पेन्हे जाने, फिर-फिरके बदलेला चथैनवा, देहाती बरवा...'

मन भारी हो गया है शारदा का। पूरे आसमान की आंखों के सामने डूब रहा है एक ऐसा प्यारा तारा और आसमान बेखबर है।

"आप अपना खयाल रखा कीजिए, भउजी!" भरभराकर रो पड़ी है शारदा।

"जानती हो, बूची...चूड़ामन आए थे सहबाला बनकर...खूब गोरा, मोट-झोंट... लइकिया सब समझीं, ईहे दुल्हा है...पता चला कि ई लुकुड़ी पांड़े हैं दुल्हा..." गणपतिबो गणपति पांड़े के साथ हुई हर खूनी झड़प के बाद, जिसमें खून अनिवार्यतः उन्हीं का बहता, शारदा को सुनाती अपने दुर्भाग्य की कहानी।

"पूरे जवार में वैसा कोई पंडित नहीं था...बंसीधर दूबे जइसा...उस जमाने में बनारस से पढ़ा था संस्कृत...बड़का ज्ञानी था...ई जानने का कोसिस नहीं किया कि कहां भठ रहा है बेटी सबको...देखा भी नहीं था अपने दामाद को...बाप था न निसंतनिया! देखना नहीं चाहिए था? और मरने लगा तो भोंकर-भोंकरकर रो रहा था...बेटी सब को भठ दिए...हजार जनम तक फिर से मानुस का जोनी नहीं मिलेगा पपिया को..."

बंसीधर दूबे का अंत निश्चित हो गया तो आदमी पर आदमी आ रहा था गणपितबो को ले जाने के लिए। मरने के पहले उनसे कुछ कहना चाहते थे बंसीधर दूबे। माफी मांगना चाहते थे बेटी से। पर मना कर दिया था गणपितबो ने। घर में सबको बुरा लगा था, पर कहवा दिया था कि जीते-जी मुंह नहीं देखेगी उस पापी का।

शारदा चुपचाप मुंह देखती रहती अपनी बड़की भउजी का—सांवला रंग, कोमल त्वचा, लंबी और नुकीली नाक, तराशा हुआ बेदाग चेहरा। केवल आंखें छोटी-छोटी थीं।

"खानदानी है, ए बूची।" शारदा कभी जिक्र करती आंखों के छोटे-छोटे होने का तो हँसने लगती—"तुम्हारे यहां तो सबका बड़ा-बड़ा ही है, फिर भी ई सींकिया पहलवान का देख लो...लगता है, आंख नहीं, ईनार हो...का जाने इसकी माई..."

"छिः!" शारदा लजा जाती।

"तो का कहें?" गणपतिबो फैसला नहीं कर पाती, किसके सिर पर पटक दे अपनी छाती पर रखी दुःख की चट्टान।

किसी से भी भिड़ जातीं। शारदा डर जाती थी उसका वह रूप देखकर। गणपति पांड़े दनादन बरसाते होते लात-मुक्के और वह गालियां देते हुए मुंह नोच लेना चाहती उनका। कभी-कभी तो नोच भी लेती। रामज्ञान पांड़ेबो की तो वो फजीहत करती कि किल्ली लगाकर, अपनी बेटियों के साथ अपने कमरे में दुबक जातीं रामज्ञान पांड़ेबो। जब तक थम नहीं जाता गणपतिबो का बोलना, बाहर नहीं आतीं।

"माई को काहे गरियाती हैं आप?" उपद्रव थम जाता तो शारदा पूछती, "ऊ तो बेचारी अपने परेशान रहती है। उसके हाथ में क्या है?"

गणपतिबो जानती थी, उसकी सास के हाथ में कुछ भी नहीं था, पर वह करे तो क्या करे! नीलकंठ बन जाए?

शारदा से बहुत लगाव था गणपतिबो को। जितना भी हुनर था उसके पास, सब सिखा दिया था उसे—सीना-काढ़ना, मिट्टी की सुंदर-सुदर आकृतियां बनाना।

"जाने दो ए बूची, बाबूजी बंसीधर दूबे जइसा नहीं हैं। बड़ा प्यार करते हैं बेटी सबको। बढ़िया वर खोजेंगे तुम्हारे लिए।" कहतीं। आंखों में लोर भरी रहती।

रामेश्वर तिवारी बढ़िया वर तो क्या थे, पर ठीक-ठाक थे। कद-काठी बहुत मामूली थी, पर कह रहे थे लोग कि तेज थे पढ़ने में। दसवीं में पढ़ रहे थे शादी के समय। शारदा से तीन साल छोटे थे उम्र में। शर्मीले थे। गणपतिबो को अच्छे लगे—"मरद लेहाज़ी ही ठीक होता है।" बोलीं, "ई सींकिया पहलवान तो आए थे तो देह में चिरई-भर मांस नहीं था, बाकी कहें कि सांढ़ को नाथ सकते हैं अकेले...पूरा टोला हँस रहा था..."

भगवान ने अन्याय भी बहुत किया गणपतिबो के साथ। दोनों बेटियां गणपति पांड़े पर चली गईं थीं। गणपतिबो घिनाती थी उनका गू-मूत साफ करने में। बेटे के इंतजार में दो और बेटियां हुईं और जन्म लेने के समय ही इस दुनिया से चली गईं। चौथी बिल्कुल उसके ऊपर गई थी। और उसी की मृत्यु के बाद वीराने का उतरना शुरू हो गया था गणपतिबो के अंदर।

"कितना बढ़िया तो है कि पूजा-पाठ करती हैं, मोह-माया से दूर रहती हैं...तो खुश भी रहना चाहिए न, भउजी! बीड़ी पीना जरूरी है?...कितनी तो मेहरारू सब हैं कि बियाहे नहीं करतीं जानबूझकर...दुखी रहती हैं?" मनाने-बुझाने में लग गई है शारदा।

"बीड़ीओ छोड़वाएंगी, बूची।" गणपतिबो को हँसी आ गई है छोटी लड़की की

तरह डांटे-डपटे जाने पर। उसे अच्छा लग रहा है एक भोली-भाली, घर के लड़ाई-झगड़े से डरी-सहमी-सी रहने वाली शारदा को एक सख्त, अनुशासनप्रिय मां के रूप में देखना। उसके तीनों बच्चे एक-एक इशारा समझते हैं उसका। तीनों तेज हैं पढ़ने में।

शारदा राजी नहीं हो पा रही कुंवरपुर और अपने घराने के परिवेश में आए बदलाव से; उदास, उखड़े-उखड़े-से, अलंघ्य हो गई दूरियों के दो छोरों पर बैठे अपनों की मनःस्थिति से।

"चूड़ामनबो एकदम ओह अंगनावाली हो गई, भउजी?" पूछा।

"जाने दो ए, बूची! हमको तो अच्छा लगता है नहीं आती तो! भतार को खा गई और जाल फैलाना नहीं छूटा।"

"पहले तो उसी की चेलीन थीं आप!"

"इसीलिए न हाथ जोड़ रहे हैं तुलसी माई को। सब पाप माफ कर देना, ए तुलसी माई!"

'आपके सारे पाप माफ हो जाएंगे।' शारदा का मन कहता है।

"भइया को भी साधू बना दीजिए।" उसकी गठरी बनी देह को बाहों के घेरे में ले लिया है शारदा ने।

"गणपति को बड़ा कम बुझाता है, ए बूचीया।" रामज्ञान पांड़ेबो आ गई हैं माथे पर तेल थोपते हुए, "नौलखवा को गारी देते चल रहे हैं। हम कह रहे हैं कि चूड़ामनबो को वही अपना लगता है तो का जरूरत है कुछ कहने-सुनने का?"

"मारेगा दू तबड़ाक बस चुप हो जाएंगे।" गणपतिबो ने वितृष्णापूर्वक कहा।

"चूड़ामनबो कनिया देखने भी नहीं आएगी, माई?" शारदा पूछती है।

"दया से ही तो उसको असली डाह है।" रामज्ञान पांड़ेबो बोलीं।

"हम लोगों को उसका कुछ नहीं बिगाड़ना है, दीदी। विजइये टाइट कर देगा उसका हलुआ। नौलाख के सुधीरवा के साथ घूम रहा है फटफटिया पर। ऐसा गिरेगा कि..." दयाशंकर हँस रहे हैं।

इतना दुराव! इतना वैमनस्य! दूसरी ओर देखने लगी है शारदा। चलने की सोचने लगी है कुंवरपुर से। पता नहीं, अब फिर कब आना हो सकेगा। बच्चों की पढ़ाई की ऐसी चिंता लगी रहती है रामेश्वर तिवारी को कि इसी बार बड़ी मुश्किल से राजी हुए इतने दिनों के लिए आने देने को। पता नहीं, अगली बार आए तो किस हाल में मिलें गणपतिबो भउजी! मिलें भी कि नहीं मिलें!

बाहरवाले चौखट पर बैठकर आराम से बीड़ी फूंक रही थी गणपतिबो। शारदा को देखा एकटक अपनी ही ओर देखते हुए तो बीड़ी फेंक दी और मुस्कराने लगी।

जब एक के बाद एक सभी उद्योग बंद या विफल हो रहे थे प्रांत में, तब अपहरण उद्योग जोर-शोर से फल-फूल रहा था कुंवरपुर के इलाके में। सॉफ्टवेयर उद्योग की तरह ही यह भी केवल बुद्धि और साहस पर आधारित उद्योग था। इसका प्रबंध निदेशक या मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी चूंकि सत्तारूढ़ दल का ही कोई खुर्राट नेता या उसका

संरक्षित व्यक्ति होता, इसलिए इसके परिचालन में राजनीति या नौकरशाही की तरफ से कोई अड़चन नहीं आती। पुलिस का बस इतना कहना होता कि 'भई, आप रहें, जितना भी फैलकर रहना चाहें, पर हमारे लिए भी थोड़ी जगह रखें।' और पुलिस के लिए इतनी-सी जगह रखी जाती कि कभी-कभी पुलिसवाले किसी-किसी अपहृत व्यक्ति को छुड़ा भी लेते। कभी-कभी किसी डी.एस.पी. या दरोगा को नकद इनाम की घोषणा भी हो जाती, जो वह दरियादिली दिखाते हुए अपने साथियों में बांट देता और उसके साथी यह सोचकर ले लेते कि चलो, जब हो ही रहा है तमाशा तो पूरा ही हो जाए। कभी-कभी कोई एस.पी. अपहर्ताओं को पीछे खड़ाकर, कुर्सी पर बैठकर अपनी फोटो खिंचवाकर अखबार में भी छपवा देता, जिसे देखकर लोग सोचने को बाध्य हो जाते कि मरियल रिक्शेवालों जैसे दिखते लोग अपहरणकर्ता हैं भी कि नहीं। परंतु पुलिस को मिली इतनी-सी जगह के चलते सांविधानिक व्यवस्था के बरकरार होने का भ्रम बना रहता।

जितनी विश्वसनीयता के साथ कोई फिल्मी तारिका यह कहती है कि उसकी फिल्मों में अंडरवर्ल्ड का पैसा नहीं लगता या कि वह कभी भी किसी अंडर-संडरवर्ल्ड वाले से बात नहीं करती, कमोबेश उसी विश्वसनीयता के साथ अपहरण उद्योग के कच्चे माल के द्वारा यह घोषणा की जाती कि उनके द्वारा एक अधेला भी नहीं दिया गया था फिरौती के रूप में। और एक सबसे बड़ी खूबी इस उद्योग की यह थी कि जब तक अपने दरवाजे पर ही दस्तक नहीं सुनाई दे इसके एजेंटों की, हरेक आदमी यही मानता रहता कि यह उसकी समस्या नहीं थी।

वासुदेव सिंह भी ऐसा ही सोचते थे, पर सुशील सिंह के अपहरण की खबर मिलते ही दुनिया बदल गई थी उनकी।

कुंवरपुर यह कयास लगाने में जुटा हुआ था कि सुशील सिंह को उठाया तो किसने उठाया?

"समझ जाओ, भाई, कि गांव साथ नहीं दे रहा हमारा।" लल्लन सिंह अपना दुखड़ा लेकर पहुंच गए वासुदेव सिंह के पास, "नन्हकूआबो के घर में अड़ान रह रहा है भगेलुआ गिरोह का और कोई तैयार नहीं है कुछ करने को। लोग सोचते हैं, अपने स्वार्थ के कारण कह रहे हैं हम।"

"भगेलुआ का हाथ है इसमें?"

"पक्का पता नहीं है, लेकिन...सब तो नौलखवे का खेल है। भगेलुआ भी उसी का आदमी है। लेकिन गांव..."

"मजबूरी होगी कुछ गांव की।" परिस्थिति को अपने तरीके से समझते हुए कहा वासुदेव सिंह ने।

"मजबूरी तो, भाई, है ही गांव की, पर नन्हकू को भी इसी तरह बढ़ने दिया गया था और जो नतीजा निकला, देखे ही तुम भी। नन्हकूआबो को भी बढ़ने दिया गया तो..."

लल्लन सिंह के लिए बहुत बड़ी समस्या हो गई है। बूटन राय के बैठके में जाते हैं तो वहां भी यही चर्चा चल पड़ती है। "कुछ कीजिए, बाबू साहेब!" बूटन राय कहते हैं, "घर की बहू है आखिर!"

श्रीभगवान सिंह को अवसर मिल गया है दोनों परिवारों के बीच की खानदानी दुश्मनी में एक नया विजेता रंग भरने का।

"जानते हैं, असली चीज क्या है?" पूछते हैं श्रोताओं से और बताते हैं उन्हें कि "असली चीज है खून और खानदान। खाली टोपरा हो जाने से संस्कार नहीं आ जाता। हमारी मुसमात को देख लीजिए। है कोई माई का लाल, जो उंगली उठा दे?"

"खून और खानदान का बखान ई जोगीया का जमलका करेगा और हम सुन लेंगे चुपचाप।" तड़पकर कहते हैं रामबिलास सिंह, "जोगीया का कहानी सुने हैं कि नहीं आप लोग?"

लोगों ने सुनी होती कहानी, फिर भी कहते, "कौन वाली?"

और रामबिलास सिंह सुनाने लगते—

लल्लन सिंह की बारात गई हुई थी समहुता। बावन चोपवाला शामियाना, दस घोड़े, बीस हाथी। जोगी सिंह भी गए हुए थे। रामविलास सिंह के समधी शिवराज सिंह थे बड़का रईस। कई कित्ता मकान था गांव में। छतों की रेलिंगों से लटकी गांव की औरतें झांकी देख रही थीं शानदार बारात की और जोगी सिंह लड़कियों को देखने में खो गए थे। बारात के दोनों पक्षों के बड़े-बूढ़े मिलजुल रहे थे आपस में और जोगी सिंह छतों पर खिलखिलाती जवानियों में खोए हुए, बेसुध-से सबसे अलग-थलग पड़ गए थे। पता ही नहीं चला, कब एक हाथी के पीछे खड़ा हो गए थे चलते-चलते। मुंह बाए हुए ताक रहे थे औरतों को। उधर जब नाश्ते की प्लेटें बांटी जा रही थीं बारातियों को, हाथी ने पाखाना कर दिया था पूंछ उठाकर और जोगी सिंह का मुंह भर गया था लीद से।

"मत पूछो भाई लोग कि क्या हुआ!" रामबिलास सिंह को प्रतिशोध का सुख मिलने लगता है इस बिंदु पर पहुंचकर, "ई साला का तो हालत खराब था हाथी का गूह खाकर। ओय-ओय करता उल्टी कर रहा था पेट पकड़कर और पूरा समहुता हँसते-हँसते बेहाल था।"

किसी की भी हिम्मत नहीं पड़ती जोगी सिंह से पूछने की कि कहानी सच्ची थी या मनगढ़ंत?

दोनों परिवारों के बीच दुश्मनी जमीन के उस टुकड़े को लेकर शुरू हुई थी, जिसे प्रभुदयाल सिंह का बगीचा कहा जाता है। दरअसल वह गैरमजरुआ जमीन थी गांव की, जिसके ऊपर रामबिलास सिंह के पिता प्रभुदयाल सिंह और जोगी सिंह के पिता शिवधारी सिंह—दोनों की ही आंखें लगी हुई थीं। लेकिन वह समय प्रभुदयाल सिंह का था। दूर-दूर तक ख्याति थी उनकी एक वैद्य के रूप में। सिविल एस.डी.ओ. और बड़े-बड़े अधिकारियों के घरों तक जाते थे उनके रस और भस्म। शिवधारी सिंह नहीं टिक पाए थे उनके सामने और लगभग चार एकड़वाली उस जमीन पर आम का एक विशाल

बगीचा खड़ा कर दिया था प्रभुदयाल सिंह ने।

जोगी सिंह और उनके घरवाले जब-जब देखते उस बगीचे को, उनके भीतर दिन में भी छाया रहने वाला नीम अंधेरा उनके अंदर भी फैलने लगता।

नन्हकूबो के कारनामों से रोशन हो रहा था वह अंधेरा।

लल्लन सिंह इसलिए भी परेशान हैं, क्योंकि श्रीभगवान सिंह गैरमजरुआ जमीन पर खड़े उस बगीचे को लेकर भी विवाद खड़ा करवाना चाहते थे। जब तक नन्हकू सिंह थे, बगीचे के ऊपर उनके परिवार की मिल्कियत को चुनौती देने की हिम्मत नहीं की थी किसी ने। पर उनकी मृत्यु के बाद पैदा हुई परिस्थिति ऐसी थी कि सबसे अधिक खतरा नन्हकूबो से ही हो गया था—हिस्से की बात करते-करते वह बगीचे में अपने हिस्से की बात करने लगी थी। लल्लन सिंह को डर था, श्रीभगवान सिंह नौलाख महतो के जरिये खेलेंगे अपना दावं। पहले नन्हकूबो को भड़काएंगे बगीचे में हिस्सेदारी की मांग के लिए और बात बढ़ जाएगी तो गांव के रेजों को खड़ा कर देंगे।

"ई तो भाई, ठीक बात नहीं न है। आंड़ जरऽता कोकराड़ जरऽता, ससुररीया के लोगवा तमासा देखऽता। जइसे बनरा रो रहा था, हम भी रो रहे हैं।"

लल्लन सिंह वासुदेव सिंह को सुना रहे हैं अपना दुखड़ा।

"तो क्या कह रहे हैं आप? नन्हकूबो से बात करें कि नौलाख महतो से?" बहुत देर से चुपचाप बैठे वासुदेव सिंह ने पूछा।

सारे गांव से यही पूछते चल रहे थे वासुदेव सिंह। किससे बात करें? दयाशंकर से भी पूछ चुके थे।

"भगेलुआ का ही काम है, छांगुर?" दयाशंकर अपने विश्वस्त लोगों से पूछ रहे हैं, आखिर कितना ताकतवर है नौलाख महतो-नन्हकूबो-भगेलू गठबंधन? असली निशाना कौन है? कहीं नन्हकू सिंह की राजनीति ही तो नहीं है निशाने पर!

"अब का बताएं, बाबा! लेकिन अइसा नहीं हो सकता कि नौलाखजीउवा को पता नहीं हो। पूरे जवार का पनहा वही थाम रहा है।" छांगुर ने बताया।

"तुम भी नहीं जाते आजकल नन्हकूबो के यहां?"

"मन नहीं करता। बोल रहा है सब कि भगेलूआ नहाता है तो पीठ में साबुन लगाती है उसके। बर्दास्त नहीं होगा हमसे।"

"सिपहिया तो फिरंटे हो गया एकदम से।"

"दारू बहुत जबरदस्त चीज है, बाबा! जिसके हाथ में दारू है, ताकत है। सिपहिया, नंदललवा, हरखुआ...किसका-किसका नाम लें! सबका सब बउराया हुआ है नौलाखजीउवा का दारू पीकर।"

"ई हरामखोर सबको कम पिलाए हैं नन्हकू भाई?" इंकलाब की देह कांप रही है उत्तेजना और आवेश के कारण, "और उसी के परिवार को बर्बाद करना चाहता है!"

"तो तुम क्या कर रहे हो वहां डेरा जमाकर?" दयाशंकर ने पूछा।

"ई साले पत्थर के सनम को तो बहारन समझती है एकदम से।" छांगुर हँसने

लगा है इंकलाब का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर, "कहते थे कि जरा हँसो-बोलो, बोलो-बतिआओ, तो निमनका बनने में ही रह गए साले।"

"हम लोग कुछ भी नहीं कर सकते, बाबा?" अभी भी कांप रही है इंकलाब की आवाज।

"कुछ नहीं का मतलब?" दयाशंकर ने पूछा।

"साला भगेलुआ हमारे सामने पटक दिया उसको...और सिपहिया...एकरी मां की..." रोना शुरू कर दिया है इंकलाब ने, "हमसे बरदास्त नहीं होगा अब...हम..."

चुप्पी छा गई है कमरे में। दयाशंकर ने झांककर देख लिया है दरवाजे से कि आ तो नहीं रहा कोई। मन बार-बार चेता रहा है, तुमको क्या जरूरत है इस झमेले में पड़ने की; और यह भी कह रहा है कि नौलाख महतो को नहीं रोका गया तो हमेशा के लिए दफन हो जाएगी नन्हकू सिंह की राजनीति।

"सवाल नन्हकूबो का नहीं, नन्हकू सिंह की राजनीति का है।" कहा।

"बस, बाबा, बस। एकदम सही बात बोले हैं आप।" जगनाथ उत्तेजित हो गया है, "यही बात हम भी बोलते हैं इन लोगों से। रामपरबेस चौधरी का प्लान है कि खत्म कर दिया जाए हम लोगों को। नौलाख महतो वही कर रहे हैं।"

"आप लोग जो कहिए, हम तैयार हैं करने को।" इंकलाब बोला और डर गए दयाशंकर, "दिमाग काबू में रखना है, इंकलाब। कुछ उल्टा-सीधा नहीं होना चाहिए!"

"यही हाल है बाबा का!" फिर हँसी आ गई है, छांगुर को "लोहा गरम होगा तो हथौड़ा रोक देंगे।"

"एक आइडिया हमारे दिमाग में है, बाबा।" जगनाथ बोला, "भगेलुआ अकेले हो जिस दिन या दो-तीन लोगों से ज्यादा उसके साथ नहीं हों, इंकलाब भाई हल्ला कर दें कि इज्जत लूट रहा है नन्हकूबो का और पहुंच जाएं हम लोग।"

"नन्हकूबो एक नंबर की फेंटवारिन है, जगनाथ भाई! इंकलाब को ठहरने नहीं देगी उसके बाद।" छांगुर ने इंकलाब की आंखों में झांकते हुए कहा।

"रहने देगी, छांगुर भाई!" असाधारण रूप से मुलायम हो गई है इंकलाब की आवाज, "उसको डरा दिया है इन लोगों ने बोल-बोलकर कि लल्लन सिंह मरवा देगा उसको; उसका सब खेत-संपत्ति छीन लेगा। डर गई है बेचारी।"

हक्का-बक्का, इंकलाब का मुंह देखने लगे हैं दयाशंकर, जगन्नाथ और छांगुर। कैसी माया में पड़ गया है यह अज्ञात अतीत वाला आदमी!

"नहीं भी रखेगी तो जगह नहीं है रहने का?" जगनाथ को लगा, थोड़ी सहानुभूति की जरूरत है इंकलाब को, "साले भगेलू को मिल जाता है रहने का जगह और इंकलाब को नहीं मिलेगा?"

"पत्थर के सनम तो एकदम दीवाना हो गए हैं जी!" इंकलाब के गले में बाहें डाल दी हैं छांगुर ने, "जान लड़ा देंगे जरूरत पड़ा तो।"

"ठीक से सोचा जाएगा इसके बारे में।" दयाशंकर को जब भी दिक्कत होती है

किसी मसले के बारे में कोई निश्चित फैसला लेने में, भविष्य के लिए टाल देते हैं उसे।

"हो गई मीटिंग?" दयाशंकरबो बहुत देर से धुआं रही थी, "पूरी दुनिया में यही लोग मिलते हैं मीटिंग करने को!"

रामज्ञान पांड़ेबो को खुद ही कम खराब नहीं लगता दयाशंकर का रेजों के साथ उठना-बैठना, पर उससे भी ज्यादा खराब लगता है दयाशंकरबो का इस तरह टोकाटोकी करना।

साल भी नहीं लगा आए हुए और मरद को बस में करने के जोगाड़ में लग गई!

"दूसरों के सामने मरद का पानी उतारना ठीक बात नहीं है।" बोलीं, "मरद पनउतरू हो जाता है इससे।"

दयाशंकरबो जल-भुन जाती है रामज्ञान पांड़ेबो के उपदेश देने की इस आदत पर। पता नहीं, बिना विद्या से भेंट-मुलाकात हुए ही ज्ञान कहां से हो गया इतना कि खत्म ही नहीं होता बांटते-बांटते!

"पिताजी पीछे-पीछे लगे रहते हैं कि यहां का फॉर्म भर दीजिए, वहां का भर दीजिए और इनको मीटिंग से ही फुर्सत नहीं है।" गुस्से को जज्ब करते हुए हँसकर बोली।

"तुम्हारे पिताजी के पीछे-पीछे लगने से ही एम.ए. नहीं न हो गए।" रामज्ञान पांड़ेबो को गुस्सा आ गया है अब। हद्‌द हो गई यह तो! अब इसी की और इसके बाप की बुद्धि से चलेंगे तो चलेंगे दयाशंकर!

"भउजी को तुम ऐसे क्यों बोली?" चेतना बोली।

"डर-डरकर रहने से बाघिन गाय नहीं बन जाएगी।" रामज्ञान पांड़ेबो बुदबुदाईं, "जो होना होगा, होगा।"

"अपने मर्द के बारे में कुछ सोचती हैं तो गलत करती हैं?"

"सीखो यही सब बढ़िया-बढ़िया बुद्धि!" रामज्ञान पांड़ेबो चिढ़ गई हैं, "हमारी ही तरह कोई अभागिन होगी जो सोच रही होगी, पतोह आएगी तो..."

"अच्छा ठीक है, चुप रहो अब!"

"चुप काहे रहें? ई बुढ़ऊ भी इसी तरह चिरौरी करते रहते थे चूड़ामनबो का। मुंह में जाब लगाए रहते थे हमारे—चुप! चुप! चुप! अपने से गोरस ढार-ढारके भेजवाते थे लोटा में कि कम ढार देंगे हम..." रामज्ञान पांड़ेबो कहीं खो गई हैं बोलते-बोलते।

यह और बात है कि इस अहसास को उतरते बहुत देर नहीं लगेगी कि चेतना ठीक ही कह रही थी।

"डॉक्टर बोला था कि नहीं कि पेट में बच्चा हो तो खुश रहना चाहिए औरतों को। टेंशन नहीं करना चाहिए?" दयाशंकर पत्नी को मनाने में लगे हैं।

"बोला होगा, लेकिन हम नहीं हैं खुश।" दयाशंकरबो बोली।

"क्यों?"

"कोई यह भी पूछने वाला है कि कुछ खाने का मन है कि नहीं? इतना अधिकार हमको भी है कि कुछ करने को कह दें किसी को? एक गिलास पानी मांग दिए चेतना

से तो फूलकर मुंह कुप्पा हो गया अम्माजी का।"

दयाशंकर ने चुप्पी साध ली है।

दरअसल जब भी अपनी पत्नी के साथ अकेले होते हैं, अपराध-बोध-से ग्रसित हो जाते हैं दयाशंकर। उन्हें महसूस होता है, अन्याय हो रहा था एक अच्छे-खासे, खाते-पीते घर की पढ़ी-लिखी लड़की के साथ। जिस सामाजिक-संवेदनात्मक स्तर पर जीने की आदी थी वह, उससे कई दर्जे निचले स्तर पर जीने को विवश किया जा रहा था उसे।

इस महौल से उसके रह-रहकर ऊब जाने के लिए दोष नहीं दे पाते उसे। जैसे ही कहती, जाने को, मायके पहुंचा आते। यह जानते हुए भी कि माई को अच्छा नहीं लगता था बिना बुलावा आए उसका मैके जाना।

"सोच रहे हैं, बच्चा होने तक इसको वहीं पहुंचा दें, माई। अस्पताल-ओस्पताल भी है और सुविधा भी है...और डॉक्टर बोला है कि सीजेरियन भी हो सकता है।" रामज्ञान पांड़ेबो से कहा।

"अइसहिं पइसा कमाने के लिए कुछ का कुछ बोलता रहता है।" रामज्ञान पांड़ेबो बोलीं।

"सो तो साला सब लुटेरा हुआ ही है, लेकिन रिस्क लेने का कोई फायदा है? और...तुमको भी आराम हो जाएगा।"

"हमको आरामे है...लेकिन तुमको ठीक लग रहा है तो ठीके है।"

"आराम कैसे है?" प्रस्ताव को बेमन से मिली स्वीकृति से भी खुश हो गए हैं दयाशंकर, "ई चेतनवा है कि कुछ करती ही नहीं है और कुछ दिन में ऊ भी महथिन देवी जइसा बैठ जाएंगी, सब तुम्हारे कपार पर आ जाएगा।"

दयाशंकर सोच रहे हैं, ऐसे मौके पर गांव से कुछ दिनों के लिए अनुपस्थित हो जाना ही ठीक रहेगा। वासुदेव सिंहवा सनकी आदमी है एक नंबर का। पता नहीं, क्या-क्या कहना शुरू कर दे सुशील के नहीं मिलने पर!

वासुदेव सिंह, दरअसल, बहुत अलोकप्रिय हैं कुंवरपुर में। देवता पांड़े को छोड़कर शायद ही कोई तारीफ करता हो उनकी। गांव से कोई भी पटना पहुंच जाता उनके यहां तो उससे पिंड छुड़ाने की कोशिश में लग जाते वासुदेव सिंह। सुनाने लगते कि गेस्टबाजी के चलते ही बच्चों की पढ़ाई का कबाड़ा हुआ जा रहा था; सब्जियां कितनी महंगी हो गई थीं; बिजली का बिल कितना भरना पड़ रहा था। खुद भी सूखी रोटी और कद्दू की सब्जी खाते और गेस्ट को भी खिलाते। चार रोटियां आने के बाद अंदर से बंद हो जाती रोटियों की सप्लाई और वासुदेव सिंह चुपचाप अपनी चार रोटियां खत्म करने में लगे रहते।

वासुदेव सिंह के यहां गेस्ट बनने का मतलब था, मच्छरों के साथ मल्लयुद्ध करने को तैयार रहना। 'गुड नइटवा लाए थे न जी? खत्म हो गया?' मच्छरों की भनभनाती हुई फौज को देखकर धीरे से भुनभुनाते। गुड नाइट का एक पुराना, बेकार हो गया

टुकड़ा थमा जाता उनका नौकर। उसी को गेस्ट को थमाते हुए धीरे से कहते—'लाना पड़ेगा फिर।'

पूरे गांव के लिए मच्छरदानी का जोगाड़ नहीं कर सकता कोई ईमानदार आदमी, वासुदेव सिंह चाहते थे, इस बात को समझें गांववाले।

"हम तो कान पकड़े हैं कि बल्कि प्लेटफारम पर घुलट रहेंगे, बाकी वासुदेव सिंहवा के यहां नहीं जाएंगे।" आपबीती याद आ गई है संकटा सिंह को।

"बेचारे ईमानदार आदमी हैं। हिसाब से नहीं रहेंगे तो चलेगा ही नहीं।" देवता पांड़े सफाई देते हैं।

"ईमानदार आदमी प्रेम से बोलता-बतियाता भी नहीं है?" संकटा सिंह तिजुक गए हैं, "कन्हैया सिंह से पूछ लीजिए कि क्या हुआ था? गेट पीटते रह गए आधा घंटा तक और जान-बूझकर नहीं खोला। अपने आंख से देखे कन्हैया सिंह कि भीतरवाले कमरे में जो बल्ब जल रहा था, उसको भी बुता दिया, जबकि अधिक से अधिक नौ बज रहा होगा रात का।"

'अगर ऐसा है तो गलत है' का भाव चिपकाए चुप हो गए हैं देवता पांड़े।

"बेटवा-बेटीया सबका सोभाव बढ़िया है। लेकिन ऊ सबको भी इतना डेरवाकर रखता है कि...और अइसा अफतरा में पड़ गया।" हाकिम सिंह दोधारी तलवार चला रहे हैं।

गांव को ठीक से यह भी पता नहीं चल पा रहा कि बेटे को छुड़ाने के लिए कर क्या रहे थे वासुदेव सिंह। या कि कुछ कर भी रहे थे कि नहीं?

वासुदेव सिंह ने समझ लिया है कि सारे पत्ते एक ही आदमी के हाथ में थे इस मामले में—नौलाख महतो के। दूसरों से कुछ भी होना-जाना नहीं था।

"हम, देवता भाई, जा रहे हैं नौलाख के यहां। बताइएगा नहीं किसी को।" बताया देवता पांड़े को और नौलाख महतो के यहां पहुंच गए।

अपने दोमंजिले दालान की दूसरी मंजिल पर बने एक कमरे में वासुदेव सिंह को लेते गए नौलाख महतो।

"रामपरबेस बाबू दू गाल बतिया का लेते हैं प्रेम से, लोग समझते हैं कि हम जो चाहें, करा सकते हैं।" पांच फीट तीन इंच के गठे हुए ठिगने शरीर पर रंगीन खादी का कुर्ता डाले नौलाख महतो बताते हैं अपनी परेशानी, "होत भिनसहरा मेला लग जाता है--लोन चाहिए...जाति प्रमाण-पत्र चाहिए...राइफल का लाइसेंस चाहिए...हई चाहिए, हऊ चाहिए...मत पूछिए...कपरबथी हो जाता है..."

बेईमान और दलाल किस्म के लोगों की आत्म-श्लाघा सुनने वाले जीव नहीं हैं वासुदेव सिंह, पर सुन रहे हैं।

नौलाख महतो को कोई जल्दी नहीं है। आराम से बतियाएंगे। उन्हें पता है, कैसा हाहाकार मचा होगा वासुदेव सिंह के कलेजे में, पर धरती पर व्याप्त किसी दूसरे हाहाकार की बात करेंगे। बाबरी मस्जिद की जगह मंदिर बनना चाहिए कि नहीं, इस बारे में उनकी

राय जानना चाहेंगे। कश्मीर में इतना कुछ हो रहा था और सरकार पाकिस्तान में बने आतंकवादी ठिकानों पर धावा नहीं बोल रही थी, इस बात पर अफसोस जाहिर करेंगे। बासमती और हींग के पेटेंट पर अमेरिका वाले कब्जा कर लेंगे तो क्या होगा, इस संकट के मर्म को समझना चाहेंगे।

"कुछ सूचना मिली है?" भीतर उबलती घृणा को नियंत्रित करते हुए पूछा वासुदेव सिंह ने।

खैनी थूकने खिड़की के पास चले गए नौलाख महतो। खिड़की की दो छड़ों के बीच के रास्ते 'पच्च' से थूका; छड़ों पर चिपक गई थूक को पोंछा हथेली से और आकर वापस अपनी कुर्सी में बैठ गए। तब तक उनका चेहरा भी एक नई चितवन अख्तियार कर चुका था।

"सूचना तो मिली है!" बस इतना ही कहकर चुप हो गए और लगा कि अब बोलेंगे ही नहीं कभी।

वासुदेव सिंह एकटक देखे जा रहे हैं उनका चेहरा। लगता है, चरक फूटेगा साले को। ध्यान नौलाख महतो के चेहरे पर उगे सफेद धब्बों पर चला गया है।

"हम खुद संतुष्ट नहीं है, वासुदेव बाबू!" एक लंबी चुप्पी के बाद बोले नौलाख महतो और झांक भी लिया वासुदेव सिंह की आंखों में।

"क्या मांग है?"

"आंऽऽऽ...?" मानो किसी गहरे चिंतन में डूब गए थे नौलाख महतो, "क्या कहा गया?"

"कुछ हिंट तो मिला ही होगा?"

"हिंट तो मिला ही है...तीन...पर सवाल है कि हिंट दे देने से नहीं न होगा... आदमीयत भी एक चीज होती है..."

"तीन तो हम नहीं दे सकते।"

"ए वासुदेव बाबू, एगो बात सुन लीजिए। बात करने लायक आदमी नहीं है ऊ सब। साला लुच्चा-लहेंड़ा सबसे बतियाने में भी खराब लगता है। हम हार मानते हैं। आप सीधे बतिया लीजिए।"

"आप ही सोचिए..."

"सब सोच रहे हैं हम। हमको मालूम नहीं है कि ईमानदार आदमी हैं आप? पर लहेंड़ा सब को कौन समझाए जी?...पेंसन में इतना मिलेगा...दहेज में इतना लेंगे...ईमान से कह रहे हैं, हमको अच्छा नहीं लग रहा इस मामले में पड़ना।"

वासुदेव सिंह पत्थर के देवता की तरह बैठे हुए हैं अपनी जगह पर। पलकें तक नहीं झपक रहीं। नौलाख महतो 'खेला खतम, पइसा हजम' वाली मुद्रा में कोई चौपाई गुनगुनाते हुए टहलने लगे हैं कमरे में।

स्साला गंवार आदमी...बड़ी-बड़ी बात कर रहा है...स्साला चोर...वासुदेव सिंह से! अच्छों-अच्छों की बोलती बंद कर देते हैं, उस वासुदेव सिंह से! चोरों से मिला हुआ

है साला और चौपाई गा रहा है...वासुदेव सिंह के भीतर धधक रहा है ज्वालामुखी।

"तो ठीक है महतोजी, आप खबर भिजवा दीजिए कि वासुदेव सिंह ने मान लिया है कि उनके एक बेटे को भगवान ने बुला लिया।" एकएक चीख-से पड़े वासुदेव सिंह।

नौलाख महतो मुंह बाए देख रहे हैं कि पूरी देह कांप रही है वासुदेव सिंह की।

"लेकिन चुप नहीं रहेंगे हम...यह भी बता दीजिएगा माधड़चोद लोगों को।"

रंग उड़ गया है नौलाख महतो के चेहरे का।

"हम तो बस इतना ही न कह रहे थे, बाबू साहेब कि..."

"आप कह कहां रहे थे कुछ भी? आप तो सीटी बजा रहे थे। आपही को चौपाई गाना शोभा देता है? चोर-डाकू को?"

"ए भाई, हम तो अइसा गद्दार अदीमीये नहीं देखे थे कभी! हद्द हो गया! मदद भी करो और...माफ कीजिए हमको...बहुत काम है...अकाज हो रहा है..." कह रहे हैं नौलाख महतो, पर एक बेक़ाबू-सी बदहवासी लोटने लगी है कलेजे में। अवधेश चौधरी ने चेताया था, गांव के मामलों में पड़ना ठीक नहीं होता। मति मारी गई थी।

"हमको भी बहुत काम है। बेटे की लाश लानी है...दाह-संस्कार करना है... भोज-भात करना है..."

"आप अभी जाइए, बासुदेवजी...आराम कीजिए...अभी ठीक नहीं है बात करना।"

"ठीक है।" वासुदेव सिंह चल पड़े हैं।

वासुदेव सिंह का मन श्मशान की तरह शांत है। लेकिन आंधियां चल रही हैं नौलाख महतो के मन में। सुना था, सनकी आदमी है वासुदेव सिंहवा। पर इतना सनकी होगा कि बेटा गंवा देने को तैयार हो जाएगा—नहीं सोचा था।

"वासुदेव बाबू!" उन्हें हठात् लगता है, जोश में बात बिगाड़ ली है, "एगो बात सुन लीजिए।" उनके पीछे-पीछे दरवाजे तक चले आए हैं लपकते हुए, "चलिए हम लोग दोनों चलते हैं। क्रोध करना ठीक नहीं है ऐसे मामले में। हम भी पगला गए थे कुछ देर के लिए।"

"हमारे पास डेढ़ लाख से ज्यादा नहीं है।" वासुदेव सिंह बोले।

मानो कोई बहुत बड़ा पत्थर हट गया हो नौलाख महतो की छाती पर से। हाथ पकड़ लिया है वासुदेव सिंह का—"बताइए, गुस्से में क्या से क्या बोल जाता है आदमी...सुशील हमारा लड़का नहीं है?...कल हम पड़ेंगे किसी अफतरा में तो नहीं आएंगे आपके पास?"

चैतन्यता लौट रही है वासुदेव सिंह की। एक चेहरा उभर रहा है भीतर के श्मशान में—सुशील का। उनकी आंखों का डबडबाना देखते हैं नौलाख महतो।

"भरोसा रखिए। कुछ न कुछ उपाय जरूर होगा। डेढ़ लाख कम होता है! यहां डेढ़ रुपया कमाने में 'नवो नवटिका, आठो हरनाम' लग जाता है आदमी का...पर क्या कहा जाए...साला समय..."

"दू बिगहा खेत हटा रहे हैं।" नौलाख महतो के यहां से लौटकर वासुदेव सिंह ने अपने भाई हाकिम सिंह को सूचना दी।

"एक बार नारद सिंह से बतियाकर भी देख लिया जाता तो ठीक था।" धर्मसंकट में पड़ गए हैं हाकिम सिंह। ऐसे मौके पर वार किया है जवान ने कि 'ना' भी नहीं कह सकते।

"नौलाख महतो तैयार हैं लेने को। सोच रहे हैं, बिक्रमगंज चलकर कल ही रजिस्ट्री करवा दिया जाए।"

"नौलाख महतो को अपने खेत में नहीं घुसने देंगे हम।" कुछ देर की चुप्पी के बाद बोले हाकिम सिंह।

"हमको कल ही चाहिए डेढ़ लाख रुपया! है, तो दीजिए!"

"तुम्हारे पास नहीं है?"

"नहीं है।"

"जब भाइये से झूठ बोलना और बेइमानी करना है तो कोई जवाब है इसका।"

"दिक्कत क्या है आपको? हम अपना हिस्सा..."

"कमाए हो क्या कि तुम्हारा हो गया? कभी खरीदे हो एको धूर? बेचने चले आए?" उछलकर बैठ गए हैं हाकिम सिंह, "कुटाइम देखा तो दबाने के फेर में पड़ गए?"

वासुदेव सिंह नींद में चले गए थे करवट बदलकर।

10

मुन्नी की चिठ्ठी आई थी। बच्चा होने वाला था। सातवां महीना चल रहा था। दयाशंकर को आने को लिखा था जल्दी से जल्दी।

"हे भगवान, बेटा देना।" राम, सीता और लक्ष्मण के गुप्ता ड्रेसेजवाले कैलेंडर के सामने हाथ जोड़े बैठी हुई हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

मंधाता मिश्र उन्हें अच्छे कभी नहीं लगे। सामाजिक आदमी थे। बहुत अपनापन दिखाते थे आते थे तो, पर रामज्ञान पांड़ेबो की हिम्मत नहीं होती उनके पास बैठकर प्रेम से बोल-बतिया लेने की। अपने छोटे और लाचार होने की दाहक प्रतीतियों में उन्हें धकेल देती मंधाता मिश्र की उपस्थिति। वक्त और किस्मत के हाथों छले गए होने का अहसास और भी उदग्र हो उठता।

दूसरे सभी खुश थे। चेतना को अच्छा लगता कि जब भी आते, जीप से ही आते पाहुन। भले ही जीप गांव से एक किलोमीटर दूर खड़ी करनी पड़ती, पर सुनता तो था गांव कि जीप से आए थे। गणपति पांड़े को तो इतना भा गए थे नए पाहुन कि उनकी अनुपस्थिति में भी पहुंच जाते उनके गांव और घीव-दही वगैरह लेते आते। रामज्ञान पांड़ेबो मना करती थीं बेटी के यहां का कुछ भी लेने से, पर गणपति पांड़े के ऊपर कोई असर नहीं होता उनके मना करने का।

"हम मांगे थे कौनो! चार-चार गो लगहर रखे हुए है जवान और खाने वाले का ठेकाने नहीं है। बड़की बूचीया जिद कर दी कि लेते जाइए, भइया।" मंधाता मिश्र की

पहली पत्नी को 'बड़की बूचीया' कहते गणपति पांड़े।

"देखती होगी खिआइल-बिलाइल कुक्कुर जइसा तो दे देती होगी।" गणपतिबो गुरगुरातीं।

पर इसका भी काट था गणपति पांड़े के पास—"दिलदार आदमी का मरम केवल दिलदार आदमी ही जान सकता है।"

बेटी की खुशहाली की खबरें सुन-सुनकर भीतर का ताप कम होता गया था। बस एक बेटा हो जाए! बेचारे मिसिरजी की मुराद भी पूरी हो जाए! "हे परम पिता! कुछ गलती-सलती हुई हो तो हमीं को और दंड दे देना। बाकी मुनीया को एगो बेटा दे दो।" कैलेंडर के आगे हाथ जोड़े बुदबुदा रही हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"मंधाता मिसिर बेटा-बेटी में फर्क करने वाले आदमी नहीं हैं, माई।" दयाशंकर को हँसी आ गई है उनकी घबराहट देखकर।

"फिर भी..."

"फिर भी क्या! हम तो बोले कि कम्यूनिस्ट बनते हैं तो यह कानून बनवाने के लिए लड़िए कि केवल बेटियां पैदा करने का ही अधिकार होगा पैसेवालों को। बेरोजगारी के जमाने में, इसी बहाने, कुछ नौजवानों के खाने-रहने का इंतजाम होगा।"

"बबुआ भी एक से एक बात करते हैं।" गणपतिबो हँसने लगीं, "बेचारे मिसिरजी फेर में हैं बंस बढ़ाने के और कह रहे हैं..."

"बंस बढ़ाने-ओढ़ाने के फेर में नहीं हैं मिसिरजी।"

बोल जाने के बाद लगा कि गलत बात निकल गई थी मुंह से। कोई पूछ देता, 'तो किस फेर में हैं?' तो क्या जवाब देते!

"आज ही निकल जाते हैं, माई!" कोई कुछ पूछे, उसके पहले ही कहा और पता करने निकल गए कि किसी का ट्रैक्टर आज गुनी या टेढ़का पुल की ओर जा रहा था कि नहीं।

मंधाता मिश्र अजीब-से मायावी आदमी लगने लगे थे दयाशंकर को। पता ही नहीं चलता, गंभीर किन बातों को लेकर थे और अगंभीर किन बातों को लेकर। दूसरे कहते, साम्यवाद का सबसे मजबूत स्तंभ थे बिक्रमगंज में और दयाशंकर को लगता, अगर कोई दूसरा वाद चूक गया था उनका सहारा पाने से, तो महज संयोग ही था यह।

बस स्टैंड के पास ही मिल गए थे—अपनी मनपसंद पान की दुकान पर पान बंधवाते।

"क्या जी कामरेड! सुने कि बड़ा हलचल है आपके यहां?"

"कौन बताया?"

"अब ई छोड़िए कि कौन बताया! पचपन गो आंख और निन्यानबे गो कान है मंधाता मिसिर का।"

"ए महाराज, छप्पन और सौ कह देते तो कुछ हर्ज हो जाता?" दयाशंकर को हँसी आ गई है उनके डायलग पर।

"एक गहरा मनोवैज्ञानिक कारण है इसका।" मंधाता मिश्र की भी नन्हकू सिंह की ही तरह अपनी बेसिर-पैर की बातों को औचित्यपूर्ण सिद्ध करने के लिए तरह-तरह के तर्क करने की आदत थी, "हमको हमेशा लगता है कि सच को हम पूरा-पूरा नहीं देख पाए। अगर दोनों ही आंखें और दोनों ही कान ठीक हों तब तो सच आ जाना चाहिए था न पकड़ में?"

"हमारी तो यही समझ में नहीं आता कि आप किस टाइप के नेता हैं कि कोई हंगामा भी नहीं करना है और नेता भी बने रहना है।"

मंधाता मिश्र को मुंह में भरी हुई पान की पीक थूकनी पड़ी है भीतर से उबलती हँसी के कारण—"दिल्ली में हमारे भी बाप बैठे हुए हैं। न लोकसभा का चुनाव लड़ते हैं, न विधानसभा का और टी.वी. पर छाए रहते हैं। हंगामा हो जाने के बाद प्रकट होते हैं और उसकी चीर-फाड़ करते हैं। आंदोलनों के समाप्त हो जाने के बाद उनके बारे में वक्तव्य देते हैं। हम तो कुछ भी नहीं हैं।"

"इसीलिए न गाड़ी जहां से चली, वहीं खड़ी रह गई। कलकत्ता से दिल्ली पहुंची ही नहीं।" दयाशंकर को क्रोध आ गया है उन तथाकथित राजयोगवाले नेताओं के बारे में सुनकर, जो बिना कुछ किए ही शिखर-स्पर्शी पहुंच और राष्ट्रव्यापी पहचान का भोग कर रहे थे।

"सिपाही बोलवाई हो न हमको दंड दिलवाने के लिए? देखो आ गए।" ड्राइंग रूम में घुसते ही मंधाता मिश्र ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में आवाज दी मुन्नी को।

"कुछ खटपट हो गई है क्या?" दयाशंकर ने पूछा।

"पूछिए इन्हीं से।" दोनों हाथों में आटा लपेटे हुए ही भाई के पैर छूए मुन्नी ने और सुबकना शुरू कर दिया।

सोफे पर पालथी मारे बैठे मंधाता मिश्र ऐसे खो गए हैं एक पत्रिका के पन्ने उलटने में मानो हों ही नहीं उस कमरे में।

"साला रूस हमेशा के लिए बर्बाद हो गया।" बोले, "गोर्बाचेउवा खा गया एक महान् देश को।"

"देख रहे हैं न इनको!" मुन्नी बोली, "यही करते हैं। जब भी हम कुछ पूछेंगे, रूस-अमेरिका करने लगते हैं।"

"बेचारे थके-हारे आए हैं, चाय-वाय पिलाओगी कि केवल नाक ही गारती रहोगी?" मंधाता मिश्र ने पत्नी को डांटा।

मुन्नी आंखें तरेरे हुए चाय-नाश्ते का प्रबंध करने रसोईघर में चली गई।

"ई मत समझिएगा कि आपके आंख दिखाने से डर जाएंगे।" जाते हुए बोली।

"रूस का उदाहरण, जानते हैं, क्या सिद्ध करता है, दयाशंकरजी?" मंधाता मिश्र फिर अपनी पत्रिका की दुनिया में लौट आए हैं—"कि बिना विकल्प तैयार किए किसी स्थापित व्यवस्था को तोड़ना बेईमानी है। इसीलिए हम गोर्बाचोव को नोबल प्राइज देने के खिलाफ हैं।"

"जैसे कि आपके मना कर देने से नहीं देगा!" मुन्नी प्लेट में बिस्कुट और नमकीन लिए हुए वापस आ गई है।

"बात क्या है?" उनकी बातचीत के लहजे से यह आश्वस्ति तो मिल गई है दयाशंकर को कि कोई बहुत चिंताजनक बात नहीं थी, पर कुछ न कुछ बात थी जरूर।

"जिसने बुलाया है, उसी से पूछिए।" दालमोठ का एक फांका मुंह में झोंकते हुए कहा मंधाता मिश्र ने।

"ई हमको कितना दुःख दे रहे हैं, हमीं जानते हैं!" मुन्नी मोढ़े पर बैठ गई है।

"चाय नहीं लाओगी क्या?" मंधाता मिश्र ने टोका।

"जिसका मन हो पीने का, जाए, बना ले।" मुन्नी खड़ी हो गई चमककर।

"अच्छा ठीक है, कूदो मत, आराम से बैठ जाओ। झगड़ा हमसे है कि इनसे भी है।" मंधाता मिश्र ने हाथ उसके फूले हुए पेट को छू लेने के लिए बढ़ाया।

"हमको नहीं अच्छा लगता है ई झूठीया छाव दिखाना।" छिटककर दूर चली गई मुन्नी, "जिसको अच्छा लगता हो, कीजिएगा उसके साथ।"

"बात-बात पर तिजुक काहे रही हो इतना?" दयाशंकर को ऊब-सी होने लगी है इस नोक-झोंक से, "जो कहना हो, साफ-साफ कहो।"

"पूछिए इनसे कि दमयंतिया को काहे रखे हुए है यहां?"

मंधाता मिश्र फिर व्यस्त गए थे पत्रिका के पन्ने उलटने में।

"पत्रिका उलटने से नहीं होगा। बताइए सब बात।" मुन्नी ने पत्रिका खींच ली है उनके हाथों से।

"दयाशंकरजी, यही सबसे बड़ी कमी है इनमें। इंटेलेक्चुअल ऐक्टिविटी से कोई मतलब ही नहीं है। अब देखिए पढ़ रहे हैं तो..."

"तुम्हीं बताओ न! तुमको मुंह नहीं दिए हैं भगवान?" दयाशंकर ऊलजुलूल बकने के लिए मंधाता मिश्र को डांटना चाहते थे, पर मुन्नी को डपट दिया।

"हमको लाज लग रहा है बताने में।" फिर सुबकना शुरू कर दिया है मुन्नी ने, "इनसे पूछिए कि चमईन से बेइज्जत कराना था तो काहे को बियाह किए हमसे?"

मुन्नी के मुंह से पहली बार सुन रहे हैं, पर यह पहला मौका नहीं है, जब दयाशंकर सुन रहे हैं इस तरह की बात। अनजानाजी पहले ही कई बार संकेत कर चुके थे कि दमयंती के कुछ अधिक ही करीब होते जा रहे थे मंधाता मिश्र। दूसरे भी कहते रहते थे कुछ का कुछ। गांव के लड़के, जो बिक्रमगंज कॉलेज में पढ़ रहे थे, कहते कि दमयंती रोज नए-नए कपड़े बदलकर आती थी कॉलेज। दयाशंकर ने कभी ध्यान नहीं दिया था इन बातों पर। सोचा, लोगों की कल्पना-शक्ति बिना कुछ जाने-सुने भी तरह-तरह के चित्र उकेरती रहती है ऐसे मामले में। पर मुन्नी आज उन्हीं अर्थ-भरे संकेतों की पुष्टि करती-सी लग रही थी।

"अच्छा एक बात बताइए, दयाशंकरजी! दमयंती यहां क्यों और किन हालात में आई, इसकी जानकारी आपको है कि नहीं? और सबसे बड़ी बात यह है कि बेचारी

इनके आने के पहले से ही यहां रह रही है; कोई बाद में नहीं आई है।"

"बाद में आई हो चाहे पहले, हमारे बिछौने पर सुताएंगे उसको तो हम नहीं रहेंगे यहां।" मुन्नी ने बता ही दिया अंततः कि वह क्यों परेशान थी।

"देखो, कब से सुने जा रहे हैं चुपचाप। अब एक लफ्ज भी गलत निकला तो तड़ातड़ पीट देंगे।" मंधाता मिश्र कड़के।

"बढ़िया अंधेरगर्दी है। गलती भी करेंगे और..."

"बिना जाने-सुने भकननन जैसी बात मत कीजिए, महाराज!"

"आपसे डर लगा हुआ है क्या कि आप कह देंगे तो चुप हो जाएंगे?" दयाशंकर कड़के।

मुन्नी आंचल से मुंह ढांपे, सुबकते हुए भीतर चली गई है।

"आप भी दयाशंकरजी, जो हैं सो हइये हैं।" मुठभेड़ की मुद्रा छोड़ समझाने-बुझाने की मुद्रा इख्तियार कर ली है मंधाता मिश्र ने—"आपको पता है, इनका असली प्रोबलेम क्या है? जब से आई हैं, चमइनीया...चमइनीया...कभी अपने गांव का समझकर कुछ बोलने की कोशिश भी की बेचारी ने तो इतना खराब व्यवहार किया कि...अब इनके कहने से हम सिद्धांत तो अपना नहीं छोड़ सकते न?"

"सब ठीक है, लेकिन..."

"क्या ठीक है?" मंधाता मिश्र ने उनकी बात बीच में ही काट दी है, "छूआछूत करना ठीक है? किसी व्यक्ति—जो आश्रित हो—की नीयत पर जब न तब संदेह करना ठीक है? आप तो जानते हैं, इस तरह के प्रतिगामी चिंतन से हमको सख्त घृणा है।"

सिद्धांतों की ऐसी ऊंची अटारी पर बैठ गए हैं मंधाता मिश्र कि दयाशंकर को उन्हीं की बातें सच लगने लगी हैं। मुन्नी वगैरह हैं भी क्या! दिमाग ही कितना है! उन्हें तो बस, परंपरा की लीद ढोए जाना है...

"हम गदहा हैं, बदमास हैं, बैकवर्ड हैं, मानते हैं।" मुन्नी दूसरे कमरे में खड़ी सुन रही थी मंधाता मिश्र की बातें। फुफकारती हुई आई, "इनसे केवल अपनी बेटियों और जो हमारे पेट में है, उसका कसम खाकर कहने को कहिए कि दमयंती के साथ सोए हैं कि नहीं?"

"यही सब कहो उल्टा-सीधा। सब सुन रहा होगा!" उसके पेट की ओर इशारा किया मंधाता मिश्र ने।

"सुनने दीजिए।" मुन्नी चीखी।

"अच्छा, तुम जाओ अंदर। आराम करो। हम करते हैं बात।" दयाशंकर ने कहा और महसूस किया कि सच्चाई थी मुन्नी की पीड़ा में।

"चलिए, कहीं से घूम-फिरकर आते हैं, महाराज। मूड खराब हो गया एकदम से।" उनकी हां-ना की प्रतीक्षा किए बिना ही आकर बरामदे में खड़े हो गए हैं मंधाता मिश्र।

दयाशंकर आते रहते हैं मंधाता मिश्र के यहां, पर दमयंती से नहीं मिले। यूं ही आमना-सामना हो गया तो ठीक, वरना कोशिश करते हैं कि आमना-सामना ही नहीं हो।

बदले हुए रूप में उसे देखना अच्छा नहीं लगता उन्हें। अनायास ही जुगुप्सा की चिनगारियां-सी उड़ने लगतीं चेतना में। उसका व्यवहार भी ठीक नहीं लगता दयाशंकर को। ऐसे दिखाती मानो लिलार पर जो सलवार-समीज के रंग की बड़ी-सी गोल बिंदी लगा रखी थी, बाप की दी हुई थी उसके। मंधाता मिश्र का अहसानमंद होने का हल्का-सा आभास भी नहीं होता उसके बात-व्यवहार में।

दयाशंकर जितना ही सोचते हैं मंधाता मिश्र के यहां दमयंती के साथ अपनी कुछ पुरानी मुलाकातों के बारे में, मुन्नी की बातें उतनी ही सच लगने लगती हैं।

"आप तो, महाराज, एकदम सीरियस हो गए जी!" मंधाता मिश्र ने उन्हें चुप्पी साधे हुए देखा तो कहा।

"मुन्नी सच कह रही है न?"

"अच्छा तो आपसे झूठ नहीं बोलेंगे हम...हंड्रेड परसेंट झूठ नहीं कह रही है।" मंधाता मिश्र ने लापरवाही के साथ कहा, "हो गया न! अब सुनाइए दंड!"

"हम क्या दंड देंगे आपको; लेकिन हमको तो आप कहीं का नहीं न छोड़े। केवल हमारे कहने पर यह शादी हुई और..."

"देखिए दयाशंकरजी, इसीको कहते हैं कि किसी का पंछूटा ढीला देखा तो गांडू कह दिया।"

"आप जो कहिए, लेकिन हमको तो अक्षर-अक्षर याद है कि उस समय क्या बोले थे आप।" दयाशंकर की संपूर्ण मुद्रा कह रही है कि उन्हें चोट पहुंची है मंधाता मिश्र के आचरण से, "आपने कहा था, जैसे दो बेटियां..."

"वह हमारा आदर्श था और यह जो है, व्यावहारिक सच है।"

"जरूरत क्या है ऐसे व्यावहारिक सच की?"

"अब इसी को कहते हैं, सूपवा दूसे चलनीया को।" जोर का ठहाका लगा दिया है मंधाता मिश्र ने, "जैसे कि हम जानते ही नहीं हैं कि हुजूर किस-किस घाट का पानी पीये हुए हैं।"

"इसको इतना लाइटली मत लीजिए आप। जैसे हम जान गए, दूसरे भी जान जाएंगे एक दिन और सब कम्यूनिस्ट बनना निकल जाएगा।"

"आप तो एकदम चिरकुट आदमी निकले, महाराज।" बांह दयाशंकर के गले में डाल दी है मंधाता मिश्र ने, "इनको देखिये रहे हैं कि 'नो इंट्री' का साइनबोर्ड लगाई हुई हैं। थोड़ा इधर-उधर चर लिया तो पापी हो गया आदमी?"

दयाशंकर भी महसूस करते हैं कि अनावश्यक रूप से इधर-उधर झांक रही थी मुन्नी भी। दमयंती या किसी के भी साथ सोते ही हों मंधाता मिश्र तो क्या फर्क पड़ जाता है उसको! पति के प्यार-दुलार में कमी आए, तब जरूर चिंता करने की बात है! लेकिन वैसी बात तो है नहीं!

"मान कैसे गई?" पूछा।

"क्यों?"

"गांव में तो नाम था कि मुंह नोचने को दौड़ती है।"

"आप भी ट्राई किए थे क्या?"

"चालाकी मत बतिआइये। जबर्दस्ती करते हैं?"

"होते-होते हो गया।"

"घिन नहीं आती?"

"जैसी बहन, वैसा भाई...घिन नहीं आती?" दिल खोलकर हँसे मंधाता मिश्र। "लगता है, देखे ही नहीं हैं इधर? दसगुना ज्यादा स्मार्ट लगती है मुन्नी से।" हँसी थमी किसी तरह तो उनकी आंखों में झांकते हुए कहा, "एकदम मस्त!"

"लेकिन एक बात है, पाहुन!" रस-चर्चा को वापस गंभीर विमर्श की जमीन पर ले आए दयाशंकर—"एक संभावनावान व्यक्तित्व को बर्बाद कर रहे हैं आप। कभी सोचे हैं कि कहां जाएगी यहां से? रोज-रोज सलवार-समीज बदलने और हाई हीलवाला सैंडिल पहनने के बाद मन लगेगा कुंवरपुर और क्रांति में?"

"पता नहीं, किस दुनिया में रहते हैं आप भी! मालूम नहीं हुआ आपको कि कॉलेज के स्टूडेंट यूनियन का चुनाव लड़वाए हाल में ही? पूछिएगा अपने गांव के बाबू लोग से कि कैसा भाषण देती है और क्या-क्या करना पड़ा उसको हराने के लिए। बाहर भी ले गए हैं। भाषण दिलवाए हैं सेमिनारों में। कंट्रोल में नहीं रखें तो बिक्रमगंज में भी नजर नहीं आए आपको। ढेरों की लार चू रही है...और आप कह रहे हैं, कहां जाएगी यहां से?"

"शोशेबाजी ही सिखा रहे हैं न?"

"लड़ाकर भी दिखाएंगे। घबराते क्यों हैं आप!" घूमते-घामते हुए ही सिनेमा देखने का मूड हो गया था मंधाता मिश्र का। शाहरुखजीउवा कैसी तो निगाह से देख रहा था कजलवा को! पोस्टर देखने के बाद मन नहीं माना टिकट खरीदने से।

"मुन्नी को कैसे पता चल जाता है इन बातों का?" दयाशंकर को याद आया अचानक कि वे बिक्रमगंज दमयंती के कैरियर को बारे में बहस करने नहीं, मुन्नी की कोई समस्या हल करने आए थे।

"हमारी ही गलती है। आगे से ऐसा नहीं होगा।" कहा और 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के रुपहले संसार में खो गए मंधाता मिश्र।

"आपकी राय चाहिए थी, पाहुन!" पाहुन की राय से ज्यादा रुचि दमयंती की प्रतिक्रिया जानने में है दयाशंकर की, जो उन दोनों से थोड़ा हटकर बैठी हुई थी—कसा हुआ जबड़ा और तना हुआ चेहरा लिए हुए।

"नन्हकूबो के यहां भगेलू गिरोह का अड्डा रहने लगा है। नौलाख महतो जातिवाद फैलाकर फोड़ना चाह रहा है रेजों को। क्या किया जाए?"

"भाड़ में जाए नन्हकूबो। चाहे जो गिरोह रखे अपने यहां, आपको क्या मतलब है?" मंधाता मिश्र ने कहा।

दयाशंकर ने दमयंती की ओर देखा।

दमयंती कुछ नहीं बोली।

"रही बात जातिवाद फैलाने वाली तो यह केवल कुंवरपुर की समस्या नहीं है।"

"हमने पूछा था, क्या किया जाए?"

"क्या किया जाए जी?" मंधाता मिश्र ने दमयंती से पूछा।

मंधाता मिश्र के स्टडी रूम में बैठे हुए थे तीनों। कानून की किताबों से घिरे हुए।

"नन्हकू सिंह ने ऐसा माहौल बनाया था कि संघर्ष सार्थक लगता था। बातें करते थे अपने लोगों से; बेनकाब करते रहते थे गलत लोगों को। सक्रियता रखते थे।" दमयंती ने कहा।

दयाशंकर ने महसूस किया, बहुत निखर गई है उसकी भाषा।

"क्या कहते हैं?" मंधाता मिश्र ने देख लिया था दयाशंकर का प्रभावित होना।

"अच्छा बोल रही है।" दयाशंकर ने माना, "पर जवाब नहीं मिला।"

"जवाब कैसे नहीं मिला आपको?" उत्तेजित हो गए हैं, मंधाता मिश्र, "जवाब स्पष्ट है। बातें कीजिए अपने लोगों से; उनको समझाइए इस संघर्ष की सार्थकता।"

दयाशंकर को लगता है, व्यंग्य भरा हुआ है दमयंती की आंखों में। मानो कह रही हो, इनके जैसा 'कामरेड' समझा चुका संघर्ष की सार्थकता!

"संघर्ष-वंघर्ष है कहां कि उसकी सार्थकता समझाई जाए?" अपने-आपसे ही चिढ़े हुए हैं दयाशंकर। इन डपोरशंखियों से मशविरा लेने चले आए।

"आपसे जो होता है, वही कीजिए न महाराज!" एक लंबी 'ऊंऽऽऽह' के साथ आरामकुर्सी से खड़े हो गए हैं मंधाता मिश्र।

दयाशंकर को दमयंती के चेहरे पर फैल गई व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट फिर अच्छी नहीं लगती। उन दोनों के खड़े हो जाने के बावजूद उसका बैठा रहना भी अच्छा नहीं लग रहा दयाशंकर को।

"बताया कि नहीं अपने दया बाबा को कि टाइपिंग भी सीख लिया तुमने?" उसे आंखों से निगलते हुए पूछा मंधाता मिश्र ने।

दयाशंकर को याद आया, उन्हें टाइपिंग सीखनी थी। उनके ससुर पीछे पड़े हुए थे लंबे समय से। कह रहे थे, कंप्यूटर भी सीख लीजिए। पता नहीं, अपने लल्ले को क्यों नहीं सिखा रहे थे कंप्यूटर!

कभी-कभी दयाशंकर को गहरी कोफ्त हो आती है अपने जीने की परिस्थितियों से। जहां जाओ, वहीं समस्या! वहां माई, यहां मुन्नी, ससुराल में ससुर, और उनके ऊपर ये डपोरशंखी। संघर्ष की सार्थकता समझाइए...और इनको लैला-मजनू का पार्ट खेलने दीजिए!

"कैसी लगी?"

"पहले से ही मूड खराब है हमारा। और खराब मत कीजिए।"

"ईर्ष्या हो रही है?"

दयाशंकर को लगा, शायद ईर्ष्या ही मूड खराब किए हुए थी उनका।

"वसुधा आई थी, बाबा?" दमयंती की आवाज आई पीछे से।

स्टडी रूम के चौखट के बीचोबीच खड़ी वह बहुत अकेली लगी दयाशंकर को—अनाश्रित, असहाय।

"एक ही बार तो आई दो-तीन दिनों के लिए।"

"बस, एक ही बार?"

"पूछ रही थी तुम्हारे बारे में। तुम रहतीं तो फिर आती शायद।" दयाशंकर ने कहा।

उन्हें लगा, उदास हो गई थी दमयंती।

"कभी-कभी तुमको भी आना चाहिए।" बोले।

दमयंती नहीं बोली कुछ।

"दमयंती-फमयंती की जासूसी करने की जरूरत नहीं है तुमको। अपने घर और बच्चे का ध्यान रखो।" मुन्नी को हिदायत देकर कुंवरपुर वापस आ गए थे दयाशंकर। इस बात से बेखबर कि उनके जिस सवाल का गोल-मटोल और दीर्घकालिक उत्तर दे रहे थे मंधाता मिश्र और दमयंती, उसका उत्तर प्रतीक्षा कर रहा था उनके कुंवरपुर पहुंचने का।

घर लौटती चिड़ियों के चखचख का जो समय होता है, उसको पूरी तरह से हस्तामलकवत् करती चीखने और चिंघाड़ने की डरावनी आवाजें सुनकर बौखला उठा था कुंवरपुर।

आवाजें नन्हकूबो के घर की ओर से आ रही थीं।

"कहां-कहां से तो चोर-डाकू जुटाए रखती है रांड़ी।" रामज्ञान पाँड़ेबो बुदबुदाई और बुदबुदाकर जताना चाहा दयाशंकर को कि जाने की जरूरत नहीं थी वहां। पर शोर बढ़ता जा रहा था गलियों में। भागते पैरों की धमक से भुतही लगने लगी थी शाम। आकाश में चुपचाप उड़ती जाती बगुलों की पांत को देखने की फुर्सत भी नहीं थी किसी के पास। जंगी सिंह को देखने का समय भी नहीं था, जो टकराकर गिर पड़े थे एक खूंटे से और उसी खूंटे का और खूंटा कुजगहा गाड़ने वाले के जहां-तहां गाड़ देने का जाप कर रहे थे जमीन पर पड़े हुए।

"कुछ पता चला, बबुआ?" धनजी पांड़े की थरथराती हुई आवाज सुनाई दी दयाशंकर को। अपने दोमंजिले मकान की छत से झांक रहे थे उनके आंगन में।

"जाके देख आओ।" रामज्ञान पांड़ेबो ने दांत पीसते हुए कहा।

धनजी पांड़े ओझल हो गए मुंडेर से।

"जबसे वासुदेव सिंह के लइकवा का अपहरण हुआ है, डेराए रहते हैं भीतर से।" चेतना को हँसी आ गई उन्हें झटपट मुंडेर से गायब होता देख।

"बाबा कहां हैं?" बुरी तरह हांफ रहा है जगनाथ। दयाशंकर को देखते ही उनकी ओर लपका है, "चलिए, नहीं तो काम गड़बड़ा जाएगा। इंकलबवा अकेला पड़ गया है।"

"यही हितू बनते हो, जगनाथ?" एकदम से उखड़ गई है रामज्ञान पांड़ेबो, "बाबा ही बड़का पहलवान हुए हैं गांव में?"

"इंकलबवा को मार रहा है सब, चाची।" जगनाथ सहम गया उनकी उग्र प्रतिक्रिया देखकर।

दयाशंकर थिर बैठे हुए हैं खटिये पर—काठ मार गया हो मानो।

"क्या सोच रहे हैं?" जगनाथ ने पूछा।

"सोच रहे हैं, बहुत बुड़बकाही वाला काम कर दिया इंकलबवा ने। बिना राय-मशविरा किए..."

"हम तो बोले, भाग, लेकिन भागा भी नहीं..." अनियंत्रणीय होती जा रही बेचैनी में आंगन में तेज-तेज कदमों से टहलने लगा है जगनाथ।

शोर थम गया है बाहर गलियों में।

"आते हैं, माई।" झटके से उठे और चल दिए दयाशंकर। इंकलाब अकेला था, इस खबर का कुछ तो मतलब था ही उनके लिए। उसे उम्मीद तो होगी ही कि सुनेंगे तो मदद को जरूर आएंगे दयाशंकर बाबा। नन्हकू सिंह के घर की ओर लपकते हुए दयाशंकर ने महसूस किया कि वे भी सोचने लगे हैं नन्हकू सिंह की तरह।

नन्हकूबो के दुआर पर खून से सनी हुई लाश पड़ी थी इंकलाब की। गांव दुआर घेरे खड़ा था नन्हकूबो का। नन्हकूबो छत के ऊपर खड़ी गालियां दे रही थी गांव को। भगेलू फरसा लिए हुए खड़ा था दालान में और लौट जाने को कह रहा था गांववालों को।

"मौगड़ा हो गया है क्या, रे माधड़चोद सब?" लल्लन सिंह चिंघाड़ उठे थे अचानक और लाठी ताने हुए लपके थे भगेलू की ओर। पीछे-पीछे सारा गांव लपका था।

"यहां ठहरना ठीक नहीं है, बाबा!" छबीला सिंह का फुसफुसाना सुना दयाशंकर ने। थरथराहट-सी महसूस हुई पैरों में और नाद के साथ बने चबूतरे पर बैठ गए।

"भागो मरदे!" भागते हुए आए गोसांई पांड़े, "लगता है सिपहिया और भगेलुआ दोनों साफ हो गया!"

इसके पहले कि कोई फैसला कर पाते दयाशंकर, नन्हकूबो के दुआर पर जमा समूची भीड़ ने भागना शुरू कर दिया था। केवल तीन नहीं, पांच लाशें गिर गई थीं उस शाम। नन्हकूबो और उसका दो साल का बच्चा भी मारे गए थे—उन्हें छत से नीचे धकेल दिया था किसी ने।

"अब हटिए जाना ठीक होगा, बाबा!" नन्हकूबो के घर को खाली आंखों से एकटक ताकते दयाशंकर से कहा जगनाथ ने।

"देखोगे, नन्हकू भाई का बेटवा जिंदा है कि मर गया?"

"नहीं बाबा, चलिए यहां से।" रुलाई आ गई है जगनाथ को और दयाशंकर के उठने का इंतजार किए बिना ही चल पड़ा है वहां से।

लल्लन सिंह काम हो जाने के बाद सोच रहे हैं, 'अब क्या किया जाए?' पुलिस का पहुंचना तय था। श्रीभगवान सिंह और नौलाख महतो क्या करेंगे, तय नहीं था। सिपाही के मारे जाने के कारण रेजों का बौखलाना भी तय था। और गांव के बड़े उनका साथ

देंगे कि नहीं, तय नहीं था। लल्लन सिंह के मन ने कहा, गांव छोड़ देना ही ठीक था। बूटन राय से मिलकर तय की जा सकती थी आगे की रणनीति। आखिर अकेले तो उन्होंने ढठियाया नहीं था उन लोगों को। सारा गांव मौजूद था।

"कोई पूछे तो कहना है कि हम पिछले बीस-बाइस दिनों से आए ही नहीं हैं गांव।" घरवालों से कहा और बेटे को मोटरसाइकिल निकालने का आदेश उछालकर, कुर्ता-धोती बदलने कमरे में घुस गए। खून के कुछ छींटे दिख गए धोती और कुर्ते पर। कुछ देर तक सोचते रहे कि बढ़िया से रगड़-रगड़कर धो देने से चल जाएगा काम कि सबूत को हमेशा के लिए नष्ट कर देना ही ठीक रहेगा? फिर याद आया, खून के धब्बे लाठी पर भी होंगे।

"चाहा जइसा मुंह मत ताको हमारा। जल्दी से जला दो ई सबको।" कमरे की चौखट पर किंकर्तव्यविमूढ़-सी खड़ी पत्नी को डांटा और दूसरा कुर्ता पहनने लगे।

"दूधनाथ बाबा और कलक्टर चाचा आए हैं।" घर का एक छोटा लड़का बता गया।

'क्या कहने आए हैं?' अपने-आपसे पूछा लल्लन सिंह ने और महसूस किया कि तलुए तप रहे थे उनके।

"क्या सोचे?" दूधनाथ सिंह ने पूछा। इसलिए नहीं कि लल्लन सिंह की चिंता हो रही थी उन्हें; बल्कि इसलिए कि उनके आमोद सिंह को भगेलू के पेट में बरछी घुसेड़ते हुए पूरे गांव ने देखा था। और कलक्टर सिंह उनके साथ इसलिए थे, क्योंकि महेंदरा ने पूरे गांव में फैला दी थी यह खबर कि नन्हकूबो को छत से कुएं में फेंक देने वाला आइडिया उसी का था।

लड़के जरा भी घबराए हुए नहीं थे। बल्कि लल्लन सिंह, दूधनाथ सिंह और कलक्टर सिंह के एकता के प्रस्ताव के साथ पहुंचने के पहले ही उन्होंने श्रीभगवान सिंह को मना लिया था कि यह मौका पुराने मतभेदों को याद करने का नहीं था।

"अगर राजपूत का बच्चा होंगे न भइवा, तो ई अहसान जिंदगी-भर नही भुलाएंगे।" लल्लन सिंह गद्‌गद हो गए हैं श्रीभगवान सिंह के दृष्टिकोण में आए बदलाव के बारे में जानकर।

"किसी को भी कुछ भी बोलने का काम नहीं है भाई लोग!" कलक्टर सिंह ने रणनीति स्पष्ट की, "बोल देना है कि गांव पहुंचा तो देखता है कि पांच लाशें गिरी हुई हैं। गिरोह के आपसी कलह में हुआ होगा..."

"मान लो कि पूछता है कि आपको कैसे पता चला कि लहास है वहां, तो क्या कहा जाएगा?"

"आप ही कागभुशुंडीजी हैं कि आपसे सब कथा-कहानी पूछने लगेगा?" दूधनाथ सिंह गुस्सा गए शिवजी पांड़े के सवाल पर।

"कहिए कि हल्ला सुने तो गए।" सुधाकर पांड़े ने शांतिपूर्वक समझाया।

"तो यही बात सब कोई बोलेगा।" शिवजी पांड़े ने कहा।

"नौलाख महतोइया नहीं बोला तो?" सत्यनारायण सिंह को शंका हुई।

"सारे गांव से मुखालफत करेंगे साले कोइरी राम? इतना हूब हो गया है?" कलक्टर सिंह ने फुफकार छोड़ी।

"चलिए न भाई, पूछ ही लेते हैं साफ-साफ कि उसके किसी मुसम्मात के घर में कोई गिरोह ठहराएंगे हम तो कैसा लगेगा उसको?" चलने को तैयार होने लगे लल्लन सिंह।

"पहले सुन तो लो पूरा बात।" दूधनाथ सिंह ने डांटा, "खेतवे के लालच में न लस रखता था नन्हकूआबो से। बोल दो कि खेत वही जोते मनी पर। इसके बाद भी नहीं सुनता है सलाम तो देखा जाएगा।"

"भगवान जानते हैं, दूधनाथ भाई! खेत का लालच हमको नहीं है।" रामबिलास सिंह की आवाज कांप रही है।

लेकिन नौलाख महतो होते कुंवरपुर में तब तो उनसे कुछ पूछा या कहा जा पाता! नौलाख महतो तो घटना की खबर मिलते ही छोड़ चुके थे गांव। कुछ लोग सोच रहे थे कि रामप्रवेश चौधरी से मिलकर पुलिस पर दबाव डलवाने के लिए गुनी दौड़े गए थे, पर नौलाख महतो खुद को अलग रखना चाहते थे इस झगड़े से। सबसे पहले उन्हीं के पास दौड़े गए थे रेजटोलेवाले—इस उम्मीद में कि कम से कम सिपाही को बचाने की कोशिश तो करेंगे ही करेंगे नौलाखजी! आखिर सेवक था उनका! उनका परचम लहराता चल रहा था रेज टोलों में। लेकिन बड़ी कड़वी बात कह दी थी नौलाख महतो ने। कहा, "आज बुझाया है कि काहे कहा जाता है कि चल्हांक-चतुर बैरी अच्छा होता है बुड़बक हित-मित्र से। हम हैं कि एक लंबा प्लानिंग लेकर चल रहे हैं गरीब-गुरबा सब को ताकत देने का और ई बकलोल सब नन्हकूबो से तेल-मालिस कराने के फेर में जान दे दिया...जबकि हम मना किए थे...एक बार नहीं बहुत बार मना किए थे!"

"फिर भी चला जाता तो..." घबराए हुए थे लोग। जिरह करने का समय नहीं था। कुछ ही मिनटों में खत्म हो जाने वाला था खेल। पर नौलाख महतो तैयार नहीं हुए थे टसकने को—"जिद मत कीजिए आप लोग...काम एकदम गड़बड़ा जाएगा हमारे जाने से...अभी जो थोड़ा-बहुत कर पा रहे हैं, उसके लायक भी नहीं बचेंगे..."

निराश होकर लौट आए थे लोग।

उन्हीं की बिछाई बिसात में ढेर हो गया था सिपाही और लाश देखने तक नहीं आए थे नौलाख महतो।

"हमको भी तो बाबा, आप टेटीहा ही समझते होंगे, पर अपने मन का बात बताते हैं आपको कि नन्हकू सिंह के जाने के बाद लगा कि रेज लोगों का भलाई नौलाख महतो के साथ रहने में ही है।" नंदलाल कह रहा है, "बेआसरा आदमी दुःख में दस तरफ देखता है।"

चुपचाप सुन रहे हैं दयाशंकर। दयाशंकर को मालूम है, चुप्पी ही सबसे कारगर रणनीति है इस समय।

"नौलाख महतो जो सपना दिखाते हैं, उसकी हकीकत के बारे में नहीं न सोचते

लोग।" जगनाथ ने कहा, "नौलाख महतो कहते हैं—सरकार का नौकरी और ठेका, जो पहले पंडित-राजपूत-भूमिहार वगैरह ले जाते थे, अब पिछड़ों को मिलेगा। नौलाख महतो यह नहीं कहते, यह सब कितनों को मिलेगा..."

"और किन पिछड़ों को मिलेगा!" नंदलाल ने जोड़ा।

"सब कोई अपना-अपना फायदा देखता है। एतना दूर का सोचने पर तो..." चरित्तर बात अधूरी छोड़कर चुप हो गए हैं।

"नौलाखजी की भी बात बिल्कुल बेमानी नहीं हैं, हरखू भाई!" रियासत मियां जुट गए चरित्तर की अधूरी रह गई बात पूरी करने में, "वामपंथी कहता है, जमीन पर कब्जा करो, समाज बदल जाएगा। नौलाखजी कहते हैं, सरकार और प्रशासन पर कब्जा करो, समाज बदल जाएगा। वामपंथी कहता है, जबर्दस्ती ले लेंगे। नौलाखजी कहते हैं, हमारा ही है तो जबर्दस्ती क्या लेना है! जम्हूरियत में संख्या ताकत है।"

"कहते सब हैं, करते कुछ नहीं।" नंदलाल ने चिढ़कर कहा, "दो बार तो धोखा दे चुके न अभी तक? चुनाव के टाइम लुका गए कोठिला में और अब इस बार भी।"

"यह बात दीगर है।" रियासत मियां बोले, "हम केवल बात का बात कर रहे थे।"

बहस करने का यही अंदाज है रियासत मियां का—पहले विरोधी पक्ष की बड़ाई में भी कह दी जाए एकाध बात, फिर उसके बाद माहौल जब गरमा जाए तो अपनी बात कही जाए।

"नौलाख महतो का कहा सच भी हो जाए तो जानते हैं, क्या होगा? सामंतवाद की जगह नया सामंतवाद आ जाएगा। शोषण नहीं बंद होगा, शोषकों का 'सरनेम' बदल जाएगा। पहले मिसिरजी करते थे, अब जादवजी करेंगे। समाज नहीं बदलेगा।" जगनाथ ने व्यवस्था दी।

रियासत मियां को कोई ऐतराज नहीं था इस व्यवस्था से। बोले, "यही होइये रहा है।"

"तो का कहा जाए सिपहिया के बाबू को?" निहोरा को ऊब-सी होने लगी है इस बहस से। गांव में लाश पड़ी हुई थी टोले के एक नौजवान की और सिद्धांत पेलने की सूझी थी इन लोगों को।

"गांव का तो मत हो रहा है कि पुलिस को कहा ही नहीं जाए कुछ।" भोला राम ने बताया।

"इसका मतलब?" नंदलाल ने पूछा।

"मतलब यह कि गांव कहेगा कि गिरोह का आदमी था सब; आपसे में मर गया लड़-कटकर।"

"हम लोग बाहर हैं गांव के?" नकचिपटा तिजुक गया।

"तो हमको का सुना रहे हो? जो सुने थे, सुना दिए!" भोला ने अपनी स्थिति स्पष्ट की।

"और हम पूछ रहे हैं कि इंकलबवा हमारा नहीं था?" छांगुर हंकड़ा और रोने

लगा हंकड़कर, "साथी नहीं था हम लोगों का? कौन मरवाया उसको? नौलखवा और सिपहिया मरवाया उसको। नन्हकूबो को ठोकने के लिए साथी को मरवा दिया साला गद्दार सब।"

"जोस में होस नहीं गंवाना चाहिए, छांगुर।" चरित्तर ने सलाह दी।

"जो होस का बात बतिआएगा, उसको तो छोकड़चोद समझेंगे हम!" छांगुर गरजा।

रामज्ञान पांड़ेबो बाहरवाले चौखट पर आ गईं ऊंची आवाजें सुनकर।

"गांव चाहे जो भी कह रहा हो, हमारा कहना है कि पुलिस को बीच में लाना ठीक नहीं है।" जगनाथ ने अनुमान लगाया कि दयाशंकर भी संभवतः इसी लाइन पर सोच रहे थे।

"पुलिस कम बड़का मइयाचोद है कि पुलिस को बीच में लाया जाए।" रामगिरिही ने एक तरह से अनुमोदन ही कर दिया उसके प्रस्ताव का।

"हम तो साले भीतरघाती लोगों का ही नाम देंगे पुलिस को।" छांगुर ने आंसू पोंछते हुए कहा।

"हम तो, भाई, जैसा रामगिरिही बोले, चुप हैं। किसी को करना हो हुड़गड़ाम तो उसकी मर्जी।" दयाशंकर ने कहा थिरतापूर्वक।

संदेश स्पष्ट था—जो जगनाथ ने कहा, ठीक कहा।

'अब?' चरित्तर की निगाहें घूमने लगी हैं वहां मौजूद चेहरों पर, 'बड़ा छीप काट रहे थे नौलाख महतो में?'

"मतलब कि एकदम चुप हो जाया जाए, बाबा?" नंदलाल को भी नहीं जंच रही यह नीति।

"सिपाही के बाबू बोलें कि भगेलू गिरोह का आदमी घुसा हुआ था नन्हकूबो के घर में। सिपाही की नजर पड़ गई उधर से गुजरते हुए तो चला गया मदद के लिए और...।" दयाशंकर बोले, "गांव को घसीटने से कोई फायदा नहीं होगा। एक गलत औरत और गिरोह के लिए पूरे गांव से मुखालफत करने की ताकत फिलहाल तो नहीं है हम लोगों में।"

रामज्ञान पांड़ेबो घबराई हुई हैं कि फिर से कहां से प्रकट होने लगे थे नन्हकू सिंह के गण।

'यही तो नौलाखजी भी कह रहे थे।'—चरित्तर चाहते थे कहना, पर सोचा, मौका देखकर कहेंगे कभी।

"जब सबकी यही राय है तो..."

"एकदम ठीक राय है।" छांगुर फिर हंकड़ने लगा है, "पुलिस दुसमन है हम लोगों का। पुलिस से कुछ नहीं होगा। जो इंकलबवा को मारा है, उसके गांड़ी में डंडा कौन करता है, मालूम पड़ जाएगा आप लोगों को।"

"डेट और टाइम भी बता दो।" दयाशंकर गुस्साए।

छांगुर चुप हो गया, पर उसके हंकड़ने का वाजिब असर हुआ था जमावड़े पर।

प्रतिरोध गिर गया था। तय हो गया था कि कोई कुछ नहीं बोलेगा; जो कहा था दयाशंकर बाबा ने, पुलिस को वही बोल देंगे सिपाही के बाबू।

शुरू-शुरू में तो, जैसा कि रिवाज था, पुलिस थोड़ी हैरत में पड़ गई और उसे दुःख भी हुआ कि लोग इस तरह चुप्पी साध लेंगे अपराध और अपराधियों के बारे में जानते हुए भी तो कैसे काम चलेगा, पर धीरे-धीरे खुद ही कायल हो गई गांव की एकता और समझदारी की।

गुनी के बड़े दरोगा हरदयाल लाल के मन में यह आशा जगी कि 'ई ससुर गिरोह-फिरोह एक दिन अइसहिं खत्तम हो जाएंगे मर-कटकर।'

"बेचारी सीधी-सादी औरत पड़ गई थी साला चोर-चकार सबके फेर में!" लल्लन मास्टर की किस्मत खुली थी, सो थैली भी खोल दी थी। दरोगाजी को तो भारतीय परंपरा के अनुसार जो देय था, दिया ही गया; दुआर पर आने वाले हर आदमी को दालमोठ फंकाया जा रहा था।

"जो समय आ गया है, बाबूसाहेब, बड़े लोगों को रहना ही होगा एकजुट होकर। नहीं तो समझ जाइए कि राजनीति तो चलिये गई हाथ से, अब इज्जत भी जाएगी।" बड़े दरोगा ने कुछ ऐसी संजीदगी से कही यह बात कि गांव गद्‌गद हो गया सुनकर।

"हम तो कहते हैं कि ब्राह्मण, भूमिहार, राजपूत और कायस्थ, चारों को मिलाकर एक ही जात बना दिया जाए।" अनूठे उत्साह से भर गए हैं कन्हैया सिंह। सभी फारवर्ड जातियों के एक महासंघ का सपना तैरने लगा है उनकी आंखों में।

"नन्हकूआबो को चहेंटकर मार दिया रे?" मुसमात लाख कोशिश करती हैं कि नहीं सोचें इस घटना के बारे में, पर सोचने लगती हैं। पचास साल पुरानी छवियां कौंध-कौंध जाती हैं चेतना में।

"गांव तो कह रहा है भगेलुआ का गिरोह मार दिया उनको।"

"झूठ बोलता है। ई हरामजादा सब एक नंबर का झूठा है। हमको बेदीन करने के लिए बाकी रखा था कोई उपाय? लेकिन, जानती है, सूबेदरवाबो, चलने नहीं दिए ई डोमड़ा सबका। जोगीया का बाप हाथ जोड़ दिया था...सब खेत बेचा जाएगा..."

"नन्हकूबो को आप अपने में मत मिलाइए, मलकिनी।"

"क्या खराबी था उसमें? यही न कि एगो भतार कर ली थी? ई डोमड़ा सबका तो मन करेगा मेहरारू के साथ सोने का तो रंडी के यहां चला जाएगा; औरत कहां जाएगी? सबका मन एक ही जैसा नहीं न होता।"

सूबेदारबो मुंह ताकने लगी है मुसमात का।

"मुंह क्या देख रही है हमारा। तुम्हारा, रेज सब तो सबसे बड़ा अभागा है।" यथा-स्थिति का ठंडा स्वीकार उतर आया है मुसमात के स्वर में, "बेचारा नन्हकू इतना किया तुम लोगों के लिए और तुम लोग...."

सूबेदारबो को आदत पड़ गई है ऐसे उलाहने सुनने की, सुनते हुए भी अपने काम में लगे रहने की।

11

"गांव का हाल देख रहे हैं न, प्रभुजी?" चिरई भगत हाथ जोड़े बैठा है।

उदय पांड़े ने कुछ नहीं कहा, तो सुकुमार पंडित ने कहा, "बाढ़े असुर अधम अभिमानी।"

धूप में लगातार बैठे होने के कारण झुलस-सा गया है उदय पांड़े का चेहरा। गोरा रंग तांबई हो गया है। आंखें लाल-लाल हो रही हैं और उनके नीचे कालिमा की एक परत बैठ गई है। कुछ बोले तो उन्हें हो ही गए कई महीने, खाना-पीना भी छोड़ दिया है पिछले पंद्रह-सोलह दिनों से। बैठे हुए हैं एक ही मुद्रा में। पता नहीं, हिलने-डुलने और बोलने-चालने की ताकत भी बची है या नहीं!

सूरज भी मानो चिढ़ गया है एक आदमी का हठ देखकर। पूरी ताकत से आग उगल रहा है।

"बहुत कठिन तपश्चर्या में जुट गया है जवान।" छबीला सिंह ने माना, "कम बात नहीं है इतना दुःख सह लेना।"

लोग चिरई भगत से पूछने लगते हैं खोद-खोदकर—आखिर कुछ न कुछ तो कहते ही होंगे इशारे से? और चिरई भगत की हालत ऐसी है कि बोल चुकने के बाद पता चलता है कि क्या बोल गए।

"ए भाई, समझ काहे नहीं रहे हैं आप लोग। चिरई-चुरुंग के बस का बात है इनका हाल जान जाना?" आज हार मान ली है चिरई ने। अब और नहीं गढ़नी हैं कहानियां!

"एक दिन बोले जरूर थे कि दुःखों से बाहर निकलने का रास्ता दुःखों के अंदर से ही गुजरता है।" सुधाकर पांड़े कह रहे हैं थोड़ा आतंकित और थोड़ा विस्मित भीड़ से।

"लेकिन कितना दुःख सह सकता है आदमी का शरीर?" श्रीराम पांड़े की सहन-सीमा जवाब देने लगी है आज। घबराए हुए-से देखने लगते हैं आकाश को। जब-जब बादलों के पीछे जाता है सूरज, राहत की इतनी लंबी सांस लेते हैं, मानो साधना उदय पांड़े नहीं, वही कर रहे हों।

"उसका साथ हो तो दुःख भी सुख लगने लगता है।" देवता पांड़े ने सांत्वना दी।

"क्या बोले?" उदय पांड़े ने पूछ दिया था यक ब यक और ऐसे भाव-विभोर हो गए देवता पांड़े कि आंसू बहने लगे आंखों से। चाहकर भी कुछ नहीं बोल सके।

"मेरे आंसू आकाश पी गया।" उदय पांड़े की कमजोर-सी खुश्क आवाज सुनते हैं लोग, "कभी रोना होगा, तो वही रोएगा।"

"बस इतना ही बोले कि 'मेरे आंसू आकाश पी गया...'" उनके बोलने की खबर सुनकर उमड़े चले आए गांववालों को बता रहे हैं सुधाकर पांड़े।

"ए महाराज, आप लोग भी तो हद्द किए हुए हैं। भजन-कीर्तन शुरू कीजिए।" एक महाप्रतापी गुरु के महाप्रतापी चेले की ओज से आपूर्त चिरई भगत ने डांट लगाई

कुटिया के आगे खदबदाती भीड़ को।

श्री राम हरे, जय राम हरे
प्रिय राम हरे, घनश्याम हरे
श्री राम हरे...

भीड़ लग गई भजन-कीर्तन में।

"बढ़िया मजमा लग गया जी!" धनजी पांड़े हिसाब लगा रहे हैं मन ही मन कि यही हाल रहा तो अकूत संपदा बरसने लगेगी श्रीराम पांड़े के घर।

"यह विषय ही ऐसा है कि जानने वाला भी बुड़बक, नहीं जानने वाला भी बुड़बक।" छबीला सिंह ने 'न हम इधर हैं, न उधर हैं' वाला तेवर अपना रखा है।

"लेकिन ई साधना कौन टाइप का कर रहा है?"

"इसी को बूझाता होता तो अपने नहीं कर लेता?" रामबिलास सिंह को गुस्सा आ गया है रंगू सिंह का सवाल सुनकर, "साला चोर-चकार को हीरो मान लेने में एक पइसा का लाज नहीं है, लेकिन एक साधू को साधू मानने में इतना दिमाग लगाना पड़ रहा है।"

एक मनोरम मुस्कान फैली हुई है उदय पांड़े के चेहरे पर। पर चेहरा अभी भी थका-थका-सा लग रहा है। लाली गई नहीं है आंखों से।

"क्या सोच रहे हैं, प्रभु? कुछ बोलिए।" सुधाकर पांड़े ने अनुनय किया।

"सोच रहे हैं कि रंगू सिंहवा सोच रहा है कि बढ़िया जाल फैलाए हुए है उदय पंड़इया।"

"आदमी का मन सब तरफ भागता है।" अपने अंदर एक थरथराहट-सी भरती महसूस करते हैं रंगू सिंह। उन्हें लगता है, उदय पांड़े की एक जोड़ी आंखें उनके अंदर समाई हुई हैं। उनके खून में तैर रही हों। रंगू सिंह छूटना चाहते हैं उनसे। लोग देखते हैं, खड़े-खड़े ही देह को तोड़ना-मरोड़ना शुरू कर दिया है रंगू सिंह ने; उछलना-कूदना शुरू कर दिया है। धड़ाम से गिरे हैं जमीन पर और पद्मासन लगाकर बैठ गए हैं।

उदय पांड़े की आंखें बंद हैं। उंगलियां, पता नहीं, क्या आंक रही हैं हवा में।

हथेलियों में पसीना रिस रहा है छबीला सिंह के। चेहरा सफेद हो गया है। कहीं उन्हें भी तो ऐसी ही सजा नहीं मिलने जा रही शंकालुता की!

अचानक उठे हैं पद्मासन से और बिना कुछ कहे, गांव की ओर चल पड़े हैं रंगू सिंह। छबीला सिंह लपके हैं उनके पीछे-पीछे।

"लगता है, डर गए हैं रंगू सिंह।" धनजी पांड़े ने कहा डरते-डरते।

"खुद को देखिएगा तो आप भी डर जाइएगा।"

"जीऽऽ?" इतनी बुरी तरह घबरा गए धनजी पांड़े कि पूरी भीड़ हँस पड़ी उनकी घबराहट देखकर।

"सारी बात बस इसी एक बात पर आकर समाप्त होती है—अपने को पहचानो।" उदय पांड़े ने कहा।

"तो डर क्यों लगता है?"

"क्षणिक आभास से डर लगता है। पहचान स्थायी हो जाए तो डर गिर जाता है।"

"आप किसी को भी लगवा सकते हैं ध्यान?"

"उधार मना है यहां।" कहा उदय पांड़े ने और आनंद की लहर दौड़ गई भीड़ में।

"ऐसा मंत्र दीजिए, प्रभु, कि कलह समाप्त हो जाए गांव से।" देवता पांड़े ने मांगा यह वर।

"लीजिए, देते हैं—कलह मत कीजिए।" कहा उदय पांड़े ने और हँसी के एक और झोंके में झूमने लगी भीड़।

"आपको, भइया, ऐसा नहीं लगता कि देश के धर्मगुरुओं ने उचित समाधान नहीं दिया देश की समाजार्थिक समस्याओं का? भजन-कीर्तन से समाज नहीं बदलता, अर्थव्यवस्था नहीं सुधरती। और लोगों को इन्हीं चीजों की जरूरत है।" दयाशंकर दिखाना चाहते हैं कि रंगू सिंह पर हुई क्रिया के आतंक में नहीं हैं वे। दयाशंकर यह भी दिखाना चाहते हैं कि उन्हें भगवान नहीं मानते वे।

"धर्मगुरुओं को दयाशंकर जैसा गुरु नहीं मिला होगा।" उदय पांड़े ने कहा।

और भीड़ ने और जोर का ठहाका लगाया—बड़ा कहने आए हैं कि भजन-कीर्तन से समाज नहीं बदलता!

"बोलिए, बोलिए, परम पिता परमेश्वर की जय! जय!" चिरई भगत ने दोनों हाथ ऊपर कर, नाभि का बल लगाकर बुलंद की यह जयजयकार और जयजयकार गूंजने लगी उदय पांड़े की।

"आप लोग जो कहिए, हमको तो एक नंबर का फ्रॉड लगता है यह आदमी।" दयाशंकर खिन्न हैं।

"हमको लगता है कि फ्रॉड नहीं हों भले ही, पर हिप्नोटीज्म और टेलीपैथी का कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है और उसी का दुरुपयोग कर रहे हैं।" दिनेश सिंह बोले।

रंगू सिंह कुछ भी बताने को तैयार नहीं हैं।

गौरीशंकर हाथ में कट्टा लिए कहता चल रहा है कि गांव को मानना हो तो माने उदय पांड़े को साधू, अपने बाप के अपमान का बदला उनसे लेकर रहेंगे।

"जइबो मत करना नियरा, नहीं तो गंड़थइया का नाच नचा देगा साधूजीउवा!" दोस्त चिढ़ा देते और गौरीशंकर और जोर-जोर से गालियां देने लगता।

"बताइए, रंगू सिंहवा के लड़कवा को बोलना चाहिए ऐसा?" श्रीराम पांड़े चिंतित हैं गौरीशंकर की बातें सुन-सुनकर। न जाने कितने बरसों के बाद तो दिन बहुरे हैं उनके घर के और यह दुष्ट सत्यानाश करने पर तुला हुआ है उनका! श्रीराम पांड़े को पूरा अंदेशा है कि बालचन पांड़े का परिवार—जो जल रहा था उनके घर के अच्छे दिनों के लौट आने से—उकसा रहा था गौरीशंकर को।

"जरूरी है वहां जाना? नहीं विश्वास है तो मत जाइए।" तिलंगी सिंह के सामने रखी अपनी समस्या।

तिलंगी सिंह खुद भरे हुए थे भयंकर अंचरज और डर से। उन्हें खुद ही इच्छा हो रही थी उदय पांड़े संबंधी अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करने की।

"ई भी बहुत फुटानी बतियाते हैं।" नाद में सानी गोतते कलक्टर सिंह बोले, "हम तो कहेंगे साधूजीउवा से कि इनको भी ध्यान लगवा दे एक बार।"

तिलंगी शायद मृत्यु और पुनर्जन्म जैसे गंभीर विषयों पर केंद्रित किए हुए थे ध्यान; क्योंकि अनसुना कर दिया था कलक्टर सिंह को।

सुधाकर पांड़े को यह दुःख खाए जा रहा है कि सचमुच ध्यान का ही अनुभव था वह तो उन्हें क्यों अनदेखा कर दिया था उदय पांड़े ने! रंगू सिंह कैसे हो गए थे उसका पात्र!

"साधू-महात्मा का अपमान नहीं करते, बबुआ।" रामज्ञान पांड़ेबो को गणपतिबो के मार्फत दयाशंकर के कुटिया पर उल्टा-सीधा सवाल पूछने की खबर मिल गई थी और चिंतित हो गई थीं।

"रामपरबेस चौधरिया जैसे चोर से एगो पक्का चबूतरा बनवा रहे हैं कुटिया के आगे। यही तो हैं तुम्हारे साधू-महात्मा!"

"नहीं बबुआ, कुछ न कुछ जरूर भेंटा गया है उनको।" गणपितिबो ने प्रतिवाद किया।

"चिरईया और सुधाकर पंडितवा के कहने पर कह रही हैं?"

"नहीं बबुआ, अपने देखे हैं हम।"

"नहीं भी भेंटाया हो कुछ, तो कुछ ले रहे हैं किसी का? अपना भजन-ध्यान कर रहे हैं।" रामज्ञान पांड़ेबो अब सचमुच चिढ़ गई हैं दयाशंकर की हठधर्मिता देखकर। चिठ्ठी पर चिठ्ठी आ रही है मुन्नी की—भइया आइए। और भइया उदय पांड़े की महात्मागिरी का टेस्ट लेने में अझुराए हुए हैं।

"मुन्नीया काहे बार-बार बुलाती है, बबुआ?" पूछा।

"कहती है, मन नहीं लगता अकेले। चेतना को पहुंचा जाइए कुछ दिनों के लिए।" झूठ बोल दिया दयाशंकर ने।

"चेतना कहां जाएगी!" रामज्ञान पांड़ेबो ने विश्वास करते हुए कहा उनकी बात का।

"सोच रहे हैं, दोनों जगह से होते आएं, माताराम। पटना भी चले जाएंगे और मुन्निया को डांट भी आएंगे। मन नहीं लगता तो दाई-लउंडी रख ले।"

रामज्ञान पांड़ेबो की परेशानियां बहुत बढ़ जाती हैं दयाशंकर के बाहर चले जाने से। भैंस को पानी पिलाने वाला तक नहीं रहता कोई। चिरौरी करनी पड़ती है मटुक के परिवार की। बेचारे मटुक की भी देह नहीं चलती अब। मुश्किल से चल पाते हैं। चिरई ने काम-धंधा छोड़कर उदय पांड़े की कुटिया ही अगोर ली है और छांगुर का दिमाग सातवें आसमान पर ही रहता है। जगनाथ आ जाता है खोज-खबर लेने; पर जगनाथ को कोई काम अढ़ाना बहुत भारी लगता है रामज्ञान पांड़ेबो को। जिंदगी में

अपने ही काम किसके कम हैं कि दूसरों का बोझ ढोएगा!

"चिरईया और छंगुरा का बेटवा-बेटिया सब एक्को कहनाम नहीं सुनता आजकल।"

"रामगिरिही को बोलते जाएंगे जाने के पहले।" दयाशंकर फिर टाल गए हैं असली मुद्दा।

रामज्ञान पांड़ेबो चाहती हैं, मटुक कमकर को 'मनी' पर दिए गए खेत हटा लिए जाएं उनके पास से। डर लगता है उन्हें मटुक के परिवार से। खासकर छांगुर से। दयाशंकर का सिखाया मंत्र कहीं उन्हीं के ऊपर न आजमाने लगे। लेकिन दयाशंकर तैयार नहीं हैं इस विकल्प पर विचार करने को।

'कुछ सोचकर ही कर रहे होंगे ऐसा!' क्षुब्ध मन को मना लेती हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

दयाशंकर के ससुर के लिए दिनानुदिन असंभव होता जा रहा है दयाशंकर की समझदारी को लेकर संचित आशावाद को सम्हाले रखना। बहुत विषण्ण रहने लगे हैं चौबेजी और दयाशंकर के पहुंचते ही दलकने-छलकने को हो आती है यह विषण्णता। एक नालायक बेटा ही कम बड़ा बोझ था क्या कि ऊपर से एक नालायक दामाद का बोझ डाल दिया परम पिता ने! हनुमान मंदिर में चढ़ाए लड्डुओं का भी यही हश्र होना था!

"जली ठूंठ पर बैठकर गई कोकिला कूक, बाल न बांका कर सकी, शासन की बंदूक। हम लोग, ऐसी राजनीति करते हैं, बच्चा लोग!" अपने साले और तीनों सालियों को सुना रहे हैं दयाशंकर और आवाज चौबेजी के कानों तक भी पहुंच रही है।

"तो आप ऐसी राजनीति करते हैं!" उनके साले विनोदजी की शैली मजाक वाली ही थी, परंतु प्रतियोगी परीक्षाओं के अखाड़े में पस्त हो जाने के बाद अब उनकी राय भी यही है कि काम कुछ ऐसा ही किया जाए कि साली शासन की बंदूकें कांखने लगें।

"लेकिन आपके जो नेता थे उनका तो मर्डर हो गया?" दसवीं में पढ़ने वाली साली ने सवाल किया।

"रोज-रोज मरने से तो अच्छा है न कि एक ही दिन मर जाए आदमी!" दयाशंकर के बोलने के पहले ही विनोदजी बोल पड़े हैं, "यहां साले आयुक्त और सचिव लोगों का हाल है कि मंत्रिया सबको खैनी खिला रहे हैं मल-मलकर।"

"इस साले को किसने बताया जी कि सचिव लोग मंत्री सब को खैनी खिला रहे हैं?" चौबेजी पत्नी के ऊपर गरम हो गए हैं, "तीस बरस सचिवालय में काट दिए हम और देखे नहीं कभी ऐसा और इस नालायक ने देख लिया कि..."

"सुना होगा कहीं से।" चौबाइन अपने को अलग रखती हैं पति के अंतर्दाह से।

"सुना होगा कहीं से?" उनके जवाब को सवाल की शक्ल देकर, लुंगी में हाथ घुसेड़कर पिछाड़ खुजाते चौबेजी दामाद के लिए पूरी बेलती पत्नी के सिर पर खड़े हो गए हैं।

"आप ही के जैसा फुर्सत है हमको फालतू बात पर चखचख करते रहने का?" चौबाइन गुस्सा गई हैं।

"तो तुमको बोला कौन कि जब न तब पूड़ी छानने बैठ जाओ?"

"दामाद को घास खिलाइएगा?"

"दामाद अपने को बनाया है पूड़ी खाने लायक?"

"अब बेइज्जत होना बाकी है आपका। लिहाज करता है बेटवा-बेटिया सब, इसीलिए दिमाग खराब हो रहा है आपका। किसी दिन बोल देगा कुछ टेढ़-टाबूक, बस आ जाइएगा रास्ते पर।" चौबाइन भड़क गई हैं।

चौबेजी पैर पटकते हुए, अपनी गलती के अहसास से भरे, बाहर चले गए हैं।

"इन लोगों का यही हाल है रोज-रोज का।" दसवीं में पढ़ने वाली साली ने सफाई दी अपने जीजा को।

'कितने प्यार से बोलती है!' यह सफाई देते हुए, दयाशंकर को थोड़ा और सुंदर लगी वह।

"चलिए पान-वान खाते हैं, महाराज!" शाम के पांच बजते-बजते घर में बैठना असंभव हो जाता है बिनोदजी का। चितकोहड़ा की ओर निकल जाते हैं। एक पान दुकानवाला है, जिसके यहां पिछले दस वर्षों से पान खा रहे हैं। उसी के यहां पान खाते हैं और पान चबाते हुए इंतजार करने लगते हैं अपने समयकाटू साथियों का। दयाशंकर साथ हैं तो वह भी नहीं करना पड़ेगा। पान खाया जाएगा और बतियाते हुए बोटेनिकल गार्डेन की ओर निकल जाया जाएगा।

'चल दिए!' चौबेजी रोज धुआंते हैं उन्हें घर से निकलता हुआ देखकर।

"ऑफिस से जल्दीये आ जाते हैं; नहीं?" दयाशंकर ने ससुर को क्वार्टर के आगे जमीन के छोटे-से टुकड़े पर टहलते हुए देखा तो पूछा।

"इनका हाल मत पूछिए। बमभोला का बमभोला ही रह गए आज तक। एक भी काम का टेबुल नहीं भेंटाया। बोलते ही बहुत हैं! इसीलिए ऑफिसर लोग भी गुस्सा जाता होगा।" बिनोदजी को बाप की आदतें अच्छी नहीं लगतीं।

"कमाई तो जो ब्लॉक लेभेल पर है, यहां सचिवालय में क्या होगी!" दयाशंकर ने पान की पीक के साथ यह जानकारी थूकी।

"ई मत कहिए।" विनोदजी ने प्रतिवाद किया, "लूटने वाला कहीं भी लूट रहा है। केवल करमहीन नर पावत नाहीं।"

"समाज के बारे में चिंता करना भी अच्छी चीज है," खाना खाने का समय होने तक चौबेजी ने काबू में कर लिया था मन को और फैसला किया था कि प्रेम से ही समझाएंगे जमाई राजा को, "लेकिन यही देखा है हम लोगों ने कि समाज के साथ-साथ जिन लोगों ने अपने बारे में भी नहीं सोचा, कहीं के नहीं रहे। इसलिए बड़ा जरूरी होता है कि आदमी अपने भविष्य के बारे में भी सोचे।"

चौबेजी ऐसा पहली बार नहीं कह रहे। दयाशंकर को धीरे-धीरे आदत हो गई है यह सब झेलने की। ऐसी मुद्रा बनाते हैं सुनते-सुनते मानो कठिनाई हो रही हो खाना और सुनना, ये दोनों क्रियाएं एक साथ निभा पाने में।

"खाते समय बात नहीं करना चाहिए।" चौबाइन डांट देती पति को।

"एक बार चल जाए तो नेतागिरी में भी कम कमाई नहीं है।" बिनोदजी ने बताया चौबेजी को।

"तुम तो पता नहीं, कब उतरोगे जमीन पर।" बेकाबू हो गया है चौबेजी का गुस्सा, "चल जाए तो! आज तक कुछ दिखाए चलाकर?"

"खाते समय ही जरूरी है सब फरिया लेना?" चौबाइन ने आशानुरूप डांटा पति को।

"चल जाए तो...इतना सस्ता चीज नहीं है न लाइफ कि भगवान भरोसे छोड़ दिया जाए।"

'चुपचाप चेंपते जाइए।' बिनोदजी ने इशारा किया दयाशंकर को। पर दयाशंकर ने महसूस किया, कष्ट में पड़ा हुआ था बूढ़ा।

"मन लगाकर पढ़ क्यों नहीं देते एक बार?" बिनोदजी से पूछा।

"पढ़ने से कुछ नहीं होता, महाराज!" बिनोदजी ने वितृष्णापूर्वक कहा।

"होता कैसे नहीं है। हमारे गांव की एक लड़की गुनी स्कूल से पढ़कर आईआईटी में चली गई है।"

"आप क्यों नहीं चले गए?"

"जरूरी है, सब कोई चला जाए?"

"यही न बात है।" बिनोदजी ने कहा हँसते हुए। और हँसी रुकने के बाद कुछ सोचकर और भी जोर से हँसने लगे।

ससुराल में अविराम चलती रहती इस कांव-कीच के कारण वहां से भी भागने का मन करने लगता दयाशंकर का। सोचकर आते कि आराम से रहेंगे हफ्ता-दस दिन, सिनेमा-ओनेमा देखेंगे; माउंट कारमेल में पढ़ती साली से बोलेंगे-बतियाएंगे; पर दो-तीन दिनों में ही ऊब-सी होने लगती। चौबेजी हरेक शाम उनके लिए एक नए आइडिया के साथ लौटते सचिवालय से—अपना स्कूल खोल दीजिए; ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दीजिए; गेस पेपर या पासपोर्ट लिखने के काम में लग जाइए...

"घबड़ा गए न तीन ही दिन में!" बिनोदजी को फिर हँसी आ गई है उन्हें अटैची में सामान रखता देख, "सोचिए कि हम कैसे झेलते हैं बुढ्ढे को।"

"बेचारे बाबूजी..."

"बेचारे बाबूजी!" बिनोदजी पिनक गए हैं अपनी बहन यानी दयाशंकरबो के हस्तक्षेप पर—"कोई रोक रहा है कमाने से तुम्हारे बाबूजी को? साला एक-एक ठो क्लर्क है कि..."

"बाबूजी बेईमान नहीं हैं।"

"यही बात हमको बर्दाश्त नहीं होता।" बिनोदजी ने कहा, "साला किरानी होता ही क्या है जी? थर्ड ग्रेड। सेकंड भी नहीं, थर्ड ग्रेड। उसका तो काम ही है थर्ड ग्रेड

वाला काम करना। यहां फर्स्ट ग्रेड वाला फोर्थ ग्रेड का काम कर रहा है खुलेआम और इनके बाबूजी बेईमानी नहीं करते!"

अटैची में सामान रखना शुरू करते ही ससुराल की समस्याओं के बारे में सोचना भी बंद कर दिया है दयाशंकर ने।

बिक्रमगंज में एक ज्यादा बड़ी समस्या इंतजार कर रही थी उनका। मुन्नी ने इंकार कर दिया था दमयंती-विरोधी मोर्चा बंद करने से, और मंधाता मिश्र अनसुना किए जा रहे थे उसे। पता नहीं, दमयंती क्या सोचकर जमी हुई थी वहां! दयाशंकर की हिम्मत नहीं पड़ती उससे कुछ पूछने की, पर पूछना पड़ेगा। कम से कम पता तो चले, कितनी गंभीर है यह समस्या। कंट्रोल में भी है मंधाता मिश्र के कि केवल दिखावा करते हैं कंट्रोल में होने का!

मंधाता मिश्र नहीं थे बिक्रमगंज में। गांव गए हुए थे खेत-बधार का हिसाब लेने। उनके स्टडी रूम में कुछ टाइप कर रही थी दमयंती। टक्-टक् की ध्वनि ड्राइंग रूम तक पहुंच रही थी।

"देख लीजिए, कैसी सहबाइन हुई है।" मुन्नी बोली।

"झगड़ा भी करती है तुमसे?"

"हम नहीं करते, इसीलिए नहीं करती।"

"आखिर चाहते क्या हैं मंधाता मिसिर?" धैर्य चूक रहा है दयाशंकर का।

"उनका दिमाग नहीं काम कर रहा है, भइया। बर्बाद हो जाएंगे इसके चक्कर में..." रोना शुरू कर दिया मुन्नी ने।

दयाशंकर को देखते ही ठहर गई हैं दमयंती की उंगलियां। स्टडी रूम में चुप्पी छा गई है।

"कब आए?" उसने पूछा।

"आ ही रहे हैं।" कहा दयाशंकर ने।

"गांव में बहुत हलचल है; नहीं?" दमयंती ने पूछा।

"लगता है, नन्हकू का सारा किया-धरा मिट्टी में मिल जाएगा।" दयाशंकर थाह रहे हैं—वह कितना पहलेवाली दमयंती है।

"सिपाही और इंकलाब के मरने पर भी कोई कुछ नहीं बोला?"

"कहां बोला!"

"कुछ लोग कह रहे थे यहां, कुछ करना ही नहीं चाहते कुंवरपुर के साथी लोग।"

"सभी साथी अपने-अपने काम में लग गए हैं। और जो बचे हैं, कोइरी-कमकर सम्मेलन और नोनिया सम्मेलन में नौलाख महतो के पीछे-पीछे दौड़ते चल रहे हैं।"

दमयंती का बदलना साफ-साफ दिखाई दे रहा है दयाशंकर को। जटिलता आ गई है उसके व्यक्तित्व में। सोचने लगी है, क्या बोलें! या बोलें कि नहीं!

"ऊपर तो लोग ऐसी-ऐसी न बात करते हैं कि लगता है..." बात अधूरी छोड़कर

दयाशंकर का मुंह देखने लगी है वह। उसने देख लिया है, उसकी बातों पर ध्यान नहीं है दयाशंकर का; कहीं और है।

"असली बात जानती हो, क्या है? मंधाताजी भी जिक्र करते रहते हैं अक्सर। जिसे दुःख हो, मुक्ति के लिए लड़ भी वही सकता है। हमको लगता है, हमारे जैसे लोगों के पास सच्ची अनुभूतियां ही नहीं हैं। हम लोग वैचारिक कवायद करने में लग जाते हैं। कुछ समय के बाद यह भी लगने लगता है कि अहसान कर रहे हैं दलितों पर। बहुत जल्दी आत्म-तुष्टि और महानता के अहसास से भर जाते हैं।"

दयाशंकर असाधारण रूप से खरी-खरी बातें कर रहे थे। दमयंती क्या बोले!

ऐसा अक्सर होता है उसके साथ। कुछ अबूझ-अनजान कारणों से खुद को महत्त्वहीन, दिशाहारा और पथभ्रष्ट मानने लगती है वह। उदास हो जाती है। वसुधा कुढ़ जाती थी उसकी भावुकता पर।

"वसुधा तो बहुत बड़ा आदमी बन गई; नहीं?" उसने हठात् पूछा।

"हां, बन गई।" उसकी आंखों में झांक रहे थे दयाशंकर।

"तुम क्या सोच रही हो?" पूछा।

"कौन? हम?" उदासी के अंधेरों में धंसती चली जा रही थी दमयंती। उन्हीं अंधेरों में चौंकी।

"मुन्नी अंट-शंट बोलती रहती है, पर हम ध्यान नहीं देते।" आंखें नीची किए हुए बोले जा रहे हैं दयाशंकर—"हमको बस एक ही बात की चिंता है कि गांव का, खासकर रामगिरिही का विश्वास नहीं टूटना चाहिए। और तुमको भी सोचना है, आगे क्या करना है..."

वार किया जा चुका था। दमयंती के मन में यह धड़का लगा रहता था कि दयाशंकर एक दिन, किसी एक दिन उससे पूछेंगे यह सवाल—'जो मुन्नी कह रही है, सच है क्या?' मन ही मन न जाने कितने ही तरीकों से वह जवाब दे चुकी है इस सवाल का। डपटकर कह चुकी है कि जो खुद शीशे के घरों में रहते हों, उन्हें दूसरों पर पत्थर नहीं उछालना चाहिए। उद्दंडतापूर्वक डांट चुकी है कि वह कैसे जीती है, इस संबंध में फैसला करने का अधिकार केवल उसी को हो सकता है, दयाशंकर-फंकर को नहीं। उद्धत फेमिनिस्ट की तरह घोषणा कर चुकी है कि अगर ऐसा है तो क्या हर्ज है? मुन्नी ही क्या करती है? बिस्तर ही तो गर्म करती है मंधाता मिश्र का! वरना ऐसी शादी का क्या तुक है? वह भी अपने फायदे के लिए एक खेल खेल रही है। स्वार्थ सध जाएगा, खेल खत्म हो जाएगा! दीन-हीन बनकर, सिर झुकाकर कातर याचना कर चुकी है कि मंधाता मिश्र ने उसकी मजबूरी का फायदा उठा लिया तो वह क्या करती? कभी-कभी अपने खयालों में वह लालची कुतिया भी बन चुकी है, जो बार-बार दुत्कारे जाने के बावजूद जूठे बर्तन चाटने के लिए जिद्द किए हुए हो...

"मुन्नी आज से अंट-शंट बोल रही है? स्कूल में ही चमटोली की लड़कियों को जामुन का झोंप कहकर चिढ़ाती थी।"

दयाशंकर को धक्का लगा इस जवाब से। वह कह रही थी, समझाना है तो अपनी मुन्नी को समझाइए।

"इसीलिए तो कह रहे हैं कि मुन्नी के बोलने का..."

"मुन्नी के बोलने पर ही आए हैं आप, पता है हमको। और आपको चिंता भी केवल मुन्नी की है।" अप्रत्याशित रूप से आक्रामक हो गई थी दमयंती।

"ऐसा ही सोचती हो तुम, तो चलो मान लेते हैं, केवल मुन्नी की चिंता है हमको।" अकबकाए-से दयाशंकर ने कहा, "लेकिन इसमें गलत क्या है?"

"गलत कैसे नहीं है?" दमयंती का पूरा अस्तित्व मानो सुलग उठा है, "ठीक क्या है इसमें? मर्द के दूसरी औरत के साथ हेलमेल का इतना ही दुःख होता मुन्नी को तो दोआह से शादी करती? ऐसा कोई दुःख नहीं है उसको। दुःख केवल यह है कि दमयंती कैसे पढ़-लिख रही है, आराम से रह रही है! हमारा कुर्सी पर बैठना खराब लगता है। साफ-सुथरा रहना खराब लगता है। आपकी बहन है तो आप जो कहें, मुन्नी जैसी औरतें कलंक हैं मानवता के नाम पर।"

"और तुम?" दयाशंकर भी उत्तेजित हो गए हैं, "हम बात करना चाहते हैं प्रेम से और अंड-बंड बके जा रही हो! तुमको अच्छा लगेगा कि तुम्हारा मर्द किसी दूसरी औरत को रखनी रख ले?"

"रखनी मत बोलिए हमको।" चीख पड़ी है दमयंती, "नहीं तो..." आंखों की ज्वाला में समा गए बाद के शब्द।

"हम कहां बोल रहे हैं कुछ? जो भी बोल रही हो, तुम्हीं बोल रही हो।" दयाशंकर ने सम्हाल लिया है अपने-आपको। सिर झुकाए हुए, आहत आदमी की मुद्रा बनाए बैठ गए हैं।

क्रोध की आग के धीरे-धीरे ठंडा होने पर अंदर राख का उड़ना महसूस कर रही है दमयंती। अपना उत्तेजित हो जाना भी बुरा लग रहा है उसे।

"देखे न इसको?" स्टडी रूम से आती आवाजें सुनकर पता नहीं कब मुन्नी आ धमकी थी वहां—"देख लिए न, कितना बढ़ गया है इसका मन?"

"तुम जाओ तो यहां से।" दयाशंकर गरजे।

"अभी तो हम इसका सब बात ही नहीं बताए हैं। बिना चोली का ब्लाउज पहनके ये..."

"मुन्नी!" मुन्नी अपनी बात पूरी कर पाती, उसके पहले ही चीख पड़े दयाशंकर, "तुम जाओ यहां से, नहीं तो हम जाते हैं।"

मुन्नी चली गई तो चुप्पी छा गई कमरे में।

"तुम्हारा यहां रहना ठीक नहीं है, दमयंती।" दयाशंकर का निश्चयात्मक स्वर।

"कहां रहना ठीक है?" दमयंती की हठी प्रतिक्रिया।

"यही सब सोचकर आई थीं यहां?"

"तो बताइए न, कहां रहना ठीक है?"

"अपने गांव चली जाओ।"

"गांव पर ठीक है सब कुछ? डेढ़ बिगहा गैरमजरुआ जमीन के लिए जान चली गई सिपाही की, ठीक है यह?"

"हमको नहीं बुझा रहा, क्या कह रही हो तुम।"

"गांव पर जो ठीक है, वही कह रहे हैं...और क्या कह रहे हैं! गांव जाकर आप लोगों के यहां गोबर पाथने लगें, गूह काछने लगें, तब ठीक है...नहीं?"

"ठीक नहीं है, इसका मतलब यह तो नहीं हुआ न कि जबरदस्ती घुस जाओगी किसी के घर में?" दयाशंकर ने यह बात हँसते हुए कही।

दमयंती को लगा, किसी ने थूका है उसके मुंह पर और न तो वह थूक पा रही है थूकनेवाले के चेहरे पर, न अपने चेहरे का थूक पोछ पा रही है।

"हम अपना स्वार्थ भी निश्चित रूप से देख रहे हैं, झूठ नहीं बोलेंगे; लेकिन पता नहीं क्यों, मन में एक बात बैठी हुई थी कि तुम्हारे अंदर माद्दा था संघर्ष करने का।" दयाशंकर कह रहे हैं, "लेकिन जो हो रहा है, हमको डर है, तुमको कमजोर न बनाता चला जाए।"

दयाशंकर चले गए हैं कमरे से। उसे अकेला छोड़कर। दमयंती को डर लगने लगा है अपने भीतर के कोलाहल से। दयाशंकर ने जो कहा, कल सभी कहने लगेंगे। वह इसीलिए तो नहीं आई थी मंधाता मिश्र के साथ? तो क्यों आई थी? दमयंती याद करना चाह रही है—उसने क्या सोचा था मंधाता मिश्र के साथ चल पड़ने के बाद? उनके घर पहुंच जाने के बाद? क्या सोचा था? क्यों अच्छा लगने लगने लगा था मंधाता मिश्र का आश्रय? मुन्नी को हराना चाहती थी; कि कुंवरपुर नहीं लौटना चाहती थी; कि तैयारी कर रही थी एक विकट संघर्ष की; कि खेल रही थी मंधाता मिश्र के हाथों में? दमयंती जूझती रहेगी इन सवालों से।

दमयंती जूझती रहती है इन सवालों से।

"तुम कुछ भी बोलीं तो ठीक नहीं होगा।" मुन्नी को चेताकर बाहर निकल गए हैं दयाशंकर। मन ही मन डरे हुए भी हैं दमयंती से कि कहीं पीछा करते हुए ड्राइंग रूम तक नहीं आ जाए। मुन्नी के सामने ही यह घोषणा न कर दे कि नहीं जाएगी वहां से। वहीं रहेगी। जबर्दस्ती समाज जब जबर्दस्ती उसे बना सकता है अछूत, तो वह क्यों नहीं कर सकती जबर्दस्ती? उसे भी तो जबर्दस्ती ही भूमिहीन बना दिया था समाज और परंपरा ने? तो वही क्यों सोचे न्याय और औचित्य की बातें? न्याय की ही चिंता है किसी को तो पहले मंधाता मिश्र को पहनाए हथकड़ियां—दो-दो बीबियां रखने के लिए!

दयाशंकर के मन में बोल रही थी दमयंती। दयाशंकर को जवाब नहीं सूझ रहा था उसके सवालों का।

"क्या जी, दिखा दिए न अपना असली रंग?" बाजार से लौटे तो मंधाता मिश्र को इंतजार करते पाया अपने लौटने का, "आपको किसने दिया था यह अधिकार कि हमारे घर में घुसकर हमारे घर की एक महिला का अपमान करें?"

इसका मतलब कि घर में पांव रखते ही मंधाता मिश्र को उन दोनों के बीच हुई बातचीत का पूरा ब्यौरा सुना दिया था दमयंती ने। यह तो गजब का दुस्साहस हुआ!

"आपको किसने यह अधिकार दिया है कि अपनी पत्नी का अपमान करें?"

"क्या मतलब?"

"मतलब भी नहीं समझ पा रहे आप?"

"अरे महाराज, आप लोग दूसरों के बारे में सोचना कब सीखिएगा?" मंधाता मिश्र उत्तेजित हैं, "अपना काम सूतार करने के लिए उस बच्ची की जिंदगी बर्बाद कर देना चाहते हैं? कुछ सोचा है, कहां जाएगी?"

"आपके पास नहीं आई थी तो कहां थी?" दयाशंकर को बुरा लगा मंधाता मिश्र का इस तरह उखड़ जाना।

"तो कान खोलकर सुन लीजिए और आपकी गोबर की चोत बहनजी भी सुन लें। दमयंती कहीं नहीं जाएगी। यहीं रहेगी।" क्रोध के कारण हांफने लगे हैं मंधाता मिश्र, "जिसको बुरा लग रहा हो उसका रहना, जा सकता है यहां से।"

"जैसी इच्छा आपकी।" कहा दयाशंकर ने और अपने कमरे में चले गए।

"आपको हमसे बात करनी चाहिए थी पहले?" मंधाता मिश्र भी आ गए हैं पीछे-पीछे।

जवाब नहीं दिया दयाशंकर ने।

"अब मुंह मत फुलाइए।" गुस्सा ठंडा हो गया है मंधाता मिश्र का—"कुछ काम का बन जाने दीजिए बेचारी को।"

"जैसी आपकी इच्छा!" फिर कहा दयाशंकर ने।

"खिसियाइए मत...बड़ी दुःखी है बेचारी। पता नहीं, क्या सुना आए आप।"

मुन्नी चाय लेकर आई थी कमरे में। खुश थी। दमयंती तक पहुंच गया था संदेश कि यह घर उसका नहीं था।

"आप दबाव में तो नहीं न हैं किसी तरह के?" मुन्नी बाहर चली गई तो पूछा दयाशंकर ने।

"भावनात्मक रिश्ते का दबाव दबाव नहीं होता?"

"होता है।"

"तो बस वही है।"

"लेकिन सारा काम बिगाड़ दिया आपने। हमसे भी झगड़ा करवा दिए।"

"यह काम तो आपने बहुत गलत किया। बहुत जिद्दी और जुझारू लड़की है। कोई दूसरा होता तो आंखें निकाल लेती।" मंधाता मिश्र ने कहा, "दोबारा नहीं होना चाहिए। और भरोसा दिलाते हैं आपको कि मुन्नी को कोई शिकायत नहीं होगी।"

दयाशंकर के अंदर ऊर्जा नहीं बची इस मुद्दे पर और बहस करने की। उनसे जो हो सकता था, किया उन्होंने। अब मुन्नी जाने और उसका भाग्य! उसके भाग्य में तीन पत्नियों वाला पति ही लिखा हो तो दयाशंकर क्या कर सकते हैं!

12

गुनी के पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर अपूर्व अभिषेक को रामप्रवेश चौधरी के बैठके में यह बताने के लिए बुलाया गया था कि विधायक महोदय बैंक के कामकाज से नाममात्र को भी संतुष्ट नहीं थे।

बैठके में भारी भीड़ जमा थी। उतने ही लोग बैठके के बाहर जमा थे। इस नए मैनेजर ने जो सबसे बड़ी हिमाकत की थी, वह यह कि बैंक में ज्वाइन करने के बाद मिलने तक नहीं आया था माननीय विधायक महोदय से। रामप्रवेश चौधरी के अनुगत खासे चिंतातुर थे कि ऐसी हालत में भला कैसे जिंदा रह सकता था जनतंत्र!

जिन दिनों जे.एन.यू. में पढ़ते थे अपूर्व अभिषेक, उन्हें लगता था कि कोई मजाक करने की चीज जैसी चीज होते हैं विधायक, लेकिन रामप्रवेश चौधरी के बैठके में घुसते हुए डर लग रहा है उन्हें। बैठके के बाहर खड़े गंदे-गदबदे लोग अजीब-सी आंखों से घूर रहे थे उन्हें। डरावना-सा कौतूहल का भाव चमक रहा था उनकी आंखों में। मैनेजर साहब अनुमान नहीं लगा सके कि बैठके के अंदर जमा कौन-सा खद्दरधारी रामप्रवेश चौधरी था, सो बैठके में बैठी भीड़ की तरफ अभिवादन की मुद्रा में हाथ उठा दिया और एक खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गए।

बैठके में चुप्पी छाई हुई थी।

"आप ही हैं?" एक डांटती हुई-सी आवाज ने उन्हें बताया कि रामप्रवेश चौधरी वही हैं।

"जी, हमीं दो महीने पहले...."

"लगता है, आप विधायक पद की गरिमा से परिचित नहीं हैं?" उसी आवाज ने पूछा।

"जी...ऐसा तो नहीं है...आज के पहले किसी विधायक ने..."

"भाषा ठीक कीजिए अपनी।" वह आवाज अचानक चार गुनी ऊंची होते हुए बैठके के बाहर तक दौड़ लगा आई, "विधायक नहीं, माननीय विधायक!"

मैनेजर साहब का चेहरा भक्क से लाल हो गया इस सार्वजनिक अपमान से और उन्हें लगा, अब वे चाहकर भी कुछ नहीं बोल पाएंगे।

"एऽऽ मैनेजर साहब, नहीं जानते हैं तो सुनिए। अच्छे-अच्छे लोग, बहुत अच्छे-अच्छे लोग, जिनके आगे खड़ा होने में आपका गोड़ थरथराता होगा, कांपने लगते हैं। विधायिका कोई खेल चीज नहीं है।" रामप्रवेश चौधरी ने बैठके में जमा भीड़ की ओर निगाह फेंकी—कैसा रहा!

भीड़ देख रही थी कि मैनेजर साहब, जो उनके सामने एक लाइन बोलते थे तो दू गो अंगरेजी शब्द का छौंक लगाना नहीं भूलते थे, एकदम साफ तौर पर चूहा बन गए थे और उनके मुंह से बकार नहीं फूट रही थी। डरा हुआ स्कूली बच्चा जैसे देखता है अपने हेडमास्टर को, रामप्रवेश चौधरी को देख रहे थे। कोई एक कप चाय रख गया

था उनके आगे। उन्हें दिखाई नहीं पड़ा था।

"चाय पीजिए।"

मैनेजर साहब चाय पीने लगे। अगर आवाज आती, 'झाड़ा फिरिए' तो शायद वहीं झाड़ा फिरने बैठ जाते।

खैर, जिसने डराया था, उसे ही लगा, थोड़ा कम किए जाने की जरूरत थी डर को।

"देखिए, क्या नाम बताया था आपने...अपू...अपूर्वजी, आप लोग पढ़े-लिखे आदमी हैं। खुद ही समझना चाहिए। पूरे इलाके में तहलका मचा हुआ है मैनेजर साहब के नाम का और बेचारा विधायक दर्शन के लिए तरस रहा है।" रामप्रवेश चौधरी थोड़ा विहँसे ऐसा बोलकर तो भीड़ भी विहँसी।

मैनेजर साहब के चेहरे पर भी मुस्कान की एक पतली रेखा उभर आई।

इतना कुछ हो जाने के बाद गौर किया मैनेजर साहब ने कि भीड़ बिल्कुल अजनबी नहीं थी। उद्योग विभाग के उपनिदेशक बैठे हुए थे वहीं; बी.डी.ओ. साहब भी मौजूद थे।

"पी.एम.आर.वाई. का क्या हो रहा है?" चौधरीजी ने माहौल को एक अलग अंदाज की गंभीरता देते हुए पूछा।

"थोड़-मोड़ा प्रोबलेम है, सर, लेकिन हम लोग..."

"हम लोग माने कौन?" चौधरीजी ने ठहरी हुई ठंडी आवाज में पूछा, "मनोरमा मिश्र? बूटन राय? कौन-कौन शामिल है इस हम लोग में?"

"हम तो सर, जो आवेदन पत्र आते हैं, उनकी जांच-पड़ताल कर..."

"सुनिए, सुनिए! ई जो भीड़-भड़क्का देख रहे हैं न आप...और बाहर जो लोग दुआर अगोरकर बैठे हुए हैं, जानते हैं, किस काम के लिए?...लोन चाहिए...सरकारी नौकरी चाहिए...रोजी-रोटी कमाने का उपाय चाहिए...और यह सब कौन देगा इन्हें... विधायक देगा...नहीं तो विधायक बहिनचोद..."

बैठके में हँसी की एक लहर दौड़ गई रामप्रवेश चौधरी के ऐसा कहने पर।

"हँसिए मत!" डांटा उन्होंने, "हँसिए मत। यह हँसने की बात नहीं है। आपको सच्चाई बता रहे हैं हम। जब से लौटे हैं राजधानी से, हमारा कपार खा गई है पब्लिक कि गुनी में बस दो ही तरह के लोगों का काम हो रहा है—या तो जो मनोरमा मिश्र या बूटन राय का आदमी हों या जो घूस देने को तैयार हों। बोल छोड़ा जा रहा है हमारे ऊपर कि तब आप विधायक काहे के लिए बने हैं?"

रामप्रवेश चौधरी के मुंह में गाज भर गई थी बोलते-बोलते। मुंह पोछा गमछे से और अपनत्व-भरी गहरी नजर से देखने लगे भीड़ को।

उनके मुंह की गाज देखकर मुंह में थूक भर आई थी मैनेजर साहब के, पर घोंट गए जी कड़ा करके।

"आपसे तो खैर, किसी को कहां हिम्मत है कुछ कहने की, पर हम लोगों से जरूर कहता है कि गुनी में सरकार भले बदल गई हो, शासन मनोरमा मिसिर का ही

चल रहा है।'' भीड़ में शामिल नौलाख महतो ने कहा।

''हम तो, सर, जिला मुख्यालय में बनी कमिटी से जो नाम आते हैं; उन्हीं को लोन दे रहे हैं...फील्ड-इंक्वायरी भी करते हैं...''

''सभी के सभी लाभार्थी योग्य उम्मीदवार थे?''

''ई का कहेंगे, काका...परमान है हमारे हाथ में कि जिसके घर में ट्रैक्टर भटभटा रहा है, उसको भी लोन मिला है...हिम्मत हो तो कह दें कि नहीं मिला है!''

''अरे साला नालायक सब। जब हम बतियाइये रहे हैं तो काहे को कूद गया बीच में?'' उखड़ गए चौधरीजी—''ढेर अक्किल हुआ है तो तुम्हीं बतियाओ। हम चुप हो जाते हैं। साला कल्चर नाम का कोई चीजे नहीं रह गया...अब देखिए न, हम जानना चाह रहे थे कुछ और ई बीचे में भांड़ दिया।''

रामप्रवेश चौधरी खिन्न दिखाई दे रहे थे, मानो याद करने की कोशिश कर रहे हों कि क्या पूछा था?

''उम्मीदवारों की योग्यता के संबंध में यह जाना जाए कि जिला स्तरीय कमिटी उम्मीदवारों की सूची पर तभी विचार करती है, जब नीचे से रिपोर्ट आती है।'' उद्योग विभाग के उपनिदेशक को डर लगा कि डरा हुआ मैनेजर कहीं सारा दोष उनके विभाग पर ही न मढ़ दे।

''बहुत बार नीचे से अनुकूल रिपोर्ट नहीं जाती, फिर भी नाम अनुशंसित होकर आ जाता है।'' मैनेजर साहब ने बताया।

''बहुत बार नीचे से गलत रिपोर्ट भी चली जाती है अनुशंसा के लिए।'' उपनिदेशक ने कहा।

''तो उसमें भी तो आपके एक्सटेंशन ऑफिसर होते ही हैं।'' एकदम आक्रामक हो गए मैनेजर साहब। उन्हें लगा, उपनिदेशक चालाकी से सारा दोष उनके मत्थे मढ़कर जान छुड़ा लेने के चक्कर में था। छोड़ना नहीं था साले को।

''आप भी मैनेजर साहब, तू-तू मैं-मैं करने लगे।'' उपनिदेशक ने स्थिरतापूर्वक कहा, ''कहां कह रहे हैं हम कि हमारे विभाग के लोग जवाबदेह नहीं हैं। अगर सभी सही ढंग से ही काम करते तो सर जिस समस्या का जिक्र कर रहे हैं, होती ही नहीं।''

''तो हम कहां कह रहे हैं कि कहीं भी कोई गड़बड़ी नहीं है; लेकिन दोष जिन परिस्थितियों में हम लोग...''

''पहाड़ा मत पढ़ाइए, ए मैनेजर साहब! परिस्थिति को खराब करने कोई विदेश से आया है? सब आप ही लोगों का किया-धरा है।'' रामप्रवेश चौधरी अब आराम से इन तिलचट्टों को कह सकते हैं तिलचट्टा। सोने के हिरण का रूप त्यागकर दोनों ही अपने असली रूप में आ गए थे उनके सामने।

''आपसे तो, सर, वैसे भी कुछ छिपा हुआ नहीं है। धांधलियां हर स्तर पर हुई हैं। गलती हम लोगों से ही हुई कि अपने आचरण से हम लोगों ने यह भ्रम पैदा किया कि आपसे छिपाकर काम करना चाहते हैं हम लोग।'' उपनिदेशक ने विश्वास और

बेतकल्लुफी के साथ कहा। वह मैनेजर साहब की तरह डरा हुआ भी नहीं था।

"अब इस गलती के लिए जो भी सजा उचित समझी जाए, वह सजा दी जाए।" रामप्रवेश चौधरी को चुप देखकर अपनी बात पूरी की उपनिदेशक ने।

रामप्रवेश चौधरी चुप हैं। लोगों की समझ में नहीं आ रहा कि अचानक चुप क्यों हो गए विधायकजी? अपने अधिकारियों के आचरण और पी.एम.आर.वाई. की दुर्गति देखकर सदमे की हालत में तो नहीं थे! लेकिन जो जानते हैं रामप्रवेश चौधरी को करीब से, उन्हें मालूम है कि चुप होकर वे मौका दे रहे थे उपनिदेशक और मैनेजर को कि दोनों खड़े हो जाएं अपना-अपना चूतड़ उघारकर। तब फैसला करेंगे रामप्रवेश बाबू कि थूक लगाया जाए उसमें कि सीधे बांस कर दिया जाए।

"अजीऽऽ! इसका साफ मतलब तो यही न हुआ कि पी.एम.आर.वाई. के नाम पर छीनरझप्प मचा हुआ है हमारे यहां?" चौधरीजी ने समझाए गए को और ठीक से समझने की मुद्रा अपनाई।

"अब, सर, यही रिक्वेस्ट है कि क्रोध छोड़ा जाए और आदेश दिया जाए कि आगे क्या करना है।" मैनेजर साहब को आश्चर्य हुआ कि उनके अंदर से आई थी यह आवाज। किसी ने सिखाया नहीं था उन्हें बोलने का यह तरीका। अपने-आप पैदा हो गया था भीतर से। और शायद यही वह भाषा थी, जिसे सुनना चाहते थे रामप्रवेश चौधरी।

"कोई आदेश-ओदेश नहीं देना है हमको। केवल एक बात बतानी है आपको! ध्यान से सुन लीजिए...मन करे तो लिख लीजिए...हम नहीं कहेंगे कि इसको दीजिए, उसको दीजिए...लेकिन एक भी आदमी को नियम-विरुद्ध तरीके से दिया गया कुछ तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा..."

बोलते-बोलते ही खड़े हो गए रामप्रवेश चौधरी।

'चलिए चलते हैं।' इशारा किया मैनेजर साहब ने। उपनिदेशक ने उपेक्षा कर दी इशारे की और जाकर चौधरीजी के पीछे खड़ा हो गया। मैनेजर साहब उसे वहां अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे चौधरीजी के साथ, पर कितनी देर तक खड़े रहते। दोनों हथेलियों को जोड़कर प्रणाम किया चौधरीजी को और प्रणाम करने के उनके बदले हुए तरीके को देखकर मुस्कराती भीड़ को अनदेखा करते हुए बाहर आ गए बैठके के।

"आप तो एकदम दिल से बुरा मान गए जी...मुंह लाल हो गया है..." अवधेश चौधरी भी चले आए हैं उनके पीछे-पीछे, "भइया मनोरमा मिसिर जइसा जलीहा आदमी नहीं हैं। केवल यही चाहते हैं कि उनके क्षेत्र में बढ़िया काम हो।"

मैनेजर साहब का मन नहीं हो रहा रामप्रवेश चौधरी का भाषण सुन चुकने के बाद अवधेश चौधरी का भाषण सुनने का। बिना कुछ बोले बढ़ते गए।

"देखने से तो गऊ आदमी लगता है जी?" रामप्रवेश चौधरी ने सोफे पर पसरते हुए कहा।

"भीतर से घईंचट है।" जिस बात का डर था मैनेजर साहब को, वही शुरू हो गया था। उनकी खटिया खड़ी करने में जुट गया था उपनिदेशक—"हमारा कहना है कि

एक बार ले लिए तो किसी केस में फिर मांगना ठीक नहीं है...पर ई जवान ऐसा जाल फैलाता है कि...लोन तीन किश्तों में देने का नियम था तो इसने पांच किश्तों में देने का नियम बना दिया...माने कि पार्टी को पांच बार इसके पास आना पड़ेगा और पांच बार कमीशन देना होगा!"

रामप्रवेश चौधरी मुस्करा रहे हैं। अच्छा लग रहा है देखकर कि कैसे-कैसे लोग कितने छोटे हो गए हैं उनके सामने।

पी.एम.आर.वाई. को लागू हुए कुछेक साल हो गए थे, पर जैसी उत्तेजना इस साल व्याप्त हो रही थी जवार में, पहले कभी नहीं हुई थी। यह जानकारी मिलने के बाद लोग बेहद उतावले हो उठे थे कि बिना कुछ किए ही एक लाख रुपया ले लेना था और चट कर जाना था। आई.आर.डी.पी. से हजार गुना अच्छी थी यह योजना। लोग लालायित थे इस योजना के लाभार्थियों की फेहरिस्त में अपना नाम लिखवाने को।

"का मुंशीजी, अब परनामोपाती का जवाब नहीं दीजिएगा?"

'मुंशीजी!' मैनेजर ने घूमकर देखा। आवाज उन्हीं को दी गई थी।

घूमकर देखा, नारद सिंह की टोली जमी हुई थी चाय की दुकान में। सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

"हमीं बोले कि 'मुंशीजी' बोलकर देखो कि जवाब देते हैं कि नहीं मैनेजर साहब।" नारद सिंह ने कहा, "हम लोगों के यहां पहले कायथ लोगों को मुंशीजी बोलने का ही रिवाज था।"

"कुछ बात थी?" पूछा।

"आदमी से आदमी केवल कोई बात होगी, तभी बात करेगा? आप भी हद्द करते हैं, मैनेजर साहब।" कहा गया।

मैनेजर की समझ में नहीं आया क्या कहें तो चुपचाप इंतजार करने लगे कि वही कहें कुछ।

"चाय पीने के लिए बुला रहे थे। सोचे, आज मैनेजर साहब के साथ चाय पिया जाए।" नारद सिंह बोले।

नन्हकू सिंह की हत्या की पूरी जिम्मेदारी नारद सिंह ने अपने ऊपर ले ली थी और हीरो बन गए थे। चेले-चपाटियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो गई थी। भूमिहार-बहुल गांवों तक में पूछ होने लगी थी। बूटन राय बहुत गंभीरतापूर्वक सोचने लगे थे कि भूमिहारों के बीच से कोई रंगबाज पैदा नहीं किया गया आनन-फानन तो कहीं उनके वोट बैंक पर भी काबिज न हो जाए यह आदमी। रामप्रवेश चौधरी भी ऊपरी तौर पर तो पीठ ठोक रहे थे नारद सिंह की, पर आशंकित थे कि उसका खौफ ही नियामक न बन जाए इलाके की राजनीति का।

"नारद सिंह को एकदम बेलगाम छोड़ना भी ठीक नहीं रहेगा, शालिग्राम बाबू! हड़काते रहना होगा बीच-बीच में।" गुनी के दारोगा को सलाह दे रखी थी, पर मैनेजर

साहब के साथ जो हो रहा था बीच गुनी में, प्रमाण था कि उनकी सलाह पर अमल करने का काम नहीं किया गया था या अगर किया था दारोगा ने तो नारद सिंह उसकी परवाह नहीं करने का काम कर रहे थे।

"चलिए, ठीक है। आज यहीं पी जाए चाय।" मैनेजर साहब ने दरियादिली दिखाई। मोटर साइकिल खड़ी की स्टैंड पर और आकर बेंच पर बैठ गए।

"अच्छा तो हम सुने हैं कि कहां तो, साउथ इंडिया में, अपने नाम के साथ बाप का नाम भी लगाया जाता है। आपके मामले में तो यही बात नहीं है न?" नारद सिंह ने पूछा मानो यही पूछने के लिए उन्हें रोका था।

"नहीं, नहीं। बस शौक से रख लिया है।"

"ईहो मत कहिए कि शौक से रखा है।" श्रीभगवान सिंह टपके हैं बीच में, "कायथ सब सुरूये का उस्ताद है। देखा कि नान्ह जात का राज आ रहा है तो टाईटिले उड़ा दिया। नामे ऐसा रख लो कि सार लोग जहुवा जाएं।"

उनकी इस बात पर बहुत देर तक कहकहा गूंजता रहा मड़ई में।

सभी हँसे तो मैनेजर भी हँसे उनके साथ।

"एगो काम है, ब्रदर!" कहकहा थमा तो नारद सिंह ने कहा।

"बताइए।" मैनेजर मिमियाए।

"अच्छा छोड़िए, पहले ई बताइए कि आपको ब्रदर कह सकते हैं कि नहीं?"

मैनेजर को लगा, मैनेजर नहीं, कोई मुसटी थे वे, जिसके साथ खेल रहे थे बिल्ली के बच्चे। गीज रहे थे।

"अभी तो आप ही न बोले आदमी और आदमियत वाली बात।"

"तब ठीक है। दुःख नहीं रहना चाहिए मन में।" नारद सिंह ने काफी प्रयास के बाद सीखा है बातें करते समय चेहरे को इस प्रकार भावहीन और निष्पंद बना लेना कि झेंप जाए सामनेवाला, "दू-चार गो लड़का है अपना...कुछ दिला दीजिए ऊ सबको। खाए-पकाए बेचारा सब...नौकरी-चाकरी, आप जानते ही हैं, मिलिए नहीं रहा है...ईहो चार पइसवा नहीं मिलेगा तो क्या करेगा...चोरी-छीनारी करने लगेगा..."

"असल में ये लोग सीधी-सी बात नहीं समझते कि लोन मिल जाए तो उसका ठीक से उपयोग कर कोई काम-धंधा शुरू करें।" दाता के अधिकार भाव से बोले मैनेजर, "पैसा भी खर्च हो जाता है और डेवलपमेंट भी नहीं होता।"

"अरे, ई सब अभागा है, अभागा! समझे कि नहीं, ब्रदर?" बतकही के प्रति उपेक्षा का भाव छप गया है नारद सिंह के चेहरे पर, "ऐसा ही समझदार होता तो पढ़-लिखकर कुछ बन नहीं जाता? अपना हिसाब-किताब मिला लीजिए और जो बन पड़ता हो, दे दिलाकर छुट्टी कीजिए...आगे ई सबका भाग्य..."

"और एगो और बात है।" श्रीभगवान सिंह ने कहा, "दयाशंकरा को सटने मत दीजिए। दोगला है। हम सुने हैं कि बैंक का चक्कर लगा रहा है।"

"छोड़ो न यार।" नारद सिंह ने डपट दिया श्रीभगवान सिंह को और डपटते

हुए ही राइफल का लाठी की तरह इस्तेमाल करते हुए खड़े हो गए, "इनसे ज्यादा इनका भला-बुरा तुम्हीं समझ सकते हो? तुमसे ज्यादा खोपड़ी है मैनेजर साहब को।"

"सरकारी कार्यालय तो सार्वजनिक जगह है, कोई आ सकता है, लेकिन इस आदमी को तो ठीक से जानते भी नहीं हैं हम।" नारद सिंह ने सफाई नहीं मांगी थी, पर सफाई पेश करना जरूरी लगा मैनेजर को, "आता होगा, पर..."

"अरे हां जी, ब्रदर...ई श्रीभगवान सिंह आपके छान्ही पर होरहा लगाने के चालाकी में हैं।" नारद सिंह ने कहा और देह भांजते हुए बाहर चले गए। आर्मडा में सवार हुए और चलते बने।

मैनेजर नर्वस थे, क्योंकि झूठ बोल रहे थे। मंधाता मिश्र के मार्फत दयाशंकर से परिचय हुआ था उनका और चूंकि वे खुद भी अंग्रेजी साहित्य से एम.ए. थे, दयाशंकर के साथ बोल-बतिया लेते थे साहित्य-ओहित्य के बारे में। चाय-वाय भी पिला देते थे। बातचीत के दौरान तो कभी दोगला नहीं लगे थे दयाशंकर, पर अगर कह रहे थे श्रीभगवान सिंह तो होंगे। सावधान रहना होगा आगे। वैसे, यही साले कौन कहें कि कम बड़े दोगला हैं। आदमी और उदबिलाव के बीच की चीज तो हैं ही।

"यही धंधा हो गया है ई सबका।" चायवाले को दया आ गई है मैनेजर साहब पर, "आप दीजिएगा, उसमें से आधा यही लोग झटक लेगा।"

अचानक जैसे पूरी तरह नंगा हो गए होने का अहसास हुआ मैनेजर को।" पैसा मिला कि नहीं?" पूछा और उसकी 'हां' को जैसे-तैसे सुनते हुए मोटरसाइकिल बैंक की ओर दौड़ा दी।

किसी-किसी दिन होता है ऐसा कि कोई उलझन, जो लंबे समय से परेशान किए हुए रहती है, अचानक सुलझ जाती है। मैनेजर साहब के साथ भी ऐसा ही हो रहा है आज। जैसे-जैसे रफ्तार पकड़ रही है हीरो होंडा, अपना दिमाग आश्चर्यजनक रूप से निर्भार होता लग रहा है उन्हें। पता नहीं कहां दुबका हुआ था यह पुरसुकून खयाल कि अचानक उग आया था। बैंक के सामने मोटर साइकिल खड़ी करने तक तस्वीर पूरी तरह से साफ हो चुकी थी उनके जेहन में। दोगलों के साथ दोगला ही बन जाना होगा। जब साले सभी लूटने-खसोटने के ही चक्कर में थे तो यही सही। अपना हिस्सा नहीं छोड़ेंगे मैनेजर। उतर ही गए पानी में तो कमल का फूल लिए बिना नहीं लौटेंगे। चढ्ढी भीगती हो तो भीगे!

बैंक के कर्मचारी भी हैरानी-भरी आंखों से देख रहे हैं सिकुड़े हुए गोल होठों के छोटे-से छेद से कोई मीठी धुन निकालते मैनेजर को। जब से पी.एम.आर.वाई. के लाभार्थियों के चयन की प्रक्रिया शुरू हुई थी, मैनेजर को उन्होंने हमेशा घबराया हुआ देखा था। आज क्या हो गया कि...!

मैनेजर सीटी बजाते हुए सीधे अपने चैंबर में दाखिल हो गए हैं। उनका मन कर रहा है कि जोड़ें कि लाभार्थियों को दी जाने वाली कुल ऋण की राशि का आधा कितना होना है। टेबुल के डॉअर से कैलकुलेटर निकाला और जोड़ने लगे। एक नई उलझन

खड़ी हो गई। कमीशन आधा कर दें तो ज्यादा लगने लगे और एक चौथाई कर दें तो कम। पता नहीं क्यों, एक तिहाई करने का मन नहीं कर रहा था।

"ए भोला बाबू।" कैशियर को आवाज लगाई उन्होंने, "इन लोगों को फिफ्टी परसेंट से ज्यादा नहीं देना है। सारा पैसा पानी में चला जाएगा।"

"अपने हाथ में है नहीं देना?" भोला बाबू ने मरूआई हुई आवाज में कहा, "देखिए रहे हैं, कैसा कुकुरघाउंच मचा हुआ है।"

"तो हम लोग भी भूकेंगे। भूंकना हम लोगों को नहीं आता? भों...भोंऽऽ..."

कुत्तों की आवाज निकालने लगे मैनेजर और उनके मातहत अचरज में पड़े रहे कि अचानक कुत्ते में कैसे बदल गया मरियल्ल-सा पिल्ला!

"मैनेजर सहेबवा बहुत बढ़-बढ़कर बोल रहा था जी?" कैशियर अर्थात भोला तिवारी ने दयाशंकर को बताया।

"मिल गया होगा रामपरवेसवा से।" दयाशंकर ने दांत पीसते हुए कहा।

दयाशंकर को मैनेजर का बदला हुआ व्यवहार बार-बार याद आता है और जला जाता है। सिगरेट जलाने के लिए लाइटर मांगी थी दयाशंकर ने तो झिड़क दिया था उन्हें—"बैंक में सिगरेट नहीं पिया जाता, भई।" बैंक में घूस खाई जा सकती है, पर सिगरेट नहीं पी जा सकती! साले बेईमान राम! दयाशंकर बेचैन हो उठते हैं अपने अपमान को याद कर।

"मैनेजर राम यह ठीक नहीं कर रहे, भोला बाबू! पड़ले राम कुकुर के पाले, खींच-खांच के ले गइल खाले, वाला हाल हो जाएगा इनका। समझाइए लालाजी को।"

"हम समझाएंगे तो रामपरबेसवा को बता आएगा कि ब्राह्मणवाद कर रहे हैं।" भोला बाबू ने अपनी समस्या बताई।

"तो क्या किया जाए?"

"घेराव कर दिया जाए बैंक का।" दयाशंकर के सवाल का जवाब नंदलाल के पास था, "इस बार हमको नहीं मिला लोन तो हम आग लगा देंगे बैंक में!"

"ई मौका, बाबा, बढ़िया है। खाली रेज ही नहीं, बाकी लोगों में भी गुस्सा है इस बात को लेकर। घेराव कर दिया जाए।"

"आदमी जुट जाएगा?"

"पांच हजार तो हम जुटा देंगे।" नंदलाल बोला।

"बरियार आलम जमा हो जाएगा, देवता।" रियासत मियां बोले।

"इतना क्या सोच रहे हैं, बाबा? कोई गलत काम हो रहा है?"

"सोच रहे हैं कि मैनेजर-ओनेजर के हाथ में क्या है? कठपुतली है सत्ता के दलालों का।"

"तो जिसके हाथ में है कुछ, वह भी देखेगा न कि क्या हाल हुआ कठपुतली का!"

"एक कठपुतली जाएगी, दूसरी आ जाएगी।"

"अब ईहो मत कह दीजिएगा कि दूसरी जाएगी तो तीसरी आ जाएगी।" ऐसे रुआंसा होकर कहा नंदलाल ने कि हँसी आ गई दयाशंकर को।

रियासत मियां गलत नहीं बोल रहे थे। पता नहीं, किस प्रेरणा के तहत चले आते हैं लोग। दयाशंकर चुपचाप देख रहे हैं बैंक के आगे जमा होती भीड़ को। बढ़ती ही जा रही है। पता नहीं कहां से दमयंती भी प्रकट हो गई थी और माइक थाम लिया था। हवा मे तैर रहा था उसका तीखा, सुरीला आह्वान।

"गजब का बोलने लगी! देह का रोआं खड़ा हो जाता है।" अनजानाजी आकर बगल में खड़े हो गए हैं दयाशंकर के, "दुल्हा किसको बनना है इस बारात का?"

"बनने लायक तो आप भी हैं।" दयाशंकर ने कहा।

"हमी क्या, सकल समाजे है। आप नहीं हैं?" अनजानाजी 'जब गिला कीजिए, हंसा दिया कीजिए' वाली शैली में कहते हैं कड़वी बातें।

दयाशंकर सोच रहे थे, दमयंती तक किसने पहुंचा दी आज के कार्यक्रम की खबर। बताया तो होगा, उनका आइडिया था यह!

"ए महाराज, हम आपको उधर खोज रहे हैं और आप..." जगनाथ कुछ चिढ़ा हुआ-सा दिख रहा था, "देखिए, कहां-कहां से आके नेता बन गया सरवा सब जो-सो बोल रहा है..."

"चलने दो जैसे चल रहा है।" दयाशंकर वहीं जमे रहे।

मन ही मन खुश हैं दयाशंकर कि अपने-आप ही बहुत-से नेता पैदा हो गए थे घेराव-स्थल पर। भीड़ से शांति बनाए रखने और लोगों से अपनी-अपनी जगह बैठ जाने की अपील करने के लिए छीना-झपटी शुरू हो गई थी माइक की।

"अब चार्जशीट पढ़ा जाएगा।" डुमरी के साथी रामनाथ यादव ने घोषणा की।

"देखिए सारघेंटी को।" जगनाथ नाराज है, "ऐसा दिखा रहा है कि इसी का लिखा हुआ है।"

दयाशंकर नहीं आने वाले उकसावे में। वह घबगए हुए हैं भीड़ का मूड देखकर।

"सुन रहे हैं, भइवा...सब सुन रहे हैं..." डांड़ हिला-हिलाकर गाना शुरू कर दिया है नंदलाल ने—"बड़ी देर से दर पर आंखें लगी थी, सनम आते-आते बहुत देर कर दी..."

"सरकारी लोन देने मे धांधली..." साथी रामनाथ ने चार्जशीट पढ़ना शुरू कर दिया है।

"का ए सालिगराम बाबू, दहपट काहे नहीं देते हैं ई माधड़चोद सबको।" अवधेश चौधरी जोश दिलाना चाहते हैं गुनी के बड़े दारोगा को। पर शालिग्राम सिंह को मालूम है, क्या करना है। तमाशबीन बन जाना है। अपने सिपाहियों को उन्होंने पहले ही समझा दिया है कि नजर ही नहीं आना है घटना-स्थल के आसपास। जब तक भीड़ बैंक पर आक्रमण को नहीं बढ़े, पुलिस को अदृश्य ही रहना था परिदृश्य से।

"...श्रीकमल सिंह, सुपुत्र श्री जोगी सिंह, ग्राम—कुंवरपुर, पुश्तैनी जमीन डेढ़ सौ

बिगहा...दो-दो ट्रैक्टर...दो कित्ता मकान...घर में तीन-तीन नोकरीहा..."

गुनी में इकठ्ठा हुई भीड़ सुन रही है कि सरकारी रिपोर्ट में श्रीकमल सिंह की सालाना आय पंद्रह सौ रुपये बताई गई है।

"फूंक दो एकरा बहिन सबको किरासिन छिड़ककर..." दूर बस-स्टैंड पर खड़े एक आदमी के मन में फैलती है तिताई, "बताइए, कइसा-कइसा कुकरमी सब हाकिम बना हुआ है!"

"एक-एक पइसा आजे, यहीं, अभी हगना पड़ेगा...पत्ते चल जाएगा आज कि..." उछलकर चौकी पर चढ़ गया है नंदलाल और माइक से मुंह सटाकर चीखने लगा है।

"सनमजी!" दयाशंकर को आवाज लगाई उसने—"सनम आते-आते बहुत देर कर दी..."

"लोग गलतफहमी में न थे जी कि दयाशंकरजीउवा ब्याह-शादी करके पक्का गृहस्थ बन गया?" अनजानाजी अकचकाए हुए हैं दयाशंकर को मिलता महत्त्व देखकर। इसका मतलब तो यह हुआ कि कुंवरपुर के रेजों के दिमाग पर कब्जे की उनकी और नौलाख महतो की सारी कोशिशों पर पानी फिर गया था।

"इतना पीछे हटके खड़ा हैं, आपको तब भी संतोष नहीं है?"

"माने कि यही न, बाबा, आप नाजायज बतिया देते हैं कभी-कभी? दलितों-वंचितो की आवाज बुलंद हो और हमको असंतोष होगा?" अनजानाजी रूठ गए हैं।

दयाशंकर को फुर्सत नहीं है अभी उनके रूठ गए होने पर ध्यान देने का।

मैनेजर का कॉलर पकड़े, धक्का देते हुए मंच की ओर ला रहे थे कुछ लोग। भीड़ उत्तेजित हो गई थी और वातावरण में 'धरो...पकड़ो...ढठिया दो साले को...' गूंज रहा था।

मंच की ओर दौड़ पड़े हैं दयाशंकर। अंधेरा-सा छाता हुआ लग रहा है आंखों के सामने। किसी तरह पहुंचना है मंच तक। उन्हें लगता है, नहीं पहुंच पाएंगे। जोर से चीखना चाहते हैं और आवाज गले में अटक गई है। पूरी ताकत लगाकर छलांग लगाई है और मंच पर पहुंच गए हैं।

"चलिए, हटिए आप लोग...बैठिए अपनी-अपनी जगह पर..." बुरी तरह से हांफ रहे हैं दयाशंकर। मानो मीलों दौड़े हों। मैनेजर भयातुर मेमने की तरह निरीह आंखो से उनकी ओर देख रहा था।

"साथियो, यह नहीं भूलना है कि हमारा मकसद क्या है।" दयाशंकर ने माइक पकड़ ली है, "हमारा मकसद मैनेजर या किसी भी सरकारी अधिकारी को मारना-पीटना नहीं है...भ्रष्टाचार को बेनकाब करना है..."

"इसका का करें? पूजा करें?" कोई चीखा भीड़ में।

"...मैनेजर खुद यह कबूल करें इस मंच से कि जो भी कहा गया, सच है....शपथ लें कि आज के बाद पुरानी गलतियां..."

"ई भंड़ुवा के जबान का भरोसा है?" भीड़ असहमत थी।

"बोलिए, क्या कहते हैं?" दयाशंकर ने फिर भी पूछा मैनेजर से।

"हम सब कबूल करते हैं..." मैनेजर ने कहा।

"सुनाई नहीं दिया।" नंदलाल ने माइक मैनेजर के मुंह से सटा दी।

"हम सब कबूल करते हैं..." मैनेजर ने फिर कहा। और भीड़ ऐसे उमगित हो गई मानो सच का सूरज फिर कभी अस्त नहीं होने के लिए आ गया था गुनी के आकाश में।

"तो निष्कर्ष यह निकला कि नन्हकू सिंह का सिंहासन अब खाली नहीं रहा?" दिनेश सिंह के चेहरे पर मुस्कान थी, पर मन में अचंभे का वही भाव था, जो अनजानाजी के मन में था।

"कुछ गलत किए, मास्साब?" दयाशंकर गुनी से लौटकर जान-बूझकर घर जाने से पहले दिनेश सिंह की दालान में रुक गए थे। जानना चाहते थे कि गांव कितना नाराज या खुश था उनके आज के कारनामे से।

"गलत कैसे किए? जानता के जागरूक होने का और मतलब ही क्या होता है? एकदम ठीक किए।"

"श्रीकमल सिंहवा का नाम नहीं उछालने से भी काम चल जाता।" छबीला सिंह बोले।

मंच से श्रीकमल सिंह का नाम लिए जाने की बात से, दयाशंकर खुद सहमत नहीं थे, पर गलती तो हो गई थी।

"हम तो मना किए थे, लेकिन..." मन की बात मुंह तक आ गई दयाशंकर के।

"यही रहस्य तो नहीं न बुझा रहा है अपने कुछ यार-दोस्त लोगों को।" कन्हैया सिंह ने किसी से मुखातिब हुए बिना ही कहा, "इन लोगों को लग रहा है कि समतामूलक समाज बना रहे हैं और उन लोगों के मन में हौंस भरा हुआ है कि राजपूत-बाभन को पटककर उनकी छाती पर बैठ जाएं।"

"जिसको बुझा रहा है, क्या कर रहा है?" छबीला सिंह तिजुक गए दयाशंकर को लक्ष्य कर छोड़े गए इस कटाक्ष पर।

"नहीं कर रहा है तो पछताएगा।" कन्हैया सिंह बोले।

"कर कैसे नहीं रहा है? नारद सिंह डकैती करवा रहे हैं, बूटन राय माफियागिरी कर रहे हैं, मनोरमा मिसिर अब दिल्ली में दलाली कर रहे हैं। और हम लोग छाली काट रहे हैं। कर कैसे नहीं रहा है?" रंगू सिंह बोले।

"चुप रहिए, मरदे।" कन्हैया सिंह गुस्सा गए।

"कोई वैकल्पिक मंच नहीं है न ऐसा, जिससे सार्वजनिक जीवन के गंभीर मुद्दों पर गंभीर बातें कही जा सकें। राजनीतिक पार्टियों का मंच इतना दूषित हो गया है कि कोई सार्थक बहस या विमर्श संभव ही नहीं है। कोई भी चर्चा छेड़िए तो 'तेरे भी चूतड़ में छेद है' मार्का बहस शुरू हो जाती है। यही असली समस्या है।" दिनेश सिंह ने हमेशा

की तरह एक ऐसी व्यवस्था देनी चाही, जो तात्कालिक समस्या को टाल दे।

"हम लोगों की पच्चानबे प्रतिशत समस्या तो जातिवादी दुराग्रहों के कारण है।" दयाशंकर बोले।

"नन्हजतीया सबमें दुराग्रह नहीं है?" कन्हैया सिंह का सवाल।

"इसीलिए तो बोले, पच्चानबे प्रतिशत।"

"तो?"

"तो माने तुम्हारी मउगी का फुलगेना।" अब रंगू सिंह चिढ़ गए हैं, "तो माने कि जाओ, जै-जैकार करो मैनेजरवा का...नारद सिंह और रामप्रवेश चौधरी जिंदाबाद-जिंदाबाद करो..."

"बुझाया नहीं हमको कि कहां से बोल रहे हैं आप?" कन्हैया सिंह भी तैश में आ गए हैं।

"कन्हैया सिंहवा को इतना ही बुझाता होता तो आज मंत्री नहीं होता किसी विभाग का? बेकार काहे को लगे हुए हैं बुझवाने में?" दयाशंकर ने इस दोस्ताना वक्तव्य से दूर करना चाहा तनाव।

"मंत्री तो लौंड़ा नहींये बने, लेकिन ई मत बुझिएगा, बाबा, कि शहीद बन जाएंगे आसानी से।" कन्हैया सिंह ने भी दोस्ताना अंदाज में ही दे डाली एक चेतावनी।

कुंवरपुर का राजपूताना और बभनटोल दरअसल खासा परेशान है दयाशंकर के रूप में नन्हकू सिंह के जी उठने पर। लोग यह सोच-सोचकर भी हैरान हो रहे हैं कि लड़ाई-झगड़े से दूर भागने वाले दयाशंकर में इतनी हिम्मत कहां से आ गई सीधे जोगी सिंह के परिवार के विरुद्ध मोर्चा खोल देने की। चूड़ामनबो तो तभी से सकते की हालत में है। घर से बाहर नहीं निकलने दिया है विजय को। नौलाख महतो से जान लेगी पहले खबर के भीतर की खबर, उसके बाद ही निकलने देगी।

धनजी पांड़े भी कम बेचैन नहीं हैं। दयाशंकर उधार मांगने आए थे कुछ ही दिनों पहले। बहनों को तीज भिजवाने के लिए जरूरत थी दो हजार रुपयों की। सोच रहे हैं, 'नहीं' कहना ठीक होगा कि नहीं। आखिर यह तो कह नहीं सकते कि है ही नहीं! तो नहीं कहने का तो साफ मतलब होगा कि कह रहे हैं—नहीं देंगे।

"तुमसे बताए नहीं, दयाशंकर पंड़इया उधार मांग रहा था।" पत्नी को बताया।

"कब?"

"हुआ तीन-चार दिन।"

"हमारे पास भी आया था। लेकिन रुपया-पैसा के बारे में नहीं कहा कुछ।"

"सोच रहे हैं कि दे देने से परिक जाएगा हमेशा के लिए।" बोले।

पर धनजी पांड़ेबो के दिमाग में एक दूसरी ही बात चल रही थी। उन्हें लग रहा है, फायदा है दयाशंकर के साथ संबंध ठीक रखने में। शिवजी पांड़े की शैतानियों के आगे असहाय दिखने लगते थे धनजी पांड़े। पूरा गांव मानता था कि नाजायज कर रहे

थे शिवजी पांड़े, पर साथ देने को तैयार नहीं था। ऐसे तो किसी दिन...धनजी पांड़ेबो सोच रही हैं—टोले में बस दयाशंकर में ही कूव्वत है शिवजी पांड़े के खिलाफ खड़ा होने की। एक न एक ताकतवाले आदमी से तो मेल करना ही होगा।

"दे दीजिए, काम आएगा।" बोलीं।

"रास्ता गड़बड़ पकड़ लिया है लेकिन..."

"आपको कह रहा है उस रस्ते पर चलने को?" पति के बमभोलेपन के ऊपर गुस्सा आ गया उन्हें, "डर से कांपते रहते हैं शिवजीउवा के! कल रघउवा न बेइज्जत कर दिया आपको? किस काम आ रहा है पैसा? हम कहते हैं कि दू-चार आदमी तैयार कीजिए अपनी तरफ से। नहीं तो चलिए छोड़छाड़कर। डरकर और दबकर रहने से अच्छा है धन छोड़ देना।"

धनजी भला धन छोड़ देंगे! यही तो एक चीज है जो उन्हें जीने का मकसद देती है। पटनावाले घर पर पड़े छापे के बाद तय किया था कि बैंक में पैसा रखने से अच्छा था, गांव में ही खेत खरीदा जाए; शहर में जमीन खरीदने से अधिक सुरक्षित था। उसी खेत को छोड़ देंगे!

"श्रीभगवनवा का भी न डर है, भाई!" फिर भी बोले।

"गांव-भर को बताना जरूरी है कि उधार दे रहे हैं दयाशंकर को?"

"बताने को कह रहे हैं हम?"

"तो क्या कह रहे हैं?

"हम कह रहे हैं कि दूसरा पार्टी भी उतना ही जबरजंग है।" धनजी पांड़े ने थोड़ा सकुचाते हुए स्थिति स्पष्ट की अपनी।

"जानते हैं, चाचा, गुनी में जो डोमघाऊंच हुआ था न आज, उसमें अपने गांव के भी कुछ डोमड़ा लोग गए थे।" दूसरी पार्टी गरज रही थी अपने दुआर पर, "समझ जाइए कि खाली गांव-घर का लेहाज कर रहे हैं, नहीं तो..."

"ई तो बहुत नाजायज काम किया है रामगियान बाबा का लइकवा।" जंगी सिंह बोले, "ई तो सकल संसार का नियम है कि धाई से पाई।"

"लेकिन अब नहीं करेंगे लेहाज," गरजे श्रीभगवान सिंह, "अब नहीं करेंगे लेहाज!"

"तो अब का करोगे?" जोगी सिंह ने पूछा।

"या तो भीतर जाएंगे साले चमरबाभन राम, चाहे ऊपर।" श्रीभगवान सिंह ने बताया—क्या करेंगे।

"बकलंड हो तुम।"

जोगी सिंह की छोटी-सी टिप्पणी। पर इतनी जहर-बुझी कि जंगी सिंह को पूछना पड़ा—"कैसे?"

"ई बाबू सोच रहे हैं कि खाली बभना का हाथ है इसमें और हम देख रहे हैं

कि नौलखवा और सतनरयना का असली रोल है।" किसी पहुंचे हुए राजनेता के-से आत्म-विश्वास से कहा जोगी सिंह ने।

श्रीभगवान सिंह बाध्य हो गए सुनने को।

"सतनरयना को अपना पोखरा फेल होने का दाह है और नौलखवा का पेच है कि जब तक श्रीभगवान का गुनी नहीं छूटेगा, उसका काम नहीं बनेगा। इहि साला दूनो का दूनो रामपरबेसवा का दुआर अगोरे रहता है और सब गड़बड़ कर रहा है।"

"लेकिन घेरउवा तो नन्हकूयेवाला सब न किया?" जंगी सिंह ने श्रीभगवान सिंह की तरफ से पूछा।

"ई सब कोई हितू है आपका कि घेराव नहीं करेगा?" एक छोटा-सा जवाब दिया जोगी सिंह ने।

"पता नहीं, छबीला भाई सच बोल रहे थे कि गलत, बाकी कह रहे थे कि दयासंकरा मना कर रहा था श्रीकमल का नाम लेने से। बल्कि इसी बात पर बकझक भी हो गया ऊ सबके साथ।" कलक्टर सिंह ने सूचना दी।

"नौलखवा पर अब ध्यान देना होगा, कलक्टर भाई!" गंभीर चिंतन की मुद्रा से बाहर आए बिना ही कहा श्रीभगवान सिंह ने, "और सतनारायण का गुनी छोड़ा देना है।"

"नेतागिरी करते चल रहे हैं न?" दयाशंकर के कमरे में कदम रखते ही दो महीने के बच्चे को जमीन पर लिटा दिया है उनकी पत्नी ने, "संभालिए अपने बबुआ को और हमारा जान छोड़िए।"

दयाशंकर थके हुए थे और बहस-मुबाहिसे में नहीं पड़ना चाहते थे। बच्चे को उठाया चुपचाप और पलंग पर बैठ गए गोदी में लेकर। सुंदर और स्वस्थ बच्चा था। गिलगिलाने लगा 'गिली गिली' सुनकर।

"हमारे बच्चे के खाने-पीने को कोई नजर लगाएगा तो कह देते हैं कि ठीक नहीं होगा।" बच्चे को उनकी गोद से झपटकर अपनी छाती से चिपका लिया है दयाशंकरबो ने।

दयाशंकर को मालूम है, नजर लगाने वाला कौन होगा। चुप्पी साध ली है।

"मुंह में जाब लगा लेने से नहीं होगा। हमारा बच्चा ग्राइपवाटर भी नहीं पी सकता?"

दयाशंकर को अफसोस हो रहा है उसकी देह से आती गंध सूंघकर। लूंड़े और राख की गंध। धान की भूसी झोंककर खाना बनाया होगा। बर्तन मांजा होगा।

"तुम भी पी सकती हो।" सोचा, ठिठोली से ही हल्का बना लिया जाए माहौल को।

"ऐसे कीजिएगा तो खून पी जाएंगे आपका। डाइन बन जाएंगे।" बच्चे को फिर डाल गई उनकी गोद में। बच्चा फिर मुस्कराने लगा।

दयाशंकर का मन करता है, बिस्तर पर आने के पहले नहा ले वह। लेकिन कहां

नहाए? शाम ढलते ही अपनी छत पर लेफ्ट-राइट करने लगते हैं शिवजी पांड़े और धनजी पांड़े। उनकी छत से दिखाई देता है आंगन।

"अगली बरसात के पहले एक बार खपड़ों को फेरवा लेना होगा।"

"घर की चिंता है; केवल अपनी बीबी और बच्चे की चिंता नहीं है; नहीं?"

"सोच रहे हैं, जैसे भी, हो एक स्नानघर और एक लैट्रिन भी बनवा लें।"

"सोचिए और आठ-दस साल।"

"प्रेम से नहीं बोल सकती हो?"

"प्रेम ही से तो बोले। जब तक कमाइएगा-धमाइएगा नहीं, सोचकर ही न संतोष करना पड़ेगा?"

"ऐसे ही चल रहा है घर? बिना कमाई-धमाई के?"

"हमको क्या पता! हमको तो अम्माजी से यही मालूम होता है कि केवल खा रहे हैं हम लोग। हमारा बच्चा दूध पी रहा है, इसलिए बाबूजी को दूध मिलना बंद हो गया है। हम आ गए हैं, इसलिए चेतना को साबुन-सर्फ की तंगी हो गई है...हमको तो यही बताया गया है।"

दयाशंकर ने सोच लिया है—चुपचाप सुनते जाना है। माई, बाबूजी और चेतना के बारे में कुछ भी नहीं कहना है। न अच्छा, न बुरा।

"आप सोचते हैं कि हमीं बदमाश हैं, नहीं?"

"नींद आ रही है हमको। मन हो तो पैर दबा दो।"

"और कीजिए नेतागिरी। हमसे पैर-ओर नहीं दबता।" झमककर खड़ी हो गई है दयाशंकरबो, "और अपनी अम्माजी को कह दीजिए कि चौकीदारी मत करें चुहानी में। हमारे बच्चे के लिए दूध निकालकर अलग कर दें।"

बगल के कमरे से आती आवाजें उनके कानों तक भी पहुंच रही थीं। सुनकर नींद उचट गई है रामज्ञान पांड़ेबो की। बहुत देर तक टुकुर-टुकुर ताकती रहेंगी छानी को। इस बात का आभास उन्हें बख़ूबी हो गया है कि दयाशंकरबो को रत्ती-भर भी लगाव नहीं है इस घर से। उतना भी नहीं, जितना गणपतिबो या चूड़ामनबो को था। ऐसा करती है, जैसे मेहमान हो इस घर में। घबराहट में हाथ बगल में सोई चेतना के माथे पर चला गया है। दूध की कटोरी जैसा धप्प-धप्प गोरा चेहरा! कहती है, गरीब से तो धनाढ दोआह-तेआह ही अच्छा है। धीरे-धीरे इच्छाएं भी गरीब हो जाती हैं गरीबों की।

"का कइलऽ मानूस तनवा पाके, भजन ना कइलऽ..." मन में शुरू हो गई कांव-कांव से बचने के लिए भजन गाना शुरू कर दिया।

"रात-बिरात भजन गाया जाता है, माई?"

चेतना की नींद खुल गई है उनका भजन गाना सुनकर।

"सोई नहीं का, माई?" दयाशंकर ने पूछा।

"देख रहे हो भछनी को...भजन भी नहीं गाने देती।"

"कह रहा है, आजी के पास सोएंगे।" बच्चे को गोदी में टांगे हुए उनके कमरे

में आ गए हैं दयाशंकर।

रात गुनगुना रही है अपनी जानी-पहचानी धुन में।

बालचन पांड़े की छत पर कोई खंखारता है। अपने जागे होने का सबूत देता है। कुंवरपुर की रातें ऐसी ही हो गई हैं। हल्की-सी आहट से चौकन्नी हो जाती हैं।

"कौन?" दयाशंकर आकर आंगन में खड़े हो गए हैं।

"हम हैं रे, भइवा।" धनजी पांड़े दुनाली लिए हुए करवट बदल रहे थे नेवार की खाट पर।

"घूसखोरी का पइसा दबाए हुए हैं, ओंघी लगेगा भइया को।" चेतना फुसफुसाई।

रामज्ञान पांड़ेबो को लड़कियों की यही आदतें अच्छी नहीं लगतीं बढ़-चढ़कर बोलने की। आंखें तरेरकर चुप करा दिया चेतना को।

"आज आपकी ड्यूटी है?" दयाशंकर को हँसी आ गई कहते हुए।

"ऑफिस-वौफिस जाना ही नहीं है तो हम कहे कि चलो आज हमी जागरण करते हैं।"

"कैंसिल नहीं हो रहा है सस्पेंसनवा?"

"कहां हो रहा है, रे भाई!"

"दौड़-धूप करबे नहीं कीजिएगा तो कैसे होगा?"

"अब तुम लोग को भी लगना पड़ेगा। हमसे नहीं बैठ रहा जोगाड़।" धनजी पांड़े ने पत्नी की सलाह पर अमल करना शुरू कर दिया है, "बल्कि कुछ लगना है, तो दे-लेकर सरिया लिया जाए काम।"

"तो चलिए, कल ही चला जाए। शिवपूजन सिंह का गोड़ छानते हैं।"

"जोगाड़ है वहां?" धनजी पांड़े झूल-से गए हैं छत की रेलिंग से।

"करने से न होगा।"

"अनजनवा, समझ लो भाई, कि एक नंबर का झूठा है। किसके-किसके पास तो दौड़ाया और बीचे में छोड़ दिया।"

"रात-बिरात बतिआया जाता है ई सब बात?" रामज्ञान पांड़ेबो झुंझलाईं। पूरे गांव को सुनाई दे रहा होगा।

"चाची भी ठीके बोल रही हैं।" कहा और रेलिंग से हट गए धनजी पांड़े। पर नींद नहीं आएगी रात-भर। सुबह होते ही घेरेंगे दयाशंकर को। शायद कहीं सचमुच कोई जोगाड़ बैठ जाए!

"जोगी सिंह के परिवार के बारे में भी कुछ कहा गया, बबुआ?" धीरे-से पूछा रामज्ञान पांड़ेबो ने।

"धांधली करेंगे तो आएगा ही नाम।" बेफिक्री के अंदाज में बताया दयाशंकर ने। और रामज्ञान पांड़ेबो को कुछ और कहने का मौका दिए बिना ही अपने कमरे में चले गए। वरना डर था कि वही पुराना राग छेड़ देतीं—'मुखलफत ठीक नहीं है...बहुत बोझा है कपार पर...'

"आ गए चमचागिरी करके?" पत्नी की आंखें कह रही थीं।

चुपचाप आंखें मूंद लेना ही ठीक समझा दयाशंकर ने।

दयासंकरा का कोई उपाय नहीं है, पाहुन?" चूड़ामनबो घबराई हुई है गुनी में घटी घटना के बाद दयाशंकर की बढ़ी हुई औकात के ब्योरे सुन-सुनकर। लोग कह रहे थे कि पार्टी ने नन्हकू सिंहवा वाली जगह दे दी थी दयाशंकर को।

"उपाय तो खुद दयाशंकर ने ही कर लिया है अपना। नारद सिंहवा का पूरा गोल उसी को खोज रहा है उस दिन के बाद से।" नौलाख महतो चाहते हैं कि गुनी की घटना को उनकी कूटनीतिक विजय के रूप में देखा जाए।

"कपार हो रहा है हमारा!" मुंह बिचका दिया है चूड़ामनबो ने, "भंडरिया जइसा बेलूर आदमी भी बोल छोड़ रहा है कि हवेलियों पर कब्जा होगा अब। नारद-फारद सिंह का डर होता तो बोलता?"

नौलाख महतो समझ रहे हैं कि उन्हें उकसाना चाह रही है चूड़ामनबो।

"कह रहे हैं न कि निश्चिंत होकर रहिए आप?"

"निश्चिंत तो हइये हैं, बाकी हई पगला गनपतिया न बोल देता है कि नन्हकूआबो वाला हाल होगा हमारा भी।" बीड़ी सुलगाते हुए नौलाख महतो को कनखियों से देख रही है चूड़ामनबो।

"ई तो सामने ही आने वाला है कि किसका क्या हाल होगा।" नहीं चाहते हुए भी चिढ़ गए हैं नौलाख महतो।

"हां ए पाहुन, कुछ कीजिएगा इसका।" चोट करने के बाद मरहम लगाने की मुद्रा अपना ली है चूड़ामनबो ने, "देखिएगा, इसके जाते ही कैसे ठंडा हो जाता है गांव।"

चाय का गिलास रखकर बिना कुछ बोले चली गई है विजयबो।

नौलाख महतो जब भी देखते हैं उस सूने आंगन में अभिशप्त छाया-सी डोलती विजयबो को, उसकी उदास चुप्पी कुछ कहती-सी लगती है उन्हें। एक अलग तरह का लालच खदकने लगता है नौलाख महतो की चेतना में।

"ईहो रांड़ी का किसमते खराब है!" विजयबो का पीछा करती नौलाख महतो की आंखें चूड़ामनबो ने भी देखी हैं।

इस मुद्दे पर एक मौन संवाद पिछले कुछ दिनों से अनवरत चलता रहा है इन दोनों के बीच। चूड़ामनबो कहती है, 'खोट विजइये में है, पाहुन, लेकिन कहें तो किससे कहें!' नौलाख महतो इशारा करते हैं, 'जब कह ही दिया है हमसे तो आगे की बात भी कहिए।'

चूड़ामनबो हिम्मत नहीं जुटा पाती आगे की बात कहने की। बड़की का मरदा लखैरा नहीं होता तो उसी को बुला लेती। लेकिन दामाद भी खोजा तो ऐसा खोजा चूड़ामन पांड़े ने कि परायों से भी ज्यादा पराया लगे।

"विजय का इलाज नहीं करवाया गया?"

यह सवाल नौलाख महतो पहले भी पूछ चुके हैं। फिर भी बार-बार पूछते हैं, क्योंकि उन्हें उम्मीद है, इसी के भीतर से उनका चिरवांछित उत्तर आएगा।

"विजइये बनलका होता तो ई दिन..." चूड़ामनबो बुदबुदाकर रह गई।

"हमारे पास आने दीजिए विजयबो को।" अचानक एक साफ-साफ सुनी जा सकने वाली आवाज में तब्दील हो गया था नौलाख महतो का मौन इशारा, "आपका आंगन आबाद हो जाएगा। हम भी सोचेंगे, सबको छोड़कर अपना समझा आपने तो काम आए आपके। पता नहीं, चूड़ामन बाबा होते आज तो क्या करते...आगे जैसा सोचिए आप..."

"दिमाग जहुवा गया होगा, इसीलिए न चले गए बीच मंझधार में छोड़कर..." चेहरा घुटनों में छिपा लिया है चूड़ामनबो ने।

"सोचिएगा आप...कोई डरने-घबराने की बात नहीं है...समस्या है सो हमको लगा...आदमी दस तरह से सोचता है एक ही चीज के बारे में..." नौलाख महतो को लगा, वार खाली गया था। उसके दुष्परिणामों को समेटना था अब।

"घबरा नहीं रहे हैं, पाहुन! सोच रहे हैं, ई बिहूनी भी तो किसी की बेटी ही न है...हरमेसा गरियाते-लतियाते रहते हैं...विजइया के डर से कहते हैं कि इसी में खोट है...बउराह जइसा दवाई भी लाते रहता है...ऊ तो चोरी-छिपे फेंकवा देते हैं हम, नहीं तो कब्बे ओह गांव पर चली गई होती...बड़ी अभागिन है बिहूनी..."

नौलाख महतो की समझ से बाहर हो गया है यह प्रलाप। कहीं सचमुच नन्हकूबोवाले प्रकरण की ही पुनरावृत्ति नहीं हो जाए! बभनटोलवालों का कलेजा तो फटता ही था उन्हें चूड़ामनबो के यहां देखकर!

"भगवान का, अपने बेटा सुधीर का कसम खाकर कहिए कि बताइएगा नहीं किसी को!" सिर घुटनों से निकालकर उनके दोनों घुटनों पर हथेलियां जमा दी हैं चूड़ामनबो ने, "किसी को भी नहीं...नौलाखबो को भी नहीं!"

"आपको भरोसा नहीं है हमारे ऊपर?" पूरी देह में कंपकंपी समा गई है नौलाख महतो की। दांतों को कसकर जमा लिया है एक-दूसरे के ऊपर। चूड़ामनबो को जाहिर नहीं होने देना चाहते अपनी अवश होती जाती उत्तेजना।

नौलखवा महतो चले गए हैं। चूड़ामनबो वहीं बैठी हुई है मूर्ति की तरह।

विजयबो और सरिता दौड़ी आई हैं अपने-अपने कमरों से। चूड़ामनबो सो गई थी वहीं बैठे-बैठे और कलप रही थी नींद में।

"कहते हैं कि घमवा में मत छिछियाते चलो, तो सुनना ही नहीं है।" सरिता को गुस्सा आ गया है।

चूड़ामनबो लजा गई है।

एक निर्जन, प्रेतिल बियावान में रास्ता भूल गई थी वह।

आंखें खुलने के बाद भी ओझल नहीं हुआ है वह।

सरिता के स्कूल के लिए निकलते ही आना है नौलाख महतो को। चूड़ामनबो

ने सोचा था, पहले ही बात कर लेगी विजयबो से, पर टालती गई थी। विजयबो को घास बराबर महत्त्व भी उसने नहीं दिया कभी, पर डर लग रहा था यह बात कहने में। पहली बार लग रहा था कि कुछ नहीं होते हुए भी वह है कुछ।

नौलाख महतो के आने के पहले ही वह कई बार रिहर्सल कर चुकी है अपने मन में। समझा चुकी है उसे। हर बार मान जाती-सी लगती है विजयबो; लेकिन उसका चेहरा दिखाई नहीं दिया कभी भी। धुंध-सी छा जाती थी अचानक और उसका चेहरा गुम हो जाता था उस धुंध में। तैयारी अधूरी ही रह जाती।

चूड़ामनबो के साथ नौलाख महतो को अपने कमरे में घुसता देखकर विजयबो हैरत में पड़ गई है। माथे पर बड़ी-सी गोल बिंदी लगा ही रही थी कि शीशे में दिख गए थे दोनों। नौलाख महतो पलंग पर बैठ गए थे। अजीब-सा लगा उसे, पर पूछे तो किससे! चूड़ामनबो तो उसके कमरे की सुरुचिपूर्ण सजावट में खो गई थी।

"बहुत साफ-सुथरा रखती है घर-आंगन।" कमरे को निहार लेने के बाद बोली चूड़ामनबो।

माहौल की असहजता तीनों के ही ऊपर हावी होने लगी थी। नौलाख महतो ने महसूस किया कि कामना के जिस उफनते ज्वार में हिल्लोलित चले आए थे यहां, थम गई थी अचानक। अजीब-सा शांत, उदास और ठहरा हुआ-सा लग रहा था विजयबो का कमरा। पलंग की लकड़ी से भी मानो बहुत पुरानी, बुझी हुई-सी, बेमतलब-सी गंध आ रही थी। बेजान-सी लग रही थी कमरे की दीवारें।

"तुम भी बैठो।" चूड़ामनबो ने कहा उससे। जमीन पर रखे पीढ़े पर बैठने लगी विजयबो। लपककर उसके कंधे पकड़ लिए चूड़ामनबो ने मानो वह बस निकल ही जाने वाली थी हाथ से। "यहां बैठो और सुनो!" उसे लगभग धसोरते हुए बिठा दिया पलंग पर।

तीन-तीन ईंटों के ऊपर रखा हुआ पलंग और ऊंचा हो गया था। विजयबो के पैर झूलने लगे हवा में।

"कह रहे हैं न ठीक से बैठो।" चीख पड़ी चूड़ामनबो, "सुनाई नहीं देता?"

"गुस्साइए मत।" नौलाख महतो ने उसे झटके से अपने पैर ऊपर मोड़ते हुए देखा तो कहा। उसके कोमल तलुओं पर ठहर गई थी निगाहें। विश्वास नहीं हो रहा नौलाख महतो को कि छू सकेंगे उन्हें!

"सुन लो ध्यान से! भले के लिए कह रहे हैं तुम्हारे। बच्चा चाहिए हमको। बिजइया से नहीं होगा। ना-नुकूर हम नहीं सुनेंगे।"

"जी!" आंखें फाड़े हुए चूड़ामनबो का चेहरा ढूंढ़ने की कोशिश कर रही है विजयबो, जो उसकी ओर नहीं है।

"जी, जी, नहीं करना है! नौलाखजी से बड़ा हितैसी हम लोगों का कोई नहीं है। तुम्हारा बउराह मरद भी सही-सलामत है तो इन्हीं के कारण है। तुम्हारा ही भला सोचकर आए हैं।"

"हमसे नहीं होगा।" विजयबो ने चेहरा घुटनों में छुपा लिया है।

"चाहती है कि खानदान का नाम बुता जाए, रे बिहूनी!" आकर उसके बगल में खड़ी हो गई है चूड़ामनबो। उसके सिर पर हाथ रख दिया है।

नौलाख महतो को डर होता है अचानक कि कहीं यह यह मत कह दे कि 'नहीं होगा तो जाने दो।'

"डॉक्टर से फिर दिखवाइए।" घुटनों में सुबकता चेहरा बोला।

"पगलेट जइसा बात मत करो। अब कुछ नहीं हो सकता।" चूड़ामन पांड़ेबो दरवाजे की ओर बढ़ गई है।

"पहले काहे नहीं बोलीं हमको?" चेहरा घुटनों से ऊपर उठाया विजयबो ने। छोटा-सा कोमल चेहरा। मुड़ी-सिमटी-सी, छोट्टी-सी, गोरी-चिट्टी, गुदाज देह। नौलाख महतो की आंखें झुककर बैठने के कारण उसके पेट के मांस पर बन गई तहों पर चली गई हैं। ज्वार वापस लौट आया है।

"भरोसा रखो हमारे ऊपर। पूरा खयाल रखेंगे तुम्हारा।" खिसककर उसके बिल्कुल सामने आ गए हैं नौलाख महतो।

"एक बार उनसे भी पूछ लीजिए।" दरवाजे के पास खड़ी चूड़ामनबो से कहा विजयबो ने।

बिना कोई जवाब दिए बाहर चली आई है चूड़ामनबो। दरवाजा भी नहीं भिड़काया।

कुछ कहने को खुले विजयबो के मुंह पर हथेली रख दी है नौलाख महतो ने।

"अब हम जो कहते हैं, सुनो...जैसे तुम चाहोगी होगा...कोई जबरदस्ती नहीं...ठीक है...लेकिन डरो नहीं...तुम्हारा अनभल नहीं करना है...समझीं?"

नौलाख महतो देख रहे हैं उसके झुके हुए चेहरे की शिथिल होती मांसपेशियां, ढीली होती गर्दन की अकड़न। एक उन्मद आवेश-सा महसूस किया उन्होंने। वह तैयार थी। घुटनों पर बंधे उसके हाथों को हटाया वहां से। कंधों पर हथेलियों का बोझ देते हुए लिटा दिया। चित्त...

अजीब-सा सन्नाटा छाया हुआ था पूरे घर में। सारे कमरों में झांक आई थी चूड़ामनबो। निरुद्देश्य। रामज्ञान पांड़ेबो गुस्साती थीं तो कहती थीं—"भूत लोटेंगे तुम्हारे घर में।" चूड़ामनबो को लगा, सच हो गया था उनका शाप। डर लगने लगा उसे। लगा, चूड़ामन पांड़े के चलने की आवाजें आ रही थीं किसी कमरे से। वैसी ही भारी, थम-थमकर पड़ने वाले कदमों की आवाजें। किस कमरे से? चारों ओर निगाहें दौड़ाई उसने और विजय के कमरे की ओर भाग चली। पूरी देह पसीने से नहा गई थी।

दोनों में से किसी ने भी नहीं देखा उसे कमरे में दाखिल होते हुए। दो नंगी देहें उलझ-पुलझ रही थीं एक-दूसरे से। एक मोटी हथेली फिसल रही थी उसकी खुली हुई नंगी जांघों पर। दो पपड़ियाए होंठ निगलने की भूख से भरे हुए थे उसकी छोटी-छोटी छातियों को...

मन में मरोड़-सी हुई चूड़ामनबो के कि उसे खींचकर अलग कर दे नौलाख महतो

के ऐंठते-अकड़ते बोझ से। उल्टी हुई छिपकिली-सी असहाय लग रही थी विजयबो। पर बिना कुछ कहे वह वापस आ गई है आंगन में। आंखें जल रही हैं, पर मूंद लेने की हिम्मत नहीं हो रही। डर है, किसी न किसी कमरे से फिर आने लगेंगी चूड़ामन पांड़े के चलने की आवाजें।

''रांड़ी पूरे जवार को सुनाएगी क्या?' उसे गुस्सा आ गया है विजयबो का कराहना सुनकर। खुश करना चाह रही है नौलखवा को कि एकदम ताजी मिली है...छिनार कहीं की...कह रही थी, हमसे नहीं होगा...'

''एक बार में हो जाएगा?'' अपने ऊपर लदे हुए पुरुष को उनींदी आंखों से देखते हुए पूछा विजयबो ने। पुरुष कुछ नहीं बोला। होंठ रख दिए उसकी आंखों पर।

आंगन में पीढ़े पर बैठकर सूने आकाश को ताकती चूड़ामनबो उछल-सी पड़ी पीढ़े से। सरिता जोर-जोर से दरवाजा पीट रही थी।

''अरे रांड़ी!'' चीख पड़ी चूड़ामनबो।

नौलाख महतो हड़बड़ाए-से निकले कुर्ता पहनते हुए।

दरवाजा खुलते ही आंधी-पानी की तरह अंदर आई थीं सरिता और सुकुमार पंडितबो।

''पुजारीजी को सिरीभगवनवा मारने चला था, भउजी! भाग आए।'' सुकुमार पंडितबो बोली थोड़ा लजाते हुए। चेहरे पर विषाद का लवलेश भी नहीं था। बल्कि ऐसे दमक रहा था कौतुक के भाव से मानो पति को पिटता हुआ छोड़कर नहीं, वरन् दूसरे के खेत से साग खोंटते हुए पकड़े जाने पर भागी हो।

''जा रे बहेंगवा कहीं की!'' दोनों हाथों से सिर पकड़े हुए धम्म से पीढ़े पर बैठ गई है चूड़ामनबो।

''तुमको इसका संगबहिना बनने को कौन बोला थे, रे बहेंगवा कहीं की!'' सरिता के ऊपर बरस पड़ी है, ''पुजरिया को तो लाज है, न सरम है, फिर पहुंच जाएगा लोटा-सोटा लेकर...हमारा दुसमन बनाएगी सिरीभगवनवा को...''

''ई बूची का दोस नहीं है, भउजी...हम अपने...''

''नहीं भागोगी यहां से...सबका सब बिहूनी हमारे ही ऊपर पड़ी हुई है...मांस नोच के खाएगी हमारा।'' गुस्से में आंगन में टहलने और बड़बड़ाने लगी है चूड़ामनबो।

''झगड़ा किस बात पर हुआ?'' नौलाख महतो ने पूछा।

''इसके भतार का मजाल है झगड़ा करने का? हरमेसा टेटीहई करते रहता है सिरीभगवनवा। और ई बाची को उसी का दुलरुई बनना अच्छा लगता है।'' नौलाख महतो के सवाल का जवाब चूड़ामनबो ने दिया।

नौलाख महतो बाहर निकल गए हँसते हुए। सुकुमार-फुकुमार पंडित के झगड़े में पड़कर मजा किरकिरा नहीं करेंगे अपनी आज की उपलब्धि का।

''इसके सामने काहे को बोल दीं, भउजी?'' रूठ गए होने का भाव दिया सुकुमार पंडितबो ने।

''वाह रे बबुई! तनी हई देखो बबुई का लजार बनना...ऊंह...'' बीड़ी सुलगाकर

लंबे-लंबे कश भरती चूड़ामनबो को अच्छा रास्ता मिल गया है विजयबो के खयालों से मुक्त होने का। छेड़ती-उटकेरती रहेगी सुधाकर पंडितबो को। मजा लेगी उसके निरीह भोलेपन का।

"मरद को अफतरा में छोड़कर भागा जाता है, हो पुजारिन?" पूछा।

"तो का करते? पार पाते ऊ सबसे।" कहा सुधाकर पंडितबो ने।

और जी खोलकर हँसी चूड़ामनबो। लगा, सांसें रुक जाएंगी हँसी के मारे।

सुकुमार पंडितबो को मानो सुकुमार पंडितबो बनाने के लिए ही बनाया था ऊपरवाले ने। न जाने कितने दुखदायी पलटे खाए थे जीवन ने और चेहरे पर शिकायत का कोई चिह्न नहीं होता। खेत बेचकर लाए गए पैसों से बड़ी-बजका छानते हुए जितना खुश होता उनका चेहरा, उतना ही जोगी सिंह के घर का गेहूं पिसवाने जाते समय। कोई भी कुछ भी काम अढ़ा देता और उसी में लग जाती। नहीं भी अढ़ाया जाता काम तो भी किसी न किसी काम में लग जाती—चावल से कंकड़ बीन रहा होता कोई तो वह भी जुट जाती बीनने में; जांत चल रही होती तो बिना आमंत्रित किए हुए ही जांत अपने कब्जे में ले लेती।

"काम किए बिना पता नहीं, मन कैसे लगता है किसी का।" व्यस्त हो गए होने का भाव होता चेहरे पर।

"ए पुजारीजीबो, तब काहे नहीं गोड़ छान लीं पुजारीजी का? हम तो अपने हर-जुआठ लेकर निकल जाते।" छबीला सिंहबो बोलीं एक दिन, "टोपरा नहीं हटाने देते।"

"हमको बुझइबे नहीं करता था, भउजी!" ऐसा निश्चल भोलापन होता चेहरे पर कि मन रुआंसा हो जाता सामनेवाले का।

न कभी आंसू आते थे उन आंखों में, न कभी ठिमटिमाहट जाती थी उनकी।

कोई पूछता—'श्रीभगवान सिंह के चक्कर में क्यों पड़ गईं तुम?' तब भी यही कह देती शायद—'बुझइबे नहीं किया हमको।'

"इसको सब बुझाता है। रंडी है, रंडी।" मुसमात चिढ़ी रहतीं, "नहीं बुझाता तो भोलवा चाहे छत्तीसवा से काहे नहीं फंस जाती?"

"ईहो ठीके बोलती हैं आप, लेकिन कुछ हइओ है सोझबकाह।"

"अपना इज्जत नहीं बेचता कोई सोझबकाही में। छीनरकट होता है, चाहे डरा हुआ होता है। लेकिन ई खटकिनिया को तो बोले थे हम कि निसाचर सबके फेर में मत पड़ो, हमारे मंदिरवा में सुकुमार पंडितवा करे पूजा-पाठ, तो कहां आई?"

"तो इसको तो छोटबुधिये वाला काम न कहना पड़ेगा।" सूबेदारबो बोली।

"हाथ-गोड़ और आंख-कान-नाक सलामत है जब तक, इज्जत कोई कैसे ले लेगा रे? एतना आसान चीज है इज्जत?" हांफने लगी थी मुसमात। मानो मिल जाए सुकुमार पंडितबो तो मुंह नोच लें उसका।

"मुसमात काहे एतना दूसती रहती हैं, हो पुजारीजीबो?" औरतें पूछ देतीं चिढ़ाने के लिए।

"हम नहीं सुने हैं दूसते हुए। खिसियाने को तो ऊ सबके ऊपर खिसियाती रहती हैं।" सुकुमार पंडितबो कहती।

इसको जब सुनाई ही नहीं देता किसी का दूसना, तब क्या करे आदमी! उसकी ठंडी, उत्साहहीन प्रतिक्रिया अवसन्न कर जाती पूछने वालों को।

"सार साधू-महात्मा लोग कहते हैं कि योग से थिर होता है चित्त और इसका खाली दुर्योग से थिर हो गया।" रंगू सिंह कहते हैं।

सुकुमार पंडित ने अपने को आजाद कर लिया है श्रीभगवान सिंह की गुलामी से। शिवाला छोड़ गोला पकड़ लिया है बूटन राय का। अब गुनी में शाखा लगाएंगे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की। 'मनहरनी देवी कन्या महाविद्यालय' की किरानीगिरी भी उन्हें सौंप दी है बूटन राय ने।

"गांव में रहकर हम लोग अपना टाइम बर्बाद कर दिए, पार्टनर।" अपने इस निर्णय के बारे में सुनाने आए थे गांववालों को, "अनजानाजीउवा जैसा पहले ही बाहर निकल जाना चाहिए था।"

"ए महाराज, बाहर भी कहां जाए आदमी! ढेर आदमी तो गया और मुंह सुखवा के थका-हारा वापस आ गया। आपको बूटन राय मिल गए, तब न..."

"अच्छा, तो बता रहे हैं आपको कि नेता तो अपने को ई अपने गांववाले भी कहते हैं, लेकिन जो सचमुच का नेता होता है न, रायजीउवा ही है। विचार देख लीजिए, संस्कार देख लीजिए, काम देख लीजिए..."

यह सब सुकुमार पंडित कह रहे थे, जिनकी दो बेटियां, जो बारह और दस वर्ष की हो गई थीं, टूटे हुए बटनवाला ढकढोल फ्रॉक पहने अपनी माई के पीछे-पीछे पूरे गांव में छिछियाती चलतीं; नाक में हमेशा भरा रहने वाला नेटा सुड़कती रहतीं; बधार में घूम-घूमकर दूसरे के खेतों से धान या गेहूं की बालियां सुड़कती चलतीं; जिन्हें कोई भी उनकी चोरी की आदत के कारण अपने घर की चौखट के बाहर से ही दुरदुरा देता; जिन्हें लेमनचूस या चिनियाबादाम देने के बहाने डीह या काली माई के मंदिर तक हुलका ले जाते लड़के।

"ए पंडित, एक बात सुन लो कान खोलकर! जहां जाना हो, जाओ, बाकी अपना परिवार भी ले जाओ अपने साथ!" रंगू सिंह उखड़ गए हैं उनके बड़बोलेपन पर, "ई कोई बात नहीं हुआ कि अपने तो सफेद कमीज और खाकी पैंट धारण कर लिए और परिवार को बिना लूगा-लत्ता के बउआने के लिए छोड़ दिए।"

"कौन कहता है बउआने के लिए छोड़ दिए?"

"हम कह रहे हैं तो सुनाई नहीं दे रहा?"

"अब तो यही न चाह रहा है गांव कि हम भी बोलना शुरू करें कि किनकी बबुई कहां क्या कर रही थीं या कर रही हैं? अच्छा लगता है यह सब कहना?" सुकुमार पंडित ने तेवर कड़े कर लिए हैं।

अब इसका क्या जवाब है! गांव हतप्रभ-हतबुद्धि रह गया सुकुमार पंडित का यह

जवाब सुनकर। लेकिन चूड़ामनबो की देह में आग लगी हुई थी। पता लगा लिया था कि विजय से सौ का पत्ता झटक लिया था उनकी बड़की ने।

"हम तो झोंटा पेर देंगे रांड़ी का, हमारे यहां आई तो।" अपने घर के सामनेवाली खेती में धर-दबोचा है सुकुमार पंडितबो को।

"कमजोर हैं तो जो भी कहिए।" निर्द्वंद्व भाव से बोलीं सुकुमार पंडितबो।

"कमजोर हो कि मजा आ रहा है—बेटी कमाई कर रही है?"

"बेटी के कमाई करने पर मजा आता है, भउजी?"

"भउजा-भउजी मत कहो हमको। एगो तो हमारा बेटवे चतुरबउराह, ऊपर से ई रांड़ी घुरियाए हुए है।" चूड़ामनबो के नथुने फड़क रहे हैं, "बता देना कि पगलेट है, ढेर सहकाएगी तो जानो ले लेगा किसी दिन।"

"हमी सिखा रहे हैं?" रुआंसी हो गई है सुकुमार पंडितबो।

"ई बिहूनी से कुछ कहने का भी फायदा नहीं है।" चूड़ामनबो की समझ में भी नहीं आया, अब इसके बाद क्या कहे उससे।

"ई बिहूनी बता रही है गांव के बनलका लोग को कि उनका असली रूप क्या है?" दूर से ही उनकी बतकही सुनती सुरेशबो ने ठहाका लगाते हुए आसमान को खबर दी यह।

"तुमसे सलाह नहीं मांग रहे हैं हम।" चूड़ामनबो भड़क गई।

"हम तो भगवानजी से कह रहे हैं!" सुरेशबो की हँसी में किसी कजरी की गुनगुनाहट भी समा गई थी।

"हमको सुदरसनबो मत समझना, ए सुरेशबो, कि चुपचाप सह लेंगे।"

"आपही का मुंह है सुदर्शनबो बनने का! चोरी-चकारी करके अटारी पीट ली और सुदर्शनबो बनने चली है।"

"तुम भी पीट न लो अटारी। राजाजी झोरा ढोते चल रहे हैं दूपैसाही दवाई का, बोलो पीट लें!"

"काहे को बोलें? सनके हुए हैं। भतार खा जाए और बेटा को सनकाह बना दे, अइसा अटारी हम नहीं पीटते।" सुरेशबो बोली।

आज जाकर मंशा पूरी हुई है उसकी। कितने दिनों से सोच रही थी कि पानी उतारे चूड़ामनबो का। दुमंजिला पर खड़ा होकर कनखियों से देखती रहती थी उसके आंगन में। भड़काती भी थी उसकी सास को कि कड़ाई नहीं करती।

"ए सुरेश!" सुरेश कहीं नही था परिदृश्य में, फिर भी चीखी चूड़ामनबो, "ई खटकिनिया ऐसे बोलेगी तो ठीक नहीं होगा!"

"बेचारी विजइयाबो के मुंह में जाब लगाए रहती है तो सोचती है, सबको डेरवा देंगे। सब कोई विजइया नहीं है कि तुम्हारा ड्रामा नहीं समझेगा।" सुरेशबो बोले ही जा रही थी मस्ती मे, "बेचारी पुजारिनजी मुंहदूबर हैं तो चापे जा रही है उनको।"

सुकुमार पंडितबो खिसक चुकी थीं वहां से और शिवजी पांड़े के चौखट पर बैठी

सुन रही थीं उन दोनों का वाक्-युद्ध।

चूड़ामनबो ने पीछे हटने का फैसला कर लिया है। सुरेशबो जैसी हड़कासिन से पार पाना असंभव था। पता नहीं, और क्या-क्या कहती!

"चोर का धन और कैसे बिलाएगा? ठीक कर रही है पुजारिनजीउवा!" चूड़ामनबो को फिर ललकारा था उसने।

लिल्लो...लिल्लोह...लिल्लो...विभूति पांड़े अपनी मड़ई के बाहर से लिलकार रहे थे उसे।

"हई डंड़टूटा तो..." डपटा श्रीराम पांड़ेबो ने तो चुप हुए।

13

गुनी के ब्लॉक ऑफिस को देखने के बाद दीनमणि त्रिपाठी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, को देखना अधिकांश लोगों के लिए एक आश्वस्तिदायक अनुभव होता है। आश्वस्ति महसूस करने के अलग-अलग कारण जरूर हो सकते हैं—जैसे, रंगू सिंह को यह सोचकर मिल गई थी आश्वस्ति कि वैसे सड़े हुए दफ्तर में वैसा सड़ा हुआ अधिकारी ही काम कर सकता था। किंतु अधिकांश लोग, जो आजादी के साढ़े चार दशकों के बाद भी सरकारी दफ्तरों से खौफ खाने के आदी थे, दीनमणि त्रिपाठी से मिलकर खुश होते।

त्रिपाठीजी मिलने आए व्यक्ति से मिलते भी इस तरह मानो पुरानी जान-पहचान हो। फुर्सत में हों तो घर-दुआर, बाल-बच्चा, खेती-बाड़ी, इन सबका हाल पूछ डालेंगे। व्यस्त हों तो निहायत अपनेपन के भाव से कहेंगे, "हई देखिए! भाईजी को भी आज ही टाइम मिला बी.डी.ओ. ऑफिस को याद करने का। अब दिन-भर गरियाएंगे कि तिरपाठीजीउवा औकात भूल गया है..."

जो बहुत बड़ी नाराजगी के साथ आए होते, वे भी विहँस पड़ते—"ए बाबा, खाली बाते का मोदक खिलाकर केतना दिन भुलवना में रखिएगा?"

"बाप रे बाप! हई जादोजी को देखो!" दीनमणि त्रिपाठी पेट पकड़कर हो-हो करके हँसने लगेंगे, "कह रहे हैं कि भुलवना में रखे हुए हैं हम...अब हम कहां जाएं मुंह छुपाने! दुखवा मैं कासे कहूं मोरी सजनी वाला हाल कर दिए हमारा..."

सत्यनारायण सिंह और उनके साथ गए सुकुमार पंडित को देखा तो सोच में पड़ गए त्रिपाठीजी कि ये वीर कहां के हैं, जिन्हें शौक चर्राया है रंगबाजी का। उन्हें पता है, नया-नया घूमना शुरू किया है सो 'हुजूर' कह रहे हैं। कल 'तिरपाठी बाबा' कहने लगेंगे और फिर, मन किया तो 'तिरपठिया' भी कह देंगे।

"गुनी में, जानते हैं कि नहीं, छौंड़ा सबको गुरदेल चलाने का मन करता है तो महतारी सब ब्लॉक ऑफिस में भेज देती है...बकुला नहीं मरेगा तुमसे, बी.डी.ओ. पर ट्राई करो..." त्रिपाठीजी गुनी के रंगबाजों से करते हैं यह मजाक।

"कुंवरपुर पर जरा ध्यान दिया जाए, हुजूर!" सत्यनारायण सिंह ने कहा।

"कुंवरपुर में तो काम चल रहा है न?" त्रिपाठीजी ने पूछा।

"एक बार खुद ही देख लिया जाता चलकर।"

"गांव को कुछ नहीं मालूम कि क्या हो रहा है और क्या नहीं हो रहा है।" बी.डी.ओ. साहब को चुप देखकर सुकुमार पंडित ने कहा, "हम लोगों को नक्सा, एस्टीमेट वगैरह कुछ नहीं दिखाया जाता।"

"श्रीभगवान बाबू तो आप ही के गांव के आदमी हैं न?"

दीनमणि त्रिपाठी समझ गए हैं अब तक कि जो दो लोग बैठे हैं सामने, रंगबाज नहीं हैं। साधारण ग्रामीण हैं जो गांव की अंदरूनी राजनीति में श्रीभगवान सिंह-विरोधी खेमे में होंगे और जिन्हें काम अच्छा हो रहा है या बुरा, इससे ज्यादा चिंता इस बात से होगी कि सारा फायदा श्रीभगवान सिंह चट किए जा रहे थे। दीनमणि त्रिपाठी ऐसे लोगों के साथ खेलते हैं थोड़ी देर तक।

"गांव का आदमी ही न गांव का दुश्मन हो गया है।" बताया गया उन्हे।

"ले बलाई!" त्रिपाठीजी बोले, "अब ई मजा देखिए कि सरकार का सोचना है कि अभिकर्ता गांव का होगा तो धांधली नहीं होगी और यहां दूसरा ही खेल हो रहा है।"

"विश्वास नहीं हो तो अपने देख लिया जाए चलकर।"

"विश्वास होने, नहीं होने का सवाल नहीं है न...सवाल है कि कहां-कहा का झगड़ा फरियाते चले घूम-घूमकर?...इधर सरकार है कि रोज एगो नया रिपोर्ट मांगती है। पेट ही नहीं भरता रिपोर्ट मांगने से...सच बताते हैं आपको, मन उबिया जाता है...और पूछिए किसी से कि भाई, काम काहे खराब हो रहा है तो उलटबांसी बतियाने लगता है...चौधरीजी का परिवार है कि झाड़ा फिरने भी ब्लॉके के जीप से जाएगा...अब बी.डी.ओ. बेचारा कहां-कहा टांग घसीटता चले..."

"तो रोका जाए इन चीजों को। हाकिम लोग भी हम लोगों की ही तरह दुखड़ा रोने लगेंगे तो कइसे पार लगेगा यज्ञ?" सत्यनारायण सिंह ने पेशेवर नेताओं वाले अंदाज में कहा।

"गुनी मे सबको अपने-अपने मेहरारू के सेनुर का चिंता लगा हुआ है, ए भाईजी! और कितना खोलकर बताएं आप लोगों को?" टेबुल पर रखी फाइल के पन्ने पलटने लगे है त्रिपाठीजी, "देखिए, ई तो हाल है ऑफिस का...कगजवा पर पेज नंबर भी नहीं लिखता है सब...नोटसीटवा पर एगो डांड़ी खींचने में भी जान जाता है...इसमें से एको कागज भुला गया न, तो हल्ला हो जाएगा...जेल भेजो बी.डी.ओ. को..."

'ई तो साफे सरेंडर कर दिया जी!' सुकुमार पंडित ने देखा सत्यनारायण सिंह को।

"विधायकजी से भी बातचीत हुई है इस काम के बारे में। बहुत गुस्साए थे सुनकर।"

अपनी समझ से तुरुप का पत्ता फेंका सत्यनारायण सिंह ने।

"तो एक काम कीजिए न। गुस्साकर जो बोले थे न बिधायकजी, उसी को लिखवाकर दस्तखत ले लीजिए उनका। हमारे हाथ में भी हो जाए कुछ दिखाने को।"

दीनमणि त्रिपाठी फेंटते रहते थे ऐसे पत्ते। उससे भी तगड़ा पत्ता हो हाथ में, तो फेंको, वरना टनटनाते हुए घर जाओ।

"करना कुछ नहीं हैं...केवल एक बार..."

"आएंगे...आएंगे...आप भी एके बतिया..." अचानक बहुत व्यस्त हो गए हैं त्रिपाठीजी, "ए जी सुनो...कोई आए तो बोलना भाई कि जे.ई. लोगों से बात कर ले। बुरा मत माने...कुछ काम-धाम भी कर लें..."

उन्हें पता था, सामने बैठी मूर्तियां अंतर्धान हो जाएंगी। मूर्तियां अंतर्धान हो गई थीं।

"सुने कि नहीं?" उनके जाने के बाद मुंह बिचकाकर सुनाया एकाउंटेंट को, "कुंवरपुर का झगड़ा फरियाने का नेवता देने आए थे हमको।"

"एकदम ठीक किया गया।" एकाउंटेंट ने शाबासी दी, "अइसा कपरबथीवाला गांव हम नहीं देखे हैं लाईफ में...सब कमवे में अझुरहट..."

"लेकिन एक बात पर ध्यान दिए कि नहीं, बाबूसाहेब?" त्रिपाठीजी के दिमाग में एक नई कोयल बोलने लगी थी, "श्रीभगवान सिंह थियूरी दे रहे थे कि कुंवरपुर के काम में एक पइसा का भी फायदा होना असंभव है। तो हम कह रहे हैं कि शिकायत क्यों आ रही है? एम.बीया और मस्टररोलवा जरा ठीक से जांचिएगा भाई...बड़ा डर लगता है आजकल..."

"रेकाड तो खराब नहीं है, बाकी..." एकाउंटेंट रामनाथ सिंह को रामप्रवेश चौधरी नामक कौए की आवाज सुनाई दी थी त्रिपाठीजी की हिदायत में। जैसे भी हो, दफ्तरों से राजपूतों को निकाल बाहर करो। दीनमणि त्रिपाठी का तो कोई जात-धरम है नहीं। रामप्रवेश चौधरी की चलती है तो उनके साथ गांड़ सटाए हुए हैं; कल कोई पठान बन जाएगा विधायक तो 'अल्ला हो अकबर' करने लगेंगे।

दीनमणि त्रिपाठी जानते हैं—उनका एकाउंटेंट नारद सिंह रूपी भगवान का पुजारी है। श्रीभगवान सिंह की पोल नहीं खोलेगा। पर यह संदेश तो पहुंचा ही देगा कि उनकी करतूतों की खबर मिलने लगी थी उन्हें।

"कुंवरपुर का रोडवाला काम देखे हैं जी?" अपने जे.ई. से पूछा, जो प्रखंड कुशवाहा संघ का सचिव था और इस नाते उससे उम्मीद की जा सकती थी कि श्रीभगवान सिंहविरोधी सही-सही सूचना दे।

"कुंवरपुर!" खटाई खा लने के बाद हो जाता है जैसा मुंह, उसने वैसा ही मुंह बनाया, "सनके हुए हैं कि कुंवरपुर जाएंगे?"

"क्यों?"

"जाने लायक है वहां? गए एक दिन तो लगा, आपसे में कपरफुटव्वल कर लेगा सब। दू दिन बाद गए तो चमटोलिये में रोक लिया...एगो बड़का छीनार निकली है... दमयंतिया...रास्ता रोककर खड़ी हो गई कि स्टांप पेपर पर लिखो कि सब पइसा खा गए! अबकी जाएंगे तो मरबो करेगा सब बांधकर..."

"यही न कमी है आप लोगों में...टैक्टे नहीं है एकदम से...कहना चाहिए था कि

आपके सामने नापी लेते हैं और काम से ज्यादा एक पइसा का पेमेंट नहीं होगा...बाद में देखा जाता।" दीनमणि त्रिपाठी घबरा गए हैं कि मामला इतना गंभीर हो गया था और अंधकार में रखा जा रहा था उन्हें।

"अभी थोड़ी ही देर पहले जो बकबानर आए थे कुंवरपुर से, उनको पहचानते हैं आप लोग?" अपने ऑफिस से पूछा।

"उसमें से एगो नया-नया अड्डा जमाना शुरू किया है चौधरीजी के यहां।"

"माने कि चौधरीजीउवा राजपूत लोग को भी फोड़ लिया जी?" एकाउंटेंट से पूछा।

"राजपूत लोग को अक्किल कम नहीं रहता तो ई हाल होता?" एकाउंटेंट 'जाति दुर्दशा देखि न जाई' की महान् पीड़ा से सराबोर हो गया। थोबड़ा लटक गया उसका और आवाज भारी हो गई।

"समय का फेर कहिए, रामनाथ बाबू! नहीं तो यही साले कोइरी-कहार और अहीर-बिलार राज चलाते।"

"अपना भी दोष है।"

"दोषे नहीं है! अब देखिए, आपसे में अझुराने के फेर में है कुंवरपुर में।"

"श्रीभगवान सिंह दबेर देंगे इन लोगों को। खुराफाती चीज है। नन्हकू सिंह नहीं टिके तो ई ढेला-पतई क्या टिकेंगे उनके सामने!" एकाउंटेंट ने परम विश्वास के साथ कहा तो दीनमणि त्रिपाठी को भी लगा कि एक छोटी-सी बात को लेकर कुछ ज्यादा ही परेशान हो रहे थे।

श्रीभगवान सिंह की तरफ से प्रतिक्रिया तुरंत हुई थी। उसी शाम दूधनाथ सिंह के घर तक जाने वाला बिजली का तार काट दिया गया था। आधा गांव अंधेरे में नहा गया था। अपने तीन मंजिले मकान की सबसे ऊंची छत पर राइफल लिए हुए बैठ गए थे श्रीकमल सिंह और ललकार रहे थे कि कोई भी गया ट्रांसफॉर्मर की ओर तो उड़ा देंगे उसे। मुसमात के घर में भी अंधेरा छा गया था।

"मउग का हो गया है, रे सतनरयना?" मुसमात चीखीं अपने दुआर पर से, "मरद का बच्चा है तो जोगीया के घर का तार भी काट दे।"

जोगी सिंह के घर की औरतों ने गाली देना शुरू कर दिया है मुसमात को।

"डर लगता है तो चल, हम चलते हैं आगे-आगे।" मुसमात फिर चीखीं।

"इस गांव में अब बिजली सत्यनारायण सिंह की जान जाने के बाद ही जलेगी।" सत्यनारायण सिंह चिंघाड़े अपनी छत पर खड़े होकर।

जवाब में गोलियां चलनी शुरू हो गई थीं जोगी सिंह की छत से। दूधनाथ सिंह एक कमरे में बंद हो गए थे अपनी राइफल लेकर और कुंडी भीतर से बंद कर ली थी। सत्यनारायण सिंह रोने लगे थे दरवाजा पीटते-पीटते।

अपने दुआर पर खड़ी मुसमात इंतजार करती रह गईं उनके बाहर निकलने का।

"हमको आप पहुंचा दीजिए पटना...हम मर जाएंगे यहां..." दयाशंकरबो चिपट गई है दयाशंकर से। आंगन में भी नहीं निकलने दे रही।

"झगड़ा लगा है किसी और से और भागमभाग तुम लोग मचा दोगी।" दयाशंकर चिढ़ गए हैं।

कैसी औरत है! जान बचाकर भाग जाना चाहती है। मरद मरे, तो मरे। सास-ननद तो खैर, कुछ होता ही नहीं! मन कसैला हो गया है रामज्ञान पांड़ेबो का।

हरिद्वार पांड़े बेचैन कदमों से टहल रहे हैं अपने आंगन में। सुधाकर पांड़े उदय पांड़े की कुटिया पर गए हुए थे।

"देख रहे हैं, प्रभु?" गोलियों की आवाज सुनकर थरथराहट भर गई है सुधाकर पांड़े की आवाज में।

उदय पांड़े के चेहरे पर मुस्कराहट छाई हुई है। इन दिनों हमेशा ही हवा में चित्र बनाती रहती हैं उनकी उंगलियां।

"मेघनाद है श्रीभगवनवा।" बोले धीरे-से।

हमेशा एक मादक तरंग बनकर उतर जाती हैं उनकी ऐसी सूचनाएं। कहते हैं, यह पीपल का पेड़ भी साधारण पेड़ नहीं है। कल्पवृक्ष है। सुधाकर पांड़े सोचने लगते हैं, कहीं इसीलिए तो स्कूली दिनों से ही एक अवश सम्मोहन से भरा हुआ नहीं लगता था उन्हें! सिवान तक पहुंचते-पहुंचते थकने लगते पांव, तभी नजर आ जाता। 'आ तो गए!' एक आत्मीय पुकार से भरा हुआ। उसकी छांह मानो हाथ बढ़ाकर माथा सहला जाती थी उनका।

"सब इसी मायाविनी का काम है।" बोले उदय पांड़े, "देखते नहीं हो, कैसे जीभ निकाले रहती है।"

गांव हतप्रभ था यह खुला शक्ति-प्रदर्शन देखकर। सड़क का काम अगली सुबह से ही शुरू हो गया था। न तो ट्रांसफॉर्मर के पास जाने की हिम्मत पड़ी थी किसी की, न सड़क का काम रुकवाने की। बोलहटा पर बोलहटा भेज रही थीं मुसमात, पर मिलने नहीं गए थे दयाशंकर। दूधनाथ सिंह ने फैसला ऊपरवाले के हाथ में छोड़ दिया था। दिनेश सिंह की दालान में मायूसी का आलम था। सत्यनारायण सिंह लाज के मारे निकले ही नहीं थे घर के बाहर।

"वैसे तो हम लोग भी चुपचाप ही बैठे हुए हैं, पर अच्छा नहीं लगता ऐसे मौकों पर चुप बैठना।" मन की व्यथा बताई दिनेश सिंह ने।

"तीस-चालीस नाल राइफल जुटाए हुए था। क्या कीजिएगा, चुप नही रहिएगा तो?" रंगू सिंह बोले, "हमसे तो सलाह लिए होते सतनारायण सिंह तो जाने ही नहीं देते कंपलेन करने।"

"नौलखवा के पौलटिक्स में पड़ गए।" कन्हैया सिंह ने कहा, "राजपूतों में फूट डालना चाहता है साला।"

"एकरा पौलटिक्स की माई चोदो!" रंगू सिंह को खुद पता नहीं था, किसे गाली दे रहे थे।

"हम तो कहेंगे कि गांव श्रीभगवान सिंहवा को बेमाने-मतलब का दोष दे रहा है। जिसको देखो वही नकियाए हुए है उसको।" कन्हैया सिंह ने कहा।

"गलती करेगा तो नकियाएगा भी नहीं आदमी?"

"यह समय, रंगू भाई, गलती देखने का नहीं है, एकजुट रहने का है।"

"हो सकता है, तुम भी ठीक ही बोल रहे होओ।" दालान में भरी ढेर सारी बासी हवा फेफड़ों में खींच ली थी छबीला सिंह ने, बाहर निकाल दी मुंह के रास्ते।

दोराहे पर खड़े होने की विडंबना का दुःखद स्वीकार था यह।

इस बात की कल्पना तब किसी ने भी नहीं की थी कि अगले ही दिन कोई बीड़ा उठा लेगा श्रीभगवान सिंह की चुनौती का जवाब देने का।

नकचिपटा ने इंकार कर दिया था रजिस्टर में दर्ज राशि से कम मजदूरी लेने से। कहा, "पहले दिखाइए, कगजवा पर कितना लिखे हैं।"

"तुम्हारे अठराजा कभी देखे हैं कागज?" जोगी सिंह के छोटे भाई धनराज सिंह गरजे, "लेना है तो लो, नहीं तो रास्ता नापो।"

"बीस रुपया धराकर चालीस रुपया लिखते हैं और बात करते हैं।" नकचिपटा नहीं हटा सामने से।

धनराज सिंह को नहीं हुआ बर्दाश्त। एक 'चट्ट' की आवाज गूंजी और नकचिपटा अकचकाया हुआ-सा पीछे हट गया चार-पांच कदम।

"काम बंद करो...बंद करो...हटो वहां से...गईंता फेंको..." नंदलाल और छांगुर अपील करने लगे हैं मजदूरों से।

राजपूताने के लड़के गांव की ओर दौड़ पड़े हैं इस अप्रत्याशित घटना की खबर देने।

"का हो चरित्तर, इसको सहूर सिखाने के बदले पार्टी जुटाने आए हो?" धनराज सिंह चाहकर भी आवाज में रोब नहीं बनाए रख पा रहे। घिर गया-सा महसूस कर रहे हैं। जो हुआ था वही कल्पनातीत था। कुछ भी हो सकता था।

"सहूर और हक का लड़ाई में तो मलिकार..."

"ढेर सिहुर-सिहुर मत बतियाइए।" नंदलाल ने डपट दिया चरित्तर को, "पहले बताएं कि कागज काहे नहीं दिखाएंगे।"

"हमको मारा काहे, पहले ई पूछिए इससे?" नकचिपटा चीखा।

"तोरी मइया की, तुम बोलेगा रे..." श्रीकमल सिंह ने दबोचना चाहा उसे, पर रोक लिया धनराज सिंह ने।

कुछ भी कहने या करने के पहले धनराज सिंह चाहते हैं कि उनके पक्ष के लोग भी जमा हो जाएं। उनका मन कह रहा है, विद्रोह का यह नजारा स्वतःस्फूर्त नहीं है! किसी ने सोच-समझकर रचा है इसका ताना-बाना।

"दूनो ओर से खिसा-खिसी करने से मिलेगा कुछ? इधर का भी सुन लिया जाए कुछ।" रामगिरिही ने ठंडी आवाज में अपील की। दमयंती डांटती है, माथा काहे झुका लेते हैं बोलते समय, पर मलिकारों से बात करते समय रामगिरिही से ऊंचा नहीं रखा

जाता माथा। संकोच जकड़ लेता है मन को। लोग कहेंगे—'देख रहे हैं रामगिरिहीया को!'

"पहले ई बताओ, यही तरीका है बात करने का?"

"केवल आपका तरीका सही है; नहीं? कि कोई बोल रहा हो कुछ तो एक तमाचा जड़ दो उसको?" दमयंती बोली।

"हम लड़की जात से बहस नहीं करते।" धनराज सिंह सकते में आ गए हैं दमयंती का सवाल सुनकर। और पहन भी क्या रखा है! उड़े हुए नीले रंग की जींस और खद्दर का मोटा कुर्ता। टांगें फैलाए खड़ी है।

"ऊहो चमईन से!" जोगी सिंह के घरवाले और गांव के लोग भी पहुंच गए हैं घटना स्थल पर। भारी भीड़ जमा हो गई है। कुंवरपुर की लगभग पूरी मर्दाना आबादी आ धमकी है। और दमयंती को देख रही है अचरज और क्रोध-भरी आंखों से।

यह कब पहुंची! दयाशंकर भी भरे हुए हैं अचरज से।

"चमईन के साथ सोते हैं, पर बात नहीं करते...नहीं?"

"देखो रामगिरिही, समझाओ इसको, नहीं तो बहुत बुरा हो जाएगा।" जंगी सिंह गरजे, "यही बोली है लड़की जात का?"

"नाकचिपुट ने पूछा कि सरकारी नियम के मुताबिक कितना मिलना चाहिए मजूरी, तो हाथ छोड़ दिए! आप लोग पूछने गए कि क्या काम होना है तो गोली चलाने लगे। और अब चमईन से बात करने में घिनाने लगे। तो काम बंद नहीं करें तो क्या करें, बताइए?" भीड़ से पूछा दमयंती ने।

गांववालों को बता रही है, क्या-क्या होना चाहिए रोजगार गारंटी योजना के तहत काम करने में—काम करने वालों का रजिस्टर, काम करने वालों को पहचान-पत्र, न्यूनतम मजदूरी, मस्टर रोल...

"सुन लीजिए, इसका बतकही! रजिस्टर और पहचान-पत्र बांटना हमारा काम है, रे बदमास?"

"तो बताइए, क्या काम है आपका?"

"ढेर सवाल मत पूछो हमसे, कह देते हैं। काम करने का मन है तो कपार पर उठाओ तगाड़ी, नहीं तो फूटो यहां से।" श्रीभगवान सिंह भी आ पहुंचे हैं हांफते हुए।

"उठाएंगे, लेकिन आप केवल इतना दिन में क्या काम करवाए हैं, किसको कितना मजूरी दिए हैं, दिखा दीजिए सारे गांव को।"

"मलकिनी हो हमारी? हो क्या तुम? मंधाता मिसिरवा जइसा फ्रॉड की रखनी बनकर बड़का चल्हांको फूआ बन गई हो?"

"जबान सम्हाल के बोलिए, श्रीभगवान सिंह!" बोलने के बाद अहसास हो रहा है दयाशंकर को कि खुद को नाहक ही घटनाचक्र के बिल्कुल बीच में झोंक दिया है उन्होंने। भीड़ में खड़े-खड़े अचानक लगा था उन्हें कि अकेली पड़ती जा रही थी दमयंती। उसके पाले में खड़े लोग खौफ में आ गए थे श्रीभगवान सिंह के। उसकी हर बात सही थी, पर कड़वी लग रही थी गांव के बड़ों को। एक अनियंत्रित हो गए उद्वेलन

में बोल पड़े थे दयाशंकर। वरना सुना था तो इस बात से गहरी चोट पहुंची थी उन्हें कि इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा किया जाना था गांव में और कोई खबर नहीं दी गई थी उन्हें। बल्कि दमयंती के गांव पहुंच गए होने की खबर भी नहीं थी उन्हें तो।

"ई बभनकटकी साला सबसे बड़का चमार हुआ है!" श्रीकमल सिंह चीखे।

"दयाशंकरजी, आप चाल नहीं समझ रहे इन बेईमानों की।" दमयंती बोली, "किसी तरह झगड़ा करके बचना चाहते हैं कागज दिखाने से। समझिए चोर सबकी चाल को।"

"रइफलवा ले न आओ रे माधड़चोद सब...चोर बोलना भुलवा देते हैं इसका!" श्रीभगवान सिंह चिंघाड़े।

"तुम्हारी गंड़ीया में नहीं धांस देंगे राइफल! राइफल लाने चले हैं।" जोगी सिंह भी चिंघाड़े।

भीड़ की ओर रुख किया उन्होंने—"जो बूझाये सो करो रे भाई लोग...जी.टी.रोड बनाओ...भगवान बहुत दिए हैं जोगी सिंह को। ब्लौक का पइसा नहीं खाना है!"

दमयंती पूछना चाहती थी, 'जो खा गए, उसका क्या होगा?' पर माहौल कुछ ऐसा हो गया था कि कहते नहीं बना। भीड़ बिखरने लगी थी जोगी सिंह के हस्तक्षेप के बाद।

कन्हैया सिंह खुश नहीं हैं। उन्हें दुःख है इस बात का कि गांव ने एक स्वर्णिम अवसर गंवा दिया था नन्हकू की लगाई आग को हमेशा के लिए बुझा देने का। एकदम से टूट पड़ना था।

"और हम कह रहे हैं कि श्रीभगवान सिंह की लगाई आग भी कम भयानक नहीं है।" सत्यनारायण सिंह खुश हैं।

"तब?" कन्हैया सिंह गरमाए।

"हम लोग दोनों ही आग में जलते हैं। मजा तो आ रहा है।" रंगू सिंह ने कहा।

कन्हैया सिंह को इशारा किया छबीला सिंह ने कि श्रीभगवान सिंह की तरफदारी करना बुरा लगेगा सत्यनारायण सिंह को।

श्रीभगवान सिंह ब्लॉक ऑफिस पहुंच गए थे डींग हांकने कि दस दिन का जो दो-अढ़ाई सौ दे रहे थे उन सालों को, वह भी बच गया था। पर दीनमणि त्रिपाठी चिंतित हो उठे हैं, "देख रहे हैं हम कि हमारा भी आप लोग मैनेजर वाला हाल करवाइएगा।"

"आप कभी परिचय-फरिचय पत्र के बारे में बतइबे नहीं किए पहले।" श्रीभगवान सिंह ने सीधा आरोप लगाया।

"और सब जगह परिचय-पत्र बांटकर काम हो रहा है क्या? आप लोगों को आता ही नहीं है मिल-जुलकर काम करा लेना।"

"काम हमारा जहुवा गया है तो जो कह लीजिए; पर हम तो कहेंगे कि अब आप लोग भी सावधान रहिए।" झमककर खड़े हो गए श्रीभगवान सिंह और चल दिए वहां से।

"ए बाबू साहेब, सुनिए! क्या तो अमंगल उचारकर चले जा रहे हैं।" त्रिपाठीजी

घबराए कि कुछ और भी हुआ था क्या जो उन्हें नहीं मालूम था।

श्रीभगवान सिंह लौट आए—"हमको ई नहीं बुझा रहा है, बाबा, कि भोंसड़ीवाली को नियम-कानून कौन पढ़ा दिया? लगता है, आप ही के ऑफिस में भेदिया है कोई।"

"आप भी कभी-कभी एकदम सोझबक जैसा बात करने लगते हैं।" त्रिपाठीजी कुढ़ गए, "सरकार कह रही है पारदर्शिता लाइए, बुकलेट छापकर बंटवाइए और आप कह रहे हैं कि भेदिया है कोई।"

"ए महाराज, आप तो अइसा न नरभसाए हुए हैं कि हमको भी नरभसवाइएगा। कुछ किया जाएगा न उपाय।"

"अच्छा सुनिए न, एगो बात बताइए हमको। आपके गांव वाली हसीना मान जाएगी कुछ ले-देकर?"

"जाइए, पटना से सिनेमा-ओनेमा देखाकर लाइए, होटल-ओटल में कांटा-चम्मच से खिलाइए...काहे नहीं मानेगी?"

"हम आपको देते हैं मुद्रा, मना न लीजिए।"

"हमसे नहीं मानेगी। खाली बाबाजी लोगों से मानती है। नरम होता होगा आप लोग वाला।"

"तब कौन-सा उपाय कीजिएगा आप?"

"करेंगे न! आपको क्या लगता है, गांव छोड़कर भाग जाएंगे?"

त्रिपाठीजी की चिंता और भी बढ़ गई है! उन्हें लगता है, श्रीभगवान सिंह को कोई उपाय नहीं सूझ रहा इस जंजाल से बाहर निकलने का। घबराहट में कोई बड़ी बेवकूफी न कर बैठें!

"सुना गया कि नहीं कुंवरपुर वाले कांड के बारे में?" रामप्रवेश चौधरी से कहा।

"आपसे तो मिले थे लोग। समय पर ऐक्शन ही नहीं लेते आप लोग।" रामप्रवेश चौधरी ने नथुने फुला लिए।

"आपका नाम ले रहा था, सो हम बोले कि लिखवा लाओ साहब से।"

"हर काम आप लिखने पर ही करते हैं? बात करने चले हैं...ब्लॉक से हटाइए गलत-सलत लोगों को...आपसे तो कितनी बार कह चुके हैं..."

"ठेकेदारी बंद कराने का मांग कर रहा है।"

"रहा है कि रही है?"

"रही है।"

"तो बंद करा दीजिए। कमिटी बनवा दीजिए हर गांव में।"

"हम तो, सर, शुरुये से खिलाफ हैं ठेकेदारी के।" रोने-रोने-सा मन हो गया है त्रिपाठीजी का। साले खुद ही करवाते हैं सारा पाप और मुश्किल आने पर देह झाड़कर ऐसे अलग खड़े हो जाते हैं मानो पहली बार सुन रहे हों पाप के बारे में।

"हम तो काबिल आदमी समझते थे आपको, पर देख रहे हैं कि आप भी कम कनफूज्ड नहीं हैं।" रामप्रवेश चौधरी उखड़ गए हैं उनकी घबराहट देखकर, "नेगोसियेसन

का नाम सुने हैं कि नहीं?...अगर सुने हैं तो कीजिए...बुलाइए उन लोगों को... समझिए-समझाइए। और फिर कहते हैं भाई, आलतू-फालतू आदमी को हटाइए!''

दीनमणि त्रिपाठी का मन कर रहा है कि कमर पर रखें हाथ और बीच बाजार में गंड़थइया का नाच करने लगें। लोग देखें कि यही बी.डी.ओ. साहब हैं!

''मलकिनी बहुत लजाई हुई हैं, बाबा।'' जगनाथ अपने टोले की खबर लाया था।

''हमको अब माफी चाहिए, जगनाथ। दुश्मनों और तथाकथित दोस्तों दोनों मे लड़ना हमारे वश का रोग नहीं है।'' दयाशंकर क्षुब्ध थे।

''इसीलिए न लजाई हुई हैं।''

''मलकिनी के साथ दूसरे लोग नहीं थे? वो क्या सोच रहे थे?''

''दूसरे लोगों में, आप किसको समझते हैं कि बड़का बुद्धिमान है? नंदललवा कहता है कि पढ़े-लिखे हैं, लेकिन छंगुरा और नकचिपटा से भी कम बुझाता है उसको।''

''पौलटिक्स सबको बुझाता है, जगनाथ।'' दयाशंकर ने कहा और बैठ गए मुंह लटकाकर।

''दमयंतिया नंबर वन बनना चाहती है।'' माना जगनाथ ने।

''और हम नंबर दो भी नहीं रहना चाहते।'' दयाशंकर ने कहा।

दरअसल दयाशंकर बेहद परेशान हो उठे हैं दमयंती के ये आक्रामक तेवर देखकर। गुनी में नजर आई थी उस दिन तो लगा था, बस यूं ही आ गई होगी उधर से गुजरते हुए। मंधाता मिश्र से मिलना भी नहीं हो सका था उसके बाद। सोचते ही रह गए थे कि मिलकर पूछेंगे उसकी ताजातरीन मनःस्थिति और जरूरतों के बारे में कि यह दिन आ धमका था।

''आई कब?'' पूछा जगनाथ से।

''कहां?''

''कहां मतलब?''

''आई कहां है! वहीं है अभी। बस चक्कर इधर का बढ़ गया है थोड़ा।''

''इसके पहले भी आई थी गांव?''

''सुन तो यही रहे हैं।''

'' 'सुन रहे हैं' का मतलब?''

''हमको लगता है कि इन लोगों का लाइन दूसरा हो गया है, बाबा।''

'' 'इन लोगों' का मतलब?'' झुंझलाहट बढ़ती जा रही है दयाशंकर की। कितना कुछ हो रहा था उनके ही खेमे में और कोई जानकारी नहीं थी उन्हें। रामगिरिही तक ने नहीं बताया कि वह आई थी गांव। इसका मतलब? कहीं मंधाता मिश्र को भी तो कोई खतरा नहीं है!

जगनाथ कह रहा था कुछ, पर सुन कहां रहे थे दयाशंकर? उन्हें तो जल्दी से जल्दी, किसी भी तरह आज ही पहुंचना है मंधाता मिश्र के यहां। तभी साफ हो सकेगी तस्वीर।

और मंधाता मिश्र से मिलने के बाद तस्वीर सचमुच साफ हो गई है।

मंधाता मिश्र खुद भी चकराए हुए हैं। पहले तो इस बात पर कि उन्हें चकमा देकर वह मिलती रही थी धनंजयजी और उनके गुट के लोगों से, और दूसरे, इस बात पर कि भेद खुल जाने के बाद भी उसने मना कर दिया था उनसे मिलना बंद करने से।

"तब भी पोसे जा रहे हैं?" दयाशंकर के मन में बैठा डर दांत पीसने लगा है उलझन की नई गांठें देखकर।

"तो क्या करें?"

" 'क्या करें' का मतलब?" अचानक मानो समूचा परिवेश ही एक पहेली बन गया था—हर सवाल के आगे एक सवाल!

"घबराइए मत।"

"घबराएं कैसे नहीं, महाराज! कल जो रूप देखे हैं उसका, उसके बाद कैसे नहीं घबराएं? हमको तो साफ-साफ लगा कि आपके लिए भी घृणा है उसके मन में। जो डायलग मार रही थी...हम भी बेकार में उलझ गए।"

"किससे?"

"किससे क्या! उसी की तरफ से, लेकिन...आपके चलते बोलना पड़ा।"

"पहले सुन तो लीजिए हमारी बात।" मंधाता मिश्र की स्थितप्रज्ञता लौट आई है, "काम आप ही का बिगाड़ा हुआ है। उसी दिन से इसके रुख में बदलाव देख रहे हैं।"

"तो रखे काहे को हुए हैं? बोलिए—जाए, जहां जाना हो।"

"बोल चुके हैं।"

"तब?"

"तब क्या! नहीं जा रही?"

"नहीं जा रही!"

"हमसे भी लगभग बंद ही है बोलचाल।"

"हमको नहीं बुझा रहा है कि कह क्या रहे हैं आप!" चीख-से पड़े हैं दयाशंकर।

"ई क्या बोलेंगे!" मुन्नी आ गई है कमरे में, "खीर का कटोरा लेकर मनाने गए थे। फेंक दी जमीन पर।"

"दोनों भाई-बहन मिलकर जान मरवाइएगा हमारा।" मंधाता मिश्र भड़क गए हैं मुन्नी के हस्तक्षेप पर।

मुन्नी चुप हो गई है सहमी हुई-सी। दयाशंकर एकटक देखने लगे हैं सहमी हुई बहन और घबराए हुए जीजा को।

"कोई सीरियस बात हो तो बता दीजिए हमको।" बोले।

"कुछ सीरियस नहीं है। केवल बीच में पड़कर काम मत बिगाड़िए आप लोग। उसकी भी कुछ भावनात्मक समस्याएं हैं। अपनी बहनजी को बोल दीजिए कि अपना सड़ा हुआ पोंगापंथी दिमाग मत खर्च करें इस मुद्दे पर।"

"मुद्दा क्या है?"

"मुद्दा यह है कि एक नई जिंदगी जीना चाहती है वह। हम भी नहीं चाहते थे कि घर में बंधकर रहे। पर वह एक अलग तरीके से आगे बढ़ना चाहती है—हमको वह तरीका पसंद नहीं है। बीच में दो बरस का आत्मीय जुड़ाव है। यही मुद्दा है।"

"नई जिंदगी मतलब गोला-बारूदवाली?"

"देखिए दयाशंकरजी, बात यह है कि इसके मन में नन्हकू सिंह की छवि बसी हुई है। वही बनना चाहती है यह...और बन भी जाएगी।" मंधाता मिश्र अब बिल्कुल सहज हो गए हैं।

"चलिए, आपके अहसान तो हैं ही उसके ऊपर।" दयाशंकर मानो आश्वस्त होना चाहते हों कि दमयंती से कोई खतरा नहीं था मुन्नी के परिवार को।

"अहसान की बात नहीं है। बड़ी जबर्दस्त लड़की है।"

उनकी आवाज में कुछ खो देने के दुःख का घुलना महसूस किया दयाशंकर ने। नन्हकू सिंह भी इसी तरह परितप्त हो उठते थे।

"फूआ बुला रही हैं, बाबा।" भरोसा का लड़का रमेश दे गया था बोलहटा।

"बोले नहीं कि चैन नहीं है।" जगनाथ को हँसी आ गई है दयाशंकर की उधेड़बुन देखकर।

दयाशंकर तय नहीं कर पा रहे—करें तो क्या करें। गांव की तीन औरतें एक ही समय बुला रही थी उन्हें। तीनों को कुछ खास बात करनी थी उनसे। मुसमात तो कई बार भेज चुकी थीं सूबेदारबो को।

"खाली झगरा-झुगरी का प्रपंच पढ़ाती हैं, बबुआ। मत जाना।" रामज्ञान पांड़ेबो चेता चुकी हैं।

दयाशंकर भी जानते हैं कि क्या कहना है मुसमात को। पीठ ठोकेंगी जोगी सिंह के परिवार की बेइज्जती के लिए और कोई नया सूत्र देना चाहेंगी उन्हें पछाड़ने के लिए।

धनजीबो भी भेज़ चुकी थीं बोलहटा। धनजी पांड़े जेल चले गए थे उसी घोटाले के सिलसिले में, जिसमें निलंबित हुए थे। वक्त लगना था छूटने में। एक बार मिल आए थे दयाशंकर। शायद फिर जाने को कहें! धनजीबो के यहां दयाशंकर का जाना भी नहीं भाता रामज्ञान पांड़ेबो को, पर दयाशंकर के लिए इतना ही आसान नहीं है 'नहीं' कह देना। बहुत-सी बातें हैं। एक तो धनजी पांड़े का विश्वास और दूसरे धनजीबो का मुलायम व्यक्तित्व। तीसरे, दुश्मन घराने में सेंधमारी का लोभ और चौथे, पैसेवाली एक औरत से अपनापन के फायदे की संभावनाएं। पांचवे, तनु का बार-बार आना...

दयाशंकर ने उसे झटक लिया है गांव के उगते लौंडों के पंजों से।

"छिः!" और रामज्ञान पांड़ेबो को वह दिख गई थी दयाशंकर की बाहों में इठलाती हुई।

"शिवजी पंड़इया निठाह लांगा है, बबुआ। धनजीबो के फेरा में अझुरा जाओगे उसके साथ।" कितनी बार तो कितनी ही तरह से कर चुकी हैं संकेत! अब और कर

भी क्या सकती हैं! बेटे को बेपर्दा कर खुद भी तो बेपर्दा हो जाएंगी! उल्टे उन्हीं को झिड़क देगा तो क्या मुंह लेकर जिएंगी!

"ई नहीं कि नैहरा से बुलाएं किसी को तो..." जोर से झुंझला उठी हैं तनु को फिर आया देखकर, "गोसंइयाबो से पिंड छूटा तो ई पीछे पड़ गई..."

"धनजीबो का सोभाव खराब नहीं है, अम्माजी।" गणपतिबो बोली।

"खराब नहीं है तो बेकारे न दयाशंकर के पीछे पड़ी हुई है।"

"बबुआ का सोभावे ऐसा है कि सबको विस्वास हो जाता है।"

"भंडरिया के बारे में क्या-क्या तो कह रहे थे बालचन पांड़े...बड़ा डर लगता है। पूरा परिवरवे पातकी है..." बोलते-बोलते राघव पांड़े का चेहरा घूम गया है आंखों के सामने और बुदबुदाहटें एक वीराने मौन में डूब गई हैं।

बीड़ी फूंकती गणपतिबो बोल रही है कुछ का कुछ सफाई में दयाशंकर के। गदही कहीं की! कहती है, ज्ञान होता है उदय पांड़े की कुटिया पर जाने से! कह रही है, बबुआ का सोभाव बढ़िया है! देख, भिड़का लिया है पल्ला...रघउवे जैसा मसल रहा होगा उसको।

वही काला अंधा आसमान घेर रहा है आंगन को। करीब, एकदम करीब, काली गहराइयां...जबड़े खुल रहे हैं उसके और कोई डूब रहा है उनमें...कौन?...

"अम्माजी!"

"क्या हुआ?" चौंककर जागी हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"हम डर गए कि दांत लग गया क्या!" घबराहट में हाथ से छूट गई बीड़ी को जिंदा करने में जुट गई है गणपतिबो।

"क्या-क्या तो सोचने लगते हैं।" लजाई हुई हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"कहते हैं तो आप चलती ही नहीं हैं कुटिया पर। देखतीं, कितना सांती मिलता है।"

"सांती मिलता है तो इतना बीड़ी काहे पीती हैं?" दयाशंकर तैयार होकर निकले हैं तनु के साथ जाने को।

"इससे भी मिलता है।" एक खसखसी हँसी हँसने लगी है गणपतिबो।

"पीस विथ बीड़ी! इमपॉसिबुल!" तनु बोली।

'जो रे भछनी! अंगरेजी बुझाता है और ई नहीं बुझाता कि कौन हित है, कौन शत्रु।' इस विडंबना को अपने सिर पर दे मारा रामज्ञान पांड़ेबो ने। कुछ देर तक चसकता रहा दिमाग।

"बाप रे, आपको तो इतना संदेसा भेजवाना पड़ता है कि..." धनजीबो की पेशानी पर परेशानी की लकीरें हैं, "खबर भेजवाए हैं कि पैसे की जरूरत है। किससे कहें?"

"बना क्या रही हैं? बहुत बढ़िया सुगंध है।"

"मन लगे बनाने में तब तो कुछ बनाया जाए। जबसे चिठ्ठी मिली है, मन कैसा तो हो रहा है।" सामने मोढ़े पर बैठ गई हैं पानी में भीगी चूड़ियों को ऊपर-नीचे सरकाते हुए।

आज से पंद्रह बरस पहले जब शादी हुई थी धनजी पांड़े की, औरों की ही तरह दयाशंकर ने भी धनजीबो की खूबसूरती का शोर सुना था। कौन-कौन-से जतन नहीं किए थे उनकी एक झलक पा लेने को।

"क्या देख रहे हैं?" उन्हें एकटक अपने चेहरे को घूरते देखा तो सकुचा गईं धनजीबो।

"चले जाएंगे। परेशान मत होइए।" आंखें हटाए बिना ही बोले।

"क्या बना दें?"

"बना क्या रही थीं?"

"वही खाइएगा?"

"जो मन हो, खिला दीजिए।"

"अपने मन से हम आपको क्या खिलाएं!" सोचने लगीं धनजीबो।

"भइया को क्या-क्या खिलाती हैं?"

प्रस्ताव इतना सीधा और स्पष्ट था कि धनजीबो को उठकर बगलवाले कमरे में झांकना पड़ा कि बच्चे तो नहीं सुन रहे थे।

बच्चे नहीं सुन रहे थे, पर उन्होंने तो सुन ही लिया था। पिछली दो-तीन मुलाकातों से बहुत आग्रही हो गए थे दयाशंकर।

"आपके बारे में जब हम हाईस्कूल में थे, तभी से सोच रहे हैं।" प्रस्ताव को फैलाते हुए कहा।

"बाप रे! हमको तो मालूम नहीं था।"

"अब तो हो गया न मालूम?" ऊहापोह अब इस बिंदु पर था कि शुरुआत कैसे हो? फिल्मों के हीरो-हीरोइन की तरह गले मिला जाए कि उभारों पर सीधा धावा बोला जाए।

"सुनाइए, और क्या-क्या सोचते थे?" धनजीबो खुद ही सट गईं आकर तो यह ऊहापोह भी गिर गया।

"भाक्! कैसा तो लगता है!" कीलित हो जाने के बाद धनजीबो बोलीं, "पहले सुनते थे किसी के बारे में तो...सोचते थे, सनक जाती है क्या औरतिया सब..."

"असल में अच्छा लगता है!" दयाशंकर बोले, "बाद में सोचकर अच्छा नहीं लगता।"

ई कोई बात हुआ कि मन करे तो...

"अपना एक्सपीरियेंस हम बताए आपको? खाली मौका मिलने का बात है...कोई भी करेगा..."

"कोई भी तो खैर नहीं करेगा, पर..."

"असल में शारीरिक सुख से ज्यादा दूसरे तरह का सुख मिलता है। मन खूब फैल गया-सा या खिल गया-सा नहीं लगता?"

"पता नहीं!" सोचकर लजा गई हैं धनजीबो कि एक पराये मर्द के नीचे दबे

हुए क्या गंभीर चिंतन हो रहा है!

"हमको तो लगता है।"

"जाने दीजिए, किसी को तो लगता है।" कहा और दयाशंकर की चढ़ी हुई त्योरियां देखकर हँस पड़ीं, "अब उठिएगा भी।"

"उठना तो पड़ेगा ही।" पंद्रह साल पहले के स्तनों को दबाते हुए उठ गए हैं दयाशंकर!

मादा जांघों की गर्मी से तुरंत बाहर आकर मन तो नहीं कर रहा था दमयंती से मिलने का, पर लगा, उसके बुलावे को अनसुना करने से और चौड़ी हो जाएगी उनके बीच की खाई।

नंदलाल के घर के पीछेवाली खंडी में सेम की लत्तरों के नीचे एक मचिये पर बैठी हुई थी दमयंती।

"सोचिए, क्यों बुलाए हैं?" उसका चेहरा लहक रहा था उत्तेजना से। दयाशंकर उसका चेहरा ही देखते रह गए कुछ देर तक। पीड़ा या पछतावा, कुछ भी नहीं था वहां। एक धधकता हुआ ठोस सांवलापन था केवल।

हरे नोटों की पांच गड्डियां पटक दीं उसने सामने पड़े खटोले पर—"बी.डी.ओ. ने दिया है घूस। मुंह बंद रखने के लिए।"

"कह रहे थे, हम लोग पथिक हैं और यह पाथेय है। बोलिए, क्या किया जाए इस पाथेय का?"

"पूछ लो सबसे।" छोटा-सा जवाब दयाशंकर का।

"सबसे पूछने पर तो हो चुका कुछ भी...माई तो झोंटा पेरकर छीन लेगी...हमीं लोग को तय करना है।" दमयंती इतराई।

"हम भी हैं हमी लोग में?" मन में कब से तो टीसता हुआ दुःख बोला।

"हमारे मन में भी है गुस्सा...बोल रहे हैं?" उसकी मुद्रा की आत्मीयता ने छुआ दयाशंकर को।

"हम कहां बोल रहे हैं कुछ!" कहा।

"तो बोलिए कुछ।"

"हमको, दमयंती, अभी इतना भरोसा नहीं है अपने ऊपर कि कुछ बोल सकें।" अपने मन की कमजोरी परोस दी दयाशंकर ने, "हमको अभी तक यह विश्वास भी नहीं है कि हम शामिल होना ही चाहते हैं इस लड़ाई में।"

कोई प्रतिक्रिया नहीं जाहिर की दमयंती ने।

"आपके ऊपर इतना भरोसा क्यों है सबको? हमको तो कभी नहीं रहा, पर और सबको है।" थोड़ी देर के बाद बोली।

"अच्छा छोड़ो; तुम बोलो, क्या सोची हो?" दयाशंकर मुस्कराए उसकी कड़ुवाहट को कड़ुवाहट से लौटाने की कोशिश पर।

"हमारे ऊपर गुस्सा भी हो रहे थे कि न्यूनतम मजदूरीवाले मुद्दे पर विरोध के प्रोग्राम के बारे में अपको क्यों नहीं बताया। बहुत गुस्सा थे।"

"हम भी थे।"

"इसीलिए तो पूछ रहे हैं, क्या किया जाए?"

"इस बार-भर तुम्हीं बोल दो।"

"धावा बोल देते हैं।"

"कहां?"

"ब्लॉक ऑफिस पर। कबूलवाएंगे उससे।"

"फिर?"

"क्यों?"

"तमाशा करने जैसा नहीं लगेगा?"

"एक बार करते हैं। अब सवाल मत पूछिए।" दमयंती ने बंद कर दी बातचीत।

राहत-सी महसूस कर रहे हैं दयाशंकर। मन में हौल बैठा हुआ था कि दमयंती के साथ यह मुठभेड़, पता नहीं कौन-सा मोड़ ले ले, पर आश्चर्यजनक रूप से बिना किसी कड़वाहट के ही समाप्त हो गई थी, बल्कि थोड़ी मिठास ही छोड़ती गई थी।

"तुम चले गए तो क्या-क्या नहीं बोला शिवजीउवा...छत पर खड़ा होकर चिकर रहा था हलखोर जइसा..." रामज्ञान पांड़ेबो ने खबर दी घर पहुंचने पर।

"विभूति काका वाला रोग लग गया।" दयाशंकर हँसने लगे।

"अच्छा लगता है सुनना?"

"देखती न जाओ, कैसे बंद हो जाता है बोलना।"

उनका यह आश्वासन और भी अवसन्न कर गया रामज्ञान पांड़ेबो को।

ब्लॉक ऑफिस के सामने जमा हो गई भीड़ में दयाशंकर की आंखें दमयंती पर ही टिकी हुई हैं। इस तरह खुश और उत्साहित है कि भीड़ के जिस हिस्से में जाती है, एक नए जोश से भर जाता है। मंधाता मिश्र कह रहे थे—नन्हकू सिंह बनना चाहती है। पर खुद नन्हकू सिंह के व्यक्तित्व में ही ऐसी सच्चाई नहीं थी। हो सकता है, समय इससे भी छीन ले यह सच्चाई!

लाउडस्पीकर से होती उद्घोषणा सुनकर खयालों की लड़ी टूटी है दयाशंकर की।

गुनी में लोग मुंह बाए खड़े थे। फिर वही नजारा! दीनमणि त्रिपाठी चौकी पर रखी एक कुर्सी पर खड़े होकर कबूल रहे थे कि ब्लॉक में क्या-क्या धांधलियां हो रही थीं। दस हजार से भी ज्यादा लोगों की भीड़ सुन रही थी। पान्च हजार रुपयों की, फटे जूतों के साथ, माला बनाकर पहना दिया गया था दीनमणि त्रिपाठी को। ये रुपये उन्होंने दमयंती को दिए थे मुंह बंद रखने के लिए।

"इसके बाद अब किसका पारी है, सालिग्राम बाबू?" अवधेश चौधरी पूछते हैं एक खिसियानी हँसी हँसकर।

"हमहीं खड़ा हो जाएंगे। एकरी माईचोदो सुने पब्लिक। चाहे सब आदमी एके साथ

खड़ा हो जाते हैं।" शालिग्राम सिंह कनखियों से देखते हैं अवधेश चौधरी के चेहरे को।

अवधेश चौधरी को अपने भाई की कच्ची राजनीतिक समझ के ऊपर गुस्सा आ रहा है। कायदे के अधिकारियों की पोस्टिंग तक नहीं करा पाए गुनी में—ऐसे, जो कमवाएं भी और मैनेज भी करें सिचुएशन को। दरोगा ऐसा रख लिया कि चूतड़ अलगाए संतरी जइसा लेफ्ट-राइट कर रहा है। ई नहीं कि दस कित्ता झूठिया केस लादकर जेल में ठेल दें सालों को। उल्टे भाषण भी पिला रहा है।

रामप्रवेश चौधरी अपने बैठके में बैठे हुए सुन रहे हैं ब्लॉक आफिस से आती आवाजें। सांसें टंगी हुई हैं कि तिरपठिया कहीं यह भी न कह दे कि बैठके के आगे जो नया कमरा बन रहा था, वही बनवा रहा था। पर दयाशंकर ने सख्त हिदायत दे रखी थी इस बार कि बात कबूलवानी थी, नाम नहीं।

"अब साथी दयाशंकरजी एक महत्त्वपूर्ण घोषणा करेंगे।"

"कौन-सी?" बुरी तरह घबरा गए हैं दयाशंकर।

"साइनबोर्डवाली।" नंदलाल फुसफुसाया।

दीनमणि त्रिपाठी के दिए पांच हजार रुपये से एक साइनबोर्ड बनाकर उस पर सभी योजनाओं के नियम लिखवाने की घोषणा की गई।

"लौटते समय तो पकड़िये न सकते हैं?" अवधेश चौधरी बड़े दरोगा पर गरमाए।

"किस आरोप में?"

"आरोप आपको नहीं बुझा रहा?"

"त्रिपाठीजी से एफ.आई.आर. तो करवाइए।"

"रहिए, भुलवाते हैं आपका टंडेली बतियाना।" अवधेश चौधरी का भुनभुनाना सुना शालिग्राम सिंह ने; पर बिना कोई जबाव दिए हुए ही दूसरी ओर बढ़ गए।

"बाकी एक काम बड़ा बढ़िया हो गया भइवा।" नारद सिंह के चेले एक अलग कारण से खुश हैं, "दमयंतिया अब मंगबो करेगी किसी से तो नहीं देगा डर के मारे...ई चमईन गरीबिये में मरेगी..."

श्रीभगवान सिंह लेकिन दुःखी थे।

"उड़ाइएगा नहीं, भइया?" पूछा नारद सिंह से।

"काहे को?"

"पूछ रहे हैं, काहे को?"

"महाबकलंड जइसा मत बतिआया करो! मारो न ब्लॉक का गोली। रामपरबेसवा के छटपटाने का मजा लो। एकरा बहिन के...बैकवर्डवाद करने चले थे।" नारद सिंह ने डांट दिया श्रीभगवान सिंह को, "लड़ने दो चमार-सियार सबसे।"

"ई सोचके न खराब लग रहा है कि हमारे ही कारण बेआबरू हो गया बेचारा बाभन।"

"बेचारा लग रहा है तुमको?" जोर से उखड़ गए हैं नारद सिंह। सामने पड़ा शीशे

का ग्लास जमीन पर पटक दिया है—"भोंसड़ियावाले का दरमाहा होगा आठ-दस हजार और पटना में बिल्डिंग ठोके हुए हैं बीस लाख का; बाल-बच्चा अंगरेजी स्कूल में पढ़ रहा है; बीबी जेन में घूम रही है...बदले में थोड़ा-मोड़ा बेइज्जत भी नहीं होंगे मइयाचोद लोग?... हमको तो मजा आ रहा है..." नारद सिंह टेबुल पर ठेका देने लगे हैं मौज में।

"आप ही के गांव से आ रही है यह सारी लहर।" रामप्रवेश चौधरी ने नौलाख महतो से कहा।

"आने दिया जाए न! बाद में सोचा जाएगा। अभी तो श्रीभगवान सिंह को झेलने दिया जाए कुछ दिनों तक।" नौलाख महतो ने अपनी बेफिक्री का कारण बताया।

"लेकिन गुनी में ऑफिसर ठीक-ठीक लाना है, भइया।" अवधेश चौधरी ने अपनी पीड़ा सामने रखी, "और शालिग्राम सिंहवा को तो कल तक खदेड़ देना है।"

रामप्रवेश चौधरी ऐसे सुन रहे थे गंभीरा फूआ बने हुए मानो गरुड़ हों, जो उड़ेंगे तो एक ही वार में सफाचट करते आएंगे सारे सांपों को।

रामप्रवेश चौधरी दरअसल स्वभाव से नेता नहीं थे। बस, एक चतुर-चालाक आदमी थे गांव का, जिसे इतनी तिकड़में आती हों कि अपने स्वार्थों की रक्षा कर सके। लंबे समय तक वे खुद ही सोचते रहे थे कि पौलिटिक्स मनोरमा मिसिर जैसे धूरफंदी के लिए ही ठीक थी, पर परिस्थितियां कुछ ऐसी बनीं कि मनोरमा मिश्र, बूटन राय, शिवदयाल यादव—इन सभी पर भारी पड़ गए चौधरीजी। कम्यूनिस्टों ने शिवदयाल यादव को टिकट दे दिया तो एक ऐसे बैकवर्ड नेता की जरूरत पैदा हो गई जो यादव नहीं हो और चुनाव में अपने घर से भी कुछ लगा सके। चौधरीजी में इन दो खूबियों के अलावा एक बहुत बड़ी खूबी यह थी कि साफ-सुथरी छवि थी उनकी। दारूबाजी, लौंडाबाजी जैसी आदतों से दूर थे। इन तीन खूबियों के बाद यह खामी गौरतलब नहीं रही कि पढ़े-लिखे हुए बहुत नहीं थे। भाषण देने में भी तकलीफ होती थी। पर माहौल ऐसा हो रहा था कि इसके अलावा कुछ कहना भी नहीं था भाषण में कि पंडित, राजपूतों, भूमिहारों वगैरह को बता देना है कि हमेशा उन्हीं की चलने वाली नहीं थी।

चूंकि रामप्रवेश चौधरी स्वभाव से ही नेता नहीं थे, नेता जैसा दिखने के लिए नकल करते रहते दूसरे नेताओं की। बोलने और बात करने की उनकी स्टाइल हर विधान सभा सत्र के बाद बदल जाती। किसी रंगबाज नेता से प्रभावित हो जाते तो उसी की तरह सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को डांटने-डपटने लगते और कोई सज्जन, संभ्रांत नेता भा जाता तो शालीनता की मूर्ति बन जाते उसी की तरह। चूंकि नेतागिरी उन्हें संयोगवश मिल गई थी, उनके मन में यह डर हमेशा बना रहता कि उसी तरह उनसे छिन भी जाएगी एक दिन। छोटी-छोटी घटनाओं से भी बहुत घबरा जाते। मानो गलती पकड़ी जाने पर पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा होने के पहले भी विधायक का पद छीन लिया जा सकता था। चौधरीजी को इस बात की चिंता रहती कि विधायक के रूप में परफॉर्मेंस ठीक रहे उनका।

"पता नहीं, परफौरमेन्स कौन देखता है आजकल!" अवधेश चौधरी चिढ़े रहते अपने अग्रज में आत्म-विश्वास की कमी के कारण।

अवधेश चौधरी की प्राथमिकताएं अत्यंत स्पष्ट थीं। नारद सिंह की फौज के खौफ का सामना करने के लिए एक वैसी ही फौज खड़ी करनी थी। राइफल की नालों पर लाल झंडा लहराते रैलीबाजों को नेस्तनाबूद करने के लिए उग्र और आक्रामक जातिवादी राजनीति करनी थी। खूब माल बनाना था और बांटना था; ताकि पार्टी के कर्णधारों को भी लगे कि कुछ हो रहा था गुनी में। बैंक मैनेजर के बाद, दीनमणि त्रिपाठी के साथ हुई बदसलूकी के बाद उनकी रणनीति के अनुसार, तिलक-तलवार वर्ग और ब्रह्मर्षि-चित्रगुप्त समाज के अधिकारियों को गुनी से निकाल बाहर कर, अपने मनलायक अधिकारियों को लाना था; उनसे शपथ खिलवानी थी कि जो भी करेंगे, विधायकजी की अनुमति से करेंगे और उनके साथ अपने हथियारबंद लोगों को लगा देना था, ताकि वे ताल ठोंककर सामना कर सकें दुश्मनों का।

रामप्रवेश चौधरी चुप थे। रह-रहकर गिरगिट की तरह सिर हिला देते केवल।

"आज सालिगरमवा नहीं मान रहा है बात, कल कोई नहीं मानेगा। कहेगा कि जब बेइज्जत ही होना है एक दिन तो क्या फायदा बिधायक-फिधायक का सुनने का।" अवधेश चौधरी ने कहा।

"तुम चाहते थे कि भीड़ में गोली चला देता?" रामप्रवेश चौधरी अनसाए।

"बैंक मैनेजर वाले कांड के बाद कुंवरपुर के लंहेड़ा सब को फंसा भी नहीं सकता था?"

"उसके बाद एक मिनट भी रुका कहां मुंशीजीउवा?" हँसी आ गई है रामप्रवेश चौधरी को, "कहते रह गए कि केस कर दीजिए, सब ठीक हो जाएगा; लेकिन ऐसा भागा कि..."

"लाला-बिलाला नहीं ठाटेगा यहां!" नौलाख महतो भी हँसे उनके साथ।

"लेकिन एक बात हम जरूर कहेंगे, भइया! भले आपके लिहाज के चलते नौलाख भाई लोग कहें, चाहे नहीं कहें। आपके रहते हुए भी हम लोगों के आदमी का काम नहीं हो रहा। नौलाख भाई बोले थे, तो भी तिरपठिया कुंवरपुरवाला काम श्रीभगवान सिंह को दे दिया।" अवधेश चौधरी ने कहा और धुंआते हुए बाहर आ गए बैठक से।

14

अन्हरी की फुलवारी में बांस की थूनियों पर खड़ी पुआल की छत और बिना दीवारोंवाली लंबी-सी मड़ई में एक स्कूल शुरू किया था दमयंती ने। शाम को छः बजे से आठ बजे तक पढ़ाती थी बच्चों को। धनंजयजी ने ही सलाह दी थी स्कूल खोलने की। कहा था, लक्ष्य यह होना चाहिए कि धीरे-धीरे अनपढ़ महिलाएं भी प्रेरित हों काम-भर पढ़-लिख लेने को।

कुछ मामलों में आम स्कूलों से अलग था यह स्कूल। और इसीलिए खटकता था कुंवरपुर के बड़ों को। वाक्य-रचना सिखानी होती तो दमयंती सिखाती—अछूत कहलाना अपराध है; भूमिहीन होना एक सामाजिक षड्यंत्र है; अपमान बर्दाश्त करना पाप है। नया शब्द सिखाना होता तो दमयंती सिखाती—आत्म-सम्मान। बच्चे कहते—बहुत मुश्किल है दीदी। दमयंती उसकी जगह 'स्वाभिमान' लिख देती। किताबी पाठ्यक्रम के अलावा अपना एक अलग पाठ्यक्रम भी बनाया था उसने—दलितों और भूमिहीनों की मदद के लिए बने कानूनों के बारे में बताती बच्चों को। बच्चों को स्वाभाविक था कि बड़ी अजीब-सी लगती उसकी बातें। उन्हें विश्वास नहीं होता कि जिन कानूनों की चर्चा वह करती थी, उनके दायरे में उनका अपना कुंवरपुर भी था। पर सुनना नहीं चाहते तो गुस्सा जाती दमयंती—'बाप-दादा ने तो नहीं ही सुना, कम से कम तुम लोग तो जानो!'

कुंवरपुर के बड़े माथा पीट लेते कि सनक गई है रामगिरिहीया की बेटिया और पूरे चमटोल को सनकाएगी।

"का रामगिरिही, रमायन-महाभारत का कहानी ओरा गया कि अगड़म-बगड़म सिखा रही है दमयंतिया?" लोग रामगिरिही से पूछ देते और जवाब देते नहीं बनता रामगिरिही से।

दमयंती सिखाती बच्चों को कि गाली-गलौज नहीं करनी चाहिए; कोई गाली दे तो बर्दाश्त नहीं करना चाहिए; किसी का जूठा नहीं खाना चाहिए; क्लास में सबसे आगे बैठना चाहिए; किसी से छोटा नहीं महसूस करना चाहिए खुद को। वे फिर भी गाली-गलौज करते, गालियां बर्दाश्त करते, जूठा खा लेते, अपने को छोटा महसूस करते, तो खुशी होती कुंवरपुर के बड़ों को—जनमते बबुआ गोर ना भइलें त अंवटला से गोर होइहें?

दमयंती अंगरेजी के शब्द सिखाती बच्चों को और कहती कि शर्माएं नहीं बोलने में, पर उनके बापों के मलिकार जल-भुन जाते उनके मुंह से 'फिरंगी' शब्द सुनकर—"भईसिया अंगरेजी नहीं बूझेगी, रे बचवा...अपनी दिदिया को सुनाना..." चिढ़ा देते उन्हें।

महीना भी नहीं बीता था खुले हुए, पर कुंवरपुर में चर्चा का सबसे रोचक और उत्तेजक विषय हो गया था उसका स्कूल। लोग मजाक करने लगे थे कि बड़ी मशक्कत के बाद जो रद्द हुआ था शिवजी पांड़े के निलंबन का आदेश, दीर्घजीवी होने वाला नहीं था। किसी न किसी दिन दमयंती सोचती कि धावा बोला जाए उनके स्कूल पर।

"हम पहले से ही उसी के पार्टी में हैं।" शिवजी पांड़े कहते।

"पार्टी में रहने से क्या होगा? पढ़ाइएगा नहीं तो पकड़ेगी नहीं?"

"और लल्लन भाई का नहीं पकड़ेगी?" शिवजी पांड़े जानकर 'को' की जगह 'का' का इस्तेमाल करते, "स्कूल छोड़कर बूटन राय का गोला अगोरे रहते हैं।"

"तब लल्लन सिंह को जानते ही नहीं हैं आप!" लल्लन सिंह ताव खा जाते। दूसरे शिक्षकों के साथ अपनी तुलना किया जाना उन्हें बुरा लगता।

लल्लन सिंह ने एक नायाब तरीका ढूंढ़ा था रोज-रोज स्कूल जाने की समस्या से निजात पाने का। दूसरे शिक्षक प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी को नियमित रूप से वेतन का एक

हिस्सा देते थे आवाजाही के जंजाल से बचने के लिए। लल्लन सिंह का मन नहीं किया कि गणेश बैठा को हुजूरी पहुंचाएं। फिर बूटन राय जैसे महान् शिक्षा-प्रेमी के गांव में यह संभव भी नहीं था कि कोई गणेश बैठा को पैसा देकर स्कूल ही नहीं जाए। बूटन राय के भाई लुकुड़ी राय ने घोषणा कर रखी थी कि 'लांड़ से आंड़ अलग कर देंगे ऐसे मास्टरों का!' सो लल्लन सिंह ने बूटन राय के ही एक बनिहार के पढ़े-लिखे लड़के के साथ करार कर लिया। वे आएं, न आएं, वह जरूर पढ़ाएगा स्कूल में और लल्लन सिंह हर महीने एक हजार रुपये उसे दे देंगे। बूटन राय भी खुश कि बिना एक धूर टोपरा दिए हुए ही एक बनिहार मिल गया था और गांव खुश कि लल्लन सिंह से लाख दरजे अच्छा पढ़ाता था वह एक-हजरिया मास्टर। अब आराम से खादी सिल्क के कुर्ते के पॉकेट में धोती का एक खूंट खोंसे हुए घूमते और भाजपा की राजनीति करते लल्लन सिंह।

"एक दिन गणेश बैठा को याद आया कि बड़का हाकिम हैं हम, समझे कि नहीं?" लल्लन सिंह सुनाते हैं, "बूटन रायजी के यहां जा रहे थे बैंकवा से...दू-चार गो और साथी थे...तो टोक दिए कि आज तो स्कूल खुला है, लल्लन बाबू...तले प्रदेश महामंत्री का काफिला आ गया उधर से...बेचारे अंबेसडरे में से प्रणाम-पाती किए...उसके बाद तो बैठाजीउवा का...देखते हैं कि हइहे नहीं है कहीं..." कहते-कहते घनघोर आत्म-मौग्ध्य की चपेट में आ जाते हैं लल्लन सिंह, "फिर तो एक दिन घिघियाने लगा कि कह-सुनकर मुजफ्फरपुर बदली करवा दीजिए...हम कहे कि साले टेटीहाराम..."

व्यवस्था के नकारेपन पर हंसने वाले ये लोग दमयंती के प्रयासों पर भी हँसते थे।

श्रीभगवान सिंह ने सत्यनारायण सिंह के घर की ओर की बिजली की लाइन काटी थी तो चमटोली की लाइन भी कट गई थी, परंतु इस समस्या को कभी भी एक गंभीर समस्या नहीं समझा गया पहले, क्योंकि बिजली रहती ही नहीं थी। आती भी थी तो रात को दस-ग्यारह बजे के बाद घंटा-दो घंटा के लिए। गांव सो चुका होता था उस वक्त और रात को उसी समय पेशाब-तेशाब करने को उठा कोई आदमी नहीं बता देता अगली सुबह तो जानता भी नहीं कि आई थी।

समस्या अब समस्या जैसी लगने लगी थी, क्योंकि पिछले दो-तीन दिनों से शाम को लगातार रह रही थी। आधा गांव नहाया होता रोशनी में और दमयंती का स्कूल अंधेरा ओढ़े रहता। दमयंती का मन नहीं लग रहा था पढ़ाने में। निगाहें जब-जब भी जोगी सिंह के तीनमंजिले मकान की ओर जातीं, उसे लगता, उसे कोई अधिकार नहीं था दूसरों को कुछ भी सिखाने-पढ़ाने का।

"पूरे गांव की लाइन काट देते हैं।" नंदलाल से कहा उसने।

बिना कुछ और सुने ही हिम्मत जवाब दे गई नंदलाल की। उसके मन ने कहा—यह काम जानलेवा हो सकता है। पहले ही दो बार चोट किया जा चुका था श्रीभगवान सिंह पर। पता नहीं, क्या तैयारी कर रहा था जवान कि जवाबी चोट नहीं की थी। अब एक और चोट!

"क्या कहते हैं?" उसे चुप देखा तो पूछा दमयंती ने।

"दयासंकर बाबा तैयार नहीं होंगे।" उसने कहा।

"दयाशंकर बाबा को बताएंगे ही नहीं।" दमयंती ने कहा दृढ़तापूर्वक।

छांगुर उसका मुंह देखता रह जाता है ऐसे मौकों पर। एक वक्त था जब छुई-मुई-सी बैठी रहती थी नन्हकू सिंह की दालान के एक कोने में। नन्हकू सिंह बैठने को कहते मोटर साइकिल पर तब भी नहीं बैठती। लजाकर खड़ी हो जाती रामगिरिही के पीछे। और वही आज श्रीभगवान सिंह के घर की लाइन काटने को कह रही थी!

"सिरीभगवनवा को पता चल गया तो चुप नहीं बैठेगा।" छांगुर ने जैसे उसे एक और मौका दिया खतरे को भांपने का।

"गुपचुप करते हैं। केवल हम, आप और नंदलाल भाई जानेंगे। एक मिस्तरीआव जानने वाला आदमी खोजना होगा।" दमयंती पीछे हटने को तैयार नहीं थी।

"तुम भी एकदम नन्हकू सिंहवा का दहिनेवार निकल गईं।" छांगुर भी महसूस करने लगा है वह रोमांच जो दमयंती महसूस कर रही थी। खतरे उठाना उसे भी अच्छा लगता है।

"भुलेटना जानता है बिजली का काम।" नंदलाल ने बताया, "यही है कि तैयार होगा कि नहीं..."

भूलेटना तैयार था। तय हुआ कि बिजली चली जाती है तो चुपके से जाएंगे ये चारों लोग और ट्रांसफॉर्मर से ही पूरे गांव की लाइन काट देंगे। शक की सूई उनकी ओर होने की गुंजाइश कम थी इस मामले में। श्रीभगवान सिंह सोचते, सत्यनारायण सिंह के परिवार का काम था यह।

गांव तब चौंका, जब एक लंबी चीख सुनाई दी ट्रांसफॉर्मर की दिशा से आई हुई।

"भागो!" कहा छांगुर ने और भाग चला। दमयंती और नंदलाल भी भागे। रुकने का कोई मतलब भी नहीं था। भूलेटना की निर्जीव देह पूरी तरह से काली पड़ गई थी। सर्चलाइटों और टॉर्चों की रोशनियां टोह लेने लगी थीं चीख की दिशा में। रात के बारह बजे का समय था। पूरा गांव आतंकित हो उठा था। चीख सुनाई पड़ने के लगभग आधे घंटे के बाद हिम्मत जुटा सका बाहर निकलने की। भूलेटना की काली पड़ गई झुलसी हुई लाश पड़ी थी ट्रांसफॉर्मर के पास। लोग घेरा बनाए खड़े थे हतप्रभ, निर्वाक्। रहस्यमय चुप्पी ओढ़े हुए।

"जिन लोगों ने पाप किया है, वो तो लाज के मारे चुप हैं, पर आप लोग क्यों चुप हो?" दमयंती की कड़कदार आवाज ने तोड़ी है चुप्पी, "जानने का मन नहीं कर रहा, क्यों हुआ ऐसा?"

नंदलाल और छांगुर अकचकाए-से देखने लगे हैं दमयंती को। कोई जिन्न समा गया है क्या इसके अंदर! कहां तो छिपती फिरती डर के मारे, उल्टे दूसरों पर ही गरज रही थी।

"रात-बिरात ट्रांसफर्मर पर चढ़ने का इसको क्या काम था?" जंगी सिंह मुनमुनाए।

"वही तो हम भी पूछ रहे हैं?"

"बुझा नहीं रहा है कि पूछ रही है रे चांडालिन कहीं की?" दूधनाथ सिंह

पितपिताए, "सरवा चोरी करने चढ़ा था और..."

दूधनाथ सिंह नहीं चाहते कि कोई सोचे कि घटना से उनके परिवार का भी लेना-देना हो सकता था कुछ।

"ए भाई, ई गांव अब रहने लायक नहीं रहा...एकरा बहिन चोदो, बहुत खराब हो गया है इस गांव का आदमी..." पल्टू सिंह ने भी अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया है—गांव यह न समझे कि सत्यनारायण सिंह के साथ दोस्ती थी, इसलिए कन्हैया सिंह का भी हाथ हो सकता था भूलेटना को उकसाने में।

"आदमी तो खराब हो ही गया है, नहीं तो एक हिस्सा गांव में बिजली जले और बाकी गांव में अंधेरा रहे, कहीं होता है ऐसा?" दमयंती बोली।

"ए रामगिरिही!" जोगी सिंह दहाड़े, "जरा समझा दो अपनी बबुई को, नहीं तो अभीये हो जाएगा कुछ...भुला जाएगा चोन्हा चुआना..."

"खदेरो एकरी महतारी डाइनचोदो को!" जंगी सिंह ने भी मौका देखकर उछाल दी है एक गाली।

नंदलाल ने इशारा किया, बहुत हो गया। अब बेसी बोलने से बिगड़ जाएगा काम!

"गाली क्यों देता है?...हम भी देंगे..." दमयंती फुफकार रही थी, पर रामगिरिहीबो ने धकेलना शुरू कर दिया है उसे—"झोंटा पेर देंगे रे मंछझोंकनी...लुआठी लगा देंगे बूरी में...गांव छोड़ाएगी हमारा तो चाम छोड़ा लेंगे बिहूनी का..."

"बड़ा याराना लगता है रे?" थोड़ी दूर हटकर एक मेड़ पर चुक्का-मुक्का बैठकर कलक्टर सिंह का महेंदर यह थियूरी पेल रहा था कि जरूर दमयंतिया का भूलेटना से टांका भिड़ा हुआ था, नहीं तो इतना नहीं छछनती।

"का बाबा, आप खाली झोरे ढोते रह जाइएगा पीछे-पीछे?" दयाशंकर पर बोल छोड़ा।

"तो भेज न दो अपनी दिदिया को। दू चभक्का ले लेते हैं।" गणपति पांड़े खड़ा हो गए भाई के बचाव में। और लगा कि एक और लाश गिर जाएगी यहीं ट्रांसफार्मर के पास।

अन्हरी का पूरा परिवार रो रहा था लाश के पास बैठकर, यह भी भूल गए थे लोग। सारा जोर महेंदग और गणपति पांड़े को वहां से हटाने में लग गया था। दोनों ही माने हुए अधकपारी थे कुंवरपुर के।

एक ही काम था गणपति पांड़े का—डोल-डाल से निवृत्त होकर, मुंह में कुछ लगाकर, जाकर महादेव सिंह के दुआर पर बैठ जाना। दोपहर को घर आकर गवत उठाना और पुनः महादेव सिंह की दालान में हाजिर हो जाना। दोनों बेटियों को निबटा दिया था जैसे-तैसे और निश्चिंत हो गए थे। खेत मनी पर लगा दिया था। साल-भर खाने-भर का धान मिल जाता। जिस दिन दाल नहीं बनती, रामज्ञान पांड़ेबो के यहां से माठा मांग लाते। कभी-कभी चूड़ामनबो को कोई काम लेना होता उनसे तो सब्जी या अंचार भिजवा देती। काम निकल जाता तो बंद कर देती भिजवाना। गणपति पांड़े जी भरकर गालियां

देते और हाथ झुलाते हुए वापस आ जाते। बिना सब्जी के ही दाल-भात या माठा-भात सरपोट जाते। गणपति पांड़े को लाख समझाया लोगों ने, पर न तो कभी कोई बिरवाई लगाई, न लगहर रखी। कोई इतना काहिल क्यों हो जाता है, कुंवरपुरवालों की समझ में आज तक नहीं आया।

घर गिरने-गिरने को हो गया तो चूड़ामनबो से लड़ने लगे कि अपने खाली पड़े घर में ही एक कमरा दे दे। चूड़ामनबो नहीं तैयार हुई। रोज सुबह उठकर कुछ दिनों तक उसे झोंटा पकड़कर निकाल बाहर कर देने की गीदड़भभकी देते रहे, फिर 'ढहेगा तो देखेंगे' के संकल्प के साथ उसी ढहने-ढहने को हो रहे घर में रहने लगे।

वैसे एक बार कुछ कर दिखाने का मन गणपति पांड़े का भी हुआ था। कुछ बरस पहले की बात है यह। घर में झगड़ा हुआ और गणपतिबो को लात मारते हुए आरा चले गए थे। सुधाकर पांड़े के एक जान-पहचानवाले ने एक बुक-स्टॉल पर बिठा दिया था। कहा, 'फर्स्ट क्लास काम है। बेचिए और कोई नहीं आता तो अपने पढ़िए!'' गणपति पांड़े पत्र-पत्रिकाएं बेचने के काम में लग गए थे। पर बुक-स्टॉलवाले को जल्दी ही लगने लगा कि जितना वह उन्हें दे रहा था, काम उतना नहीं ले रहा था उनसे; सो एक दिन कहा, ''घरवो में तो बाबा बैठारिए रहता होगा, काहे नहीं सुबहवा को अखबरवा आप ही बांट देते हैं। लड़कवा कुछ दिन के लिए छुट्टी ले लिया है।'' और गणपति पांड़े अखबार भी बांटने लगे। लड़कवा ने छुट्टी नहीं ली थी, उसकी छुट्टी कर दी गई थी।

गणपति पांड़े को लाज लगती थी अखबार बांटने में। मन में यह डर बैठा रहता हमेशा कि गांव या रिश्तेदारियों का कोई मिल नहीं जाए रास्ते में। और एक दिन यही हुआ भी था। कलक्टर सिंह मिल गए थे। उनके एक रिश्तेदार प्रोफ़ेसर थे कॉलेज में, उन्हीं के यहां आए हुए थे। दूर से ही चिल्लाने लगे थे—''ए गणपति बाबा, ए गणपति बाबा...!'' गणपति पांड़े फिर भी साइकिल भगा ले जाना चाहते थे महटिया कर, पर एक बैलगाड़ी आ गई थी आगे और रुकना पड़ गया था।

''हई देखिए...गांव में तहलका मचा हुआ है कि गणपति बाबा कहां गए...फगुआ कैसे गवाएगा...और गणपति बाबा अखबार बांटने में लगे हैं...'' कलक्टर सिंह अपनेपन का प्रदर्शन कर रहे थे और गणपति पांड़े जितनी जल्दी हो सके, गायब हो जाना चाहते थे धरती के किसी अजाने भूखंड में। खुद को इतना अपमानित उन्होंने कभी नहीं महसूस किया था।

''समझ जाया जाए कि गणपति बाबा नहीं रहें तो हमारे गांव में फगुआ गाने का रिवाज ही खतम हो जाएगा...'' कलक्टर सिंह अपने संबंधी से परिचय करा रहे थे उनका और संबंधी के चेहरे पर साफ लिखा हुआ था, 'इस जवाल को कहां से पकड़ लाए कलक्टर सिंह!' गणपति पांड़े को दिख रही थी यह लिखावट। उसी दिन साइकिल पटकी थी बुक-स्टॉलवाले के यहां और गांव का रास्ता पकड़ लिया था। मेहनताना भी नहीं लिया था।

''अरे का बाचाजी! सुने कि रूसके कहीं चले गए हैं बाबा?'' मटुक कमकर ने कहा तो आंखें छलछला गई गणपति पांड़े की। भला ऐसा गांव छोड़ता है कोई! फिर कभी नहीं

छोड़ा गांव। 'मूस के मुंह में मूसर ना जाला।' मुंह बिचका दिया था गणपतिबो ने।

धीरे-धीरे गणपति पांड़े के प्रति ऐसी विरक्ति का भाव पैदा हो गया था गणपतिबो के मन में कि गालियां देना भी छोड़ दिया था। अंततः मान ली थी शारदा की बात। न उनके आने से खुश होतीं, न जाने से दुःखी। दिन-भर पूजा-पाठ करतीं। कहतीं—'अगले जनम में तो ध्यान देंगे दयानिधान!' गणपति पांड़े की गालियों का जवाब भी नहीं देतीं। पेट का दर्द रह-रहकर बहुत बढ़ जाता था, पर शिकायत नहीं करतीं। गुनी चली जातीं और कोई दवा लेकर आ जातीं। रामज्ञान पांड़ेबो कहतीं—'किसी अच्छे डाकधर से दिखा लो,' पर टाल जातीं। अब कहां जाएंगी ऐसी गली हुई ठठरी लेकर! डाकधर भी घिनाएगा छूने में। मन घबराने लगता तो उदय पांड़े की कुटिया पर चली जातीं। गणपति पांड़े कहते, 'बतीये नहीं सुनती किसी का तो क्या करें?'

"हमारे साथ चलिए, भउजी!" दयाशंकर ने जिद पकड़ ली है—"हमारे ससुर हैं ही...कोई दिक्कत नहीं होगी।"

गणपतिबो की हालत बहुत बिगड़ गई थी।

"नहीं बबुआ, हम घर नहीं जाएंगे...किसी के घर नहीं...।" गिड़गिड़ाने लगी हैं गणपतिबो।

आंसू आ गए हैं रामज्ञान पांड़ेबो की आंखों में। भला कोई इतना भी बैर करता है अपनी ही जिंदगी से! इससे तो अच्छी वही पुरानी गणपतिबो थी—नाराज, मुंहफट, हमेशा तैयार लड़ने को।

"ठीक है, घर नहीं जाएंगे किसी के।" दयाशंकर को हँसी आ गई है उनकी घबराहट देखकर, "होटल में चल चलेंगे।"

लेकिन तुलसी मइया का चौरा छूटते ही जिजीविषा ने भी साथ छोड़ दिया था मानो। पटना पहुंचने के पहले ही यह दुनिया छोड़ देने का फैसला कर लिया था गणपतिबो ने। इस ठठरी के इलाज पर पैसा बर्बाद नहीं करना। बचेगा तो तीज चला जाएगा बेटियों को। चलती बस से छलांग लगा दी थी।

टूटी-फूटी हड्डियों और मांस का लोथ बन गई गणपतिबो को लेकर गांव लौटे हैं दयाशंकर।

गणपति पांड़े रो रहे हैं।

कुंवरपुर नाराज है गणपति पांड़े से—'इलाज बिना मर गई बेचारी।'

चूड़ामनबो कह रही है—"भाईजी तो आदीये के अनेरिया आदमी हैं, दयाशंकर को नहीं देखना चाहिए था?"

शिवजी पांड़े पूछ रहे हैं—"जब मालूम था कि तबियत खराब है तो गेट के पासवाले सीट पर काहे बैठाया?"

चाहते हैं, लोग शक करें दयाशंकर की नीयत पर।

"ईहो छीनरो, बहुत संघतिया बना रही हैं...धकेल देगा इनको भी एक दिन..." धनजीबो को सुनाकर कहा।

कुंवरपुर की मांएं ठोरा बाबा से अनुनय कर रही हैं—"बेटी को गणपति जैसा वर नहीं देना, हे ठोरा बाबा!"

रामज्ञान पांड़ेबो सोच रही हैं, उनकी मुश्किलें बढ़ गईं गणपतिबो के जाने से। थी तो काम पड़ने पर गुनी तक चली जाती थी; अन्हरी की दुकान से लाना हो कुछ तो ला देती; कोई मर्द नहीं हो तो भैंस को बाहर बांध आती, पानी पिला देती; चेतना को देर हो जाती किसी-किसी दिन तो स्कूल तक छोड़ आती। अब इन कामों के लिए भी चिरौरी करनी पड़ेगी किसी की।

छिः! गुस्सा भी आ गया है अपनी स्वार्थांध विचार-शृंखला पर। लेकिन और मोल भी क्या था उस जिंदगी का! उनकी अपनी जिंदगी का ही मोल क्या है? बस, बुढ़ऊ और चेतना चले जाएं तो वही क्या करेंगी जीकर!

ए राम! यह क्या उल्टा-सीधा सोचे जा रही हैं। श्रीराम पांड़ेबो भंडरिया के बच्चे का सतइसा देखकर मरना चाहती हैं और वे सोच रही हैं कि चेतना के जाने के बाद ही जीना बेमानी हो जाएगा।

अपना बेलमुंड लिए हुए गोरस-भात खा रहे हैं गणपति पांड़े। महेंदरा घूम-घूमकर कहता चल रहा है कि मेहररुये मर गई साले की, नहीं तो इन्हीं को ओह गांव पहुंचा देते। दयाशंकर सोच रहे हैं, कुछ ज्यादा सावधानी बरतनी होगी अब। दुश्मन सीधी कार्रवाई के मूड में लग रहे थे और दमयंती बिना माने-मतलब का राड़ पसार रही थी।

कन्हैया सिंह अब खुले तौर पर अपनी बेचैनी जाहिर करने लगे थे। गांव ने एक बार फिर एक स्वर्णिम अवसर गंवा दिया था दमयंती और दयाशंकर को दहपटने का।

मुसमात का जी कर रहा था कि आशीषों से तोप दें दयाशंकर को। उनकी छठी इंद्रिय ने बता दिया था उन्हें कि यह काम दयाशंकर के गुटवालों का ही था।

"जोगीया के घर में भी अन्हार हो गया न, रे सूबेदरवाबो।" बहुत खुश हैं मुसमात।

"कहिए मत, मलकिनी।" सांय-सांय करती आवाज में कहा सूबेदारबो ने, "लगता है और लहास गिरेगा।"

"देखना न, बिला जाएगा जोगीया का परिवार।"

"उस दिन बेमाने-मतलब दयासंकर बाबा को बेइजत कर दिए लोग। बेजांइ तो करिये रहे हैं।"

"भगवान बोझा बढ़ा दिए हैं उसका, लेकिन देखना, उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा इन लोगों से। काली माई को खंसी कटवाएंगे कल।" मुसमात ने घोषणा की।

"गनपत बाबा न नमरी अनेरिया निकल गए, मलकिनी! सात बिगहा खेत हिस्सा पर, खाने वाला कोई नहीं और कह दिए हैं, कामो-किरिया को पइसा नहीं है।"

"ऊ कब का निमनका है कि उसका बात करती हो।"

"निमनका तो नहिंये हैं। बाकी चाल्हांकी में कम मत बुझिएगा। मने-मन भाव खा रहे हैं कि हाथ में खेत है, सो करने वाला नहीं खोजना है।"

"तुमको भी बहुत जेंवर गढ़ना आता है।" मुसमात बोलीं।

पर बात ठीक ही कह रही थी सूबेदारबो। गणपतिबो ने खुद को ऐसे अलग कर लिया था गणपतिबो के किरिया-करम से मानो मरने वाली कोई थी ही नहीं उनकी। गणपतिबो की दसवीं है आज और अड्डा जमा रखा है महादेव सिंह के दुआर पर।

सिर मुड़ाए हुए दयाशंकर लगे हुए हैं भोज-भात का इंतजाम देखने में और नंदलाल और छांगुर मंडरा रहे हैं एक अहम खबर सुनाने को। श्रीभगवान सिंह ने घोषणा कर दी थी कि जिसके घर के बच्चे दमयंती के स्कूल में जाएंगे, न तो बनिहार-चरवाह रखा जाएगा उसे, न ही मनी पर खेत दिया जाएगा। भले ही खेत परती रखना पड़े।

"तब?" दयाशंकर कुढ़े हुए हैं, यह साफ जाहिर है उनके चेहरे से।

"मना कर रहे थे, बाकी आग लगाइये के तो मानी।" छांगुर को मालूम है उनकी नाराजगी का कारण।

"जो बुझाए सो करो, बाबू लोग! हम तो देखिए रहे हो, कैसे अझुराए हुए हैं। गाली-वाली सुनने का मौका आ जाए तो खबर भेजवा देना, आ जाएंगे।"

बिना कुछ कहे धीरे-धीरे मुस्करा रहा है छांगुर।

"गलती बोले, जगनाथ?" जगनाथ से पूछा दयाशंकर ने।

"हम तो ए बाबा, शुरूये से कह रहे हैं आपसे कि ई काम बेबुद्धि के आदमी सब पर मत छोड़िए।" जगनाथ ने कहा।

"अच्छा मानते हैं कि एगो फेलुअर हुआ, बाकी..."

"बाकी क्या?" नंदलाल को डपट दिया है जगनाथ ने, "लतमर्दन होगा अब। नारदा आएगा एक दिन और हम लोग भी सिपहिया और इंकलबवा जइसा ही बिला जाएंगे।"

"हमको तो छूआ कोई तो मार के मरेंगे दस आदमी को।" छांगुर गरम हो गया है।

"बड़ी बहादुरी करोगे!" दयाशंकर बोले और लोटे से जल ढारने लगे घुटे हुए माथे पर।

"अच्छा छोड़िए, अब कुछ सोचा जाए, बाबा!" जगनाथ ने कहा।

"सोचने का क्या है इसमें? साफ बात है कि बिना तैयारी के कोई भी काम नहीं करना चाहिए।" दयाशंकर बोले, "तैयारी होती तो श्रीभगवान सिंह की हिम्मत पड़ती ऐसी बात कहने की? यह तो हमारा हथियार हमारे ही ऊपर चलाने जैसा काम हो गया न?"

"दयाशंकर बाबा मुंह फुलाए हुए हैं।" नंदलाल ने खबर सुनाई है।

"दयाशंकर बाबा हमेशा यही करते हैं।" दमयंती बोली।

"क्या करते हैं?" जगनाथ ने पूछा।

"आप लोग नहीं जानते? कभी भी मोर्चे पर देखे हैं उनको?"

"उस दिन सड़कवाले झगड़े में कौन था मोर्चे पर?"

"ई खटकिन से मुंह काहे लगते हो, ए बचवा...दू पनही धराओ न नकबोलवा

में...अपने चुपा जाएगी...''

''चुप्प कुतिया कहीं की!'' पूरी ताकत लगाकर चीख पड़ी है दमयंती।

मुंह खुला का खुला रह गया है रामगिरिहीबो का।

''ठीक है, करो अपने में लाता-जूती...अउरू हँसेगा सब...'' रामगिरिही चल दिए वहां से।

''हम का करें, ए मलकिनी।'' लाठी टेकते, कमर पर एक हाथ जमाए मटुक कमकर आ गए हैं पूछने, ''छंगुरा सलामे नहीं सुनेगा हमारा...एकदम बेकहल हो गया है...''

''क्या करोगे, बबुआ?'' रामज्ञान पांड़ेबो भी कम चिंतित नहीं हैं। दमयंती का साथ देने का मतलब था, सारे राजपूताना और बभनटोल से अलग हो जाना।

''क्या कीजिएगा जी?'' दयाशंकर ने पूछा दिनेश सिंह के दालान में जमी मंडली से।

''आत्म-सम्मान का सवाल है। सोचना क्या है!'' सत्यनारायण सिंह ने बताया, मंडली साथ थी श्रीभगवान सिंह के फैसले के।

''फासीवादी फैसले का साथ दीजिएगा?''

''आपके मार्क्स बाबा ही न कहते हैं, दुनिया द्वंद्व से चलती है। तो दुनिया चल रही है।'' कन्हैया सिंह आज खुश हैं मंडली के दृष्टिकोण से।

''श्रीभगवान सिंह ने लाइन काट दी थी राइफल के जोर पर, तब कुछ नहीं हुआ था आत्म-सम्मान को?''

''हुआ था, लेकिन व्यक्तिगत आत्म-सम्मान को। यह सामूहिक आत्म-सम्मान का सवाल है।'' सत्यनारायण सिंह बोले।

''जी नहीं, यह सामूहिक आत्म-सम्मान को नकारने की कोशिश है।''

''ए बाबा, आपको अच्छा लगता है जब दमयंतिया अनाप-सनाप बोलती है?''

''अनाप-सनाप बोला जाना बुरा लगता है आपको कि दमयंतिया का बोलना?''

''दोनों।''

''देखिए, कन्हैया भाई, हम भी कोई समाज-सुधारक नहीं हैं; लेकिन किसी का स्कूल बंद कराना ठीक नहीं है।'' दयाशंकर ने गिराना चाहा बहस के तापमान को।

पर कन्हैया सिंह उत्तेजित थे, ''स्कूल गाली सिखाने...और क्या कहते हैं कि घृणा फैलाने के लिए होता है? ईहे दमयंतिया बड़का बटलोही हुई है बुद्धि का कि समाज में सही-गलत का फैसला करेगी?''

''आपके गुरुकुल क्या करते थे? इन लोगों के प्रति घृणा नहीं फैलाते थे? आपके स्कूल क्या करते थे? इनको विद्या के लिए अयोग्य नहीं घोषित कर दिया था? यह कम हुआ गाली से?''

बहस में भारी हो रहा था दयाशंकर का पलड़ा।

''देखिए, दयाशंकर बाबा,'' दिनेश सिंह को लगा, हस्तक्षेप जरूरी था, ''सवाल

नैतिक रूप से क्या सही है, क्या गलत है, यह नहीं है। कोई सोच भी नहीं रहा है इसके बारे में। असली सवाल है, अपने को बचाने का। और दोनों पार्टियों के मन में यही सवाल है। हम लोगों को डर है कि दमयंती अराजकता पैदा कर देगी अगर नहीं रोका गया तो।"

"जो बाहर-बाहर व्यवस्था जैसा दिखता हो, उसकी अंदरूनी अराजकता पर विचार नहीं होना चाहिए?"

"हो ही रहा है। क्या कर रहे हैं आप? आपको सहानुभूति है उसके स्कूल से तो अकारण तो नहीं है न? अब यह आपकी समस्या है कि जो हम लोगों को बानर के हाथ में नारियल जैसा लग रहा है, वह आपको इस अंदरूनी अराजकता को दूर करने का अमोघ अस्त्र लग रहा है।"

"सफाई देने में का लगे हैं, ए मास्साब!" रंगू सिंह ने मुंह में भरी थूक फेंकी पिच्च से, जो एक कुत्ते की देह पर पड़ी। "ईहे दयासंकर-फयासंकर के कहने से मान लेंगे हम कि रामगिरिहिया की बेटी समाज बदल देगी? बभना सब सनका हुआ है अपने गाव का। उदय पंड़इया है कि कह रहा है, हम पूरा जुगे बदल देंगे और ई दयाशंकर चले हैं समाज बदलने।"

कुत्ते को पता नहीं चला, देह पर गिरी चीज थूक थी या पानी, सो पड़ा रहा जस का तस।

"बकीये को तो भुलाइए गए आप।" मस्ती के मूड में आ गई है मंडली, "देवता बाबा की छौंड़ी है कि कहती है, बियाहे नहीं करेंगे और विभूति बबवा हे कि छान-पगहा तुराये हुए है चौथापन में बियाह करने को।"

"मान लीजिए, कोई नहीं मानता यह फैसला, तब?" दयाशंकर के लिए इतना आसान नहीं है सामने खड़ी चुनौती को हँसी-मजाक में भुला देना।

"दू चमेटा धरा देगा गलिया में और क्या!" बभनटोल के रोचक व्यक्तित्वों के चरितगायन में ही रमे रहना चाहते थे रंगू सिंह। पिनक गए।

"ई बाभन भी बरियार आह-जाह में पड़ा हुआ है...बहुत दिन से छाली खा रहा था ऊपरे ऊपर।" दयाशंकर के चले जाने के बाद कहा कन्हैया सिंह ने।

"जो बात किसी के मुंह पर बोलने का साहस नहीं हो, पीठ-पीछे बोलना जरूरी है?" छबीला सिंह ने डपट दिया कन्हैया सिंह को।

लेकिन दमयंती की समस्या कन्हैया सिंह जैसों के चुप हो जाने से हल होने वाली नहीं थी। उसके अपने ही लोगों ने बोलना शुरू कर दिया था उसके खिलाफ। और दरअसल वे उसके खिलाफ भी नहीं बोल रहे थे। उनकी शिकायत तो परमात्मा से थी, जो संघर्ष के इस तरीके के बजाय कोई आसान-सा तरीका नहीं सुझा रहा था कामित के प्राप्त हो जाने का। अपनी ढेर सारी मजबूरियों की बाबत बोल रहे थे वे। उन्हें डर था, नन्हकू सिंह की ही तरह दमयंती का काम भी तमाम हो जाएगा एक दिन और निरर्थक कटुताओं के कंकाल बटोरने का काम रह जाएगा उनके जिम्मे।

दयाशंकर की जान में जान है। डरे हुए थे मन ही मन कि दमयंती किसी बड़ी

लड़ाई का मन ठान ले। लेकिन बिना सेना की सेनापति हो गई थी दमयंती। अन्हरी बहुत डरी हुई थी। बेटा तो गंवा ही दिया था, अब और कुछ भी गंवाना गवारा नहीं था उसे। दमयंती से कहा, "बूची, इसकूलवा हमारे यहां मत चलाओ। फिर लसरा जाएंगे झगरा-गेंगा में।"

रामगिरिहीबो ने बीच चमटोली एलान कर दिया छाती पर ताल दे-देकर कि चाहे सारा आलम चला जाए, भरोसा के बेटे-बेटी नहीं जाएंगे उसके स्कूल में।

"छोड़ो, महटिया जाते हैं।" रामगिरिही दुखी हैं दमयंती का अंतस्ताप देखकर। लेकिन उपाय ही दूसरा क्या था! कोई भी तो तैयार नहीं था उसके साथ खड़ा होने को। दयाशंकर भी कह रहे थे, वह बिना कुछ सोचे-समझे नए-नए संकट पैदा कर रही थी।

"केवल इच्छा करने या अच्छे विचार रखने-से परिवर्तन नहीं होता।" दयाशंकर का कहना था, "असली चीज है तैयारी। एक ऐसा कार्यक्रम कि उसे फलप्रद बनाया जा सके।"

"बिना पानी में उतरे ही तैरना आ जाता है?" ताव खा गई दमयंती।

"इसका मतलब यह भी नहीं हुआ कि जिस-जिस के पोखरा में पेशाब करता चले कोई।" दयाशंकर भी गरमाए।

"कलहिन जइसा मत करो...आगे-पीछे देख के चलना चाहिए..." रामगिरिही ने डांट दिया दमयंती को।

"ठीक है, सब कोई यही चाहता है तो मुंह में करिखा लगाकर बैठ जाया जाए।" फुफकारती हुई दमयंती दूसरी दिशा में देखने लगी, जो हरिद्वार पांड़े के धान के गल्लों के कारण अवरुद्ध थी।

रामज्ञान पांड़ेबो ने चैन की सांस ली है। कोई भी जीता हो, मुखलफत तो नहीं हुआ गांव से।

"स्कूल बंद।" सत्यनारायण सिंह खबर लेकर रामप्रवेश चौधरी के बैठके में पहुंच गए हैं।

"हमको तो लगने लगा था कि कुंवरपुर के बबुआन लोगों का खून पानी हो गया है, लेकिन मान गए..." अवधेश चौधरी खुश हैं, "हमको तो, जानते ही हैं आप लोग, भइया के चलते चुप रह जाना पड़ता है...नहीं तो मैनेजरवा चाहे तिरपाठीजीउवा के साथ जो हुआ, नहीं होने देते गुनी में...और बोल दिए हैं कि अब और नहीं करेंगे बर्दास्त..."

"समझ जाइए कि एकदम चढ़ बैठती थी किसी भी बात पर। न लाज न लिहाज। और ई बाबूसाहेब लोग आपसे में अझुराए हुए थे। तो हम बोले कि इस मुद्दे पर तो भाई एक होना होगा, नहीं तो नन्हकू सिंहवा जैसा एक और प्रोबलेम खड़ा हो जाएगा।" नौलाख महतो को यह बात चुभ गई थी यह बात कि अवधेश चौधरी सारा श्रेय बबुआनों को दे देना चाहते थे। उनका अपना योगदान भी कम नहीं रहा था इस फतह को संभव बनाने में। नौलाख महतो मन ही मन खिन्न हैं कि लोग चर्चा क्यों नहीं कर रहे इस बात की कि दमयंती के स्कूल के बहिष्कार की आवाज सबसे पहले महतो पट्टी के

बनिहारों-चरवाहों ने ही उठाई थी।

"सब भाग गया जी मैदान छोड़कर?" अवधेश चौधरी ने पूछा।

"आता। चाहता था सामने आना। लेकिन महतो पट्टी के जितने थे बनिहार-चरवाह उनको हम बढ़िया से समझा दिए थे। पंडीजी और बबुआन लोगों को दिखा सकते हो जोम कि नहीं करेंगे काम, हम लोगों को नहीं दिखा सकते। दाना-दाना को मोहताज हो जाओगे। और वही सब जो टूटा तो फिर दमयंतिया के लिए सम्हालना मुश्किल हो गया।"

"तो इसका मतलब तो यही न हुआ जी कि इतना दिन तक गलत सोचते रहे हम लोग कि बहुत ताकत है इन लोगों में?"

"दू गो काम हो जाता न, तो ई सब बतीये खत्तम हो जाता।" सत्यनारायण सिंह बोले, "एक तो ई काम कि गरीब-गुरबा के लिए जो पइसा आ रहा है, मिल जाए ऊ सबको और पुलिस तत्पर हो जाए थोड़ा। देखिए कि दमयंती-फमयंती कइसे बिला जाती है देखते ही देखते।"

"सब ठीके हो जाएगा तब क्या फेर है! बाकी तले तो नजर रखना होगा कि नहीं?" नौलाख महतो के पास समय नहीं है फालतू बातें करने का...यह हो जाता, वह हो जाता...

"स्पेशल चाय पिलाइए, कैसियर साहेब। सब पाप धो के आए हैं।" श्रीभगवान सिंह ब्लॉक आफिस पहुंच गए हैं खुशखबरी सुनाने। दीनमणि त्रिपाठी को खबर पहुंचा दी जाए कि उनके अपमान का बदला ले लिया गया है। अब लगे हाथ, सड़क का बंद पड़ा काम भी पूरा करवा देना है। देखें, कौन आता है सामने।

"गुनी में जो कुछ भी हुआ, आपको लगता है, केवल दमयंतिया के करने से हुआ?" कैशियर एक गूढ़ बात बताने श्रीभगवान सिंह के करीब खिसक आया है, "रामपरबेस चौधरीया नहीं चाहता तो होता यह सब? खुश हो रहा था मन ही मन कि फारवर्ड लोग बेइज्जत हो रहे हैं। पैसा खाता था, सो भगाए कैसे! सो यह उपाय निकाला। अपने भाग जाएं कि बैकवर्डों को भर दें। देख लीजिए, क्या हो रहा है!"

"एऽ रामनाथ बाबू, डेरवाइए मत हमको।" नारद सिंह ने लंबी जम्हाई ली कैशियर की बात सुनकर, "बात नहीं सुनेंगे एकरी मइयाचोद तो फारवर्ड हों चाहे बैकवर्ड, उड़ा देंगे।"

"उड़ा दीजिएगा, सो तो ठीक है, लेकिन सरकार भी एगो चीज होती है न! सब सुविधा बैकवर्ड सबको मिलने लगेगी तो किसको-किसको मारते चलिएगा?"

ब्लॉक ऑफिस के बाहर गरमागरम बहस छिड़ गई थी सरकारी और गैर-सरकारी राजपूतों के बीच कि उनका सबसे बड़ा दुश्मन कौन था? रामप्रवेश चौधरी का बैकवर्डवाद कि दमयंती का मार्क्सवाद?

"मस्टरवा सबको वेतन देने का पइसे नहीं है ई माधड़चोद सबके पास और आप कह रहे हैं कि सुविधा दे देगा।" नारद सिंह ने खारिज कर दिया कैशियर की दुश्चिंताओं को।

"आरक्षण दिया कि नहीं?"

"आपका सब बतीये लंड़बकवाला होता है। पचहत्तर गो छेरेंगे भोंसड़ियावाले और पांच गो को नोकरिये मिल जाएगा तो बड़का लाट हो जाएंगे?"

"अइसहिं न हो जाता है धीरे-धीरे।"

"कुछ दिन में ई साला सरकार-फरकार का चक्करे ओरिया जाएगा। अपना-अपना काम करेगा आदमी...तब यही साले लोग भोट देंगे केवल...जीत गए फलनवा जादोजी! और का कर रहे हैं, भाई?...बइठ के सकरकंद छील रहे हैं..." नारद सिंह को हँसी आ गई है अपनी इस मौलिक कल्पना पर। ठहाके लगाने लगे हैं—"ईहो एगो सीने होगा, भइवा! डक्टरवा सब इंजेक्सन से छील रहा है सकरकंद...मस्टरवा सब जमीन पर रगड़कर छील रहा है...और ई बाबूसाहेब लोग छोइया बटोर रहे हैं..."

मन तो किया कैशियर का कि पूछे कि बढ़-बढ़कर बोलने के पहले यही क्यों नहीं पता कर लेते कि गुनी में किसकी ज्यादा पूछ थी? रामप्रवेश चौधरी की कि नारद सिंह की? पर मन मसोसकर रह गया।

"रामनाथो सिंहवा एगो चीजे है। मूड ऑफ कर दिया। अब बिना ढरकाए ठीक नहीं होगा।" अपने चारों तरफ देखने लगे नारद सिंह मानो बोतल उड़ती चिड़िया हो कोई, जिसे लपक लेंगे हवा में से।

लल्लन सिंह भी खुश थे, पर बूटन राय ने कहा..."यह काम ठीक नहीं हुआ। स्कूल नहीं बंद कराना चाहिए था।"

"रायजी, शिक्षा में किसी तरह की बाधा..." उनके एक चमचे ने चाहा कि गुदगुदाएं उन्हें।

"यह बात नहीं है।" बूटन राय ने थोबड़ा लटकाए हुए कहा, "अपने लोगों के दिलों में जगह बना लेगी इस तरह। लोग कहेंगे, अच्छा काम कर रही थी तो...मुद्दा आप लोगों ने गलत चुना।"

"असल में, जो होना होता है, हो जाता है।" लल्लन सिंह को बकवास लग रही थी बूटन राय की दलील, पर प्रतिवाद नहीं किया।

"यही नहीं न होना चाहिए।" बूटन राय बोले।

मंधाता मिश्र के यहां महाभारत मचा हुआ था। दयाशंकर के पहुंचने के पहले ही दमयंती पहुंची हुई थी।

"कुछ हुआ क्या जी? विध्वंसक तेवर हैं इसके?" मंधाता मिश्र फुसफुसाए।

"अपने ही घर में फुसफुसाने की नौबत आ गई?"

"ए महाराज, आप लोग भाई-बहन तो..."

"स्कूल चला रही थी। बंद करा दिया गांव ने।"

"हमसे दस हजार ले गई थी इस काम के लिए। बीस हजार मांग रही है अब। कह रही है फूस का एक अलग झोपड़ी बनाएंगे स्कूल के लिए।"

"दे क्यों रहे हैं आप?" लगभग चीख-से पड़े हैं दयाशंकर।

"गुस्साइए मत, महाराज। लेहाज में पड़े हुए हैं।"

"एक नंबर का झूठा हैं, भइया। खाली झूठ बोलते हैं। आजे आई तो उसका चाटने गए थे। भगा दी। फिर रुपया मांग रही है। उसके साथ सोने की फीस देते हैं।"

तड़ से एक थप्पड़ जड़ दिया मंधाता मिश्र ने। मुन्नी और जोर-जोर से चीखने लगी—"ऊ बेस्या है और ई भंड़ुआ...दूनो मिल-जुलके नाटक किए हुए हैं..."

मंधाता मिश्र टूट पड़े हैं मुन्नी के ऊपर। बरसात कर दी है थप्पड़ों और घूसों की। दयाशंकर झपटे हैं दोनों को अलग करने के लिए। मुन्नी छूटते ही दौड़ी है दमयंती के कमरे की ओर। बच्चा रो रहा है। मंधाता मिश्र भी दौड़े हैं उसके पीछे-पीछे। दयाशंकर बच्चे को उठाने दौड़े हैं। बच्चे को गोदी में उठाकर उन दोनों के पीछे भागे हैं।

एक गोलाकार टेबुल के चक्कर लगा रही थीं दोनों, जैसे अखाड़े में पहलवान घूमते हैं दावं के लिए अवसर बनाते। झपट्टा मारती हैं एक-दूसरे के ऊपर और फिर घूमने लगती हैं। दोनों की ही आंखों में हिंस्र पशुओं की-सी चमक समा गई है। मुन्नी का धैर्य चूका और टेबुल पर चढ़कर दबोच लेना चाहा उसे। संतुलन बिगड़ गया टेबुल का और गिर पड़ी। दमयंती झपटी चीते की-सी तेजी से। और दोनों मुट्ठियों में बाल जकड़ लिए उसके। उसे घसीटना शुरू कर दिया है फर्श पर। मुन्नी खड़ी होना चाहती है किसी तरह; नहीं हो पा रही। उसे घसीटते हुए पैरों से ठोकर मारना शुरू कर दिया है दमयंती ने।

"अरे, माधड़चोद मौगड़ा कहीं का!" तड़पकर चीख उठे हैं दयाशंकर।

"तो यही न गई थीं लड़ाई करने?" मंधाता मिश्र लपके हैं उनकी ओर। हाथ मलते हुए।

"आओ न, आंख फोड़ देते हैं।" दमयंती गुर्राई।

बीच रास्ते ही ठहर गए हैं मंधाता मिश्र।

ज्वरग्रस्त मरीज-सी कांप रही है दयाशंकर की पूरी देह।

मुन्नी पस्त हो गई है और बिलबिला रही है दर्द से।

"जान लोगी?" मंधाता मिश्र ने डपटा।

"ई क्या सोचकर मारने आई?" दमयंती भी चीखी।

"छोड़ती है कि..." बच्चे को जमीन पर लिटाकर उसकी ओर लपके हैं दयाशंकर।

मुन्नी को छोड़कर पीछे हट गई है दमयंती।

खड़ी होने की ताकत भी नहीं बची मुन्नी के अंदर। बिछी हुई है फर्श पर।

"तुम निकलो हमारे यहां से तो।" मंधाता मिश्र गरजे, "अभी...तुरंत!"

"नहीं निकलेंगे।" दमयंती भी चीखी, पर रो पड़ी भरभराकर।

आंखें सुलग रही थीं उसकी और बरस भी रही थीं। सिर झुकाए हुए, धीरे-धीरे चलते हुए बाहर हो गई कमरे के।

दयाशंकर भी बच्चे के साथ बाहर आ गए कमरे के।

दो-तीन घंटे तक ऐसी मुर्दनगी छाई रही मानो कोई हो ही नहीं घर में।

दो-तीन घंटे बीत जाने के बाद सोच रहे हैं दयाशंकर कि असली दोषी दमयंती नहीं है। मंधाता मिश्र असली दोषी हैं। एक आत्मीय रिश्ते का अधिकार मांग रही थी वह और यह आदमी अब आजाद होना चाहता था उस रिश्ते से। छल कर रहा था उसके साथ। मुन्नी बस पिस रही थी दो पाटों के बीच।

दयाशंकर के कदम दमयंती के कमरे की ओर बढ़ गए हैं। कमरा खुला हुआ था। दमयंती चली गई थी।

"चली गई?" मंधाता मिश्र खड़े थे उनके पीछे।

बिना कुछ कहे वापस मुड़े दयाशंकर और बैग लेकर बाहर निकल गए। सोचा, आज रात गोसांई पांड़े के यहां रुक जाएंगे और कल गांव वापस लौट जाएंगे।

"अइसे बेग लटकाकर छूंछा हाथ मत घूमो, दया!" गोसांई पांड़े बस की छत पर पालथी मारे बैठे थे, "कुछ भी, कभी भी हो जा सकता है।"

बहुत कमजोरी महसूस कर रहे हैं दयाशंकर।

"दमयंतिया का काम फिट है। एगो धनंजयजीउवा आया है।" सांय-सांय बोलने लगे हैं गोसांई पांड़े, "का तो बड़का कामरेड है...एरिया कमांडर है...दमयंतिया उसी की छत्रछाया में चली गई है।"

"कैसे मालूम?"

"यही चरवाही है हमारा रोज-रोज का और कहते हो, कैसे मालूम।" गोसांई पांड़े की आवाज फिर सांय-सांयनुमा हो गई है, "मानिकवा से भेंट होते रहता है। जेल से छूटने के बाद ऊ अपने लालम लाल हो गया है। कसम खाया है कि सिवेंदर सिंह जहिया भेटा जाए, लाल से नहवा देगा। उसी के साथ ई भी जाना शुरू की।"

"मंधाता मिसिर नहीं जानते थे?"

"अब का कहें ए भाई! हम तो देखे कि कॉलेज के लिए निकली; बीचे में मनिकवा चाहे कभी-कभी कौनो दूसरा भी खड़ा था फटफटिया लेकर; गायब हो गई उसी के साथ। हम तो डेराते थे कि कहियो पुलिस न पहुंच जाए मुन्नी बूचीया के यहां, लेकिन तब है कि मंधाता मिसिरवा है रगबाज आदमी...पुलिस आ परसासन को हाथ में रखता है।"

"रंगबाज नहीं, झांट हैं।" दयाशकर बोले।

"जो कहो, बहुत भोग किया।"

बस-स्टैंड का होटलवाला रोटी और मुर्गे का गोश्त रख गया।

"हमारे बारे में भी कोई कह रहा था कुछ?" गोश्त में लिथड़ा रस चूसते हुए पूछा दयाशंकर ने।

"कहेगा क्या, लेकिन एगो भरबीतनवा रखा करो।"

मुर्गे के गोश्त में भी स्वाद नहीं मिल रहा। बुरी तरह फंस गया महसूस कर रहे हैं दयाशंकर। जिम्मेदारियां याद आने लगी हैं। पता नहीं, शादी क्यों कर ली! वह भी ऐसी औरत से जो हमेशा धिक्कारती रहे।

"तुम भी सोच लिए हो इसी लाइन में उतरने को?" गोंसाई पांड़े पूछ रहे हैं।

"किस लाइन में?"

"दमयंतियावाला! और कौन?"

दयाशंकर सोच रहे हैं, अब ठीक से सोच ही लेना है इस सवाल के बारे में।

"हमारा साला यहां भागकर आया है, जी गोसांईजी?" मंधाता मिश्र की आवाज सुनाई दी।

मुन्नी भी थी साथ में।

"मुर्गा चाभ रहे हैं।" गोसांई पांड़े बोले।

"खाली भाइये को चभवाने का नियम है आप लोग के यहां?" इतनी स्वस्थ और सानंद लग रही थी मंधाता मिश्र की आवाज मानो कोई बड़ा केस जीतकर आ रहे हों।

"पेट नहीं भरा अभी चाभने से?"

गोसांई पांड़े की इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़े मंधाता मिश्र।

"आप भी आ जाइएगा। गप्प-सड़ाका होगा, तास-ओस जमाया जाएगा।" गोसांई पांड़े को भी निमंत्रण देते गए।

"आपको नहीं चलना है गांव?" उनके आमंत्रण को अनसुना करते हुए गोसांई पांड़े से पूछा दयाशंकर ने, "पेट फुलाए जा रहे हैं दारू पी-पीकर!"

"चलेंगे भइअवा, चलेंगे। तनी द्रव्य का इंतजाम कर लेने दो। पइसा नहीं पास तो मेला लगे उदास। बहुत बड़ा चीज है, एकरी बहिन का...पइसा। जोगाड़ में हैं कि एगो सेकंड हैंड जीप खरीद लें।'

"और हम कहें कि कोई दोकान-सोकान खोल लीजिए और भउजाई को भी साथे रखिए।"

"बात तो तुम ठीके बोले, लेकिन एकरी बहिन का...?" परेशान दिखने लगे हैं गोसांई पांड़े।

"अपने गांव का नान्ह सब डबल रोल खेल रहा है, भइया।" अपनी परेशानियों का बंडल खोला दयाशंकर ने।

"ईहो साला सब फेरे में पड़ा हुआ है हो।" ढेर सारी थकान भर आई है गोसांई पांड़े की आवाज में, "उधर लाल के भी लालच में पड़ा हुआ है कि जमीन-समीन भेंटा जाएगा और इधर अनजनवा-फनजनवा के भी चक्कर में अझुराया हुआ है कि कुछ फयदा करा देगा।"

"इसलिए कह रहे थे क्योंकि हमको लगता है, हमारे मुंह पर दूसरा बात बतियाता है और दमयंतिया के मुंह पर दूसरा।"

"लगता तो है...भोरे बतिआएंगे अब..." बड़ा-सा मुंह बा दिया है गोसांई पांड़े ने, "जाओ, तुम भी लुढ़क रहो अब।"

लेकिन दयाशंकर नहीं जाएंगे मंधाता मिश्र के यहां। दमयंती की गंध से सराबोर होगी उस घर की हवा। नींद नहीं आएगी दयाशंकर को। पूरी रात दमयंती के बारे में ही सोचते रह जाएंगे...और अपने असुरक्षित भविष्य के बारे में।

"यहीं बिछाइए।" कहा और बस की छत पर चित्त लेटे हुए चुपचाप आकाश का रह-रहकर रंग बदलना देखने लगे।

15

बाबा नागार्जुन की जो कानी कुतिया रोते चूल्हे और उदास चक्की के पास सोई हुई थी, उसका एक कान किसी दो आंखों वाले कुत्ते ने काट खाया था और उसकी देह के आधा रोयें झड़ गए थे। फिर भी जिंदा थी वह और गांव के बीचोबीच बनी दूधनाथ सिंह की दालान के आगे पड़ी हुई ऊंघती रहती। हमेशा ही यह डर बना रहता उधर से गुजरने वालों को कि अंधेरे में कहीं पैर न पड़ जाए उसके ऊपर। जिस कुत्ते ने कान काट खाया था उसका, गला भी दबा देता एक दिन तो हल हो जाती समस्या, पर कुत्तों की रुचि समाप्त हो गई थी उसमें। किसी दिन आते भी तमतमाए हुए तो सूंघकर आगे बढ़ जाते। एक बार जंगी सिंह के बहुत निहोरा करने पर उसे गोदी में उठाकर गांव के बाहर छोड़ आए थे टेंगर सिंह, पर वापस आ गई थी। टेंगर सिंह को, पता नहीं, क्या दिख गया था उसकी अधखुली आंख में कि जंगी सिंह कहते रह गए, पर उसे दोबारा गांव से बाहर करने का प्रयास नहीं किया। दूधनाथ सिंह एक दिन गुस्सा भी गए जंगी सिंह के ऊपर—"कौन जा रहा है गांव छोड़कर कि बेचारी यही चली जाए? रहने दीजिए, जहां है।"

"कहियो काटेगी तो बताएंगे।" भुनभुनाकर चुप लगा गए थे जंगी सिंह, पर इस कुतिया को गांव के चौक से हटा पाने में गांव की विफलता ने एक कारगर मसाला दे दिया था उन्हें गांव को कोसने का—"एगो पिल्ली का तो सार लोगों से कुछ बिगड़ता ही नहीं है, दमयंतिया का का बिगाड़ लेंगे?"

कनकट्टी कुतिया एकमात्र बीमार जानवर नहीं थी गांव की। लेकिन गुनी में जो भ्रमणशील पशु-चिकित्सक पदस्थापित थे, चिकित्सा-संबंधी औजारों और औषधियों का ऐसा अभाव था उनके यहां कि बस मन मसोसकर रह जाते। कलेजे में कुछ नहीं कर पाने का मलाल संजोए हुए पशुओं के इलाज के परंपरागत घरेलू नुस्खे बताने लगे थे जरूरतमंद लोगों को। वह भी गाय-बैल जैसे पशुओं के इलाज के लिए। कुत्तों के इलाज के लिए न कोई आता था उनके यहां, न ही उन्हें जानकारी थी कुत्तों के इलाज के किसी परंपरागत नुस्खे की। जिस नुस्खे के बारे में वे जानते थे, उसे सभी जानते थे कि कुत्ते चाट-चूटकर ठीक कर लेते हैं अपने जख्म।

"तो हम लोग क्या कर रहे हैं?" बूटन राय ने चर्चा को एक नई दिशा दे दी एक दिन, "आप जानवरों की बात कर रहे हैं, साहब, इंसानों के जख्म देखने कौन आ रहा है? कोई आ रहा हो तो बताएं हमको?"

उनके गोले पर मौजूद लोगों को सहमत होना पड़ा रायजी से। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का डॉक्टर हफ्ते में एकाध दिन से ज्यादा नहीं दिखाई देता था गुनी में। शेष तीन पद रिक्त थे।

"कोई देखने-सुनने वाला ही नहीं है।" उनमें से एक ने कहा।

"किसी को रहने दिया जाएगा देखने-सुनने लायक, तब तो देखेगा-सुनेगा?" बूटन राय पालथी मारकर बैठ गए हैं चौकी पर, "भाई, बात बहुत सिंपुल है। तलवार तभी तक न काटेगी किसी का सिर, जब तक तलवार बनी रहे? नहीं तो भांजते रह जाइएगा फरनाठी की तरह।"

"सही कहा गया।"

"बीडीओ—चाहिएगा कि 'राम दुआरे तुम रखवारे' हो जाए; कलक्टर आपका एजेंट हो जाए; एस.पी. आपके लठैत की तरह काम करे, तो यही नतीजा होगा उसका।"

"सच पूछिए तो हो भी यही रहा है।" उनके एक प्रशंसक ने खुश होकर हामी भरी, "व्यवस्था रखैल बनकर रह गई है इन लोगों की।"

"झेलेंगे एक दिन।" बूटन राय के ऊपर ही मानो सारा मलबा आ गिरा हो ढहती हुई व्यवस्था का। थककर पेटकुनिया लेट गए चौकी पर और उनका चेला मानो किसी मौन संदेश को ग्रहण करते हुए उनके पैर टीपने बैठ गया।

"झेलेंगे एक दिन।" मुंह तकिये से उठाकर एक बार फिर कहा और वापस तकिये में गड़ा दिया।

"बेचारे रामबचन बाबू तो अभीये झेल रहे हैं।" पशु-चिकित्सक महोदय से सहानुभूति जताते हुए उन्हीं की तरह मुग्ध भाव से बूटन राय की बातें सुनता एक आदमी बोला।

"जो बन पड़ता है, पीछे नहीं रहते हैं करने से, भाई साहब।" बेचारगी के भाव से लबालब भरी हुई आवाज में कहा रामबचन राय ने तो अपने मवेशियों का दुःख-दर्द भूलकर गोले पर मौजूद लोग उन्हीं के दर्द में डूबने-उतराने लगे।

रामबचन बाबू की परेशानियां वाजिब थीं, अवधेश चौधरी भी मानते थे; पर उनकी शिकायत यह थी कि बूटन राय के गोले पर क्या लेने पहुंच जाते थे रामबचन बाबू? बूटन राय के पास क्या था कि उनका प्रौबलेम सौल्भ करते?

"बहुत ऊंचा-ऊंचा हांक रहे थे।" गोले पर हुई बतकही का एक टुकड़ा सुनाया गया अवधेश चौधरी को—"कह रहे थे कि तलवार को फरनाठी बना दिया है इन लोगों ने।"

"धान-चाउर बहुत लाद लिए, अब बूंट लादना बाकी रह गया है ई साले बूटन राय का।" अवधेश चौधरी गुर्राए।

"जाने दिया जाए, छाली काटने का दिन चला गया तो माठा मह रहे हैं बेचारे।" जिला कल्याण पदाधिकारी पीतांबर दूबे ने कहा तो कुछ आराम मिला अवधेश चौधरी को।

"हमको, दूबेजी, एक ही बात खराब लगता है कि हम लोगों के राज में परसासन को आम जनता के करीब लाने का जो काम हो रहा है, उसकी आलोचना करने का काम करते हैं ये लोग। लेकिन तब है कि फिकिर किसको है?" अवधेश चौधरी के नथुने फड़के, "फिर भी जरा हिंट कर दीजिएगा रामबचन बाबू को कि जरा सोच-समझकर

अड्डाबाजी करें।"

दूबेजी ने कहा, "आपके कहने के पहले ही बोल चुके हैं हम। लेकिन असली प्रोबलेम तो समझते ही हैं आप।"

"ए दूबेजी, देखिए!" अवधेश चौधरी ने कहा, "कुछ लोग समझते हैं कि जातिवाद करते हैं हम, पर हम नहीं करते। हम पूछते हैं कि जो साला गिरा-पिछड़ा हुआ है, उसको फेभर करना जातिवाद है जी?"

"समझने वाले यह भी समझते हैं कि एक न एक दिन तो होना ही था यह। यह एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी।" आज की शाम दूबेजी ऐसी ही बातें करेंगे। 'इन्हीं लोगों ने ले लिन्हा दुपट्टा मेरा' की धुन 'तुम्हीं मेरे मंदिर हो, तुम्ही मेरी पूजा' का रूप ले लेगी। यहां से निकलेंगे तो सुनाएंगे अपने लोगों को कि 'मन नहीं करता ई साला सबकी रंगबाजी बर्दाश्त कर नौकरी करने का, पर क्या किया जाए!'

मौका देखकर बूटन राय के बैठके में भी पहुंच जाएंगे किसी दिन—"गुनी ऐसे ही चलेगा, बूटन बाबू?"

"हम तो, भाई, सुन रहे हैं, बहुत बढ़िया से चला रहे हैं आप लोग।"

"आप लोग, नहीं, बस 'आप'। बस 'आप' ही चला रहे हैं सब कुछ।"

"हम नहीं मानते इस बात को कि 'आप' के साथ 'लोग' नहीं हैं। चाहे जिस कारण से हों, पर हैं।"

"समय साथ है उन लोगों के, बूटन बाबू।"

"वही तो बोले हम कि कारण चाहे जो भी हो..."

"कितना बढ़िया तो संविधान बनाया था बनाने वालों ने। कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका—सबके अपने-अपने काम। तो लोग हैं कि कह रहे हैं, अकेले हमीं करेंगे सारा काम।" पीतांबर दूबे ने कहा और इंतजार करने लगे कि बूटन राय पूछें, यह संविधान की याद क्यों आ गई थी उन्हें।

"कार्यपालिका ने खुद ही बंटाधार कर लिया अपनी इज्जत का, नहीं तो एक ही साथ सभी बोल देते कि नहीं मानेंगे गलत आदेश तो क्या हो जाता?"

"च्च...यही नहीं न होता।" एक लंबी 'च्च' के बाद कहा दूबेजी ने।

ऐसा कतई नहीं था कि दूबेजी चाहते हों कि हो ऐसा। यह तो मन था कि किसी-किसी दिन खट्टा हो जाता था रामप्रवेश चौधरी की चलती देखकर।

गुनी के आईसीडीएस ब्लॉक घोषित होने के बाद उम्मीद बंधी थी उन्हें कि कुछ रौनक आएगी जिंदगी में, पर जिसे देखो, रामप्रवेश चौधरी के बैठके की ओर दौड़ा जा रहा था।

"इनको कहना चाहिए था कि सरकार ने जो नियम-कानून बनाए थे, उनके अनुसार ही आंगनवाड़ी केंद्रों की स्थापना होगी तो गुनी का नक्शा फैलाकर बैठ जाते हैं। यहां ठीक रहेगा कि वहां ठीक रहेगा, डिस्कस करने लगते हैं पब्लिक के साथ।"

"जैसी पब्लिक, वैसा पब्लिक का लीडर।" बूटन राय ने चर्चा से ऊबते हुए-सा

कहा, "दोनों की जान एक ही सुग्गे में कैद है।"

'और आपकी जान भी उसी सुग्गे में कैद है।' इस अनकहे को भी सुन लिया था दूबेजी ने और फूट लिए थे वहां से।

बहरहाल, चयन-प्रक्रिया चाहे जैसी भी रही हो, कुंवरपुर के हिस्से में भी आ गया था एक आंगनवाड़ी केंद्र। और अब कांव-कीच इस मुद्दे पर मची हुई थी कि दोनों दीदीजी के पदों के लिए किनके दावे स्वीकार योग्य थे। उम्मीदवार कई थे। सुदर्शन पांड़े कह रहे थे कि पी.एम.आर.वाई. का लोन भी नहीं मिला था सुरेश को, सो सुरेशबो को मिलना चाहिए था सेविका का पद। मैट्रिक पास थी और तीन बेटियां और एक बेटा हो जाने के कारण जरूरतमंद भी थी।

"सो तो ठीके है; लेकिन ई पूछ लिया जाए कि नान्ह जात के लड़कों का नेटा छिड़केंगी?" नौलाख महतो, जो 'दमयंती हराओ' कांड में अपने बनिहार सिबचन कमकर की भूमिका के लिए उसे पुरस्कृत करने हेतु उसकी मैट्रिक पास पतोह प्रदीपबो को सेविका का पद देना चाहते थे और दूसरे पद पर सिपाही की विधवा को काबिज करवाना चाहते थे, आश्चर्य व्यक्त करते चल रहे थे कि कितनी मेहनत से तो कई-कई गांवों के महाबलियों को परास्त कर वे कुंवरपुर में आंगनवाड़ी केंद्र लाए थे और दुनिया-भर के छुछुंदर चले आ रहे थे उस पर कब्जे के लिए। नौलाख महतो नहीं होने देंगे ऐसा।

सत्यनारायण सिंह को इस बात पर कोई एतराज नहीं था कि सेविका का पद नौलाख महतो अपने बनिहार की पतोह को दे दें, पर दूसरे पद पर वे अपना हक मान रहे थे। रामप्रवेश चौधरी को पटाने में उनकी भी भूमिका थी। उन्होंने भी कम चिरौरी नहीं की थी माननीय विधायक महोदय की। उनका कहना था, दूसरा पद उनके बनिहार धनेस दुसाध की बेटी धर्मशिला को दे दिया जाए।

"और बियाह हो जाएगा धर्मसिलवा का, तब क्या होगा?" श्रीभगवान सिंह का सवाल था।

श्रीभगवान सिंह को पीड़ा इस बात की थी कि इस गांव के लिए क्या-क्या नहीं किया था उन्होंने और किए ही जा रहे थे, और गांव उनके हक के बारे में कोई चर्चा ही नहीं कर रहा था! गुस्से में घोषणा कर दी उन्होंने कि सेविका का पद मिलेगा तो जंगी चाचा की मुसमात हो गई भतीजी राधिका को, वरना किसी को नहीं मिलेगा और चूंकि अन्हरी ने दमयंती को कहा था स्कूल बंद करने को, दूसरा पद उसकी विधवा पतोह भूलेटनबो को मिलना चाहिए।

"अजी मास्साब!" रंगू सिंह ने पूछा दिनेश सिंह से, "कोई कायदा-कानून नहीं है ई साली अनेरिया नौकरी में भरती का?"

"है कैसे नहीं।" दिनेश सिंह बोले।

"तो कहां है? ई सरवा सब तो अइसा न गर्दा मचाए हुए है कि लगता है चुनाव लड़ रहा हो।"

"मचाने दीजिए। लेटपोटकर और समझदार हो जाएगा।"

"सुदरसन पंड़इया का न मोह लग रहा है जी। बढ़ई-बढ़ई खूंटा फारऽ खूंटा में मोर दाल बा...कहनिया वाली चिरइया जइसा छिछियाते चल रहा है।"

दरअसल गांव के लिए मनोरंजन की चीज हो गए थे सुदर्शन पांड़े। रंगू सिंह की तरह उनकी व्यथा के साथ सहानुभूति रखने वाले बहुत कम लोग थे गांव में। दूसरे मजा लेते उन्हें उकसाकर—"नौलाख महतो कह रहे हैं कि उदय पांड़े का चढ़ावा भी भकोसेंगे और सरकारी दलिया भी चाभेंगे?"

"नौलाख अपनी मउगी का एके चूंची पीते हैं?" सुदर्शन पांड़े का जवाब।

कोई कह जाता—सतनारायण सिंह कह रहे थे कि सुरेशबो को अपने बच्चा सबसे फुर्सत है कि दूसरों का सम्हालेंगी?"

"बड़का-बड़का राज सम्हाल लेती है औरत सब, इससे एगो आंगनवाड़ी केंद्र नहीं संभलेगा?"

सुदर्शन पांड़े कमर कसकर डट गए थे मोर्चे पर।

पीतांबर दूबे ने उन्हें देखते ही समझ लिया कि दांव लगाने वाला घोड़ा नहीं है यह। झिड़ककर चलता कर दिया—"जात-पात का बात करके हमारा नोकरिया भी खाइएगा आप? मालूम पड़ गया रामपरबेस चौधरिया को कि बाभन का पक्ष ले रहे हैं तो गरदनिया पासपोर्ट देकर भगा देगा यहां से।"

अब चिरई किसके पास जाए बताने कि 'खूंटा में मोर दाल बा, का खाईं, का पीहीं, का लेके परदेस जाईं?'

सुदर्शन पांड़े को बताया गया—काम होगा तो रामप्रवेश चौधरी की कृपा से ही होगा। दूसरा कोई उपाय नहीं है। चिरई राजा के पास गई बढ़ई की शिकायत लेकर—'राजा राजा, बढ़ई दंडऽ, बढ़ई ना खूंटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा...'

उनका विलाप सुनते हुए अचानक नाराज हो गए रामप्रवेश चौधरी—"ए भाई, हमको तो लगता है कि यहां रहना ही मुश्किल हो जाएगा हमारा...कोई जवाब है इसका? सेविका की बहाली विधायक करता है?...यही काम है विधायक का?...लेकिन ई बेचारे पंडीजी आए हैं, इसका मतलब है कि कोई न कोई जरूर झूठमूठ का अफवाह फैला रहा है..."

अपने मन में भरा हुआ सारा धुआं सुदर्शन पांड़े के मुंह पर उगल दिया उनके साथ-साथ बैठके से बाहर आए सत्यनारायण सिंह ने—"महटियाइए बाबा! अब्बर आदमी का बात सुनने वाला कोई नहीं है। नौलखवा और सिरीभगवनवा बांट लिया आपस में।"

लोग सोचते थे, जैसे सत्यनारायण सिंह ने स्वीकार कर लिया था इस कड़वी सच्चाई को, सुदर्शन पांड़े भी कर लेंगे। पर सुदर्शन पांड़े नहीं मानेंगे कि सच्चाई यही है। चिरई और दूर तक जाएगी। पानी के पास—'पानी,पानी, आग बूझावऽ, आगऽ न लऊर जारे, लऊर न सांप मारे, सांपऽ न रानी डंसे, रानी न राज बूझावे, राजा न बढ़ई दंडे, बढ़ई न खूंटा फारे, खूंटा में मोर दाल बा...'

समाहरणालय के बड़ा बाबू ने कहा, "खरचा-पानी का जोगाड़ कीजिए, पंडीजी! देखिए, कइसा खेल करते हैं!" उसने सलाह दी—"चयन-प्रक्रिया में धांधली के संबंध में एक दरखास्त लिखकर, गांव के सौ-पचास लोगों से दस्तखत कराकर दे जाइए और हम साहेब से जांच का आदेश करवा देते हैं।" चिरई खुश हो गई। चिरई को लगा, जो अनसुना किए हुए थे उसे, अब घिघियाने वाले ही थे पानी के डर से—'हमराऽ के मारे-ओरे जनि कोईऽ, हम खूंटा फारब लोईऽ...हमराऽ के फारे-ओरे जनि कोई, हम अपने फाटब लोई..."

सुदर्शन पांड़े ने गरमी ला दी है गांव के माहौल में। घूम-घूमकर दस्तखत लेना शुरू कर दिया है दरखास्त पर और लोग करने भी लगे हैं दस्तखत। केवल सौ-पचास लोगों के दस्तखत की जरूरत बताई थी बड़ा बाबू ने और यहां यह हाल था सुदर्शन पांड़े के प्रति सहानुभूति का कि आधे से अधिक गांव ने दस्तखत कर दिया था उनकी दरखास्त पर। लोग चकित भी थे कि लड़ाई को इतनी दूर तक ले गए थे सुदर्शन पांड़े। एकदम पट्ठा वाला काम कर दिया था सुदरसन बबवा ने! श्रीराम पांड़े तक मन ही मन आशीर्वाद देने लगे थे उन्हें; प्रार्थना करने लगे थे उनकी सफलता के लिए। घर लौटते दौड़-धूप के बाद तो भंडारी पैर दबा देता उनके; सुदर्शन पांड़बो आधा कटोरी घी उड़ेल देतीं दाल में; सुरेशबो भी मना नहीं करती, बल्कि मक्खियां हुलकाने बैठ जाती पंखा लेकर। चिरई भगत ने यह बोल छोड़ रखा था कि सुदर्शन पांड़े नहीं, वरन् उदय पांड़े की दी हुई शक्ति थी यह, जो खड़ी हो गई थी अन्याय के खिलाफ।

दरखास्त को गए हफ्ता-भर बीत गया तो लोग पूछने लगे—'इंकवरीया का क्या हुआ?' सुदर्शन पांड़े को खुद ही घेरने लगा था संशय--कर क्या रहा था बड़ा बाबू! इतनी देर तो नहीं लगनी थी! नोट पकड़ते वक्त तो लगा था, बस निकलवाने ही जा रहा था इनक्वायरी का आदेश!

"क्या कहा जाए पंडीजी...अब इस देश का बचना मुश्किले समझिए..." बड़ा बाबू का चेहरा उतर गया था यह बताते हुए।

"एक जमाना था, जब कलक्टर कलक्टर होते थे...अब तो जो ये लोग हैं, रामजी का खड़ाऊं हैं। खड़ाऊं को न अपना दिमाग होता है, न स्वाभिमान है...समझ जाइए कि साला मन घिना जाता है कभी-कभी।"

समाहरणालय के सामने चाय की दुकान की बेंच पर अपनी जेब को मुठ्ठी में पकड़कर बैठे हुए सुदर्शन पांड़े का मन किया कि पूछें कि 'अरे बेटियाचोद, तुम इनक्वायरी का बात इस जमाने के कलक्टर को देखकर नहीं बोला था?' पर नहीं पूछा।

"अब क्या करना होगा?" एक कमजोर-सी आवाज निकली।

"फाइल तो हम बढ़ाइये दिए थे, समझे कि नहीं; लेकिन उधर से भी दरखास्त पड़ गया...आपके दरखास्त से भी ज्यादा आदमी का दस्तखत है उसमें..."

"होइये नहीं सकता।" तड़पकर खड़े हो गए हैं सुदर्शन पांड़े, "उतना अदीमीये नहीं है गांव में...जाली दस्खत होगा..."

"बस, बस..." बड़ा बाबू किलक उठा, "बस इसी प्वाइट को पकड़ लेना है...चार सौ बीसी में भी जाएंगे साले लोग..."

"ई लंगटा पंडितवा क्या खेल कर रहा है जी?" अवधेश चौधरी ने नौलाख महतो से पूछा, "गड़बड़ नहीं न करेगा?"

अनजानाजी हँसने लगे उनका सवाल सुनकर—"जो पडेगा कुवरपुर के फेर मे बकबानर बन जाएगा।"

"ए भाई, देखिएगा, भइया के इज्जत पर कोई दाग नही लगना चाहिए।" नौलाख महतो को धिराया अवधेश चौधरी ने—"साले पडित राम नही मानते है बात तो लात भी चलाइए, लेकिन ई कोई बात नही हुआ कि साला दू कौडी का आदमी, अड-बड दरखास्त देता चले और आप लोग देखते रहिए चुपचाप।"

"ई सनकी आदमी के दौडने-धूपने मे कुछ नही रखा।" नौलाख महतो ने विश्वासपूर्वक कहा।

"यही न आप गलत बोल गए, नौलाख भाई।" अनजानाजी ने रोका उन्हे विश्वास के राजमार्ग पर आगे बढ जाने से, "निरालाजी जो बोले है न कि इनको हम जानते है दाए से, पहचानते है बाए से, वैसे ही हम पहचानते है कुवरपुरवालो को। आप मानकर चलिए कि लगटा पडित के पीछे है कोई न कोई।"

"होगा भी तो कबार नही लेगा नौलाख महतो का।" नौलाख महतो ने चिढकर कहा।

"भावना मे मत बहिए आप लोग। ठडे दिमाग से सोचिए।" उनकी बतकही सुनकर कमरे के बाहर आए रामप्रवेश चौधरी ने कहा थिरतापूर्वक और एक लबी ढेकार छोड़ने के बाद थोडी राहत-सी महसूस हुई तो हाथ फेरने लगे मटकी जैसे पेट पर।

"कौन हो सकता है उसके पीछे?" अपने नेता के मशविरे के अनुसार ठडे दिमाग से सोचते हुए पूछा नौलाख महतो ने।

"श्रीभगवान सिहवा को खेल चीज समझते है आप?" भेद-भरी आखो से नौलाख महतो को देखते हुए कहा अनजानाजी ने।

"तो उसको तो एगो दिया ही न गया जी?"

"बेर-बेर खाती थी सो एक बेर खाती है, वाला प्रौबलेम है।"

सत्यनारायण सिह सुना जाते सुदर्शन पाडे को रामप्रवेश चौधरी के बैठके मे होने वाली बतकही और सुदर्शन पाडे रोमाचित हो जाते सुनकर कि जिसका लोहा पूरे जवार ने मान लिया था बिना चू-चापड किए हुए ही, वही डर रहा था उनसे।

"माने कि कबिलाव बतियाना भुला गया है! नही, सतनारायण भाई?" खुश होकर पूछते।

"हमको तो लगता है, कही आपके पास पहुचे न सुलह के लिए।"

'अइसा है!' के आनदमय विस्मय मे डूबे सुदर्शन पाडे इतजार करते रहे कि कोई आए उधर से, और नहीं आया कोई।

तो सुदर्शन पांड़े ने सोचा, बिना चाप चढ़ाए सलाम नहीं सुनेगा दुश्मन।

बड़ा बाबू उन्हें देखते ही हड़बड़ाकर उठा अपनी कुर्सी से; उन्हें इशारा किया अपने पीछे-पीछे लपकते चले आने का और लगभग दुलकी चाल चलते हुए बाहर हो गया समाहरणालय के गेट के।

"गजब हो गया!" गेट के बाहर आकर बोला, "ई साला कलक्टर...समझ जाइए कि फोन आ गया ऊपर से और गजब कर दिया...आपके दरखसवा के साथ जो था दसखतवावाला कागज, निकालकर ऊ सबके दरखसवा के साथ लगवा दिया...और हमको पते नहीं चला...आज देखते हैं फाइल तो..."

"तो?" सुदर्शन पांड़े को लगा, उनकी पूरी देह ठंडी होती जा रही है।

"तो हम क्या कहें अब...अब तो यही सोच रहे हैं कि उल्टे आप ही को कोई दिक्कत नहीं हो..."

"पूरा गांव गवाही दे देगा कि कौन चोट्टा है।" सुदर्शन पांड़े चीखे।

"ए भाई, देखिए, हल्ला मत कीजिए...हमको अपने खराब लग रहा है...गवाही जब होगा, तब न होगा...उसके पहले तो आप अझुराइये न जाइएगा...इसीलिए हम कहेंगे कि इसको और घसीटना ठीक नहीं है...हम कोई उपाय देखते हैं कि..." बड़ा बाबू अपनी बात अधूरी छोड़कर चुप हो गया और सुदर्शन पांड़े को देखने लगा।

सुदर्शन पांड़े की आंखों में आंसू थे।

"ए महाराज, आप काहे बुरा मानते हैं जी? आप तो अपना धरम निभाए। बुरा तो ई साला सिस्टम है..." बड़ा बाबू ने ढाढ़स बंधाने की गरज से कहा और अपनी घड़ी की ओर देखा।

"बुरा मानने का सवाल नहीं है, बड़ा बाबू...जब काम होइबे नहीं किया तो पइसवा लौटा दिया जाए...उधार-पईंचा मांगकर लाए थे कि नौकरिया का जोगाड़ हो जाएगा तो वापस करेंगे...जब आप कहिये दिए कि..."

"हद्द बात करते हैं आप भी!" बड़ा बाबू ने धीरे से कहा डपटती हुई-सी आवाज में और आसपाम नजर फेंकी, कहीं कोई सुन न रहा हो! बोला, "हम आपके भले के लिए..."

"यही भलाई करना हुआ?...गांड़ में गूहे नहीं था और धांय-धांय पाद रहे थे...और कहते हैं कि..."

"जरा सोच-समझकर बोला जाए...आपके ही काम में लगा है आपका पइसा... और आप समाहरणालय के गेट पर खड़े हैं!"

"लौंड़े से खड़े हैं...आप भी सुन लीजिए...लांगा के साथ हमको भी लांगा बनना आता है!"

"इतना रुपया आदमी पाकेट में लेकर चलता है? शाम को मिलिए..."

"साम को गाड़ी पकड़ेंगे कि मिलने आएंगे? देना है तो दीजिए अभीए, नहीं तो हई धोती-कुरता भी उतारते हैं, लेते जाइए।"

"ए महाराज, आप तो सांढ़ का गांड़ मारने के फेर में पड़ गए जी...ठीक नहीं है ई बात।" बड़ा बाबू ने जबड़े भींचते हुए कहा और आंखें गुरेरकर देखने लगा सुदर्शन पांड़े को। डर जाएं शायद! सुदर्शन पांड़े दूसरी ओर देख रहे थे—बस-स्टैंड की ओर। एक हथेली फैला रखी थी उसके सामने और दूसरी से पिछाड़ खुजा रहे थे। बड़ा बाबू ने सोचा, दे कि नहीं और पॉकेट से सौ के पांच हरे पत्ते निकालकर रख दिए हथेली पर। कहा—"फिर पड़ेगा काम..."

"बस?" सुदर्शन पांड़े ने चेहरा सिकोड़ा।

"अब ढेर मत उबियवाइए मन।" जलती हुई आंखों से बड़े बाबू ने देखा सुदर्शन पांड़े को और चल पड़ा अपनी कुर्सी की ओर।

हजार रुपये के घाटे में फिर भी हैं सुदर्शन पांड़े, पर खुश हैं। समाहरणालय के बड़े बाबू से पांच सौ रुपये वापस ले लेना ही कम बड़ी बात नहीं है। सुनेंगे तो अकचका जाएंगे लोग!

पर सुरेशबो तो उनके खाली हाथ लौट आने की बात सुनते ही उखड़ गई।

"और खिलाइए घीव...आ न गए दंगल जीत के? कोई सोच रहा हो कि हमको बुड़बक बना देगा तो मत सोचे...राकस जइसा...आगे-पीछे एके साथ दिखाई देता है हमको तो..."

"बाकी सुरेसवाबो तुमसे काहे खफा है? तुम तो उसी का न भलाई सोच रहे थे?" विभूति पांड़े ने उनके घर में मची कबाहट के बारे में सुना तो पूछा।

"बानर पहिले आपन घर छावस त दोसरा के छइहें।" भंडारी ने जवाब दिया।

"सब खफा है।" सुदर्शन पांड़े ने बताया।

"खफा नहीं होगा? भईसा से बजनी करता है कोई?" भंडारी ने पूछा, "का सोच के नौलखवा और सिरीभगवनवा से फरियाने गए थे?"

"दांत नहीं चिअरा गया था सार लोग का?"

"झांट चियरा गया था।" भंडारी ने कहा, "साधूजीउंवा को भी बदनाम कराए। साला चिरईंया हल्ला मचा दिया कि शक्ति दे दिए थे प्रभुजी।"

दिन-ब-दिन अजीबोगरीब होती जा रही हैं उदय पांड़े की हरकतें। बोलते हैं तो अभी भी उतना ही अच्छा लगता है सुनना; पर औघड़पंथियों-सी हरकतें करने लगे हैं। नहाते नहीं कई-कई दिनों तक; दातून नहीं करते। रास्ते में पड़ी कोई भी जूठी, फेंकी हुई खाने की चीज खा लेते हैं। आंखों में जमा हुआ कीचड़ चाट जाते हैं। कलेजा फटने लगता है श्रीराम पांड़े का। उन्हें डर लगता है, कौतुक-भरी आंखों से उन्हें देख रहे हैं जो लोग, बंद कर देंगे कुटिया पर आना। सारा मेला कल की बात होकर रह जाएगा।

सुधाकर पांड़े भी कम परेशान नहीं है। सोचकर डर जाते हैं कभी-कभी कि कहीं कोई बहुत बड़ी गलती तो नहीं हुई जा रही उनसे? एक अबूझ होते जाते आदमी के साथ चले जा रहे हैं।

"आज का प्रसाद मालूम है?" चिरई भगत चहकते हुए बताने आ गया है और हँसने लगा है सुधाकर पांड़े की हालत देखकर।

"बाबा से बोला जाए कि यह काम ठीक नहीं है।" ताव खा गए हैं उनकी बगल में बैठे सुकुमार पंडित, "देना हो कुछ तो अमृत दें...कोई बात है कि गलत-सलत..."

कोई फैसला नहीं कर पा रहे सुधाकर पांड़े। उदय पांड़े के शब्द गूंजने लगते हैं अंतर्मन में। उदय पांड़े कहते हैं—'वह वक्त भी आएगा, जब सभी साथ छोड़ देंगे। कोई पास बैठने को भी तैयार नहीं होगा। ऐसे तिरस्कार, बहिष्कार, प्रज्वलित घृणा से भी गुजरना होगा...' कहीं सच तो नहीं होने जा रही उदय पांड़े की बातें!

"हम लोगों पर कुछ जादू-टोना कर दिया क्या जी?" सुकुमार पंडित बुरी तरह घबराए हुए हैं। प्रसाद-वितरण की घड़ी आए, उसके पहले ही खिसक लेना चाहते हैं।

"इनके दे देने से ही ले लेगा कोई?" खुद को हौसला देते हैं सुधाकर पांड़े।

पर लोग तो ले रहे थे प्रसाद!

"खून हो जाएगा!" जोगी सिंह को प्रसाद लेता देखकर बुदबुदाए सुकुमार पंडित।

सुधाकर पांड़े की आंखें जल रही हैं। मानो सोए नहीं हों कई रातों से। चेतना-शून्य से बैठे हुए हैं मेड़ पर।

"प्रसाद नहीं लीजिएगा?" हरि पांड़े के खिले हुए चेहरे ने पूछा तो मानो लौटी चैतन्यता। कुटिया सूनी पड़ी थी।

"दूधनाथ सिंहवा ओड़ावन लेकर खाया..." चिरई भगत पेट पकड़कर हँस रहा था, "और मुसमात चाची फांड़ में बांधकर ले गई...बाद में पाएंगी...त्राहिमाम्...त्राहिमाम् हे कल्कि अवतार..."

मेड़ पर से बदहवास-सा उठे हैं और दौड़ पड़े हैं सुधाकर पांड़े। यह तो विलक्षणतम घटना है! मैला खाकर भी प्रसन्नचित लौट गए थे लोग। और वे थे कि संशयों से घिरे दूर पड़े थे। पैरों पर गिर पड़े हैं उदय पांड़े के।

उदय पांड़े की उंगलियां अब हमेशा कुछ चित्र बनाती रहती हैं हवा में—"वही दिखाता है तो देखते हैं हम।" बोले।

लेकिन इस खबर के आम होते ही कि प्रसाद में मैला था, कुंवरपुर उबलने लगा था। जंगी सिंह की तबियत खराब हो गई थी। दूधनाथ सिंह का कै करते-करते बुरा हाल हो रहा था। तिलंगी सिंह हँस रहे थे—"और जाओ प्रवचन सुनने...चमार-दुसाध से लड़ने चले थे और अपने चमार बन गए सारघेंटी लोग।"

"जादू-टोना सीख लिया है सरवा और अगड़म-बगड़म कर रहा है..." महादेव सिंह बार-बार सूंघते हैं उंगलियों को। मैला था तो बदबू क्यों नहीं आई?

"दू गो थ्री नाट थ्री उतारेंगे अंतड़िया में. बस सब जादू-टोना बाहर आ जाएगा लदड़ी-फदड़ी के साथ..." श्रीकमल सिंह फुफकार रहे हैं।

"उदय बाबा आज एकदम साफे कर दिए कि गूहखउका है ई, सब..." रेज टोलों में खुशी का माहौल था।

नंदलाल की यह टिप्पणी चमटोली को लांघते हुए राजपूताने तक पहुंच गई थी।

कोई कुछ समझ सके, उसके पहले ही दूधनाथ सिंह की दालान के सामने खड़े नंदलाल के छोटे भाई सुखलाल की ओर लपके श्रीकमल सिंह और राइफल की बट दे मारी उसकी छाती पर। फिर तो लात-जूतों की बरसात होने लगी उसके ऊपर। "मुआ दो सारघेंटी नक्सलाइट को!" जंगी सिंह ने दस गोजी दूर से ही एक ढेला फेंक दिया। कलक्टर सिंह का महेंदरा गोबर उठा लाया है कहीं से और चौदह साल के उस लड़के की छाती पर बैठ गया है। उसके जबड़ों में लकड़ियां धंसा-धंसाकर उसका मुंह खोलवाने की कोशिश करने लगे हैं दूसरे लड़के। गोबर ठूंसा जा चुका तो एक चुरुआ बैल का मूत भी उसके मुंह में डाल गया गौरीशंकर।

सुखलाल पर हुए हमले की खबर सुनते ही श्रीराम पांड़ेबो सरपट कुटिया की ओर दौड़ पड़ी थीं। विश्वास-सा हो गया था उन्हें कि इसके बाद कुटिया पर धावा बोलने वाले थे राजपूत टोलवाले। सांस उखड़ने लगी थी कुटिया तक पहुंचते-पहुंचते और बेहोश होकर गिर पड़ी थीं खेत में। सुकुमार पंडित ने देख लिया था उन्हें गिरते हुए और दौड़े थे।

आंखें खुलीं तो देखा, उदय पांड़े हँस-हँसकर कुछ कह रहे थे सुधाकर पांड़े से।

"जोगीया का परिवार नहीं आया इधर?" धीमी आवाज में पूछा सुकुमार पंडित से।

"काहे?"

"नंदललवा के भइवा को बड़ी मार मारा...गोबर खिलाया जबरदस्ती..."

श्रीराम पांड़ेबो के भीतर भरा हुआ डर बिजली की-सी तेजी से संचरित हो गया है सुकुमार पंडित की चेतना में। उन्हें वहीं मेड़ पर छोड़कर दौड़ पड़े हैं उदय पांड़े तक यह खबर पहुंचाने।

"बहुत टेंसन हो गया है भाई लोग..." मुश्किल से पंद्रह-बीस डग भरे होंगे, पर हांफ रहे हैं, "जोगी सिंहवा का परिवार रेज टोलवाला सबको पकड़-पकड़कर जबरदस्ती गोबर खिला रहा है...आज बड़ा कांड होगा कोई न कोई।"

एक रहस्यमय मुस्कान फैल गई है उदय पांड़े के चेहरे पर। उंगलियां हवा में और भी बड़े-बड़े और जटिल चित्र बनाने लगी हैं।

सुकुमार पंडित भाग चले हैं, अब एक मिनट भी नहीं ठहरेंगे यहां। दूसरे को तो शायद बख्श भी दे, उनकी तो खाल खींच लेगा श्रीभगवान सिंहवा। दोनों तरफ से जाएंगे। बूटन राय भी खुश नहीं थे उनके बार-बार दौड़कर कुंवरपुर पहुंच जाने पर। बता चुके थे उन्हें कि केवल किरानी ही नहीं, नाइट गार्ड भी वही थे महिला कॉलेज के। कॉलेज की सुरक्षा उन्हीं की जिम्मेदारी थी। सुकुमार पंडित ने तय कर लिया है गुनी की राह पकड़ते हुए कि अब नहीं आएंगे कुटिया पर। दूसरे भी शायद ही आएं आज के बाद! प्रभुजी के पारन करने-भर चढ़ावा भी चढ़ जाए तो बहुत होगा। दिन-भर भूखा-प्यासा रहकर केवल 'श्रीराम हरे, गोविंद हरे' भजने के लिए गुनी से नहीं आएंगे सुकुमार पंडित। बल्कि नहीं होगा गांजे का जोगाड़ तो चिलमबाजी ही छोड़ देंगे।

"यहां रहना ठीक होगा?" सुधाकर पांड़े ने पूछा, "जोगी सिंह के परिवार का मन बढ़ा हुआ है।"

"पिड़ीकऽऽऽ..." अचानक इतनी जोर की किलकारी मारी उदय पांड़े ने कि वहां मौजूद सभी उछल पड़े और भयातुर-से देखने लगे इधर-उधर।

"खदबद...खदबद...गड़गड़-गड़गड़...गड़ाम...गड़ाम..." कुछ का कुछ बोलते हुए तेज-तेज कदमों से पीपल के नीचे टहलने लगे उदय पांड़े।

किसी की भी समझ में नहीं आया, क्या कर रहे थे। न पूछा किसी ने। डर से भरे हुए कभी उन्हें और कभी गांव की ओर देखते रहे।

राजपूताना खुश भी था और डरा हुआ भी था।

"लाठी-बल्लम लेकर रेज सब दुआर पर चढ़ आएगा, तब का करेगा, रे बेटीफोरवा?" जोगी सिंह गरजे।

जोगी सिंह खुश नहीं थे। यह जीत उन्हें जीत जैसी नहीं लग रही थी। श्रीकमल सिंह का व्यवहार भी उन्हें उचित नहीं लगा था। हँसने को तो सबसे खुलकर तिलंगी सिंह हँस रहे थे। उनके मुंह में क्यों नहीं डाल आया गोबर! नारद सिंह की संगत ले डूबेगी श्रीभगवान सिंह को। शुरू में ही रोकना चाहिए था। पर पता ही कहां चलता है कि कब क्या हो जाएगा! किसने सोचा था कि नन्हकू सिंहवा उतना आगे बढ़ जाएगा! कि दमयंतिया इतना बढ़-बढ़कर बोलने लगेगी! कि रामज्ञान बाबा जइसा सीधा आदमी का लड़का इतना धुरखेली हो जाएगा! अच्छी-खासी हलचल मची हुई थी जोगी सिंह के दिमाग में।

और रेज टोलों में अप्रत्याशित रूप से चुप्पी छाई हुई थी। पहले का वक्त होता तो सुखलाल की माई रोते-चीखते हुए आ धमकती सुखलाल को खींचते-घसीटते हुए—'देखिए तो मालिक, ई काम ठीक किए हैं सिरीकमल सिंह?' और जोगी सिंह पहले तो पलटकर उसी को डांटते कि बेटे को बढ़िया 'रहन' नहीं सिखा रही थी और फिर समझा-बुझाकर फांड़ में थोड़ा चूड़ा-गुड़ या तिलवा डालकर वापस कर देते। सुखलाल की माई जोगी सिंह की इस चिंता में भागीदार हो जाती कि अपनी औलाद पर किसी का वश नहीं चलता।

पर इस बार कुछ भी नहीं हो रहा था ऐसा। कोई नहीं आया था ओरहन लेकर!

क्यों?

"हूब है आने का?" कलक्टर सिंह का महेंदरा बोला, "आ गए तो पहले हगाएंगे और कहेंगे खाओ...एकदम टटका!"

"इसको दुआर पर से भगाता है कि नहीं रे बेटीफोरवना सब...ई तिलंगिया के नाती को..." जोगी सिंह चीखे।

रेज टोलों की चुप्पी श्री भगवानसिंह को भी परेशान किए हुए थी। मन कह रहा था, चुपचाप बैठे रहना ठीक नहीं होगा। एक बार नारद सिंहवा पहुंच जाए कार्बाइन-सार्बाइन के साथ, फिर हिम्मत नहीं होगी सालों की कुछ लंबा-चौड़ा सोचने की।

"संजोग देखिए कि न दयासंकर बाबा हैं गांव पर, न नंदलाल, न छांगुर...कोई

हइये नहीं है।'' रियासत मियां रामगिरिही के बहाने दमयंती का मन जांचने आ गए है।

''रूपलाल को न कहना चाहिए कुछ...तो सब लोग तो निमनका बनने मे लग हैं कि अन्हरी जइसा मिल जाएगा कुछ।'' रामगिरिही, पता नहीं कब से, हाथ फेरे जा रहे थे अपने माथे पर।

''सिबचना, भाई, गद्दार हुआ है एक नंबर का। कह रहा था कि लइका मबक झगड़ा में बड़का के पड़ने का जरूरते नहीं है।''

दमयंती सुन रही है चुपचाप।

'गांव में कुछो होता है तो पता नहीं, ई भछनी को का हो जाता है।' कभी-कभा उसके ऊपर दया आने लगती है रामगिरिहीबो को। जबसे बंद हुआ है इस्कुलवा, मुह लटकाए रहती है मुसमात जइसा। अनजनवा का भी नहीं सुनती। पता नही, कहा छिछियाने जाती है। मुनिया के मरद से हंड़वा ही आई, अब छंगुरा और नकचिपटा यार हुआ है। मुंहझौंसी...रूपललवा को फिकिरे नहीं है कुछ और मुंह करिया करके बेठी है लुआठी कर देंगे मुंह में कुछ बोली तो...

अपनी मोर्चाबंदी दुरुस्त कर रही है रामगिरिहीबो। दमयंती को नहीं पड़ने देगी गाव के झगड़ों मे। नदलाल को भी नहीं घुसने देगी अपने घर में। जाए, गोहार जुटाए गाव म घूम-घूमकर। उसकी बेटी नहीं जाएगी कही। किसकी जा रही थी कि उसकी जाएगी।

''रूपललवा का छोटका बेटवा बड़का बिसाह हुआ है। मुह बिरा रहा होगा ऊ सबको।'' रियासत मियां से कहा, ''टेढ़िया आदमी का दवाई ठीके हुआ है।''

दमयंती सोच रही है, रूपलाल की जगह खुद वही होती तो क्या करती? कुछ ना करती जरूर...पर साफ-साफ दिखाई नहीं दे रहा कुछ भी...धनंजयजी कहते हैं, अपनी लडाई तो कोई भी लड ले...मार देंगे या मिट जाएंगे...समाज की लड़ाई अपने से ऊपर उठकर लड़ी जानी है...पता नहीं, क्या कहते हैं. .जिसे देखो, एहतियात ही बरतना चाहता है पता नहीं, लड़ेंगे कब...कि सब डरते हैं और अपना डर छुपाते है बड़ी-बड़ी बातों मे .

''दमयंती है, चाची?'' छांगुर दौडा हुआ आया है और जल्दी में है—''जल्दी मे जल्दी निकल जाना है यहा से...बड़का जुटान हो रहा है...''

''तुम निकलो तो, छांगुर...नहीं तो ठीक नही होगा. .'' रामगिरिहीबो चीखी।

''नारदा का पूरा गिरोह आ रहा है...कुछ दूसरा ही प्लान लगता है उन लोगो का।''

रामगिरिहीबो हक्का-बक्का सुनने लगी है छागुर की बाते। उसने पहले ही कहा था, गाव छोडवाएगी यह लड़की।

''...हमको तो उड़ाने के फेर मे है सिरीभगवनवा...पक्का है...हमको डर हे, हम नहीं मिले तो तुम्हारे ऊपर वार न करे...''

''कहा जाओगे?'' उसने पूछा। बेजान आवाज।

''जगह की कमी नहीं है...बहुत साथी हैं...''

''इसको नहीं जाना है कहीं; समझे कि नहीं...ढेर टेटीहई बतियाओगे तो अभीए बोला लाएंगे सिरीभगवनवा को।'' रामगिरिहीबो ने तय कर लिया है, पैरों पर गिर जाएगी

जोगी सिंह के। अपनी बेटी की जिंदगी मांग लेगी। उमर कम है। निक-जबून नहीं बूझाया।

"हमको नहीं जाना है।" दमयंती बोली।

छांगुर चला गया।

'मटुकवा का सब सिधाई चिरइये में चला गया...एकदम बहेंगवा हो गया है छंगुरा!" चैन की सांसें ले रही है रामगिरिहीबो, 'भला संग रहबऽ खइबऽ बीड़ा पान, बुरा संग रहबऽ कटइबऽ दूनो कान...'

'जोगीया का परिवार धावा बोल देगा तब का करोगी?' छांगुर के चले जाने के बाद दमयंती से दमयंती ने पूछा। वह नहीं जानती—यह डर है या निडरता, जो उसे कोई फैसला नहीं लेने दे रही? कि अनास्था, जिससे आंखें चुरा रही है वह? 'बेकार में जान देने का कोई फायदा है?' मंधाता मिश्र कहता था, 'असली चीज है कि अपने लिए एक जगह बनाओ; कि कुछ कहो तो वो सुनें जिनके लिए कहा जा रहा है...' लेकिन मंधाता मिश्र बेईमान था। डरता था कि वह निकल न जाए उसकी चंगुल से। रोज हाथ मलता हुआ चला आता था अपनी कामांधता की ठंड में ठिठुरता हुआ। और उसे खुद भी तो अच्छा लगता था। 'समझी कि नहीं?' दमयंती ने याद दिलाया खुद को, 'मंधाता मिश्र भी तुम्हें अच्छा लगता था। ठीक से सोच लेना। कहीं उसी तरह तुम खुद भी तो खुद को अच्छी नहीं लगने लगीं?'

"सनका हुआ है कि धावा बोल देगा? एगो ईहे काम बचा है ऊ सबको?" रामगिरिहीबो बड़बड़ाती हुई बाहर चली गई है आंगन से।

नारद सिंह के गांव में पहुंचने की खबर के कारण 'भागो-पराओ' मच गया था रेज टोलों में। छांगुर, नकचिपटा, नंदलाल, जगनाथ वगैरह छोड़ चुके थे गांव। बस दमयंती बच गई थी। रामगिरिही को डर लग रहा है।

"हम तो कहेंगे कि तुम्हारा भी हटिए जाना ठीक है...दुराचारी सबका ठीक है कोई! घात कर सकता है..." दमयंती से कहा।

"चलो, निकलिए चलते हैं...ढेर सोचने का का है इसमें..." ध्यानमग्न देखा उसे तो जोर देकर कहा और अपनी लाठी और सामान ठीक करने को उठे।

"बिगाड़ के माटी कर दिए...अभीयो पेट नहीं भरा?" बड़बड़ा रही है रामगिरिहीबो, पर माहौल का डर उसकी चेतना पर भी हावी हो गया है। रोकेगी नहीं उन्हें।

रेज टोलों में सन्नाटा छाया हुआ है। रियासत मियां के घर के सामनेवाले चबूतरे और उसके पास खड़े बरगद के पेड़ पर कौओं की बड़ी फौज उतर आई है। शाम और भी डरावनी हो गई है उनके शोर से।

"तोरा माई के..." विवश आक्रोश से भरे भरोसा ने तलवार की तरह घुमाई अपनी लाठी तो तीन-चार कव्वे लहराते हुए उछले हवा में और गिरकर मर गए चबूतरे पर। शोर और भी भयंकर हो गया। रियासत मियां का पूरा परिवार कौओं के साथ-साथ गाली देने लगा भरोसा को।

"नन्हकू सिंह थे तो जवार-भर के साथी लोग से मिलना-जुलना रखते थे...एकता

था...अब आपसे में फूट पड़ गया...अपना-अपना नफा-नुकसान सोचने लगे साथी लोग।'' लगभग दुलुकिया चाल से चलते, चौकन्नी निगाहों से अपने चारों तरफ देखते जाते रामगिरिही ठोरा बाबा को पार करने के बाद थोड़ी राहत महसूस कर रहे हैं।

''साथी लोग का दोष नहीं है। हम लोग जानबूझकर अलग-थलग हो गए हैं।''

साथियों को दोष देना ठीक नहीं लग रहा दमयंती को। जब भी बुलाया गया, आए बेचारे। दो-दो बार जमा हो गए गुनी में। पूरा जवार स्तब्ध हो गया था। धनंजयजी भी बहुत खुश थे। कहते रहते थे साथियों का हौसला बनाए रखने को। वही खरी नहीं उतर पाई इस अग्नि-परीक्षा में। कमजोर लोगों के बीच रहते-रहते उन्हीं की तरह सोचने लगी। उन्हीं की शंकाएं और डर पालने लगी है। दमयंती को गुस्सा आ रहा है अपने ऊपर। उसे लग रहा है, वह खुद ही 'कमरेडई' की शिकार हो गई है।

कुंवरपुर यह सोच-सोचकर परेशान है कि भागी क्यों दमयंती?

''हम लोगों के बबुआ लोग बहुत बेबिचार काम कर रहे हैं, जोगी भाई।'' अपनी पुरानी शिकायत के साथ आ गए हैं हरिद्वार पांड़े, ''हमारे सुधाकर सब काम-धंधा छोड़कर एगो अघोरी के यहां डेरा-डंडा लगाए बैठे हैं और ई आपके श्रीभगवान बात-बात पर नारदी फौज उतार देते हैं।''

''वही न कह रहे हैं हम कि किसी के खिलाने से कोई खा लेगा गूह तो जो सुनेगा, हँसबे न करेगा रे बहिनियाचोद...'' जोगी सिंह ने भी कोसना शुरू कर दिया है अपने बबुआ लोगों को, ''अब देखिए कि भर जवार में पार्टी जुटाते घूम रही है रामगिरिहीया की बेटी...और रामगियान बाबा का छौंड़ा जानबूझकर गांव नहीं आ रहा है...ई कबाहट इन्हीं लोगों का न फैलाया हुआ है!''

''श्रीराम पांड़े को चेताना भी जरूरी हो गया है कि समझाएं उदय पांड़े को।''

''नहीं न समझेगा जी। उसी से खरची चल रहा है उसके परिवार का। बढ़िया बात भी कहिएगा तो उल्टा सोचेगा।''

''हमारा कहनाम है, भइया, कि देरी तो हो गया है, लेकिन रूपललवा को बुलाकर समझा दीजिए।'' जंगी सिंह ने सलाह दी, ''दमयंतिया, सुन रहे हैं, गलत लाइन पकड़ रही है।''

''नहीं आया तो?'' जोगी सिंह ने पूछा।

जंगी सिंह को डर लग रहा है दरअसल। सोच रहे हैं, सुखललवा जरूर बताया होगा कि वे भी मौजूद थे घटना के समय। सनीचर सवार थे कपार पर कि उल्टा-सीधा बोल गए।

''नहीं आया तो समझेगा अपना। कोई चूड़ी पहनकर थोड़े बैठे हैं हम लोग।'' कहा, पर कहते-कहते आवाज कांप गई जंगी सिंह की।

उदय पांड़े रूपी समस्या के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं थी लोगों के पास, सो हरिद्वार पांड़े की रुचि समाप्त हो गई बतकही में। कहा, ''राजा नल पर विपत पड़ी,

भूंजल मछरी जल में पड़ी।'' और अपने दुआर की ओर बढ़ गए।

"देखे न! काम का बात होने लगा तो कैसे भागा यहां से?'' जोगी सिंह घृणापूर्वक देखते रहे अपनी भारी-भरकम देह लिए चले जाते हरिद्वार पांड़े को।

टेंगर सिंह एक दिन ऐसा उबिया गए दमयंतिया-दमयंतिया सुनते-सुनते कि जोर-जोर गाना शुरू कर दिया शिवाले के चबूतरे पर लेटे हुए—

"दमयंतिया...दमयंतिया...दमयंतिया...दमयंतिया...एगो चुम्मा दिहले जइहे रे दमयंतिया!''

गाने की आवाज पड़ी कानों में तो पंचम में गालियां देते हुए बैलों को हांकने वाला पैना लेकर दौड़े पल्टू सिंह। टेंगर सिंह भागकर रामगिरिही के घर पहुंच गए थे तब तक—"बेटी हड़कंप मचाए हुए है रामगिरिहीबो...बीड़ी पिलाओ एक बंडिल।''

"दोकान खोले हुए हैं बीड़ी का?'' कहा और धान फटकने के अपने काम में लगी रही रामगिरिहीबो।

"सब धान बाइसे पसेरी?'' उसी के सामने चुक्का-मुक्का बैठ गए हैं टेंगर सिंह।

"मुंह मत खोलवाइए हमारा।'' रामगिरिहीबो झुंझलाई।

"गारी दोगी?''

"गांव छोड़वाइएगा तो गुन गाएंगे?''

"गंड़फटको लगा हुआ है सार लोग को। देखना, किसका छूटता है गांव।'' ऐसी मुलायम, अपनत्व-भरी आवाज में कहा टेंगर सिंह ने कि सूप फटकना बंद कर बीड़ी खोजने घर के अंदर चली गई रामगिरिहीबो।

16

"आप बाहर गए हुए थे कहीं। नहीं?'' धनंजयजी ने पूछा।

दयाशंकर एकटक देखे जा रहे थे उस आदमी को, जिसके बारे में आज के पहले केवल सुना-भर था उन्होंने कि वह मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर नक्सलवादी आंदोलन से जुड़ गया था और इलाके की वामपंथी हलचल को जनांदोलन और सैन्यीकरण के दोहरे उपायों से एक नई ताकत देने में जुटा हुआ था। ऐसा नहीं था कि मौके नहीं आए थे पहले; पर दयाशंकर ही कतराते रहे थे। पता नहीं क्यों, मन में यह हौल-सा बैठ गया था कि धनंजयजी से मिलने का मतलब था, अपनी नावें जला लेना। पर इस बार संदेश मिला तो ना नहीं कर सके।

दमयंती पहले से ही मौजूद थी वहां। बाहर ही बाहर चली आई थी। और चुपचाप बैठी हुई थी खटोले पर एक कोने में।

"हम होते तब भी कोई गारंटी नहीं है कि जो हुआ, नहीं होता, लेकिन...वैसे ऐसा भी नहीं है कि राजपूत या बभनटोल में सबको अच्छा लगा हो, लेकिन...और सबसे खराब बात है कि दो लड़कों के बीच झगड़ा हो गया तो...''

"बात यह है कि सबको अच्छा लगा हो चाहे नहीं, पर असली पॉलिटिक्स यही

है कि इतना दबा दिया जाए इन लोगों को कि एकदम जड़ से साफ हो जाएं।" दमयंती ने रोक दिया दयाशंकर को एक और 'लेकिन' तक जाने से।

धनंजयजी की निगाहें उसके तमतमाए हुए चेहरे की ओर चली गईं। सांवले चेहरे में सच्ची वेदना की चमक थी। अच्छा लग रहा था दयाशंकर के बुझे हुए चेहरे की तुलना में, जो थका-थका-सा लग रहा था संशयों के सतत आघात से।

"पॉलिटिक्स तो खैर है ही...हमारा यह कहना है कि उस घटना को लेकर यह सोचना ठीक नहीं है कि गांव एकदम से दो खेमों में बंट गया है और मरने-मारने का माहौल बन गया है...ऐसा भी संकट नहीं है..." दमयंती के अपनी बात बीच में ही काट देने पर खिन्न तो हुए थे दयाशंकर, पर जाहिर नहीं होने देना चाहते खिन्नता को।

दरअसल दमयंती को वहां मौजूद देखकर दयाशंकर कुछ विलग-सा हो गए हैं अपनी धुरी से। उम्मीद नहीं थी कि वह भी होगी यहां। तय नहीं किया था कि मिलेंगे तो कैसे मिलेंगे उससे। एकदम भूल जाएंगे मंधाता मिश्र के यहां हुई घटना कि वहीं से शुरू करेंगे बात? जैसे ही उसे यह बताने की सोचते कि उस पूरे प्रकरण के लिए वे एकांततः मंधाता मिश्र को ही दोषी मानते थे, पर वह मुन्नी को घसीटते हुए याद आ जाती; उसकी आंखों में सुलगती घृणा याद आ जाती।

दयाशंकर को लगता, कहीं बेवजह ही जरूरत से ज्यादा महत्त्व तो नहीं दे रहे थे उसे!

"इस तरह से दो खेमों में तो खैर, कभी नहीं बंटता या बंटेगा...सिविलाइज़ेशन और डेमोक्रेसी का पैदा किया भ्रम तो रहेगा...पर आप लोग ही बेहतर समझेंगे...हम तो दूर हैं प्लेस ऑफ अकरेंस से।" धनंजयजी ने निर्णय जैसा कुछ कहने के पहले ही रोक लिया अपने-आपको।

"मान लीजिए, रेजों में कोई जाता पूछने कि सुखलाल के साथ वैसा क्यों किया गया तो क्या होता? नारद सिंह को पंचायत करने के लिए बुलाया गया था? स्कूल तो गांव ने मिलजुलकर ही न बंद करा दिया था? कोई कहां आगे आया था कहने कि गलत हो रहा है?" दमयंती ने सीधे दयाशंकर से पूछा।

"तुम समझ नहीं रही हो बात।" दयाशंकर रोक नहीं पाए दमयंती के आक्रामक हो गए तेवर के कारण पैदा हुई खीज को जाहिर होने देने से, "हितों में तो विरोध है ही; पर धनंजयजी जो कह रहे थे सभ्यता और लोकतंत्र के भ्रम के बारे में, वह एक वास्तविकता है। उसका फायदा हम लोग भी उठा सकते हैं।"

एक तिरछी मुस्कान फैली धनंजयजी के चेहरे पर, जिसका मतलब दोनों ही नहीं समझ पाए। धनंजयजी समझ गए थे, दोनों दो तरह के व्यक्तित्व थे।

"अच्छा, दयाशंकरजी, यह बताइए कि अगर जो हुआ, उसका प्रतिकार करने का निर्णय आपको लेना हो तो आप क्या निर्णय लेंगे?"

"अब एकदम से..." दयाशंकर की समझ में नहीं आया, क्या कहें! कितनी बार तो सोचा है कि कोई अंतिम फैसला लेना होगा अपनी पॉलिटिक्स के बारे में और टालते गए हैं फैसले को। वही सवाल फिर खड़ा था सामने।

"इसमें घबराने या सही-गलत को लेकर चिंतित होने की बात नहीं है...पूरी तरह न कोई सही होता है, न गलत..." धनंजयजी को मालूम है, भागना चाहेंगे दयाशंकर, जान छुड़ाना चाहेंगे—'आप जो ठीक समझें।' दमयंती झट से कह देगी कुछ। लेकिन छोड़ना भी नहीं है दयाशंकर को। दोनों महत्त्वपूर्ण हैं।

दयाशंकर शंकित हैं कि कोई कायरतापूर्ण सुझाव न निकल जाए मुंह से।

"हम धनंजयजी, एक बात कहना चाहेंगे कि हम जो जुड़े इस कार्यक्रम से तो बस एक सहज लगाव या सहानुभूति के कारण; किसी विचारधारा के कारण नहीं। इसलिए हमारे विचार आपको उस तरह से, क्या कहें कि, वादानुशासित नहीं लगेंगे।"

"विचारधारा के कारण कोई नहीं जुड़ता। जुड़ता है हमेशा सहानुभूति के कारण ही। विचारधारा जरूरी हो जाती है, क्योंकि सहानुभूति को दिशा-बोध चाहिए होता है। केवल सहानुभूति के साथ आगे नहीं बढ़ा जा सकता।" धनंजयजी ने कहा।

"हम तो गांव के सामने ही सबसे पहले यह सवाल रखते कि सुखलाल के साथ जो हुआ, सही है कि गलत?" दयाशंकर ने कहा।

"तो जब भूलेटना मरा था या सिपाही और इंकलाब को मारा गया था, उस समय यह सवाल गांव के सामने क्यों नहीं रखा गया?" तमककर पूछा दमयंती ने।

"तो रखना चाहिए था न सवाल! पूछने की हिम्मत ही नहीं है और मुंह बंद कराने की बात करती हो?" पिनक गए दयाशंकर।

"हिम्मत की बात मत कीजिए।" दयाशंकर को लगभग डांट-सा दिया दमयंती ने, "हम कभी नहीं डरे पूछने से..." कुछ और कहते-कहते रुक गई। दयाशंकर ने, पर, सुन ली थी उसकी अनकही बात। कह रही थी—आप ही अंतर्धान हो जाते हैं ऐन मौकों पर।

"वही न कह रहे हैं हम।" दयाशंकर के मन में यह डर बैठ गया है कि उनका और मंधाता मिश्र, दोनों का कच्चा-चिट्ठा कहीं धनंजयजी के सामने ही नहीं खोल दे—"केवल तुम्हारे नहीं डरने से नहीं होगा न! ऐसा करना होगा कि जायज मुद्दों पर कुछ कहने में डर दूसरों को भी नहीं लगे।" आवाज को यथासंभव संयत बनाते हुए दयाशंकर बोले।

"डर तो नहीं डरने से ही जाएगा न?"

"केवल नहीं डरने से नहीं जाएगा। यह जान लेने से जाएगा कि डरने में, नहीं डरने से ज्यादा घाटा है। और यह जानते होने से जाएगा कि नहीं डर रहे तो आगे क्या करना है। अंधे कुएं में छलांग लगाने से कोई भी डरेगा।"

धनंजयजी को अच्छी लगी दयाशंकर की तर्क-शक्ति। उन्हें पता है, दमयंती नहीं सोच सकती इतने सिलसिलेवार ढंग से। या सोच भी सकती है तो कह नहीं सकती। पर सिलसिलेवार ढंग से सोचने वालों का सीमित महत्त्व ही है इस कांटे की लड़ाई में, धनंजयजी को यह भी मालूम है।

"इस एक बात को इग्नोर मत कीजिए आप लोग कि डर अपोजिट पार्टी को भी कम नहीं है। नहीं तो इस छोटी-सी घटना के बाद बाहर से गुंडे-बदमाशों को बुलाने

की क्या जरूरत थी?''

''डर तो इतना है कि...'' अचानक उत्साह से भर गए हैं दयाशंकर, ''और ठीक से काम किया जाए तो...पर छोटी-छोटी लड़ाइयों से घाटा होता है। यही बात हम नन्हकू भाई को भी कहते थे।''

''घाटा नहीं होता है।'' धनंजयजी ने दृढ़तापूर्वक कहा और सिगरेट सुलगाने लगे। ''नफे-घाटे के बारे में सोचना ही नहीं चाहिए ज्यादा।'' सिगरेट सुलगाने के बाद बोले, ''तैयारी जरूर ठीक होनी चाहिए और दुश्मन की चालों से सावधान भी रहना चाहिए।''

चेहरा उतर गया है दयाशंकर का, मानो उम्मीद नहीं थी कि एकदम से उनकी बात काट देंगे धनंजयजी।

दमयंती को दिख गया था उनका उतरा हुआ चेहरा—''जितना दबिए, उतना ही दबाते हैं लोग।'' वह बोली।

धनंजयजी वहां बैठे-बैठे ही खो गए थे कहीं। चेहरा सिगरेट के धुएं के छल्लों में डूब गया था। आंखें आकाश के किसी खाली कोने में टिकी हुई थीं।

''कुंवरपुर वापस लौटने में तो कोई डर नहीं है न?'' थोड़ी देर के बाद बोले।

यह संकेत था कि अब जा सकते हैं आप लोग।

दयाशंकर लौट आए हैं कुंवरपुर।

जगनाथ को विश्वास नहीं हो रहा कि धनंजयजी के यहां से बोलहटा आया था दयाशंकर को।

''इसका मतलब कि कुंवरपुर का सारा रिपोर्ट पहुंच रहा है उनके पास?''

''बहुत गहरा आदमी है, भाई! हम तो अभी तक मतलब ही निकाल रहे हैं उसकी एक-एक बात का।'' दयाशंकर ने कहा।

''दमयंती पहले से ही हाजिर थी; नहीं?''

''बहुत बढ़-बढ़कर बोलती है, जगनाथ।'' दयाशंकर ने कहा, ''ऐसे बोलती है जैसे भीतरघाती हों हम लोग।''

''खराब लगता है कहने में, लेकिन मंधाता बाबा दिमाग खराब कर दिए इसका। रोज-रोज ड्रेस बदलने का जो चस्का लग गया है न, वही बेचैन किए हुए है।''

''छोड़ो, काम से काम रखना है।'' दयाशंकर नहीं चाहते कि लोग दमयंती के साथ नाम जोड़ें मंधाता मिश्र का। जो हुआ, वही काफी था।

''काम से तो काम रखना ही है, बाबा, लेकिन रामगिरिही का बेटवा-बेटीया दूनो बेलूर हो गया है।'' रियासत मियां को भरोसा के साथ हुई बकझक की याद आ गई है, ''हई भरोसवा कउवा सब पर लाठी भांज रहा था। भुसकोल कहीं का! देखते-देखते पांच-छौ गो कउवा मार दिया!''

''जवार में बदनामी हो रहा है, बाबा।'' रियासत मियां की शिकायत को दरकिनार करते हुए जगनाथ ने कहा, ''गांव से भागकर बढ़िया काम नहीं हुआ।''

''जवार में ही कौन कहें कि बड़का तीसमार खां वाला काम हो रहा है।''

"नहीं हो रहा, फिर भी..." जगनाथ ने अपने ऊहापोह से उबरने की कोशिश करते हुए कहा, "देर से ही सही, पर कुछ होना चाहिए। धनंजयजी को भी अच्छा लगेगा।"

"क्या होना चाहिए?"

"कम से कम गुनी में एक प्रदर्शन तो..."

"श्रीभगवनवा को इसी समय फिर उकसाना ठीक होगा?"

"ईहो बाबा ठीके कह रहे हैं। कहीं फिर भागो-पराओ मच गया तो और बदनामी होगा।" रियासत मियां बोले।

इतने निस्संग भाव से रियासत मियां का एक हौसला कम करने वाली बात बोलना अच्छा नहीं लगा जगनाथ को, पर कहा नहीं कुछ। बात गलत भी नहीं थी। रेजों का जो हाल था, बहुत हौसलादेह नहीं था।

चुप्पी छाई हुई है मड़ई में। पर दयाशंकर के मन में एक लोभ जगा दिया है जगनाथ के प्रस्ताव ने। दमयंती जबकि भागी हुई थी डरकर, सुखलाल के साथ हुए दुर्व्यवहार के प्रति विरोध व्यक्त कर उसे नीचा तो दिखाया ही जा सकता था।

"एक आइडिया आ रहा है दिमाग में।" अंदर चल रहे विचारों में उलझे हुए ही वह बोले।

मड़ई में बैठे बाकी दोनों जन उत्सुक हो गए हैं उनका आइडिया जानने को।

"सोच रहे हैं, प्रदर्शन किया जाए, लेकिन धान की खरीद में जो घोटाला हो रहा है, उसको मुद्दा बनाकर किया जाए! और सुखलाल वाले मुद्दे को भी उसमें शामिल कर लिया जाए।"

"ई बाबा, बहुत चल्हांकीवाला आइडिया है। सांप भी मर जाए और लाठी भी नहीं टूटे।" रियासत मियां खुश हो गए हैं।

"हम केवल इतना ही चाहते हैं कि कुछ हो।" जगनाथ भी सहमत है, "चाहे जैसे हो।"

किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने का सरकार का प्रयास उसे और भी नीचे गिरा गया था उसकी खेतिहर जनता की निगाहों में। खाद्य निगमवाले किसानों को तंग करने और घूस कमाने के तरह-तरह के हथकंडे ईजाद कर रहे थे। 'पहले आओ, पहले जाओ' का नियम बना था, पर यह सूचना फैल गई थी धान बेचने आए किसानों के बीच कि जो घूस नहीं देता, उसके धान को 'खंखर्रा' करार दे देते निगमवाले और वह अपने धान के साथ ही बाहर हो जाता लाइन से। हो-हल्ले पर उतारू हो जाता कोई तो धान की तौल के वक्त उसे उसकी औकात दिखा देते निगमवाले। हल्ला मचाने वाले किसानों को धमकाते भी रहते कि 'गड़बड़ कीजिएगा तो चले जाएंगे बंद कर। सरकार भी खुश होगी। फंड-वंड का ठिकाना ही नहीं है, मजबूरी में खरीद रही है।' हल्ला मचाने वालों को हल्लाकर चुप करा देते दूसरे किसान। डर जाते कि सारा धान लादकर वापस ले जाना पड़ेगा।

अवधेश चौधरी से कोई कहता कि धान की खरीद में धांधली हो रही थी तो उल्टे उसी के ऊपर भड़क जाते—"इसके पहले के राज में भी कभी सरकार को बेचे थे धान? कभी कोई आया था पूछने? भइया हैं कि आ भी गया। और ई भी समझ जाइए कि साले बूटन राय जैसे गोला मालिक लोग षड्यंत्र कर रहे हैं इस कार्यक्रम को बदनाम करने का। फटी हुई है कि बिजनेस न बैठ जाए उनका।"

लोगों को मानना पड़ता, चाहे जो भी कर रहे थे, आए तो थे निगमवाले।

ब्लॉक ऑफिस के सामने उन्हीं के खिलाफ नारे लगाती भीड़ को देखकर धैर्य का बांध टूट गया अवधेश चौधरी का।

"डर लगता है बाहर निकलने में तो कहिए हमी सरिया देते हैं सार लोग को।" राइफल लिए हुए घुस गए हैं थाने में और डांटना शुरू कर दिया है पिछले दस वर्षों से वहीं पदस्थापित और अगले दस वर्षों तक भी वहीं पदस्थापित रहने के लिए उनकी कृपा के मोहताज ए.एस.आई. को।

"आपके भइये न खिसियाने लगते हैं।" ए.एस.आई. ने रोनी सूरत बनाकर कहा, "कहते हैं, अपनी बात कहने का हक सबको है डेमोक्रेसी में।"

"हाकिम कहां हैं आपके?" और तन गए अवधेश चौधरी।

"देखिये रहे हैं।" ए.एस.आई. ने बताया।

गिरगिट की तरह गर्दन हिलाते हुए थाने के बाहर आए और नारे लगाती भीड़ को नारा लगाता हुआ छोड़कर दूसरी तरफ बढ़ गए अवधेश चौधरी। वही पुराना संकल्प फिर सांसें लेने लगा है—शालिग्राम सिंह को भगाना है।

'सरियाने चले थे!' एक-दूसरे की आंखों में झांककर सिपाहियों ने मजा लिया इस स्थिति का।

बूटन राय के गोले पर यह सिद्धांत पेला जा रहा था कि धान-खरीद का सारा कार्यक्रम सत्तारूढ़ दल के समर्थकों को फायदा पहुंचाने के लिए चलाया जा रहा था।

"जिन किसानों का धान खरीदा गया, उनकी एक लिस्ट जारी करने को कहा न जाए इनसे। सब पता चल जाएगा!"

"जब तक पारदर्शिता नहीं आएगी प्रशासन में, सूचना का अधिकार नहीं मिलेगा लोगों को, कुछ नहीं हो सकता।" एक ऊंचे भाव-बोध वाली बात बोले बूटन राय।

"ई साला सब भी असली गेमवा नहीं न समझ रहा है।" नारे लगाती भीड़ को लक्ष्य करके कहा गया।

"कठपुतलियों को दिमाग नहीं होता।" बूटन राय ने कहा, "इसीलिए कठपुतलियां और भी खतरनाक होती हैं।"

दयाशंकर के चेहरे से सफल श्रम का संतोष चू रहा है। प्रदर्शन सफल रहा है। उदासी का जो माहौल व्याप रहा था समर्थकों के बीच, टूटा है। एक के बाद एक कई शिकस्तों के बाद फिर से खड़े होने की अच्छी कोशिश रही यह। धनंजयजी भी खुश होंगे सुनेंगे तो।

"आपका आज वाला आइडिया अच्छा था।" कहां से तो दमयंती भी आ धमकी थी।

"मिलजुलकर काम किया जाए तो सब अच्छा ही होगा।" जगनाथ ने देखा दोनों तनावग्रस्त थे।

दमयंती चली गई है। पर झिंझोड़ती गई है दयाशंकर को। कैसी लड़की है यह! उतनी कटुता के बाद भी साधुवाद दे गई। यह तो बहुत बड़ी बात हो गई न!

"हम थोड़ा बिक्रमगंज जाएंगे, जगनाथ।" कहा और बस स्टैंड की ओर बढ़ गए। आज खुश है दयाशंकर। मंधाता मिश्र को भी बताएंगे—मुन्नी-फुन्नी चाम का ढोल हैं केवल, दमयंती ऊंची चीज है।

'देखिएगा ए भाई, बचके रहिएगा इस ऊंची चीज से।' मंधाता मिश्र की डरी हुई प्रतिक्रिया की कल्पना कर हँसी आ गई है उन्हें। ढोंगी कहीं का!

गुनी में छुट्टी हो गई थी स्कूलों की। भरी हुई चल रही थीं गुनी की संकरी सड़कें। उतरती हुई दोपहर में रौनक हो गई थी बाजार में। जगनाथ की निगाहें अपनी बेटी को ढूंढ़ रही है उस भीड़ में। वह अमूमन रोज देखता है यह सपना कि देवता पांड़े की वसुधा की तरह ही उसकी शांति भी एक बेहद ऊंचे मुकाम पर पहुंच गई है—गांव-देहात में फैली हुई अशांति से दूर! सपने में कभी-कभी वह उसे विदेश भी भेज देता है। खासकर उन दिनों, जब डॉलर सिंह आए हुए होते हैं अमेरिका की प्रगति की कहानियां बटोरकर।

"शांति आज आई थी न स्कूल?" टोले की एक लड़की दिख गई तो पूछा।

वह भी उसी की तरह निगाहें दौड़ाने लगी थी भीड़ में। उसे नहीं मालूम था, शांति आई थी कि नहीं।

"उसी के क्लास में न पढ़ती हो?" गुस्सा आ गया है जगनाथ को। कैसी लापरवाह लड़की है कि अपने क्लास में मौजूद लड़कियों तक की खबर नहीं है!

"संतिया के बारे में पूछ रहे हैं?" नौबत मियां का छोटा बेटा आ गया था उसकी मदद को, "अभीये तो गई है।"

मन हुआ जगनाथ का कि एक तगड़ा झापड़ जड़ दे उसके मुंह पर। 'शांति' नहीं कह सकता। आज महसूस हो रहा है उसे कि कितना बुरा काम हुआ था दमयंती का स्कूल बंद करके। और कुछ नहीं तो एक-दूसरे को इज्जत से पुकारना तो सिखा देती!

"लगे हाथ एक और काम कर डालते हैं, दमयंती।" दमयंती के पास पहुंच गया है जगनाथ। प्रदर्शन के बाद जरूरी सौदा-सुलुफ लेकर अपने-अपने गांवों को लौट रहे थे। कुंवरपुर का जत्था दमयंती के साथ लौट रहा था।

"स्कूल फिर से चालू करते हैं।"

गुरेरती हुई आंखों से उसने देखा जगनाथ को। बोली कुछ नहीं।

"एगो और रैली हो जाए तो कॉलेज खोलने को कहने लगेंगे जगनाथ भाई।" छांगुर ने चुटकी ली।

जगनाथ ध्यान नहीं देता ऐसी ठिठोलियों पर। उसकी जिंदगी का दूसरा मकसद ही हो गया है अपनी बेटी शांति और बेटे सतीश को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बना देना। जैसे ही काम-धाम और राजनीतिक गोलबंदी से फुर्सत मिलती, उनकी पढ़ाई-लिखाई का हिसाब लेने बैठ जाता। कह देते कि अंग्रेजी या हिसाब नहीं बुझाता तो बेचैन हो उठता। जहां नहीं जाना होता, पहुंच जाता। दिनेश सिंह की दालान में हाजिर हो जाता—"एगो हिसबिया इसको बुझाइये नहीं रहा, मास्साब!"

देवता पांड़े के यहां पहुंच जाता।

"इसको भी अपने ही साथ रखना, बूची। इसका भी ध्यान लगेगा।" करुणा से कहता।

मन नहीं करता उसका कि शांति अपने टोले की लड़कियों की तरह दिखे या ओढ़े-पहिरे। घर से बाहर निकलने लगती तो खुद देखता बालों में कंघी की थी कि नहीं; फ्राक गंदी तो नहीं हो गई थी। अपनी औरत को न जाने कितनी ही बार पीट चुका था उसे गाली देने के लिए। पर जगनाथबो को अहसास था कि किसी बड़ी मुहिम में जुटा हुआ था उसका पति। बुरा नहीं मानती मार-पीट का।

"देख, देख रे दुलरुई, देख! तुम्हारे चलते पिटा रहे हैं।" पीठ और कंधे दुखने होते पिटाई के बाद, फिर भी छोह नहीं छोड़ती।

"जगनथवा मनबहका बना रहा है संतिया को।" उसके टोलेवालियों की शिकायत थी, "दमयंतिया जइसी हो जाएगी। अभीये से कटाह हो गई है।"

"भगवान करे कि मनबहका बन जाए। मन तो रहेगा न अपना। हम लोग का तो मनवे रोपनी-बोअनी करते-करते कब दो तो पाकी-सांकी में भुला गया।" जगनाथबो कहती।

"अब ई तो जियादती न बतियाने लगीं तुम। सब धरम-शास्त्र में लिखा है कि काबू रखना चाहिए मन पर और तुम कह रही हो बहकने दो मन को।" श्रीराम पांड़ेबो बोलीं।

"धरम-ओरम शास्त्र का बात छोड़िए। धरम-शास्त्र उसके लिए न लिखा गया है जो आदमी में हो। हम लोग आदमी में हैं, चाची?"

"आदमी में तो हइये हो, अब मालिक होने का मन कर रहा है।"

"तो गलती कर रहा है?"

"ईहे न उत्तरकांड में लिख दिए हैं गोस्वामीजी कि..."

"गोस्वामीजी कमकर-ढमकर का मन नहीं जानते होंगे, चाची। बेचारे बाबाजी थे।"

"हई जगनथवाबो का बतकूचन सुन रही हैं, दीदी।" श्रीराम पांड़ेबो ने सुदर्शन पांड़ेबो को गुहार लगाई है, "अब गोस्वामीयेजी को बुड़बक कहने लगी!"

"बुड़बक कह रहे हैं?" तिजुक गई है जगन्नाथबो, "ई न कह रहे हैं कि सब कोई सब कोई का मन नहीं जान सकता।"

"गोस्वामाजी सब कोई हैं?" सुदर्शन पांड़ेबो की त्योरियां चढ़ गई हैं।

"सब कोई नहीं हैं, तबो सब बात ठीक नहीं लिखे हैं।" तमककर अपनी खांची उठाकर खड़ी हो गई है जगनाथबो।

लोग कहते मुंहफट और नकचढ़ी थी वह। और जगनाथ को घमंड था इस बात का। बस नन्हकू सिंहवा का दिखाया सपना सच हो जाना था। फिर तो और भी सुंदर लगने लगती यह चढ़ी हुई नाक।

लोग हँसते हैं पीठ पीछे—रंगू सिंहवाली बीमारी लग गई है जगनाथ को।

"हँसले घरवा बसेला।" जगनाथबो चिढ़कर कहती।

"बस जाए तब तो ठीके है..." कुंवरपुर को इंतजार है इस उद्यम के परिणाम का।

"आज खंसी कटेगा न, नंदलाल?" भरोसा ने पिंड छुड़ाया पढ़ाई-लिखाई की इस नीरस बतकही से।

"गवनई भी होगा।" नंदलाल ने घोषणा की, जो आगे-पीछे चलते हरेक आदमी तक पहुंचाई गई—

"नंदलाल भइवा के तरफ से खंसी कटेगा और गवनई का इंतजाम है आज!"

यह लगभग सभी भूल चुके हैं कि भारतीय खाद्य निगमवालों की धांधलियों के विरुद्ध नारे लगाकर आ रहे थे वे। कि निगमवाले वही धांधलियां कल भी नहीं करेंगे, कोई गारंटी नहीं मिली थी इस बात की। सुखलाल कांड के अपराधियों को सजा मिलेगी, यह भरोसा भी नहीं था। पर खुश थे। अपने ही पॉकेट से गिर पड़ा सिक्का जैसे मिल जाए धूल में पड़ा हुआ तो खुद को थोड़ा अधिक अमीर समझने लगता है आदमी, अपना स्वाभिमान उन्हें दिख गया था धूल में पड़ा हुआ और वे खुश थे उसे पुनः हासिल कर।

दमयंती जरूर सोचती है अधूरे रह गए अभियानों के बारे में; उन्हें पूरा करने के बारे में; लेकिन उसे भी सीखना होगा एक अभागी भीड़ के साथ तालमेल बिठाना। धनंजयजी कहते हैं, "हम लोग कोशिश व्यवस्था बदलने की नहीं, व्यवस्था बदल पाने की ताक़त पैदा करने के लिए कर रहे हैं।"

दमयंती सोचती है, दूसरों की ही तरह उसे भी अपने अंदर धैर्य पैदा करना होगा। निजात पानी होगी अपने अस्थिर स्वभाव से। आजकल सुलझी हुई दमयंती को अपने अंदर खोजती रहती है उलझी हुई दमयंती।

"बसुधा आई है।" घर में घुसते ही खबर दी भरोसाबो ने।

"यहां आई थी?" खुद दमयंती भी नहीं जानती, ऐसा क्यों चाहती है वह कि सामना नहीं हो वसुधा से। कहीं यह हीनता-बोध तो नहीं है उसका!

"वासुदेव सिंह का लड़कवा भी आया है।" भेद-भरे अंदाज में बताया भरोसाबो ने।

दमयंती को अच्छा नहीं लगता वसुधा के बारे में इस तरह की ऊलजुलूल बातें सुनना। पर कुंवरपुर की सबसे चटकदार खबर यही थी कि वसुधा और सुशील बिना

शादी किए हुए ही पति-पत्नी की तरह रह रहे थे दिल्ली में। लोग हँसते कि 'दू लाख तो छोड़ाने में ही डूब गया वासुदेव सिंहवा का, लगता है दहेज का पइसवा भी डूबेगा।'

देवता पांड़े समझाते अपनी पत्नी को कि बड़े लोगों के बारे में उल्टा-सीधा बोलना आदत है लोगों की। नेहरूजी की बहन के बारे में भी बोलते थे; इंदिरा गांधी के बारे में भी बोलते थे।

लेकिन पति की खुशफहमियों से खुद को राजी नहीं कर पातीं देवता पांड़ेबो।

"सुसीलवा क्या करने आ जाता है इसके पीछे-पीछे?"

"पीछे-पीछे?" सुलग उठे हैं देवता पांड़े, "नन्हजतिआंव मत बतिआओ हमसे।"

"बासुदेव सिंह काहे कहते हैं कि उनके बेटे को फंसाने के चक्कर में हैं आप?"

"बासुदेव सिंह कभी किए हैं किसी का लिहाज कि हमारा-तुम्हारा करेंगे? अपने बेटे से बोलचाल बंद करता है कोई? सनक गए हैं।"

"आपको भी कोई अच्छा नहीं कह रहा है।" देवता पांड़ेबो बोलीं।

"जाने दो नहीं कह रहा तो। बेटी को ईनार में नहीं न धसोर देंगे इन लोगों से अच्छा कहाने के लिए?"

देवता पांड़े ने बंद कर दी है बातचीत। हमेशा यही करते हैं। देवता पांड़ेबो दुःखी हैं कि इस सच्चाई का सामना क्यों नहीं करना चाहते देवता पांड़े।

"दीदी को अंगरेजी बोलना आ गया, माई। सुशील भइया के साथ अंगरेजीये में बात कर रही थीं।" करुणा ऊभ-चुभ हो रही है यह सूचना देते हुए।

"सुशील भइया से बात करने के लिए ही न कुंवरपुर आई है दिल्ली से!"

करुणा की समझ में नहीं आया, क्या कहा जाए इस विष-बुझी प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया में तो बाहर चली आई कमरे के।

"हमसे सच-सच बताओ, वसुधा, कि सुशील से तुम्हारा क्या संबंध है?" देवता पांड़ेबो ने अंततः जुटा ली है वांछित दृढ़ता और निडरता, "नहीं बताओगी तो जहर खा लेंगे।"

"जानोगी कैसे कि सच-सच बता रहे हैं?" मिट्टी के उस कमरे में, जिसमें जन्म लेने से अठारह साल तक सांसें ली थीं उसने, अजीब-से बेगानेपन का पसरना महसूस करती है वसुधा।

देवता पांड़ेबो ने कोई जवाब नहीं दिया है उसके सवाल का। पीढ़े पर बैठी चुपचाप इंतजार कर रही हैं अपने सवाल के जवाब का।

"सुशील ने बहुत मदद की है, माई। उसके दिल्ली में रहने से एक सहारा हो गया। अपनी ही कॉलोनी में तीन ट्यूशन दिलवा दिए। हफ्ते में बस दो दिन जाना पड़ता है और साढ़े चार हजार रुपये मिल जाते हैं महीने में। डर नहीं लगता कि अकेले हैं।" भीतर खदबदाता क्रोध ठंडी उपेक्षा में बदल गया है।

"शादी क्यों नहीं करता?"

"क्या कहना चाहती हो कि तुम्हारी न्यारी बेटी के लिए कुंवारा बैठा हुआ है?"

"हम नहीं कह रहे, गांव कह रहा है।"

"देखो, बेटी सबको दुःख दोगी तो हम ईनार में कूद जाएंगे!" देवता पांड़े की आंखें छलछला आई हैं।

"हमीं दुःख दे रहे हैं?...इसको कुछ नहीं कहिएगा?...बाप-मतारी को कुछ पूछने का अधिकार भी नहीं है? ..इसका करतव्य नहीं है कि अपना दुःख-सुख बताए? ये तो अइसा करती है, जैसे मां-बाप कहकर दया कर रही हो..." धारासार बरसने लगी हैं देवता पांड़ेबो की आंखें।

करुणा को भी रुलाई आ गई है सबको चिंतातुर और रोते देखकर।

"तू क्यों रो रही है रे पागल?" उसके चेहरे को अपनी बाहों में समेट लिया है वसुधा ने, "चलो, माई को दलपुड़ी और जाऊर बनाकर खिलाते हैं आज। तब बोलेगी मीठा-मीठा।"

ख़ुद से भी नाराज है वसुधा। माई से झूठ नहीं बोलना चाहिए था उसे। देवता पांड़े की विश्वास से भरी आंखें आ जाती हैं आंखों के सामने—'देखो तो, कहा नहीं था कि वसुधा नहीं कर सकती ऐसा' कहती-सी।

"सब बासुदेव सिंह की बदमासी है। वही आकर उल्टा-सीधा सुना जाते हैं सबको।" वसुधा को एकदम चुपचाप बैठे देखा तो कहा करुणा ने।

"क्या सुना जाते हैं?"

"पिछली बार आए थे तो कह रहे थे कि हमारा कोई बेटा नहीं है सुशील नाम का..."

"दमयंती से अब कभी भेंट नहीं होती तुम्हारी?" बात बदल दी है वसुधा ने।

"उसका लाइन बदल गया है।" करुणा बताने लगी है, "क्रांतिकारी दस्ता में चली गई है...हथियार चलाना सीखती है...कई-कई दिन तक गायब रहती है घर से... फैशनेबुल भी हो गई है!"

"हमारे बारे में पूछती है?"

"हमसे तो नहीं।"

कुंवरपुर थोड़ा और बेगाना-सा लगने लगा है करुणा की इस ख़बर से।

"एक दिन नारद सिंह आया था उसको मारने। भाग गई थी।"

वसुधा जानती है, दमयंती को रत्ती-भर भी नहीं जानते ये लोग। चार बरस पहले भी दमयंती आतंकवादी ही थी इन लोगों के लिए—एक चमइन, जो बिगड़के मार्टी हो गई थी।

दमयंती, लेकिन, सचमुच वह पहले वाली दमयंती नहीं लगी। वसुधा अटपटा-सा महसूस करने लगी है उसकी मौजूदगी में।

साढ़े तीन बरस का अंतराल क्या इतना बदल देता है रिश्तों को?

"तुम तो बदल गई हो, दमयंती।" वसुधा कोशिश कर रही है कि वही पुरानी उष्मा लौट आए कहीं से।

"क्या बदल गए हैं?" दमयंती धीरे-से हँसी, "तुम बड़ा आदमी हो गई हो, इसीलिए लग रहा है ऐसा।"

"कुछ पूछो भी तो हमारे बारे में।"

"बताने से भी थोड़े ही आएगा हमारी समझ में।"

"हम तो सुने कि तुम बहुत अच्छा काम कर रही हो। करुणा तुम्हारे स्कूल के बारे में भी बता रही थी। बंद करवा दिया इन लोगों..."

"बंद नहीं करवा दिया। हमारे अंदर ही ताकत नहीं थी उसे चलाने की।"

"अरे वाह रे! तुम तो खुद भी डायलग बोलने लगीं।"

दमयंती भी महसूस कर रही है कि पुराने दिनों की तलाश में है वसुधा। वापस पाना चाहती है उसको। पर एक अजीब-सी असहायता-भर गई है उसके अंदर। वह जल्दी-से-जल्दी हट जाना चाहती है वसुधा के सामने से। खालीपन का एक अजीब काटता हुआ-सा अहसास लिए आई है वसुधा। न जाने कहां से ऐसा खनखनाता हुआ उजाड़ उग आया है उसके अंदर।

"तुम्हारा तो फाइनल इयर होगा न?"

"हां, बस एक साल और।"

"उसके बाद?"

"फिर एक और साल।" वसुधा हँसी कहकर, "डायलग था।"

अब दोनों की ही समझ में नहीं आ रहा कि जारी कैसे रखें बातचीत। वसुधा ने सोचा, बताए कि फाइनल इयर हो जाने के बाद वह अमेरिका जाने की सोच रही है। पर रोक लिया अपने-आपको। लगा, और भी दूर छिटक जाएगी दमयंती।

"दिल्ली में हम लोग भी किसी-किसी मुद्दे पर धरना-सरना करते हैं, तो तुम्हारी याद आती है। हँसी आती है अपनी शोशेबाजी पर। यहां कितनी मुश्किल लड़ाई लड़ रहे हैं लोग और..."

चुपचाप सुन रही है दमयंती। क्या कहे!

"नन्हकू सिंह तो बहुत बोलते थे तुम्हारे? तुम कैसे गंभीरा फूआ हो गईं?"

"समझ में ही नहीं आ रहा, क्या बोलें!" अपने ऊपर ही झुंझला उठी है दमयंती, "लगता है, कोई मेल ही नहीं है हमारी और तुम्हारी बात में। तुम्हारी बात आगे जा रहे आदमी की बात है, हमारी दलदल में तैरने की कोशिश करते आदमी की।"

"जाने दो, नहीं बोलोगी तो। लेकिन तुम कामयाब होंगी अपने मकसद में तो हमसे ज्यादा खुश कोई नहीं होगा।"

'हम कामयाब होने के लिए नहीं लड़ रहे, वसुधा! लड़ने को अभिशप्त हैं हम। जिस समाज ने अपना माना ही नहीं हमको, उसी को अपना मानते चले जाने की निर्लज्जता हमसे नहीं होती। उसके लिए बहुत घृणा है हमारे अंदर। बहुत घृणा है। देखो, तुम आई हो तीन सालों से अधिक समय के बाद और हम कुछ खाने के लिए भी नहीं कह सकते तुमसे! बताओ, सभ्यता है यह?' वसुधा चली गई तो अपने अंदर ही बहुत

देर तक बोलती रही दमयंती।

दोनों ही उदास हैं आज। दोनों को ही लग रहा है, उनसे छूटा जा रहा है उनका गांव। दोनों ही मानती हैं, जैसा है, अच्छा नहीं है वह, फिर भी कुछ है, जो खलेगा—नहीं होगा तो।

"मिली?" करुणा उत्सुक है जानने को कि क्या बातें हुईं दोनों के बीच।

"खुश नहीं लगी।" वसुधा बोली।

"भर गांव के नाक में धुआं किए हुए रहेगी तो खुश कैसे रहेगी।" देवता पांड़ेबो ने कहा।

"खाली उसी बेचारी का दोष है?" हमेशा की तरह पत्नी की बातों में रफू लगा गए देवता पांड़े।

"जरूरी है बात काटना?" गुस्सा गईं देवता पांड़ेबो, "झगड़ा ठंडाने लगा था तो गुनी में रैली करने का क्या मतलब? झगड़ा ही बढ़ा रही है न?"

"अच्छा, छोड़ो, गांव का झगड़ा घर में घुसाने का काम नहीं है।" देवता पांड़े ने कहा।

"कोई गांव से ऊपर कैसे हो जाएगा?" देवता पांड़ेबो घूरे जा रही थीं पति को। उनका यह सवाल वसुधा को भी संबोधित था।

वसुधा ने कोई जवाब नहीं दिया। पिता के तमतमाए हुए चेहरे को देखती रही। इसी चेहरे की आंखों की पुतरी है वह। वसुधा बहुत डर जाती है इन आंखों में अपने बुझ जाने की आशंका से। उसका जी करता है, पिता की गोद में सिर रखकर भूल जाए अपने संसार को। पता नहीं, यह गोद वह अगली बार आए तो उसे स्वीकार भी करे कि नहीं।

करुणा के पास बैठे लालटेन की मद्धिम रोशनी में उसकी किताबें उलट-पुलट रहे हैं देवता पांड़े। वसुधा भी वहीं बैठ गई है जाकर और ठुड्डी उनके ठेहुने पर रख दी है।

"ई भी ठीक ही है पढ़ने में।" करुणा की ओर देखकर कहा धीरे-से और मुस्कुराए।

वसुधा भी मुस्कराई।

17

'साथी रामगिरिही अमर रहें, अमर रहें...हमसे जो टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा...साथी रामगिरिही के हत्यारों को गिरफ्तार करो, गिरफ्तार करो...'

बिक्रमगंज में लोगों की नींद ये नारे सुनते हुए खुली।

"आप ही के गांववाला रामगिरिहीया है क्या जी?" मंधाता मिश्र ने बड़ी-सी जम्हाई लेते हुए पूछा दयाशंकर से, जो दोनों कान खड़े किए हुए सुन रहे थे नारे।

"देखा जाए चलकर?"

''समझ लेने दीजिए पहले।'' अपना कुर्ता-पाजामा खोजने चले मंधाता मिश्र।

दस हजार से भी ज्यादा लोगों की भीड़ एस.डी.ओ. ऑफिस की ओर बढ़ी जा रही थी। सबसे आगे रामगिरिही की लाश चल रही थी और उसके पीछे-पीछे दमयंती।

''लाठी से कूंच-कूंच के मुआ दिया, बाबा।'' दयाशंकर को देखा तो छांगुर लपका हुआ आया।

''कहां?''

''गुनी से लौट रहे थे कल सांझ को। रात को नौ बजे पता चला हम लोगों को।''

हड्डियों में जाड़े का उतरना महसूस किया दयाशंकर ने। वे भी तो हो सकते थे रामगिरिही की जगह! कोई भी हो सकता था।

''आगे का क्या प्रोग्राम है?''

''देखिये रहे हैं प्रोग्राम।'' छांगुर ने कहा, ''यही रैला-रैली करते रह जाएंगे हम लोग।''

मंधाता मिश्र सुन रहे थे चुपचाप। दयाशंकर को इशारा किया अपने पीछे-पीछे आने का।

''हमारा मानिए तो फूट लीजिए यहां से। बहुत गलत-सलत जुटान देख रहे हैं हम।'' अलग ले जाकर कहा।

दयाशंकर धर्मसंकट में पड़ गए हैं। मंधाता मिश्र की सलाह भी जंच रही है और भागना भी अच्छा नहीं लग रहा।

''गलत-सलत का मतलब?'' पूछा।

''गिरोहों के आदमी नजर आ रहे हैं। हरबा-हथियार भी हो सकता है। बेकार फंस जाइएगा आप।''

मंधाता मिश्र को देखते रह जाते हैं दयाशंकर। किस खूबी से जुड़े भी रहते हैं और अलग-थलग भी बनाए रखते हैं खुद को। गद्दार भी नहीं कहता कोई।

''आप चलिए, हम समझ लेते हैं थोड़ा।'' भीड़ की ओर बढ़ गए हैं दयाशंकर।

भीड़ बढ़ती ही जा रही है धीरे-धीरे। दमयंती चुपचाप बैठी है लाश के पास। रतजगे की लाली है आंखों में। उसकी बगल में बैठ गए हैं दयाशंकर।

''बाबू को मार दिया, बाबा!'' दमयंती की थकी हुई आवाज।

आंसू आ गए हैं दयाशंकर की आंखों में।

''जुलूस गांधी मैदान से मेन रोड होता हुआ एस.डी.ओ. ऑफिस जाएगा...लाइन में हो जाइए आप...'' माइक से कार्यक्रम समझाया जा रहा था लोगों को। भाषणबाजी शुरू हो गई थी। दमयंती से अनुरोध किया गया, कुछ कहे। दयाशंकर चुपचाप उसे देख रहे हैं मंच की ओर जाते; माइक के सामने खड़ी होते। वह नहीं बोल पाती। भीड़ उसकी हिचकियां सुनती है और चीत्कार कर उठती है। दमयंती के गाने का टेप बजा दिया गया है।

भीड़ अनियंत्रित होने लगी है। सिंह रोडवेज की बस के शीशे चकनाचूर हो गए

हैं। गाड़ियों पर पथराव शुरू हो गया है। नारद सिंह के चाचा की कपड़े की दुकान पर टूट पड़ी है भीड़। दयाशंकर देखते हैं लपटें आग की और माइक की ओर दौड़ते हैं। दयाशंकर चीख रहे हैं संयम बनाए रखने को। भीड़ बहरी हो गई है।

"मना किए थे तो भाषण देने पहुंच गए।" एस.डी.ओ. ऑफिस के बरामदे में खड़े मंधाता मिश्र को गुस्सा आ रहा है दयाशंकर की आवाज सुनकर।

एस.डी.ओ. ऑफिस के आगे कतारबद्ध खड़ी है पुलिस। एक साथ उतनी राइफलें देखकर डर लगता है दयाशंकर को। भीड़ भी डर गई है शायद। माइक से आती अपील के मुताबिक लोग अपनी-अपनी जगह पर बैठने लगे हैं।

"मेहरारू सबको आगे करवाइए।" दो-चार अजनबी लोग घूम रहे हैं भीड़ में। 'जरूरत क्या है?' पूछना चाहते थे दयाशंकर, पर औरतों ने शुरू कर दिया था आगे सरकना। माइक से कहा जा रहा था कि जब तक कलक्टर और एस.पी. स्वयं आकर हत्यारों को चौबीस घंटे के अंदर गिरफ्तार करने और मृतक के परिवार को दस लाख रुपये के मुआवजे की घोषणा नहीं करेंगे, घेराव जारी रहेगा।

"एस.डी.ओ. साहब मिलना चाहते हैं आप लोगों के प्रतिनिधिमंडल से।" एक अधिकारी बाहर आकर बोला।

"एस.डी.ओ. खुद आए।" भीड़ का एक कोना चीखा।

एस.डी.ओ. की सिट्टी-पिट्टी गुम थी। उनका नाम दशरथ प्रसाद था और वे किसी भी हाल में गोली नहीं चलवाना चाहते थे।

"आप तो जानते ही हैं, आजकल कितना प्रोबलेम है, मिश्रजी!" मंधाता मिश्र के आगे घिघिया रहे थे, "कोई नहीं देखेगा कि क्या मजबूरी थी आपकी। न्यायिक जांच का ऑर्डर दे देगा और बानरवाला हाल हो जाएगा आपका।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। थोड़ा इंतजार किया जाए। उत्तेजना कम हो जाएगी धीरे-धीरे।" मंधाता मिश्र हिम्मत बढ़ा रहे थे।

"हम अपने पूरा लाइफ में समझा-बुझाकर काम चलाते आए हैं। लाठी भी नहीं चलवाए आज तक।"

"कह रहा है सब कि एस.डी.ओ. ही बाहर आएं।" बाहर से लौटे अधिकारी ने सूचना दी।

"तो प्रोबलम क्या है? बाहर चलकर कह दिया जाए कि प्रशासन जनता के साथ है और सभी आवश्यक कार्रवाइयां त्वरित ढंग से की जाएंगी।" मंधाता मिश्र बोले।

"क्या कहते हैं आप लोग?" दशरथ बाबू ने अपने कमरे में जमा अन्य लोगों से पूछा।

"कुछ करना तो है ही न आखिर!" कहा किसी ने।

"ठीक ही है, चला जाए।" कुर्सी को अपनत्व-भरी आंखों से देखते हुए, उस पर रखे तौलिए को ठीक जगह पर करते हुए, टेबुल के शीशे पर हाथ फेरते हुए दशरथ प्रसाद उठे और बाहर की ओर चल पड़े।

बाहर आकर भीड़ को नमस्कार करते हैं दशरथ प्रसाद और चीते की तरह झपटती है दमयंती। आंखें फाड़े हुए देखते हैं दयाशंकर। एस.डी.ओ. के साथ ही जमीन पर लुढ़क गई है वह। सिपाही टूटते हैं उसकी ओर और सिपाहियों की ओर टूटती हैं अगली कतारों में बैठी औरतें। मंधाता मिश्र भाग रहे हैं ऑफिस के अंदर। दयाशंकर भी भाग रहे हैं। असंख्य गोलियां पीछा कर रही हैं उनका। उन्हें बचना है किसी तरह। "आह रे माई...आह रे बाप..." दयाशंकर को खुद नहीं पता, कौन बोल रहा है उनके अंदर से।

दमयंती भी भाग रही है। माथे से बहता खून नाम ही नहीं ले रहा रुकने का। साथ-साथ भागते मानिक को चिंता होने लगी है।

"रुको, ठीक से बांध देते हैं पट्टीया।"

दमयंती रुक गई है। कमजोरी महसूस हो रही है पैरों में। पेड़ के तने का सहारा लेकर बैठ गई है। उसका सिर घूम रहा है।

"अब डर नहीं है पुलिस का।" अपने गमछे को उसके माथे में लपेट दिया है मानिक ने, "धनंजयजी के यहां पहुंचकर डॉक्टर को दिखा लिया जाएगा।"

"पता नहीं, और लोगों का क्या हुआ?" अपराध-बोध से भरी हुई है दमयंती। उसी की योजना थी यह। एस.डी.ओ. को कब्जे में कर लेंगे और अपनी मांगें मनवाएंगे। एस.डी.ओ. निकल भागा था उसकी चंगुल से और गोलियां चलने लगी थीं। भरोसा और उसकी औरत उसी की बगल में बैठे हुए थे। पता नहीं, उनका क्या हुआ! लोग कहेंगे, बाप को तो खा ही गई थी, भाई-भौजाई को भी खा गई।

चुपचाप चली जा रही है मानिक के पीछे-पीछे दमयंती।

"दयाशंकर बाबा दिखे थे कहीं?" पूछा।

"देखने का फुर्सत था?" मानिक बोला, "हम तो तुमको निकालने के चक्कर में रह गए।"

"बाबूजी का किरिया-करम भी..." रो पड़ी है दमयंती।

"रोने-धोने का टाइम है अब?" मानिक इंतजार करने लगा है उसके चुप होने का।

कम से कम एक मील जमीन और तय करनी होगी। तब एक साथी के यहां से साइकिल लेगा और जल्दी से जल्दी धनंजयजी के पास पहुंचेगा। धनंजयजी ही बताएंगे, आगे क्या करना है।

"तुम कहो तो इनसे, अभी तुरंत निकल जाएं यहां से।" हांफते-कांपते हुए मंधाता मिश्र भी घर पहुंच गए हैं और दयाशंकर के ऊपर बरस पड़े हैं, "हम मुंह नहीं देखना चाहते हैं इस आदमी का।"

मुन्नी चुपचाप खड़ी है पानी का जग लिए हुए।

"पता है तुमको, आज क्या किया है इस आदमी ने? आज इसने जान ले ली थी हमारी...कहो कि जाए यहां से..."

"सब तो आप ही का आग लगाया हुआ है।" मुन्नी सुबकने लगी है जग टेबुल

पर रखकर, "पहले हमको बेइज्जत किए, अब हमारे भाई को बेइज्जत कर रहे हैं हमारे ही सामने!"

"उठाएं का डंडा?....सब नेटुआघाघर पसारना छोड़ा देंगे।"

"ज्यादा बढ़-बढ़कर मत बोलिए, समझे!" दयाशंकर बोले, "बिना बताए पहुंच गए दलाली करने और..."

"आप तो गए थे न एक लाश का मुआवजा मांगने? पता है, कितनी लाशें गिरवा आए?"

"भइया का बुद्धि तो भ्रष्ट हो ही गया है एकदम से...लेकिन आप ही कहां रोके कभी?" मुन्नी रोए जा रही है।

"पूछो, रोके थे कि नहीं?" मंधाता मिश्र मुस्कराए कहकर, "जइसा बहिन, वइसा भाई।"

दयाशंकर ने मुन्नी को इशारा किया—बहस मत करो।

"दमयंतिया ने फिर छल किया है, पाहुन।" दयाशंकर बोले।

"हम तो बोले ही हैं आपको कि धनंजयजीउवा का पॉलिटिक्स अलग है—जो घर जारै आपना, चले हमारे साथ...उससे दूर ही रहना है। दमयंतिया उसी की चेलिन हो गई है।"

"छापा-वापा भी डालेगी पुलिस?"

"यही नेतागिरी करने चले हैं।" ठठाकर हँसे हैं मंधाता मिश्र, "छापा मारने का टाइम है प्रशासन को? आठ लाशें गिरी हैं; सैकड़ों लोग घायल हैं; उनका इंतजाम करेगा कि छापा मरवाएगा।"

"जल्दी से गांव भेजिए किसी को। माई मर जाएगी रोते-रोते।" मुन्नी ठुनकी है।

इस परिवार के लिए अंत हो गया है त्रासदी का। दयाशंकर कहेंगे, बहुत भूख लगी है, बूचीया; और पूड़ी-भुंजिया बनाने में जुट जाएगी मुन्नी।

दमयंती का परिवार तबाह हो गया है। भरोसाबो कुचलकर मर गई थी भगदड़ में। भरोसा के दोनों पैरों में गोली लगी थी और कराह रहा था अस्पताल में पड़ा हुआ। चरित्तर के आधे से अधिक दांत गिर गए थे धक्का-मुक्की में। अपना फूला हुआ जबड़ा लिए बचे हुए लोगों के साथ वापस आ गए थे कुंवरपुर।

कुंवरपुर दहशतजदा था। दमयंती के दुस्साहस की खबर पहले ही पहुंच गई थी अलग-अलग स्रोतों से। जोगी सिंह का परिवार अपराह्न के चार बजने के साथ ही अपने घर में बंद हो गया था। अजीब-सी खामोशी छाई हुई थी गांव में। लोग ऐसा कर रहे थे मानो कुछ सुना ही नहीं हो पिछले दो दिनों के घटना-क्रम के बारे में। बच्चे कुछ बोलना चाहते तो डांट देते उन्हें।

"देख लिए न हीरो बनने का नतीजा?" छबीला सिंह फुसफुसाए कन्हैया सिंह को देखकर, "मुंह से बोली नहीं निकल रही किसी के। और हीरो दोपहर से ही छत पर बैठे हुए हैं!"

"अभी तो देखिए न,, नारद सिंहवा एक और धक्का मारेगा इन लोगों को। दुकान जलाए हैं उसका! छोड़ेगा?" कन्हैया सिंह ने निश्चिंत दिखने की कोशिश करते हुए कहा।

"नारद सिंह को अपना पाहुन काहे नहीं बना लेता है जी ई सुरूतवाला सब?" रंगू सिंह उखड़ गए हैं, "चोर-डकैत से कभी इज्जत बचा है किसी का कि अब बचेगा?"

"ई तो आप ई कुक्कुरो से पूछ लीजिए तो बता देगा कि किसका इज्जत बचा हुआ है—आपका कि नारद सिंह का?"

"नारद सिंह बचाएगा, दमयंतिया चोट करेगी—तब?"

"तो जो बचाएगा, जाइए उसके पास। जाइए थाना में तो एक हजार हगा लेगा एफआईआर करने का।"

"भ्रष्ट और सिद्धांतहीन नेताओं की जयजयकार करने का खामियाजा भुगत रहे हैं हम लोग।" दिनेश सिंह ने हस्तक्षेप करते हुआ कहा।

दशरथ प्रसाद को डर था जिस बात का, वही हुआ। बदली हो गई सचिवालय में। सरकार खासी नाराज थी उनके टैक्टलेसनेस से।

दयाशंकर का बयान छपा है अखबार में। न्यायिक जांच और हताहतों के लिए उचित मुआवजे की मांग की है। प्रशासन पर लाशें गायब कर देने का आरोप लगाया है। गोसांई पांड़े ले आए हैं अखबार और पढ़ा रहे हैं सबको।

"तुम साफ-साफ इसको कहती काहे नहीं, माई?" सुशीला नाराज है रामज्ञान पांड़ेबो से, "अपना औरत-बच्चा तो पटना छोड़ आया है और तुम लोगों का जान मरवाने में लगा हुआ है!"

"और हल्ला करो कि सब सुन लें।" रामज्ञान पांड़ेबो झुंझलाईं।

"हमी हल्ला कर रहे हैं? अखबार में उसका नाम छपा है और हम हल्ला कर रहे हैं। तुम देख लेना, विमला की तरह चेतना से भी पिंड छुड़ाना चाहता है।" सुशीला बोली और दोनों कानों पर हथेलियां जमाए 'शिव-उमा, शिव-उमा' करती वहां से भागीं रामज्ञान पांड़ेबो।

"तुम्हारे लिए ही कह रहे हैं, माताराम!" आंखों में आंसू आ गए हैं सुशीला के, "अपने बबुआ के लिए चाभीवाला खिलौना खरीद सकता है और तुम्हारे लिए एगो साड़ी खरीदने में जान जाता है उसका। बहिन सबको तीज नहीं भिजवा सकता?"

"तुम लोग को क्या कमी है? भगवान यही तो दया किए हैं कि बेटी सब खुश है।" विमला की याद से छूटने की कोशिश करने लगी हैं रामज्ञान पांड़ेबो। शारदा, सुशीला और मुन्नी की खुशहाली के बारे में सोचने लगी हैं।

तीनो बेटियों में सुशीला की माली हालत ही थोड़ी खराब थी। पर ईश्वर ने उसकी भी सुन ली थी। बशिष्ठ चौबे कई सालों से जिस संस्कृत स्कूल में, बिना वेतन के ही पढ़ा रहे थे, सरकारी मान्यता मिल गई थी उसे और अपने गांव में रहते हुए ही महीना

उठाने लगे थे। अब अपने जैसे कुछ दूसरे किस्मतवालों के साथ मिलकर केस ठोंक दिया था हाई कोर्ट में। पिछले वर्षों का बकाया वेतन मांग रहे थे। वकील ने भरोसा दिलाया था कि कुछ देर हो तो हो, वह भी दिलाकर ही मानेगा उन लोगों को।

"आज तक इनका नियम है कि जैसे ही महीना मिलता है, ले आकर बाबूजी को दे देते हैं।" इतरा भी रही है और क्षुब्ध भी है सुशीला। पैरों में तेल मेराने बैठ गई है रामज्ञान पांड़ेबो के, "दयासंकरा कभी बताता है तुमको, कितने रुपये का धान बेचा, चाहे कितना मनी मिला?"

"झोंटा नहीं न पेरता है?" पैरों का दर्द निकल रहा है, अच्छा लग रहा है। पहले चिरईबो लगा जाती थी तेल, अब कहने पर भी दस गो बहाना करती है।

"अपनी ग्रेजुएट बीबीजी को कहता है कि बड़का नेता बन जाएंगे तो लाख-दो लाख एक महीना में पीटेंगे। पूछ लो चेतना से।" सुशीला हँसने लगी है एक ग्रेजुएट औरत की बुड़बकाही पर, "पता नहीं, पढ़कर बी.ए.पास की है कि चोरी करके?"

"ई भी कम बउराहिन नहीं है।" रामज्ञान पांड़ेबो को अच्छा लगा कि बतकही दूसरी दिशा पकड़ रही है, "मुन्नी के यहां जाने का जिद कर रही है।"

"हम जिद कर रहे हैं कि दिदिया बुला रही है?" चेतना गुस्साई।

"वहां क्या करेगी रे?" सुशीला ने पूछा।

"दूसरका होने वाला है मुन्नी को।" रामज्ञान पांड़ेबो ने बताया।

"मंधाता मिसिर सनक गए हैं क्या माई? साले-साल लइका होता है कहीं?"

"मुन्नी कह रही थी, ये भी कुछ दिन रह जाएगी शहर में तो लूर-लच्छन सीख जाएगी। ओढ़ना-पहिरना, बोलना-बतियाना...कह रही थी सुबिस्ता होगा बियाह-सादी में!"

सुशीला जाहिर नहीं होने देना चाहती, पर मन ही मन उसे जलन होती है मुन्नी की समृद्धि के बारे में सुन-सुनकर। मन नहीं मानना चाहता कि गैस के चूल्हे पर खाना बनाती है मुन्नी; डाइनिंग टेबुल पर खाती है; जीप में बैठकर सिनेमा देखने जाती है। मंधाता मिश्र उसके यहा भी पहुंच जाते थे जीप लेकर। वशिष्ठ चौबे बहुत प्रभावित रहते उनसे। उजबुक जैसा लगने लगते उनके सामने। हाई कोर्ट के अपने केस के बारे में पूछने लगते। सुशीला को अच्छा नहीं लगता। वकील को दे ही रहे थे पैसा तो जिस-तिस के सामने दुखड़ा क्या रोना था!

"पहिलकी को काहे नहीं बुला लेते सेवा-टहल के लिए?" उसकी जलन ने कहा।

और चिढ़ गई रामज्ञान पांड़ेबो—"अब तुम भी बउराहिन जइसा बतियाने लगीं।"

शाम उतर आई थी आंगन में। जगनाथ नहीं पहुंचा था अभी तक। पता नहीं, था भी गांव पर कि बिक्रमगंज में ही अस्पताल में पड़ा हुआ था! रामज्ञान पांड़ेबो को अब भैंस दुहवाने के लिए निहोरा करना पड़ेगा किसी का। जाकर बाहरवाली चौखट पर बैठ गई हैं।

चूड़ामनबो दिख गई है अपने छत की मुंडेर से लटकी हुई। झेंप-सी गई है

रामज्ञान पांड़ेबो को अपनी ओर देखता देखकर। दूसरी ओर देखने लगी है।

"पता नहीं, दयाशंकर से कैसा बैर है बिहूनी को!" रामज्ञान पांड़ेबो जब भी देखती हैं उसे, अशुभ की आशंका से भर जाती हैं, "जानने के फेर में लगी होगी कि बिक्रमगंज में जो हुआ, दयाशंकर उसमें फंसेंगे कि नहीं। जाके घिघियाएगी नौलखवा के आगे—कुछ कीजिए, पाहुन।"

"इस गांव का पंडित सब भी तो मौगड़ा हो गया है न।" सुशीला बिफर उठी है, "कोई दूसरा गांव होता तो टांग तोड़ देता कोइरी राम का।"

"कैसे तोड़ देगा? सरकार पीठ पर है उसके।"

"सरकार के डर से बेइज्जती बरदाश्त कर लेगा आदमी?"

"अरे बउराहिन, चूड़ामनबो कहे तब तो कि बेइज्जत कर रहा है हमको। ऊ बिहूनी तो कह रही है कि पाहुन नहीं होते तो हमारा गांव छोड़ा देता दयासंकरा।"

"उसके कहने से क्या होगा!"

"अच्छा, नहीं होगा, तो जाने दो। राम-राम कहो...कलिजुग केवल नाम अधारा।"

"कलिजुग केवल दाम अधारा।" गोसांई पांड़े ने रामज्ञान पांड़ेबो की बात सुन ली थी और ठहर गए थे अपने इस मंतव्य के साथ।

"ई कंडक्टर साहेब का तो एगो अलगे हिसाब रहता है।" रामज्ञान पांड़ेबो खुश हो गई हैं कि भैंस दुहा जाएगी अब।

"दाम अधारा कैसे है, भइया?" सुशीला बोली।

"पूछ रही है, कैसे है? पाहुन का नौकरीया लग गया तो तुम्हारा प्यार बढ़ गया कि नहीं?"

"ई मत कहिए।"

"कहती है, ई मत कहिए! और हमारा कहनाम है कि यही सच है।" गोसांई पांड़े ने मोर्चा सम्हाल लिया है, "जानती हो, हमारा कमाई-धमाई शुरू नहीं हुआ था तो हमको कैसे बुलाते थे बाबूजी? कहते थे—'अरे गोसंइया...' और कमाने लगे तो कहने लगे, गोसांई बचवा हो...और कहती है, ई बात नहीं है।"

"सब कोई एके जइसा नहीं होता, हम ई कह रहे हैं।" सुशीला बोली।

"कइसे नहीं है एके जइसा?" आवाज नीची कर ली है गोसांई पांड़े ने, "चूड़ामन भइअवाबो को तो दूस रहा है आदमी, देवता काका की लइकिया काहे लपेटाई हुई है सुशील सिंहवा से? इसीलिए न कि खरची चला रहा है दिल्ली में?"

"सचमुच लपेटाई हुई है?"

"अभी तीन-चार दिन पहले ही न देखे, दोनों साथे-साथे बस पकड़ा बिक्रमगंज से।"

"देवता पांड़े देख रहे हैं चुपचाप?"

"देख रहे हैं, चाहे नहीं देख रहे, तुमको क्या मतलब?" गुस्सा आ गया है रामज्ञान पांड़ेबो को।

"हम तो कह देते हैं, गोसांई भइया, कि इस गांव का पंडित सब मौगड़ा हो गया है।" रसास्वादन में बाधा पड़ी तो नैतिकता की छड़ी चला दी सुशीला ने।

चुपचाप भैंस दुहने में लग गए हैं गोसांई पांडे।

"वासुदेव सिंहवा रो रहा है कि दहेजवो का पइसा गया हाथ से।" भैंस दुहते हुए ही कहा और जिसने भी सुना, मुस्करा दिया।

"लईकिया सब और भी सनक जाती हैं पढ़कर।" सुशीला ने कहा।

"थोड़ा-सा भी सनकती है तो बहुत ज्यादा लगता है।" चेतना बोली।

रामज्ञान पांड़ेबो ने दोनों को देखा जलती हुई निगाहों से, तो भीतर चली गईं।

"दया भइअवा कुछ खबर भेजवाया कि नहीं?" गोसांई पांड़े ने पूछा। "लेकिन पौलटिक्स करना आ गया जवान को।" कोई जवाब नहीं आया तो मानो अपने-आप से बोले।

"ई पौलटिस-फौलटिस का कोई फायदा है, बचवा?"

"अब ई तो, चाची, अपने-अपने समझ का बात है।" भैस दूह लेने के बाद कमर सीधी करते हुए बोले।

जगजीत सिंह की गाई एक और गजल बहुत लोकप्रिय हो गई थी इन दिनों। कुंवरपुर के नवहे भी गुनगुना रहे थे—'सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा...।' देवानंद साहब इसी तथ्य को 'जॉनी मेरा नाम' फिल्म में कुछ इस तरह प्रतिपादित कर चुके थे कि 'अरे मैं वो परवाना हूं, पत्थर को मोम कर दूं...।' पर जगजीत सिंह की गाई गजल में जो तत्त्व थे श्रद्धा और समर्पण के, बात ही अलग थी उनकी।

अलग-अलग लोगों के अलग-अलग पत्थर थे कुंवरपुर में, जिन्हें देवता बनाया जाना था। लेकिन छबीला सिंह के होनहार बिरवा विनय सिंह कभी-कभी कहते भी कि "आगे वाली लाइन तो गजब की है—'इतना मत चाहो उसे वो बेवफा हो जाएगा' तो शक नहीं होता सुनने वालों को कि एक पत्थर विनय सिंह को भी भा गया था, जिसे देवता से भी कुछ बहुत बड़ा बना देना चाहते थे वे। धनजी पांड़े की बेटी तनु ने पुजारी बना दिया था विनय सिंह को।

धनजी पांड़ेबो ने सुना तो मुंह खुला का खुला रह गया।

कुंवरपुर में रिवाज था अपनी बेटियों के बारे में ऐसी खबर सुनकर मुंह खुला का खुला छोड़ देने का। कुंवरपुर में यह मानते चले जाने का रिवाज था कि मन जवान नहीं होता जवान होती लड़कियों का, वे बस यूं ही फूल-फाल जाती हैं जहां-तहां से। उनके बड़े होने का एकमात्र मतलब यह होता कि बर्तन अगर सुबह को माई मांजती थी तो शाम को बेटी मांज दे; माई अगर कोई लेवा-लेदरा सी रही हो तो बेटी सूई में धागा लगा दे; घर में आई नई भौजाई साथ में सिलाई मशीन लाई हो तो काटना-सीना सीख ले; बाप या भाई खाना खाने आएं तो पीढ़ा जमाकर उसके आगे की जमीन लीप दें; पंखा लेकर मक्खियां हुलकाती रहे उनके खा लेने तक; व्यक्तित्व को निखारने का

मन हो तो शादी-ब्याह के नए गाने सीख लें; मन फैलना ही चाहता हो तो साग खोंट आएं, पोखरा नहा आएं; मन उड़ना चाहता हो तो तीती-तीती खेल लें या झूला झूल लें। कुंवरपुरवाले 'बचीया' या 'नन्हकी' कहते थे अपनी बेटियों को और मानते थे कि भले ही सीता मइया के मन में प्यार का अंकुर फूट सकता है भगवान श्रीराम को देखकर, उनकी बचीयों और नन्हकीयों के मन में ऐसा कुछ भी होने की कोई गुंजाइश नहीं थी। सो उन्हें पता चलता किसी ऐसे अंकुर के फूटे होने का तो खुला का खुला रह जाता उनका मुंह।

वैसे ऐसे खुला रह गए मुंहों को देखकर मुंह ढांपकर हँसने का भी रिवाज था कुंवरपुर में। पिताओं और मांओं के जानने के बहुत पहले से ही जानते होते बहुत-से लोग कि खेल चालू था।

"आपको भी कभी कोई शक नहीं हुआ, दयाशंकरजी?" धनजी पांड़ेबो फैसला नहीं कर पा रही थीं कि कड़ाही में खदकता तेल किसके मुंह पर उलट दें। अपने कि धनजी पांड़े के कि दयाशंकर के कि...तनु का झोंटा तो पेर ही चुकी थीं, पर अकेले उसी का दोष थोड़े ही था!

"भाई से द्रोह का बदला ले रहे हैं भगवान।" शिवजी पांड़े चिकर रहे थे, "भाई को बेइज्जत करने के लिए दुश्मन को घर में घुसाए हुए थी छीनरी, लल्लो-चप्पो कर रही थी दयासंकरा का।"

"सबसे बड़ा सुरूतवाला दयासंकरा है।" विभूति पांड़े को भी मौका मिल गया है, "जिस छीपा में खाता है, छेद करता है। दुमुंहा सांप है।"

गणपति पांड़े ने सुना तो उखड़ गए—"जो साला दयाशंकर को दोसँ दे रहा है, बताए न कि कलकला रहा हो किसी का तो कौन कहेगा कि मीठ नहीं लगता हमको?"

"कलकला रहा है तो लऊर धांस देंगे, बता देते हैं। किसी के साहेबाइन होने का फेर नहीं है हमको।" शिवजी पांड़े मजा ले रहे थे।

कुंवरपुर के बालक, जो विनय को 'स्वामीजी' श्रेणी का जीव मानते थे, बाग-बाग हुए जा रहे हैं उनके कारनामों को देख-सुनकर—'धन्न हैं स्वामीजी!'

स्वामीजी खिन्न हैं उनके उच्छृंखल और सतही विचारों से। बड़ी गझिन पीड़ा में डूब जाते हैं—"जिस्म की बात नहीं है, उनके दिल तक जाना है।" मना करते हैं उन्हें ओछे बोल छोड़ने से—"किसी को दुःख पहुंचेगा, यह नहीं समझना चाहिए आप लोगों को?"

एक गंभीर उलझन सामने आ खड़ी हुई है दयाशंकर के। धनजी पांड़ेबो और छबीला सिंह दोनों ही उन्हें ही दोषी मान रहे थे। उन्हीं के कहने पर तनु को विनय के साथ पढ़ने बैठने देने के लिए राजी हुई थीं धनजी पांड़ेबो। छबीला सिंह कह रहे थे कि पुरुष और प्रकृति का शाश्वत सत्य मालूम ही था तो क्या जरूरत थी दोनों में मेलजोल कराने की?

दयाशंकर डरे हुए भी थे। रह-रहकर तनु के ऊपर पिल पड़ती थीं धनजीबो। डर जाते कि डरकर उगलना न शुरू कर दे तनु।

''छोड़िए न भौजी, कम उम्र में नहीं बुझाता आदमी को।'' धनजी पांड़ेबो के आगे गिड़गिड़ाए, ''ज्यादा डराने-धमकाने से खराब असर पड़ेगा मन पर।''

''देखिए न, दिमाग ही नहीं काम कर रहा हमारा तो।'' धनजीबो को लाज भी लग रही है तनु को दोष देने में। खुद वही क्या कर रही थीं? कहीं उनकी गलतियों का ही तो परिणाम नहीं है यह!

छबीला सिंह, लेकिन, इतनी आसानी से दोष्मुक्त कर देने को तैयार नहीं हैं दयाशंकर को। गांववालों को मौका मिल गया था उनका मजाक उड़ाने का। कह रहे थे छत्री सबके बेटा को पढ़ाने-लिखाने का फायदा नहीं है। पंड़इया सब दहेज नहीं लेने देगा।

कन्हैया सिंह जैसे लोग एक अलग कारण से भी खुश थे। छबीला सिंह की थोड़ा-थोड़ा दोनों तरफ रहने की पॉलिटिक्स का नतीजा था यह। 'ए कक्कुर तूं दूबर काहे, त दू घर के अइला-गइला से।' बोल छोड़ते चल रहे थे कन्हैया सिंह।

''चल्हांको फूआ बनते थे। कहते थे कि महेंदर को हमी बिगाड़ दिए हैं। अब बताए न कि बाबू विनय सिंह को कौन बिगाड़ दिया?'' कलक्टर सिंह चिढ़ा देते तिलंगी सिंह को।

तिलंगी सिंह उखड़ जाते—''मरद का बच्चा है, मरद का। मन किया तो जाके लांघ आया। तुम्हारे जन्मतुआ लोग जइसा लुंगी में पेसाब नहीं करता।''

''और भजन गा रहा है, सो?''

''घोड़ी टिटकारने से भागेगी तो टिटकारेगा नहीं?'' तिलंगी सिंह एक से बढ़कर एक बातें करने लगते विनय सिंह की मर्दानगी सिद्ध करने के लिए। छबीला सिंह के मना करने का भी कोई असर नहीं होता।

शिवजी पांड़े और कलक्टर सिंह दो सबसे अधिक मजा लेने वाले शख्स थे विनय-तनु प्रसंग का। जहां भी बैठते, इसी प्रसंग का कोई पन्ना खोल देते।

बालचन पांड़े दुःखी थे।

''पातकी हो गया है सिवजीउवा।'' बालचनबो से कहा।

''हो गया है तो हो गया है। आपको किसी का पाटी लेने का जरूरत नहीं है।''

''पाटी ले रहे हैं, रे छीनार!'' अपनी मैली धोती में लटकते बड़े से फोते को सम्हालते हुए चुक्का-मुक्का बैठ गए बालचन पांड़े—''बेटी-नातिन को गारी देगा कोई तो चुप लगा जाएगा आदमी?''

''धनजीउवाबो कुछ कह रही है आपसे?''

''धनजीउवाबो बदमास है तो हम भी बन जाएं?''

''आप दूनो ओर से जाइएगा।'' बालचनबो झुंझलाईं और चलने को हुई वहां से।

''दू गो रोटी सेंक दो हमारे लिए, गोरस-रोटी खाएंगे।'' 'वह नहीं मानती तो यह मानो' वाले जिद्दी अंदाज में कहा बालचन पांड़े ने।

''अब अकेले एक आदमी के लिए रोटी नहीं बनेगा अलग से। भात बन रहा है, गोरस-भात खा लीजिएगा।''

"ई काहे नहीं कहती कि डर लगता है सिवजीउवाबो से?"

"बुढ़ारी में चटोर हो जाने पर कवनोवो के साथ निबाह नहीं होगा।"

"दिन-भर बनिहार जइसा खटते हैं, दू गो रोटी खा लेंगे तो चटोर हो जाएंगे?"

"हमारा कपार मत खाइए।" चौकी का सहारा लेकर खड़ी हो गई हैं बालचनबो। पीठ की अकड़न के सामान्य हो जाने का इंतजार करने लगी हैं।

"हमारे खाने-पीने पर रोक लगाएगा सिवजीउवा का परिवार तो तिलंगी सिंहवा जइसा अलगा हो जाएंगे हम भी।"

बिना कोई जवाब दिए हुए खंडी की ओर बढ़ गई हैं बालचनबो।

"ए बाबा, देखिए, पड़िया तुरा रही है।" राघव पांड़े का बेटा चीखा एकदम कान के पास तो बालचान पांड़े का ध्यान हटा पत्नी की बातों पर से।

"सब पड़ीए का एके हाल है, बाबा का करेंगे।" हाथ में पगहा लिए हुए शिवजी पांड़े दौड़ पड़े हैं पाड़ी के पीछे-पीछे—'बूझे सो जाने' वाले अंदाज में एक बोल छोड़कर।

छबीला सिंह को बर्दाश्त नहीं होते ये बोल और विनय सिंह की दीवानगी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। आंखों से झर-झर आंसू बहने लगते हैं डांटने-बोलने पर।

"हमको तो बड़ा डर लग रहा है, मास्साब!" अपने मन का डर दिनेश सिंह के सामने रखा छबीला सिंह ने, "कभी-कभी लगता है कि उदय पंड़इया तो कुछ टोना-टोटका नहीं कर रहा?"

छबीला सिंह के इस डर का कारण यह था कि पिछले एक महीने के दौरान ही गांव के तीन लड़कों का माथा गरम हो चुका था। दूधनाथ सिंह के छोटे बेटे आमोद सिंह को भगवती दिखाई देने लगी थी अपनी नवब्याहता पत्नी में। बेचारी मैके भाग गई थी डरकर। संकटा सिंह का बड़का कूड़ा-कर्कट बटोरता रहता था दिन-भर और पूछने पर कहता, जड़-चेतन सब में प्राण है, इसलिए रक्षा कर रहा है उनकी। और सबसे दुःखद घटना यह थी कि सिवचन राम का होनहार बेटा प्रदीप उठा एक सुबह तो भजन गाते हुए उठा और भजन ही गाए जा रहा था। सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया था सिवचन के। बाहर रखकर पढ़ाया-लिखाया था कि...बुरा हाल था रोते-कलपते सिवचन का।

अब विनय सिंह कह रहे थे—देह नहीं, आत्मा से मिलन की चाह थी उन्हें!

"बेकार डर रहे हैं आप। आपको मालूम है, अमेरिका में कितना कॉमन है यह प्रोबलेम? भइया बता रहे थे कि हर मुहल्ले में मनोविश्लेषकों और मनोचिकित्सकों की दुकानें खुली हुई हैं। हम लोग अपने यहां हौआ बना देते हैं इन चीजों को।"

"तो बताइए न, क्या करें?"

"कुछ समय के लिए विनय को हटा दीजिए यहां से। दीपनारायण सिंह के यहां भेज दीजिए। सब ठीक हो जाएगा।"

"हम भी तो यही कह रहे थे।" दयाशंकर भी आ गए थे उन दोनों को देखकर।

"आप तो बोलिए ही मत। सब आपका किया हुआ है।" छबीला सिंह भड़क गए हैं।

"यही सब करते हैं हम?" बचाव की मुद्रा में हैं दयाशंकर।

"नहीं, आप कहां करते हैं कुछ! बबुआ हैं आप तो।"

"ठीक है भाई, नहीं बोलेंगे हम।" दयाशंकर ने कान पकड़ लिए हैं दोनों।

"विनय को हटा दिया जाए, छबीला भाई।" दिनेश सिंह ने मुस्कराते हुए कहा, "और दयाशंकर पर कुछ फाइन लगा दिया जाए।"

"चलिए, अब चिंता छोड़िए। विनय को हटा दिया गया है गांव से।" धनजीबो को खबर दी दयाशंकर ने।

उदय पांड़े को बताया गया विनय सिंह की समस्या के बारे में तो बोले, "कुछ नहीं है, मीरा भाव में आ गया है। ध्यान करेगा तो कृष्ण भाव में आ जाएगा।"

गांव के लोग डरने लगे हैं उदय पांड़े से। बलराम सिंह का कुटिया पर जाना छुड़ा दिया था नरेश सिंह ने और खुद एक अजीब-से केस में फंसकर हाजत में पहुंच गए थे। इसके पहले दहेज लेने के लिए किसी के हाजत में पहुचने की बात नहीं सुनी थी कुंवरपुर ने। कुंवरपुर को तो यह भी नहीं मालूम था कि कोई कानून था, जो बरजता था दहेज लेने-देने से।

"ई एकरी महतारी का...कइसा-कइसा कानून बनाए हुए है जी?" पुलिस पार्टी ले जाने लगी बूढ़े नरेश सिंह को तो सकते में आ गए थे लोग।

छत पर बने कमरे में बैठकर हारमोनियम पर सुर-साधना में लवलीन थे बलराम सिंह—"कब की चूक हमारी, हमार पीया...।" पत्नी आई रोती हुई तो दौड़े नीचे। पर पुलिस पार्टी ने कुछ भी सुनने से इंकार कर दिया था। कहा—"थाना पहुंचिए, वहीं बात होगा। ढेर टंडेली बतिआइएगा तो आपके डांड़ में भी रस्सा लग जाएगा!"

तय हुआ, बलराम सिंह नहीं जाएंगे गुनी। नरेश सिंह के एक साढ़ू आए हुए थे, जो लेक्चरर थे एक कॉलेज में, वही जाएंगे लल्लन सिंह के साथ।

थानेदार की कुर्सी पर बैठे काले-कलूटे आदमी ने इंकार कर दिया था कुछ भी सुनने से। निराश-से बाहर चले आए थे—दोनों और सोच रहे थे, क्या किया जाए।

"भागिए मत, महाराज! बतिया लीजिए।" बड़ी-सी तोंद और ऊंची डील-डौलवाला एक सिपाही उछाल गया यह हिदायत उनकी बगल से गुजरते हुए, "पासवानजीउवा दिल का दरियाव आदमी है।"

दोनों उसी की ओर लपके।

"ई तो आप मानते हैं न, सिपाहीजी, कि झूठ-मूठ का फंसाया गया है बेचारे को?"

"ई तो केस बनाने पर न निर्भर है न जी। थाना बिगाड़ देगा केस तो सम्हरेगा आप लोग से?"

दोनों ही सकपका गए इस जवाब से।

"आप लोग जात-भाई हैं, इसलिए समझा रहे हैं...ई साला नान्ह जात सब तो चहबे करेगा कि लटपटा जाए दूनो पार्टी। दिन-रात इसी फेर में रह रहा है। बेसी बुद्धि

लगाइएगा तो गड़बड़ाएगा काम। जोंक को निमक चटाकर मारा जाता है। भाग मनाइए कि ईमानदार नहीं है। नान्ह सब ईमानदार हो जाता तो अक-बक बंद हो जाता साले बड़कू लोग का। बाकी ई सरवा सबका गाड़ी छूट गया है, उसी को पकड़ने के फेर में है। और तेजी में है।" सिपाही ने उन्हें जमीनी सच्चाइयों से रू-ब-रू कराया, "लल्लनजी तो जनबे करते हैं सब, तबो जहुवाए हुए हैं।"

"सुना न जाए! जहुवाए हुए हम नहीं हैं। लेकिन थोड़ा कम करवाया जाए। अब साले पासवान-फासवान से हम का बतियाएं।" लल्लन सिंह बोले।

"अब ईहो टेढ़ी छोड़ना होगा, ए बबुआन! साली कुर्सी भी एगो चीजे है।" सिपाही का मन रम गया है बतकही में। पीपल के पेड़ के नीचे बने पक्के चबूतरे पर जमा लिया है आसन—"और हम कह रहे हैं कि साले बड़का लोग नन्हजतिआंव नहीं करते तो नान्ह सबका हूब था कि ऊपर आ जाता? ई सारघेंटी लोग तो अपने इतना घिना दिए कि हौसला बुलंद हो गया ई सबका।"

"ई साला भोट का राजनीति भी न कुफुत लिए हुए है जी! पहले सोचता था आदमी कि चलो, साले-साल बिया रहा है सब तो बर-बनिहार मिलने में सुबिस्ता होंगा और ई साला सबका भोट बढ़ता चला गया।" लल्लन सिंह बोले।

"भोट तो बढ़िये गया, बाकी बड़का लोग अपना भैलू भी घटा लिए।" सिपाहीजी ने चारों ओर देख-ताककर अवाज नीची करते हुए कहा, "आपको अपने ही डिपार्टमेंट का हाल हम बता रहे हैं, लोग अइसा न अपना गोटी लाल करने के कुकरम में लगे कि नौकरी का धरम भुला गए। ईहे नहीं बुझाया एकरी बहिन के...को कि समाज में अमन-चैन...और का कहते हैं कि कानून और सत्ता के आदेश का डरे नहीं रहेगा तो कोठी-बंगला पीटकर का होगा? हरमेसा कोठिए में नहीं न घुसे रहिएगा?"

नरेश सिंह के साढ़ू का मन ऊबने लगा है इस चर्चा से। इशारा किया लल्लन सिंह को कि काम की बात कर ली जाए।

"ठीक कहा गया।" लल्लन सिंह बोले, "ई साला दहेज-विरोधी कानून भी इन्हीं बकलंड लोगों का बनाया हुआ है। अपने ही लिए गड़हा खोदते रह गए सार लोग।"

"अब देखिए, हमारा नटई भी फंस जाएगा तो वही कहेंगे, जो आप कह रहे हैं, बाकी ईहो बात सही है कि दहेज के नाम पर लगता है, बेटीवाले का देह बेचवा देगा आदमी।" एक ऊंची बात कह दी सिपाहीजी ने।

"इस मामले में, सिपाहीजी, ऐसी कोई बात नहीं है। बदकिस्मती से एक बदमिजाज आदमी से पाला पड़ गया। उसको बेटी के ब्याह से ज्यादा फिक्र अपनी दबंगई की है। नहीं तो, हम लोग तो..."

"होता है भाई, ऐसा आदमी भी होता है। एगो हमारे ही गोतिया में थे, फेंकू सिंह, कि होने वाले दामाद राम पर ही गोजी छोड़ दें।" सिपाहीजी को हँसी आ गई है फेंकू सिंह को यादकर, "हाथ-गोड़ में रसरी बांधकर कमरा में बंद किया गया तो बेटी सबका बियाह पार लगा। दुनिया में हर किसिम का आदमी होता है!"

"नरेश सिंह बहुत सज्जन आदमी हैं। अब बुढ़ारी में ई दुर्गति...कुछ किया जाए..."

"हम तो कहिए रहे हैं कि चारा फेंकिए पासवानजीउवा के सामने...और अपने बतिआइए। ई साला पुलिस डिमार्टमेंट एतना हरामी डिपार्टमेंट है कि हमको रखिएगा बीच में तो सोचेगा, कमीशन खा लिया है बाबूसहेबवा। हां, लेन-देन-वाला मामला सलट जाए तो जरूर जोर लगाएंगे। और आपको बता देते हैं कि बड़का हरामी चीज है साला ईहो दुसाध का बेटा। पैसा खा लेगा तो टाइट कर देगा दूसरा पार्टी को। बहुत खेलाड़ी चीज है।"

"तो ठीक ही है, रखा जाए इसको...और ध्यान रखा जाएगा।" पचास का एक नोट नमस्कार की मुद्रा में जुड़ी हथेलियों के बीच फंसाकर बढ़ाया नरेश सिंह के साढ़ू ने, पर उनका हाथ झटक दिया सिपाही ने।

"सलाह देने का फीस लेंगे जात-भाई से? ऊहो जब अफतरा में पड़ा हुआ हो! हां, बेचारे छूट जाएं नरेश सिंह तो जो बुझाए, दे दीजिएगा।" कहा।

लॉक अप के लोहे के रॉडवाले दरवाजे से सटे थाने के मुख्य दरवाजे को एकटक देखते रहते थे नरेश सिंह। दस ही घंटों में मानो दस बरस जुड़ गए हों उम्र में। चेहरा सूख गया था। बेटों को नालायक बनाकर ईश्वर शायद बदला ले रहा था उनसे परिवार की उपेक्षा का!

मना कर रहे थे कि जब तिलकहरू आ गए थे दरवाजे पर, मोटर साइकिल के लिए ठेन पसारना ठीक नहीं है। पर अड़ गया छोटका। मोटर साइकिल का पैसा गिनिये पहले, तब तिलक चढ़ेगा। हो भी गया था एकदम बेकहल। लोग कह रहे थे, बटोहिया लख और कुंवरपुर के बीच नहरवाली सड़क पर होने वाली छीन-झपट की घटनाओं में छोटका का भी हाथ था। निहोरा बता गया था कि जवार में टेंशन था बार-बार होती छीन-झपट की घटनाओं के कारण। लोग प्लान बना रहे थे कि धावा बोलकर गट्टा उतार लें उचक्कों का। नरेश सिंह कांप जाते उस दिन की कल्पना कर।

"नारद सिंह, भइया, बिगाड़ रहे हैं लड़का सबका।" जोगी सिंह से कहा था।

जोगी सिंह पिनक गए थे—"बोलाने जाता है आपके चाहे हमारे बबुआ को?"

पिनकना जायज भी था उनका।

"ई सबको एक दिन डेरवा दो, बबुआ।" दयाशंकर से अपील की थी, "दो-चार आदमी से कहवा दो कि बटोहिया लख की ओर गया तो पकड़ा जाएगा।"

"पकड़ाने को तो पकड़ा ही जाएगा। लेकिन हम, समझ जाइए, कि दूर से ही सलाम करते हैं इन लोगों को।" निमनका बजाने में लग गए थे दयाशंकर, "अब तो हमारे ऊपर ही बोल छोड़ता है। महटिया जाते हैं हम।"

"देख रहे हो न तमाशा?" बलराम सिंह के ऊपर गरम हो गए थे नरेश सिंह, "बड़ा भाई ठीक रहता तो होता ई सब? पुलिस का रेड हुआ न, तो सब भुला जाएगा तबला ठोकना और..."

बलराम सिंह के अंदर झपताल का एक नया कायदा बज रहा था, सो उन्हें सुनाई ही नहीं दी थी अपने बाप की उद्विग्नता।

"जेल तो, कह रहे हैं, जाना ही पड़ेगा।" नरेश सिंह के साढ़ू आए हैं लॉक अप के दरवाजे के पास, "लेकिन दरोगाजी कह रहे हैं, केस खा जाएंगे।"

नरेश सिंह सख्तजान आदमी हैं, लेकिन भर आई हैं आंखें।

"ज्यादा सोचने से ही प्रोबलेम है। सब फेट-लाइन का खेल है।" पासवानजी को कहीं बाहर जाना था, पर डील पक्की हो जाने के बाद इतना आश्वासन देना जरूरी लगा जाने के पहले।

"काम हो गया है। ज्यादा दिन नहीं रहना पड़ेगा।" लल्लन सिंह फुसफुसाए।

नरेश सिंह—कितने दिन रहना पड़ेगा—अब सोच भी नहीं रहे थे इस बारे में।

"तो हम लोग चलते हैं अब?" लल्लन सिंह चलना चाह रहे हैं।

नरेश सिंह नहीं कहते कुछ। मुस्करा-भर देते हैं हल्के से।

सुधाकर पांड़े यह बात किसी को नहीं बता पाते कि उदय पांड़े की मनोदशा मानसिक रूप से बीमार आदमी की-सी लगने लगी है इन दिनों। किसी दिशाहीन वीराने में बिचरते-से लगते हैं उदय पांड़े। कभी-कभी उनका विदूषकीय अंदाज में कुछ कह देना अभी भी रोचक और अर्थवान भले लगता हो, सुधाकर पांड़े को विश्वास नहीं होता कि उनकी हरेक बात चेतना की उपस्थिति में ही कही गई होती है।

"कभी-कभी एकदम से कहीं डूब जाते हैं आप।" हिम्मत करके बोले एक दिन।

"उसी की अडूब नीलिमा में।" उदय पांड़े की आंखें ढलती शाम के आकाश में टहल रही थीं। एक नारंगी कोने पर ठहर गईं—"पता है, क्या है?"

वज्रासन की मुद्रा में बैठे हुए थे उदय पांड़े। बेतरतीब बढ़ी हुई दाढ़ी और बाल से ढंका चेहरा अवसन्न लग रहा था कुछ। सफेद लुंगी पर जमा चीकट इतना मोटा हो चुका था कि बस अनुमान ही लगाया जा सकता था कि कभी सफेद भी रही होगी लुंगी।

अचानक एक अजीब-सा चीत्कार निकला था उनके मुंह से। उछलकर खड़े हो गए थे वहां मौजूद तीनों जन। पीपल कोलाहल से भर गया था। सोए पक्षी जाग गए थे।

"पकड़े गए साले। भेद लेने आए थे।" उदय पांड़े ने कहा और हँसने लगे।

"कौन आए थे, प्रभुजी?" कांपती आवाज में पूछा चिरई ने।

"बैकुंठ, अमरावती, मणिद्वीप, कैलास, सब जगह बेचैनी फैली है। देखो, छुप गए लजाकर।" आकाश की ओर इशारा किया उन्होंने। नारंगी कोने पर स्याही उतर आई थी।

"हम लोगों को अकेला मत छोड़िए, प्रभु! बहुत डर लग रहा है हम लोगों को।" सुधाकर पांड़े के हाथ जुड़ गए हैं।

कुटिया पर अभी भी आते हैं कुछ लोग, पर ज्यादातर दूसरे गांवों के। यह धारणा आम हो चली है कि साधना के मार्ग से भटक गए हैं उदय पांड़े और इसीलिए जो शक्तियां प्राप्त भी हैं, ऊटपटांग प्रयोग कर रहे हैं उनका। घर की औरतों को कुटिया

पर जाने से लोग मना करने लगे हैं। अकस्मात् ही किसी को भी गालियां देना शुरू कर देते हैं उदय पांड़े।

"डर किसका है?" उदय पांड़े ने पूछा।

"अपनी अज्ञानता का ही है, प्रभु।"

"अपने-आप प्रकाश उतर आएगा एक दिन।" धीरे-से बोले उदय पांड़े।

"सुधाकर बाबा के घर में कलह हो गया है, प्रभु। हरिद्वार बाबा तरह-तरह से दबाना चाह रहे हैं इनको।" चिरई ने कहा।

"हरिद्वार पंड़इया के यहां चला जाए?"

उदय पांड़े का प्रस्ताव सुनते ही दोनों कांप गए हैं। देवलोक संबंधी चर्चा के कारण पैदा हुआ विश्वास कपास के फाहों की तरह उड़ गया है। कुंवरपुर का अप्रिय यथार्थ आ खड़ा हुआ है आंखों के सामने।

"हरिद्वार बाबा का सोभाव अलग किस्म का है। और अब तो गांव में जो भी उल्टा-सीधा हो रहा है, लोग कह रहे हैं, उदय पांड़े ही कर रहे हैं।" चिरई ने तय किया कि उदय पांड़े को हकीकत से रूबरू करा देना ही ठीक रहेगा, "तिलंगी सिंह तो कह रहे हैं कि गांव का लईका सब आपके चलते सनक रहा है। गांव एकदम फिरंट हो गया है, प्रभु!"

"तिलंगीया अपने फंसा हुआ था सूबेदरवाबो से तो उस पर भी हमी टोना कर दिए थे?" तिताई फैल गई है उदय पांड़े के चेहरे पर।

"लेकिन कुछ ऐसा होता कि गांव..."

"ठीका लिए हैं गांव का?" कहा और इसके पहले कि कोई कुछ और कहे, अपनी घिसी हुई हवाई चप्पल पहनकर गांव की ओर चल पड़े उदय पांड़े।

चिरई ने देखा कि चले ही जा रहे हैं उदय पांड़े तो भागा उनके पीछे-पीछे।

अन्हरी की दुकान पर बैठे लोग सबसे पहले देखते हैं उदय पांड़े को गांव में घुसते हुए। किसी की भी समझ में नहीं आता, क्या कहे, क्या करे। कुटिया पर आने के बाद पहली बार गांव के अंदर आए हैं उदय पांड़े। जिज्ञासा से भर गए हैं लोग—क्यों?

"सेंट रखता है?" अन्हरी के छोटे लड़के से पूछा उदय पांड़े ने।

घिग्घी बंध गई है उसकी। मजमूआ सेंट की जितनी भी शीशियां आई मुट्ठी में, बढ़ा दी हैं।

"खाली नकली माल रखता है।" शीशियों को सूंघ रहे हैं उदय पांड़े।

"क्या कामरेड, नकलीए सेंट से काम चलाया जा रहा है आजकल?" दयाशंकर दिख गए तो दयाशंकर की ओर उछाल दी एक शीशी।

"असली-नकली बुझा रहा है आजकल?"

"नहीं बुझा रहा है तो झांट कबारने के लिए कामरेड बनते हो?"

दुकान में बैठे लोग हँसने लगे हैं। दयाशंकर का मुंह लाल हो गया था इस अपमान से, पर कुछ कह पाते उसके पहले ही लुंगी फड़फड़ाते हुए आगे बढ़ गए थे उदय पांड़े।

"ईहो सनकाह राम को देना होगा दवाई एक दिन।" कहा दयाशंकर ने पर सुनने की फुर्सत कहां थी किसी को भी!

"वासुदेव सिंह का क्या हाल है?" हाकिम सिंह की दालान के सामने खड़े हो गए हैं उदय पांड़े।

"सब दया है, देवता।" हाकिम सिंह ने चौकी से उठते हुए कहा।

"नौकरी छोड़ दिए क्या?" हाकिम सिंह की खाली की हुई चौकी पर आसन ग्रहण करते हुए बगल की चौकी पर लेटे धनजी पांड़े से पूछा और ठठाकर हँस दिए, "राम नाम जपना, पराया माल अपना।"

दालान में मौजूद सभी हँस पड़े हैं।

"हम लोग, भाई, संसारी आदमी हैं।" धनजी पांड़े बोले "आप अच्छा-अच्छा ज्ञान दीजिए गांव के बाल-बच्चा सबको।"

"और आपको चरने के लिए छोड़ दें?"

हँसी की एक और लहर दौड़ी दालान में।

चिरई की हिम्मत वापस आ रही है। गांव जरा भी उखड़ा हुआ-सा नहीं लग रहा था उदय पांड़े को देखकर।

"हमारे यहां नहीं आइएगा, बाबा?" मुसमात अपने दरवाजे पर खड़ी हैं।

उदय पांड़े ने मानो सुनी ही नहीं उनकी अभ्यर्थना। मुसमात खड़ी रह गईं हाथ जोड़े हुए।

जोगी सिंह के घरवाले जवाव नहीं ढूंढ़ पा रहे इस सवाल का कि उदय पांड़े घुस ही गए उनकी दालान में तो क्या करेंगे?

"अपने दुआर पर मत आने देना।" तिलंगी सिंह गरजे हैं।

"ढेर बोलिएगा तो धसोरकर कोठारी में बंद कर देंगे।" कलक्टर सिंह ने डपट दिया, "विनइया वाला हाल करवाइएगा का बाल-बच्चा सबका?"

चलने-फिरने में तकलीफ होती है, लेकिन लाठी टेकते हुए गांव की मुख्य गली तक आ गए हैं श्रीराम पांड़े। अनुरोध कर रहे हैं गुजरने वालों से कि साधू या सनकाह दोनों ही की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए।

हरिद्वार पांड़े की दालान में रखी चौकी पर बैठ गए हैं उदय पांड़े।

"तकिया-ओकिया नहीं रखते हैं, काका?" पूछा।

अपने दुआर पर जमा भीड़ को अग्निम आंखों से घूरते हरिद्वार पांड़े ने कोई जवाब नहीं दिया।

"हरिद्वार का मतलब जानते हैं आप लोग?" उपस्थित भीड़ से पूछा उदय पांड़े ने।

"भगवान के घर का दरवाजा।" बताया किसी लड़के ने।

"जो काका के चक्कर में पड़ा, दू का चार, चार का आठ, भरते हुए वहीं पहुंच जाता है। इसीलिए नाम पड़ा—हरिद्वार।"

भीड़ हँसे जा रही है।

"यही लिखा हुआ है धर्म-शास्त्र में कि बूढ़-पुरनिया का मजाक उड़ाओ।" हरिद्वार पांड़े कड़के पर मन में हौल भी बैठा हुआ है उदय पांड़े की हवा में घूमती उंगलियों का, "...और जादू-टोना का चक्कर मत चलाओ यहां।"

"खाने के बाद झाड़ा फिरने काका हमेशा अपने टोपरा में जाते हैं। खाद दूसरे के टोपरा में नहीं गिराते।"

"उदयजीउवा भी बहुत बात करना सीख गया है।" शहर से आए अनंत पांड़े ने सम्हाला मोर्चा। इशारा किया हरिद्वार पांड़े को कि गरमा-गरमी से माहौल और बिगड़ेगा। उदय पांड़े की आंखें उन्हें आम आदमी की आंखों-सी नहीं लग रही थीं। एक अलग तरह की गहराई और चमक थी उनमें।

"कुछ खाने का सामान नहीं लाए हैं बहरा से?" उदय पांड़े ने पूछा, "खाने के बाद आपही के टोपरा में चले जाएंगे।" हरिद्वार पांड़े की ओर मुंह करके कहा।

"लाए हैं न। मंगवाते हैं।" अनंत पांड़े ने हड़बड़ाकर आवाज दी घर के एक लड़के को।

दालान की चौकियों पर आसन ग्रहण कर चुके थे लोग। कुछ दालान के बाहर जमीन पर ही पालथी मारकर या चुक्का-मुक्का बैठ गए थे। हरिद्वार पांड़े कई बार कोशिश कर चुके थे छोटे-छोटे लड़कों को हुलकाने की, पर वे भी वहीं खड़े थे थोड़ा पीछे हटकर।

"गांव में यह नहीं बुझा रहा है किसी को भी कि लाइन क्या है आपकी साधना की?" अनंत पांड़े ने पूछा।

"साधना कुछ भी नहीं है, सब सिद्ध है।" एक ओजपूर्ण गांभीर्य आ गया है उदय पांड़े की मुद्रा में—"फिर भी गुजरना है कोटि-कोटि नरकों से...युग की सारी सड़न, सारी पीड़ओं, पिपासाओं से गुजरना है...अधपके घाव की तरह खदकना है...क्योंकि युग जितना दुःशील होगा, यह यात्रा उतनी ही दुष्कर होगी...पर यह साधना नहीं, सिद्ध की यात्रा है।"

उदय पांड़े ने बंद किया बोलना। उस समय तक लोगों पर हावी हो चुका था उनकी भाषा और बोलने की शैली का आतंक।

"त्रेता में इस यात्रा का नाम राम है, द्वापर में कृष्ण, सतयुग में पूरा युग ही एक अखंड व्यक्तित्व है..." सभी को चुप देखा तो बोलना जारी रखा उदय पांड़े ने, "कलियुग में खंड-खंड हो रहता है युग का व्यक्तित्व...यात्रा दुर्गम हो जाती है, इसीलिए...कृष्ण भी अधूरे हैं इसके लिए...राम तो पास भी न फटकें।"

"लेकिन तुलसीदास तो लिखे हैं कि 'कलियुग केवल नाम अधारा।"

"तुलसीदास को ही सब बुझाता तो अपने राम नहीं हो जाते?" अचानक भदेस की जमीन पर उतर आए उदय पांड़े।

"दिक्कत, रामजी की दया से, खाली एतने है कि आदमी धबराने लगता है आपके औघड़पंथ से।" जंगी सिंह ने कहा रुक-रुककर।

"हम नहीं जानते थे कि औघड़पंथ भी जानते हैं आप?" अचरज की बनावटी

भाव-मुद्रा बनाकर कहा उदय पांड़े ने, और हँसने लगे लोग।

"ए भाई, जिसको बूझना हो औघड़पंथ, ले जाए अपने दुआर पर। हमको नहीं बूझना है।" अनंत पांड़े को भी उदय पांड़े के प्रभाव में आता देखकर ढोंढ़ी का जोर लगाकर चीख पड़े हैं हरिद्वार पांड़े।

"आपही का दुआर है केवल?" सुधाकर पांड़े, जो कुछ ही क्षण पहले पहुंचे थे और भीड़ के पीछे खड़ा होकर सुन रहे थे उदय पांड़े की बातें, उनका अपमान बर्दाश्त नहीं कर सके। एक साधू की मौजूदगी से संकटग्रस्त हो रहा है इनका दुआर! कल ही घंटों बैठा रहा था नारद सिंह, तब नहीं हो रहा था कुछ!

"हां, हमारा दुआर है केवल।" हरिद्वार पांड़े चीखे, "ढेर हमारा-तुम्हारा हमसे कोई नहीं बताए।"

अनंत पांड़े मुंह बाए हुए देखने लगे हैं दोनों भाइयों को।

"जिस साले मंगते-खाते को देखिए, वही कह रहा है कि कल्कि अवतार हैं, जुग बदल देंगे। खून-पसीना एक करके दू-चार पइसा जुटाता है आदमी और ई भगवानजी लोग चाहते हैं कि इनको दे दिया जाए। रामपरवेस चौधरी और नौलाख के पास है ऊपर का पैसा तो चाहे चबूतरा बनवाएं, चाहे मंदिर, हमारे पास नहीं है फालतू काम के लिए।"

वाह रे हरिदुआर बबवा, वाह! जोगी सिंह के कानों में पड़ रही हैं हरिद्वार पांड़े की बातें और खुश हैं। इसलिए भी कि उदय पांड़े को बेइज्जत करने का जो साहस वे चाहकर भी नहीं जुटा पा रहे थे, हरिद्वार पांड़े ने उससे ज्यादा ही जुटा लिया था। और इसलिए भी कि गांव, जो बेसब्री से इंतजार कर रहा था कि इन दो बड़े घरों में पहले कौन टूटता है, उसे भी मिल गया था जवाब।

"भाग रे चिरइया!" इसके पहले कि अपने बड़े भाई की बातों का जवाब देना शुरू करते सुधाकर पांड़े, उदय पांड़े ने अपनी हवाई चप्पल पहनी और चल दिए।

"त्रेता में अहिरावण था हरिदुआर पंड़इया।" जाते हुए कहा लोगों से।

"दू पटकन देंगे, बस मनसहका टूट जाएगा।" श्रीकमल सिंह ने अपने दालान की छत से ही उछाल दी यह धमकी।

"दे के देखो न जरा! वही पटकनवा गंड़िया में धांस देते हैं कि नहीं।" पता नहीं, कहां से सुदर्शन पांड़े में साहस उमड़ आया था ऐसी चुनौती दे डालने का।

"पकड़ो साला दूनो महापातर को।" चीखे और छत से नीचे दौड़े श्रीकमल सिंह।

"अपने बाप का जामल होगा तो फरिया लेगा आज।" सुदर्शन पांड़े खड़े हो गए हैं कुर्ते की छाती पर वाले बटन खोलकर।

बभनटोल के लड़के दौड़े हैं खबर देने। अफरा-तफरी मच गई है। राइफल तान दी है श्रीकमल सिंह ने। सुदर्शन पांड़े छाती खोले खड़े हैं।

थोड़ी देर तक इस सबसे अन्यमनस्क-सा चलते रहने के बाद रुक गए हैं उदय पांड़े। उनके दोनों पैरों के बीच समाया जा रहा है चिरई। उदय पांड़े ने घूमकर देखा तनी हुई राइफल को और हवा में कोई चित्र बनाने लगी उनकी उंगलियां।

"हटना मत, सुदरसन बाबा! आज नाश ही हो जाए राक्षसों का।" मुसमात ने कहा।

जोगी सिंह ने सिर पीट लिया है श्रीकमल सिंह की बेवकूफी पर। कितना अच्छा तो बीत रहा था दिन कि इस मूढ़ ने अपने सिर पर ले लिया था झगड़ा।

अद्भुत दृश्य था यह। न हट रहे थे सुदर्शन पांड़े, न राइफल चलाने की हिम्मत हो रही थी श्रीकमल सिंह की।

"श्रीभगवनवा और श्रीकमलवा खरदूषण हैं।" उदय पांड़े ने अवाक् खड़ी भीड़ से कहा धीरे-से।

"सोच क्या रहा है रे बेटीयाचोद! मार न साले को।" श्रीभगवान सिंह चिंघाड़े।

"मार...तो इसका गला रेत देते हैं!" भंडारी की आवाज सुनी लोगों ने और देखा, श्रीभगवान सिंह के दस-बारह बरस के लड़के को दबोचे हुए उसकी गर्दन पर गड़ांसी जमा रखी थी भंडारी ने।

दहशत फैल गई घटना-स्थल पर मौजूद लोगों में।

विभूति पांड़े जो घबराए हुए थे शुरू-शुरू में, प्रसन्न हो गए हैं।

"हँसने का अवसर है, रे मूढ़?" लाठी टेकते आए श्रीराम पांड़े ने डपट दिया है विभूति पांड़े को।

"हई बंडा सियरा हँस रहा था, उसको नहीं कहिएगा?" सुदर्शन पांड़े ने जंगी सिंह की ओर इशारा किया।

"ए बाबा, जइसा फेंटवारा आपके जनमतुआ, वैसा ही फेंटवारा हमारे।" श्रीराम पांड़े को आया देखकर आगे की राह दिखी है जोगी सिंह को। उतर आए हैं दालान से।

श्रीराम पांड़े को अपनी ओर आता देखकर भंडारी ने छोड़ दिया है श्रीभगवान सिंह के लड़के को।

"सो तो ठीक है, लेकिन ई बात-बात पर राइफल चमकाने वाला पॉलिसी ठीक नहीं है।" रामबिलास सिंह फनफनाए।

श्रीकमल सिंह दालान के अदर चले गए हैं राइफल लेकर।

"साले की नाल ही जाम कर दिए थे तो राइफल कहां से चलाते।" पास खड़े चिरई से कहा उदय पांड़े ने और कुटिया की ओर बढ़ गए।

18

बूटन राय ने काफी दौड़-धूप के बाद एक पुलिस चौकी की व्यवस्था करवाई थी पिपरी में। उनके गांववाले घर से लगभग दो सौ गज की दूरी पर स्थिति थी। लल्लन सिंह खबर लेकर आए थे कि पिछली रात उसी चौकी पर धावा बोला था नक्सलाइटों ने और सारी राइफलें, कारतूस और वर्दियां छीन ले गए थे पुलिसवालों की। शाम के छः-साढ़े बजे एक औरत के साथ चौकी पहुंचे थे पांच-छः लोग—रपट लिखवाने कि साथ आई औरत के साथ बलात्कार किया था उसी के गांव के कुछ लोगों ने। और कब्जा कर लिया था चौकी

पर। अफवाह यह थी कि वह औरत और कोई नहीं, दमयंती ही थी।

बिक्रमगंज से फरार होने की घटना के बाद दमयंती के बारे में पहली बार सुन रहे थे लोग। और उनकी आशंका सही साबित हुई थी—दमयंती बागी हो गई थी।

"श्रीभगवान भाई को सावधान रहना होगा। हमारे ऊपर तो खैर, खतरा है ही।" लल्लन सिंह ने कहा और वाजिब असर हुआ उनके कहे का।

"ए भाई, आज के बाद हम नहीं बोलेंगे गांव के मामले में। गांव के तरफ से भी बोलते हैं तो भी हमीं अपराधी हो जाते हैं। पहले सभी कह रहे थे, गलत काम कर रहे हैं उदय पांड़े और...छोड़िए, यही ठीक है। बोलना ही नहीं है कुछ।" सुलह और आपसी सहयोग की भाषा अपना ली है श्रीभगवान सिंह ने।

"आज बुझा रहा है। हम कहते थे तो नहीं बुझाता था।" जोगी सिंह बुदबुदाए।

"रामगिरिहिया की बेटीया को इतनी हिम्मत हो गई न!" धनजी पांड़े की आवाज की कंपकंपी भांप लेते हैं दूसरे लोग।

"डेराने से बच नहीं जाएगा चोरिया का कमइया।" कलक्टर सिंह ने तितकी छोड़ी।

"नहीं रे भाई, माल का सवाल नहीं है। डर यह सोचकर लगता है कि किसी भी संगी-साथी या उसके सर-सवांग के साथ कोई दुर्घटना न हो जाए।" धनजी पांड़े ने कहा।

"इतना ही डर लगता है तो दमयंतिया के एजेंट को काहे को लगाए हुए हैं छाती से?" कलक्टर सिंह ने सीधा सवाल किया।

"खतरनाक आदमी है, नहीं?"

"पूछ रहे हैं खतरनाक आदमी है? अरे, यही सब न इनफॉर्मर का काम करता है! उन लोगों का विचार फैलाता है।"

धनजी पांड़े के जबड़े कस गए हैं, जिसका आशय है, आज से बंद हो गया उनके यहां दयाशंकर का आना-जाना।

"कलक्टर भाई बहुत पते की बात कह रहे हैं। दमयंतिया के एजेंट सब पर नजर रखना जरूरी है।" लल्लन सिंह ने हामी भरी, "खासकर दयाशंकर पंड़इया पर। बहुत उड़ने लगा है।"

"इसको तो हम..." अपनी बात अधूरी छोड़ दी थी श्रीभगवान सिंह ने, पर यह सभी समझ गए थे कि क्या कह रहे थे।

"हमारी समझ से अपनी तरफ से अभी कुछ भी शुरू नहीं करना है। बस, चौकसी रखनी है।" लल्लन सिंह ने समझाया, "पूरा जवार खौला हुआ है। बूटन रायवा भी कम बड़ा खेलाड़ी नहीं है। चुप नहीं बैठेगा।"

जोगी सिंह सोच रहे हैं, चपरासी या सिपाही होने लायक ही था सिरीभगवनवा। दिमाग नहीं है। सीधे उड़ाने-पड़ाने का बात करने लगता है।

"फिर भी हम तो कहते हैं कि बूटन राय से कहकर एक बार पुलिस का छापा डलवा देना ठीक रहेगा रेजटोलों में। दस-दस डंडा लगेगा तो डरेगा सब।" कन्हैया सिंह ने रखा यह प्रस्ताव।

कन्हैया सिंह ने नया-नया खेमा बदला है। छोड़ा नहीं है दिनेश सिंह का बैठका, पर अब वहां मन नहीं लगता उनका। जोगी सिंह की दालान में ही ज्यादा समय गुजरने लगा है। मुकाबले की बातें होती हैं वहां, मुठभेड़ की रणनीति के बारे में विचार-विमर्श होता है। दिनेश सिंह, छबीला सिंह और रंगू सिंह को 'क्या से क्या होता जा रहा है' के दुःख से उबरने का ही अवकाश नहीं था। अभी भी उन्हें बंधु ही नजर आते थे दयाशंकर। कन्हैया सिंह दुश्मन मानते हैं दयाशंकर को।

"दयाशंकर पंड़इया फोह बांधता है बहादुरी का, पर हम जानते हैं उसको। एक बार हड़का देने पर एकदम सोझिया जाएगा।" बोले।

"नहीं, नहीं, कन्हैया भाई! अभी चुपचाप देखना है केवल।" लल्लन सिंह ने खारिज कर दिया उनका प्रस्ताव।

लोग हिल्लोलित हो रहे थे सोच-सोचकर कि बूटन रायवा छोड़ेगा नहीं साले नक्सलाइट लोगों को। और बूटन राय आराम से लेटे हुए थे अपने गोले में मसनद जमाए हुए। चाय-चुक्कड़ चल रहा था।

"खून तो खौल रहा है बूटन बाबू, लेकिन आप ही कह रहे हैं संयम रखने को तो क्या किया जाए!" उनके दरबारियों की व्यथा।

"क्यों कह रहे हैं संयम रखने को, यह भी तो समझिए।" बूटन राय ने समझाना शुरू किया, "यह केवल एक पुलिस चौकी पर आक्रमण का मामला नहीं है। पुलिस चौकियां तो होती ही इसीलिए हैं कि तब तक लूटते रहो, जब तक कोई दूसरा लूट न ले जाए धावा बोलकर। इनके ऊपर विश्वास न हमको पहले था, न आज है। वह तो इसलिए रखवा लिए थे कि दुश्मनों को यह कहने का मौका नहीं मिले कि हम तो दे रहे थे सुरक्षा, पर बूटन राय ने ही मना कर दिया।"

"ठीक ही किया गया। पोल खुल गई सालों की।"

"पोल खुलने की चिंता है इन बदजात लोगों को? है क्या ऐसा, जो पर्दे में है? बताइए? कुछ नजर आ रहा है ऐसा? न जेल जाने का डर, न लात खाने का। जिससे लड़ना है, उसी से चूतड़ सटा लेना है कल। पोल-सोल भी नहीं खोलना था हमको। हम तो यह कह रहे हैं कि संयम रखना जरूरी है, क्योंकि तभी समझ पाइएगा कि दरअसल यह एक जाति-विशेष को धरती से मिटा देने का षड्यंत्र है।" बूटन राय चुप हो गए इतना कहकर और सन्नाटा छा गया पूरे माहौल में।

"चारों तरफ से घेरा जा रहा है आपको।" कोई नहीं बोला तो फिर वही बोले, "प्रशासन उन्हीं लोगों के इशारे पर राइफल का लाइसेंस नहीं देता आपको, आपके भाइयों और बच्चों को जान-बूझकर सरकार में अच्छे पद नहीं दिए जाते, विकास के अवसरों से वंचित किया जाता है आपको! और फिर इस तरह के आक्रमण किए जाते हैं। इस घेरेबंदी को समझकर ही कुछ भी करना है।"

"हम तो यही जानते हैं कि जो बूटन राय को उखाड़ना चाहेगा इस इलाके से, उसे खुद भगवान उखाड़ देंगे। यह बूटन राय ही हैं कि जो उन्हें दुश्मन समझते हैं अपना,

उनकी औलादों को भी कॉलेज का मुंह मिल रहा है देखने को। यह बूटन राय ही हैं कि इस पिछड़े देहात में शिक्षा और सभ्यता की रोशनी आ सकी है। यह पूरा इलाका कृतघ्न होगा, अगर बूटन राय का बुरा सोचेगा।" एक जोरदार भाषण शुरू कर दिया था उनके एक समर्थक ने और आवाज इतनी बुलंद थी कि सड़क से गुजरते लोग भी सुनने लगे थे खड़े होकर।

"पुलिसवा सब तो अब सस्पेंड हो जाएगा, बूटन बाबू?"

"क्या पता, प्रोन्नति पा जाए। पैक्ट हो कोई। मिले हुए हों लुटेरों से। कुछ दिनों के बाद खुद ही वापस आ जाएं राइफलें। कोई ठिकाना है आचारभ्रष्ट लोगों का!"

"राइफल तो वापस नहीं मिलेगा, सरकार।" एक आदमी फुसफुसाया "कुंवरपुर वाली दमयंतिया का हाथ है इसमें। राइफल नहीं लौटाएगी।"

"जाने दीजिए, महाराज! राइफल शोभा भी नहीं देती इन नपुंसकों के हाथ में।" बूटन राय ने कहा और चित लेट गए चौकी पर। नीले आकाश को देखने लगे चुपचाप।

किसी ने बताया अवधेश चौधरी को कि बूटन राय तो आप ही के ऊपर निशाना साध रहे हैं तो अवधेश चौधरी मानस की वह चौपाई याद करने की कोशिश करने लगे, जिसका अर्थ यह था कि विधाता जब दुःखी करना चाहता है किसी को, उसकी बुद्धि पहले ही हर लेता है।

"पचास साल से जैसे चलाए हैं लोग देश को, उसी का नतीजा है यह सब।" उनके एक समर्थक ने कहा।

"महटिआओ मरदे! ई सारघेंटी लोग सोच रहे थे कि अपने तो लाली-लाली डोलिया में बैठे रहेंगे जनम-जन्मांतर तक और बाकी आदमी कहांर जइसा ढोता रहेगा इनको। साले बेईमान कहीं के।" गोले की ओर एक गुर्राती हुई निगाह फेंकी अवधेश चौधरी ने।

भरकौली में तनाव दिनानुदिन बढ़ता जा रहा था। नारद सिंह ने घोषणा कर दी थी कि भरकौली में कोई मीटिंग नहीं होने देंगे लाल झंडेवालों की। पिपरी-कांड के बाद स्थिति और भी बिगड़ गई थी। आसपास के गांवों से भी हथियार और कार्यकर्ता जुटाए जाने लगे थे। नारद सिंह दिखा देना चाहते थे कि पिपरी नहीं था भरकौली।

"इसको कहते हैं तैयारी।" कन्हैया सिंह खुश हैं, "न्यूनतम मजदूरी मांगने चले थे सार लोग और बकार नहीं निकल रहा मुंह से। मुंह खोले कि थ्री नॉट थ्री अंदर।"

"जवान बोला है कि और तीन दिन तक इंतजार करेगा और सार लोग तब भी नहीं आए काम पर तो बैल की जगह उन्हीं को नाधेगा हर में; कोंखी में पैना कर-करके हेंगा चलवाएगा छोकड़चोद लोगों से।"

कुंवरपुर के बबुआन और बभनटोले में ठेरा बाबा से विनती कर रहे थे लोग कि कांटे की इस टक्कर में नारद सिंह का साथ दें। भरकौली में टूट जाता लाल झंडेवालों का दंभ तो कुंवरपुर में भी नहीं चल पाता। एक के बाद एक हर जगह फेल हो जाता।

"असल में यह साम्यवाद होता, तब तो हो ही जाता फेल। लेकिन यह तो डकैती और गिरोहबाजी है न! उसी तरह का राजनीतिक हुड़दंग है, जैसा दूसरे सारे हैं।" दिनेश सिंह की राय थी यह। दूसरों की राय से थोड़ी कम आशाप्रद।

"फेल नहीं होगा?"

"रंग बदल-बदलकर चलता रहेगा।"

"आप भी, मास्साब, गेहुंअन और गिरगिट को एक में मिला देते हैं कभी-कभी।" कन्हैया सिंह अनसाए।

"मास्साब ठीक कह रहे हैं। हमको तो सबसे खतरनाक सफेद लगता है।" रंगू सिंह ने कहा।

"समाज के बारे में कुछ सोचना ही नहीं है तो जो कहिए।" कन्हैया सिंह तिजुक गए।

"नारद सिंह समाज के लिए लड़ रहे हैं?"

"तो क्या कर रहे हैं?"

"समाज के लिए लड़ाई को असंभव बना रहे हैं ये सारे बेईमान मिलजुलकर।"

"हमको मत समझाइए कि समाज के लिए लड़ना क्या होता है। बहुत पार्टी और आंदोलन देखे हैं।"

"इसीलिए न बौद्धिक एड्स का शिकार हो गए हो।" रंगू सिंह ने कहा और कहकर खुश हो गए अपने नए जुमले पर। हठात् आ गया था जुबान पर। अब कई अवसरों पर, कई प्रसंगों में काम आएगा।

"कन्हैया भाई का भी दोष नहीं है। हर समस्या का एक तात्कालिक समाधान होता है और एक स्थायी। स्थायी समाधान का रास्ता बहुत ज्यादा कठिन लगने लगता है तो लोग तात्कालिक समाधान की ओर मुड़ते हैं।"—दिनेश सिंह ने मरहम लगाना चाहा कन्हैया सिंह के आहत स्वाभिमान पर, लेकिन कन्हैया सिंह तैयार नहीं हुए इस मरहम को मरहम मानने को। कहा, "यह तो समय ही बताएगा कि कौन सा समाधान तात्कालिक है और कौन स्थायी।"

"भरकौली में हालत खराब है रेज लोगों का।" जगनाथ घूम आया था भरकौली से, "कोई तैयार नहीं है सामने आने को।"

"हमसे पूछो तो कहेंगे कि जिसने सोचा भरकौली में खेल करने का, वही असली दुश्मन है रेजों का।" दयाशंकर बोले।

"बाबा तो बेचारे कहते ही हैं हरमेसा कि बिना तर-तैयारी के गेंग मचाना ठीक नहीं है।" चरित्तर ने समर्थन किया दयाशंकर का।

"ऊपर से ही आया था डिसीजन।" नकचिपटा फुसफुसाया।

"ऊपर से आया था, चाहे कहीं से भी, हमारा कहना है कि कुंवरपुर का कोई नहीं पड़े भरकौली के झगड़े में।" दयाशंकर ने दृढ़तापूर्वक कहा, "हम तो नहीं पड़ेंगे।"

दयाशंकर लेकिन यह भी समझते है कि कुंवरपुर का कोई पड़े न पड़े इस झगड़े

में, भरकौली-कांड की धमक पहुंचेगी ही पहुंचेगी कुंवरपुर। पिपरी-कांड कोई बड़ा रूप इख्तियार करने से रह गया था, क्योंकि खुद बूटन राय ने ही आश्चर्यजनक रूप से लहर सिकोड़ ली थी। समझदार आदमी थे, सोचा होगा, नारद सिंह और रामप्रवेश चौधरी ही आगे रहें इस संघर्ष में। लेकिन नारद सिंह से ऐसी किसी समझदारी की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

"जान-बूझकर तो हम लोग नहीं ही पड़ेंगे इस झगड़े में, लेकिन सावधान रहना होगा, जगनाथ!" विचारमग्नता के बीच से ही बोले, "ठीक से मालूम भी नहीं है कि ऊपर का डिसीजन क्या है।"

दयाशंकर को कभी-कभी नारद सिंह और उस खेमे के लोगों से ज्यादा डर दमयंती और अपने ही खेमे के लोगों से लगने लगता है। उन्हें लगता है, छांगुर और नकचिपटा मिलते-जुलते रहे हैं दमयंती से, पर बताना नहीं चाहते उन्हें। हो सकता है, उसी ने मना किया हो बताने से। ऊपर से तो दिखा रही थी कि भूल गई थी पिछली बातें, पर खुद वही भूले हैं क्या कि वह भूल जाएगी!

"दमयंती भी थोड़ा फिरंट ही रहती है न, जगनाथ। कुछ खबर-ओबर भिजवाना चाहिए था तो...अब जो कर रहे हैं हम, उससे ज्यादा क्या कर सकते हैं?...पेपर में स्टेटमेंट दिए, ज्ञापन दिए...वह तो पाहुन नहीं होते तो हम जेल में होते अभी...लेकिन उसको लगता है कि..."

"ऐसा कुछ नहीं है, बाबा!" जगनाथ इस जुगत में लग जाता है कि दयाशंकर की आत्म-शंकाएं नकारात्मक चिंतन का रूप न ले लें—"वह भी तो नई-नई ही है इस लाइन में...धनंजयजी ही गाइडेंस देते होंगे...बल्कि हम कहेंगे कि मन हो तो एक दिन मिल लिया जाए उन्हीं से। पता भी चलेगा, आगे क्या करना है।"

"मिला जा सकता है, लेकिन थोड़ा देख लेते हैं अभी।" दयाशंकर डरे कि मिलने गए तो कोई नई जिम्मेदारी अढ़ा देंगे धनंजयजी।

और अंततः खेल शुरू हो गया था भरकौली में। मुसहर टोले के पंद्रह-बीस घरों में आग लगा दी गई थी। कलक्टर, एस.पी., नेता, पत्रकार, सभी दौड़ पड़े थे। नारद सिंह फरार थे अपने दल-बल के साथ।

"अब होगा धावा।" छांगुर कान में फुसफुसाया दयाशंकर के।

बताया कि दमयंती की सोची-समझी चाल थी यह। नारद सिंह को भरकौली से भगाने की। पुलिस जब्त कर ले सारे हथियार, गिरफ्तार कर ले उनके साथियों को, तब बोला जाए धावा।

"पहले नहीं बता सकते थे?" दयाशंकर गुस्साए।

पर उसी शाम यह खबर आई कि सोचा कुछ और गया था और हो कुछ और गया था। आग बुझने के बाद पता चला कि कुछेक सूअरों के साथ एक बूढ़ी औरत और एक छः महीना का बच्चा भी जल मरे थे। उस बच्चे का बाप बागी हो गया था। समझाने-बुझाने की तमाम कोशिशों के बावजूद उसे रोका नहीं जा सका था सच कहने

से। बताते चल रहा था कि अगलगी नारद सिंह का नहीं, बल्कि टोले के ही कुछ लोगों का काम था। नारद सिंह को फंसाने के लिए।

"सब कमवे जहुआ गया, बाबा!" नंदलाल के चेहरे पर पुती हुई उदासी कह रही है कि बहुत ऊंची उम्मीदें बांध रखी थी उसने भरकौली की लड़ाई से, "आपसे में लठ-चलव्वल हो रहा है। रामपरबेस चौधरीया धोती-साड़ी बांट रहा है। हम तो उसी का जयजयकार सुनके आ रहे हैं। बोला है कि जिन्का-जिसका घर जला है, इंदिरा आवास का घर देगा उन लोगों को।"

"पूछिए छांगुरजी महाराज से कि क्या सोचे थे!" दयाशंकर को दुःख नहीं है भरकौली की लड़ाई हार जाने का।

"हेलल-हेलल भईंसिया पानी में..." छांगुर को भी कोई खास गम नहीं है हार-जीत का।

"हैं कहां महारानीजी?"

"दूधवो न मिलल जवानी में..." छांगुर मस्ती में है।

"बानर के हाथ में नरियर!" जगनाथ को गुस्सा आ गया है।

"लागा चुनरी में दाग, छुड़ाए कैसे..." जवाब में दूसरा गाना कढ़ा दिया है छांगुर ने।

छबीला सिंह यह सोच-सोचकर परेशान हैं कि अपना घर जला लेने की हिम्मत आ गई जिन लोगों में, दूसरे के घरों को निरापद नहीं रहने देंगे ज्यादा दिनों तक।

"आग लगाने में जाता क्या है भोंसड़ीवालों को। भोंसड़ीवाली सरकार हइये है घर बनवाने को। सूअर जल गए तो भैंस खरीदने का पैसा देगी।" सत्यनारायण सिंह खुश नहीं हैं अपने नेता रामप्रवेश चौधरी की इंदिरा आवास देने की घोषणा से।

अखबारवाले और बुद्धिजीवी भी खुश नहीं हैं सरकार से। पूछ रहे हैं कि सरकार क्या कर रही है ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए?

सरकार कह रही है, "हर संभव कोशिश की जा रही है।"

"ऐसी कोशिशें कोई दुर्घटना होने के बाद ही क्यों की जाती हैं?" पूछा जाता है।

"कोशिश पहले से ही जारी है। अब जो कमियां रह गई हैं, उन्हें दुरुस्त किया जा रहा है।" सरकार जवाब देती है।

"कोशिश की जा रही थी तो भूमि-सुधार कानून क्यों नहीं लागू किए जा सके?" बुद्धिजीवी आश्वस्त नहीं होते जवाब से।

"ऐसा नहीं है कि लागू नहीं किए गए, पर हां, अभी भी करना है बहुत कुछ।" सरकार झुंझलाती है, "समाज और अर्थव्यवस्था को बदलने की बात है, चुटकी बजाते ही नहीं हो जाता सब कुछ।"

"हम लोगों को, भाई, जो विरासत मिली है चालीस-पैंतालिस बरसों के कुशासन की, उसको दो-चार साल में कैसे ठीक कर सकते हैं?" रामप्रवेश चौधरी का कहना है।

"एक भी कदम बता दें जो इनकी सरकार ने उठाया हो भूमि-सुधार के लिए, तो संन्यास ले लेंगे राजनीति से।" मनोरमा मिश्र चुनौती उछालते हैं।

"मतलब कि हम्माम में सब नंगे हैं।" पत्रकार संतुष्ट हो गए हैं इस निष्कर्ष पर पहुंचकर। आखिर कितने दिनों तक हीड़ते रहेंगे एक ही मुद्दा। किसी नए मुद्दे को ढूंढ़कर शुरू करेंगे इस निष्कर्ष तक की यात्रा।

नारद सिंह झरकौली लौट आए हैं और यह अगली घोषणा कर दी है—"देखते हैं, इंदिरा आवास कौन बना देता है इन भोंसड़ीवालों के लिए।"

"भइया आए हैं।" रमेश बता गया है धीरे से।

"कह दो, सो रहे हैं।" डपट दिया है दमयंती ने।

"सो रही हो क्या?" लड़के के असमंजस को अवकाश मिल गया है। धनंजयजी खुद दाखिल हो गए हैं मिट्टी के उस नीम अंधेरे कमरे में।

"कोई जरूरी बात है?" झुंझलाहट साफ तौर पर जाहिर है दमयंती की आवाज में।

धनंजयजी झुंझलाहट नहीं, उसकी एक छाती को पकड़ते हैं बिना कुछ बोले हुए।

"यह आदत ठीक नहीं है आपकी।" धनंजयजी के हाथ को झटक दिया है दमयंती ने, "जब न त..."

"मैं बहुत अकेला फील कर रहा हूं, दमयंती!"

"तो ब्याह कर लीजिए। चाहे..."

उसकी बात पूरी होने के पहले ही बाहर चले गए थे धनंजयजी।

बाहर खटोले पर बैठे धनंजयजी को सिगरेट के धुएं में डूबा हुआ देखती है दमयंती। एक उदास, थका हुआ चेहरा। पसीने में डूबा हुआ। क्या-क्या नहीं सुन रखा था उसने इस आदमी के बारे में—लोमड़ी है, चीता है, एक बार घूर दे जिसको, उसका कलेजा बंद कर देता है धड़कना! वही कह रहा है—अकेला फील कर रहा है!

"इतना सिगरेट और शराब क्यों पीते हैं आप? शरीर गल जाएगा।" आकर ठीक पीछे खड़ी हो गई है धनंजयजी के। पुरानी मूर्ति तो जो थी मन में, टूट गई थी, लेकिन नई मूर्ति भी कम अच्छी है क्या! लोग तो किसी को भी भगवान बना देते हैं। लोग, जो खुद आदमी भी नहीं हैं शायद। आखिर क्या पड़ी है इस आदमी को इन बदकिस्मत देहातों में जिंदगी बरबाद करने की। यह तो वह सारा कुछ छोड़कर आया है, जो मिल जाए तो सामाजिक-आर्थिक क्रांति के अधिकांश मशालबरदार नाम ही भूल जाएं क्रांति का।

"जानती हो, जो आदमी सार्थक जिंदगी जीना चाहता है, उसे अर्थहीनता के क्षण घेरते ही रहते हैं।" धनंजयजी ने दूसरी सिगरेट जला ली है।

दमयंती मना नहीं कर पाती दूसरी सिगरेट जलाने से। धनंजयजी को शायद अफसोस होता हो कभी-कभी कि किस अंतहीन सफर के लिए निकल पड़े—गंदे, बदबूदार माहौल में उन लोगों का आत्म-सम्मान खोजने, जो उसे कभी भी, कहीं भी घूरे पर फेंक देने को तैयार थे।

"भरकौली के चलते बहुत बदनामी हो रही है। हमारी ही गलती थी।" दमयंती बोली।

"कैसी गलती?"

"सोचे कुछ, हो गया कुछ।"

"जो सोचा था, वही हो गया होता हूबहू, तो भी क्या हो जाता?"

"फिर भी।"

"मूर्खों की तरह बात मत करो।" झिड़क दिया है धनंजयजी ने।

सकते में आ गई है दमयंती। कहीं यह इस बात का गुस्सा तो नहीं कि बिना चूं-चपड़ किए खुद को परोस क्यों नहीं दिया उसने! कि यह जताना चाहते हैं धनंजयजी कि साथ सो लेने का मतलब नहीं यह हो जाता कि बराबरी का दर्जा मिल गया है उसे।

"यही सबसे बड़ी दिक्कत है तुम लोगों के साथ। ऐसे सोचने लग जाते हो हार-जीत के बारे में, मानो हारने की आदत ही नहीं रही हो कभी। हजारों साल से हारते ही आए हो, फिर भी ऐसा सोचते हैं।"

दमयंती का मुंह लाल हो गया है अपमान से। कनपटियां दहकने लगी हैं। वह चीख पड़ना चाहती थी कि इस तरह किसी को अपमानित करने का अधिकार नहीं है आपको, पर आवाज नहीं निकल रही गले से। निर्वाक्, निष्पंद खड़ी है वह। न जाने कब की आवाजें गूंजने लगी हैं देह के खोखल में...अरे दमयंतिया... दमयंतिया रे...महादेव मालिक हियां से तनी तियना नहीं ले आएगी, रे भछनी...वह छोटी बच्ची बन गई है! अपनी माई का चुराकर दिया हुआ धान फ्रॉक में छिपाकर भागती हुई...महादेव सिंह, पचास साल का बूढ़ा दौड़ा है उसके पीछे...लाठी कर देंगे बुरी में...भाग नहीं तो पकड़ लेगा बुढ़वा...उसकी साथिनें खिलखिला रही हैं...वह घिर गई है...महादेव सिंह हांफ रहा है...देगी तो और धान देंगे...फगुआ में नए कपड़े के लिए रो रही है वह...उसकी माई गिड़गिड़ा रही है महादेवबो के सामने...पुरान-धुरान कोई निकालिए, मलकिनी...तोर छउंड़ी एक्को काम नहीं करती र'मगिरिहियाबो...महादेव सिंह घूर रहा है उसे आंगन के कोने से...देगी तो देंगे...भागी है वह...एको काम सुबहित नहीं होता रांड़ी से...रामगिरिहीबो बड़बड़ा रही है...

"तुमसे कोई गलती नहीं हुई।" धनंजयजी के मुंह से आती सिगरेट की गंध महसूस करती है वह।

"आप ऐसे मत बोला कीजिए हमको।" धनंजयजी की छाती पर सिर रख दिया है उसने।

भरोसा का चौदह साल का लड़का उन्हें देखता है कमरे में जाते हुए। अनचीन्ही उत्तेजना से भरा हुआ। उसे रात-भर सपने आते हैं उनके। वह टटोलता है उसे सपने में। धनंजयजी बन जाता है। भूल जाता है कि वह बुआ है उसकी। दमयंती बहुत खास लगती है उसे—सख्त, सुंदर, निर्मम। वह साये की तरह चिपका रहना चाहता है उसके साथ। उसे अच्छा लगता है कि दमयंती के कमरे में जा सकता है वह। उसकी

अनुपस्थिति में उसकी पिस्तौल सूंघता है, अपने गाल से चिपका लेता है। उसकी कार्बाइन के गोल-गोल छेदों पर फिराता है उंगलियां।

सिगरेट दमयंती के होठों में फंसा दी है धनंजयजी ने।

"रामपरबेसवा को तो नहीं छोड़ेंगे।" अपनी नंगीं जांघों पर सरकते चेहरे से बोली।

वह चेहरा कुछ नहीं बोला।

"भाई कह रहा था नारदा को। फूट डाल रहा है साड़ी-धोती बांटकर..." बोलती रही वह। मानो भरोसा दिला रही हो खुद को कि किसी की भोग्या नहीं, एक योद्धा है वह। एक मिशन है उसका।

यह अंतर्द्वंद्व पीछा नहीं छोड़ता उसका। रह-रहकर मंधाता मिश्र के चेहरे में बदल जाता है धनंजयजी का चेहरा।

"थोड़ा फैलने देते हैं तरंगों को। फिर फैसला लिया जाएगा।" धनंजयजी बोले।

"का रे रमेसवा! ड्यूटी बजा रहा है?" दयाशंकर की नजर भरोसा के लड़के पर पड़ गई है। सोचा, दमयंती भी आई हो शायद।

"पूछिए मत, बाबा। अजबे खल का आलम है ऊ तो।" रमेश जानता है, दयाशंकर को बताई जा सकती हैं कुछ बातें।

"दमयंती भी आई है?"

"अब ऊ आएंगी इहवां?" अर्थभरी आंखों से उसने देखा दयाशंकर को, "ऊ लाइने दूसरा है।"

भारी भीड़ जमा हो गई है मैदान में। भरकौली कांड को लेकर रैली करने का निर्णय लिया गया था। पहले तो तय किया था दयाशंकर ने कि नहीं जाएंगे। उन्हें अच्छा नहीं लगा था कि उन्हें कोई अहमियत नहीं दे रहे थे पार्टी के दूसरे नेता। पर रोक नहीं पाए थे अपने-आपको।

"कह रहे थे कि तबियत ठीक नहीं है?" छांगुर भी आ गया है उन्हें आया देखकर।

"चैन से रहने ही नहीं दे रहे तुम लोग।"

"बहुत बढ़िया मौका है, बाबा! एकदम गड़गड़ा देना है मंच पर चढ़कर। साला पूरा जिला जान जाएगा।" उन्हें मंच की ओर खींचना शुरू कर दिया है जगनाथ ने।

"ई जगनाथजीउवा सलीब पर लटकाए बिना नहीं छोड़ेगा हमको।" संकोच भी हो रहा है और भाषण देने को लालायित भी हैं दयाशंकर।

"चोन्हाइये मत, चढ़ जाइए लपककर।" छांगुर ने देख ली है उनकी लालसा।

"का रे बॉडीगार्ड! रैली का खबर लेने के लिए भेजी है फूआ?" रमेश की पीठ पर जमाई एक धौल।

"ई रैला-रैली से कुछ नहीं होगा। कार्बाइन उठाइए और एके बार फैसले कर दीजिए।" कार्बाइन चलाने के तरीके का प्रदर्शन करते हुए कहा रमेश ने।

"रुको न मरदे, बाद में तड़तड़ाना कार्बाइन।" भीड़ भाषण सुनने में मग्न हो

गई थी दयाशंकर का।

" 'जली ठूंठ पर बैठकर गई कोकिला कूक, बाल न बांका कर सकी शासन की बंदूक...साथियो, ये हम पर तोहमत लगा रहे हैं कि अपने घरों में हम खुद ही आग लगा लेते हैं। कि अपने बच्चों का खून पीते हैं हम। और खुद ये ऐसे दानी, धर्मात्मा लोग हैं—व्यवस्था की खोह में निर्विघ्न घूम रहे ये रक्तलोलुप मशालची, कि धोती-साड़ी बांटते हैं गरीबों के लिए। पहचानिए इन मक्कारों को! भाइयो और बहनो, सावधान! हत्यारों ने फिर उसी जुबान में बोलना शुरू कर दिया है, जिसमें हमारी-आपकी मांओं की लोरियों की गंध है और जो हमें बेहद पसंद है...साथियो, ये वो लोग हैं जो अघाए हुए हैं और जिनकी कल की रोटी सुरक्षित है। इन्हें पहचानिए! ये हमें तोड़-फोड़कर, झूठे भ्रम फैलाकर, नकारा कर देना चाहते हैं हमें..."

मंत्रमुग्ध है भीड़। दयाशंकर गरज रहे हैं—"सोचिए हमें क्या मिला है इनकी मीठी भाषा से, इनके लुभावने नारों से। पहचानिए उन मुहावरों को, जो आजादी और समाजवाद के नाम पर चल रहे हैं और जिनसे न हमारी भूख मिट रही है, न दालान बदल रहा हैं। चालीस सालों से ये हमारी भूख और बदहाली को सोहर की तरह गा रहे हैं। मिट गई हमारी भूख? आ गया खुशहाली का मौसम? क्या आप अब भी विश्वास करना चाहते हैं सत्ता और समाज-व्यवस्था के इन दलालों का?"

भीड़ चीखती है—"नहीं!"

और एक और काव्यांश याद आ गया है दयाशंकर को।

"साथियो, इनसे पूछिए। पूछिए कि वह कौन-सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है कि जिस उम्र में हमारी मांओं के चेहरे झुर्रियों की झोली बन जाते हैं, उसी उम्र की इनकी औरतों के चेहरे पर जवानी की लोनाई छाई रहती है? पूछिए और देखिए, इनके पास कोई जवाब है क्या?...साथियो, इनके पास कोई जवाब नहीं है। इनके ढकोसलों की कलई खुल गई है। लोग जान गए हैं कि इनकी मुठ्ठी में हमारे बच्चों के लिए मिठाई नहीं, एक खूनी पंजा बंद है जो उन्हें बदकिस्मती की उसी अथाह काली बाढ़ में धकेल देगा, जिसमें इनके स्वार्थों के करोड़ों सांप लहरा रहे हैं। भाइयो, हमें खुद को, अपने बच्चों को बचाना है इस काली बाढ़ से। इसीलिए मैं कहना चाहता हूं।" दयाशंकर एक और कविता पढ़ते हैं—

"उदास लोगो, उठो और नामंजूर करो।
उठो और विरोध करो। उठो और चोट करो।
उनकी पाखंडी संगीनें छीनो
और दोने पर निकालकर
उनकी घमंडी आंखों का पानी
चिड़िया को पिला दो!"

तालियां नाम ही नहीं ले रही हैं थमने का। बजती ही जा रही हैं। दयाशंकर का 'साथियो...साथियो...' डूब गया है तालियों की गड़गड़ाहट में।

लोग पूछ रहे हैं, कहां का लाल है यह? कुंवरपुरवाले खुशी-खुशी बता रहे हैं। गुनीवाले कह रहे हैं, हमारे नेता हैं। भरकौलीवाले कह रहे हैं, एक बार बस दयाशंकरजी आ जाते और सब ठीक हो जाता। दूसरे जवारों के लोग कह रहे हैं कि उनके पास होता ऐसा नेता तो हिलाकर रख दिए होते इस सड़ी हुई व्यवस्था को।

दयाशंकर भी खुश हैं। गुनगुनाते हुए देखे जा रहे हैं शहर की चहल-पहल—इस खयाल में डूबे हुए कि एक दिन यह पूरा शहर लोहा मानेगा उसकी ताकत का।

"एस.पी. साहब आपसे मिलना चाहते हैं।" बस स्टैंड के गेट के सामने उतरे ही थे रिक्शे से कि एक आदमी फुसफुसाया। और सफ़ेद हो गया दयाशंकर का चेहरा। धूमिल और लीलाधर जगूड़ी की पंक्तियों की चहलकदमी एकदम से थम गई चेतना में।

"बहुत प्रभावित हुए हैं आपका भाषण सुनकर।"

उस आदमी की मुस्कराहट दोस्ताना थी। फिर भी डर नहीं गया दयाशंकर के मन से—"कोई खास बात है?"

"ऐसे ही पांच मिनट के लिए। जीप से ही चलते हैं।" उसने जीप की ओर इशारा किया। चार-पांच सिपाही खड़े दिखे जीप के पास। दयाशंकर इतना तो निश्चिंत हुए कि वह पुलिस का ही आदमी था।

"जीप से चलना ठीक नहीं होगा। हम आते हैं रिक्शे से।"

"आइए।" बिना कोई प्रतिवाद किए जीप की ओर बढ़ गया वह आदमी।

"हमारा हिंदी उतना अच्छा नहीं है, लेकिन आप तो बहुत अच्छा बोलते हैं।" एस.पी. ने कहा। एक दुबला-पतला, काले रंग का कुरूप आदमी—वी. सुधाकर।

"हमारे स्टेट में भी यह प्रोबलेम है, एंड आई, ऐज ए परसन, सपोर्ट इट।"

उस छोटे-से साफ-सुथरे कमरे की गंध से अभ्यस्त होने की कोशिश कर रहे थे दयाशंकर। विश्वास नहीं हो रहा था कि एस.पी. सामने बैठे हैं। डर तो चला गया था, पर पता नहीं क्या घर कर गया था उसकी जगह कि लग रहा था कुर्सी पर नहीं, जमीन पर बैठे हों—उसके पैरों के पास।

"चाय पीजिए। आपका गांव?"

"गांव, सर, एकदम पिछड़ा देहात है।"

"नाम क्या है?"

"कुंवरपुर। यहां से दूर है। नहर पकड़कर दो कोस चलना पड़ता है।"

"नौकरी-चाकरी नहीं की?"

"सर, हम लोगों की तो मजबूरी आप समझते ही हैं। बैकवर्ड राज में नौकरी का ठिकाना ही नहीं है और उधर दूसरे तरफ से भी दबाव है। अपने बचाव के लिए यह सब करना पड़ता है। क्या किया जाए!"

दयाशंकर को दयाशंकर याद नहीं आ रहे। एस.पी. के सामने एक घबराया हुआ बेरोजगार लड़का बैठा है। एस.पी. मुस्कराते हैं उनकी घबराहट देखकर।

"सर, ब्राह्मणों का इस राज्य में जीना मुश्किल हो गया है।" एस.पी. का कोमल

चेहरा कुछ कहने का साहस देता है दयाशंकर को, "राजपूत-भूमिहार लोगों की तरह हम लोगों के पास न खेत है, न ताकत। हमी लोग जानते हैं कि किस तरह रह रहे हैं। गलत मत समझा जाएगा हमको।"

"अरे, क्या बात करते हैं।" एस.पी. को अब सचमुच हँसी आ गई है शासन की बंदूक को चुनौती देने वाले इस आदमी पर, "हमारा विश्वास है कि पब्लिक के बीच काम करना है तो पब्लिक के जो ओपिनियन-लीडर्स हैं, उनको साथ लेना जरूरी है। आई डू नॉट ट्रस्ट इन यूज ऑफ ब्रूट फोर्स। इसीलिए आपको बुलाया—थोड़ा बातचीत के लिए।"

"आपके आने के बाद, सर, बहुत सुधार हुआ है। सारे लोग कह रहे हैं।" दयाशंकर कहते हैं, "यही थोड़ा थाना-ओना..."

"सब चोर हैं साले!" एस.पी. साहब कड़के।

"लेकिन धीरे-धीरे ठीक हो जाएंगे, सर। ऊपर से दबाव पड़ेगा तो।"

"गांव जाइएगा?"

"एक हित हैं हमारे, सर। वकील हैं बिक्रमगंज में। उन्हीं के यहां ठहरेंगे आज। नहर पर, देर हो जाने पर डर लगता है।"

"क्या नाम है?"

"मंधाता मिश्र। नामी वकील हैं वहां के।"

"बस-स्टैंड छोड़वा दें?"

"नहीं सर। चले जाएंगे।"

"चाय तो आपने पी ही नहीं?"

"नहीं, ठीक है, सर।" क्या बताएं दयाशंकर कि उन्हें दिखा ही नहीं था कि चाय का प्याला रखा हुआ था उनके सामने।

कमरे के बाहर आकर लाज भी लग रही है अपनी बदहवासी को याद कर। इतनी बुरी तरह घबराने की भी क्या जरूरत थी? भाषण ही तो दिया था, कोई अपराध तो नहीं किया था!

"समझ में नहीं आ रहा कि एसपीआ क्या सोचकर बुलाया हमको?" बिक्रमगंज पहुंचे तो मंधाता मिश्र के सामने रख दिया अपना आज का अनुभव।

"बात क्या हुई?"

"बात तो कुछ खास नहीं हुई।"

"पुलिस की तिकड़मबाजी है यह। तरीका है नेटवर्क बनाने का।"

"समझ जाइए, पाहुन, कि बड़े कायदे से लपेटना चाहता था जवान, पर हम भी बेचारा बन गए एकदम से।" मंधाता मिश्र को सुना और खुद को समझा रहे हैं दयाशंकर कि जो हुआ, ठीक ही हुआ।

"एकदम ठीक किए।" मंधाता मिश्र ने कहा, "जब एक दिन सारा जमाना मानने लगेगा रोब, ये भी मानने लगेंगे।"

"बहुत घमासान भाषण दिए। रंग जम गया आज।" आत्मदया और अशंकाओं के बाहर आ गए हैं दयाशंकर। मन हल्का लग रहा है। गूंज वापस लौट आई है धूमिल और लीलाधर जगूड़ी की पंक्तियों की।

"क्या भाषण दिए, जरा सुनाइए तो हमको। तब बताएंगे कि घमासान था कि नहीं।" अंजू आई है हलवे की प्लेट लिए हुए और इस चुनौती के साथ खड़ी हो गई है कमर पर हाथ रखकर।

'गजब!' मन कहता है दयाशंकर का।

"सुनाइए।" एक मनोहर मुस्कान बिछ गई है मंधाता मिश्र के चेहरे पर, "बिना सुनाए जान नहीं बचने वाली आपकी।"

"उदास लोगो, उठो और..."

"धत्। यह भी कोई कविता है। कविता इसको कहते हैं—

आंधियां लाओ, बवंडर को बुलाओ दोस्तो,
जिस तरह भी हो, कबीले को जगाओ दोस्तो।
एक मुद्दत से नहीं तारीख आगे की बढ़ी,
जंग खाई सांकलों को खटखटाओ दोस्तो।"

"झूठिया कम्यूनिस्ट की बेटी सचमुच का कम्यूनिस्ट हो गई जी!" दयाशंकर प्रभावित भी हुए हैं और दिखना भी चाहते हैं प्रभावित। उन्हें पता है, मंधाता मिश्र को अच्छा लगेगा।

"हम तो दंग रह जाते हैं कि इसका हर सबजेक्टे पर एक जैसा होल्ड है। गणित कहिए तो गणित, साहित्य कहिए तो साहित्य।" मंधाता मिश्र बेहद खुश हैं।

"इसके लिलार पर चमक है। देखिएगा, बनकर रहेगी कुछ।" दयाशंकर की नजरें गड़ी हुई हैं उसके चेहरे पर।

"आप ज्योतिष भी जानते हैं क्या, मामा?"

"हां, बड़का अगमजानी हैं तुम्हारे मामा।" मुन्नी को अच्छा नहीं लग रहा उनका आंखों में आंखें डालकर बात करना।

"अब चलिए, नया काम मिल गया आपको। ज्योतिष भी सिखाइए।" मंधाता मिश्र ने ठहाका लगाया।

अंजू हथेली पसारकर बैठ गई है सामनेवाले सोफे पर।

"खाना नहीं खाना है किसी को?" मुन्नी अनसाई।

"रुको न अभी, खाना ही भागा जा रहा है कहीं?" चिढ़ गए मंधाता मिश्र। याचना-भरी आंखों से देखा मुन्नी को—'देखो न, कितनी प्यारी बातें कर रही है।'

दयाशंकर उसे उन सर्वज्ञानी साधुओं के बारे में बता रहे थे जो आदमी को दूर से देखकर ही बता देते थे उसका भूत और भविष्य।

"तब इंदिरा गांधी को क्यों नहीं बता दिए कि उन्हें कब मारा जाएगा?"

"बताइए अब! दीजिए जवाब।" और भी उन्मुक्त हो गया है मंधाता मिश्र का ठहाका।

अंजू नवीं में पढ़ रही है बोकारो के एक अच्छे स्कूल में। मंधाता मिश्र जब भी देखते हैं उसे, यह अफसोस जकड़ लेता है कि बड़ी बेटी को नहीं पढ़ाया-लिखाया ठीक से। पढ़ाई-लिखाई से बहुत फर्क आ जाता है पर्सनाल्टी में।

"बेटे-बेटियों की पढ़ाई से बढ़कर और कुछ भी नहीं है, दयाशंकरजी।" कहा।

"अब तो शादी-ब्याह में भी पढ़ाई के बारे में पूछा जा रहा है।"

"शादी-ब्याह तो अलग चीज है, पर्सनाल्टी बदल जाती है आदमी की। आप ही जो एस.पी. से मिले आज तो प्रभावित हुए कि नहीं?"

"लेकिन मजा देखिए कि रामपरबेस चौधरीया सबके ऊपर..."

"गोली मारिए, महाराज, ऐसे ऊपर होने को।" मंधाता मिश्र चिढ़ गए हैं बेतुकी तान सुनकर, "हरियरका पिलुअवा सबको नहीं देखे हैं? एकदम पतरफुनगी पर चढ़ जाता है। लेकिन रहेंगे तो साला पिलुआ ही न।"

मंधाता मिश्र का तर्क गले नहीं उतर दयाशंकर के, पर चुपचाप देखते रहे उस आदमी का चेहरा, जो बस पिता रह गया था।

"चलिए, सोइए आप। थके हुए होंगे।" मंधाता मिश्र ने कहा और उठकर अपने सोने के कमरे में चले गए।

दयाशंकर देर से उठे थे अगली सुबह और रसोईघर के सामने फर्श पर लेटे हुए मुन्नी के बच्चे को खेला रहे थे। मुन्नी सब्जी सुधार रही थी पीढ़े पर बैठी हुई।

"चेतनवा नहीं आई?" पूछा।

"माई न अकेले हो जाएगी।"

"भौजी नहीं आ रही गांव?"

"सोच रहे हैं, ट्रेनिंगवा पूरा कर ले किसी तरह।"

"हमारे बाबू से कोई बात नहीं कर रहा। मां और मामा गप्प लड़ा रहे हैं आपस में।" अंजू ने बच्चे को झपट लिया है दयाशंकर के हाथों से और वहीं फर्श पर बैठ गई है।

"इनके बाबूजी डॉक्टर बनाना चाहते हैं इनको और बच्चा खेलाने में मन लग रहा है इनका।" मुन्नी कोशिश करती है खुश दिखने की।

दयाशंकर देह का सजग होना महसूस करते हैं।

"शतरंज खेलिएगा?" अंजू ने पूछा।

"ई पहले नहाएं तब तो कुछ करेंगे। फजिरे से केवल एक कप चाय पिए हुए हैं।" मुन्नी ने जवाब दिया।

"अंजू हमको एक कप चाय और पिलाएगी।" दयाशंकर को लगा, अंजू को बुरा न लगा हो मुन्नी का झुंझलाकर बोलना।

"बना देते हैं, लेकिन खेलना पड़ेगा।" अंजू ने आंखें तरेरीं।

दयाशंकर भरपूर डूबे उनमें।

"ए महाराज, आपके जैसा अलहदी तो हम देखे ही नहीं आज तक।" मंधाता मिश्र के बोलने के अंदाज से ही जाहिर था कि कोई बड़ी खबर थी उनके पास।

"एस.पी. सहेबवा पर कौन मंत्र मार दिए हैं कि माला जप रहा है।" बच्चे को उनकी गोद से उठाकर अपनी गोद में बिठा लिया है उन्होंने, "चलिए, तैयार हो जाइए झट से। मिलना चाहते हैं आपसे।"

खुशी के मारे चेहरा दमक उठा है दयाशंकर का।

"चाय पी के जाइएगा। इतनी मेहनत से बनाए हैं।" अंजू रसोईघर में से ही चीखी है।

दयाशंकर की तो अक्ल ही नहीं काम कर रही कि अचानक क्या हो रहा है यह सब। अच्छा हो रहा है कि बुरा।

एस.पी. चाय पी रहे थे जब दयाशंकर पहुंचे।

"हम समझे, आप अपने गांव चले गए होंगे।" एस.पी. ने कहा।

"आपको, सर, याद था मंधाता मिश्र का नाम?" दयाशंकर सचमुच अचंभित हैं। 'ऐसे ही जिले का मालिक बना हुआ है।' मन में प्रशंसा का भाव उठता है।

"यह डिपार्टमेंट साला पूरा का पूरा करप्ट हो गया है। जब तक खुद न कीजिए कोई काम, नहीं होगा।"

यह बेबाकी भी अच्छी लगी दयाशंकर को—"कुछ अच्छे अफसरों के कारण ही चल भी रहा है, सर। नहीं तो भठ्ठा बैठा जाता।" कहा।

"एक काम आप लोग अच्छा कर रहे हैं।" एस.पी. ने सिगरेट जला ली है, "इन साले डकैतों को मार रहे हैं।"

"सर, पार्टी असामाजिक तत्त्वों के खिलाफ है।"

"यह साला सिस्टम नहीं हैं न। उनके खिलाफ तो छोड़िए, उनके कंट्रोल में है।" एस.पी. साहब के चेहरे पर वितृष्णा का भाव आ गया है।

"आपके गांव में भी तो एक गिरोह का सफाया हुआ था न?" पूछा।

"आपको, सर, हमारे गांव का भी नाम याद है?" दयाशंकर अबकी सचमुच गिलगिला उठे हैं खुशी से।

"लोगों को, सर, विश्वास ही नहीं है पुलिस पर। नहीं तो गिरोहों को सिर छुपाने की जगह नहीं मिले।"

"यही न दिक्कत है, मि. दयाशंकर!" एस.पी. साहब जाने के लिए उठते हैं, "बी इन टच। संपर्क रखिएगा।"

"क्या गप्प हो रहा था जी? आधा घंटा से चिपके हुए थे?" मंधाता मिसिर डाक बंगले के बाहर ही मंडरा रहे थे।

बताना भी चाहते हैं और बताने में डर भी लग रहा है दयाशंकर को। कितनी तो बातें हुईं। पता नहीं इतना सब कुछ बताकर अच्छा भी किया कि नहीं। क्या जरूरत थी दिखाने की कि इलाके में होने वाले सारे अपराधों का ब्योरा था उनके पास।

दयाशंकर को शक होता है, एस.पी. उल्लू बना रहा था उन्हें। पर दयाशंकर बहुत खुश हैं दरअसल। उन्हें लगता है, डर केवल अपनी डरने की आदत के कारण लग रहा था।

"यही सोसाइटी, जातिवाद, राजनीति वगैरह के बारे में।" झूठ बोल देते हैं।

"आप शतरंज खेलने के लिए बोले थे न?" अंजू बेसब्री से इंतजार कर रही थी उनके लौटने का।

"दू मिनट में हार जाओगी।"

"बाजी लगाइएगा?"

"चलो।"

"चलिए, ठीक है।"

"बाजी क्या लगी है आखिर?" मंधाता मिसिर पूछते हैं।

"इनको ताश का सब खेल सिखाना पड़ेगा हारने पर।" अंजू चहकी।

"और इसको हमारे माथा पर चंपी करना होगा। कहती है कि चंपी कर देते हैं तो पापा केस जीत जाते हैं।"

"नहीं भागिएगा; भगिनी से माथा दबवाया जाता है?" मुन्नी बोली "बुढ़ारी में हाथ कांपने लगेगा।"

"तब यही बाजी ठीक है।" अंजू खिलखिलाई।

दयाशंकर के माथे के अंदर न जाने कब से एक मधुमक्खी भुनभुनाए जा रही है। छोटे-से कमरे की चुप्पी को और सघन बनाती हुई।

"कुछ फैसला हुआ?" मुन्नी कई बार झांक गई है कमरे में।

"कहां हुआ फैसला?" अंजू की थकी हुई आवाज। फिर अचानक जैसे कुछ सूझा उसे—"लेकिन आप तो बोले थे, दो मिनट में हरा देंगे?"

शतरंज उलट दी है उसने, "हार गए आप। घड़ी देख लीजिए।"

उसका पैरों को सीधा करना देखने लगे दयाशंकर।

"बेईमानी की सजा जानती हो?" मुन्नी के जाते ही उसकी कमर को जकड़ लिया अपने पंजों में। वह ठेहुनों पर खड़ी सलवटें ठीक कर रही थी अपनी मिडी की।

"किसने की बेईमानी?" गुदगुदी-सी हुई उसे।

"चालाकी नहीं।" उसे बांहों में समेट लिया दयाशंकर ने और गुदगुदी करने लगे।

"हमको भी आता है गुदगुदी करना।" सम्हलकर उसने भी पोज बनाया प्रत्याक्रमण का।

मुन्नी फिर चली आई थी उनका हँसना-खिलखिलाना सुनकर।

दयाशंकर ने अनदेखा कर दिया मुन्नी को। वे पहले भी उसे इस्तेमाल कर चुके थे जगदीश सिंह की बेटी को पटाने में। एक बार तो पकड़ भी लिया था कि जगदीश सिंह की बेटी की तरफ से जवाबी चिट्ठी उसी ने लिखी थी।

"हमको नहीं, हमको बहुत गुदगुदी लगती है।" अंजू को उकसाया दयाशंकर ने।

"आइए न, बबुआ को पकड़िए जरा। दाल चढ़ा देते हैं।" मुन्नी ने आवाज

लगाई अंजू को।

अंजू ने महसूस किया, उसे गुदगुदा नहीं, सहला रही थीं दयाशंकर की हथेलियां।

"छोटी मां बुला रही हैं।" छूटने की कोशिश की उसने।

"अच्छा लगेगा।" बेकाबू हो रही हैं दयाशंकर की हथेलियां।

"छोड़िए।" वह भागी उन्हें धक्का देकर।

"कौन जीता शतरंज में?" मंधाता मिश्र लौट आए हैं बाजार से और पूछ रहे हैं।

दयाशंकर डरे हुए हैं। दम साधे हुए सुनने की कोशिश कर रहे हैं, क्या कहती है अंजू।

किसी ने भी जवाब नहीं दिया है मंधाता मिश्र के प्रश्न का।

"वही जीती।" डरते-डरते बोले।

"कोई फिकिर है आपको घर-परिवार का? जानते हैं हमारा तबियत ठीक नहीं है, फिर भी एतना देर से आते हैं।" मुन्नी प्रकटतः तो पति को डांट रही है, पर यह संदेश दयाशंकर के लिए है कि उनका खेल अच्छा नहीं लग रहा उसे।

दयाशंकर भी समझ रहे हैं यह बात। चुपचाप बैठे हैं पीढ़े पर। मंधाता मिश्र चकित हैं कि अचानक इतना गंभीर क्यों हो गया था माहौल!

सुबह को गुनी जाने वाली बस पर बैठे तो चैन की सांस ली दयाशंकर ने। पूरी रात इस डर के साये में बीती थी कि अंजू कहीं पोल न खोल दे उनकी। बहुत दुःखी लग रही थी। 'अभागी है!' कहा अपने-आपसे और भरकौली कांड के बाद के घटना-चक्र के बारे में एक बार फिर नए सिरे से सोचने लगे।

19

"एक वसुधा थी। बहुत ताकतवर लड़की थी मन की। बहुत ताकतवर। वस वही दोस्त थी। लेकिन सामाजिक-वामाजिक परिवर्तन की बातों से कोई मतलब नहीं था। नन्हकू सिंह का मजाक उड़ाती थी। लेकिन बहुत साफ-सुथरी आत्मा वाली लड़की थी..." दमयंती धनंजयजी को सुना रही है अपने कुंवरपुरवाले दिनों की बातें—"कहती थी, जो सामाजिक परिवर्तन लाने की बात करते हैं, अपने उन्हें अभागा समझते हैं और दूसरे बेवकूफ। बहुत साफ लड़की थी मन की। डांटती थी हमको कि भावुक नहीं होना चाहिए। और अंत में उसका साथ भी छूट गया...पता नहीं, क्या हो गया हमको...पता नहीं, क्या सोचती होगी..."

"लेकिन यह खबर सच्ची है क्या कि बिना ब्याह किए साथ रह रही है गांव के ही एक लड़के के साथ?"

"रह भी रही है तो ये लोग कौन होते हैं कैफियत तलब करने वाले? भंड़ुवे सब।" नथुने फड़कने लगे हैं दमयंती के, "जानते हैं, श्रीराम पांड़े, जो पंडित कहता है अपने-आपको, कैसा पातकी है उसका परिवार। घर की औरतें सब बीमार हो जाती

थी तो इलाज नहीं करवाता था कि मर जाएगी तो फिर दहेज लेंगे। सूबेदारबो, मटुकबो, गांव की कोई गरीब औरत नहीं बचती थी इन लोगों से। बाप-बेटा, दादा-नाती, सबका सब लार चुआने लगता था। ये लोग कौन होता है वसुधा को कुजात काढ़ने वाला और उससे सफाई मांगने वाला?"

धनंजयजी सुन रहे थे चुपचाप।

"आगे-आगे कौन चल रहा है रे?" थोड़ी दूर हटकर बैठे रमेश से पूछा।

"सबसे ज्यादा तो शिवजी मास्टर बोल रहे हैं।" रमेश बोला।

"मास्टरवा की एक बड़ी बहन विधवा हो गई थी—गंगोत्री फूआ। उसी के साथ सोने लगा था हरामजादा। पेट रह गया तो ले जाकर मथुरा या वृंदावन में छोड़ आया। कुछ लोग कहते हैं, मारकर गाड़ दिया कहीं।" एक और कहानी याद आ गई है दमयंती को।

"दयाशंकर क्या कह रहे हैं रे?" कहानी सुना लेने के बाद फिर रमेश से पूछा।

"दयाशंकर बाबा तो हइये हैं देवता बाबा के साथ। बल्कि वासुदेव सिंह अंड-बंड भी बोल रहे थे उनको।"

"सवाल है कि उसे कुजात डिक्लेयर कर उसका बिगाड़ क्या लेंगे लोग? शी इज ए कैपेबल परसन।" धनंजयजी ने कहा।

"सवाल है कि किसी को कुजात डिक्लेयर करने का अधिकार उनको किसने दिया है?" दमयंती ने पूछा।

"देखो, हमको तो इस तरह की बहस बेकार लगती है। असली चीज यह है कि औरतें सेल्फ-डिपेंडेंट हों। दूसरा कोई उपाय नहीं है रूढ़ियों को तोड़ने का।" धनंजयजी को इससे ज्यादा रुचि नहीं थी इस मुद्दे में।

दमयंती धुआती रही।

"मन तो कर रहा है कि गोली मार दें मस्टरवा को?" कहा, पर यह निर्णय नहीं, सवाल था।

देवता पांड़े की बोलती बंद थी। अपनी आंखों से देख आए थे। दोनों सचमुच साथ-साथ रह रहे थे और खुश थे। उन्हें दिल्ली घुमाया साथ-साथ, आगरा ले गए ताजमहल दिखाने। एक स्वैच्छिक संगठन से भी जुड़े हुए थे दोनों, जो झुग्गी-झोपड़ीवालों के बच्चों के लिए स्कूल और पालनाघर चलाता था। वह बस्ती भी दिखाई थी उन्हें। वसुधा के चेहरे पर की चमक, उसके व्यक्तित्व में धधकते आत्मविश्वास और उसके कुंठाहीन व्यवहार के ओज ने अभिभूत कर दिया था देवता पांड़े को। उन्हें लगा था, वे जन्मदाता उसके जरूर थे, पर वह बहुत बड़ी थी। 'बेटी' की कुंवरपुरवाली धारणा से बहुत बड़ी।

'तो यही चाहते थे न?' पूछा था अपने-आपसे और एक निचाट वीरानगी उतर आई थी चेतना में। देवता पांड़े रोने लगे थे मुंह ढांपकर।

"सब आपका दोस है।" देवता पांड़ेबो कह रही थीं, "देख लीजिएगा, हम जिंदा नहीं रहेंगे कुजात रहकर। जहर खा लेंगे।"

गांव कह रहा था, "आपकी बेटी है तो आप नहीं तो कौन मना करेगा?"

वासुदेव सिंह कह रहे थे, "मना करने का सवाल ही कहां पैदा होता है? सारा कांड इन लोगों का मिल-जुलकर किया हुआ है।"

देवता पांड़े चुप थे। न कुछ पूछते, न जवाब देते किसी सवाल का। मानो कुजात घोषित किए जाने के पहले ही खुद को कुजात मान लिया था।

दमयंती की लिखी एक चिट्ठी दे गया है रमेश। दयाशंकर को लिखा था कि जमकर विरोध करें इस स्त्री-विरोधी षड्यंत्र का। वह साथ थी उनके।

"बड़ी जोर से खिसियाई हुई थी। मास्टर को उड़ाने को भी बोल रही थी।" रमेश ने बताया।

अच्छा लगा दयाशंकर को। पहली बार उनके ऊपर विश्वास किया था दमयंती ने। भरकौली-कांड के बाद दिए गए भाषण का असर था शायद।

"धनंजयजी बहुत मानते हैं दमयंती को, नहीं?"

"अब ई सब हमको नहीं बुझाता, बाबा।"

"बाबा ही काम आएंगे, बाबू।" दयाशंकर ने उसकी पीठ पर एक प्यार-भरी थाप जमाते हुए कहा।

"सब जानते हैं अपने और हमसे पूछते हैं।"

"बॉडीगार्ड हो न, भाई।"

"अब मुंह मत खोलवाइए। समझ गए न?"

दयाशंकर को डर लगा सोचकर कि कहीं दुश्मनों के हाथ पड़ गया यह लड़का तो सब उगलवा लेंगे उससे।

"बॉडीगार्ड का धरम है कि जान जाए तो जाए, भेद नहीं खोले।" समझाया।

"आपको बता दिए, इसका मतलब...।" रमेश लजा गया है अपने छिछोरेपन पर।

"देवता काका के बारे में कुछ कहने के पहले हमारे एक-दो सवाल का जवाब दे दे गांव।" दयाशंकर ने बालचन पांड़े की दालान में जमा लोगों से कहा, "डॉलर सिंह की बेटी ने मद्रासी लड़के से शादी कर ली है तो उनको भी कुजात घोषित किया जाना चाहिए कि नहीं? अर्जुन और भीम को क्यों नहीं घोषित किया गया था कुजात? भगवान राम की बहन एक ब्राह्मण के साथ चली गई तो वे भी कुजात हो गए कि नहीं?"

"हमको कुजात-फुजात में विश्वास नहीं है।" दिनेश सिंह ने अपने परिवार का पक्ष रखा।

"अरे बदमास, भर गांव के बेटा-बेटी को बिगाड़ेगा वसुधवा के चलते?" श्रीराम पांड़े गुस्साए दयाशंकर के ऊपर।

"वसुधा जैसा है गांव में किसी का भी बेटा या बेटी?" दयाशंकर ने पूछा।

"हमारी होती तो ढठिया दिए होते अभी तक।" कलक्टर सिंह ने कहा।

देवता पांड़े की आंखों में आंसू आ गए हैं।

"हमारा तो कहनाम है कि ई जितना शहरवाले बाबू और बबुई लोग हैं, या तो वहीं रहें या कायदे से रहें। हम लोगों को यहीं रहना और ब्याह-शादी करना है बेटा-बेटी

सबका।" शिवजी पांड़े ने धनजी पांड़े पर निशाना साधा, "कुंवरपुर में वर्णसंकर राज नहीं चलेगा।"

"देवता भाई यह मत समझें कि दबाया जा रहा है उनको।" हरिद्वार पांड़े ने कहा, "उनको यह चाहिए कि वसुधा को समझाएं।"

"वासुदेव सिंह के मुंह में दही जमा हुआ है?" दयाशंकर ने इशारा किया तो सुरेश बोला।

"किच्चीन जइसा पीछे पड़ी हुई है तो क्या करे बेचारा? ऊ तो चाहिए रहा है कि पिंड छूटे।" हाकिम सिंह ने मोर्चा लिया।

"अन्हरी किच्चीन जइसा लग जाएगी तुम्हारे पीछे तो घर में रख लोगे उसको?" टेंगर सिंह को जोश आ गया अचानक, "हई घवाही पिलिया पीछे पड़ जाएगी तो पलंग पर सुता लोगे?"

"कुछ लोग सुता भी लेंगे।"

"हम बेचारे जंगी भाई का बात नहीं कह रहे।" कहा टेंगर सिंह ने और बगल में पड़ा ईंट का टुकड़ा चला दिया जंगी सिंह ने। टेंगर सिंह भी खोजने लगे ईंटा-झिकिटा और उन्हीं को मनाने में लग गए लोग। वाद-विवाद बंद हो गया।

"बस हो गया?" एक-एक कर उठकर जाते हुए लोगों से पूछा शिवजी पांड़े ने।

"तो कपरफुटव्वल करे आदमी?" हरिद्वार पांड़े ने कहा आंखें गुरेरकर और अपने खलिहान की ओर चल पड़े।

"अब बचवा, हम का बताएं ई मूढ़ सबको कि कुछ लोग धरती पर पैदा ही होता है बड़ा काम करने के लिए। हमारे-तुम्हारे जैसा नहीं होता।" बहुत दिनों के बाद देवता पांड़े का कंठ खुला है।

"हमारे लिए मर गई, ए बबुआ!" देवता पांड़ेबो ने कहा।

"समय होत बलवान।" दयाशंकर की समझ में नहीं आया, क्या कहें तो कह दिया। यह सबसे आसान तरीका था निष्पक्ष और निर्विवाद बने रहने का। भविष्य के खाते में डाल दिया जाए मुद्दे को।

"देखे न, मौका मिलते ही कैसे झट से नाम उछाल दिया डॉलर सिंह का? सोचा एक सेकेंड के लिए भी कि उठना-बैठना है मास्साब के साथ?" कन्हैया सिंह को मौका मिला है दिनेश सिंह के सोए क्षत्रिय को जगाने का।

"गांव भी बहुत अच्छा काम नहीं कर रहा था।" दिनेश सिंह ने कहा।

"गांव को तो दमयंतिया का डर दिखाकर चुप कराया गया है।"

"फालतू बात मत किया करो।" छबीला सिंह ने डांटा।

"फालतू बात नहीं कर रहे। शिवजी बाबा को बाहरी लोगों के माध्यम से धमकाया गया कि धनजी पांड़े के यहां दयाशंकर का आना-जाना रोकेंगे और वसुधा वाला मुद्दा उठाएंगे तो छोटे हो जाएंगे छौ ईंच।"

"तो मत बोलें। जिसको जो अच्छा लगे, करे। अपना बेटा-बेटी किसी का मान रहा है कोई बात कि दूसरा मानेगा?" रंगू सिंह झुंझलाए।

"ए भाई, हम तो कल्पना भी नहीं किए थे कि इतना नपुंसक भी हो सकता है कोई।" कन्हैया सिंह फट पड़े हैं, "एक साला लखैरा जबरदस्ती घुस रहा है किसी के घर में, अपहरण और मर्डर का डर दिखाकर उसकी औरत से जबरदस्ती गोड़ दबवा रहा है, मना करने पर जान मारने का धमकी दिलवा रहा है और कहा जा रहा है कि कोई कुछ मत बोले।"

"तुम देखे हो जबरदस्ती गोड़ दबवाते?" छबीला सिंह ने पूछा।

"धनजी पंड़इया रो रहा था कि पता नहीं क्या कह दिया है दयाशंकरा ने कि हदस गई है! और आप कहते हैं, देखे हो?"

"हम नहीं मानते।" छबीला सिंह बोले, "बुरा समय आया हुआ है। बात का बतंगड़ बना रहे हैं लोग। न उम्र का लिहाज रहा, न रिश्ते का।"

"कन्हैया भाई, समस्या जरूर है। लेकिन समस्या के नाम पर सभी संबंधों, सभी स्मृतियों, सभी मूल्यों को अपदस्थ हो गया मान लेना ठीक नहीं है।" दिनेश सिंह ने कहा, "मर्यादाहीनता कब नहीं रही गांव में? अभी भी नौलाख महतो घुसा रहता है चूड़ामनबो के घर में। सभी जानते हैं। पर इससे न हर आदमी नौलाख महतो हो जाता है, न हर औरत चूड़ामनबो।"

"इनका मन है कि सब काम-धाम छोड़कर दमयंती-दयाशंकर और नारद सिंह-श्रीभगवान सिंह के झगड़े में तलवार भांजता रहे आदमी। हद्द हो गया साला पॉलिटिक्स भी!"

"पछताइएगा रंगू भाई, पछताइएगा। सब महात्मा गांधी बनना निकल जाएगा।" कन्हैया सिंह ने कहा।

इस पर रंगू सिंह का कहना था कि 'कल भी पछता रहे थे, आज भी पछता रहे हैं, आगे भी पछताएंगे।'

"का हो पंडित! ई का हो रहा है आजकल?"

दयाशंकर पहचान गए हैं सवाल पूछने वाले को। सिकरहटा के साधू सिंह का लड़का था—नारद सिंह का दाहिना हाथ।

"ऐसे ही बाजार आए थे।" दयाशंकर जल्दी से निकल जाना चाहते हैं वहां से। पर वह रास्ता रोककर खड़ा हो गया है—"आप तो मरदे कहीं का, अइसा कर रहे हैं जइसे कि चीन्हते ही नहीं हैं?"

"ई बात नहीं है, भाई, जरूरी काम है बजरवा में।"

"ई पंडित का जले पंखुरा नहीं चढ़ाइएगा, तले सोझ मुंह बात नहीं करेगा।" बेंच पर बैठा हुआ एक दूसरा आदमी बोला।

दयाशंकर का माथा ठनका। वह अकेले नहीं था। अब उनका खून तेजी से दौड़ने लगा था रगों में और उसी तेजी से दिमाग भी। मन ही मन अंदाजा लगाया उन्होंने कि दौड़ते हुए एक ही सांस में थाना तक पहुंच सकते थे कि नहीं।

"नान्ह सबके साथ रहकर बुधियो नान्हे जइसा हो गया है, का रे पंडीजीउवा?

प्रेम से बोल रहे हैं तो बुझाइए नहीं रहा है!" उसने गट्टा पकड़ लिया था दयाशंकर का।

"नारद भइया तुम लोगों का का बिगाड़े हैं रे कि उनके पीछे पड़ा हुआ है?"

"देखिए, ई तरीका ठीक नहीं है बात करने का।" दयाशंकर ने देखा, दो और लोग आ गए थे।

"ई तरीका ठीक है?" एक जोरदार धूंसा पड़ा उनकी पीठ पर।

झटके से हाथ छुड़ाया और खरहे की तरह भागे दयाशंकर। भागते गए, भागते गए। दम फूल रहा था; लग रहा था, फेफड़ा फट जाएगा दौड़ते-दौड़ते, पर दौड़े जा रहे थे। बाजार में लोग अवाक् थे उन्हें इस तरह दौड़ता देखकर। सिपाही तक हड़बड़ा गए उन्हें आंधी-तूफान की तरह थाने के अंदर घुसता देखकर।

"हमको किडनैप करने आया है।" कुत्ते की तरह हांफ रहे हैं दयाशंकर। मुंह से निकलती लार गालों पर बह रही है।

"किडनैप करने?" नए आए दरोगा को विश्वास नहीं होता।

गुनी में बाजार का दिन था यह। थाने के बाहर भीड़ जमा होने लगी थी।

"बाजार से बाहरवाले पुलवा के पास जमा हुआ है सब।"

"अरे, ए सरजू बाबू, जरा देखिए तो।" दरोगाजी ने आदेश दिया।

"गाड़ी-घोड़ा कुछ हइए नहीं है।" छोटा दरोगा, सरजू बाबू, आदेश सुनकर बुदबुदाए और चार सिपाहियों के साथ बाहर निकल गए।

"चीन्हते हैं किसी को उनमें से?"

"चीन्हबे नहीं करते हैं? सब नारद सिंह का आदमी है। खुलेआम हथियार लेकर घूम रहा है।" हांफते हुए ही कहा दयाशंकर ने।

सिपाही किसी को भी अंदर नहीं आने दे रहे थे।

"का जी पाठकजी...सिपाही दौड़ा दिए हमारे पीछे?" अवधेश चौधरी धड़धड़ाते हुए घुस गए हैं पांच-छः आदमियों के साथ, "खाली जातिवाद हो रहा है इस थाने में। हम आपसे कह देते हैं कि..."

"आप कौन बात पर एतना गरम हो रहे हैं?" दरोगाजी अकचका गए हैं।

"पूछिए सरजू बाबू से, ई का बोले हमको?" अवधेश चौधरी की आवाज और ऊंची हो गई है, "बोले कि एगो महापातर का अपहरण करने के लिए हम बैठे हुए थे पुल पर।"

"आप भी अवधेश बाबू, ऐसा न बात करते हैं कभी-कभी कि एकदम मन खराब हो जाता है।" दरोगाजी अनसाए।

"हम तो कहिये दिए कि खाली जातिवाद हो रहा है गुनी थाना में।"

"आपके कह देने से हो जाएगा?"

"नहीं होगा तो बताइए न कि ई साला टेररिस्ट सब घर फूंकते और लूटपाट मचाते चल रहा है और आप हमारे पीछे सिपाही दौड़ाते चल रहे हैं, ई का है?"

"किसका घर फूंके हैं और कहां लूटपाट किए हैं?" दयाशंकर ताव खा गए हैं।

"देखिए दरोगाजी, हम ई साला महापातर से बात नहीं कर रहे हैं। समझा

दीजिए।" अवधेश चौधरी गरजे।

"रामपरबेस चौधरी के बल पर ई बोली निकल रहा है, समझ रहे हैं हम।"

"देखिए, देखिए, ई साला को। बेचारे भइया यहां हइयो नहीं हैं और उनका नाम घसीटता है बीच में।"

"गाली-गलौज मत कीजिए।"

"तोरा बहिनी का..." अवधेश चौधरी गाली पूरी करते, उसके पहले ही उनके साथ आए लोग टूट पड़े थे दयाशंकर पर।

"ई सब हम बरदाश्त नहीं करेंगे, अवधेश बाबू...अरे पकड़ो साला सबको..." दीनानाथ पाठक एकदम हड़बड़ा से गए हैं थाने के अंदर शुरू हो गई मारपीट को देखकर।

"बड़ा हड़कंप मचा हुआ है, सिपाहीजी?" थाने के बाहर पूछा किसी ने।

"पाठकजी से ई थाना नहीं चलेगा।" सिपाही ने थाने के गेट के बाहर जमा भीड़ को बताया, "छोड़ देना चाहिए था दोनों को। फरियाते रहते साले आपसे में।"

"बंद कर देंगे सबको। बूझते हैं कि नहीं?" दरोगाजी कड़के।

"देख लिए न आप?" दयाशंकर का ऊपरवाला होंठ फट गया था। खून चाटते हुए बोले।

"चुप रहिए, महाराज। आप का देखाइएगा हमको? नरक बनाए हुए हैं साला पूरे माहौल को।" दरोगाजी ने डपट दिया।

अवधेश चौधरी ने कनखियों से देखा अपने साथ आए आदमियों को और मुस्कराए।

"अइसे तो थाना-फाना नहीं चलने वाला। ई कोई बात है कि थाना के अंदर हाथ छोड़ देंगे किसी पर।" अवधेश चौधरी के चले जाने के बाद सरजू बाबू धुआंते रहे।

दरोगाजी नौकरी की मजबूरियों की गाथा खोलकर बैठ गए हैं—"समझ जाइए कि ई सबका ताकत इतना बढ़ गया है कि कल कहना शुरू कर देगा कि विधायक के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया दरोगा ने और पूरा विभाग हमारे पीछे पड़ जाएगा। माने कि इज्जत कैसे बचे, यही चिंता लगी रहती है।"

दयाशंकर सोच रहे थे, अब गांव कैसे पहुंचा जाए। पहली बार उन्हें अपना निशाना बनाया था दुश्मनों ने और हिम्मत जवाब दे रही थी।

"ई साला सब गुनी में आता ही काहे को है? खाली भेद लेने आता है।" अवधेश चौधरी का गरजना थाने के बाहर भी जारी है—"लेकिन अंतिम बार चेता देते हैं कि गुनी में हम नहीं होने देंगे ई सब। पंखुरा कबार लेंगे सार लोगों का।"

"हुमाच के गलीया में कोई दू तबड़ाक मारता, बस भासन देना बंद हो जाता।" थाना के अपमान से दुःखी हैं सरजू बाबू। और अपनी असहाय स्थिति से भी।

"अबेर करने का फायदा नहीं है, दयाशंकरजी। दिने-दिने निकल जाना ठीक रहेगा।" दरोगाजी ने सलाह दी और पेशाब करने थाने के पिछवाड़े चले गए।

दयाशंकर डर रहे थे बाहर निकलने में, पर जगनाथ, नंदलाल, गोसांई पांड़े, सुरेश वगैरह दिखे थाने के बाहर इंतजार करते हुए तो हिम्मत वापस आ गई।

"आप बाबा, अकेले और बिना हर-हथियार के मत निकलिए।" जगनाथ खिन्न है, "आपको मालूम है, भीतर ही भीतर कितने ही लोग कटकटाए हुए हैं।"

दयाशंकर मानते हैं, गलती हो गई थी उनसे।

"बाबूजी का दवइया ओरा गया था, सो हड़बड़ाए हुए चले आए।" सफाई पेश की।

"अच्छा महटिआओ अब। काल्हे सुदर्शन भइया झाड़ा फिरने जा रहे थे कि सियार चहेंट लिया।" कहकर जोर की किलकारी मारी गोसांई पांड़े ने।

"तोरे मउगी को चहेंटा होगा, सो याद पड़ रहा है।" सुदर्शन पांड़े ने वार लौटाया और इंतजार करने लगे कि कोई कुछ बोले कि ईंट का जवाब दें पत्थर से।

इधर बभनटोल में कोहराम मचा हुआ था। शिवजो पांड़ेबो अपने छत पर खड़ी थीं और बुलाको फुआ अपने आंगन में और एक-दूसरे के वंश-वृक्ष को उखाड़ने-पुखाड़ने में जुटी हुई थीं।

"जो हमारे दयासंकर के बारे में जबून बोले, उसका बेटा खा जाना, हे भगवती! उसका बंस बरबाद कर देना, हे ठोरा बाबा..." बुलाको फुआ गला फाड़-फाड़कर कह रही हैं—"हमारे लइका का तनि नाम का हो गया जवार में, करेजा फटने लगा ई रांड़ी सबका! हे हरहर महादेव, और नाम हो हमारे दयाशंकर का...ई बिहूनी सबका करेजा और फटे, ए काली मइया..."

"ई का हो रहा है, फुआ?" आंगन में पैर रखते ही पूछा दयाशंकर ने।

"हई सिवजीउवाबो, दोगला को बियाहल, कहती फिर रही है कि चोर-डाकू के साथ रहेंगे तो और का होगा...अपने भतार से काहे नहीं पूछती कि ऊ अपने का है!"

"ऊ टोला-भर को सुनाई, अब तुम गांव-भर को सुना दो..." दयाशंकर गुस्सा गए हैं।

थककर पीढ़े पर बैठ गई हैं बुलाको फुआ—"छत का गुमान देखाती है रांड़ी! भतार दोगला नहीं होता तो...अरे, हमारे बाल-बच्चा का जिनगी रहा तो एकतल्ला क्या चरतल्ला पीटेगा एक दिन..."

"हमको काम नहीं है चरतल्ला का। अपना ढहल-ढिमलाइल घर ही अच्छा लगता है हमको।" रामज्ञान पांड़ेबो का मन रोने-रोने जैसा हो गया है बुलाको फुआ की हरकत पर। कहां तो आग को ठंडा होने देतीं, और तेल डाले जा रही थीं उसी में।

"हमारे भइअवे को ठोरा बाबा निसहाय बना दिए नहीं तो ईहे सबका हिम्मत था बढ़-बढ़कर बोलने का...बालचन के घर का?..." कुछ देर तक बड़बड़ाती रहीं फिर चुप हो गईं बुलाको फुआ।

"सचमुच उठाने आया था, बबुआ?" हिचकते हुए पूछा रामज्ञान पांड़ेबो ने।

"उठाने-ओठाने कोई नहीं आया था, माइ। अइसहिं बाता-बाती हो गया अवधेसवा से...बिगड़ा हुआ है..." दयाशंकर के बोलने के अंदाज से जाहिर था कि उन्हें पसंद नहीं थी यह चर्चा। और इसी बात का सबसे ज्यादा दुःख है रामज्ञान पांड़बो को। दयाशंकर उनसे छिपाते हैं सच्चाई।

"पइसा-पैरवी का जोर है ऊ सबके पास। का करोगे? नहीं तो थाना में मारपीट करने का हिम्मत पड़ता!"

'यह बात किस साले ने फैला दी?' ऐसे अकुला उठे हैं दयाशंकर मानो बरतोड़ घाव को चुटकी से मसल दिया हो किसी ने।

"...भगवानजी को का दोस दें अब...एतना बोझा रख दिए कपार पर..."

"हम भुला गए हैं कि याद पड़ा रही हो?"

रामज्ञान पांड़ेबो को झिड़क तो दिया दयाशंकर ने, पर अकेले हुए तो महसूस किया कि सचमुच जरूरत थी उन्हें याद दिलाए जाने की कि पूरे परिवार का बोझ था उनके सिर पर।

दयाशंकर ने फैसला किया था कि घर के बाहर पैर नहीं रखेंगे कुछ दिनों तक। पर इस फैसले के परखच्चे उड़ाती चली गई यह खबर कि अवधेश चौधरी का अपहरण हो गया था।

'भागो!'—मन ने तत्क्षण कहा।

"आपको तो फंसाएगा, बाबा!" जगनाथ भी यही कह रहा था, "निकल जाइए यहां से।"

दयाशंकर फैसला करते हैं—नहीं भागेंगे। ज्यादा सच यह कहना होगा कि पुलिस पहुंची, उस समय तक कोई फैसला ही नहीं कर पाए थे दयाशंकर। दो तरह के विचार समानांतर रूप से चल रहे थे दिमाग में। गुनी की घटना से सिद्ध हो चुका था कि कम से कम वामपंथी ताकतों से मुकाबले के मुद्दे पर समझौता हो चुका था रामप्रवेश चौधरी और नारद सिंह के बीच। और पकड़े जाने का मतलब था खुद को उस पुलिस को सौंप देना, जो वही करती, जो कहते वो लोग। दूसरा विचार भी उतना ही दमदार लग रहा था। भागने का मतलब होता—उन्हें शक करने और झूठी कहानियां गढ़ने का मौका देना।

पुलिस के पहुंचने की खबर मिलते ही भागने के विकल्प को तिलांजालि दे दी दयाशंकर ने। यह खयाल कौंधा कि गिरफ्तारी की घटना को अधिक से अधिक नाटकीय बनाना था, खूब शोरगुल मचाना था; किसी तरह बात एस.पी. तक पहुंचानी थी।

"देखिए, हम तैयार हैं चलने को। लेकिन यह जरूर बताया जाए कि गिरफ्तार करने आए हैं कि मदद मांगने?" पेशेवर नेता की तरह निडर आवाज में पूछा दयाशंकर ने।

"आप भी हद्द बात करते हैं, महाराज। गिरफ्तार करना होता तो कर नहीं लिए होते अब तक।" पाठकजी के चेहरे पर उठ-बैठ करते दयनीय ऊब का भाव बोला।

"अगर यह बात है तो अपने आदमी लोगों को जरा समझाइए कि किससे कैसे बतियाया जाता है।" दयाशंकर ने दूधनाथ सिंह की दालान के सामने जमा हुए लोगों को सुनाकर कहा।

"ई जोर-जुलूम का राज नहीं चलेगा!" जमीन पर घिसटता चला आया भरोसा चीखा है।

सैकड़ों लोगों की खमखमाई हुई भीड़ को देखते हैं दीनानाथ पाठक और अपनी

गलती का अहसास होता है उन्हें। अपने सिपाहियों के चेहरे पर उन्हें दशहत की परछाईं नजर आती है।

"ई काम ठीक है, दयाशंकरजी?"

"जेहल में डालना है तो ऊ सबको डालो जो हमारे बाप को मारा, हमको लंगड़ा-लूल्हा बना दिया।" एकमात्र बची हुई बांह को हवा में लहराता है भरोसा।

"छूए कि लदड़ी फाड़ देंगे।" कोई चीखा है पीछे स और पोजीशन लेने के लिए उपयुक्त जगहों की ओर नजर दौड़ाने लगे हैं सिपाही।

"साथियो, आप लोग शांत रहिए! दरोगाजी अपना कर्तव्य निभाने आए हैं, उनके ऊपर नाराज होना ठीक नहीं हैं।" दयाशंकर ने अपील की।

"ई सबको, बाबा, खाली गरीबे-मजूर मिलता है करतब निभाने के लिए?"

"हमारी विनती है आपसे, कोई गड़बड़ी नहीं हो।" दयाशंकर ने भीड़ को हाथ जोड़कर कहा।

दीनानाथ पाठक की हिम्मत नहीं पड़ी दयाशंकर को जीप में पीछे बैठने के लिए कहने की।

"एगो बात का बुरा मत मानिएगा, दयाशंकरजी।" जीप नहर के पुल को पार कर गई तो कहा, "आप पीछे बैठ जाइए। नहीं तो दस गो आदमी दस तरह का बात कहेगा। का हो? गलती कह रहे हैं?" अपने सिपाहियों से पूछा।

"जो जइसा बोएगा, वइसा ही न काटेगा, हुजूर। अवधेश चौधरी बहुत अनेत कर रहे थे।" गुनी थाना के सिपाहियों ने भी जीने का तरीका सीख लिया है बदले हुए माहौल में।

"देख रहे हो न! माधड़चोद लोग कह रहे हैं कि पुलिस निकम्मी हो गई है। ई नहीं कह रहे हैं कि पुलिस क्यों ऐसी हो गई। भठियारा कहीं का!" पाठकजी पूरे रास्ते गाली देते गए पुलिस के दुश्मनों को।

"क्या जी नेताजी, हम लोग का नौकरिया खाइए के दम लीजिएगा?" दयाशंकर सोच रहे थे कि बिक्रमगंज पहुंचने के बाद पता नहीं क्या करें पुलिसवाले, पर डी.एस.पी. की हँसती हुई मुखमुद्रा देखी तो चैन मिला।

"दीनानाथ पाठक बता रहे थे कि आपके साथ बहुत बुरा हुआ उस दिन। आप सुने ही होंगे, छुद्र नदी जल भरि उतराई, थोरे धन ज्यों खल बौराई।" डी.एस.पी. की निगाहें दयाशंकर के चेहरे पर जमी हुई थीं।

बस तीन ही लोग थे कमरे में। सादे ड्रेस में बैठे आदमी को नहीं पहचानते थे दयाशंकर।

"आप ही बताइए, किसका हाथ हो सकता है?" सादे ड्रेसवाला आदमी बोला।

"अपने ही आदमी हैं।" डी.एस.पी. ने दयाशंकर की आंखों में छपी प्रश्नाकुलता का समाधान किया। समाधान संतोषप्रद नहीं था। दयाशंकर सोचते रहे उस आदमी की सही पहचान के बारे में।

"हमसे पूछा ही क्यों जा रहा है?" चेहरे पर मुस्कराहट लाने की चेष्टा की उन्होंने।

"अमेरिका के राष्ट्रपति से पूछें? अपने घर की बात अपने ही लोगों से न पूछनी पड़ेगी?" भाषा कह रही थी कि कोई बड़ा अधिकारी था सादे ड्रेसवाला आदमी।

"हमारे ऊपर नाहक ही शक किया जा रहा है। पता लगाकर देख लिया जाए कि हम उस तथाकथित घटना के बाद एक दिन भी गांव से बाहर निकले?"

"गांव से बाहर निकलना इतना जरूरी भी नहीं था!"

"देखिए, फिर वही बात..."

"आपको तो, महाराज, कुछ कहा भी नहीं जा रहा है। बस इतना ही पूछा जा रहा है कि आप क्या सोचते हैं घटना के बारे में?" डी.एस.पी. ने हस्तक्षेप किया।

"बिना कुछ जाने-सुने कोई क्या कह सकता है?'

"माने कि नहीं बताइएगा कुछ भी?"

"अब हम क्या कहें आपसे! नहीं भरोसा है तो डाल दीजिए जेल में।"

"अच्छा छोड़िए, यही बता दीजिए कि आपके लोगों का काम है कि नहीं? बस 'हां' या 'ना' में।" सादे ड्रेसवाला बोला।

"अब इस गलतफहमी को कैसे दूर करें हम। इस तरह का काम करने वालों से कुछ भी लेना-देना नहीं है हमारा।"

"अब आप ज्यादती कर रहे हैं। समझे कि नहीं? आपको पता ही नहीं है कि आपकी पार्टी के लोग ए.के. और कार्बाईन लेकर चलते हैं, थाना लूटते हैं?"

"हमारी पार्टी के लोग नहीं करते। आपको मालूम है, लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं हम लोग।"

"आप दमयंती को भी नहीं जानते?"

"देखिए सर, गलत मत समझिए हमको। हम जानते हैं दमयंती को। एक ही गांव के हैं तो कैसे नहीं जानेंगे? लेकिन उसका रास्ता अलग है, हमारा अलग।"

"दोनों रास्ते कहीं नहीं मिलते? कभी नहीं मिलते?" व्यंग्य का भाव था सादे ड्रेसवाले के चेहरे पर।

दयाशंकर ने देखा और सोचने लगे, जवाब में कहें कुछ कि चुपचाप बैठे रहें या कहें तो क्या कहें?

"देखिए दयाशंकरजी, हम साफ-साफ बात करना पसंद करते हैं।" डी.एस.पी. ने दयाशंकर को चुप देखा तो मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ाया, "उसका रास्ता अलग, हमारा अलग—यह सब केवल दिखाने के लिए है। अगर सच का ब्राह्मण का बेटा हैं तो चुरकी छूकर कहिए कि आपका उन लोगों से मिलना-जुलना, बात-बिचार नहीं है।"

"चुरकी क्या, आप बेटा के माथे पर हाथ रखकर कहने को कहिएगा, तब भी हम कह देंगे। पर आप लोगों को जब विश्वास ही नहीं करना है..."

चुप्पी छा गई है कमरे में। सादे ड्रेसवाला आदमी उठा चुपचाप, सिगरेट जलाई और बाहर चला गया।

"देखिए, दयाशंकरजी।" डी.एस.पी. आकर दयाशंकर की बगलवाली कुर्सी बैठ गए, "मदद कर दीजिए। इतना दबाव आ रहा है ऊपर से कि क्या बताएं आपको।

नहीं तो हमको किस बात का गम था? साले बनाए हैं पचास लाख, दस लाख हगते और वापस आ जाते।"

"विश्वास कीजिए, हम झूठ नहीं बोल रहे। हमको कुछ भी मालूम नहीं है। सुने तभी लगा हमको कि हमारी किस्मत ही खराब है। सब कोई यही सोचेगा कि..." अपनी बात पूरी कर पाते दयाशंकर उसके पहले ही जा चुके थे डी.एस.पी.। कमरे में अकेले दयाशंकर रह गए थे।

जैसे-जैसे दोपहर ढल रही है, दयाशंकर के मन का डर बढ़ता जा रहा है। दयाशंकर से पिटाई बरदाश्त नहीं होगी। मन कहता था, कुछ भी झूठ-सच बताकर छुड़ाओ अपना पिंड। आखिर मालूम तो था ही कि धनंजयजी का ठिकाना कहां-कहां होता था। उसके बाद? कंपकंपी समा गई है दयाशंकर की देह में।

थाने से बाहर निकले, तब भी बहुत दूर तक साथ-साथ चला थाने का डर। डी.एस.पी. बिना कुछ कहे चले गए थे। पता नहीं क्या सोचकर जाने दिया था दयाशंकर को।

"का चुप साध रहा बलवाना। सोच क्या रहे हैं अब? एक गरमा-गरम वक्तव्य दे दीजिए अखबार में, पुलिसिया दमन-चक्र के खिलाफ। जब तेल गरमा ही गया है तो छनर-मनर होने दीजिए।" मंधाता मिश्र बोले।

"ठीक रहेगा वक्तव्य देना?"

"काहे नहीं ठीक रहेगा? आपने करवाया है अपहरण? नहीं करवाया तो क्या अधिकार है इन लोगों को कि इस तरह उठा लाएं?"

"नहीं, हमारा मतलब था कि इतना लाइम लाइट में आना..."

"आपको बुझाता अभी भी कुछ कम है, दयाशंकरजी।" मंधाता मिश्र अनसाए, "लाइम लाइट में आने से ही बचिएगा! पुलिस को ज्यादा फुटानी करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। हमको पूरा विश्वास है—आज भले ही जाने दिया, आपको फिर उठाएंगे ये।"

दयाशंकर को डर लग रहा है वक्तव्य देने में। नींद नहीं आ रही। एकटक देखे जा रहे हैं धीरे-धीरे चलते सीलिंग पंखे को। मन हो रहा है कि सुबह की पहली बस पकड़कर ही एस.पी. के यहां चले जाएं। अपनी सारी उलझन बता दें।

"एस.पी. कुछ लगता है आपका?" मंधाता मिश्र ने सुनी उनकी योजना तो पूछा।

"अच्छा आदमी है।"

"गलतफहमी है आपको। आपके जैसे बहुत-से लोग पोस रखे होंगे उसने।"

"पर यह काम बहुत बड़ा हो गया, पाहुन।" यह खयाल रह-रहकर उनके दिमाग में आता है कि भले ही उनकी कोई भूमिका नहीं रही हो अवधेश चौधरी के अपहरण में, लोग सोचेंगे ऐसा और मन ही मन लोहा भी मानेंगे उनकी ताकत का।

"धनंजयजीउवा के पास एक खुराफाती ब्रेन तो था ही, अब एक माध्यम भी मिल गया है उसको।"

"दमयंतिया का ही काम है, नहीं?"

"बेशक।"

"ठीक किया?"

"ठीक-गलत का तो यह है कि आने वाला कल ही बता सकेगा। कुछ भी हो सकता है। यह भी संभव है कि डरकर दड़बे में चले जाएं ये लोग और यह भी हो सकता है कि आरपार की लड़ाई के लिए तैयार हो जाएं।"

"हमको लगता है, दड़बे में तो नहीं जाएंगे, पर गुंडागर्दी भी नहीं करेंगे पहले जैसी।" दयाशंकर ने ढाढस बंधाया अपने-आपको।

"लेकिन आप तो मान के चलिए अब कि कुछ लोगों से खतरा है आपको।" मंधाता मिश्र ने कहा।

अखबार में छपा दयाशंकर का बयान रखा हुआ है सामने। दमयंती तय नहीं कर पा रही कि आखिर खीजी हुई-सी क्यों है दयाशंकर का बयान पढ़कर।

"दिस दयाशंकर इज ऑलसो क्वाइट ए कैरेक्टर।" धनंजयजी बोले, "कैसा आदमी है?"

"इतना कुछ कर रहा है तो कैसा आदमी कहिएगा?" बोली।

दमयंती जब भी सुनती है दयाशंकर के बारे में, तुलना करने लगती है मन ही मन कि जो वह कर रही है, वह ठीक है कि जो दयाशंकर कर रहे हैं, वह। कुंवरपुर वाले तो यही मानते रहे कि दयाशंकर ही ठीक होते हैं हमेशा।

"मंधाता मिश्र उसको प्रोजेक्ट करने के चक्कर में लगे रहते हैं।"

"ऊपर-ऊपर छाली काटना सिखा रहे हैं।" खिन्न दिख रही है दमयंती।

"चलो, जाने दो। ऐसे चोंचलों की भी बड़ी अहमियत है इन तथाकथित डेमोक्रेसीज में।"

"यही बेईमान तो चलाता है डेमोक्रेसी।" मिट्टी के उस कमरे की ओर ध्यान चला गया है दमयंती का, जिसमें रस्सी से बंधे पड़े थे अवधेश चौधरी, "मन करता है, दोनों हाथ-गोड़ तोड़ दें हरामखोर का।"

"पहले ही बहुत पीट चुकी हो।"

"इतना कठकरेजी कैसे हो गई, रे रमेसवा?" कमरे के बाहर पहरे पर तैनात मानिक फुसफुसाया।

"काली माई है।" कहकर फिह् से हँसा।

दमयंती से वह भी चिढ़ा हुआ है आज। चमड़े की बेल्ट से उसकी पिटाई की है दमयंती ने। अभी तक जलन हो रही है पीठ में।

"रमेश!"

दमयंती की आवाज सुनते ही वह दौड़ा।

"वहां क्या कर रहा था?"

चुपचाप खड़ा है वह। उसकी कमीज उठाकर उसकी पीठ पर पड़ी सांवली धारियां देखती है दमयंती।

"हमको गुस्सा आए तो भाग जाना आगे से।" मन गीला हो गया है उसकी पीठ पर बेल्ट के निशान देखकर।

"आज सब कोइये डरा हुआ है तुमसे।" रमेश बोला हिम्मत बटोरकर।

"तुम कुंवरपुर चले जाओ कल सबेरे ही। वहीं अपने बाबूजी के पास रहकर पढ़ना।" दमयंती कहती है, पर जानती है, रमेश नहीं जाएगा।

"ई अब का पढ़ेगा-लिखेगा?" कह देता है कोई तो छाती जलने लगती है दमयंती की। पर सम्हाल लेती है अपने-आपको।

"आज बेल्ट खाया है न, कल गोली खाएगा। सोचो, कितना दर्द होगा!"

"गोली से दर्द थोड़े होता है। झट से निकल जाता है प्राण।" रमेश ने कहा।

दमयंती चुपचाप देखती रही उसे जाते हुए। धनंजयजी को मना करती थी और अब वह खुद भी दारू पीने लगती है, उदास होती है तो।

"दिस इज नॉट फेयर, मि. दयाशंकर।" फोन पर दयाशंकर की आवाज सुनते ही चहक उठे हैं एस.पी., "आपको कॉन्टैक्ट करना चाहिए था।"

"हम तो बहुत प्रोबलेम में फंस गए हैं, सर।"

"आप तुरंत आइए बंगले पर। वहीं बात करते हैं।"

"बंगले पर नहीं, सर।"

"ठीक है।"

एस.पी. खुद ही एक मारुति कार ड्राइव करते हुए आए थे सादे कपड़े में। सड़क का सुनसान हिस्सा था वह।

"यू कैन सी, हमको कितना फेथ है आपके ऊपर। आप ट्रैप कर सकते थे हमको।" गाड़ी पार्क कर उंगली में चाभी का गुच्छा नचाते हुए आए एस.पी.।

"आप भी सर...इस तरह के आदमी नहीं हैं हम। हम तो बदकिस्मत हैं कि..."

"छोड़िए, समय कम है।" एस.पी. ने बात काट दी उनकी, "पहले हमारा हेल्प कीजिए। नहीं तो हम गए।"

"कहा जाए, सर!"

"अवधेश चौधरी को ऊपर करना है।"

"यही न हमारा दुर्भाग्य है कि पुलिस भी गलत समझ रही है हमको।"

"बहुत प्रेशर पड़ रहा है। अनबियरेबल। और आप अकेले आदमी हैं, हू कैन हेल्प मी।"

दयाशंकर सोच रहे हैं, मंधाता मिश्र की सलाह नहीं मानकर एक बड़ी गलती हो गई है उनसे।

"हमको सचमुच कोई आइडिया नहीं है, सर।" सफाई दी।

"आई ऐग्री। लेकिन आप पता लगा लेंगे।" एस.पी. ने उनके कंधे थाम लिए हैं—"एक दोस्त की तरह कह रहे हैं, मि. दयाशंकर! आपके या पार्टी के लोगों को हार्म करने में हमारा इंटरेस्ट नहीं है। आई जस्ट वांट अवधेश चौधरी।"

दयाशंकर की समझ में नहीं आया, क्या कहें।

"आई होप, आप समझ रहे हैं कि आई ऐम इन ट्रबुल।"

दयाशंकर सोच रहे हैं, गद्दारी नहीं होगी यह? मुठभेड़ में दमयंती या धनंजयजी भी मारे गए तो?

"सर, गद्दारी करने के लिए मत कहिए हमको।"

"हम फिर कह रहे हैं, आई वांट ओनली अवधेश चौधरी।" एस.पी. ने कहा और कंधे दबा दिए दयाशंकर के, "बिलीव मी, धोखा नहीं देंगे आपको।"

दयाशंकर ने महसूस किया अपने कुर्ते की जेब में सरकता एस.पी. का हाथ।

सौ की गड्डी थी एक। दस हजार रुपये। एस.पी. जा चुके थे। दयाशंकर की छाती धड़क रही थी। पर पता नहीं कब, एक आनंदमय रोमांच में बदल गया था वह अंदरूनी उपद्रव। सौ के दस पत्ते अपने पास रखकर नब्बे पत्ते पकड़ाए पत्नी को तो वह भी रोमांचित हो गई।

"कहां से?" पूछा।

"तुमको मतलब?" दयाशंकर ने कहा।

उसने मान लिया—उसे कोई मतलब नहीं था यह जानने से।

अब छांगुर या रमेश, दोनों में से किसी एक को खोजना था उन्हें। कहां खोजें! ज्यादा उत्सुकता प्रकट करने पर भेद खुलने का भी डर था। कभी-कभी मन में यह खटका भी होता कि एस.पी. भी खोल सकता था भेद। पर खुद को समझा लेते दयाशंकर कि इस खेल में अगर खुद को फायदे की स्थिति में रखना था तो कुछ खतरे उठाना जरूरी था। और पुलिस की सूचना को तो आराम से राजनीतिक दबाव में किया जा रहा दुष्प्रचार कहा जा सकता था।

बस से उतरे बिक्रमगंज तो बस स्टैंड की ही एक चाय की दुकान पर मानिक दिख गया। लपके उसकी ओर।

"यहां कहां?"

चौंका वह, "आप हैं, बाबा? कुछ सामान लेना था।"

"भागमभाग है, नहीं?"

"नहीं, महाराज। सब ठीक है। आप भी जमाए रहिए इधर।" विश्वास से भरा हुआ था मानिक।

"छांगुर भी वहीं है न?"

दुविधा का भाव टिमटिमाया उसकी आंखों में, पर जल्दी ही सहज हो गया। कहा, "नहीं है।"

उसे मंधाता मिश्र के यहां लेते आए हैं दयाशंकर।

"...एके कमजोरी है दमयंती में...गुस्साती है तो सनक जाती है...धनंजयजी समझाते हैं कि ज्यादा मारकाट, धूम-धड़ाका से लोगों का असली आंदोलन कमजोर हो जाता है...पर उसका है कि सोच ली कि उड़ाना है तो...बाघिन है, बाघिन..." दयाशंकर को आत्मीय समझ मानिक बताए जा रहा था सारी बातें।

मुन्नी पूड़ियों की थाल रख गई थी सामने।

चर्चा दमयंती और धनंजयजी के अंतरंग संबंधों के सुरम्य इलाके में प्रवेश कर

गई थी और मानिक देखी-सुनी सब सुनाने की ललक से भरा हुआ था।

"यह तो युग-युगांतर से चली आ रही चीज है—एक मर्द, एक औरत...लेकिन जो कर दिया दमयंती ने, उससे ताकत बढ़ गई है आंदोलन की।" दयाशंकर ने समेटना शुरू किया चर्चा को। जरूरी जानकारी हासिल हो गई थी।

इस आशंका का निवारण भी हो गया था कि कहीं दमयंती या धनंजयजी भी शिकार नहीं हो जाएं इस षड्यंत्र का। मानिक बता गया था कि रात को वे नहीं रहते थे वहां। दूसरे तीन-चार लोग रहते थे पहरेदारी में। अधिक से अधिक वही मरते। अपने अंदर क्रूरता का उगना भी महसूस करते हैं दयाशंकर।

एस.पी. ठीक उसी जगह आ गए थे। एक बंदर टोपी पहन रखी थी। खादी की चादर भी ओढ़ रखी थी।

"धावा रात को ही होना चाहिए।" दयाशंकर ने कहा और महसूस किया कि होंठ सूख रहे थे उनके, आंखें जल रही थीं।

"और एक वचन दीजिए, सर।"

"बोलिए।"

"हम नारद सिंह के गैंग का एकदम सही पता-ठिकाना दे रहे हैं आपको। उसका सफाया कर दें।"

कुछ देर तक चुपचाप दयाशंकर को घूरते रहे एस.पी. गहरी आंखों से। तनावग्रस्त दिख रहे थे दयाशंकर।

"आपने दोस्ती का नाम ले लिया..."

"यस, यस, मि. दयाशंकर! एक दोस्त से बात कर रहे हैं आप।"

"नारद सिंह का काम तमाम कर दिया जाए। शांति हो जाएगी।"

"डन।" एस.पी. ने कहा और एक गड्डी बढ़ा दी उनकी ओर।

"इसको रखा जाए, सर।" प्रतिवाद किया दयाशंकर ने।

"हमारा थोड़े ही है, सरकार का है।" एस.पी. ने गड्डी उनके कुर्ते की जेब में ठूंस दी।

दयाशंकर को नींद नहीं आई रात-भर। सुबह चार बजे से ही इंतजार करते रहे अखबार का। अखबार में कुछ नहीं था। झिंझोड़कर जगाया उनकी पत्नी ने—"अवधेश चौधरी छूट गया!"

बिस्तर से उछल-सा गए हैं दयाशंकर—"कब?"

पिछली रात के रतजगे के कारण शाम होते ही सो गए थे।

"आप काहे को उछल रहे हैं? आपको नहीं भेंटाने वाला है कुछ।" बिनोदजी ने कहा।

"कैसे पता चला?" धौंकनी की तरह उछल रही थी दयाशंकर की छाती।

"प्रादेशिक समाचार में बोला। एस.पी. खुद गए थे पुलिस पार्टी लेकर। अपहरणकर्ता भाग गए।"

मन किया दयाशंकर का कि गोदी में उठा लें पत्नी को और नाचने लगें। भला

इतनी भी कामयाब भी होती है कोई योजना! सोचा था, पत्नी को नहीं बताएंगे दूसरी गड्डी के बारे में, पर ऐसी उमड़ी खुशी कि उछाल दिया उसकी तरफ।

"यह क्या है?" गड्डी थामते हुए हाथ कांप गए उनकी पत्नी के।

"कमाई है, और क्या है।"

"किस काम की?"

"नेता किस काम से कमाता है?" दयाशंकर ने पूछा डपटकर।

चौबेजी, जो दूर से ही सुन रहे थे बतकही, करीब आए टहलते हुए और कहा—"जितना जरूरी कमाना है, बचत भी उतनी ही जरूरी है। फिक्स्ड डिपॉजिट कर दो।"

"भर जिनगी ईहे सब करने में रह गए।" पति को प्यार-भरी झिड़की दी चौबाइन ने। आंखें कह रही थीं—'देखिए तो, नालायक कहते रहते थे हमेशा।'

इस जिले में ऐसा बहुत दिनों के बाद हुआ था कि लोग खाते-पीते, घूमते-टहलते, सौदा खरीदते, मेहमाननवाजी करते, कुछ और नहीं, एक पुलिस अधिकारी की बहादुरी की चर्चा कर रहे थे। वी. सुधाकर का नाम प्राइमरी स्कूल के बच्चों तक को मालूम हो गया था।

अवधेश चौधरी के छूटने के दूसरे ही दिन बटोहिया लख पर हुई मुठभेड़ में नारद सिंह सहित उनके गिरोह के पांच लोगों को मार गिराया था जवान ने। लोग कह रहे थे, खुद सबसे आगेवाली लाइन में था। थानेवालों को तो खबर ही नहीं थी। मुठभेड़ खत्म हो चली थी, तब पहुंचे।

गोसांई पांड़े का तो मानो एक ही काम रह गया था बस—एक दक्ष गाइड की तरह लोगों को मुठभेड़ की रहस्यमय आतंक से भरी दुनिया की सैर कराना। एक बैच जाता तो दूसरा आ जाता। दयाशंकर को देखा तो बस के अंदर ले गए खींचते हुए—"देखे कि नहीं? हम तो देखकर आ रहे हैं...एकदम कलेजे को छेद दिया है...लेकिन इलाका खौल रहा है...राजपूत लोग खमखमाया हुआ है...श्रीभगवनवा तो भोंकर-भोंकरकर रो रहा था...साले की लाइसेंसी राइफल पकड़ा गई है...ऊ एगो अलगे दुःख है..."

"नया नारद सिंह पैदा हो जाएगा।"

"इतना आसान नहीं है।" गोसांई पांड़े ने कहा और दो स्पेशल चाय लाने का आदेश दिया खलासी को।

"कौन चीज का दूध डलवाएं बाबा?" खलासी का सवाल।

"अपनी मइया का।" गोसांई पांड़े का जवाब।

"राइफल पकड़ाया श्रीभगवान सिंह का, तब तो लाइसेंस भी कैंसिल होगा?" एकदम भोले और अनजान बन गए हैं दयाशंकर।

"मर्द लोग फरार हैं सबके सब...जनाना लोग ना-ना-ना कर रही हैं घर में।"

"बाबा का तो अपने जनाना ना-ना-ना, कर देता है।" खलासी चाय की गिलास थमाते हुए बोला।

"राजपूत लोग एस.पी. के ट्रांसफर का बोल दे रहा है...सुने हैं, रामपरबेस चौधरी भी गए हैं अपील लेकर..." खलासी को अनसुना कर दिया था गोसांई पांड़े ने।

"गांव जाना ठीक होगा अभी? कि महटिया दें दू-चार दिन?"

"यहीं रह जाओ कुछ दिन बुचीया के यहां। रात को यहां आ जाओ। ढरकाएंगे और ई अपनी जनाना को ले आएगा। बेचारी गऊ है, एकदम ना-ना-ना नहीं करती।" गोसांई पांड़े ने कहा और जवाबी हमले के लिए माथे पर बल डाले कुछ सोचते खलासी को देखकर ठहाका लगा दिया, "सब हीरो लोग टाइट हो गए जवार का।"

"जाने दीजिए, हँसिए मत। उल्टा-सीधा सोच लेगा।"

"अवधेश चौधरीया को तो ऊ मुअली का मार मारी है दमयंतिया कि हाथ-गोड़ कुछो काम नहीं कर रहा हीरो का...गांड़ भी दूसरा ही धो रहा है...और बूटन राय..." गोसांई पांड़े नाम ही नहीं लेते रुकने का।

दयाशंकर को बिक्रमगंज में भी डर लगने लगा है। मन का चोर बार-बार आंखों के सामने आ खड़ा होता है। सोनबरसा में तीन लोगों की हत्या कर दिए जाने की खबर आई है। दमयंती को शक था कि उन्हीं लोगों ने अवधेश चौधरी के वहां होने खबर पुलिस तक पहुंचाई थी। दयाशंकर का मन कहता है, वही जिम्मेदार हैं तीन निर्दोष लोगों की हत्या का। पर झटक दिया है आत्म-ग्लानि के भाव को। 'सच्चा कौन है यहां?'—सोचा। पता नहीं, दुनिया के तमाम महापुरुष भी कितने महापुरुष थे! वह खुद भी तो एक छोटा-मोटा महापुरुष ही हैं कुछ लोगों के लिए। और कुछ लोगों के लिए तो कोई महापुरुष भी महापुरुष नहीं है।

"आप यहीं है, बाबा?" दयाशंकर को देखा तो खिंचे चले आए अनजानाजी, "राजपूताना बहुत गमगीन है।" बताया।

"गए थे उधर?"

"हम तो गए थे एक अच्छी खबर सुनाने, लेकिन जो हाल देखे, मन नहीं किया सुनाने का।"

"कौन-सी खबर?"

"आप लोगों के आशीर्वाद से बिक्रमगंज में एगो पेट्रोल पंप का लाइसेंस मिल गया है। सोचे, गांव के साथ बांटा जाए इस खुशी को, एगो भोज दिया जाए...तो गांव में तो रोआं-रोंहट मचा हुआ है।"

"हमेशा रोआं-रोंहट ही नहीं न मचा रहेगा। माहौल ठीक हो जाने दीजिए। पर चलिए, 'कुकुरमुत्ता' से 'कैपिटलिस्ट गुलाब' तो हो गए न आप।"

"ई मत कहिए, ए बाबा। आपकी दमयंतीजी सुन लेंगी तो हमारा नंबर भी आ जाएगा।" अनजानाजी कहते हैं, पर मन ही मन ख़ुश हैं दयाशंकर के ऊपर अपनी खबर का प्रभाव देखकर। दयाशंकर उन्हें इस तरह घूर रहे थे मानो पहली बार देख रहे हों।

"दमयंती को दोष मत दीजिए, अनजानाजी! समय और व्यवस्था का दोष है।" दयाशंकर ने कहा। 'नहीं तो आपके जैसे लंपट को पेट्रोल पंप का लाइसेंस नहीं मिलना था!'—उनके मन ने कहा।

दिनेश सिंह की दालान में भी इसी समस्या और व्यवस्था की समालोचना चल रही थी।

''कुछ ऐसा हुआ कि अपना लोकतंत्र धीरे-धीरे छाया-लोकतंत्र में बदल गया।'' दिनेश सिंह कह रहे हैं, ''सारी संस्थाएं अवास्तविक होती गईं। हैं, पर कुछ और ही हैं दरअसल। परछाइयां बच गईं उनकी। जो कलक्टर है, दरअसल एक डरा हुआ सरकारी नौकर है, जिसे बड़ी मुश्किल या भाग्य से एक अच्छी पोस्टिंग मिली है। जो मुख्यमंत्री है, वह भी असल में मुख्यमंत्री नहीं है। परछाइयां सुरक्षा दे भी कैसे सकती हैं?''

''हर आदमी को अपनी सुरक्षा खुद करनी पड़ेगी।'' कन्हैया सिंह बोले।

''नारद सिंह भी जो सुरक्षा दे सकते थे या दे रहे थे, वह भी भ्रम ही था सुरक्षा का, पर उस सच्चाई से ज्यादा भरोसे का था, जो इस छाया-पुलिस या छाया-प्रशासन की है।''

रंगू सिंह अभिभूत हो गए हैं दिनेश सिंह की व्याख्या से—''डॉलर सिंहवा गलत नहीं कहता कि कुंवरपुर में रहकर अपना भैलू घटा लिया मास्साहेबवा ने।'' बोले।

''डॉलर सिंह का नया संदेश भी सुने कि नहीं? कह रहे हैं, महीना-दो महीना में उनके हिस्से का सारा खेत हटा देना है।'' छबीला सिंह ने सूचना दी—''गांव अब रहने लायक जगह नहीं रहा।''

''यह अकेले भइया का दृष्टिकोण नहीं है, छबीला भाई! देश के समस्त उच्च मध्य वर्ग या मध्य वर्ग का है। जहां भी समस्या है, भागिए वहां से। सरकारी स्कूल फेल हो गए तो प्राइवेट स्कूल खोलिए। प्राइवेट स्कूलों में भीड़ हो जाए तो फाइव स्टार प्राइवेट स्कूल खोलिए। गांव से शहर, शहर से महानगर, महानगर से अमेरिका...भागिए! जैसे भी हो, अपने-आपको सुरक्षित कीजिए। और असली समस्या यही है।''

''इस बार एकदम कड़ा हो जाना है, मास्साब। हमारी बात तो अच्छी ही नहीं लग रही किसी को, फिर भी कह रहे हैं कि इन सभी भगोड़ों को बता देना है कि एक धूर भी नहीं बेचने दिया जाएगा।'' कन्हैया सिंह बोले, ''साथ नहीं दे सकते तो काम मत बिगाड़ें।''

''सुविधा-संपन्न आदमी कभी नहीं लड़ता समाज के लिए।'' छबीला सिंह बोले।

''लड़ने की बात नहीं है, छबीला भाई, चुनौतियों से आंख मूंद्र लेने की है। सुख से रहने की आकांक्षा को आप नाजायज नहीं कह सकते, पर संवेदनहीनता और समाज से असंलग्नता का भाव गलत है।''

''गलत तो है ही, पर...'' आधी बात कहकर ही चुप हो गए हैं छबीला सिंह।

यही हश्र होता है इन चर्चाओं का। 'केकर-केकर धरी नांव, कमरी ओढ़ले सउंसे गांव' के बिंदु पर आकर ठहर जाती हैं। तब कोई नई बात शुरू करनी होती है। कोई नया प्रसंग छेड़ना होता है।

''हमको तो आज तक यही नहीं बुझाया कि अचानक नारद सिंहवा को उड़ाने का प्लान कैसे बन गया?'' कन्हैया सिंह ने नया प्रसंग छेड़ा।

"सुनने में आ रहा है कि प्लान-व्लान नहीं बना था इस तरह का। पुलिस निकली थी दमयंतिया की खोज में और..."

"कौन कह रहा है?" सत्यनारायण सिंह को बीच में ही रोक दिया कन्हैया सिंह ने।

"आप क्या कह रहे हैं?" सत्यनारायण सिंह तिजुक गए।

"हमको तो लगता है कि रामप्रवेश चौधरी का भी हाथ है इसमें।" कन्हैया सिंह बोले।

"रामप्रवेश चौधरी का हाथ नहीं है।" सत्यनारायण सिंह ने दृढ़तापूर्वक कहा, "रामप्रवेश चौधरी ऐसी गलती नहीं कर सकते।"

"जिसका भी हाथ हो, पुलिस जोश में आई हुई है तो दमयंतिया के गिरोह का भी खात्मा कर दे, हम लोगों की यही मांग है।" जगदीश सिंह ने कहा मानो सुन रही हो पुलिस।

"पुलिस में भी तो वही सब न भर गया है...साला नान्ह जात...ई सुधाकर-फुधाकर भी चमारे-सियार होगा..." कन्हैया सिंह का परिताप।

"सुधाकर अब नहीं रहेंगे ज्यादा दिन तक। शिवपूजन सिंह की मुख्यमंत्री से बात हो गई है...जाएंगे।" सत्यनारायण सिंह ने सूचना दी।

"इनको तो खैर जाना ही होगा...लेकिन अपनी सुरक्षा के बारे में कुछ सोचना होगा अब। दमयंतिया कभी भी हमला कर सकती है। देखिए, सोनबरसा में उड़ा दिया तीन लोगों को।" कन्हैया सिंह जब भी सोचते हैं नारद सिंह की हत्या के बारे में, सोचकर दुःखी हो जाते हैं कि रामगिरिही राम के मरने पर पूरा जिला हिला दिया था रेजों ने और राजपूत थे कि बस एस.पी. की बदली से संतुष्ट हो जाना चाहते थे। प्रतिकार तो दूर, प्रतिरक्षा के बारे में भी नहीं सोच रहे थे।

दयाशंकर लौटे बिक्रमगंज से तो देखा कि असाधारण रूप से शंकित और सजग हो गया था कुंवरपुर, मानो छुट्टी ले ली थी नींद से। पूरी रात खांसते-खंखारते, खैनी पीटते और बोलते-बतियाते बिता देते थे लोग।

दयाशंकर सोच रहे हैं, अब उन्हें भी बहुत सजग होकर रहना पड़ेगा इस गांव में।

20

एक खपरैल मकान के सामने, नीम के पेड़ के नीचे रखी नेवार की खाट पर बैठी दमयंती मानो किसी गहरे आत्म-मंथन में लगी हुई है। आसपास की भीगी मिट्टी से उठती सुस्वादु गंध से भी बेखबर। रमेश एकटक देखे जा रहा है उसका चेहरा। वह समझ नहीं पा रहा कि खुशी के मौके पर गमगीन क्यों दिख रही है वह। उसका मन होता है कि धूल से सने हुए फोर्स टेन के जूते खोल दे उसके। हिम्मत नहीं पड़ती।

"हटो, बिछा देते हैं कुछ।" एक अधेड़-सी काली भुजंग औरत आई है तोसक और तकिया लेकर।

सिर उठाती है दमयंती तो आकाश का बुझता हुआ लाल चेहरा आ जाता है

आंखों के सामने। दिन-भर की भागदौड़ के बाद थके हुए आकाश का चेहरा—उसके अपने चेहरे की तरह।

धनंजयजी खुश नहीं हैं सोनबरसा कांड को लेकर। यह बात पक्की हो चुकी है अब तक कि मारे गए तीन लोगों में से कोई भी मुखबिर नहीं था। फैसला लेने में जल्दी कर दी थी दमयंती ने। दमयंती मानती है इस बात को। धनंजयजी को इस बात का भी पूरा विश्वास है कि नारद सिंह का मारा जाना एक दुःसंयोग था पुलिस और प्रशासन के लिए। एस.पी. दरअसल अवधेश चौधरी के अपहर्ताओं की तलाश में आया था।

"मुंह-हाथ धो लेती तो...पानी लाएं यहीं?" वही औरत बोली।

दमयंती ने देखा, दूसरों की ही तरह रमेश भी खड़ा है सहमा हुआ-सा।

"तुम कब आए कुंवरपुर से?" जूते के फीते खोलते हुए पूछा।

रमेश दौड़ा हुआ आया और फीते खोलने लगा।

"कब आए?" सवाल दुहराया दमयंती ने।

धनंजयजी को शक है कि अवधेश चौधरी वाले ठिकाने की खबर रमेश के माध्यम से ही फैली हो शायद।

"आज ही आ रहे हैं। इलाका खमखमाया हुआ है।"

"मतलब?"

"मतलब कि..." जरा-सी रुखाई आती है दमयंती की आवाज में और हिम्मत जवाब दे जाती है रमेश की। भटभटाने लगता है।

दमयंती जानती है, डरता है उससे। पर कोशिश नहीं करती यह जताने की कि डरने की जरूरत नहीं है। दमयंती को अच्छा लगने लगा है लोगों का डरना। खुलकर, बिना डरे हुए, बातें करने वाले लोगों की उपस्थिति में वह असहज महसूस करने लगती है। मुंह फेर लेती है या कोई कड़वी बात कह देती है जान-बूझकर। निर्भीक ढंग से बोलता हुआ आदमी धीरे-धीरे, डर-डरकर, सम्हल-सम्हलकर बोलने लगता है तो एक अव्यक्त खुशी होती है उसे।

"पहले भी ऐसी ही थीं तुम?" धनंजयजी हँसते हैं, हल्के-फुल्के मूड में होते हैं तो।

पहले कब?

हल्के अंदाज में कही गई बात भी चुभ जाती उसे। धनंजयजी कहीं याद तो नहीं दिलाना चाहते कि...

"श्रीभगवान सिंह का लाइसेंसी राइफल पकड़ाया है नारद सिंह के गिरोह के पास से...बउवाये घूम रहे हैं...बाबूसाहेब लोग के मन में डर बैठ गया है कि..."

"बाबू साहेब!"

रमेश समझ नहीं पाया, क्या मतलब हो सकता था इस हिकारत-भरे उच्छ्वास का।

दोनों कुहनियों पर शरीर का बोझ डाल हथेलियों के बीच ठुड्डी जमाए हुए पेट के बल लेट गई थी वह। एक ही साथ कई नसें कुनमुनाई थीं देह की।

"अपने टोले का क्या हाल है?" पूछा।

"भीतरे-भीतर तो लोग खुसे हैं, बाकी चुपचाप लगाए हुए हैं..."

"इसके बारे में नहीं पूछ रहे हैं हम।" वह अनसाई।

"सिबचन का लइकवा सनक गया था न, अनजानाजी के साथ कांके ले गए हैं उसको...गांव में अफवाह उड़ाए हुए हैं लोग कि उदय बाबा जादू-टोना कर रहे हैं...छबीला सिंह का लइकवा भी गड़बड़ा गया है..."

"छबीला सिंह कांके नहीं ले गए?"

"लेकिन कहीं ले जरूर गए हैं।"

"किसी का बियाह-शादी नहीं ठीक हुआ इधर?"

"सब टोलवे में दू-चार गो बियाह है...गणपति बाबा छान-पगहा तुराए हुए हैं बियाह के लिए..." रमेश को अब मजा आने लगा है बतकही में।

"और टेंगर सिंह?" दमयंती को भी अच्छा लग रहा है गांव को याद करना।

टेंगर सिंह उसे जब भी देखते, गिलगिला उठते थे उन दिनों—"हमारे टोलवावाला सब बहुत पितपिताता है...कहता है, सोझिया देंगे...एगो गाना जंगी सिंहवा पर भी बना दो! जोगीया का चमचई करता है..."

"ईहे उल्टा-सीधा सिखाइए..." रामगिरिहीबो झुंझलाती।

टेंगर सिंह को किसी की भी झुंझलाहटों का गम नहीं रहता।

"बेचारे फेर में पड़ गए हैं आजकल...कन्हैया सिंहवा बहुत दबाता है...सुने हैं, हाथ भी छोड़ देता है...कम राड़ नहीं हुआ है।"

रमेश ठीक कह रहा है। दमयंती को भी शुरू से ही अच्छा नहीं लगता यह आदमी।

"अनजानाजी पेट्रोल पंप बइठा रहे हैं बिक्रमगंज में।" रमेश को जैसे अचानक याद आया है।

"दलाल है।" आनंद में खलल पड़ गया है चर्चा में इन लोगों के घुस आने से।

"हरिहर मास्टर आए हैं।" रही-सही कसर इस खबर ने पूरी कर दी है।

वही औरत चाय के साथ यह खबर भी दे गई थी।

"इसको कैसे पता चल गया?" दमयंती बैठ गई है उठकर।

हरिहर मास्टर अच्छी-खासी हस्ती थे पार्टी में। धनंजयजी पसंद करते थे उन्हें। पार्टी का जनाधार बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान था उनका।

"सबमे पहले तो बधाई! पार्टी में जान आ गई है आपके आने के बाद।" हरिहर मास्टर बोले।

एक कप चाय उनके लिए भी आ गई थी।

दमयंती को अच्छा नहीं लगा कि रमेश को नजरअंदाज कर दिया था उस औरत ने।

"पिओगे?" पूछा।

रमेश सकुचा गया।

"मन है तो लजाना क्या है? जाके ले आओ।" हरिहर मास्टर बोले।

रमेश चला गया उठकर।

"हई मनोरंजन रजकवा बहुत लंपटई कर रहा है। क्या किया जाए?"

"क्या कर रहा है?"

"अब क्या बताएं आपको? बार-बार वादे से मुकर रहा है। अब इधर कहना शुरू किया है कि रामप्रवेश चौधरी बहुत नजदीकी नजर रख रहे हैं।"

दीनमणि त्रिपाठी ने भी तो इसी पाथेय की बात की थी। जूतों की माला पहना आई थी उसे। और अब वही पाथेय देने में आनाकानी कर रहा था वर्तमान बी.डी.ओ. तो शिकायत खड़ी हो गई थी। दमयंती को कभी-कभी बहुत गलीज लगने लगती है यह बातचीत। लेकिन मजबूरी थी। पैसा तो चाहिए ही था!

"मांगने की क्या जरूरत है?" कहा था उसने।

"कुछ काम तो आसानी से हो।" धनंजयजी ने झिड़क दिया था।

"दबाव बढ़ाना जरूरी हो गया है।" हरिहर मास्टर कह रहे हैं, "देखिएगा जरा।"

मनोरंजन रजक कृषि सेवा में आए थे तो सोचा था कि खाद और बीज की खरीद-बिक्री के छोटे-मोटे घोटालों से ही जोगाड़ करना होगा दाना-पानी का, पर उनके लिए एक व्यापक और बहुआयामीय भूमिका की परिकल्पना कर रखी थी सरकार ने। ग्रामीण विकास का गुरु दायित्व समर्पित कर दिया था उन्हें। सो मनोरंजन रजक विगत चौदह वर्षों से कभी इस ब्लॉक में तो कभी उस ब्लॉक में बी.डी.ओ. का झंझटिया दायित्व सम्हाले हुए थे।

गुनी को संभालना भारी पड़ने लगा था। कोई बता गया था कि नाराज थी दमयंती और हालत खराब थी। भागे-भागे मंधाता मिश्र के यहां चले आए थे। पता चला था कि वहीं पहुंचे हुए थे दयाशंकर।

'छत पर चलिए।' इशारा किया दयाशंकर ने। थोड़ा घबराए भी मनोरंजन रजक को अकस्मात् आ गया देखकर।

"मिठइया..." रजकजी ने पॉलिथिन में लटकता एक डिब्बा निकाला सूटकेस से।

"रख दीजिए कहीं।" सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए दयाशंकर ने टेबुल की ओर इशारा किया।

मुन्नी देख रही थी पर्दे के पीछे से। वहीं से देख लिया, बिक्रमगंज की सबसे अच्छी दुकान का था।

"हमको तो आप जानते ही हैं, दयाशंकरजी।" मनोरंजन रजक कुर्सी पर बस इतना ही बैठे थे कि दूर से देखने पर लगे, हवा में लटक रहा था उनका चूतड़।

"अपनी बात कहने कोई कहां जाए! आप लोग नहीं समझेंगे तो कोई नहीं समझेगा। और हमारी तो बस यही बिनती है कि हमारी लाचारी को भी समझा जाए। अगर हम जरा भी फालतू का कानून बतिया रहे हों, तो हमको पचपन जूता मारा जाए।" अपनी बात यहीं रोककर दयाशंकर का चेहरा देखने लगे हैं मनोरंजन रजक। पहले पढ़ लें इस चेहरे को तो आगे की बात कहें।

दयाशंकर का चेहरा एक सीधे-सादे, पढ़े-लिखे ग्रामीण नवयुवक का चेहरा था, जो गरीबी और अभाव की यातनाओं और याचनाओं, दोनों का ही साक्षी रहा था। उसकी

रेखाओं ने यह देखते-देखते सीखा था बनना-बिगड़ना कि गिड़गिड़ाने और सुनने वाले द्वारा अनसुना किए जाने के बावजूद गिड़गिड़ाते जाने से कोई न कोई रास्ता निकल ही आता है बचाव का। रामज्ञान पांड़े गिड़गिड़ाए जाते थे और हरिद्वार पांड़े को उसी समय सौ तरह के काम याद आ जाते—ट्रैक्टर की ओवरहॉलिंग, थ्रेशर में ग्रीस लगाना, बैलों के लिए सपटों का इंतजाम, गोला से खाद मंगवाना, बेटियों के यहां गुड़ और तिलवा भिजवाना...सैकड़ों काम। रामज्ञान पांड़े गिड़गिड़ाते रहते, हरिद्वार पांड़े अपने रुके हुए काम याद करते जाते। पर गिड़गिड़ाना असर कर जाता अंततः। दयाशंकर का चेहरा रामज्ञान पांड़े का चेहरा हो जाता था उस समय। भिखमंगापन ओढ़े अपने बाप के चेहरे की कातरता की ताकत बढ़ाता हुआ। हरिद्वार पांड़े उसे गौर से बड़ों की बातें सुनते हुए तो देखते हुड़कते भी रहते बीच-बीच में, पर वह अपने बाप के जैसा ही जिद्दी हो जाता।

दयाशंकर के सामने कोई गिड़गिड़ता तो अनायास ही उनका चेहरा गिड़गिड़ाने वाले के चेहरे जैसा ही होने लगता। पुरानी आदत। फिर चौकन्ना होते और कोशिश करने लगते उसे हरिद्वार पांड़े के चेहरे जैसा बनाने की, पर कामयाबी नहीं मिलती। और सामनेवाले के सामने जो चेहरा होता, वह हरिद्वार पांड़े और रामज्ञान पांड़े के चेहरों का मिला-जुला एक ऐसा दोगला चेहरा होता, जो उसे डरावना नहीं लगता। सेंध लगाने की गुंजाइश दिख जाती लोगों को।

मनोरंजन रजक को भी एक ऐसा ही चेहरा दिखा तो आगे की बात कहने की हिम्मत हुई, "हम केवल यही बोले कि हम भी आप ही लोगों में से एक हैं। दू-चार अक्षर पढ़ गए हैं तो आप ही लोगों का सपना साकार हो रहा है। हम कोई गैर नहीं हैं। हमको अपने से अलग मत किया जाए..."

"बात क्या है?" दयाशंकर ने जानबूझकर पैर उस कुर्सी पर रख दिया, जिस पर रजक साहब बैठे हुए थे। यह उस बेमुख्वत चेहरे की कमजोरियों को ढंकने की कोशिश थी, जो तमाम कोशिशों के बावजूद रोबदार नहीं दिख पाता।

"दमयंतीजी का कहनाम है कि गुनी प्रखंड में इंदिरा आवास योजना के तहत जितने भी घर बनाए जाने हैं, सब उनसे पूछकर बनाए जाएं। हम कहे कि हमारी नौकरी नहीं बचेगी, हथकड़ी लगाकर जेल चले जाएंगे...तो एकदम से फायर हो गईं। अब क्या बताएं आपको..."

"क्या बोली?" दयाशंकर को उत्सुकता हो आई है जानने की कि दमयती क्या सोचती है इन सरकारी चोंचलों के बारे में?

"समझ जाया जाए कि एकदम से गाली-गलौज शुरू कर दीं...तरह-तरह का हथियार चमकाने लगीं...एक से एक बात...ब्लॉक में जितना चापाकल है, सब वही तय करेंगी कहां लगेगा, सामाजिक वानिकी का जितना काम है, सब उन्हीं के बताए मुताबिक होगा...नहीं तो..." मुंह में भर आई गाज को भीतर सटकने के लिए कुछेक क्षणों के लिए रुके मनोरंजन रजक, "हम कहे कि छौ इंच छोटा कर दीजिए चाहे नौ इंच...लेकिन पहले हमारी मजबूरी समझ लीजिए...पर कोई सुने तब तो! बताया जाए कि हम क्या गलत बोले? आदमी काहे के लिए नौकरी करता है?"

"एगो काम कीजिए आप। दमयंती से लड़ने में आप कहीं का नहीं रहिएगा। वह जो कह रही है करवाने को, चुपचाप उसका खर्चा दे आइए और हाथ जोड़कर काम कराने के चक्कर से फ्री हो जाइए। हमको विश्वास है, मान जाएगी।"

दयाशंकर ने बात पूरी करने के बाद देखा मनोरंजन रजक को तो हँसी आ गई उनके चेहरे को देखकर। वह उस आदमी का चेहरा था जो उनके प्रति आक्रोश और वितृष्णा से भरा हुआ था, पर आत्मीयता के प्रदर्शन को विवश था।

"क्या सोच रहे हैं?" पूछा।

"लोटा-सोटा लेकर यहां से चलना ही ठीक है।" कटुता फिर भी आ ही धमकी है मनोरंजन रजक की आवाज में, "इतना पैसा तो हमारी औरत मांगे धूर बहारने लगेगी, तब भी नहीं होगा हमारे पास।"

"यही सबसे बड़ी दिक्कत है आप लोगों के साथ। 'सटक सीताराम' की ऐसी आदत लग गई है कि..."

"ऐसा मत कहिए, दयाशंकरजी। कब मुंह चुराए हैं हम? आपके एक बार बोलने पर निकाल दिए थे कि नहीं?"

"देखिए, रजकजी, एक बात आपको हम साफ-साफ बता देते हैं। अपने अहसान की याद मत दिलाइएगा फिर कभी भी। नहीं तो हम भी...जरा पूछ लीजिएगा गुनी में कि किसको-किसको क्या-क्या याद आ गया था? आप ही का मुंह है कि हमको..."

"गलत मत समझा जाए हमको...हमारे कहने का यह मतलब ही नहीं था...हम तो बस..."

"आपका जो मतलब है, हम बखूबी जानते हैं। लेकिन आप यह जरूर जान जाइए कि उल्टा-सीधा चाल चलिएगा तो गड़ही में जाइएगा!"

"सुना न जाए...दयाशंकरजी! हमको 'आप' में मत रखा जाए। हम 'हम लोग' में ही रहना चाहते हैं। यह अधिकार हमसे मत छीना जाए।" मनोरंजन रजक की दोनों हथेलियां जुड़ गई हैं।

"आपका बात-बिचार आप लोगों वाला ही है।" दयाशंकर ने क्रोधित दिखने का ढोंग करने की यह कला सीखनी ही शुरू की थी अभी। प्रैक्टिस कर रहे थे उसकी। "हम लोगों में होते तो दिखाई नहीं पड़ता आपको कि लोग जान न्यौछावर करने को तैयार हैं सामाजिक-आर्थिक क्रांति के लिए? नौकरी की बात करते हैं आप? आज के दिन तक जितने पाप आपने किए हैं, आपकी नौकरी जाने के लिए काफी नहीं हैं? झूठमूठ का मूड खराब करते हैं फालतू बात करके।"

"मूड मत खराब किया जाए। जो आदेश होगा, वही किया जाएगा।" अपनापन दिखाने और मन में समाया डर दूर भगाने के लिए मनोरंजन रजक दयाशंकर की बगल में बैठ गए कुर्सी खींचकर।

"पहले भी तो पहुंचाए ही होंगे?" दयाशंकर इस सुकून की तलाश में निकले कि हम्माम में सभी नंगे थे।

"घरवाले काम का प्रोग्रेस कैसा है?" उनके सवाल का जवाब देने के बजाए पूछा

मनोरंजन रजक ने।

"मारिए गोली घर-दुआर को। बाहर का झंझट ही नहीं फरिया रहा है।"

"नहीं, गोली कैसे मार दें? हम तो इधर ऑफिस के काम-धाम और मीटिंग-सीटिंग करने में ही ऐसा अटक गए कि देखने ही नहीं जा पाए।"

"लगभग पूरा ही हो चला है।"

"उसको पूरा करा लिया जाए।" सफेद कागज में लिपटा एक बंडल वहीं दयाशंकर की बगल में रख दिया मनोरंजक रजक ने।

"क्या रख रहे हैं? बम-ओम तो नहीं है न?" बंडल की ओर बिना देखे हुए ही कहा दयाशंकर ने, "आजकल डर लगता है, भाई।"

"उधर जाना कब हो रहा है?" मनोरंजन रजक के चेहरे पर रजक साहबवाली सहजता लौट आई थी। अब वह कोई डरा हुआ, आतंकित चेहरा नहीं था, वरन् भारत माता के एक बेईमान और बेगैरत सपूत का परम स्वाभाविक चेहरा था।

"हमारी छोड़िए। कब किधर चलना हो जाएगा, कोई ठीक नहीं। आप बिना ज्यादा विलंब किए दमयंती से मिल लीजिएगा।" दयाशंकर कई चेहरोंवाले आदमी की-सी सहजता से बोले और लालच-भरे गलीज चेहरे को विश्राम देकर गंभीर चेहरे से सोचने लगे कि अपनी जिंदगी और छवि की रक्षा के लिए कौन-कौन-से कदम उठाने होंगे।

"ए भाई, हमारे यहां मत कीजिए यह सब लेन-देन का काम।" मंधाता मिश्र ने देख लिया था मनोरंजन रजक को अपने घर से बाहर निकलते हुए।

"आपको लगता है, कुछ देने आया था?"

"तब क्यों आया था?"

"दुखड़ा रोने कि दमयंतीया मलकिनी बनना चाह रही है ब्लॉक का।"

ठठाकर हँसे मंधाता मिश्र। बहुत देर तक हँसते रहे।

भारतीय लोकतंत्र की एक अद्‌भुत विशेषता यह है कि बहुत बड़ी-बड़ी गड़बड़ियों की रोकथाम के लिए इसने ऐसे रखवार कुत्ते पाले रखे हैं जिनको दांत ही नहीं हैं। जो भौंक सकते हैं, सूंघते-सूंघते गड़बड़ी की तह तक पहुंच सकते हैं, पर काट नहीं सकते। आम जनता उनके बारे में बहुत कम जानती है और वे खुद आम जनता के बजाय यूरोप और अमेरिका की जनता के बारे में अधिक जानना चाहते हैं। सरकार जिन माननीय न्यायाधीशों या अमाननीय नौकरशाहों, पुलिस या सेना के अधिकारियों या अंगरेजी बोल सकने वाले भूतपूर्व माननीय सांसदों-विधायकों वगैरह को गवर्नर, अंबेसेडर वगैरह नहीं बना पाती, उनकी हाथों में इन बेदांतवाले कुत्तों की मिल्कियत दे देती है। अपने वातानुकूलित कक्षों में ऊंघते-ऊंघते वे साल खत्म होने तक एक आकर्षक जिल्द में चिकने पन्नों पर एक किताब छाप देते हैं, जिसका लब्बो-लुब्बाब यह होता है कि इस देश में भी अमेरिका या यूरोप जैसे हालात होते, जो वे सरकारी खर्चे पर अपनी आंखों से देख आए हुए होते थे, तो चिकने पन्नों पर अंकित और चित्रित गड़बड़ियां नहीं होतीं और ये महान् किताबें इस ईमानदार चेतावनी के साथ खत्म होतीं कि बिना दांतवाले कुत्तों से रखवाली का काम कराना खतरे

से खाली नहीं है। यह चेतावनी चूंकि आम जनता तक पहुंच नहीं पाती या पहुंच भी जाती तो वोट बैंक पर असर नहीं डालती, अनसुनी कर दी जाती। और भारतीय लोकतंत्र जिस प्रकार बिना लोकपाल, महिला आरक्षण तथा प्रशासनिक, पुलिस, न्यायिक और चुनाव सुधारों के ही सफलता की डगर पर बढ़ा चला जा रहा था, इन रखवार कुत्तों के दंतहीन होने के बावजूद बढ़ा चला जा रहा था।

चूड़ामनबो नहीं जानती थी कि ऐसे ही बेदांतवाले कुत्ते से पाला पड़ा था उसका। डर गई थी।

हुआ यह था कि सरकार ने रामप्रवेश चौधरी को मनाने के लिए, जो दोबारा विधायक चुने जाने के बावजूद मंत्री नहीं बनाए जाने—जबकि पहली बार चुनकर आए कुछ विधायक मंत्री बन गए थे—के कारण रूठे हुए थे, की देवघर विधापीठवाली परीक्षा से मैट्रिक पास और दूसरों से पर्चे लिखवाकर प्रथम श्रेणी में ग्रेजुएट बनी पत्नी को राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा मनोनीत कर दिया था। विजयबो ने मंधाता मिश्र के मार्फत उन्हीं के हाथ में यह अर्जी थमा दी थी कि उसकी सास उसके पति यानी अपने बेटे की मानसिक दुर्बलता का नाजायज लाभ उठाकर दहेज लाने के लिए दबाव डाल रही थी उसके ऊपर, मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर रही थी उसे; और उसके पति को फुसलाकर उसकी दूसरी शादी कराने की धमकी दे रही थी।

होशो-हवास गुम हो गए थे चूड़ामनबो के। नौलाख महतो ने आखिर दे ही दी थी उसे पटखनी। विजय उन्हीं लोगों के साथ मिल गया था। किसी सरकारी डॉक्टर के यहां से उसका दिमागी इलाज चलते होने का सर्टिफिकेट भी बनवा लाए थे नौलाख महतो। विजयबो ने यह भी लिखा था अर्जी में कि उसकी सास उसे इलाज भी नहीं करवाने देती थी पति का।

अब कहां जाए चूड़ामनबो?

बभनटोल हँस रहा था—और पाहुन बनाओ कोइरी-कमकर को!

राजपुताने में कोई शुभचिंतक बनाया ही नहीं था उसने। रेज दयाशंकर के ही पीछे लगे हुए थे।

"बिहूनी झूठ बोल रही है, ए अम्माजी।" कोई रास्ता नहीं सूझा तो रामज्ञान पांड़ेबो के पैर पकड़कर रोने लगी पुक्का फाड़कर।

रामज्ञान पांड़े कोशिश कर रहे हैं कुछ कहने की। जबड़े खिंच गए हैं एक ओर। आंखें बाहर की ओर निकल आई हैं।

"घबरा काहे को रहे हैं? कोई डाईन-भूतीन नहीं आई है, आपकी पतोह आई है।" रामज्ञान पांड़ेबो ने सीधा कर दिया है जबड़े को, आंखों के कोरों से ढलक आए पानी को पोंछ दिया है आंचल से और माथा सहलाने लगी हैं।

"झूठी और पापिन तो हम हइये हैं, लेकिन इस बार वही छीनरी झूठ बोल रही है, ए अम्माजी!" रामज्ञान पांड़े के खटिये के ओरचन के पास घिसटती आ गई है रोते हुए।

"यहां मत नेटुआघाघर मचाओ। तबियत खराब हो जाएगा इनका।" बाहरवाले

ओसारे की ओर बढ़ गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो।

"बोले न, वहां मत मचाओ रोआंरोहट।" ओसारे की चौखट से बोलीं।

चार साल से भी लंबे समय के बाद इस आंगन में आई है चूड़ामनबो। जिस कमरे में रहती थी, ढह गया है वह कमरा। गणपतिबो का कमरा भी ढह गया है। उन्हें खड़ा करने के बजाए एक पक्की छेरदवाली खड़ी कर दी है दयाशंकर ने। एक पाखानाघर बनवा दिया है कोने में। चुहानी और भैंसवाले घर को लेकर बस चार ही कमरे बचे हैं, पर घर जैसे लग रहे हैं।

"यहीं आओ न, भाई!" ओसारे से फिर आवाज दी रामज्ञान पांड़ेबो ने।

रामज्ञान पांड़ेबो नहीं चाहती थीं कि दयाशंकरबो और चेतना के सामने वह सुनाए अपनी रामकहानी। उन्हें अंदेशा था कि निहायत ही गंदी होगी यह कहानी।

"सब नौलखवा का चाल है, अम्माजी!" ओसारे में आकर फिर सुबकने लगी है वह, "फंसा लिया है बिजइयाबो को।"

"हम कोई जज-कलक्टर हैं कि हमको सुना रही हो। हम तो, देखिए रही हो, अपने कितना दुःख में हैं।"

"उसी का न हमसे बदला ले रहे हैं भगवानजी। नहीं तो कोई अइसा लाचार होता है?"

रामज्ञान पांड़ेबो कुछ नहीं बोलीं।

"आप ही बताइए न कि कहां जाएं?"

"नौलाख महतो से भी बरियार आदमी खोजो!"

"रंडी-बेसवा हैं, अम्माजी? पैर पकड़ लिए, तब भी..."

"ए चूड़ामनबो, सुनो!" रामज्ञान पांड़ेबो ने कहा, "औलाद और उसके बाल-बच्चों का माया जाता नहीं है मन से। चूड़ामन मरे थे, तब भी छाती फटा था और आज भी अच्छा नहीं लग रहा, लेकिन तुम...तुम बहुत नीच हो! भगवान मत भेंट कराए किसी को तुम्हारे जैसी औरत से।'

"अब हम हार गए हैं, अम्माजी। अब मत धसोरिए हमको।"

"हारी-ओरी तुम नहीं हो, खाली डर गई हो कि सब धन निकल जाएगा हाथ से। बिजइयाबो बाहर कर देगी झोंटा पकड़कर। पार्टी बरियार कर रही हो अपना।"

"तो सब दे दें रांड़ी को? भर जिनगी कुक्कुर बनके संचते रहे और ऊ छीनार को दे दें राजपाट चलाने को?"

"भउजी आई हैं क्या, माई?" दयाशंकर ने उसे देख लिया था ओसारे में ही, पर आंगन में पहुंच गए तो पूछा।

चूड़ामनबो समझने से नहीं चूकी कि एक चिकता व्यंग्य था सवाल में।

"इतने दिन के बाद आई हैं, हमारा बेटवा पूछ रहा है कि मिठाई-ओठाई नहीं लाई हैं बड़की माई।" कोई जवाब नहीं आया ओसारे से तो बोले।

ओसारे से दौड़ी हुई आई चूड़ामनबो और कटे पेड़ की तरह धाराशायी हो गई दयाशंकर के पैरों के पास—"हम रंडी-बेसवा हैं, पापिन हैं, नट्टीन हैं...हमको लसार-लसारकर

मारो बबुआ...मुंह में करिखा पोतकर घुमवा दो गांव में...''

''हम बोले थे न, आंगन में मत पसारो नेटुआघाघर।'' रामज्ञान पांड़ेबो चीखीं।

भूत खेलानेवाली औरतों की तरह कांप रही है चूड़ामनबो की देह।

दयाशंकरबो को अच्छा नहीं लगता अपनी सास का व्यवहार।

''कुछ कीजिएगा चाहे नहीं, सुनने में क्या हर्ज है?'' बोली अपने पति से।

''सुनना क्या है? दयाशंकर का बात सुनता है बिजइया? नौलखवा से पार पाएंगे दयाशंकर। उल्टे इन्हीं को फंसा देगा, बस मन मान जाएगा।'' रामज्ञान पांड़ेबो ने डपट दिया दयाशंकरबो को।

''पहले उठिए यहां से।'' दयाशंकर ने कहा चूड़ामनबो को, ''और अब हमारे घर में झगड़ा मत लगवाइए।''

''हम आते हैं दू मिनट में। बंसवारी के पास रहिए।'' ओसारे में जाकर फुसफुसाए।

रामज्ञान पांड़ेबो दयाशंकरबो के सामने खोले बैठी थीं चूड़ामनबो के अतीत के पन्ने।

''परदादी है मंथरा की।'' दयाशंकर ने हँसते हुए कहा, ''ई मत समझना कि अभी भी सचमुच का लोर है उसकी आंखों में।''

रामज्ञान पांड़े एकटक देख रहे थे दयाशंकर को।

''ई सीधका बाबा तो अभी भी माई पर ही गुस्सा होंगे कि भगा दी इनके पतोह को!'' कहा उनके पास जाकर उनकी चादर ठीक करते हुए और बाहर निकल गए।

चूड़ामनबो बंसवारी के अंदर बैठी हुई थी।

''नौलखवा जासूस लगाए हुए है हमारे पीछे।'' दयाशंकर को देखा तो बाहर आकर फुसफुसाई।

''झगड़ा क्या है?'' दयाशंकर ने चारों ओर देखते हुए पूछा और बंसवारी की ओट में चले गए।

''विजइयाबो फंसी हुई है नौलखवा से। बच्चा भी उसी का है। कह रही है, फिर बिआएंगे।''

''मालूम नहीं था आपको?''

''था तो सोचे एगो सवांग हो जाएगा।''

''नहीं तो सब धन दयाशंकर का हो जाएगा!''

''अपना सवांग, बबुआ, कौन नहीं चाहता है?''

''यही छीनरझप्प करवाना था तो हमको बोलतीं। ब्यासजी गए थे कि नहीं पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा करने? चाहे बाहर के किसी हित-रिश्तेदार को बुला लेतीं।''

''हम तो कहिए रहे हैं, हम...''

''अच्छा छोड़िए, विजइया कैसे फिरंट हो गया?''

''पता नहीं कौन पाठ पढ़ा दिया है उसको।''

''चाल्हांकी मत बतियाइए कि आपको पता ही नहीं है।'' दयाशंकर गुस्साए।

''हमको नहीं पता है, बबुआ। चतुरबउराह आदमी का क्या भरोसा!''

''आप बताईं उसको कि लड़का उसका नहीं है?''

जवाब नहीं दिया चूड़ामनबो ने। बातचीत के क्रम में पहली बार तनावग्रस्त दिखी वह।

"नहीं बताया?" फिर पूछा दयाशंकर ने।

"हमारा ही पाप है, बबुआ। उसको काहे को दुःख दें।"

दयाशंकर ने पहली बार थोड़ी करुणा महसूस की चूड़ामनबो के लिए।

दयाशंकर को अच्छा लग रहा है चूड़ामनबो का अपनी शरण में आना। लाख बुरी हो, कम से कम जानबूझकर उन्हें बर्बाद करने के षड्यंत्र का ताना-बाना तो नहीं रचेगी अब।

"आप केवल एक काम कीजिए। जाकर श्रीराम पांड़े का पैर पकड़ लीजिए। और रो-गाकर आराम से रहिए घर में। झगड़ा-ओगड़ा मत कीजिए।" कहा और सरपट चल दिए वहां से।

"उसके फेर में मत पड़ना, बबुआ!" रामज्ञान पांड़ेबो ने फिर चेताया।

पर उसके फेरे में तो पड़ चुके थे दयाशंकर।

"बचाइए, ए बाबूजी! जबर्दस्ती घुसा हुआ है घर में।" श्रीराम पांड़े के पैरों के पास बैठी चूड़ामनबो के करुण विलाप का गूंजना था और तय की हुई योजना के अनुसार इकट्ठा हो जाना था बभनटोल के लोगों को।

"हम बोले थे न आग लगा के मानेगी रांड़ी?" मारे डर के दांत बजने लगे हैं रामज्ञान पांड़ेबो के।

"इसीलिए हम नहीं आते हैं।" बच्चे को छाती से चिपकाए दीवार से सटकर खड़ी है दयाशंकरबो।

'बहेंगवा कहीं की!' मन ही मन सुलग उठीं रामज्ञान पांड़बो, 'एगो सीता मइया थीं कि बोलीं, जंगल जाएंगे पति के साथ और एगो ई मेहरारू है!'

गणपति पांड़े ताबड़तोड़ पीट रहे थे दरवाजा और विजय अंदर से गालियां दिए जा रहा था। उड़ा देने की धमकी दे रहा था अपनी चोरुआ पिस्तौल से।

"बाहर निकलता है कि तोड़ें दरवाजा?" सुरेश चीखा।

"यह क्या गुंडागर्दी है?" नौलाख महतो निकले दरवाजा खोलकर।

पहले से ही तय था कि बहस नहीं करनी है, सीधे कुटाई शुरू कर देनी है।

कुटाई शुरू हो गई। विजय भागकर छत पर चढ़ गया था और गालियां दे रहा था। विजयबो कमरे में बंद हो गई थी अपने और अंदर से ही गालियां दे रही थी चूड़ामनबो को। सरिता भागकर चूड़ामनबो के पास आ गई थी और जवाब दे रही थी विजयबो की गालियों का।

"खाली नौलाखे का दोस है? ई साली खटकिन का कोई दोस नहीं है?" बालचन पांड़े ने कहा तो भागी चूड़ामनबो, पर पकड़ी गई। घूंसों और थप्पड़ों की बरसात शुरू हो गई थी। दयाशंकर को पुकारने लगी मदद के लिए।

"तुम मत जाना, बबुआ!" ओसारे में खड़ा होकर बाहर की हौलखौल का नजारा

लेते दयाशंकर के आगे खड़ी हो गई हैं रामज्ञान पांड़ेबो, "जानबूझकर तुम्हारा नाम ले रही है नेटूइनीया।"

"तो मरने दें उसको?" दयाशंकर झुंझलाए।

"तो हमी लोगों को न मरवाना चाहते हो...मेहरारू कह रही है, रहेंगे ही नहीं यहां। तो हमीं लोग न रह गए मरने के लिए?" पता नहीं कितने दिनों का संचित आक्रोश आ गया था बाहर।

दयाशंकर चले गए थे बिना कुछ कहे हुए। चूड़ामनबो को लाए घसीटते हुए और छोड़ गए ओसारे में। नाक, मुंह और माथे से खून बह रहा था उसके। सरिता भी दौड़ी हुई आ गई थी रोती-कलपती।

अचानक ऐसी चिलक उठी अपराध-बोध की कि रामज्ञान पांड़ेबो को लगा, देह का सारा खून ही उड़ गया हो। लाज भी लग रही है सोचकर कि आवेश में क्या-क्या बोल गई थीं दयाशंकर को।

चेतना भीतर आंगन में लेती गई थी चूड़ामनबो को। रामज्ञान पांड़ेबो भी गईं।

"बेकारे बचा लिए, अम्माजी...मरिये जाते तो...खाली सरितवा..." बोलने में तकलीफ हो रही थी चूड़ामनबो को।

सरिता जोर-जोर से रोने लगी थी।

"जब सब ठीक हो गया, तब काहे को रो रही है।" रामज्ञान पांड़ेबो का मन किया कि करीब खींचकर छाती से लगा लें सरिता को, पर मन में ही रह गई मन की बात। पांच-छः बरस की होगी, तभी से तो उसे गाली देना सिखा दिया था चूड़ामनबो ने।

गों-गों-सी आवाज निकलने लगी थी रामज्ञान पांड़े के मुंह से।

"सब ठीक हो गया अब।" जाकर उन्हीं के पास बैठ गईं हैं रामज्ञान पांड़ेबो। मन किया, पूछें सरिता से, 'पहचानती हो बाबा को?' पर नहीं पूछा।

आधा से अधिक गांव जमा हो गया था बाहर। खाट पर लादकर नौलाख महतो को ले गए थे उनके टोलेवाले। गांव एकमत था कि सोरहो आना ठीक काम हुआ था।

"यही हाल बाकी घुसपैठिया सबका होता, तब न ठीक था।" शिवजी पांड़े ने चलानी चाही यह चर्चा, पर रुचि नहीं दिखाई किसी ने तो चुप हो गए।

"बिजइया को धकेल दिया जाता छत पर से तो..." गोसांई पांड़े फुसफुसाए।

"देखिए, यह सब सोचिएगा भी आप लोग तो..." डर गए हैं दयाशंकर। दौड़े हुए पहुंच गए हैं चूड़ामनबो के आंगन में। कहीं इस काम में लगे हुए न हों कुछ लोग।

"विजय!" आवाज दी उन्होंने।

विजय रो रहा था छत के किनारे सीढ़ी के पास बैठा।

"नीचे आ जाओ। कुछ नहीं होगा।"

रोता रहा वह।

"विजयबो!"

कोई जवाब नहीं आया कमरे के अंदर से।

"जाके बड़ी काकी और किसी और को बुला लाओ...देवता काका को।" आंगन

में घुस आए लड़कों को कहा।

टोले की पांच-छः औरतें आ गईं तो नीचे आया विजय। बहुत डरा हुआ था। राघव पांड़े ने नींद का इंजेक्शन दिया तो सो गया।

महिला आयोग के पास दूसरी दरखास्त पहुंची विजयबो का कि पहली दरखास्त उनसे कुछ लोगों ने दबाव डालकर लिखवाई थी तो आयोग ने उस समय तक सोचना ही नहीं शुरू किया था पहली दरखास्त के बारे में। दूसरी दरखास्त पहुंची तो आसान हो गया सोचना। पहली दरखास्त को रद्द मान लिया गया।

रामप्रवेश चौधरी पहले ही डांट चुके थे अध्यक्षा महोदया को कि नौलाख महतो के अवैध प्रेम-संबंधों को परवान चढ़ाने के लिए नहीं बना था महिला आयोग।

नौलाख महतो के मान-मर्दन से अगर कोई सचमुच दुःखी था तो वह थे कन्हैया सिंह। नारद सिंह के मारे जाने के बाद श्रीभगवान सिंह के भागे फिरते होने की हालत में नौलाख महतो का पतन मानो घोषणा थी एक तरह से कि कुंवरपुर में अब दमयंती और दयाशंकर का ही राज चलने वाला था। दयाशंकर अभी भी यही कहते चल रहे थे कि बीच में पड़कर बचा लिया था नौलाख महतो को, लेकिन कन्हैया सिंह जानते हैं कि यह घटना दयाशंकर के एक सक्रिय उग्रपंथी के रूप में रूपांतरण का प्रमाण थी। जो आएगा रास्ते में, हटा दिया जाएगा।

कन्हैया सिंह बहुत बेचैनी में जी रहे थे नौलाख महतो की पिटाई के दिन से।

"रामप्रवेश चौधरिया का खून भी ठंडा हो गया क्या, सतनारायण भाई? पुलिस नहीं लगा सकता इसके पीछे?"

"कहां लगा रहा है? अवधेश चौधरिया बैठा ही हुआ था मुंह करिखा लगाकर, अब नौलखवा भी बैठ गया।"

"हम तो कहते हैं कि अखिलेश सिंहवा को फुल सपोर्ट दिया जाए अब। नहीं तो खेल खतमे समझ लीजिए।

"अखिलेश सिंह पर निर्भर करता है कि..."

"ए भाई, अखिलेश सिंह के अलावा दूसरा दिखाई ही कौन दे रहा है आपको? दिखाई दे रहा हो तो बताइए।"

सत्यनारायण सिंह के मुंह से निकलने वाला ही था—'बूटन राय'...कि गुनी से लौटा एक लड़का हांफते हुए इस खबर के साथ हाजिर हो गया कि पिपरी में बूटन राय के घर पर हमला हुआ था। बूटन राय बच गए थे, लेकिन उनके एक भतीजे और बनिहार के साथ-साथ गांव के दो अन्य लोग खेत रहे थे।

"ई तो कोई बचा ही नहीं जी?" खबर सुनते ही कन्हैया सिंह के चेहरे की रंगत उड़ गई है।

"उसी का हाथ है?"

"और क्या।"

"पुलिस पहुंच गई है?"

"मारिए गोली एकरी मइया की...पुलिस को।" वह लड़का दूसरे दुआर की ओर बढ़ गया पुलिस को गाली देकर।

पुलिस पहुंच गई थी पिपरी, लेकिन मूक दर्शक बनी हुई थी। बूटन राय ने मना कर दिया था लाशों को उठाने देने से। कहा, "जिनकी आंखें साबुत बची हुई हैं, देखें, और फैसला करें कि क्या इसी तरह जीना-मरना है अब इस देश में?"

राइफलों का मेला लगा हुआ था घटनास्थल पर। देखा तो रोमांचित हो गए कन्हैया सिंह। दस-दस कोस दूर के गांवों से उमड़े चले आए थे नौजवान। कोई रोता-सुबकता दिख जाता है बूटन राय के अनुज लुकुड़ी राय को तो डपटकर चुप करा देते हैं उसे—"रोना नहीं है, रोना नहीं है! रुलाना है। सालों के कंधों पर उनकी औलादों की लाशें लाद देनी हैं। रोना नहीं है।"

दिवंगत नारद सिंह के बूढ़े पिता ने गाली देना शुरू कर दिया है उन नौजवानों को, जो लुकुड़ी राय के बताए रास्ते पर चलने को तैयार नहीं हों।

"कौन साला दोगला का जामल है, जो तैयार नहीं है?" कन्हैया सिंह हठात् गरज उठे।

लोग देखने लगे, ई कहां का रंगबाज है?

वहां दोगले का जना संयोगवश कोई नहीं था। एक साथ कई राइफलें गड़गड़ाईं इस आह्वान के जवाब में तो पुलिस का एक आला अधिकारी, जो भीड़ के एक हिस्से के आगे खड़ा होकर लाशें पोस्टमार्टम के लिए सौंप देने की गुजारिश कर रहा था, घबराकर पीछे की ओर भागा और एक गड्ढे में पैर फंस जाने के कारण गिरा तो इस लायक भी नहीं बचा कि फिर खड़ा होकर रिरिया सके भीड़ के सामने। पर पुलिस को अनुभव था ऐसी परिस्थितियों का सामना करने का। भीड़ गालियां दिए जा रही थी, पर पुलिस धीर-गंभीर बनी हुई मान-मनव्वल के प्रयास में लग गई थी।

दीनानाथ पाठक, जिनके निलंबन का आदेश चल चुका था पुलिस मुख्यालय से, लुकुड़ी राय के पास पहुंचे और कहा—"आज जो हो रहा है, पहले ही हो गया होता तो यह दिन देखना नहीं पड़ता। रायजी के यहां हमारे रहते हुआ यह सब, यह दुःख हमीं जानते हैं, कितना दुःख देगा हमको...आज के बाद अपने खानदान में किसी को नहीं करने देंगे पुलिस की नौकरी..."

बोलते-बोलते रोने लगे पाठकजी।

बूटन राय ने कहा, "रोएं मत। रोने से कमजोर होता है संकल्प।"

भीड़ दुःखी हो गई पुलिस की दयनीयता देखकर।

"ई बेचारा सबके हाथ में कुछ हइए नहीं है। साला नेता सब नचा रहा है बेचारा सबको..." इस निष्कर्ष पर पहुंचते ही रामप्रवेश चौधरी मुर्दाबाद के नारे लगाने लगी भीड़।

"एक समझौता हुआ था।" एक चौकी पर खड़े हो गए हैं बूटन राय, "माननीय विधायक, जो खुद भी कम नालायक नहीं हैं, के नालायक अनुज को मुक्त कराने के वक्त समझौता हुआ था दोनों पक्षों के बीच कि दोनों मदद करेंगे एक-दूसरे की, क्योंकि

दोनों का लक्ष्य है बड़ी जातियों को मिटा देना। सोच लीजिए, कितना कठिन जीवन जीना है आपको...''

पाठकजी रो-धोकर, बूटन राय को लाशें पुलिस को सौंप देने को राजी कर, भीड़ से दो सौ गज दूर खड़े अपने उच्चाधिकारियों के पास गए तो उनके उच्चाधिकारियों ने क्षोभ व्यक्त किया कि विभाग के एक काबिल अधिकारी को अकारण ही निलंबित होना पड़ रहा था। उन्होंने विश्वास दिलाया उन्हें कि उनके निलंबन की कार्रवाई पूर्णतः राजनीतिक मजबूरियों के कारण करनी पड़ी थी, वरना विभाग को पहले भी विश्वास था उनकी योग्यता और निष्ठा में, अब भी है और आगे भी रहेगा। ठेहुनों के जोड़ में गठिया के उत्पात के कारण दिक्कत होती थी पैर पटकने में, पर एक कड़क पुलिसवाले की तरह अधिकारियों को सेल्यूट किया पाठकजी ने और लाशें उठाने के लिए भीड़ की ओर लौट गए।

अखबारवाले खोजी पत्रकारिता के स्तर पर उतर आए थे। पता लगा लिया था कि बूटन राय हिट लिस्ट में थे नक्सलवादियों के और पिपरी में स्थापित पुलिस चौकी पर हमला भी हो चुका था। जानना चाहते थे सरकार से कि पुलिस चौकी हटा क्यों ली गई थी पिपरी से? सरकार कह रही थी, यह नीतिगत मामला है, अखबारवालों को नहीं बताया जा सकता। अखबारवालों ने पूछा—नक्सलवाद की समस्या से निबटने के लिए कौन से सकारात्मक कदम उठाए गए हैं? सरकार की ओर से याद दिलाया गया अखबारवालों को कि सत्ता पक्ष के विधायक के भाई का अपहरण हुआ था, फिर भी घुटने नहीं टेके थे सरकार ने; पुलिस कार्रवाई कर आजाद करवाया था उन्हें। काफी खोज-बीन के बाद अखबारवाले एक बार फिर इस निष्कर्ष पर पहुंच गए कि जनता का विश्वास उठ गया था सरकार के ऊपर से।

और सचमुच जनता का विश्वास सरकार के ऊपर से उठकर लुकुड़ी राय और अखिलेश सिंह के ऊपर बैठ गया था। जनता गद्‌गद थी वीरों की बौखलाहट देखकर। पाठकजी ने अपने उच्चाधिकारियों तक पहुंचाई यह खबर तो संतोष व्यक्त किया उन्होंने कि चलो, अपनी रक्षा का दायित्व स्वीकार करने को तैयार हो गई थी जनता।

''आप लोगों को, मुझे मालूम है, बाध्य किया जाएगा जनता की मदद नहीं करने को, विवश किया जाएगा पक्षपातपूर्ण आचरण करने को, फिर भी मेरी अपील है कि जनता की दुर्गति को समझें और राइफल वगैरह का लाइसेंस लेने में मदद करें।'' बूटन राय ने हाथ जोड़कर कहा उच्चाधिकारियों से।

चुपचाप सुन लिया उच्चाधिकारियों ने।

लेकिन गृह सचिव चूंकि गृह सचिव थे, झुंझलाए कि इतना बड़ा पुलिस विभाग नक्सलवादियों के ठिकानों का पता नहीं लगा पा रहा था, जबकि वे उन्हीं गांवों में छुपे हुए थे कहीं।

''आखिर इन तमाम चौकीदारों-दफादारों को वेतन क्यों देते हैं हम लोग?'' एस.पी. से पूछा।

जवाब तैयार बैठा था। स्थिति से निबटने के लिए जैसी तैयारी अपेक्षित थी, नहीं

थी पुलिस की। उसके हथियार पुराने थे। नक्सलियों के पास ए.के. थे और पुलिस की राइफलों का भरोसा नहीं था कि चलेंगी ही ऐन वक्त पर। गाड़ियां तक नहीं थीं थानों में, पेट्रोल का लाखों रुपया बकाया था, कागज खरीदने का पैसा नहीं था, एफआईआर लिखने तक के लिए कागज नहीं था। वह तो नौकरी में बने रहने की लाचारी थी कि जैसे-तैसे जोगाड़ करके बेचारे लिख लेते थे कुछ न कुछ। थके-हारे सिपाहियों के आराम के लिए चौकियां तो दूर, थानों में भी कुर्सियां तक नहीं थीं बैठने के लिए। कोई रात-भर नक्सलवादियों के साथ लुका-छिपी खेलकर आएगा तो आराम करना चाहेगा कि नहीं? नहीं तो जागने के समय सो जाएगा; जबर्दस्ती उठाने पर कदमताल नहीं कर पाएगा। मरने से डरने लगे थे लोग, क्योंकि इनाम-फिनाम को तो मारिए गोली, पेंशन का पैसा मिलने में ही दुर्दशा हो जाती थी परिवार की।

गृह-सचिव को स्वयं ही कंठस्थ था यह जवाब और राष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों में प्रयोग भी करते थे इसका, फिर भी चूंकि वे गृह सचिव थे, उन्होंने कहा कि कही गई सारी बातों के सच होने के बावजूद अगर इच्छा-शक्ति हो तो कामयाबी मिल सकती है!

"असली चीज तो, सर, राजनीतिक इच्छा-शक्ति है।"

"जो आपके हाथ में नहीं है, उसके बारे में बात मत कीजिए।" एस.पी. को डांटा उन्होंने और सरकार से कहा कि इस अधिकारी में टैक्टफुलनेस की कमी है।

सरकार ने इस विश्वास के साथ जिले से चलता कर दिया वी. सुधाकर को कि उनकी जगह एक टैक्टफुल एस.पी. के आ जाने के बाद कुछ ऐसा होगा कि राजनीतिक इच्छा-शक्ति के नहीं होते हुए भी अपेक्षित इच्छा-शक्ति पैदा हो जाएगी पुलिस में।

दयाशंकर ने सुनी एस.पी. के तबादले की खबर तो राहत की सांस ली। डरे हुए थे कि पिपरी कांड के बाद उन्हें फिर घेरेंगे एस.पी.। यह डर तो खैर, करता ही रहता था परेशान कि एस.पी. के मुंह से कहीं प्रकट न हो जाए यह राज कि अवधेश चौधरी के छूटने और नारद सिंह की हत्या में उनका ही हाथ था।

वी. सुधाकर के साथ ही जिले के बाहर चला जाने वाला था यह राज।

"सब सालों की फटी हुई थी कि रहेगा तो पहुंच ही जाएगा घटना की तह तक, तो बदली करा दिया।" मंधाता मिश्र दुःखी थे एस.पी. के तबादले से।

दयाशंकर ने नहीं बताया उन्हें कि खुद उनकी भी फटी हुई थी।

धनंजयजी, जो ऑपरेशन की विफलता के लिए नाराज थे दमयंती से, उनकी नाराजगी भी गिर गई एस.पी. के तबादले की खबर सुनकर—"चलो, एक काम तो हुआ। ही वाज ए रियल हंटर।" कहा और इस अंतर्द्वंद्व से जूझने लगे कि जलाएं कि नहीं सिगरेट। खांसी पिछले एक महीने से परेशान किए हुए थी। अंततः जला ली सिगरेट और मुस्कराए यह सोचकर कि दमयंती देखेगी तो कहेगी जरूर, "दूसरों को संकल्प का पाठ पढ़ाते हैं और खुद..."

पिपरी से लौटने के बाद कन्हैया सिंह के तो पैर ही नहीं पड़ रहे जमीन पर। किसी अंधी सुरंग में भटकते हुए अचानक ही कोई रोशनी का जखीरा मिल गया हो मानो। अनूठे उत्साह से भरे हुए हैं।

"अबकी बार बेसी चालाकी दिखाए साले राजपूत लोग तो देख लीजिएगा, बिला जाएंगे हमेशा-हमेशा के लिए।" कहा।

"बूटन राय मोक्ष दिला देंगे?" रंगू सिंह बोले।

"गांड़ी में बांस होगा आपके, अब तभी बात करेंगे आपसे। उसी समय पूछेंगे कि कौन मोक्ष दिला देगा?" कन्हैया सिंह तिजुक गए और तिजुककर चले आए दिनेश सिंह की दालान से।

आज के बाद कन्हैया सिंह सचमुच नहीं आएंगे इस दालान में। या आएंगे तो बस यूं ही चले आएंगे शिष्टाचारवश। पहले की तरह अड्डा जमाने नहीं आएंगे। अड्डा तो जमेगा लल्लन सिंह की दालान में या श्रीभगवान सिंह की दालान में।

दिनेश सिंह कभी-कभी उदास हो जाया करेंगे याद कर कि पहले दयाशंकर ने छोड़ दी दालान और उसके बाद कन्हैया सिंह ने।

21

सुरेश पांड़े की साइकिल के डंडे पर बैठकर जल्दी पहुंच तो गया है नकचिपटा, पर पछता रहा है। एक पैर की हवाई चप्पल फिसलकर कब, कहां गिर गई थी, पता ही नहीं चला था। झिनझिनी भरी हुई थी उस पैर में। जमीन पर पैर रोपने के बाद भी कुछ देर के बाद ही पता चला कि चप्पल नहीं थी पैर में।

जलती हुई आंखों से घूर रहा है सुरेश को—"आप ही बोले थे कि बैलेंस गड़बड़ा जाता है कैरियर पर बैठने से, आगे बैठ जाओ। चलिए, खोजवाइए अब।"

"चप्पल?"

"तो और क्या! दुइयो महीना नहीं पहने हैं ठीक से।"

"मिलेगा अब?"

"अगमजानी हैं कि बता दें यहीं खड़े-खड़े?"

"अब हमको कहां रगेदोगे एक गोड़ के चप्पल के लिए। दवाई-बीरो खरीदना है।"

"ई बात ठीक नहीं है, बाबा। नया चप्पल भुलवा दिए और..."

"हमी बोले थे कि गिरा दो?" सुरेश को गुस्सा आ गया है नकचिपटा की जिद पर।

महतो टोले ने नौलाख महतो की कुटाई के बाद अपना दूसरा सबसे बड़ा दुश्मन सुरेश को ही घोषित कर रखा था। अकेले गुनी आने में डर लगने लगा था सुरेश को, इसीलिए नकचिपटा को साथ ले लिया था। नकचिपटा एक चोरुआ पिस्तौल भी रखता था अपने साथ।

"कुछ प्रौबलेम है का नाकचिपुट?" नौबत मियां खिंचे चले आए थे उन्हें जिरह करता देखकर।

"बायां गोड़वाला चप्पलवे गिर गया, मरदे। एकदम नया था अभी। दू महीना पहने होंगे मुश्किल से।" नकचिपटा ने बताया।

"हाथी खरीदने से बड़ा क़ाम हाथी रखना होता है।" नौबत मियां बोले।

"अब कह रहा है कि खोजने चलिए?" सुरेश ने इस आशा में कहा कि नौबत मियां कहेंगे, खोजना बेकार था। लेकिन नौबत मियां ने नहीं कहा ऐसा। बोले—"ऐसे तो जमाना इतना खराब है कि लोग टूटा फीता तक चल दें उठाके, लेकिन जब तक सांस है, आस है।"

"आप कहां डोल रहे हैं यहां?" सुरेश कुढ़ गया है।

"भाई, कमजोरका और बरियरका में झगड़ा लगेगा तो कमजोरका को तो डोलना ही न पड़ेगा?" कुर्ते की बगली से सुरती की पोटली और चूने का डिब्बा निकाल लिया है नौबत मियां ने। सो दूसरे सभी काम भूलकर सुरती बन जाने तक इंतजार कर लेने का कारण पैदा हो गया है बाकी दोनों के लिए।

"आपको तो हम बोलबे किए कि छोड़िए सी.ओ.-बी.डी.ओ., तो जहुवाए हुए हैं।" नकचिपटा की बेचैनी बढ़ रही है। देर हुई जा रही थी।

"जमीन तो गैरमजरुआ है न जी?" सुरेश को कोई जल्दी नहीं है।

"गैरमजरुआ माने क्या? गरीब की जोरू। ताकतवाला चाहता है कब्जिया लें।" नौबत मियां दार्शनिकता की छांव में खड़ा हो गए हैं।

"ई नौबत मियां झूठो का जेंवर बरते हैं, महाराज। चलिए, देरी हो रहा है। कहा जा रहा है कि कहिए तो हड़का दिया जाए हाकिम सिंह को तो सी.ओ.-बी.डी.ओ. में अझुराए हुए हैं।" एक चुटकी सुरती निचले होंठ के नीचे दबाने के बाद चलने को खड़ा हो गया है नकचिपटा।

"हमको तो लग रहा है कि पहिलका खोजने के चक्कर में तुम्हारा दुसरका भी जाएगा।" सुरेश झल्लाया, "बेमाने-मतलब का करकरहट किए हुए हो।"

"दुसरका हम हाथ में ले लेंगे।" नकचिपटा ने कहा और चप्पल हाथ में ले ली।

"केवल फैसन के चलते हो रहा है प्रौबलेम।" प्लास्टिक के अपने फटे हुए जूते को निहारते हुए सी.ओ. ऑफिस की ओर बढ़ गए नौबत मियां।

"चलो, जब नहींये मानोगे तो..." साइकिल पर चढ़ने के लिए एक ऊंची जगह के लिए नजर दौड़ाने लगा सुरेश। पैडल मारकर चढ़ना उसे नहीं आया आज तक। साइकिल कभी मिली भी कहां कि प्रैक्टिस करता! यह तो गोसांई पांड़ेवाली झटक लाया था आज। गोसांई पांड़े की इस चेतावनी के साथ कि कुछ होना नहीं चाहिए उनकी साइकिल को। नकचिपटा को लादकर ले जाने की बात सुनकर भी नाराज होते।

"आप, बाबा, दवाइये नहीं रखते हरमेसा, नहीं तो नोट तो झरने लगता।" साइकिल ने रास्ता पकड़ लिया वापसी का तो नकचिपटा को लगा कि कोई मीठी बात सुनानी चाहिए सुरेश पांड़े को।

"नोट झरने के लिए नोट लगाना पड़ता है।" सुरेश बोला।

"उदय बाबा भी लगता है गड़बड़ाइये गए? नहीं तो जवार में नाम हो चला था धीरे-धीरे।"

"उदय बाबा-फुदय बाबा से कोई उम्मीद नहीं है।"

"कुछ लोग कहते हैं कि जान-बूझकर करते हैं उल्टा-सीधा काम...नहीं तो सब बूझते हैं।"

"कौन कहता है?"

सुरेश ने देखा, मकई के खेत के पासवाली आर पर खड़ा एक आदमी रुकने का इशारा कर रहा था।

"चीन्हते हो?" फुसफुसाया सुरेश।

नकचिपटा कोई जवाब देता उसके पहले ही उसकी नजर पौधों की ओट में खड़े दूसरे आदमी पर पड़ गई थी। दुनाली थी उसके हाथों में। साइकिल पटकी और भागा सुरेश। और पलटकर देखा, नकचिपटा की गर्दन अलग हो चुकी थी धड़ से।

"बचाओ!" वह चीखा और चीखने के साथ ही ढेर हो गया। गोली उसकी पीठ को छेदकर सीने की पसलियों को तोड़ती हुई बाहर निकल गई थी।

श्रीराम पांड़े पथराई हुई आंखों से देख रहे हैं सुदर्शन पांड़े का बिलखना।

सुरेशबो चीख-चीखकर गालियां दे रही है उदय पांड़े को—"कहता है कि भगवाने का अवतार हैं और भतीजा को मरवा दिया..."

"जिसको गरियाना चाहिए, उसको कोई कहिये नहीं रहा कुछ और अधकपारी को गारी दे रही है..." तिलंगी सिंह की तबियत नहीं ठीक चल रही इन दिनों, पर मित्र का दुःख बांटने आ गए हैं।

उदय पांड़े से पूछा गया—कैसे हो गया यह सब? बोले, "हमसे टिकस मांगने आया था ऊपर जाने का? दिन पूरा हुआ, गया!"

"जो-जो दयासंकरा के साथ रहेगा, यही नतीजा होगा उसका।" धनजीबो को सुनाकर कहा शिवजी पांड़े ने।

"दयाशंकर को अब मत आने दो, दुलहिन।" बालचन पांड़ेबो दिल की बात जुबान पर लाईं।

"घर के लोग दुश्मन हो जाएं तो बाहरवाले का ही न भरोसा करना पड़ेगा?" धनजीबो ने झिड़क दिया अपनी सास को।

"नौलखवा का काम है, बाबा।" जगनाथ आ धमका था पूछने, "क्या करना है?"

दयाशंकर तय नहीं कर पा रहे, क्या करना है। शत्रुपक्ष बदले की कार्रवाई पर उतारू था। मित्रपक्ष बौखलाया हुआ था।

रात के लगभग दस बजे होंगे कि दरवाजा खटखटाया था किसी ने। सूबेदारबो थी। संदेश लेकर आई थी कि मिलना चाहती थीं मुसमात।

मुसमात इंतजार कर रही थीं दयाशंकर का।

दयाशंकर ने देखा, झुर्रियों से पटा हुआ, आत्म-सम्मान की कांति से दीप्त एक गोरा चेहरा। बहुत बूढ़ी हो गई लगीं मुसमात—बुझनेवाली चमकदार लौ-सी।

"अब हम ज्यादा दिन नहीं जिएंगे।" बोलीं।

"क्यों?" आश्चर्य हुआ दयाशंकर को कि मुसमात ने भी मृत्यु के आसन्न होने

की ही बात की।

उनके 'क्यों' का जवाब नहीं दिया मुसमात ने। चुपचाप देखती रहीं उनके चेहरे को।

ऐसी गहन चुप्पी छा गई थी ओसारे में कि उनकी सांसों का आना-जाना तक सुनाई दे रहा था दयाशंकर को।

"जानते हो, आज क्या हुआ? सिरीकमलवा और कलक्टरा का महेंदरा दारू पीकर घुस गया तीन-चार लड़कों के साथ। गाली-गलौज किया और बक्सा का ताला तोड़कर जो भी रुपया था उसमें, ले गया।"

"कब?"

"अभी एक घंटा पहले।"

दयाशंकर को डर हुआ कि उनका आना सुनकर कहीं वे फिर नहीं आ धमकें। दिराखे पर रखी लालटेन की पीली रोशनी अचानक कुछ कम लगने लगी। जाकर उकसा दिया बाती को।

"एक बात सोचे हैं हम।"

दयाशंकर सुनने लगे चुपचाप।

"कोर्ट-कचहरी अब हमसे नहीं दौड़ा जाएगा। शरीर साथ नहीं देता। तुम लोग हमारा सारा टोपरा ले लो। पांच बिगहा छोड़ देना भगवान को भोग लगाने के लिए। कब्जा कर लो। केस-मुकदमा होगा तो बोल देंगे, हम बोले हैं।"

दयाशंकर की तो आंखें फटी की फटी रह गईं।

"है हिम्मत?" मुसमात ने पूछा।

"पचास बिगहा जमीन दे देंगी आप?"

"केवल जोगिया के परिवार को नहीं मिलना चाहिए। हारोगे तो तुम लोगों से बड़ा दोगला कोई नहीं होगा।"

जैसे-जैसे दिमाग में जगह बना रहा है मुसमात का प्रस्ताव, उड़ने का मन होता आ रहा है दयाशंकर का। यह तो गजब की बात हो जाएगी। नाम भी हो जाएगा कब्जे का और यह आश्वासन भी होगा कि कोई थाना-कचहरी में नहीं घसीट पाएगा।

"नहीं हारेंगे! भले ही जान चली जाए।" दयाशंकर चकित हैं कि यह कौन बोल पड़ा था उनके अंदर से।

"कल कर लो।"

"कल नहीं, परसों।"

"अब जाओ।"

जाने के पहले कुछ देर चौखट पर ठिठके रहे दयाशंकर। प्रतीक्षा में कि शायद कुछ कहें मुसमात। मुसमात उनके बाहर निकलने का इंतजार कर रही थीं।

"ई आप क्या कह रहे हैं, बाबा?"

जगनाथ, छांगुर, नंदलाल, निहोरा, कोई भी तय नहीं कर पा रहा, क्या कहे मुसमात के इस कल्पनातीत प्रस्ताव पर।

"हम लोग कहेंगे, कब्जा कर रहे हैं और मुसमात कहेंगी, पुण्य कमाने के लिए कुछ समय के लिए दे दिया है गरीबों को।"

"बहुत लहू बहेगा, बाबा!" सुरेश और नकचिपटा की हत्या के आतंक से भी अभी मुक्त नहीं हो सके हैं लोग।"

"गोली-बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई है, नंदलाल! असली आंदोलन भूलते जा रहे हैं लोग। जनमरव्वल कोई उपलब्धि नहीं है। इस तरह की कार्रवाई से ही वापस पटरी पर आएगी गाड़ी। और जहां तक उन लोगों के नहीं मानने की बात है तो इस सच्चाई को तो मान ही लेना है कि एक तगड़ा विपक्ष है हम लोगों का, जो अंतिम दम तक लड़ना चाहेगा।"

"दूसरे गांवों के साथी लोगों को भी जुटाना होगा। धनंजयजी को बताना होगा।" जगनाथ ने कहा।

"अब से चौबीस घंटे के अंदर जिनको भी बताया जा सकता है, बताया जाए। कम से कम पांच हजार लोग जुट जाएं। छांगुर धनंजयजी को खबर दे। धनंजयजी नहीं भी मिलें तो पार्टी तैयार रहे। मुठभेड़ बचाना है, पर पीछे नहीं हटना है। बाकी बात बाद में सोचेंगे।" दयाशंकर ने कहा।

"पार्टी के लोग आपको कहेंगे कि हड़बड़ी में प्लान बना दिए।" जगनाथ बोला धीरे-से।

"देखा जाएगा।" दयाशंकर ने ध्यान नहीं दिया।

"हमको भरोसा नहीं था कि मरद वाला काम कर सकते हैं आप!" छांगुर खुश था।

डराने वाले खयाल आ रहे थे मन में—घर असुरक्षित था...अवधेश चौधरी, लुकुड़ी राय और अखिलेश सिंह के लोग एक ही साथ धावा बोल सकते थे...प्रशासन सी.आर.पी. वगैरह भेजकर भगा सकता था जमा हुए लोगों को; पर उनके बारे में सोचना नहीं चाहते दयाशंकर। अब तो जब तक जिंदा रहना था, इस हसीन भ्रम के लिए ही रहना था कि कब्जे की योजना पफल हो जाएगी और पार्टी में उनका दर्जा एक शीर्षस्थ नेता और रणनीतिज्ञ का हो जाएगा।

"तुमको लगता है कि उधर से भी जुटान होगा?" पूछा भंडारी से।

"होगा तो देखा जाएगा।" भंडारी ने कहा तो डुमरी के सीवान की चौड़ी पगार पर तेजी से चलते दयाशंकर को अच्छा लगा उसका साहस।

दिशा-मैदान के लिए निकले कुंवरपुर के लोगों को आश्चर्य जरूर हो रहा था नोनिया टोले के पोखरे के पास की बथान में जमा होती भारी भीड़ को देखकर, पर सोच रहे थे कि सुरेश और नकचिपटा की हत्या का विरोध करने के लिए जमा हो रहे थे लाल झंडावाले।

भीड़ बहुत बड़ी हो गई और कतार बनाकर प्रभुदयाल सिंह के बगीचे की दिशा में बढ़ने लगी तो कान खड़े हुए लोगों के; और कुंवरपुर बेचैन हो उठा।

"मुसमात के खेत में झंडा गाड़ रहा है रे माधड़चोद सब।" दूधनाथ सिंह चिल्लाए

अपने खलिहान से और भागदौड़ मच गई गलियों में। क्या करना है, किसी को भी नहीं सूझ रहा था। पिपरी कांड के बाद उग्रवादियों के धावों के मुकाबले की रणनीति के बारे में तो सोचा गया था, परंतु दिन-दहाड़े दस हजार लोगों की भीड़ के धावे के बारे में किसी ने नहीं सोचा था।

"अब हम नहीं जिएंगे रे बाप! नान्ह सब घुसा हुआ है खेत में और साला मौगड़ा छत्री सब चुहानी में लुकाया हुआ है...आज हथियार होता हमारा तो बता देते...पहले ई साला मौगड़ा सब को मारते..." विक्षिप्तों की तरह चीख रहे हैं श्रीभगवान सिंह।

"ए भाई, हम तो तैयार हैं...लेकिन यह तो सोच लिया जाए..." लल्लन सिंह किंकर्तव्यविमूढ़-से खड़े हैं राइफल हाथ में लिए हुए।

"अभी जाना ठीक नहीं होगा।" हरिद्वार पांड़ें की आवाज कांप रही है।

"तो मुंह क्या देख रहे हैं एक-दूसरे का? निकलिए जवार में।" कन्हैया सिंह गरजे।

जोगी सिंह की औरतों ने गाली देना शुरू कर दिया था मुसमात को।

"मुसमात से भी पूछोगे, का चाहती है?"

मुसमात जल चढ़ा रही थीं अपने छोटे-से शिवाले में। बोलीं—"अइसे भी तो जाने वाला ही था।"

"अरे, ई छीनरी मिली हुई है ऊ सबसे...इसी को ढठिआओ पहले..." जोगी सिंह भी चीखने लगे हैं।

"देखिए जो कर रहे हैं आप लोग, शोभा नहीं देता समझदार आदमी को।" छबीला सिंह ने सोचा था, नहीं बोलेंगे कुछ, पर, चुप नहीं रह सके, "खेत कोई भेंड़-बकरी नहीं है कि हांक ले जाएगा कोई। करने दीजिए कब्जा। अपनी तैयारी के बारे में सोचिए। जुटान करना होगा, पुलिस और प्रशासन को सूचित करना होगा।"

"हँसेगा, ए छबीला भाई, हँसेगा हमारे ऊपर...आंख के सामने नान्ह सब घुस गया खेत में..." रोने लगे श्रीभगवान सिंह।

छबीला सिंह की राय, लेकिन, अच्छी लगी थी दूसरों को। दस हजार की भीड़ के सामने जाकर बेइज्जत होने में चालाकी नहीं थी।

खेतों की घेराबंदी का काम शुरू हो गया था। बेहया और बांस के फट्टों को गाड़कर सीमा बनाई जा रही थी। झोपड़ियां खड़ी करने का काम भी शुरू हो गया था। रेजटोलों में सन्नाटा था। जो नहीं चाहते थे जाना, वे भी भाग गए थे डर के कारण। उन्हें डर था, गांववाले उन्हें ही निशाना बना सकते थे गुस्से में।

रामज्ञान पांड़ेबो बदहवास-सी घूम रही हैं आंगन में। सारा बभनटोल थू-थू कर रहा है दयाशंकर के नाम पर।

"धक्का मारकर साले को गांव से बाहर कर दिया जाए अंडा-बच्चा के साथ!" शिवजी पांड़े का छत पर खड़ा होकर अनवरत गालियां देना सुनाई दे रहा है उन्हें।

अपराह्न चार बजे गुनी के दरोगा पहुंचे कुछ सिपाही लेकर। पुल के उस पार से ही देखा उस मजमे को और वापस चले गए।

कुंवरपुर में खाना नहीं बना किसी भी घर में। मवेशियों को भारी मन से

खिलाया-पिलाया लोगों ने।

डी.एस.पी. अगली सुबह लगभग आठ बजे पहुंचे अपने दल-बल के साथ। दल-बल नहर के उस पार छोड़कर आठ-दस सिपाहियों के साथ गांव के अंदर आए। छतों से गालियों की बौछार होने लगी पुलिस पार्टी पर—लोग मौका-ए-वारदात पर पहुंचने में हुई देरी के कारण नाराज थे।

"स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए थे हम लोग...सोच-समझकर स्टेप लेना पड़ता है ऐसे मामलों में।" डी.एस.पी. ने सफाई दी, "आप लोगों की समस्या हमारी समस्या भी है।"

दूधनाथ सिंह की दालान में बैठकर लोगों से घटना का ब्योरा सुनने लगे डी.एस.पी.।

"मुसमात से मिलवाइए हमको।" पूरा ब्यौरा शांतिपूर्वक सुन लेने के बाद कुछ सोचते हुए बोले।

एक लड़के को भेजा गया मुसमात को खबर देने। पिल्ले की तरह केंकियाता हुआ वापस आया वह। तब जो जहां था, वहीं से मुसमात के घर की ओर दौड़ा। मुसमात की सिरकटी लाश पड़ी हुई थी उनके घर के ओसारे में।

श्रीभगवान सिंह नहीं दिख रहे थे कहीं। लोगों को लगा—क्रोध में गला काटकर भाग गए थे बुढ़िया का।

"आप ही जैसे लोगों को कहते हैं..." डी.एस.पी दांत पीसते हुए बाहर आ गए ओसारे के और कुछ सोचने लगे।

चेहरा उतर गया था वहां मौजूद लोगों का। सारा खेल ही बिगाड़ दिया था श्रीभगवान सिंह ने।

"बनाया कब था भोसड़ीवाले ने!" लल्लन सिंह बुदबुदाए।

"अब बताइए, क्या करें हम...पंचनामा करें लाश का, मर्डर की तफ्तीश करें कि जमीन खाली करवाएं?" डी.एस.पी. ने पूछा भीड़ से।

"आप ही हुए हैं जमीन खाली करवाने वाले? फोकस मत दीजिए झूठमूठ का। जाइए, जो करना हो कीजिए; जमीन जिसमें दम होगा खाली करा लेगा।" कन्हैया सिंह ने हंकड़कर कहा।

"तोरी मइया की टीट!" पल्टू सिंह चीखे जवाब में।

"आप चाहिएगा तो सब हो सकता है।" पिता-पुत्र की बयानबाजी को अनसुना करते हुए सत्यनारायण सिंह और कलक्टर सिंह अलग हटा लाए डी.एस.पी. को, "केस बना दिया जाए कि मुसमात का मर्डर भी उन्हीं लोगों का काम है!"

"यह सब तो आगे की बात है।" डी.एस.पी. का मन खट्टा हो गया था कन्हैया सिंह का प्रलाप सुनकर, "लेकिन समझाइए अपने लोगों को कि उल्टा-सीधा बोलकर अपना ही काम बिगाड़ लेंगे।"

"होश में नहीं है आदमी एडी.एस.पी. साहब। लग रहा है, आंख के सामने ही मां के साथ बलात्कार किया गया हो।" सत्यनारायण सिंह बोले।

"दुखी मत होइए, कुछ न कुछ होगा। ऊपरी हलकों में भी चल रहा है विचार-विमर्श।" ढाढ़स बंधाया डी.एस.पी. ने, "फिलहाल तो हम एक प्लाटून छोड़ जाते हैं यहां, ताकि कोई गड़बड़ी नहीं हो। रहने-ओहने का इंतजाम करवा दीजिएगा आप लोग।"

मुसमात की हत्या की खबर पहुंच गई थी उनके खेतों में जमा भीड़ तक।

"मुसमात के हत्यारों को गिरफ्तार करो!" एक जोरदार नारा लगाया भीड़ ने।

दमयंती एक लंबे अंतराल के बाद देख रही है दयाशंकर को। ऐसा काम कर दिखाया है इस आदमी ने कि इसके बाद उसे कोई भी 'कमरेड' नहीं कह सकता।

धनंजयजी ने बुलवाया था दयाशंकर को। कुंवरपुर न जाकर बगल के एक गांव में ठहरे हुए थे।

"पहले क्यों नहीं बताया आपने?" चिढ़ी हुई-सी आवाज धनंजयजी की।

अच्छा नहीं लगा दमयंती को; पहले शाबासी तो दे लेते!

"इतना जल्दी हो गया...छांगुर को भेजा था..."

"अब क्या करना है?"

"अब यह काम हमारे जैसों के वश का नहीं है, सम्हालिए आप लोग..."

"साम्राज्य छिन जाने का डर लग रहा है? कि वन डे मैच समझ लिया है? एक छक्का मार लिया, चलते हैं।"

ऐसे क्यों बोल रहे है धनंजयजी! बर्दाश्त नहीं हो रहा दमयंती से। दयाशंकर के चेहरे पर आहत होने का भाव साफ-साफ देख पा रही है वह।

"फिर भी बहुत बड़ा काम हो गया!" बोली।

"थोड़ा पढ़ना-लिखना भी सीखिए आप लोग।" आवाज को थोड़ा मुलायम बनाने की कोशिश की धनंजयजी ने, "पेरिस कम्यून...लांग मार्च...तेलंगाना...ऐंड डोंट बी अफ्रेड ऑफ लूजिंग!"

"क्या से क्या हो गया! नन्हकू सिंह चाहते थे, कम से कम चांट पर कब्जा हो जाए भूमिहीन लोगों का...पता नहीं, आत्मा कुछ होती होगी तो कितना खुश होगी उनकी आत्मा! याद है, हमारा स्कूल बंद करा दिया था इन लोगों ने..." भाव-विह्वल होने से खुद को नहीं रोक पा रही दमयंती। पुराना समय खड़ा हो गया है आंखों के सामने।

"फिर खोला जाए स्कूल।" यहां आने के पहले दयाशंकर आश्वस्त नहीं थे दमयंती की प्रतिक्रिया को लेकर, पर छू गया है उसका निश्छल अनुमोदन।

"पुलिस पहुंच गई है?" धनंजयजी ने पूछा।

"डी.एस.पी. तो लौट गया लाश लेकर, एक प्लाटून फोर्स छोड़ गया है।"

"कोई बात नहीं हुई?"

"नहीं।"

"और द अदर पार्टी?"

"उधर से तो खतरा है ही।" दयाशंकर ने बताया और अचानक याद आया उन्हें कि घर में माई-परेशान होगी। भंडारी से भेजवाई थी खबर, पर खुद नहीं जा सके थे।

"उधर के खतरे में क्या रखा है!" दमयंती बोली।

"नहीं! रखा कैसे नहीं है?" धनंजयजी गहरी सोच में डूब गए थे।

22

अजय गुप्ता को अफसोस हो रहा है आई.ए.एस. में आने का। यह सड़ियल काडर मिलने का; यह जिला मिलने का। आई.आई.टी. से निकलने के बाद सीधे अमेरिका निकल जाना था, जैसे उनके बहुत से 'रियली इंटेलिजेंट' मित्र निकल गए थे। ऐश कर रहे होंगे साले।

"आई वुड हैव बीन मेकिंग ए कूल फाइव थाउजंड डॉलर्स, इफ नॉट मोर, पर मेन्सम।" पत्नी से कहा।

"आप एक काम कीजिए। पांच-छः साल हो ही गया, स्टडी लीव ले लीजिए। दो-तीन साल वैसे कट जाएंगे, फिर सेंट्रल डेपुटेशन के लिए अप्लाई कर दीजिएगा।" उनकी पत्नी ने सलाहा।

"मैं कल के बारे में सोच रहा हूं और तुम..." 'ब्लैक डॉग' का एक बड़ा-सा घूंट उतार लिया हलक में। दारू भी बेअसर हो रही थी—"नॉर्मली ट्रांसफर कर देते हैं ऐसे मामलों में। वह भी नहीं कर रहे साले।"

"आएगा कौन? आपकी तरह नहीं हैं दूसरे! सबने गोटी फिट कर रखी है।" उनकी पत्नी ने उन्हें उनकी असली गलती की याद दिलाई।

"फंस गए, यार। आई फियर मेजर एस्कालेशन ऑफ द कनफ्लिक्ट।"

"आप भी..." उनकी पत्नी को अपने पति के ऊपर ही गुस्सा आ रहा है, "अकेले यह आप ही का काम है? जो सरकार कहती है, कीजिए। खुद मत लीजिए कोई भी डिसीजन।"

"तुम समझोगी नहीं न...सरकार का कुछ कहती ही नहीं है...या इतना सब कुछ कहती है कि समझ में ही नहीं आता, क्या कह रही है।"

"तब आप भी वही कीजिए।"

"कर तो रहे ही हैं।"

चुपचाप ब्लैक डॉग का दूसरा पेग बनाने लगे अजय गुप्ता, लेकिन चिंताएं इतनी बढ़ गई हैं कि नहीं बांटेंगे किसी से तो दिमाग की नसें दुखती रहेंगी।

"असली प्रोबलेम जानती हो?...साली पूरी मशीनरी एकदम रॉटेन हो गई है...गुनी का दरोगा साला लोकल है...अपने ही घर-परिवार की सिक्यूरिटी के लिए परेशान है। सरकार का काम क्या करेगा? एस.डी.ओ. साला प्रोमोटेड—खुद भी उन्हें पैसा दे रहा हो तो कोई अचरज की बात नहीं है...सब साले चोर...उधर भी पैसा दे देंगे, इधर भी दे देंगे...बच जाएंगे...काम करें डी.एम. साहब...और साले सब को आई.ए.एस. से पे पैरिटी चाहिए..."

"आप चीखना-चिल्लाना छोड़कर पिताजी से बात कीजिए। कम से कम ट्रांसफर

तो करवा ही देंगे।" पत्नी ने ऊबते हुए कहा। टी.वी. पर 'कोरा कागज' आने का समय हो गया था। इस वक्त उन्हें फालतू की गप्पबाजी कबूल नहीं थी। उनके पिता केंद्र में वाणिज्य विभाग में सचिव थे। उन्हें विश्वास था कि मुख्य सचिव से बात कर वे अजय गुप्ता की बदली किसी दूसरे जिले या सचिवालय में जरूर करा देंगे।

"गृह-सचिव साहब सर, बुला रहे हैं सर्किट हाउस में।"

"दिमाग खराब हो गया है क्या कि इतनी रात को बुला रहे हैं?" फोन पर ही अपने पी.ए. पर बरसे अजय गुप्ता और तैयार होने के लिए उठे—"इन सालों ने तो और परेशान कर रखा है..."

उनकी पत्नी 'कोरा कागज' देखने में मग्न हो गई थीं। ध्यान नहीं दिया उनकी बड़बड़ाहटों पर—"खाना वहीं खाइएगा कि आ जाइएगा समय पर?" टी.वी. पर आंखें गड़ाए हुए ही पूछा।

"देर से आने पर नहीं'दोगी?" अजय गुप्ता ने दरवाजे को जोर से बंद किया और बाहर निकल गए। यह औरत कभी भी अच्छी नहीं लगी उन्हें। थुलथुल, नाटी, जहां-तहां से फैली हुई। पता नहीं, क्या हो गया था उस समय कि हां कर दी थी शादी के लिए। एक सुंदर औरत के साथ सोने का ख्वाब ख्वाब ही रह गया।

"लेटेस्ट क्या है?" गृह-सचिव ने पूछा।

"कोई नया डेवलपमेंट हुआ है क्या?" अजय गुप्ता घबराए।

उन्होंने देखा, एस.पी. उनसे पहले ही पहुंचे हुए थे। कमिश्नर और डी.आई.जी. भी मौजूद थे। सोफे पर गुनी के विधायक रामप्रवेश चौधरी के अलावा एक और सफारी सूटधारी विराजमान थे।

"कल्याण मंत्री।" गृह-सचिव ने अजय गुप्ता को सफारी सूटधारी का अभिवादन नहीं करते देखा तो बताया। अजय गुप्ता ने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़ दिए। कल्याण मंत्री ने मुस्कराकर अभिवादन स्वीकार किया—"पहले मुलाकात नहीं हुई कभी।"

"सी.एम. बहुत वरिड हैं।" मंत्रीजी ने संक्षिप्त पर महत्त्वपूर्ण सूचना दी।

"स्वाभाविक है।" एस.पी. ने मुलायमियत से कहा।

"लेकिन आप लोगों के रहते यह हो गया, हमको आश्चर्य है?" यह आरोप भी था, प्रशंसा भी और सवाल भी।

"असल में हम लोगों के पास इंटेलिजेंस कलेक्ट करने की मशीनरी के नाम पर कुछ है ही नहीं। जो लोग हैं, उनसे होना नहीं है कुछ। मिडिल और लोअर लेवल पर कुछ करना होगा, सर!" अजय गुप्ता बोले।

"करने की जरूरत सच पूछिए तो, हर लेभेल पर है। लेकिन हम बताते हैं आपको!" मंत्रीजी, जिनका नाम देवेंद्र राय था, बताने लगे कि पहले जमाने में चौकीदारी व्यवस्था कितनी चुस्ती से काम करती थी, दरोगा वगैरह किस प्रकार चोरों की छोटी-से-छोटी हरकत की जानकारी रखते थे, थानों में किस प्रकार सारे सिद्ध और संदिग्ध आपराधिक तत्त्वों के बारे में पूरे ब्योरे रखे जाते थे, कैसे लोग खाकी का हाफ पैंट पहने सिपाही से डर जाते थे।

"आजकल क्राइम का नेचर भी बदल गया है।" गृह-सचिव टपके।

"पुलिसिंग भी ठीक से नहीं हो रही है।" मंत्रीजी ने कहा।

"कैसे होगी, सर! यही गुनी के दरोगा का केस ले लिया जाए। वहीं के एक गांव का रहने वाला है। खुद अपने ही परिवार की सिक्यूरिटी के लिए चिंतित है। उससे क्या होगा?" अजय गुप्ता ने अपनी पत्नी को कही बातें यहां भी दुहरा दीं।

"मेहनत तो कम नहीं करता है, जहां तक हमारी जानकारी है। लेकिन जैसा कि कमिश्नर साहब ने कहा, क्राइम इतना बढ़ गया है..." रामप्रवेश चौधरी का चुप बैठना मुश्किल हो गया अपने चहेते की शिकायत सुनकर, "एक सही-सलामत गाड़ी तक नहीं है बेचारों के पास। हम अपनी एक जीप वहीं रख दिए हैं कि जब जरूरी हो, यूज करो।"

उजबुक जैसा हो गया है अजय गुप्ता का मुंह। एस.पी. चुपचाप धीर-गंभीर बने बैठे थे मानो गरुड़पुराण की कथा सुन रहे हों।

"वहां फोर्स तो फिलहाल बहुत भेजा गया है। क्या कर रहा है?" मंत्रीजी ने डी.आई.जी. साहब की ओर देखा जो वहां होते हुए भी नहीं होने जैसे हो गए थे।

"तमाशा देख रहा है।" डी.आई.जी. के बोलने के पहले ही बोल पड़े रामप्रवेश चौधरी, "सोनबरसा और पिपरी कांड का आरोपी सब खुलेआम घूम रहा है, मीटिंग कर रहा है। लोगों का विश्वास उठता जा रहा है व्यवस्था से।"

"हम लोग नजर रखे हुए हैं।" डी.आई.जी. ने चोखा जैसा मुंह बनाकर कहा।

डी.आई.जी. की मुख-मुद्रा आश्वस्तिदायिनी नहीं लगी गृह-सचिव को। विश्लेषण प्रस्तुत करने लगे स्थिति का, "सर, सी.एम. साहब से भी बात हुई थी। हम लोग कोई मेजर क्राइसिस प्रिसिपिटेट करना नहीं चाहते। कुछ करने के पहले सिचुएशन को स्टडी कर लेना ठीक रहेगा।"

"सिचुएशन, मान्यवर, यह है कि अब दूसरे गांवों के किसानों को भी धमकी दी जा रही है कि अपने-आप जमीन खाली कर दीजिए। थोक भाव में आग्नेयास्त्र लाए जा रहे हैं बाहर से। हथियार लेकर खुलेआम घूम रहे हैं लोग। जबरन वसूली हो रही है क्रांति के नाम पर। दूसरों को क्या कहें, हमारे ही बड़े लड़के को, जो हाईस्कूल में पढ़ता है, एक चिट्ठी पकड़ा गए कि बीस लाख रुपया चाहिए कुंवरपुर में घर बनवाने के लिए।" बोलते-बोलते उत्तेजित हो गए हैं रामप्रवेश चौधरी।

"यह सब तो भाई, हमने भी सुना है।" मंत्रीजी ने माहौल के ताप को नियंत्रित करते हुए कहा, "लोग डरे हुए हैं और रोज हमारे पास आ रहे हैं।"

"हमारे पास डेफिनिट सूचना है, गलत बोले हों तो जेल में डाल दीजिए कि दमयंतिया ए.के. चमकाती हुई आराम से चली गई और पूरी फोर्स देखती रही। दौड़ाकर पकड़ना नहीं चाहिए था उसको?" रामप्रवेश चौधरी ने मुठभेड़ की मुद्रा अपना ली है।

गृह-सचिव और डी.आई.जी. ने सवालिया आंखों से देखा एस.पी. को।

"कब की बात है?" एस.पी. ने कमरे में चारों ओर देखा। पर डी.एस.पी. कहीं नहीं दिखा तो विनम्रतापूर्वक पूछ लिया रामप्रवेश चौधरी से।

"अब क्या बताएं आपको। रोज यही हो रहा है, एस.पी. साहब! आप कुंवरपुर

की तरफ जाने वाले दस आदमियों, केवल दस आदमियों को चेक करवा दीजिए। उनमें एक के पास हथियार नहीं निकल गया तो हम अपना नाम बदल देंगे।"

डी.आई.जी. की ओर देखने लगे एस.पी. मानो कोई रहस्य था, जो उनकी अनुमति लिए बिना नहीं खोल सकते थे।

"एक काम कीजिए। कल से थॉरो चेकिंग शुरू करवा दीजिए।" डी.आई.जी. ने एस.पी. को कहा, "और किसी भी गांव से किसी को धमकाने की खबर मिले तो अरेस्ट कीजिए उनको।"

"बहुत जरूरी हो गया है। डी.आई.जी. साहब ठीक कह रहे हैं।" मंत्रीजी समझाने लगे, "कुंवरपुर को लेकर सरकार की परेशानी तो आप लोग समझते ही हैं, पर दूसरी जगहों पर भी पूरी सावधानी बरतनी है, नहीं तो हममें से कोई भी मुंह दिखाने के लायक नहीं रहेगा, बता देते हैं।"

"सिविल वार शुरू हो जाएगा, साहब।" रामप्रवेश चौधरी बोले।

"आपको बताएं कि पिछले तीन-चार दिनों में ही हमारे पास इलाके के सैकड़ों लोग आ चुके हैं कि रक्षा नहीं कर सकते तो राइफल का लाइसेंस दिलवाइए। कितने दिनों तक झूठी दिलासा देते रहेंगे लोगों को?"

"नहीं, नहीं, कल से शुरू कर देना है। वहां मेला नहीं लगने देना है। और इंटलिजेंस कलेक्शन भी ठीक करना है।" गृह-सचिव ने दृढ़तापूर्वक कहा।

एस.पी. नोट करने लगे थे नोटबुक में। अजय गुप्ता समझ नहीं पाए, क्या नोट कर रहे थे। नोट करने लायक कोई बात तो कही नहीं गई थी।

"दो-चार को घुलटाए बिना काम नहीं होगा।" रामप्रवेश चौधरी ने एस.पी. की नोट बुक की ओर झांकते हुए कहा मानो सुनिश्चित हो लेना चाहते हों कि उनकी यह महत्त्वपूर्ण सलाह भी नोट हो गई है।

"बट, सर, यह केवल लॉ एंड ऑर्डर की समस्या नहीं है..." अजय गुप्ता बात और आगे बढ़ाते कि गृह-सचिव ने चुप हो जाने को कहा इशारे से।

दरोगा की वर्दी में एक आदमी ने अर्दली की तरह आकर सूचना दी कि खाना डाइनिंग टेबुल पर लग चुका था।

"का रे, का हालचाल है? टाउन दरोगा हो गया है तो चीन्हता भी नहीं है?" मंत्रीजी ने खड़े होकर पाजामे का ढीला हो गया नाड़ा कसते हुए पूछा।

दरोगा-जैसा आदमी डोंड़ सांप की तरह देह ऐंठने लगा।

"अपने ही गांव का लड़का है।" मंत्रीजी ने बड़े अधिकारियों को बताया और मुंह धोने बाथरूम की ओर बढ़ गए।

"बिक्रमगंज के एस.डी.ओ. को बदलवाइए, सर। जब कहीं बाहर जाने को कहते हैं, बहाना बनाने लगता है।" अकेला पाकर अजय गुप्ता ने गृह-सचिव के पास जाकर कहा।

"कोई नहीं बदलेगा। जो जहां है, वहीं रहेगा। टेंशन मत कीजिए, मस्त रहिए।" डी.आई.जी. ने उन्हें नसीहत दी, "चलिए, खाना खाते हैं।"

"गुप्ता साहब हर बात को बहुत सीरियसली लेते हैं, सर।" जब मंत्रीजी और रामप्रवेश चौधरी जा चुके खाना खाकर तो एस.पी. ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों से कहा।

"बेसिकली इट्स ए सोशियो-इकोनॉमिक प्रोबलेम। बट दीज पिपुल आर नॉट रेडी टू अंडरस्टैंड..." अजय गुप्ता वास्तव में बहुत दुःखी थे यह देखकर कि इतनी बड़ी सच्चाई को समझ क्यों नहीं रहे थे लोग।

"एवरीबडी नोज एंड एवरीबडी अंडरस्टैंड्स।" गृह-सचिव ने उनका भ्रम दूर किया, "बट वन हैज टू लुक ऐट द थिंग्स इन टोटैलिटी।"

"एंड दिस टोटल इनक्लूड्स दीज बास्टर्ड्स। बोलता है, अपने गांव का लड़का है।" डी.आई.जी. गुर्राए।

"कम से कम चार बार हम लिख चुके होंगे, सर, इसकी बदली के लिए। हमेशा यही देवेंद्र राय कुछ होने नहीं देते।" एस.पी. को अब मजा आने लगा था बतकही में।

"लेकिन एस.पी. साहब, एक काम जरूरी है! मारने में दिक्कत हो तो दो-चार टॉप लीडर्स को पकड़िए।" गृह-सचिव ने सलाह दी।

"पकड़ने में ही दिक्कत है। मौका देखकर दो-तीन को घुलटाते हैं।" एस.पी. ने विश्वास के साथ कहा तो उपस्थित लोगों को लगा कि शाम बेकार नहीं गई।

"कुछ सीक्रेट फंड का पैसा दिलवाइए, सर।"

"तुम, गुप्ता, सरकार से इतना कुछ मांगना छोड़ो। जो है, जैसा है, उसी से टैक्टफुली हैंडल करना सीखो।" गृह-सचिव ने सोफे से उठते हुए कहा और जम्हाई लेते हुए अपने कमरे की ओर बढ़ गए।

"यह बात सही है क्या कि इन अदर विलेजेज ऑलसो दे आर ट्राइंग टू डू द सेम थिंग?" सर्किट हाऊस से घर लौटते समय अजय गुप्ता ने एस.पी. से पूछा।

"सो फार नो फॉर्मल कंप्लेंट हैज बीन रिसीव्ड। फैक्ट ऑफ द मैटर इज दैट इन दोनों सालों की अपनी फटी हुई है।"

"फिर भी, थोड़ा खबर मंगवाइए।"

"आपको ज्यादा ऑथेंटिक रिपोर्ट मिलेगा। सी.ओ., बी.डी.ओ. वगैरह को लगाइए।

"दीज बगर्स आर यूजलेस। आई डोंट ट्रस्ट देम।"

"आई ऐम टेलिंग यू, गुप्ता साहब, नोवन कैन डू एनीथिंग। अल्टीमेटली सिचुएशन विल सॉर्ट इटसेल्फ आउट।" एस.पी. ने कहा, हाथ मिलाया और अपने बंगले के सामने उतर गए।

रात के बारह बज गए थे। अजय गुप्ता को विश्वास हो चला है कि इस जिले को छोड़ देने में ही भलाई है। कल सुबह पहला काम यही करेंगे कि फोन लगाएंगे फादर-इन-लॉ को। भैंस जैसी बेटी को ढो रहे हैं तो कम से कम इतना तो कीजिए। गोटी फिट किए बिना काम नहीं चलेगा। कोई भरोसा नहीं है इन सालों का। कब धकेल देंगे गड्ढे में, कोई ठीक नहीं है। और किसी नए डी.एम. के साथ खाने लगेंगे डिनर। उसे भी कहेंगे समझने

को कि कैसे टोटैलिटी में देखने पर एक सोशियो-इकोनॉमिक प्रोबलेम केवल लॉ ऐंड ऑर्डर प्रोबलेम हो जाता है और धीरे-धीरे प्रोबलेम ही नहीं रह जाता।

रात को सर्किट हाउस में हुए विमर्श का एक परिणाम यह जरूर हुआ था कि जगह-जगह चेकिंग शुरू हो गई थी कुंवरपुर जाने के रास्ते में। गंदे गदबदे लोगों को वहां जाने से हतोत्साहित भी करने लगी थी पुलिस। डांट-फटकारकर वापस भेज देती। पर पुलिस पुलिस थी। थकने लग जाती एक ही काम करते-करते। लगने लगा कि बेकार का काम कर रही थी। वैसे भी औरतों को तो चेक कर ही नहीं सकती थी। महिला पुलिस को लगाना पड़ता। और महिला पुलिस के आ जाने पर दूसरे भला कहां दिखाई देते! पुलिस की अपनी समस्याएं थीं। या तो उसे हर जवान हरिजन लड़की दमयंती लगती या दमयंती भी दमयंती नहीं लगती। डर भी लगा रहता कि उन्हीं में से कोई सचमुच की दमयंती नहीं हो और बम मारकर भाग जाए। इसीलिए चेकिंग करते समय मजाक भी करती लोगों से—"ए भाई, हम लोगों को तो इसी बात का न महीना मिलता है। नहीं तो हम लोगों को दुश्मनी थोड़े है दमयंती से।"

हरिद्वार पांड़े ने गांव छोड़ने का फैसला कर लिया है। बिक्रमगंज जा रहे हैं परिवार के साथ। बाहर के दो आदमी छोड़े जा रहे हैं मवेशियों और मकान की देखभाल के लिए। औरतें पहले ही जा चुकी हैं। भांय-भांय कर रहा है उनका भव्य तीनमंजिला मकान। हरिद्वार पांड़े घूम-घूमकर सूंघ रहे हैं दीवारों को। दालान के इस कोने से उस कोने तक। पवटा रखने के लिए बने विशाल कमरे में, मवेशियों के सानीघर में। सांड जैसे मस्त छः बैल। हरिद्वार पांड़े बारी-बारी से हाथ फेरते हैं उनकी पीठ पर और रोते हैं। उनकी चितकबरी जर्सी गाय भी रो रही है।

छबीला सिंह को डर है कि गांव के ठीक बीचोबीच खड़ी यह भव्य अट्टालिका रोज रोएगी। इसे ढाहकर क्यों नहीं जाते हरिद्वार पांड़े। जलाकर जाते तो कितना अच्छा था! धुएं से भरी हवा बचती केवल। धीरे-धीरे मिल जाती जिंदगी की हवा में।

"हे भगवान! हमको कब उठाओगे?" तिलंगी सिंह रोज यही प्रार्थना करते हैं भगवान से। लाज लगने लगी है जीने में। कुछ नहीं कर सका कोई भी—लुकुड़ी राय, अखिलेश सिंह, सब हवा हो गए। उल्टे एक प्लाटून फोर्स बैठा दी थी रामप्रवेश चौधरिया ने, जो रोज राजपूताने के लड़कों को ही डपटती रहती। और उधर नए-नए टोपरों पर फैलती जा रही थीं झोपड़ियां। प्रभुदयाल सिंह का बगीचा आ गया था उनके कब्जे में और एक दिन नन्हकू सिंह के हिस्सेवाली जमीन पर भी उग गईं।

"यह भी नहीं रोकिएगा आप लोग?" तड़पकर रह गए।

प्लाटून कमांडर ने बताया, वह केवल उनकी जान-माल की रक्षा के लिए था वहां। अतिक्रमण रोकना उसका काम नहीं था।

"हरिद्वार पाड़े जा रहे हैं गांव छोड़कर। रो रहे थे।" एक आदमी आया था खबर लेकर।

"तो रो क्यों रहे हैं?" धनंजयजी ने कहा, "गांव तो बेसिकली कॉलोनी की तरह हैं इन लोगों के लिए। जब तक फायदेमंद हो, रहेंगे, नहीं तो चलते बनेंगे।"

पर दयाशंकर ने जरूर महसूस की इस सूचना की चुभन। उनका मन किया, जाकर रोकें हरिद्वार पांड़े को। आखिर उनकी जमीन में तो नहीं घुसा था कोई।

"यह एकदम स्वाभाविक है। आज आपकी समस्या भूख है, इसलिए जमीन चाहिए आपको। भूख से ज्यादा अनाज हो जाएगा तो आकाश में ढूंढ़ने लगेंगे कुछ।" धनंजयजी कह रहे थे।

"आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?" पूछा गया।

"हम बहुत लालची आदमी हैं। आकाश में भी नहीं अटे, तो पाताल में ढूंढ़ने लगे—अपनी खोई आत्मा।"

"मिली?"

"मिलती है, खोती है।"

"ढूंढ़ते रह जाओगे।" एक चाटुकार आवाज बोली और हँसने लगे लोग।

"हमारा सोचना है कि गांव के लोगों में अकारण डर फैलाना ठीक नहीं है।" दयाशंकर ने कहा। उन्हें लग रहा है, उनकी उपलब्धि को जबरन हथियाए जा रहे हैं बाहर के लोग और जान-बूझकर विषाक्त बनाना चाहते हैं माहौल को।

"कौन फैला रहा है?" एक बाहरी आवाज ने पूछा।

"गांव का अपना एक व्यक्तित्व होता है, आत्मा होती है। सैकड़ों साल से लोग साथ-साथ रह रहे हैं। कई तरह के संबंध होते हैं, परंपराएं और यादें होती हैं। उन सबका भी बहुत महत्त्व है।" दयाशंकर उत्तेजित हो गए हैं।

"कंट्री रोड टेक मी होम, टू द प्लेस, आई बिलांग..." गाकर हँसने लगे धनंजयजी।

उनके सिवा अंगरेजी वहां बहुत कम आती थी किसी को भी, इसलिए कोई समझा नहीं, क्यों हँस रहे थे।

दमयंती बोरिंग के पास बने ऊंचे चबूतरे पर बैठी है और चबूतरे से लगे पक्के फर्श पर रखी खाट पर बैठे, पैंट-कमीज पहने आदमी की बातें सुन रही है। जो आदमी खाट पर बैठा है वह गुनी थाने का सिपाही है—दिलकेश्वर प्रसाद।

"आप अपने कान से सुने हैं?" मानिक ने पूछा।

"अब लीजिए! बहिनजी को हम अफवाह सुनाने आएंगे इतना दूर?"

"पहले पूरा बतिया सुन न लीजिए।" दमयंती झुंझलाई।

"प्लान यह है कि दू प्लाटून फोर्स ठीक दो बजे रात को गुनी से चलेगी। एक प्लाटून फोर्स कुंवरपुर में हइये है। पौने चार बजे तक कुंवरपुर के पास पहुंच जाना है। गाड़ी-घोड़ा पुल पर ही रह जाएगा और वहां से पैदल कूच करना होगा। रास्ते में जो भी मिले उसे उठाते हुए साढ़े चार बजे तक कुंवरपुर में घुस जाना है। और जो भी बीस-पच्चीस मुख्य लोग हैं उनको पकड़कर जितना जल्दी हो सके वापस आ जाना है।"

"क्यों?" दमयंती को यह आखिरी, लोगों को गिरफ्तार कर तुरंत वापस लौट जाने वाली बात नहीं जंची।

"इसमें भी एक प्लानिंग है।" दिलकेश्वर प्रसाद ने आवाज नीची कर ली, जबकि

सुनने वाले बस दो ही लोग थे वहां। दमयंती को हँसी आ गई सिपाहीजी के सांय-सांय करने पर।

सिपाहीजी अकचकाकर उधर-उधर देखने लगे लजाए हुए-से। दोनों की नजर बचाकर एक बार अपने पैंट की चेन भी देख ली।

"जरा जोर से नहीं बोलिएगा तो सुनाई कैसे देगा?" दमयंती ने हँसते हुए कहा।

"प्लानिंग यह है कि मुख्य लोगों को पकड़कर पहले पूरा भेद मालूम कर लिया जाए। उसके बाद कसकर धावा बोला जाए। नया एस.पी. बहुत माथा वाला आदमी लगता है। अंधेरा में तीर नहीं चलाएगा।"

दिलकेश्वर प्रसाद ने दमयंती को पहली बार बी.डी.ओ. ऑफिस के घेराव के समय देखा था और अभिभूत हो गए थे। उसके साथ सोने का सपना देखते हुए जांघिया गीला करते थे और बिना उसके मांगे महत्त्वपूर्ण सूचनाएं उस तक पहुंचा जाते थे।

"हम तो सलाह देंगे कि मुख्य लोग कुंवरपुर से हट जाएं।" दमयंती और मानिक दोनों को चुप देखा तो अपनी बात आगे बढ़ाई, "नए एस.पी. का बहुत एसपीरियेंस है ऐसे मामलात में। सरकार ने उसको कुंवरपुर को काबू में लाने के लिए ही भेजबे किया है।"

"दो बजे गुनी छोड़ देने का प्लान है?" दमयंती ने पूछा।

"जी।"

"आप कहां जाइएगा अभी?"

"हम तो सीधे अपने गांव निकल जाएंगे।"

"तो निकलिए आप।" दमयंती ने कहा।

"आपके रहने से हम लोग को बहुत बल मिलता है, भाईजी!" जाने लगे दिलकेश्वर प्रसाद तो बोली।

"जब 'भाईजी' कह दीं तो हमारा तो फर्ज हो जाता है कि जो बन पड़े, करें।" गदगदायमान होते दिलकेश्वर प्रसाद ने कहा और सोचा 'भाईजी' तो एक तरीका-भर है बातचीत का।

"बीस आदमी जाएगा केवल..." दमयंती बुदबुदाई।

"कहां?" मानिक चौंका।

पुलिसिया कार्रवाई को विफल करने की पूरी योजना बन चुकी थी दमयंती के दिमाग में। टेढ़का पुल के पास ही घेरना होगा उन्हें—पक्की सड़क से उतरते ही। चार जगहों पर बम फिट करना होगा। पहली गाड़ी जब तीसरे के पास पहुंचेगी, तभी उसको उड़ाना होगा। बाइ चांस तीसरा नहीं फटा तो चौथे को आजमाया जाएगा। और अगर तीसरा फट गया तो पीछे की गाड़ियां पहले और दूसरे से उड़ जाएंगी। सड़क के दोनों तरफ दस-दस लोग रहेंगे। मौका मिला तो हथियार लेकर भागेंगे।

धनंजयजी को नहीं बताना है इस कार्रवाई के बारे में। दमयंती को डर है 'ना' कर देंगे धनंजयजी। कहेंगे—इस तरह कितने दिनों तक बचाया जाएगा समय से पहले पैदा हो गई इस चीज को।

"मानिक बोला, खोज रही थीं आप?" विनायक चबूतरे की फर्श पर बैठ गया है। दमयंती भी चबूतरे पर ही बैठ गई उसके पास।

"कोई खास बात है?" विनायक ने पूछा। एक सांवला, मुलायम चेहरा। कौन कहेगा कि बम, डाइनामाइट और लैंड माइंस लगाने और उड़ाने का विशेषज्ञ है वह!

"बहुत सीरियस बात है!" घुटनों को बांहों में बांध लिया है दमयंती ने। उसका जी करता है विनायक देखे, उसकी नीली जीन्स में लिपटी जांघों की कसावट को। उसे अच्छा लगता है विनायक। वह सहज और अंतरंग होना चाहती है उसके साथ।

"कुंवरपुर पर धावे का प्लान बना रही है पुलिस। पक्की खबर है। टेढ़का पुल के पास ही उन्हें घेर लेना है।"

"पुलिस की गाड़ी उड़ा देंगे?"

"तो और क्या!"

"धनंजयजी क्या कहते हैं?"

"धनंजयजी को नहीं बताना है।"

विनायक ने नहीं कहा कुछ। एक झीना-सा 'क्यों?' उभग था चेतना में, पर विलीन हो जाने दिया उसे। सवाल पूछने की आदत नहीं रही उसकी। ऐसा आश्वस्त दिखता हमेशा ही मानो जवाब मालूम हो उसे।

"टैलेंटेड लोग जो भी चुनते हैं यह जिंदगी, अपने बीते समय के साथ एक अलग तरह का रिश्ता रहा होता है उनका।" धनंजयजी कहते।

और विनायक तो बहुत टैलेंटेड था। केमिस्ट्री में एम.एससी. की थी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से।

"कुंवरपुर के बारे में धनंजयजी की मिक्स्ड फीलिंग्स हैं।" थोड़ी देर के बाद कहा।

"आप समझ नहीं सकते, कैसा लग रहा होगा...दिन-दहाड़े गोबर खिला दिया था एक लड़के को...स्कूल बंद करा दिया था हमारा...छोटे थे तो हमेशा डर लगा रहता कि...आप समझ नहीं सकते..."

"थोड़ा-थोड़ा समझ सकते हैं अब।" कहकर मुस्कराया विनायक तो दमयंती भी हँसने लगी।

टेढ़का पुल पर नहर के शोर में डूबी हुई थी रात की झनझनाहट। अंधेरे में कद्दावर आवाजों की लहरें बना रहा था पानी। आकाश में बादल थे और हवा में ऊमस भरी हुई थी। धनिया के पीले पौधों के बीच एक मेड़ पर उठंगी हुई है दमयंती। माथे की चिपचिपाहट को पोंछा गमछे से तो गरम लगा माथा—स्पष्टतः तनाव-ग्रस्त थी वह।

पास ही सरसराहट होती है कहीं और एक फुसफुसाहट पहुंचती है रेंगती हुई—"फिट हो गया!"

"फटेगा न?" दमयंती जानती है, विनायक है।

विनायक की उपस्थिति ने परे धकेल दिया है उसके अंतर्द्वंद्वों को। ऐसे-ऐसे लोग हमसफर हैं तो भला वह क्यों चिंता करे किसी बात की! उसे तो चलना ही चलना था।

घड़ी देखती है पेंसिल टॉर्च जलाकर। दो घंटे बाकी हैं दो बजने में। नहर का हाहाकार तेज ही होता जा रहा है।

कंधे पर थपथपाहट महसूस हुई तो चौंककर आंखें खोलीं उसने।

"नाक बज रही थी आपकी!" विनायक फुसफुसाया।

दो! घड़ी देखी और छाती धड़कने लगी अचानक। पुलिस किसी भी वक्त पहुंच सकती थी।

पक्की सड़क पर रोशनी की धाराएं। दमयंती टटोलती है अपने ए.के. सैंतालिस की लिबलिबी को। कमर से बंधी कारतूस की पेटी पर हाथ फेरती है। माथे पर जमाती है हेलमेट को। खून की चहलकदमी में तेजी आ गई है शिराओं में, पर तैयार है वह। हाथ बढ़ाकर कंधा दबाती है विनायक का। उसकी हथेली को थपथपा दिया है विनायक ने। दमयंती ने वहीं पड़ी रहने दी है अपनी हथेली।

गाड़ियां रुक गई हैं। दो जीपें और दो पावर वैगन। अंधेरे में कुछ और दिखाई भी नहीं दे रहा ठीक से। काश! अंधेरे को भेदकर देख पाती वह! अचानक वह रोमांचित हो गई है यह सोचकर कि कल पूरा इलाका सुनेगा यह खबर और थर्रा जाएगा। 'हे ईश्वर!' प्रार्थना का भाव पैदा होता है मन में। धंनजयजी की तरह टोकती है अपने-आपको—नो! नो गॉड!

विनायक ने अपने कंधे से हटा दिया है उसका हाथ। गाड़ियां उतर रही थीं कच्ची सड़क पर। सबसे आगे जीप, फिर पावर बैगन...आकाश की ओर देखती है वह। एक तीखी चमक का अहसास होता है आकाश में और एक भयानक आवाज झिंझोड़ गई है धनिया के पौधों को—चीख, चीत्कार, कराहना, गोलियों की आवाज...और दूसरा धमाका!

"अब?" विनायक पूछ रहा है।

पीतल की ठंडी सीटी बजा दी है दमयंती ने। भागो। राइफलें लूटने का खयाल उड़न छू हो गया है दिमाग से। फायरिंग शुरू हो गई थी दूसरी तरफ से। पक्की सड़क की ओर भाग रहे थे बचे हुए सिपाही।

दमयंती भी भाग रही है।

"ए.के. हमको दे दीजिए।" साथ-साथ दौड़ता विनायक बोला।

"नहीं।" और तेजी से दौड़ने लगी है दमयंती।

विनायक चुपचाप देखता जाता है अपने आगे-आगे भागती परछाईं को। अगली सुबह सारा देश जो खबर पड़ेगा—इसी की बनाई खबर होगी!

राकेश भटनागर, आरक्षी अधीक्षक, डाकबंगले के अपने कमरे में बाहर निकलने के लिए तैयार ही हो रहे थे कि मोटरोला का हैंड-सेट बजा। और जो सुना, सुनकर धम्म से बैठ गए पलंग पर। एक लंबा-सा 'नोऽऽ!' निकला था मुंह से। पर खबर शत-प्रतिशत सच्ची थी। बिक्रमगंज थाने का दरोगा खुद आ गया था गुनी से प्राप्त जानकारी लेकर।

"कोई बचा कि नहीं, महतोजी?"

"अभी तक तो पता नहीं चला, सर!"

एस.पी. साहब बाहर निकले तो विभाग के सारे ऑफिसर मौजूद थे बरामदे में! मानो कहने आए हों—'देख लिए न फुटानी का नतीजा?'

"लेट्स गो।" एस.पी. ने कहा और ए.एस.पी. तथा दरोगा को हिदायत दी कि एंबुलेंस, मारुति वैन, दो ट्रक, एक मिनी बस और जितने भी डॉक्टर, नर्स वगैरह मिलें, उन सबको लेकर जल्दी से जल्दी पहुंचे। ए.एस.पी. को वापस बुलाकर समझाया कि हेटक्वार्टर्स को भी सूचित कर दे—"इट इज सैड!" पहल से ही उदास दिखते नौजवान ए.एस.पी. को देखते हुए कहा।

उन्हें पता है, मुख्यालय के लोग भी भनभनाएंगे। कुछ लोग हँसेंगे भी—'चला मुरारी हीरो बनने!' कुछ लोग अफसोस जाहिर करेंगे—'इसका लक ही ठीक नहीं है।' कुछ लोग कहेंगे, 'भटनागर टैक्टलेस है।'

"लेकिन खबर कैसे मिली उनको?" पता नहीं किससे पूछा एस.पी. ने, क्योंकि जीप में तो कोई ऐसा था नहीं, जो बताता।

"अंदर के आदमी का ही काम होगा, सर!" ड्राइवर ने कहा। उसे यह मानने में दिक्कत हुई होगी कि यूं ही बड़बड़ा रहे थे उसके साहब।

"ई सब थाना एकदम चौपट हो गया है, सर!" जीप के पीछे बैठे एक सिपाही ने सूचना दी।

"हर बात में नेता सबसे पैरवी करवाता है।" दूसरी आवाज आई थी पीछे से।

कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की एस.पी. ने तो फिर चुप्पी छा गई।

"डी.एस.पी. कैसा आदमी था?" एस.पी. ने पूछा।

जीप में मौजूद लोग एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

"बेचारे के साथ कुछ बुरा न हुआ हो, पर इनसे कुछ होता-जाता नहीं है। घरघुसना आदमी हैं।" ड्राइवर ने जानबूझकर वर्तमान काल का प्रयोग किया।

पर डी.एस.पी. केवल अतीत की मिल्कियत बनकर रह गए थे। उनकी लाश कई टुकड़ों में बटी हुई खेतों में बिखरी पड़ी थी। कुछ लाशों के इतने टुकड़े हो गए थे कि उनकी पहचान ही मुश्किल थी। जो बच गए थे, उन्हें गिनने के बाद पता चला कि डी.एस.पी. और गुनी के थाना ईंचार्ज सहित पंद्रह लोग शहीद हो गए थे। घायल और बचे हुए सिपाही रो रहे थे।

"यह सब ऊंचे अधिकारियों की गैरजिम्मेदाराना हरकत का नतीजा है।" किसी रुंधे हुए कंठ से यह ऊंची आवाज फूटी तो चौंककर देखा एस.पी. ने। एक अधेड़ सिपाही चीख रहा था हाथ हवा में फेंक-फेंककर। कुछ लोग मनाने में लग गए थे उसे। वह फूट-फूटकर रोने लगा था।

"पुराने आदमी हैं...सबको जानते थे, इसीलिए..." गुनी के ए.एस.आई. ने एस.पी. को सेल्यूट मारकर क्षमायाचना की।

एस.पी. बचे हुए सिपाहियों से कुछ जरूरी ब्योरे चाहते थे, जो उनके पास नहीं थे।

"जीप से कूदकर फायरिंग करते हुए हम लोग, सर, पक्की सड़क की ओर पोजीशन लेने के लिए भागे।"

"यही पूछ रहे हैं हम?" एस.पी. झुंझलाए।

एस.पी. जानना चाहते थे कि उग्रवादी विस्फोट के बाद किधर भागे। एक सिपाही के मन में आया कि कहे कि कुछ सड़क की दाईं ओर भागे, कुछ बाईं ओर। लेकिन उसके अपने मन ने ही कहा कि यह जवाब किसी काम का नहीं है, सो चुप रह गया। दूसरे सिपाहियों को गुस्सा भी आ रहा था कि एक तो जान बची थी किसी तरह, ऊपर से सवाल-जवाब किए जा रहे थे।

उस अधेड़ सिपाही ने, जिसके धैर्य का बांध टूट गया था, आकर सेल्यूट किया एस.पी. को। कुछ देर तक खड़ा रहा एड़ियां जोड़े कि एस.पी. कुछ पूछें शायद। एस.पी. ने नहीं पूछा कुछ तो जाकर दूसरे सिपाहियों के साथ खड़ा हो गया।

सुबह हो गई थी। लाशों के टुकड़े बटोरने का काम चल रहा था। एस.पी. वहां का जिम्मा दूसरों को सौंपकर गुनी चले आए उच्चाधिकारियों को घटना की विस्तृत जानकारी प्रदान करने।

"व्हाट इज दिस मेस, भटनागर?" डी.जी.पी. फोन पर गुर्राए।

रात को अधिक दारू पी लेने के कारण सिर में दर्द होगा, एस.पी. ने अनुमान लगाया। "इन फैक्ट, सर..."

"आई नो द डिटेल्स। आई नो। बट इट वाज योर ओनली सेकंड डे इन दिस डिस्ट्रिक्ट!"

"इन फैक्ट, सर, देयर वाज प्रेशर..."

"व्हाट प्रेशर? नाऊ यू आर टॉकिंग लाइक ए हाई स्कूल ब्वाय। आर यू नॉट द गार्जियन ऑफ द पुलिस फोर्स ऑफ द डिस्ट्रिक्ट? आर यू नॉट सपोज्ड टू टेक केयर ऑफ देयर वेलबीइंग?"

"इन फैक्ट, दे सीम टू हैव बिकम थॅरोली पॉलिटिसाइज्ड, इनइफेक्टिव..."

"लुक, लुक, लुक! नाऊ डोंट टीच मी लेशन्स इन फील्ड रियेलिटीज। एंड डोंट पास वैल्यू जजमेंट्स विदाउट नोइंग एनीथिंग।"

"सर।" 'सर' कहकर चुप हो गए मि. भटनागर।

"अब क्या कर रहे हो?"

"सर, डी.आई.जी. साहब इज कमिंग। डिस्कस करके ऐक्शन प्लान बनाना होगा।"

"देखो, क्या हो सकता है। बट आई ऐम नॉट हैपी। तुम लोग गवमेंट की प्रोबलेम्स भी समझा करो। यहां वेतन देने को पैसे नहीं हैं और तुमने पंद्रह मरवा दिए! अब सालों को दस-दस लाख रुपया दो, बीबियों को नौकरी दो...होल लॉट ऑफ प्रोबलेम्स!"

"आई ऐम सॉरी, सर!"

"चलो, ठीक है। बेस्ट ऑफ लक!"

एस.पी. सोचने लगे कि किसी और को फोन करके कुछ बताएं कि नहीं।

"सर, विधायक महोदय आ रहे हैं!" ए.एस.आई. उत्तेजना के कारण आगे की ओर टेढ़ा होकर खड़ा हो गया था सूचना देकर।

"यह बात हम इन लोगों को बहुत पहले से कहते आ रहे हैं कि एक दिन ऐसा होगा।" रामप्रवेश चौधरी ने बोलते हुए ही कमरे में प्रवेश किया। मानो अपने घर की दालान में प्रवेश कर रहे हों।

रामप्रवेश चौधरी को देखकर मृदुता का कोई भाव नहीं उगा एस.पी. के चेहरे पर तो तनाव काबिज हो गया ए.एस.आई. के चेहरे पर—'काके लागूं पांव' वाली मनःस्थिति से उपजा तनाव। 'यह कैसा बमपिलाट एस.पी. है!' उसने सोचा।

"अब क्या सोच रहे हैं?" रामप्रवेश चौधरी ने पूछा। यह बात उन्हें भी अखर गई थी कि उनका अभिवादन तक नहीं किया था एस.पी. ने। कुर्सी से खड़ा होने या खड़ा होने की कोशिश करते हुए दिखने की तो बात ही अलग थी। विधानसभा के अगले सत्र में जरूर उठाएंगे यह मुद्दा। सरकार अपने अधिकारियों को दृढ़तापूर्वक कहे कि कायदे से पेश आएं जन-प्रतिनिधियों से।

"बड़ी विकट समस्या है।" एस.पी. ने सवाल को अनसुना करते हुए कहा।

"आप कहते हैं विकट और हम कहते हैं कि यही हाल रहा तो जंगलराज कायम हो जाएगा इस अंचल में।" दबंग विधायकों की-सी अदा में कहा चौधरीजी ने।

ए.एस.आई. को अच्छा लगा।

"देखिए! कुछ न कुछ तो करना ही होगा। ऊपर से आ रहे हैं लोग।" खिड़की के बाहर देखने लगे थे एस.पी.। सिपाहियों के गमछे, अंडरवियर और बनियान सूख रहे थे रहर की सूखी डंठलों पर।

"देखिए एस.पी. साहब, ऊपर के लोगों से कुछ नहीं होगा। आपका समय खराब करेंगे केवल। जो करना है, आपको ही करना है।" रामप्रवेश चौधरी ने एक तरह से मैत्री का हाथ बढ़ाया मि. भटनागर की ओर।

"इस थाने का जितना स्टाफ है, सबका सब चोर हो गया है। सब मिला हुआ है चोरों से। ऐ सुन!" एस.पी. ने ए.एस.आई. को आवाज दी—"अगर छः घंटे के अंदर मुझे नहीं बताया कि तुम लोगों में से कौन उन लोगों का एजेंट है तो सबको जेल भेजेंगे। भागो यहां से!"

"इन लोगों को टाइट करना भी जरूरी हो गया है।"

"सबसे पहला काम तो मैंने यह सोचा है कि इन सबको भगाना है यहां से। एक ही जगह बैठे-बैठे दलाल हो गए हैं सबके सब।"

एस.पी. को पता था, रामप्रवेश चौधरी को अच्छी नहीं लगेगी यह चर्चा। रामप्रवेश चौधरी सचमुच तैयार हो गए विदा लेने को। थाने के बरामदे में निकले तो ए.एस.आई. को बुलाकर फुसफुसाए—"कवन लीक किया?"

"हम एक घंटे में आपको बता देंगे। लेकिन देखिए रहे हैं...ई हम लोगों को यहां से भगाने का तूम-तड़ाक मचाए हुए हैं।" ए.एस.आई. मुनमुनाया।

रामप्रवेश चौधरी आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाकर यह मौन संदेश देते गए कि तूम-तड़ाक करने में कुछ नहीं रखा है इनके।

"राकेश?" फोन पर गृह सचिव थे, जो मानो गृह-सचिव होने के लिए ही पैदा

हुए थे और नए नौकरशाहों के लिए 'खुदी को कर बुलंद इतना...' का एक जीवंत उदाहरण बन गए थे, "क्या हो रहा है?"

"सिचुएशन बहुत खराब है, सर।"

"आई नो, आई नो। ऐसा करो कि...सी.एम. इज वेरी वरिड! तो आसपास के गांवों में रेड-वेड शुरू करवा दो। पिक अप सम ऑफ देम।" गृह-सचिव ने सरकार की चिंता जताई।

"इन फैक्ट, सर, होल ऑबजेक्टिव ऑफ दैट एक्सरसाइज वाज टू पिक अप सम जेनुइन वन्स।"

"अब छोड़ो, जो हो गया सो हो गया। फिलहाल तो जेनुइन नहीं मिलते तो चालीस-पचास आसपास के गांवों से उठा लो। बाद में सोचा जाएगा ठीक से।"

"कुछ अच्छे ऑफिसर भेजिए, सर!"

"कन्विंस योर एम.एल.एज.। इस सिचुएशन में दे मे सपोर्ट यू। एंड देन, लेट मी नो।" गृह-सचिव ने फोन रख दिया।

एस.पी. ने उन्हें मन ही मन वही गालियां दीं जो देते आ रहे थे और जिनसे हालात पर कोई असर नहीं पड़ता था—अच्छा या बुरा।

अपने सारे मातहतों को बुलाया उन्होंने और इस अंदाज में मानो अकस्मात् इलहाम हुआ हो, आदेश दिया कि मौका-ए-वारदात के आसपास के गांवों में फैल जाएं और शाम होने तक उनकी चमटोलियों वगैरह से कम से कम पचास नौजवान उठा लाएं—"क्विक!" एस.पी. ने कहा और ए.एस.आई. से मूत्रालय जाने की इच्छा प्रकट की।

अपनी इच्छा उन्होंने दुहराई। ए.एस.आई. अंदर-बाहर कर रहा था, पर मूत्रालय का रास्ता नहीं बता रहा था।

"क्या हुआ जी?" एस.पी. गुस्साए।

"हमारे क्वार्टर में चला जाए, सर!"

"आप लोग एक यूरिनल तक नहीं मेंटेन कर सकते? आप ही जैसे लोग लॉ एंड ऑर्डर मेंटेन करेंगे?" एस.पी. उखड़ गए। लेकिन तुमड़ी कह रही थी, गुरु! चल पड़ो उसके क्वार्टर की ओर; सो उसके पीछे-पीछे उसके क्वार्टर के पेशाबघर की ओर बढ़ गए। कहने को हो गया ए.एस.आई. के नन्हे-मुन्ने बच्चों को कि उनके घर भटनागर एस.पी. भी आए थे पेशाब करने। पत्नी को लाख कोंचा ए.एस.आई. ने कि पेशाबघर के बाहर आते ही प्रणाम कर ले एस.पी. को, पर वह अभागिन ऐसी लजपोकड़ निकली कि ऐन वक्त पर बैठ गई मुंह छिपाकर। एस.पी. पेशाब करके दनदनाते हुए बाहर चले गए।

"थाना वगैरह की हालत बहुत बिगड़ गई लगती है।" ऐसा उन्हें ए.एस.आई. का क्वार्टर देखने के बाद लगा था।

"हम लोग, सर, आज कितने ही सालों से सरकार से बिना एक पैसा मिले ही थाना चला रहे हैं।" ए.एस.आई. ने बताया।

"बल्कि सरकार को कुछ देते ही रहे हैं। नहीं?" राकेश भटनागर की प्रसिद्धि एक ईमानदार एस.पी. के रूप में थी, इसलिए अपने मातहतों से वे इस तरह के सवाल

जरूर पूछते थे, "पुराने एस.पी. साहब को कितना देते थे?"

ए.एस.आई. नवब्याहता कन्या की तरह शरमाने और शरमाकर देह ऐंठने लगा। वह खुश भी था भीतर ही भीतर। गुनी थाने में पिछले नौ सालों से काम करते हुए यह जाना है उसने कि जो भी एस.पी. गुनी आता है, उसे एक बार पेशाब की तलब जरूर महसूस होती है और दरोगा या उसके क्वार्टर में स्थित पेशाबघर से लौटने के बाद वह थोड़ा अधिक उदारमना और दयालु हो जाता है। उसकी चलती तो वह कभी भी थाने के मूत्रालय की मरम्मत या सफाई नहीं करवाता, लेकिन दिक्कत यह हो गई कि एस.पी. ने धमकी दे दी उसके क्वार्टर से लौटते हुए कि उनकी अगली विजिट में भी अगर मूत्रालय नहीं दिखा थाने में तो ए.एस.आई. महोदय भी गुनी में नहीं दिखेंगे। ए.एस.आई. ने सोचा—चलो, चूना लगा पांच हजार रुपये का!

दिन आधा से अधिक बीत गया था। एस.पी. का मन ऊबने लगा था थाने में बैठे-बैठे। डी.आई.जी. साहब का अता-पता नहीं था। डी.एम. को बुढ़ापे से संबद्ध सभी बीमारियों ने आ घेरा था। डॉक्टरों ने अधिक यात्रा नहीं करने की सलाह दी थी। आकर बिक्रमगंज डाकबंगले में लेटे हुए थे और एस.डी.ओ. के साथ स्लिप डिस्क के इलाज के गैर-अंग्रेजी तरीकों के बारे में विमर्श कर रहे थे। लाशों को देखने आने वाले लोग एक बार उन्हें भी देख जाते। सरकार अजय गुप्ता को खदेड़कर प्रशासन में चुस्ती लाने के लिए लाई थी उन्हें। उनका नाम अहसानुल्ला था और अल्लाह के फजल से वे किसी न किसी जिले में कलक्टर बने रहते थे।

मि. भटनागर गुनी छोड़ नहीं सकते थे; क्योंकि उन्हें पता है कि ऊपर से जो भी आएगा, प्रामाणिक अनुभव के लिए एक बार घटना-स्थल का दौरा जरूर करना चाहेगा। और उन्हें भी जाना ही होगा उसके साथ।

इधर आई.जी.(ऑपरेशन) और डी.आई.जी. पहुंचे और उधर यह खबर कि गुनी थाने के एक और सिपाही दिलकेश्वर प्रसाद की लाश मिली थी एक दूसरे थाना-क्षेत्र के गांव के करहे में।

"यही है, एकदम यही है, हुजूर!" ए.एस.आई. दौड़ा हुआ आया, "सब इसी के कुकर्म का फल है!"

"दिस ब्लडी फेलो लीक्ड द इनफॉर्मेशन!' एस.पी. ने इस सूचना को अपनी दिन-भर की उपलब्धि के रूप में पेश किया।

"हाऊ कैन वन रिलाई ऑन सच ए फोर्स!" आई.जी. (ऑपरेशन) का मुंह लटक गया। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में पांच बरसों की प्रतिनियुक्ति के बाद लौटे थे दिल्ली से। परिवार अभी भी वहीं था। सोचा, किसी एन.जी.ओ. के साथ चिपक जाना ही ठीक था। 'मैनेजिंग लॉ ऐंड ऑर्डर' या 'चैलेंजेज ऑफ सिविल सोसाइटी' जैसे किसी टॉपिक पर किताब लिखी जा सकती थी या 'ड्रग-अडिक्शन' या 'चाइल्ड अब्यूज' वगैरह के फील्ड में पेपर-सेपर तैयार किया जा सकता था। फील्ड में हालात ठीक नहीं थे।

घटना-स्थल का निरीक्षण कर गुनी लौटने तक तो शाम हो चुकी थी। एस.पी. को परामर्श दिया कि रात को मूवमेंट्स अवॉयड करना ही ठीक रहेगा और कैंप करने

सर्किट हाउस के लिए रवाना हो गए।

डी.एम. बिक्रमगंज डाकबंगले में एस.पी. के लौटने का इंतजार कर रहे थे।

"अब यहां मेरा तो कोई काम नहीं है?" इस आकांक्षा से भरे हुए पूछा कि एस.पी. कह दें, नहीं। एस.पी. बिना कुछ कहे दूसरे कमरे में चले गए तो समझा कि काम खत्म हो गया था उनका और ड्राइवर को गाड़ी लगाने के लिए आदेश दे दिया।

रात के आठ बजे गए थे और मि. भटनागर ने ह्विस्की का पहला पेग ही बनाया था कि वायरलेस सेट मिमिआने लगा। गुनी से ए.एस.पी. कह रहे थे कि उनके आदेश का सख्ती से अनुपालन करते हुए थाना-क्षेत्र की विभिन्न चमटोलियों से लगभग दो सौ लोग उठाते आए थे पुलिसवाले। पूछ रहे थे, क्या किया जाए इन लोगों का?

"मैंने तो केवल पचास कहा था! दीज जोकर्स डू नॉट अंडरस्टैंड एनीथिंग।" एस.पी. का मन रोने-रोने-सा हो आया है गुस्से के कारण, "कॉमन सेंस तक नहीं है सालों में।"

सवाल जहां का तहां खड़ा था।

"डेढ़ सौ को भगा दो।"

"सुबह को छोड़ देंगे, सर!"

"रखोगे कहां?"

"वही तो हम भी सोच रहे हैं।"

"जो साले लाए हैं इनको उठाकर, उनको बोलो कि इनकी देखभाल करें।" एस.पी. चीखे और दूसरी तरफ मौन छा गया।

टेढ़का पुल पर, जहां नहर पिछली रात की ही तरह हह-हह करती सन्नाटे को भंग कर रही थी, अपने दिवंगत साथियों को याद करते हुए लिट्टी-चोखा बनाने के इंतजाम में लगे हुए थे अठारह-बीस पुलिसवाले।

23

दयाशंकर के आमरण अनशन का पांचवा दिन है आज। मंधाता मिश्र को चिंता होने लगी है उनकी बिगड़ती हालत देखकर। सरकार की तरफ से कोई भी पहल नहीं हो रही थी अनशन खत्म कराने के लिए। डी.एम. को बता आए थे कि कुछ हुआ दयाशंकर को तो स्थिति बेकाबू हो जा सकती थी गुनी के इलाके में; पर कोई फर्क नहीं पड़ा था।

टेढ़का पुलवाली घटना की अगली शाम को ही बदहवास-से उनके यहां आए थे दयाशंकर—बताने कि धनंजयजी जानबूझकर अलग-थलग करना चाह रहे थे उन्हें। बाहरी लोग हावी हो गए थे उनके कार्यक्रम पर और दहशत फैलाना चाहते थे कुंवरपुर में। दयाशंकर डरे हुए थे।

हरिद्वार पांड़े के गांव छोड़ने की खबर ने दरअसल विचलित कर दिया था दयाशंकर को। खबर मिलते ही दिनेश सिंह के यहां पहुंच गए थे। रंगू सिंह और छबीला

सिंह भी बैठे हुए थे।

"हम, मास्साब! केवल यह अनुरोध करने के लिए आए हैं कि गांव छोड़ने की बात कोई मत सोचे। जो होना था, हो गया; अब किसी का खेत नहीं जाएगा; किसी का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। भीड़ केवल अपने को बचाने के लिए जुटाई गई है।"

"जैसी आज्ञा।" रंगू सिंह बोले।

"आज्ञा नहीं दे रहे, अनुरोध कर रहे हैं।"

"बरियरका का अनुरोध आज्ञा ही होता है।"

"चलिए, अच्छा लगा, दयाशंकरजी, कि आप आए तो! जहां तक गांव छोड़ने का सवाल है तो अभी तो शुरू ही हुई है लड़ाई; देखिए क्या होता है आगे।" दिनेश सिंह ने कहा।

दयाशंकर चुपचाप बैठे रहे कुछ देर तक। दिनेश सिंह की जहर-बुझी प्रतिक्रिया से जाहिर था कि आसान नहीं था पुरानी मैत्री को पुनर्जीवित कर पाना। छबीला सिंह देख ही नहीं रहे थे उनकी ओर।

"जो बोले, सुने छबीला भाई?" पूछा।

"जो भी कहिएगा, सुनेंगे; लेकिन बेचारे मास्साब और हम लोगों को अफतरा में मत डालिए। नहीं तो उधर से तो गइबे किए, इधरवाला भी गद्दार कहने लगेगा।" कहा छबीला सिंह ने।

वापस चले आए थे दयाशंकर।

"फिर भी ठीक किए। बाद में लोग सोचेंगे आपकी इस पहल पर।" मंधाता मिश्र ने कहा था।

"लेकिन धनंजयजी जो माहौल बिगाड़ रहे हैं? बागीचा पर कब्जे की क्या जरूरत थी? और अब देखिए, यह धमाका करवा दिया।"

मंधाता मिश्र की ही सलाह थी यह कि भूमिहीनों को न्याय दिलाने और कुंवरपुर की सुरक्षा के मुद्दे पर आठ-दस साथियों के साथ आमरण अनशन पर बैठ जाइए जिला मुख्यालय के सामने। मंधाता मिश्र ने सोचा था, इस प्रकार धनंजयजी के साथ रोज-रोज की मुठभेड़ से भी बच जाएंगे दयाशंकर और चर्चा में भी बने रहेंगे; सरकार पर नैतिक दबाव भी बढ़ेगा पुलिस कार्रवाई को सीमित करने के लिए और बचे भी रहेंगे पुलिस कार्रवाई से। लेकिन यह नहीं सोचा था तब कि उन्हें मरने के लिए छोड़ देगी सरकार।

डॉक्टर मुआयना कर चला गया है अनशनकारियों का। रिपोर्ट देगा कि दयाशंकर को वहां और बैठे रहने देना खतरनाक था। नब्ज डूब रही थी उनकी। दयाशंकर भी महसूस करते हैं, उनसे और बर्दाश्त नहीं होगी भूख। भारी होती जा रही हैं पलकें। ऐंठन अनियंत्रित होती जा रही है आंतों में। कहीं दूर कुछ फूटने की आवाज सुनाई देती है और अपनी एक बांह के चमड़े का फटना महसूस करते हैं दयाशंकर। कोई झिंझोड़ रहा है उन्हें। एक अद्भुत नशीली नींद में चले गए हैं दयाशंकर। पानी का छपाका पड़ता है चेहरे पर तो सजग होते हैं थोड़ा। उन्हें लगता है, उड़े जा रहे हैं।

"बच गया है।" डॉक्टर बोला तो राहत की सांस ली पुलिसवालों ने।

दो अनशनकारी—नरेश यादव और अमरनाथ कानू अनशन-स्थल पर ही ढेर हो गए थे और दो अन्य हॉस्पिटल के दूसरे कमरे में संघर्ष कर रहे थे जिंदगी के लिए। मोटर साइकिल पर सवार दो युवक गोलियां बरसाते हुए भाग गए थे अनशनकारियों पर।

"इतना इरिसपौंसिबल कैसे हो सकते हैं आप?" गृह-सचिव ने डी.एम. को डांटा।

"पुलिस को बोले थे सेक्यूरिटी के लिए; सुनती ही नहीं है।" अहसानुल्लाह ने उस डी.एम. के ताव के साथ जवाब दिया, जो स्लिप डिस्क, डायबिटीज और कॉनस्टीपेशन जैसी कई बीमारियों और निगरानी विभाग में भ्रष्टाचार के दो-दो लंबित मामलों के बावजूद विगत आठ वर्षों से इस या उस जिले का डी.एम. बना हुआ था।

"आप बोले थे एस.पी. से?" गृह-सचिव जानते थे, वह हमनस्ल आदमी था।

"एस.पी.-ओसपी तो अब अपने को डी.एम. के भी ऊपर समझने लगा है। कुछ कहिए तो झाड़ देता है पलटकर।"

जवाब मिल गया था गृह-सचिव को; संतुष्ट हो गए।

"राकेश, आई ऐम सॉरी! आई मे नॉट हेल्प यू।" डी.आई.जी. ने ऐसे कहा मानो उनकी रेंज में लोगों को एस.पी. उनसे पूछकर ही बनाया जाता था।

"सरकार खुद ही लटकाए हुए है इस पूरे मामले को। हम तो कह रहे हैं कि फोर्स लेकर चला जाए और गेम फिनिश कर दिया जाए।" जाना निश्चित जानकर खिन्न हो गए राकेश भटनागर, "और ये साले ही कौन-सा एनडैंजर्ड स्पीसीज है कि बचाना जरूरी है इनको।"

डी.आई.जी. नहीं बोले कुछ। सोचा, चार साल पड़े रहिएगा सी.आई.डी. में तो खुद ही पता चल जाएगा।

कुंवरपुर में कुछ लोग खुश होना चाहते थे इस बदले की कार्रवाई के बारे में सुनकर, पर छबीला सिंह समझ रहे थे कि चाल कामयाब रही थी दयाशंकर की। ख्याति तो जो मिलनी थी, मिल ही रही थी, सरकार की मुश्किलें भी बढ़ गई थीं। अखबारवाले पूछने लगे थे कि सरकार आखिर खुद ही यह तय क्यों नहीं कर पा रही थी कि किसको, और कितनी, जमीन बांटी जानी है?

"राजधानी में रैली का प्रोग्राम बन रहा है।" धनंजयजी को सूचना दी गई।

"दिस मैन इज ए रियल मदारी। यू नो मदारी?" धनंजयजी ने मि. राव नामक एक काले-कलूटे आदमी से कहा, "वन अप मैन शीप में लगा हुआ है और सैडेस्ट थिंग इज दैट दमयंतीजी भी यही करने लगी हैं।"

जिनको अंग्रेजी कम आती थी, वे भी समझ गए थे कि दयाशंकर और दमयंती, दोनों से ही नाराज थे धनंजयजी।

"बेसिकली वह भागा रहना चाहता है कुंवरपुर से।" धनंजयजी ने कहा।

"हमको लगता है, मंधाता मिसिरवा मिसगाइड कर रहा है दयाशंकर भाई को। पुराना खेलाड़ी है।" हरिहर मास्टर ने कहा।

"और दमयंती को?"

"हमको लगता है, वही खबर भिजवाया उनके पास कि खतरा है कुंवरपुर को और..." हरिहर मास्टर जानते हैं, दमयंती की शिकायत अच्छी नहीं लगेगी धनंजयजी को।

"ये लोग समझ नहीं रहे कि इनडिसिप्लीन कितनी घातक चीज है!" धनंजयजी की अक्सर घुंची रहने वाली आंखें फैल गई हैं और मुद्रा बहुत गंभीर हो गई है।

"इट मस्ट बी कर्ब्ड।" मि. राव नामक आदमी ने कहा।

"उसके लिए चिंता नहीं करना है। एक बार डांट दिया जाएगा बुलाकर तो होस ठिकाने आ जाएंगे।" हरिहर मास्टर ने कहा।

"देखते हैं।" धनंजयजी बोले।

गोसांई पांड़े खबर दे गए हैं कि सुरक्षित हैं दयाशंकर।

रामज्ञान पांड़ेबो चाहती हैं कि शामिल हो जाएं दयाशंकर की खुशी में। जैसे दूसरे बहुत-से लोग उछल-उछलकर उनकी तारीफ कर रहे थे, वे भी करें। पर कुंवरपुर का उतरा हुआ चेहरा देखती हैं तो उदास हो जाती हैं। लगता ही नहीं कि कभी खुश भी रहा करता होगा यह गांव; हँसी-मजाक करता होगा; ठहाके लगाता होगा।

"काम तो, मलकिनी, बबुआ जायजे किए हैं, बाकी का कहा जाए..." मटुक कमकर की भी समझ में नहीं आ रहा, इस बदले हुए माहौल को क्या कहे—अच्छा या खराब?

"जबर्दस्ती का काम ठीक नहीं होता, मटुक।" रामज्ञान पांड़ेबो बोलीं।

"मुसमात तो अपने मन से दे दी थीं, बाकी सिरीभगवान सिंह..."

"जाने दो! जो भगवान चाहेंगे, होगा।"

"बढ़िये होगा, मलकिनी।" मटुक कमकर चले गए हैं लाठी टेकते।

इस आशंका के लगभग समाप्त हो जाने के बाद कि कब्जे का कार्यक्रम दूसरों के खेतों तक भी पहुंच सकता था, धीरे-धीरे सामान्य भी होने लगा है कुंवरपुर का वातावरण। बच्चे स्कूल जाने लगे हैं; लोग खेतों में निकलने लगे हैं; यह चिंता होने लगी है कि खेती कैसे की जाएगी इस साल। रेजटोलेवाले भी लौट आए थे अपने-अपने घरों में और अधिकांश लोगों के बनिहार-चरवाह भी वापस आ गए थे।

दरअसल कब्जेवाली जमीन की व्यवस्था को लेकर असंतोष की सुगबुगाहट भी होने लगी है कुंवरपुर के रेजों में। रामनाथ यादव और हरिहर मास्टर जैसे बाहरी लोगों के हाथ में सारा प्रबंध दे दिया था धनंजयजी ने। कुंवरपुरवाले चाहते थे कि कम से कम जगनाथ को रखा जाए प्रबंध-समिति में, पर धनंजयजी ने ठुकरा दी थी यह मांग।

"धनंजयजीउवा का पौलटिक्स चाची, ठीक नहीं है। सुने कि दमयंतियो से छीनवा लिया है हथियार-ओथियार।" जगनाथ रामज्ञान पांड़ेबो को सुनाने आ गया है अपने मन का दुःख।

"जाने दो बचवा, दमयंतिया भी कम बदमास नहीं है...पंद्रह गो पुलिस को मार दी!"

"तो हमीं लोग के लिए न, चाची?"

"ऊ सब का परिवार तो रो रहा होगा न!"

जगनाथ को मालूम है, इस मुद्दे पर रामज्ञान पांड़ेबो से बहस करने का कोई फायदा नहीं है। दयाशंकर से ही बात करनी होगी।

दयाशंकर हॉस्पिटल से फ्री होते ही ससुराल चले गए थे। गोली का घाव मामूली था, भर चला था। जगनाथ रमेश के साथ पहुंचा एक दिन।

"हालचाल ठीक नहीं है, बाबा।" बताया।

"क्या बेठीक है?"

"पहले रमेसवा से सुन लीजिए।"

"बाबा, एक नंबर का बदमास है धनंजइया।" बोलना शुरू करते ही उत्तेजना के कारण हांफने लगा है रमेश, "फूआ को डांटने लगा कि काहे उड़ाई पुलिस को...बोलीं कि हमारा गांव है तो...तो हाथ छोड़ दिया।"

"मारने लगा दमयंती को?"

"ऊ भी मारने लगीं तो राइफल के बट से मारा...बंद करके रखा है एगो घर में...खाना-पीना भी नहीं देता...बिनायक भइया को दोसरा जगह भेज दिया है...हम तो भागे..."

"विनायक भइया कौन हैं?"

"हैं एक! उस रात वही गए थे फूआ के साथ।"

"सुन लिए न? अब कुंवरपुर का सुन लीजिए!" जगनाथ बोला, "सब बाहरी लोग हुकुम चला रहा है; लंठई हो रहा है और..."

"क्या लंठई हो रहा है?"

"आप ही के टोले की लड़किया सब जल चढ़ाने जा रही थी काली माई को तो बाहरवाला लहेंड़वा सब बोली बोलने लगा कि मत जाने दो, हमी लोग के खिलाफ सुनाएगी काली माई को। रास्ता रोककर खड़ा हो गया। भंडारी और गोसांई बाबा के साथ बाता-बाती भी हो गया। लगा, तबड़िया देगा गोसांई बाबा को।"

"आपका भी यही हाल होगा। और पड़िए नान्ह जात सबके फेर में।" भीतर से फनफनाई हुई आई दयाशंकरबो "हरिद्वार पांड़े का गांव छोड़ाना बुझा जाएगा..."

"अइसा बात नहीं है। बाबा को छूने का मजाल नहीं है..."

"बाबा को गोली मार दिया और छूने का ही मजाल नहीं है?"

"ऊ तो..."

दयाशंकर ने इशारा किया, जिरह मत करो। जगनाथ चुप हो गया।

सोच में पड़ गए थे दयाशंकर।

"सोचिए मत, आप केवल चलिए वहां। सब काम रास्ता पर आ जाएगा।" जगनाथ ने कहा।

"दमयंती वाली बात किसी को मत बताना।" दयाशंकर को डर हुआ कि दूसरे जान जाएंगे अंदरूनी कलह के बारे में तो हिम्मत बढ़ जाएगी उनकी।

पत्नी को कहा, "चलोगी?"

"मर जाइएगा, तब भी नहीं आएंगे।" वह बोली।

कानों पर हाथ रख लिया चौबाइन ने।

बच्चे को पुचकारा और जगनाथ और रमेश के साथ कुंवरपुर के लिए चल पड़े दयाशंकर।

वसुधा आई हुई थी। दिल्ली में ही एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिल गई थी उसे। तीस हजार रुपया महीना मिल रहा था। करुणा अपना बदला हुआ गांव दिखा रही है उसे। हरिद्वार पांड़े की सूनी पड़ी कोठी, जोगी सिंह की उदास दालान, मुसमात के घर में लटकता ताला, स्कूल के दोनों कमरों में पुलिस की छावनी, दूर खेतों में उगी हुई झोपड़ियां, उदय पांड़े की सूनी पड़ी कुटिया...कुटिया के सामने जो पक्का चबूतरा बनवाया था रामप्रवेश चौधरी ने, उसे लगभग ढाह दिया था लाल झंडेवाली भीड़ ने। कुटिया के सामनेवाला चापाकल भी उखाड़ ले गई थी। गाय भंडारी लेता आया था खोलकर। जो बच गया था ले जाने लायक—पीढ़ा, चटाई, लालटेन, चादर, गमछा; घिरई लेता गया था। अब कोई नहीं जाता था उदय पांड़े का दर्शन करने। मान लिया गया था कि पागल हो गए थे।

कुटिया के आगे रेजटोलों के लड़के गोली खेल रहे थे गाली-गलौज करते हुए। करुणा हिचक रही थी कुटिया की ओर जाने में।

"बदमाश हो गए हैं। कुछ का कुछ बोल देते हैं।" बोली।

"मुंह तोड़ देंगे।" वसुधा बोली।

"अच्छा, तुम जाओ।" उसकी अनिच्छा देखी तो अकेले ही आगे बढ़ गई।

करुणा कुछ देर तक खड़ी रही उधेड़बुन में पड़ी हुई और वापस लौटने लगी।

गोली खेलते लड़के अकचकाकर देखने लगे हैं नीली जींस और खादी का ढीला-ढाला कुर्ता पहने लड़की को। उन्होंने सुना था, दमयंती पहनती है ऐसा ही कपड़ा। पर वह तो सांवली है!

"साधूजी हैं?" वसुधा ने पूछा उनसे।

"पगलाऽऽ?" उनमें से एक ने जानना चाहा।

"इडियट!" वसुधा बुदबुदाई और नहर की ओर बढ़ गई।

उसने देखा, मुसमात के खेतों से ढेर सारी आंखें देख रही थीं उसे। उसने महसूस किया, करुणा का डर अकारण नहीं था। अजनबी जैसा लग रहा था अपने ही गांव का सीवान।

उदय पांड़े ठोरा बाबा के छिछले पानी में लेटे हुए थे सलीब पर लटके मसीह की मुद्रा में। सिर के लंबे बाल छितराए हुए थे पानी में। वसुधा उन्हें बहुत देर तक देखती रही बिना कुछ बोले हुए। उदय पांड़े उठे, उसे देखा और बिना कुछ बोले चलने को हुए।

"प्रणाम।" वसुधा को आश्चर्य हुआ कि उसे पहचाना नहीं उदय पांड़े ने।

"देवता काका की बेटी हो?" रुक गए और एकटक देखने लगे उसे।

वसुधा की निगाह उनके टखने पर हुए घाव पर चली गई। मक्खियां मंडरा रही थीं।

"अरे राम...सेप्टिक हो जाएगा ऐसे तो। कपड़ा बांध लेते कम से कम।"

"तुम इंजीनियर हो कि डॉक्टर?" भृकुटियां चढ़ गई हैं उदय पांड़े की।

"आप भगवान को जानते हैं और इतना नहीं जानते कि घाव पर गंदगी बैठने से सेप्टिक हो सकता है!"

"चुप्प!" होठों पर उंगली रख ली है उदय पांड़े ने, "भगवान-फगवान का नाम सुन लेगा तो भगा देगा यहां से। सुरेसवा मरा था तो सुदरसनवा मारने आया था हमको। धिरा गया है कि भगवान-फगवान बोले तो गर्दन चांप देंगे।"

"कोई कुछ नहीं करेगा।" वसुधा बोली।

"पुलिस हो तुम?"

"शाम को हम रूई, कपड़ा और डिटॉल ला देंगे।" वसुधा को लगा, उदय पांड़े जान-बूझकर कर रहे हैं ऊटपटांग बातें।

"सुनो!" जाते हुए देखा तो आवाज दी उसे, "कोई पेट की दवाई है तुम्हारे पास?"

"क्या दिक्कत है?"

"जलता रहता है।"

"ठीक है, ले आएंगे।"

"एक पुराना कुर्ता भी लेती आना। और एक धोती भी।"

बेचारा है कि उसे बना रहा है यह आदमी? वसुधा रुककर देखने लगी उनका चेहरा।

"ठीक है, सब ले आएंगे।" कहा।

"तुम्हारा मर्द मना नहीं करेगा?"

"हम खुद कमाते हैं।"

"तब ठीक है।"

वसुधा मुस्करा पड़ी आश्वस्ति की इस भोली अभिव्यक्ति पर।

"माल भेंटा गया तो हटबे नहीं करेगा का रे सधूइया?" दूर से आवाज आई थी।

वसुधा स्तब्ध है कि कोई ऐसे अश्लील बोल भी छोड़ सकता था अपने ही गांव में।

"भागो, नहीं तो आ जाएगा।" कहा उदय पांड़े ने और सरपट बढ़ गए कुटिया की तरफ। पता नहीं, कुटिया में ही कौन-सी सुरक्षा थी!

वसुधा देखने लगी थी आवाज की दिशा में। ढेर सारे लोग थे। यह पता करना आसान नहीं था कि कौन बोला था। वह जानती भी नहीं थी कि कैसे लोग थे वो। मन खट्टा हो गया है। इतनी दूर से अपने गांव कोई यही सुनने के लिए आता है!

कदम अनायास ही आवाज की दिशा में मुड़ गए हैं। वह करीब पहुंच गई है उनके।

"कौन बोला था माल?" पूछा।

सकपका गए-से लग रहे थे वे।

"कौन बोला था रे सूअर कहीं का!" वह चीखी।
"ढेर बढ़-बढ़कर मत बोलिए; नहीं तो लड़की-फड़की..."
"तो डर क्यों रहा है? बताओ कौन बोला?"
"बता दो न रे कि कौन बोला।" लहजा मजाकिया था।
झपटी थी वसुधा और बाल पकड़ लिए थे उसके—"बोल, क्यों बोला?"
एक अद्‌भुत दृश्य था यह उनके लिए। अपने बाल छुड़ाकर उसकी ओर झपटा था वह लड़का और बैठ गया था अपने अंडों को दबाए हुए। सिनेमा में ऐसा होते देखा था उन लोगों ने। वसुधा उसे चुनौती दे रही थी उठने की और वह सीधा नहीं हो पा रहा था।
"बान्हो साली को...एजेंट है..." कुछ डरावनी आवाजें उछली थीं और यह अहसास कौंधा था वसुधा के दिमाग में कि यहां आकर गलती कर दी थी उसने; पर अगले ही क्षण वह पूरा दम लगाकर चीख पड़ी थी—"हरामजादो, क्रांति करने चले हो और लड़कियों पर बोल छोड़ते हो?"
"वसुधा बूची!" निहोरा आ गए थे भीड़ को ठेलते हुए।
"अरे बहिनीयाचोद सब!" चीखे थे।
कुंवरपुरवालों ने पहचान लिया था वसुधा को।
हरिहर मास्टर, रामनाथ यादव वगैरह भी आ गए थे दौड़ते हुए।
"गलती हुई है इन लोगों से।" हरिहर मास्टर बोले।
"औरत को जो माल समझते हैं, चकलों में भेज दीजिए उन लोगों को; समझे? क्रांति करने के लिए दूसरे लोग लाइए।" वसुधा कांप रही है क्रोध और अपमान की मिली-जुली अनुभूति के थपेड़ों से टकराती हुई।
"आज के बाद कुंवरपुर की बहिन-बेटी पर कोई बोल छोड़ा तो गांड़ फाड़ देंगे माधड़चोद का..." भंडारी चीखने लगा था।
"बहुत मन बढ़ गया है ई सबका।" देवता पांड़े कहना दरअसल यह चाहते हैं कि उधर जाना ही बेकार था।
देवता पांड़ेबो ने उससे बात ही नहीं की है वसुधा के कुंवरपुर पहुंचने से अब तक। प्रण किया है कि नहीं बोलेंगी।
"एक ही किक में घोड़ा बन गया हरामजादा, खड़ा ही नहीं हुआ। नहीं तो..." वसुधा को चिढ़-सी होने लगी है लोगों के मन में बैठा डर देखकर।
"इतना डरे हुए क्यों हैं आप लोग?" पूछा।
"जबरदस्ती का जमाना आ गया है, बूचीया! पुलिस और प्रशासन भी डर रहा है ई सबसे।" देवता पांड़े बोले।
"दमयंती बहुत बड़ी नक्सलाइट हो गई है, दीदी। बारूदी सुरंग फोड़कर मार दी पंद्रह पुलिसवालों को।" करुणा सुनाने में जुट गई थी कि माहौल कितना बदल गया था, "दयाशंकर भी बड़ा नेता हो गए हैं। ऐंठकर चलते हैं।"
दिनेश सिंह ने देखा तो दालान से बाहर चले आए, "कब आई?"

"पौधे सूख रहे हैं, मास्साब।" वसुधा उनके दुआर पर की फूलों की क्यारियां देख रही थी।

"हां ऽऽ..." दिनेश सिंह ने देखा वसुधा इंतजार कर रही है जवाब का, "उत्साह तो थोड़ा कम हुआ ही है इधर।"

"थोड़ा नहीं, बहुत कम हो गया है।"

कितना सुंदर है यह सच बोलता चेहरा! आत्मविश्वास से भरा यह व्यक्तित्व!

दिनेश सिंह से बर्दाश्त नहीं हुआ अपने भीतर वीरानगी का फैलते चले जाना। डर गए कि कहीं जाहिर न हो जाए एकदम से। अंदर चले गए पत्नी को चाय-नाश्ते के लिए कहने।

"तुम तो बहुत पढ़-लिख गईं, बुचीया! ई बताओ कि ई क्रांति है?" रंगू सिंह ने पूछा।

"अच्छा तो नहीं लग रहा, लेकिन अब क्या कहें..."

"मतलब कि तुमको भी शक है?"

"वही न कहते हैं हम कि हमारा पक्ष कुछ और है, उनका कुछ और। सत्य का पक्ष क्या है, यह कहना बहुत मुश्किल है।" दिनेश सिंह वापस आ गए हैं और वसुधा को बचा लिया है एक कठिन प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने से।

"हमारा पक्ष से आपका क्या मतलब है? हम लोग तो चारों तरफ से लतियाए हुए हैं।" रंगू सिंह बोले, "नया न्यूज यह है कि अखिलेश सिंह कुंवरपुर के बाबूसाहेब लोग को ही गाली दे रहे हैं—खासकर हमको, आपको और छबीला भाई को।"

रंगू सिंह के आत्म-भर्त्सना के तेवर।

हँसी आ गई है वसुधा को।

"सब कुछ बदल जाएगा, पर अपने रंगू सिंह नहीं बदलेंगे।" दिनेश सिंह भी हँसने लगे।

"दमयंती से कभी आपकी बात नहीं हुई, मास्साब?" वसुधा ने पूछा।

"देखो, बात अब केवल दमयंती या दयाशंकर के कुछ करने की नहीं रही...माहौल ही अलग ढंग का हो रहा है..." दिनेश सिंह दंग हैं अपने बेकाबू होते जाते मन पर। बार-बार डपट रहे थे कि भावुक नहीं होना था और मन उदासी की ठंडी गहराइयों में उतरा जा रहा था। वसुधा को समझाने के लिए नहीं, अपनी उदासी को छिपाने के लिए बोले जा रहे हैं कुछ का कुछ।

छबीला सिंह बिना एक शब्द बोले देखे जा रहे हैं वसुधा को। उसके दमकते व्यक्तित्व को। ईश्वर उनके बेटे पर भी इतना ही मेहरबान होगा क्या!

"तुम्हारे आगे जाने से प्रेरणा जरूर मिली है लड़के-लड़कियों को। छबीला भाई का लड़का बहुत अच्छा कर रहा है।" दिनेश सिंह ने कहा।

"दिल्ली-ओल्ली में कोचिंग-वोचिंग की व्यवस्था जरूर ठीक होगी?" छबीला सिंह ने पूछा।

रंगू सिंह से बर्दाश्त नहीं हो सकेगी यह चर्चा। इस बात की भी गारंटी नहीं है

कि कलेजे में उठी हूक आंखों से नहीं बरसने लगे।

"दिल्ली में सब ठीक है।" कहा और चल दिए उठकर।

"कोई कह रहा था, उदय पांड़े से भी मिलीं आज?" दिनेश सिंह ने पूछा हँसते हुए।

"आपको क्या लगता है, मास्साब?"

"हम...सच पूछो तो अलग-थलग ही रहे हैं। गांव ने भगवान से लेकर पागल तक क्या-क्या नहीं बना दिया! पता नहीं, तुमको क्या लगा?"

"पागल तो नहीं हैं।" वसुधा बोली।

"कैसे?"

"आप कभी करीब से देखेंगे तो आपको भी लगेगा। लगता है, बाहर से ठगा हुआ-सा, खोया हुआ-सा होने के बावजूद अंदर जगे हुए हैं। बहुत बार लगता है, जान-बूझकर कोशिश कर रहे हैं अबनॉर्मल दिखने की।"

"फिर भी...ऐसा है भी तो हमेशा नहीं रहता होगा ऐसा...जरा-सा भी प्रभाव तो नजर आना चाहिए था..." दिनेश सिंह को दिक्कत हो रही है वसुधा की निष्पत्ति स्वीकार कर लेने में।

"प्रभाव तो था ही।"

"लेकिन यह बताओ कि कहीं है ऐसा लिखा हुआ कि आत्मा का रहस्य जान लेने के बाद इतना दयनीय, दिशाहीन, पथहारा-सा हो जाना चाहिए आदमी को?"

"होना तो नहीं चाहिए।" प्रतिवाद नहीं किया वसुधा ने, पर मन कह रहा था कि उदय पांड़े वह हैं नहीं, जो नजर आते हैं। फिर अचानक याद आया, उनके लिए कुछ सामान ले जाने का वादा किया था उसने। पता नहीं, अन्हरी रखती है कि नहीं पेटदर्द की दवा! पहले तो रखती थी। अन्हरी की दुकान की ओर बढ़ गई है वसुधा। मालूम नहीं था उसे कि बभनटोल और राजपूताने के अधिकांश लोग अब नहीं जाते थे उसकी दुकान पर। नरेश सिंह की दुकान से खरीदते थे मसरफ का सामान। छोटका को चोरी-चकारी वाली लाइन से हटाने के लिए यह दुकान खोली थी नरेश सिंह ने।

एक ढिबरी जल रही थी छोटे-से कमरे में। पहले की ही तरह ढेर सारी चीजों की मिलीजुली गंध से भरा हुआ था कमरा। पता नहीं, पहलेवाला लेमनचूस भी रखती थी कि नहीं अब!

"लेमनचूस है?" ढिबरी की दम तोड़ती रोशनी में चुक्का-मुक्का बैठी औरत से पूछा उसने, जो आंखें फाड़े हुए एकटक उसे ही देख रही थी।

"देवता बाबा की बचीया हैं न रे।" नौबत मियां की आवाज सुनाई दी थी दुकान के बाहर से।

"लेमनचूस तो है..." लेमनचूस देने में शर्म आ रही थी उसे।

"भूलेटनाबो चिन्हीये नहीं रही है बाची को।" दोनों हथेलियों पर अपनी देह को घसीटता हुआ भरोसा आ गया है दुकान के पास, "काकी होती तब न...स्कूल जाने के समय भर-मुठ्ठी लेमनचूस ले लेती थीं और भर-रस्ता खाती जाती थीं।" बाहर खड़े कुछ

दूसरे लोगों को सुनाने लगा है।

आवाज की आत्मीयता छू गई है वसुधा को।

''काकी कहां है?'' पूछा।

''काकी का तबियत बहुत खराब चल रहा है, बाची। सायदे बचें...लेकिन पूछती हैं तुम्हारे बारे में।''

''हमारा बतीया याद है न, बूची?'' निहोराबो आ गई है अंधेरे को लांघते हुए।

वसुधा महसूस करती है कि गहमागहमी है चमटोली में। राजपूताने और बभनटोल जैसी वीरानगी नहीं छाई हुई थी।

''...ऊ तो जिला छोड़ दें सारघेंटी, उसी में खैर है...नहीं तो दमयंती सुन लेगी तो एतना गोली दागेगी लदड़ी में कि...'' भरोसा कह रहा था। स्पष्टतः, सुबह वाली घटना की चर्चा शुरू हो गई थी।

आखिर ऐसा क्यों सोचते हैं राजपूताना और बभनटोलवाले कि सारे रागात्मक सूत्र खो गए हैं बीते समय के! एकदम अजनबी कैसे हो जा सकता है अतीत! वसुधा परेशान हो उठी है कुंवरपुर की जटिल हो गई परिस्थिति के बारे में सोचकर।

मास्साब कहते हैं—सत्य का पक्ष क्या है, कोई नहीं जानता। सत्य का पक्ष यह नहीं है क्या कि दूसरे पक्ष की क्षतियों और अनुभूतियों को भी सहानुभूति दी जाए?

''बोल दो कि ओढ़नी ले ले कम से कम, कबूतर जैसा चूंची उठाए चलना जरूरी नहीं है।'' सुबह को वह चलने को हुई कुटिया के लिए तो देवता पांड़ेबो ने करुणा से कहा।

वसुधा ने, पता नहीं सुना कि नहीं, पर बिना ओढ़नी लिए हुए ही चली गई।

''कह देते हैं कि हमारे लिए मर गई है यह लड़की।'' कहा और रोने लगीं देवता पांड़ेबो, ''यही बदला दे रही है हरामजादी पढ़ाने-लिखाने का...बेइजत करवा रही है...''

''जब मरिये गई तो गरियाने का क्या काम?'' देवता पांड़े महसूस करते हैं कि उनका मन भी फटता जा रहा है वसुधा की तरफ से। नहीं चाहने पर भी लगने लगता है कभी-कभी कि बस पुराने परिचय के नाते आ जाती थी कुछ दिनों के लिए। और यह आना भी किस काम का! जबसे आई है, उदय पांड़े और गांव के चक्कर में पड़ी हुई है।

''अब बंद करो गरियाना। पाल-पोसकर बड़ा कर दिए, अब निभा देते हैं कुछ दिन के लिए।'' कहा और निरुद्देश्य-से टहलने लगे आंगन में।

इस आंगन की किस्मत में नहीं लिखा है अपनी बेटी का ब्याह देखना! टहलते हुए ही, पता नहीं कब, आंसू टपकने लगे देवता पांड़े की आंखों से।

उदय पांड़े बहुत खुश लग रहे थे वसुधा की लाई चीजें देखकर। दाढ़ी से ढंका चेहरा मुस्करा रहा था।

''आपको तो ध्यान लगाना आता है?'' वसुधा ने पूछा।

उदय पांड़े नहीं बोले कुछ।

''सिखा दीजिए हमको। झुग्गी बस्तियों के गरीब लोगों को सिखाएंगे। दूसरे लोग

तो केवल करोड़पतियों को सिखाते हैं।''

''सब साले ढोंग करते हैं। साधू-ओधू के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।''

''ध्यान तो अब थिरेपी जैसा हो गया है। पूरी दुनिया में लोग प्रयोग कर रहे हैं।''

''तुम्हारे बाबूजी तुमको मना नहीं करते यहां आने से?''

''बात मत बदलिए। आप चलिए हमारे साथ। बड़े-बड़े लोगों को सिखाइएगा तो बहुत नाम होगा।''

''आता होगा तब तो सिखाएंगे बकलोल राम!'' कहा और जोर से हँसे उदय पांड़े, ''बकलोल राम...''

पीपल से थोड़ी दूर हटकर गोली खेलते लड़के कौतूहलवश देखने लगे हैं उदय पांड़े को।

''तुम्हारे डर से नहीं आ रहा है निसाचर सब; नहीं तो यहां बैठने नहीं देता हमको। भगा देता है। बोलता है, कुटिया भी तोड़ेंगे।''

वसुधा नहीं बोली कुछ।

उदय पांड़े भी चुप हो गए हैं। पता नहीं, उदय पांड़े क्या सोच रहे थे, पर वसुधा अपने बारे में सोच रही है। सुशील अमेरिका जाने की तैयारी कर रहा है। वसुधा बता चुकी है उसे, उसका वहां साथ जाना संभव नहीं है। करुणा को पढ़ाएगी अपने साथ रखकर। माई-बाबूजी को भी ले आएगी। सुशील फिर भी जाना चाहता है। जाता है तो जाए! सोच लिया है वसुधा ने। किसी का पिछलग्गू बनना मंजूर नहीं है उसे। वैसे भी सुशील का आत्मदाह कुछ ज्यादा ही प्रबल हो गया है इस बात को लेकर कि वासुदेव सिंह को दिल का दौरा उसी के कारण पड़ा। ''तो?'' गुस्सा गई थी वसुधा। सुशील आहत हो गए होने का भाव ओढ़ लेता था। वसुधा समझ गई है कि यह संबंध अब और नहीं चलने वाला...

और पता नहीं कब, वह मुक्त हो गई थी इन विचारों से। घंटे-भर बाद खुली थीं आंखें। एक अबूझ शून्य से गुजरी थी वह।

घबराई हुई-सी देख रही है अपने चारों ओर। यह क्या हो गया था उसे?

''क्या था?'' पूछा।

उदय पांड़े सो गए थे पीपल के तने से पीठ टिकाए हुए।

वसुधा लौट रही है एक अनूठे अनुभव को समझने के संघर्ष में उलझी हुई। रुककर देख लेती है उदय पांड़े को—ऐसे छोड़ जाना ठीक होगा क्या! पर समझाती है अपने-आपको। भावुक नहीं होना है। कुछ विलक्षण घटा है उसके साथ, पर अधीर नहीं होना है। उसे जाना है कल यहां से। मन कह रहा है, उदय पांड़े से कहे साथ चलने को। पर ठंडे दिमाग से सोचेगी वह। हो सकता है, एक संघर्षपूर्ण जिंदगी के थकान के क्षण हों ये। हो सकता है, एक आत्मीय रिश्ते के संभावित अंत की अंतर्वेदना हो यह। हो सकता है, अपने घर की उदासी के कारण पैदा हुआ अपनी उपलब्धियों के प्रति उपराम का भाव हो यह। वह ठीक से सोचेगी अपने अंदरूनी और बाहरी हालात के बारे में।

उसने आखिरी बार मुड़कर देखा। उदय पांड़े नहीं थे पीपल के नीचे। कुटिया में चले गए थे शायद।

दयाशंकर जमे हुए थे आंगन में। महानता का बखान कर रहे थे अपनी। उन्हें दुःख था इस बात कि उनके अधिकांश कामरेड मार्क्सवाद से ज्यादा जातिवाद के प्रभाव में थे और उनकी गतिविधियां भी जातीय पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों से प्रेरित थीं। दयाशंकर नहीं चाहते थे कि नब्बे बीघा जमीन को लेकर मारकाट मच जाए ऊंची और दूसरी जातियों के बीच। उनका मकसद था सरकार को झिंझोड़ना। जैसे भगत सिंह ने बम फेंका था अंग्रेजों को जगाने के लिए, उन्होंने भी यह बम फेंका था एक भ्रष्ट और संवेदनहीन राज्य-व्यवस्था को जगाने के लिए।

"जब देखे कि अपने ही गुट के लोग बारूदी सुरंग फोड़ने लगे, मारकाट की रणनीति बनाने लगे तो समझ गए कि मामला गड़बड़ा रहा है। आमरण अनशन पर इसीलिए बैठे ताकि सरकार पर दबाव डाल सकें असली मुद्दे पर अपनी नीति स्पष्ट करने के लिए।"

"एगो धनंजयजीउवा है, वही सुने हैं कि सब कर रहा है।" डरते-डरते कहा देवता पांड़े ने। दयाशंकर का अपने यहां बैठना अच्छा नहीं लग रहा उन्हें। असुविधा हो रही है।

"कोई कुछ नहीं कर सकेगा। अभी तो हम जान-बूझकर ढील दिए हुए हैं कि असली रंग में आ जाएं लोग। गोली इसलिए नहीं खाए हैं कि गलत-सलत लोगों को मनमानी करने दें।" यह गोली खाने वाली बात दयाशंकर ने वसुधा को सुनाने के लिए कही।

वसुधा सुनकर भी नहीं सुन रही थी। वह तो इस उधेड़बुन में लगी हुई थी कि सुशील के साथ अपने संबंध के खत्म होने की बात बताए कि नहीं अपने घरवालों को? बता देती तो कम से कम देवता पांड़ेबो की छाती पर जमा पत्थर हट जाता। पर सुशील वापस लौट आने को कहने लगे तो?

"लगता है, दिल्ली का चक्कर भी अब लगता ही रहेगा, काका। वसुधा है तो वहां भी कोई प्रोबलेम नहीं होगा।" दयाशंकर ने जाने के पहले कहा।

"करुणा को हम अपने साथ ले जा रहे हैं, बाबूजी।" वसुधा बोली।

"एकदम नहीं।" देवता पांड़े कुछ कह पाते, उसके पहले ही चीख पड़ी हैं देवता पांड़ेबो, "बोल दीजिए कि हम लोगों के यहां से कोई नहीं जाएगा इसके यहां। इसके कमाई का कोई काम नहीं है हम लोगों को।"

"माई!" करुणा ने रोकना चाहा। वसुधा के चेहरे पर पुत गई उदासी दिख गई थी उसे।

"झोंटा पेर देंगे तुम बोलीं तो।" देवता पांड़ेबो चीखीं।

"पागल है।" देवता पांड़े ने कोशिश की मुस्कराने की।

"ठीक है, यहीं रहेगी।" वसुधा ने भी कोशिश की मुस्कराने की।

24

साथी रामनाथ यादव ने एक लिफाफा थमाया दयाशंकर को और कहा कि धनंजयजी बात भी करना चाहते थे उनसे। धनंजयजी ने संदेश भिजवाया था कि कुंवरपुर के सभी मामलों की देखभाल के लिए एक प्रबंध-समिति बना दी गई थी; दयाशंकर को कोई हस्तक्षेप नहीं करना था इन मामलों में। पार्टी का स्पष्ट निर्देश प्राप्त हुए बिना उन्हें कोई अगला कदम भी नहीं उठाना था।

"कोई खास बात नहीं है। थोड़ी गलतफहमी है, दूर हो जाएगी।" रामनाथ यादव ने कहा।

"दूर करने की भी क्या जरूरत है; हमने तो खुद ही अर्ज किया था कि यह सब इस छोटे आदमी से सम्हलनेवाला नहीं है।" दयाशंकर क्रोधित भी थे, अपमानित भी महसूस कर रहे थे और चौकस भी थे कि जो सुना था दमयंती के बारे में, कहीं उनके साथ भी नहीं हो जाए।

"छोटे-बड़े आदमी का सवाल नहीं है, पार्टनर! सबके सहयोग से ही..."

"हमारा कहना बस इतना है, रामनाथ भाई, कि दूसरों के लिए कुंवरपुर बस कब्जेवाली जमीन का नाम है और हमारे लिए हमारे गांव का। बेटे को उसकी मां से तो अलग नहीं कर सकते न आप?"

"एकदम सही बात है। और हमारी समझ यह है कि निर्देश कोई बड़ा कार्यक्रम शुरू करने के पहले पूर्वानुमति ले लेने-भर का है।" रामनाथ यादव चले गए अपनी समझ से मरहम लगाकर। पर मानो एक परिचित भीड़ के सामने नचा-नचाकर जूते मारा हो किसी ने, इस कदर बेचैन हैं दयाशंकर।

उनके कुंवरपुर पहुंचने के बाद से ही छोटी-छोटी कई बातों को लेकर झड़पें हो चुकी थीं उनके अनुयायियों और प्रबंध-समिति के समर्थकों के बीच। यह स्पष्टतः प्रबंध-समिति वालों की चाल थी। दयाशंकर निर्णय नहीं ले पा रहे आगे की रणनीति के बारे में। मन में डर बैठा हुआ है कि धनंजयजी के फतवे की बात सुनते ही कहीं सिट्टी-पिट्टी गुम न हो जाए उनके चेले-चपाटियों की : ऐसा न हो कि सारे के सारे किनारा कर लें। गांववाले हँसेंगे। विरोधियों को पता चल गया तो बदला लेने से बाज नहीं आएंगे। दयाशंकर बेचैन हैं। लग रहा है, दिमाग की नसें फट जाएंगी।

रामज्ञान पांड़ेबो समझ गई हैं—कोई बहुत बड़ी समस्या आ खड़ी हुई है।

"कोई बात हो तो बताना, बबुआ।" बोलीं।

दयाशंकर भी बांटना चाहते थे अपनी पीड़ा : असह्य होती जा रही थी।

"इतने बढ़िया काम को धनंजइया तहस-नहस करना चाहता है, माई! चाह रहा है कि जिस-तिस को बांट दें जमीन।"

"सबसे लड़ाई ही कर लोगे तो..."

"लड़ाई नहीं करेंगे, लेकिन..."

"साफ-साफ कह दो कि तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं है। जो भी करेंगे, धनंजयजी करेंगे।"

"हम भी यही सोच रहे हैं।" दयाशंकर ने कहा।

पर दयाशंकर यह कतई नहीं सोच रहे थे।

कब्जेवाली जमीन में एक रात्रि-पाठशाला शुरू की गई थी निरक्षर लोगों को पढ़ाने के लिए। कई लोग आ चुके थे बुलाने। दयाशंकर नहीं गए।

"कुछ बात है क्या, सरकार?" रात को ग्यारह बजे जगनाथ और नंदलाल पहुंच गए कारण जानने।

"उद्घाटन हो गया?"

"हो ही गया। हरिहर मास्टर छाये हुए हैं। साला सिबचना—नौलखवा के दलाल के बेटवा को हेडमास्टर बनाए हैं। मन तो पितपिताया हुआ था, बाकी..."

"जाने दो, काम तो बढ़िया हो गया।"

"ई हमको सुना रहे हैं कि...?"

"ऐसा क्यों सोच रहे हो?"

"क्योंकि हम भी सुने हैं कि कुछ मेसेज आया है ऊपर से।"

"मेसेज आया है कि हमको दूर रहना है कुंवरपुर के कार्यक्रम से और जो भी करना है, पूछकर करना है धनंजयजी से।"

"हम तो पहले ही बता दिए थे आपको। अखबार में जिस दिन आपका नाम देखा, उसी दिन चिल्लाने लगा था खांस-खांसकर।"

"चाहता क्या है, जगनाथ?"

"ए बाबा, हम तो एके बात जानते हैं। इस देश का नान्ह और गरीब बहुत अभागा है। जब-जब आगे बढ़ने को होता है, बीच रस्ता बिछला जाता है।"

"हम तो सोचे हैं कि कोई विवाद खड़ा नहीं करेंगे। देखेंगे चुपचाप।" दयाशंकर बोले, "हम तो, तुम जानते ही हो, पहले से ही अझुराने के फेर में नहीं थे।"

दोनों ही समझ रहे थे, यह जाग्रत विवेक नहीं, वरन् दुःख था दयाशंकर का जो बोल रहा था।

"बात करने को तो बोले हैं न?"

"बात करने को क्यों नहीं बोलेंगे! नेता हैं हम लोगों के।"

दयाशंकर समझते हैं कि परेशानियां बांटने तक तो साथ दे सकते थे नंदलाल वगैरह, पर यह अपेक्षा नहीं की जा सकती थी कि उनसे बाहर निकलने की राह भी सुझाएं।

"इस बात की चर्चा नहीं करनी है, नंदलाल।" नंदलाल को चेताया—"सोच रहे हैं, विवाद बढ़ाने से दुश्मनों को फायदा होगा।"

खुशी का ठिकाना नहीं है रामज्ञान पांड़ेबो की। दो दिनों से घर से बाहर नहीं निकले हैं दयाशंकर। मिलने आने वालों को भी जल्दी ही टरका दिया। भैंस भी खुश है। सानी-पानी मिल रहा है समय पर। उसके कमरे की मरम्मत की ओर भी ध्यान गया

है दयाशंकर का। कह रहे हैं, ईंटा गिरवाएंगे। खंडी परती पड़ी है, बिरुवाई लगाएंगे। बहुत हो गई नेतागिरी।

रामज्ञान पांड़ेबो की खुशी का यह मुश्किल से सातवां दिन ही रहा होगा कि देवता पांड़े बताने आ गए थे कि भयानक दुर्गंध उठ रही थी कुटिया के अंदर से। वसुधा एक जोड़ी धोती-कुर्ता पहुंचा आने को कह गई थी। वही देने गए थे, पर मारे दुर्गंध के हिम्मत नहीं हुई थी कुटिया के अंदर झांकने की।

कुटिया के अंदर उदय पांड़े की लाश पड़ी हुई थी।

कुंवरपुर दहल गया है उदय पांड़े की लाश देखकर। छबीला सिंह तो बेहोश होकर गिर पड़े थे पीपल के नीचे। पूरा गांव रो रहा है श्रीराम पांड़े के साथ-साथ। दिनेश सिंह दंग हैं कि ऊपर से घृणा करता हुआ भीतर से उदय पांड़े से किस कदर जुड़ा हुआ था गांव।

"क्या हो गया था, छबीला भाई?" पूछा बाद में।

"अचानक लगा, जैसे अंधकार छा गया। मानो अब उपाय ही नहीं बचा कोई बचने का। लगा, कौन क्या है, कोई महत्त्व ही नहीं इसका, आपको क्या बताएं...लगा, जैसे कुछ हैं ही नहीं हम...!"

"दरअसल, डरे हुए हैं हम लोग।"

"केवल डरे हुए नहीं हैं, मास्साब! बहुत अपमानित और तिरस्कृत महसूस कर रहे हैं...कुछ हथियारबंद गुंडों ने एक भीड़ को प्रभावित कर ऐसा माहौल बना दिया है, जैसे बिच्छी या कनगोजर हों हम लोग...जैसे इज्जत से रहने का अधिकार ही नहीं है हम लोगों को..." बोलते-बोलते ही देह कांपने लगी है छबीला सिंह की।

"...बहुत बेइज्जती हो रही है, मास्साब!" कहा और रो पड़े।

"छबीला भाई!!!" घबरा गए हैं दिनेश सिंह।

"कन्हैया सिंहवा...साथी-सुहृद समझते थे...कह रहा है कि गद्दार हैं...नान्ह सबका मन बढ़ा रहे हैं...सबक सिखाएगा हमको..." हिलक-हिलककर रोने लगे हैं छबीला सिंह।

"आपके जैसा समझदार आदमी जब...तो ग़लत लोग तो कहेंगे ही कुछ का कुछ।" दिनेश सिंह खुद भी कम आहत नहीं हैं।

खुद को सम्हाल लिया है छबीला सिंह ने—"देखिए न, रंगू भइअवा को कहते हैं...और आज खुद ही भावना में बह गए।" लजा भी रहे हैं।

"महटियाने से नहीं होगा, चाचा। गांव भी नरक बन जाएगा और हम लोग भी बिला जाएंगे।" बथान में उदय पांड़े की धू-धू करती चिता के पास विचारमग्न खड़े दयाशंकर से कहा भंडारी ने।

"किसका काम है?"

"सब हरिहर मस्टरवा का चाल है। सोच रहा है, कोई बड़ा झगड़ा लगा दें गांव में।" भंडारी बोला, "और डेरवाना भी चाहता है गांव को कि जो अझुराएगा..."

"कुटियावाली जमीनओ हथियाना चाहता होगा?"

"उसको तो छोड़िए, हरिद्वार काका के खेतओ पर नज़र लगाए हुए है। थियूरी

पेल रहा था कि जब चले ही गए छोड़कर तो...'' गोसांई पांड़े बोले।

''रामनाथ जदउवा क्या बोलता है?''

''ई तो सोझिया आदमी लगता है, लेकिन चमचा है हरिहर मस्टरवा का।'' भंडारी ने बताया।

''लेकिन सवाल है, भंडारी, कि जो तुम कह रहे हो, अपने गांववालों में से और कितने लोग कह रहे हैं?''

''मौका मिले तब तो! जगनथवा बोला तो उसको प्रबंध-समिति में नहीं रखा। नंदललवा बोला तो उसका भी बायकाट कर दिया। कौन बोलेगा इस हाल में? और सब कोई सोच रहा है कि दयाशंकर बाबा चुप हैं तो कोई न कोई बात जरूर होगा।'' गोसांई पांड़े ने जवाब दिया उनके सवाल का।

''बात तो है ही, लेकिन...''

दयाशंकर ने तय कर लिया है कि भुनाएंगे उदय पांड़े की हत्या को। कब्जेवाली जमीन में पैर नहीं रखेंगे, पर यह संदेश जरूर पहुंचा देंगे कि धनंजयजी का आदेश उन्हें अक्षरशः स्वीकार नहीं था।

''का बचवा, ईहे बढ़िया काम हो रहा है?'' जंगी सिंह ने टोक दिया बथान से वापस लौटते समय।

''बढ़िया नहीं लग रहा? इसी के लिए न चंदा जुटाया जा रहा है? आज उदय पांड़े, कल दयाशंकर पांड़े...'' टके-सा जवाब देकर आगे बढ़ गए दयाशंकर पांड़े। जंगी सिंह से राय-सलाह करने का समय नहीं था उनके पास। सारा ध्यान चमटोली में एक बैठक के आयोजन पर लगा हुआ था।

अपनी जिंदगी का एक और बड़ा फैसला ले रहे हैं दयाशंकर। चुनौती दे रहे हैं अपने नेतृत्व को। परिणाम कुछ भी हो सकता है। एक अलग क़ारवां भी बन सकता है और नामोनिशान भी मिट जा सकता है। दयाशंकर खुद नहीं जानते, क्यों कर रहे हैं ऐसा, जबकि एक आसान विकल्प उपलब्ध था—जाकर माफी मांग लेना धनंजयजी से। ऐसा तो नहीं ही है कि विचारहीन है वह आदमी। कितने ही लोगों की अविकल्प आस्था जुड़ी हुई है उसके साथ। यह बात और है कि उसकी कोई बहुत अच्छी राय नहीं थी इन आस्थावानों के बारे में।

'बानर-भालुओं की पूजा करने वाले ये लोग किसी की भी पूजा कर सकते हैं। बिना किसी को जाने उसकी पूजा करना आदत है इनकी। गांधी क्या हैं, नहीं जानते, पर श्रद्धावनत हैं; समाजवाद क्या है, नहीं जानते, पर वोट देते हैं उसके नाम पर। हमारे देश में एक तरह का रहस्यवाद है लोकतंत्र।' कहता था वह।

दयाशंकर ने फैसला कर लिया है, क्षमायाचना करने नहीं जाएंगे धनंजयजी के पास। क्षमायाचना करना हो तो वे लोग करें जो बरसों से घूम रहे थे लाल झंडा लेकर और एक मुरई तक नहीं उखाड़ सके थे। धनंजयजी ही बताएं न कि जो कुंवरपुर में हो गया, कोई मिसाल है उसकी उनके 'महान् नेतृत्व' के इतिहास में?

''देखिए भाई, हम तो सोच लिए थे कि हमारा आना अच्छा नहीं लगता तो इस

कार्यक्रम में विघ्न डालने नहीं आएंगे हम; पर बरसों का लगाव कह लीजिए, चाहे नेतागिरी का लोभ, बर्दाश्त नहीं हो रहा चुप बने रहना।'' बात शुरू की दयाशंकर ने।

''किसको खराब लग रहा है आपका आना, बाबा?'' पूछा गया, ''और कौन छोकड़चोदा कह रहा है आपको चुप रहने को?''

''आप लोग भी देख ही रहे हैं कि क्या हो रहा है पिछले कुछ दिनों से। हमको कहा गया, आप अलग रहिए। फिर कहा गया, प्रबंध-समिति में कुंवरपुर का कोई नहीं रहेगा। जान-बूझकर आपस में मनमुटाव पैदा करने वाला काम किया जा रहा है। जो लोग नेता बनकर आए हैं, जगनाथ को नहीं जानते, नंदलाल को नहीं पहचानते। भरोसा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण सिबचन हैं उनके लिए; नकचिपटा की शहादत का कोई मतलब नहीं है उनके लिए। ऐसे ही काम होता है? हम लोग चाहते हैं कि दुश्मन जितना ही दूर रहें कुंवरपुर से, उतना ही अच्छा है! और दूसरी तरफ से सारे काम ऐसे किए जा रहे हैं कि दुश्मनों की नजर में चढ़ा रहे कुंवरपुर। बताइए, एक बेचारे अधकपारी साधू को काटने का क्या मतलब है? वह भी तब, जब मालूम था कि हमारे ही एक शहीद साथी के परिवार का है? क्या समझें हम? हम बोले, एक बड़ा काम हो गया, तो साथी नन्हकू सिंह की एक प्रतिमा स्थापित की जाए कब्जेवाली जमीन पर; यही सपना देखते-देखते जान दे दी थी जवान ने; प्रेरणा का स्रोत थे हमारे-आपके लिए; तो मजाक उड़ाया गया हमारा। कहा गया, लगे हाथ आप अपनी प्रतिमा भी स्थापित करवा लीजिए।''

दयाशंकर रुके अपनी वक्तृता का प्रभाव देखने को। नन्हकू सिंह की प्रतिमावाली बात छू गई-सी लग रही थी लोगों को। सोचा, इसी को और खींचते हैं—''नन्हकू भाई कहते थे कि गांव की गैरमजरुआ जमीन मिल जाती तो सहकारी खेती कर अनाज का एक भंडार बनाते, ताकि कोई भाई भुखमरी का शिकार नहीं हो। आज जब जमीन है हाथ में, कहा जा रहा है, नन्हकू सिंह कौन हैं? आप भी नहीं जानते, नन्हकू सिंह कौन हैं?''

''ए बाबा, आप तब्बे से 'कहा जा रहा है', 'कहा जा रहा है' का कर रहे हैं? कहिए न कौन भोंसड़ीवाला कह रहा है ई सब? अभीये गर्दन नहीं उतार दिए तो मुंह पर मूत दीजिएगा छांगुर के।'' छांगुर गरजा।

''हमारा संकल्प है कि कब्जेवाली जमीन पर नन्हकू सिंह की प्रतिमा लगेगी।''

''लगेगी! लगेगी!'' चमटोली गूंज उठी।

''नन्हकू सिंह अमर रहें! अमर रहें!'' भरोसा चीखा और नारे लगने लगे।

''पिछला जनम में पाप किए होंगे, जो ई साला अनेरिया नौकरी भेंटा गया।'' कंबल ओढ़कर रामचरितमानस का सुंदर कांड खोले बैठे प्लाटून कमांडर को डर हुआ कि लंका कांड की घड़ी तो करीब नहीं आ गई।

''का है, दूबेजी?'' वहीं बैठे-बैठे आवाज लगाई संतरी को।

''अब यहीं खड़े-खड़े क्या बताएं कि क्या है!'' दूबेजी बोले।

''सावधान रहिएगा थोड़ा।'' निर्देश देकर फिर सुंदर कांड में वापस लौट आए

प्लाटून कमांडर—लछुमन रिसाए हुए थे भरत को एक बड़ी जमात के साथ आता देखकर।

"सरवा सब खुशी मना रहा है उदय पंड़इया के मडर का।" कलक्टर सिंह की दालान में लेटे जंगी सिंह बुदबुदाए।

"धांसेंगे बाबा, धांसेंगे, फिकिर मत कीजिए।" महेंदरा बोला, "छछन के रह जाएंगे साले हरि के जन लोग!"

"दयासंकरा से बोले कि ई काम ठीक नहीं हुआ तो बोला, आप लोग चंदा करवाके मरवाए हैं।"

"काहे नहीं बोले कि जल्दीये तुमको भी पारघाट लगाएंगे?"

"काहे को बोल देते?" कलक्टर सिंह ने हस्तक्षेप किया, "बोल के काम नहीं बिगाड़ना है।"

तबियत खराब रह रही थी तिलंगी सिंह की। एक बार तो लगा कि बचेंगे ही नहीं तो जिद्द पकड़ ली बनारस जाने की। उन्हें विश्वास नहीं था कि मरने के बाद उन्हें बनारस ले जाएंगे कलक्टर सिंह। लेकिन बनारस से इलाज करवाकर वापस लौट आए थे। केवल आवाज नहीं आई थी वापस। बोलने की कोशिश करते तो सांय-सांय की आवाज-भर निकल पाती। डॉक्टर ने मना किया था ऐसी कोशिश करने से।

हाथ के इशारे से उन्होंने कुछ कहा जंगी सिंह को।

"का जेंवर बर रहे हैं?" कलक्टर सिंह अनसाए।

खंखारकर जोर से एक ओर ढेर साला बलगम थूक दिया तिलंगी सिंह ने और आग उगलती आंखों से देखने लगे कलक्टर सिंह को।

"सब समझ रहे हैं, भाई, सब समझ रहे हैं, लेकिन समय का फेर देखते हुए चलना पड़ता है।" जंगी सिंह ने निष्कर्ष निकाला कि निर्णायक कार्रवाई में देरी हुए जाने के कारण बौखलाए हुए थे तिलंगी सिंह।

दयाशंकर खुश हैं। कुंवरपुर के रेज साथ थे उनके। लेकिन इतने से ही नहीं हो जाना था काम। इसके पहले कि धनंजयजी तक इस विद्रोह की खबर पहुंचे और उनकी तरफ से कोई कार्रवाई हो, दूसरे गांवों के साथियों में भी मजबूत करनी थी अपनी पकड़।

रामज्ञान पांड़ेबो देख रही हैं, वापस आ गया है वही जिन्न। चैन से बैठने नहीं दे रहा दयाशंकर को। रात के ग्यारह बज गए हैं और घूम रहे हैं आंगन में। बिना कुछ बताए बाहर चले गए हैं। रामज्ञान पांड़ेबो को अपने ही ऊपर गुस्सा आ गया है बार-बार झुठियाए जाने पर भी नई-नई आशाएं संजो लेने के कारण।

दयाशंकर जगनाथ को बुलाने के लिए भंडारी को भेजने गए थे।

"सोए नहीं का, दयाशंकर भाई?" धनजी पांड़े अपनी छत पर टहल रहे थे।

"भंड़ुआ कहीं का।" मुंह से गाली निकल गई रामज्ञान पांड़ेबो के।

जवाब नहीं दिया दयाशंकर ने तो वापस चले गए छत के किनारे से।

"दूसरे के आंगन में झांकने में लाज भी नहीं लगता डोमड़ा को।" थोड़ी ऊंची आवाज में ही कहा रामज्ञान पांड़ेबो ने, ताकि दयाशंकर भी सुन लें।

जगनाथ और नंदलाल दोनों आ गए थे भंडारी के साथ। तीनों को अपने कमरे में लेते गए दयाशंकर।

"भजमनपुर वाला प्रसंग याद है, जगनाथ?" पूछा।

"कौन वाला?"

"कुछ लोग आए थे न कि हरेराम तिवारी लंठई कर रहे हैं?"

जगनाथ को याद आ गया था। भजमनपुर के हरेराम तिवारी का एक ही बेटा था, जो मारा गया था एक सड़क दुर्घटना में। पीछे केवल एक चार साल का बेटा छोड़ गया था। जमीन सौ बिगहा से ऊपर थी। किसी न किसी बात पर भजमनपुर के रेजों के साथ ठनी ही रहती थी उनकी। वहां के कुछ साथी आए थे कहने कि भजमनपुर में भी जरूरत थी कुंवरपुर जैसा ही कुछ किए जाने की।

दयाशंकर को लगा, यही उचित समय था भजमनपुर में कुछ करने का। गांव के रेजों से कटनी कराने से मना कर दिया था हरेराम तिवारी ने। हारवेस्टर लेते आए थे। इस मुद्दे पर तनाव था वहां। और एक सुविधाजनक बात यह थी कि ब्राह्मणों की बस्ती थी वह और हरेराम तिवारी के अलावा दूसरे सभी खस्ताहाल थे। हरेराम तिवारी और दो-एक दूसरे परिवारों को छोड़ लाइसेंसी हथियार भी नहीं था किसी के पास, इसलिए किसी तगड़े प्रतिरोध की उम्मीद भी नहीं थी।

"भजमनपुर चलते हैं कल।" दयाशंकर ने तय किया था कि हारवेस्टर का उपयोग नहीं होने देने के लिए गोलबंद करेंगे रेजों को।

"और यहां?" नंदलाल को चिंता हुई कि आज हुई मीटिंग की प्रतिक्रिया का सामना कैसे किया जाएगा।

"यहां अब कुछ नहीं करना है। छटपटाने दो। अगर सुधर जाते हैं एक ही धक्के में तो ठीक ही है, नहीं तो सोचा जाएगा आगे के रास्ते के बारे में।"

"मान लीजिए, धनंजयजी आ गए कल?"

"तो बोलना होगा कि दयाशंकर पांड़े नन्हकू सिंह की प्रतिमा लगवाने के लिए मीटिंग किए थे...और सीधी मुठभेड़ से बचना है अभी। बाहर यह संदेश नहीं जाना चाहिए कि आपस में ही झगड़ा हो गया है। और उद्देश्य झगड़ा करना है भी नहीं!"

अनाश्वस्त दिखते नंदलाल और भंडारी को समझाने के लिए ढेर-सी उलझानेवाली बातें कह डालीं दयाशंकर ने।

"ठीक है...कोई हमेशा के लिए थोड़े ही जा रहे हैं आप।" समझने की कोशिश छोड़कर 'जो होगा सो देखा जाएगा' के भरोसे खुद को छोड़ते हुए कहा नंदलाल ने।

उनके कमरे से बाहर निकले तीनों तो रात के दो बज रहे थे।

भजमनपुर में जम गया था मजमा। हरेराम तिवारी का हारवेस्टर खड़ा था खेत में और आरोपों-प्रत्यारोपों का दौर शुरू हो गया था दोनों पक्षों के बीच।

"देखो रे बाबू लोग, सब समझते हैं हम!" हरेराम तिवारी नरिया रहे थे, "अबरके को सब कोई दबाता है...अखिलेश सिंहवा सब खेत काट लिया हारभेस्टर से, वहां नहीं गया कोई और हरेराम तिवारी का कटनी रोकवाने आ गए, इस अनेति का सजा भगवान देंगे..."

"हमको केवल इतनी-सी बात बता दी जाए–इतनी-सी बात!" भीड़ को चुटकी दिखाकर कहा दयाशंकर ने, "कहां का ब्राह्मणत्व है यह कि एक तो सरकारी कानून को ठेंगा दिखाकर हक से ज्यादा जमीन रखेंगे दबाकर; और दूसरे, गांव के सैकड़ों लोगों को भूखा रखकर अपने कोठिला में धान भरते जाएंगे?"

दूसरी तरफ से उकसाऊ नारेबाजी शुरू हो गई थी। ये गांव के वे लोग थे जो चाहते थे कि हरेराम तिवारी किसी तरह फंस जाएं किसी बड़ी झंझट में। उन्हें कोई सहानुभूति नहीं थी उनके साथ।

थाना पहुंच गया दिन के दो बजते-बजते।

"आप लोग हटिए यहां से तो।" दरोगा आया त्योरियां चढ़ाए हुए।

"हटाना है तो गिरफ्तार कीजिए।" दयाशंकर बोले।

"गिरफ्तारी-ओरफ्तारी तो अपनी जगह है, भाई साहब! पर यह कहां लिखा हुआ है कि हारवेस्टर से कटनी नाजायज है?" दरोगा के साथ आए ढेंका के अंचलाधिकारी ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया।

"नहीं लिखा है तो लिख लीजिए।" एक साथ कई आवाजें उठीं, "ई लिखा है कहीं कि एक आदमी सवा सौ बिगहा खेत जोतेगा?"

अंचलाधिकारी 'हम तो बस एक बात कह रहे थे' की-सी सलोनी मुद्रा ओढ़कर पीछे हट गए। भीड़ उनके स्तुति-गान में लग गई थी–कौन से सर्टिफिकेट के लिए कितना पैसा खाता है...किसके साथ उठता-बैठता है...किसका चाटता-सहलाता है...

दरोगा अनसाया कि पता नहीं, इनको क्या जरूरत पड़ी थी मुंह खोलने की, जब पता ही है कि बास आती है मुंह से!

"ए महाराज, ऊ सब तो बनेचर हुआ है, बाकी आप लोग भी तो नाक में धुआं ही किए हुए हैं।" दूसरे पक्ष की ओर चला आया है दरोगा।

"खेत छेंककर बैठा हुआ है साला सब और उल्टे हमीं लोग पर गरमी दिखा रहे हैं आप?" दूसरे पक्ष ने डांटा।

"आप लोग हटिएगा तब तो कुछ करेंगे हम।" दरोगा झुंझलाया।

"पहले हटाइए ऊ सबको।" दूसरे पक्ष ने इकार कर दिया हटने से।

भजमनपुर सड़क किनारे का गांव था। तीन बजते-बजते डी.एस.पी. भी पहुंच गए खबर सुनकर।

"दोनों पक्षों के तीन-तीन, चार-चार लोगों को बुलाइए।" पहुंचते ही आदेश दिया दरोगा को।

"एस.डी.ओ. साहब नहीं आए?" अंचलाधिकारी ने डी.एस.पी. से पूछा।

"जाते हैं कहीं?" व्यंग्य-बाण छोड़ दिया डी.एस.पी. ने।

'यही न गड़बड़ है ऐडमिनिस्ट्रेशन के साथ।' मुंह लटकाकर चुपचाप एक ओर खड़ा हो गए अंचलाधिकारी।

"देखिए, ऐसी कोई समस्या नहीं है, जिसका समाधान बातचीत से संभव नहीं है।" दोनों पक्षों के प्रतिनिधि आ गए तो डी.एस.पी. ने कहा।

"ई हम पहले ही बोल चुके हैं।" दरोगा भुनभुनाया। पैर दुखने लगे थे खुरहेंटी में खड़े-खड़े।

"देखिए, डी.एस.पी. साहब, जो इन लोगों के लिए सुविधा की लड़ाई है, वह अस्तित्व का संघर्ष है हम लोगों के लिए। इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जाए।" दयाशंकर ने कहा।

"हे परमपिता! हे गौरी-गणेश! हे त्रिभुवनपति! सुन रहे हैं ई कुतर्क? अपने ठेन पसारे हुए था सरवा सब कि खेत नहीं काटेंगे और कह रहा है कि..." हरेराम तिवारी घूम-घूमकर आह्वान करने लगे हैं देवताओं का।

'दू-दू चमेटा मारकर गाड़ी में बैठाना था तो बड़का सरपंच बन गए।' दरोगा को डी.एस.पी. के ऊपर गुस्सा आ रहा है। जैसे-जैसे दिन ढल रहा था, डर भी लगने लगा था। पता नहीं, किस ओर से गोली चल जाए! फिर तो नौकरी गई तेलहंडा में। जो भोंसड़ीयावाले आएंगे खादी में फोद हिलाते हुए, कहेंगे न्यायिक जांच करवाई जाए। और तब रिटायर्ड जज महोदय पूछेंगे कि जब अंदेसा था आपको कि भीड़ हिंसक हो सकती है तो आंसू गैस का गोला क्यों नहीं लाए थे साथ में?

"कहिए न कि चलें जल्दी से?" पैंट की बगलवाली पॉकेटों में दोनों हाथ डालकर मुकेश का कोई भूला-बिसरा गीत गुनगुनाते अंचलाधिकारी से कहा दरोगा ने।

"जल्दी ही समेटना ठीक रहेगा।" अंचलाधिकारी ने कहा।

"तो समेटिए न, भाई! यह तो आप लोगों का काम है, तो आपके एस.डी.ओ. साहब..." डी.एस.पी. झुंझला उठे।

"अगर दोनों पक्ष अड़े रहेंगे अपनी बात पर तो कैसे होगा?" अंचलाधिकारी ने एस.डी.ओ. की कमी नहीं महसूस होने देने की गरज से कहा प्रतिनिधियों से।

"हम तो कह ही रहे हैं कि हटाना है तो गिरफ्तार कीजिए!"

"ई, सर, दयासंकरा दूनो तरफ से मलाई काटने के फेर में है!" दरोगा फुसफुसाया डी.एस.पी. के कान में।

"काटने दीजिए। मलाई बनी ही है काटने के लिए।" डी.एस.पी. तैयार नहीं हुए भावना में बहने को।

"एक बार हट जाने दीजिए ई साला सबको तो देख लिया जाएगा।" दरोगा ने एक ओर ले जाकर समझाया हरेराम तिवारी को '

"हारवेस्टर नहीं चलेगा फिलहाल। और हम कहते हैं तिवारीजी से कि उचित मजदूरी देकर कटनी गांव के लोगों से ही कराएं।" डी.एस.पी. ने दयाशंकर की पार्टी को समझाया।

हरेराम तिवारी मान गए हैं हारवेस्टर नहीं चलाने को और दयाशंकर कुछ चुनिंदा

लोगों के साथ गिरफ्तार हो जाने को मान गए हैं। दोनों पक्ष जय-जयकार करते हुए वापस लौट गए हैं।

कुंवरपुर और भजमनपुर दोनों ही गांवों की रिपोर्ट मिल गई है धनंजयजी को। अचरज-भरी आंखों से देख रहे हैं सामने बैठे हरिहर मास्टर और कुछ दूसरे लोगों को।

"मेरा मेसेज दे दिए थे उसको?" पूछा हरिहर मास्टर से।

"उसके बाद ही तो..."

"ब्लडी रौलिंग स्टोन...नेता बनना चाह रहा है...यूजलेस फेलो..."

"पहले पूरी बात जान लेना ठीक होगा।" दमयंती बोली।

"इनको पूरी बात बताइए, भाई!" धनंजयजी झुंझलाए, "पता नहीं, पूरी बात जानकर क्या करना है।"

"करना है न!" दमयंती दृढ़तापूर्वक बोली, "हमको लगता है, प्रबंध-समिति के लोग सही नेतृत्व नहीं दे पा रहे लोगों की भावनाओं को..."

"प्रबंध समिति को गोली मारो, उसे मैंने मना किया था कि नहीं?" धनंजयजी चीखे और खांसी की एक लहर से जूझते रहे कुछ देर तक।

दमयंती पूछना चाहती थी, 'तो मना क्यों किया था?' पर मन में ही दबा गई यह सवाल।

दमयंती बहुत दुःखी है मन ही मन। धनंजयजी दयाशंकर का जिक्र आते ही चिढ़ जाते हैं। दयाशंकर उसी को कहां अच्छे लगे थे कभी, पर काम तो देखना होगा न! हारवेस्टर वाले मुद्दे पर ही प्रतिवाद की बात कब से सोची जा रही थी? और कोई कुछ नहीं कर सका था। दयाशंकर ने कुछ किया तो था आखिर! नाराजगी थी भी कोई तो गिर जानी चाहिए थी यह सोचकर।

"जरा टाइमिंग देखिए इस नाटक का! कटनी खत्म होने को आई तो हारवेस्टर का विरोध करने चला है।" खुद को सम्हाल लिया है धनंजयजी ने और मुस्करा रहे हैं मंद-मंद।

कोई कुछ नहीं बोल रहा। केवल कौवे बोल रहे हैं घरों के छप्पर पर।

"हम करें बात?" दमयंती बोली।

"किससे? नहीं। देखिए, आप लोग लाइटली मत लीजिए इस आदमी को। मिला हुआ हो सकता है किसी से।" धनंजयजी ने कहा, "और हर्ज भी क्या है, ऐज लौग ऐज ही इज डूइंग आवर वर्क? काम तो हमारा ही कर रहा है!"

"आप लोग घबराइए मत, भाई! लोगों का विश्वास जीतने की कोशिश कीजिए।" कुछ देर के बाद हरिहर मास्टर से बोले।

"बहिनजी जो बोलीं उससे बहुत चोट पहुंची है, पर कोई बात नहीं है..."

"बात कैसे नहीं है।" हरिहर मास्टर की बात बीच में ही काट दी है धनंजयजी ने, "माफी मांगनी चाहिए बहिनजी को।"

हाथ जोड़ दिए दमयंती ने तो सभी खुश हो गए।

"पुलिस है भजमनपुर में?" केवल दमयंती, विनायक और मानिक बच गए तो पूछा धनंजयजी ने।

"छः-सात लोगों की एक पार्टी है।"

"आज ही धावा बोल देना है।"

"आज तो जगरम हो रहा होगा गांव में।"

"सीधे पुलिस पार्टी पर धावा बोलना होगा।"

चुप्पी छा गई है।

"गांव ही है न कि कालिंजर का किला है?" गुस्सा गए धनंजयजी।

धनंजयजी क्या चाहते हैं, दमयंती और विनायक दोनों समझ रहे हैं। दयाशंकर को बुरी तरह उलझा देना चाहते हैं इस मामले में। लंबे समय के लिए जेल चला जाए या उसे फरार होकर रहना पड़े। आराम से खुले में घूमते-टहलते हुए नेतागिरी करना छूट जाए।

"हमको तो ठीक नहीं लग रहा।" विनायक से कहा दमयंती ने।

"क्या?" विनायक जानता है, 'क्या'; वह दरअसल जानना चाहता है, 'क्यों?'

"हम लोग तो आ जाएंगे मारकर; सोचिए, वहां के गरीब लोगों का क्या होगा?"

"लड़ना होगा उनको।"

"लेकिन लड़ने के लिए तैयारी चाहिए कि नहीं?"

"चाहिए तो ; पर सवाल है कि किसको-किसको और कहां-कहां तैयार किया जा सकता है? हर क्रांति कुछ हद तक सुनियोजित और बहुत हद तक अनियोजित होती है।"

दमयंती नहीं जानती क्रांतियों के बारे में उतना, जितना धनंजयजी या विनायक जानते हैं, पर जो साफ तौर पर ईष्या-द्वेष का मामला हो, उसे समझने के लिए भी इतिहास की भुतही गलियों में भटकने की जरूरत है क्या? वह बहुत दिनों से सोचती रही है कि विनायक से कहेगी—धनंजयजी जलते हैं दयाशंकर से; पर हिम्मत नहीं जुटा पाई। पता नहीं क्या समझ ले विनायक! विनायक अच्छा लगता है उसे, लेकिन विनायक के लिए उसके इस अच्छा लगने का कितना महत्त्व है, यह भी तो नहीं न जानती।

"हमको लगता है, धनंजयजी चिढ़ते हैं दयाशंकर से।" हठात् निकल गया है उसके मुंह से।

"हो सकता है।" विनायक ने कहा।

और एकटक उसका चेहरा देखे जा रही है वह—बस! यही कहना है? दमयंती सशंकित है दरअसल। विनायक के बारे में संचित होती जा रही कोमल भावनाएं कहीं बिल्कुल बेवजह और बेमानी न हों! कहीं वह सीधे धनंजयजी को ही न बता दे कि दमयंती शक करती है आंदोलन के प्रति उनकी निष्ठा पर!

"दयाशंकर काम करने और फैसले करने की जैसी स्वतंत्रता चाहते हैं, हमारा आंदोलन संभवतः वैसी स्वतंत्रता नहीं दे सकता उन्हें, या किसी को भी।" थोड़ी देर के बाद अपनी बात पूरी की विनायक ने।

"हमारे कहने का मतलब था कि कहीं भी कोई अच्छा काम कर रहा है तो

उसको बढ़ावा दिया जाए। हम लोग वैसे भी कोई बहुत अच्छा काम कहां कर पा रहे हैं? हलचल मचाकर छोड़ देते है।''

''हम लोग अच्छा काम नहीं कर रहे?'' एक अपनत्व-भरी चुहल थी विनायक के सवाल में।

जब डूब जाना तय-सा लगने लगा था, मानो तब मिल गया था सहारा। चैन की लंबी सांस ली दमयंती ने। विनायक पर विश्वास कर गलती नहीं की थी उसने।

''तुम नहीं जाओगी आज।'' धनंजयजी आ गए हैं। बातचीत बंद हो गई है।

''चुप क्यों हो तुम लोग?'' पूछा।

''सोच रहे थे कि पुलिसवाले दहल जाएंगे एकदम से।'' विनायक ने कहा।

''हम क्यों नहीं जाएंगे?'' दमयंती ने पूछा। दरअसल धनंजयजी का ध्यान दूसरी ओर मोड़ना चाहती थी वह।

''मुझे लगा, अच्छा नहीं लगेगा तुमको।''

बिना किसी के बताए ही जान लिया था धनंजयजी ने कि वह खुश नहीं थी उनके फैसले से।

''वैसे भी आपका ऐसे मामलों में पड़ना, जिसके एक पक्ष में दयाशंकर या कुंवरपुर का कोई आदमी हो, ठीक नहीं होगा। हमारी समझ से।'' उसकी आंखों में झांक रहा था विनायक। मानो कह रहा हो, इतना घबराना भी किस काम का!

थोड़ी दूरी पर स्थित चापाकल की ओर देखने लगी दमयंती, जहां दो औरतें अपने-अपने तसले जमीन पर रख हाथ चमका-चमकाकर गाली-गलौज में लगी हुई थीं। जिनकी जिंदगी में कुंवरपुर और भजमनपुर नहीं थे, वे भी कहां कम परेशान थे!

स्कूल के बरामदे में खड़े संतरी के मन में आया कि उन्हें वहीं रोक दे और हथियार छोड़कर आने को कहे। वर्दी पुलिस की ही थी, पर चेहरे पहचाने हुए नहीं थे। पर उसे खुद भी इधर आए हुए तो बस पंद्रह दिन ही हुए थे। सोचा, कोई बड़ा अधिकारी हुआ तो नाहक नाराज हो जाएगा।

उसने आगे-आगे विश्वास-भरे निर्भीक कदमों से चलते आदमी को गौर से देखा। उसके कंधे पर लगे तमगों को। वह बेशक कोई बड़ा अधिकारी ही था। ऊहापोह में पड़े हुए ही सेल्यूट दाग दी उसने और विनायक के चेहरे के कुलीन खिंचाव को करीब से देख और भी आश्वस्त हो गया कि उसने गलती नहीं की थी निर्णय लेने में।

''बाकी लोग कहां हैं?''

बाकी लोग, भजमनपुर के तिवारीजी लोगों ने जो दो शानदार मुर्गे भिजवाए थे, स्कूल के पिछवाड़े बैठे छीलने-सुधारने में लगे हुए थे उन्हें और किसी अनाम रेडियो स्टेशन से आ रहा फिल्मी गाने का प्रोग्राम सुन रहे थे।

''बोल दें का हुजूर?'' संतरी ने पूछा।

तब तक उसके बिल्कुल पास आकर खड़ा हो गया था विनायक। और ढलती हुई शाम के रंग बदलते आकाश को देखने लगा था। अपने आदमियों के सही जगहों

पर मोर्चा ले लेने का इंतजार था यह दरअसल।

''आपको पहचाना नहीं गया, हुजूर?'' पार्टी के इंचार्ज ए.एस.आई. ने झिझकते हुए पूछा।

''गांववालों से ज्यादा हेलमेल ठीक नहीं है।'' विनायक ने उसके सवाल को मानो उपेक्षापूर्वक ठोकर मारते हुए कहा ''कौन-कौन है?''

''ऊ कोई नहीं, हुजूर...दो लोग हैं...सौदा-सुलुफ मंगाया था...यहां एकदम शांति है।''

और ए.एस.आई. की बाकी बातें उसके हलक में ही अटक गई थीं। विनायक की पिस्तौल उसकी छाती पर टिकी हुई थी। संतरी एक छोटी-सी आह...के साथ बरामदे के फर्श पर बैठ गया था माथा पकड़े हुए। दूसरी पार्टी का आना सुनकर बरामदे में आ गए थे जो लोग, वे बरामदे में, और पिछवाड़े मुर्गे छीलने-सुधारने में लगे हुए थे जो वे पिछवाड़े ही घेर लिए गए थे। दो सिपाही कमरे के अंदर थे और चाहते तो फायरिंग कर सकते थे; पर उनके निर्णय लेने के पहले ही पिछवाड़े के उनके साथियों ने आवाज लगा दी थी—''रामपदारथ भाई, गोली मत चलाना, घेरा गए हैं हम लोग।''

जैसा कि अपेक्षित था, गोली नहीं चलाई उन दोनों ने और दोनों हाथ ऊपर उठाए आकर बरामदे में खड़े हो गए। सारी राइफलें विनायक के लोगों के कब्जे में आ गई थीं। एक लंबी सीटी मारी थी किसी ने और सड़क पर खड़ी जीप दनदनाती हुई आकर स्कूल के सामने खड़ी हो गई थी। राइफलें जीप में रख दी गईं। विनायक ने ए.एस.आई. को बाहर रखकर सिपाहियों को स्कूल के दफ्तरवाले कमरे में जाने का आदेश दिया और ताला लगा दिया बाहर से। अब वे चिड़ियाघर के पशुओं की तरह एक छोटे-से जंगले से झांक रहे थे; घिघिया रहे थे—''हम लोग भी गरीबों के ही बेटा-भतीज हैं...हम भी वंचित वर्ग के ही हैं...''

बाहर खड़े हारवेस्टर से उठती लपटें गांववालों ने गोलियों की आवाज सुनने के साथ ही देखीं। पुलिस पार्टी को मुर्गे पहुंचाने आए दोनों गांववालों को गोली मारकर विनायक अपने दस साथियों के ग्रुप के साथ जीप पर सवार होकर रवाना हो चुका था वहां से।

जीप के आंखों से ओझल हो जाने के बाद ए.एस.आई. ने एक ईंट उठाई और उस कमरे में लगा ताला तोड़ने की कोशिश करने लगा, जिसमें उसके सिपाही बंद थे।

देखते ही देखते रंगत बदल गई थी शाम की। पिछवाड़े पड़ी मुर्गों की लाशें भूलकर स्कूल के आगे पड़ी दो लाशों की फिक्र में लग गई थी पुलिस पार्टी।

''आप लोगों से कुछ होने-जाने का ही नहीं है तो झांट कबारने के लिए राइफल थाम लेते हैं?'' उत्तेजित गांववाले भी उन्हें ही गाली देने लगे थे।

ढेंका थाने में उदासी का आलम था।

''कल पकड़े थे न कुछ लोगों को? कहां हैं?'' डी.एस.पी. पहुंचे तो घबराए हुए थे बुरी तरह।

''उनको तो हुजूर...'' दरोगा हकलाया, ''उनको तो ऐसे ही उठा लिया गया था...छोड़ दिया...''

"छोड़ दिए?" चीख निकल गई डी.एस.पी. के गले से, "सबको छोड़ दिए? उसको भी जो नेतागिरी कर रहा था?"

"हुजूर, पहले तो इस तरह का कोई आदेश..."

"हे गुरु महाराज!" डी.एस.पी. अब थर-थर कांप रहे थे गुस्से से, "अभीये आदमी दौड़ाइए। जैसे भी हो, कम से कम उस बेटीचोद को पकड़िए।"

दरोगा खड़ा था चुपचाप। सोचता कि आखिर आदमी दौड़ाए भी तो किधर दौड़ाए? ऐसा न हो कि बाकी बची राइफलें भी गंवा आएं साले नालायक!

"चलिए, हम भी चलते हैं। किधर चला जाए?" डी.एस.पी. ने पूछा।

"वही तो, हुजूर, हम भी सोच रहे थे!" दरोगा ने कहा।

"अभी सोच ही रहे हैं आप? जब सोचना था, सोचेबे नहीं किए, अब सोच रहे हैं?"

"हम तो हुजूर बोले ही थे कि..."

"क्या बोले थे आप? किसी तरह से वहां से जल्दी से जल्दी भागने के चक्कर में थे और कह रहे हैं..."

"आप यहीं ठहरिए, हुजूर...हमीं देखते हैं...एस.पी. साहब भी आने वाले हैं।"

"काम जहुआ गया, रामबचन बाबू।" बेंत से बुनी कुर्सी में लुढ़क गए डी.एस.पी.।

जगनाथ के एक संबंधी थे ढेंका में। थाने से छुट्टी मिलने के बाद उन्हीं के यहां ठहर गया था और पान खाने के लिए बस-स्टैंड के पास एक गुमटी के आगे खड़ा मुंह बाए हुए, भजमनपुर में हुई घटना का वृत्तांत सुनते हुए ढेंका से फूट लेने की ही सोच रहा था कि दरोगा आकर खड़ा हो गया था एकदम सामने।

"दयाशंकर कहां हैं?"

"हमको क्या पता!"

"चल, माधड़चोद..." एक जोरदार घूंसा पड़ा पीठ पर और जगनाथ समझ गया कि एक बहुत बड़े संकट से घिर चुका था वह। उसका संबंधी मौका देखकर भाग खड़ा हुआ था वहां से। गर्दन पर एक और जोरदार धौल पड़ते ही वह चुपचाप जीप की ओर बढ़ गया।

"एक पकड़ाया, हुजूर। ई भी मेने आदमी है।" दरोगा ने एस.पी. को सेल्यूट करते हुए डी.एस.पी. को सूचित किया।

"हां...हां...इसको तो हम पहचानते ही हैं...दयासंकरा कहां है रे?" डी.एस.पी. रोमांचित हो गए थे जगनाथ को देखकर।

"नखड़ा कर रहा है, सर..." दरोगा ने अर्थ-भरे अंदाज में कहा, जिसका मतलब जानता था जगनाथ—बेरहमी से धुनाई।

"आप पक्का जानते हैं कि दयाशंकर इनवॉल्व्ड है इस घटना में?" बी. सुधाकर ने पूछा, जिन्हें सरकार ने नक्सलवाद के खतरे से लड़ने के लिए दुबारा एस.पी. बनाकर भेजा था इस जिले में।

"इन लोग तो, सर, असल में उन लोगों के लिए ही काम करता है... ओवरग्राउंड

ग्रुप है उन लोगों का...''

"फंडामेंटल्स मत समझाइए, हम जानते हैं।'' एस.पी. ने डांट दिया डी.एस.पी. को, "आप इतने दावे के साथ कैसे कह रहे हैं कि दयाशंकर का हाथ है इसमें?''

"हम लोगों को हुजूर, कुछ नहीं मालूम कि इसमें किसका हाथ है।'' एस.पी. की बात सुनकर जगनाथ की हिम्मत हुई बोलने की।

"इससे तो पूछताछ कीजिए ही...पर इन लोगों के ठिकानों के बारे में पहले से कोई जानकारी है कि नहीं आप लोगों के पास?'' जगनाथ को अनसुना करते हुए एस.पी. ने पूछा दरोगा से।

"मतलब कि सर, ठिकाना तो इन लोग बदलते रहता है।''

"बदलकर कहां गया होगा अभी?''

चुपचाप खड़ा रह गया दरोगा।

"आप लोगों का इंटेलिजेंस कलेक्शन इतना पुअर होगा तो कैसे काम चलेगा?'' एस.पी. को गुस्सा आ गया।

"हम लोग कोशिश कर रहे हैं, सर!'' दरोगा ने कहा।

"अच्छा सुनिए, दयाशंकर मिल भी जाता है तो मारपीट करने से पहले पूछ लीजिएगा हमसे।'' एस.पी. ने फुसफुसाती हुई आवाज में कहा और बाहर निकल गए।

"शुरू हो गया न पौलटिक्स!'' दरोगा ने व्यंग्यपूर्वक कहा डी.एस.पी. से, "हुजूर उड़ाने के फेर में थे और इनका आदेश हो गया कि छूना भी नहीं है।''

"तो क्या कीजिएगा? नौकरी छोड़ दीजिएगा?'' डी.एस.पी. बोले और वे भी बाहर निकल गए।

"बहुत प्रेशर है।'' विनायक की पेशानी पर परेशानी चुहचुहा रही है।

"किसी को पकड़ा है क्या?''

"कुंवरपुर का जगनाथ है एक। खतरा गिरफ्तारी से नहीं है। एस.पी ने डेरा डाल रखा है। कह रहा है राइफलें ऊपर किए बिना नहीं हिलेगा।''

"निकल लेना ही ठीक रहेगा इधर से!'' धनंजयजी कुछ नहीं बोले तो विनायक ने ही फिर बोलना शुरू कर दिया, "जीप जहां छोड़ी गई है, उससे कुछ अंदाजा तो...''

"कितनी राइफलें हैं?'' धनंजयजी ने हठात् पूछा।

"आठ।''

"उनमें से तीन सबसे अच्छी रखकर पांच पकड़वा दो। आई नो पुलिस। पांच राइफलें मिलते ही इस केस में इंटरेस्ट कम हो जाएगा उनका।''

एक सूझ-भरी योजना बनाई है धनंजयजी ने। थाने के एक विश्वस्त सिपाही के माध्यम से पहुंचा दी जाए यह खबर कि राइफलें भरकौली के पास गन्ने के खेत में छिपाई गई हैं। पुलिस चौकी पर धावा अखिलेश सिह गुट का काम था, जो बेवजह तनाव पैदा करना चाहता था भजमनपुर में।

"कोई विश्वास नहीं करेगा।" दमयंती बोली।

"विश्वास करे न करे, अपना इमीडियेट प्रौबलेम सॉल्व होगा।" ऊब का भाव आ गया था धनंजयजी के चेहरे पर।

दमयंती का मन किया कि उनके मुंह पर ही कह दे कि ऊबने का अधिकार ऊपरवाले ने केवल आपको ही नहीं दिया। एक दयाशंकर को गड्ढे में धकेलने के लिए, लगता है, पूरे आंदोलन को ही बर्बाद कर डालेंगे।

"लगता है इमीडियेट प्रौबलेम ही सॉल्व करते रह जाएंगे हम लोग।" बोली।

धनंजयजी ने सिगरेट जला ली थी और खटिये पर चित्त लेटे हुए आकाश का नैसर्गिक वैभव निहार रहे थे।

"तुम भी आसमान देखो।" कहा और मुस्कराए धीरे-से।

"हमको तो जमीन ही देखने दीजिए।" दमयंती उठी और चली गई तेज कदमों से चलती हुई।

"लेट मी कन्फेस बिफोर यू, आई लव दिस लेडी।" विनायक से कहा और निगाहें वापस आकाश में गड़ा दीं धनंजयजी ने।

"अब जाकर यह फिट काम हुआ है।" चहक रहे हैं लल्लन सिंह, "साले दयाशंकर का नाम भी है केस में। जगनथवा से सब उगलवाई है पुलिस।"

"बड़का लोग जान-बूझकर कमजोर बने हुए हैं, नहीं तो ईहे साले नान्ह लोग का हूब है पंजरा आ जाने का!" जंगी सिंह को एक अरसे के बाद लग रहा है कि खुलकर बोल सकते हैं अपने मन की बात।

"अपने ही भाई-वृंद न जहुवाए हुए हैं।" लल्लन सिंह ने कहा, "साफ-साफ बोलिए कि क्या बोलना है अखिलेश सिंहवा को।"

"जो तैयार नहीं हैं, उनको महटियाइए न भाई। जो तैयार हैं, आगे आ जाएं।" सत्यनारायण सिंह ने जान-बूझकर हस्तक्षेप किया, क्योंकि उन्हें मालूम था, चर्चा फिर उसी दिशा में मुड़ रही थी—छबीला सिंह, रंगू सिंह और दिनेश सिंह की भर्त्सना की दिशा में।

कलक्टर सिंह ने समझी सत्यनारायण सिंह की चालाकी। उनके प्रस्ताव के विरोध में खड़े हो गए—"हम केवल यह जानना चाहेंगे कि जो तैयार नहीं हैं, क्यों तैयार नहीं हैं? कुछ खास वजह हो तो हम लोगों को भी बताया जाए।"

"खास वजह यह है कि देह में फुंसी हो जाए तो छूरी से नहीं काटा जाता उसको।" रंगू सिंह से चुप नहीं रहा गया।

"तो ठीक है, उसको होमियोपैथी से ठीक करते रहिए, लेकिन एक बात बता देते हैं आपको कि कुंवरपुर की बेटियों का ब्याह नहीं होगा यही हाल रहा तो। कोई छत्री रिश्ता नहीं करेगा इस गांव में।" लल्लन सिंह ने दहाड़कर कहा।

"बेटा सबका हो जाएगा? बेटी भी नहीं देगा कोई। हमारा नतिया कह रहा था कि स्कूल में कुंवरपुर के लइकवा सबको मउग कहकर चिढ़ाता है दूसरे गांव का लइका सब।" महादेव सिंह ने स्थिति की गंभीरता के एक और पहलू को उजागर किया।

"ठीक है, अखिलेश सिंह करा रहे हैं आपके बेटा-बेटी का ब्याह तो करवाइए; हमारा बेटा-बेटी सब कुंआरा ही रहेगा।" रंगू सिंह चले गए चर्चा को इसी मोड़ पर छोड़कर।

चर्चा आगे बढ़ाई उनके बड़े सुपुत्र गौरीशंकर सिंह ने।

"इनको समझा दे, माई, कि आज के बाद गांव के सामने गर्दन झुकवा देने वाला बतकही करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" अपनी माई यानी रंगू सिंहबो से कहा उसने।

"बबुआ कोइलवरी गए थे न कमाई करने...यही लूर-लच्छन कमाके आए हैं।" आंगन में पीढ़े पर बैठकर लिट्टी-चोखा खाते रंगू सिंह के हाथ रुक गए हैं लिट्टी तोड़ते-तोड़ते।

"जो संघतिया बनकर गांड़ी में पैना करके चला गया, वही हो गया निमनका और जो वही पैना दुश्मनों के गांड़ में धांस देने को कह रहा है, वह हो गया दुश्मन! यही बुद्धिजीवी बनते हैं।" मानो उन्हें बताना चाहा गौरीशंकर सिंह ने कि लूर-लच्छन के मामले में जो दिखाया गया था उन्हें, वह तो ट्रेलर-भर था।

"जा हो, ठोरा बाबा! बहुत बड़ा दंड दिए हो मानुस का जन्म देकर। यही बोली बोलता है बेटा बाप के साथ!"

"ठीके न बोल रहा है! नान्ह सबसे मुखलफत होइये गया है, अब अपने जातवालों से भी मुखलफत..." रंगू सिंहबो को लगा, बीचबचाव करना जरूरी है हाथ में लिया लिट्टी का टुकड़ा मुंह तक ले जाने को भूल गए रंगू सिंह को जमीन पर लाने के लिए।

"ढेर उड़ेगा जो, नारद सिंहवाला हाल हो जाएगा उसका।" रंगू सिंह ने कहा, पर जवाब तैयार बैठा था उधर भी—"ई तो नहीं कहेगा न कोई कि गद्दार था?"

"अरे धीचोदा कहीं का, पचास बरस इस गांव में तुम्हारे भरोसे काटे हैं?" पीतल की थाली ठन्नऽऽ की आवाज के साथ जूठ-कांठ रखने वाले नाद से टकराई और रंगू सिंह पीढ़े से उठ गए बिना खाना खत्म हुए ही।

"लूर-लच्छन सिखाते हैं दूसरों को..." रंगू सिंहबो पतोह की तनी हुई त्योरियां देखकर डर गई हैं। कहीं वह भी बोलना न शुरू कर दे अपने भतार की तरफ से। बरस पड़ी हैं रंगू सिंह पर—"गांव छोड़वाने के धंधा में लगे हुए हैं आप...हरिद्वार पांड़े के पास तो पैसा था, सो चले गए गांव छोड़कर...आप कहां जाइएगा? भीख मांगिएगा?"

"भीख साले फुलपैंट पहनकर लंपटई करने वाले मांगते हैं। किसान बोझा ढोकर पेट पाल लेगा।" थकान उतर आई है रंगू सिंह की आवाज में।

आंगन में सांझ उतर आई है। बैलों को सानी गोतने का समय हो गया है।

"बल्टीया देना जरा।" पत्नी को कहा और जूठन से भरा नाद हींड़ने लगे।

उत्तेजना हर चेहरे पर देखी जा सकती थी राजपूताने के। कब्जे के दिन से ही दबा-सहमा-सा गांव का यह इलाका उभ-चुभ हो रहा था कुछ कर गुजरने की तमन्ना में। आज कन्हैया सिंह भी आने वाले थे।

कन्हैया सिंह अब किसी बड़े खुफिया संगठन के मंजे हुए जासूस की-सी अदा में आते हैं कुंवरपुर। आसपास बैठे लोग बोलते रहते कुछ का कुछ और किसी सतर्क कुत्ते की तरह कान खड़ा किए हुए चुपचाप बैठे रहते कन्हैया सिंह। कहीं दूर या पास में कोई

खड़खड़ाहट होती और आसपास बैठे लोग कह भी रहे हों कि घबराने की कोई बात नहीं है, फिर भी बगल में बैठे लड़के को चिकोटी काटकर इशारा करते देख आने को—'हां भाई, कोई ठीक है दुश्मन का!' लोगों को काबिले-तारीफ लगता उनका यह चौकन्नापन।

राजपूताने के लोगों को एक गहरी झील का अहसास कराते हैं कन्हैया सिंह, जिसकी गहराइयां न जाने कौन-से राज छिपाए हुए हों! उनके आने से भरोसा होता उन्हें कि भले ही दिखाई नहीं दे रही हो, पर भीतर ही भीतर एक गंभीर तैयारी चल जरूर रही थी कुंवरपुर के माथे पर लगे काले, गंदे धब्बे को मिटा देने के लिए।

"ई बात तो मानना ही पड़ेगा कि ई जवान शुरूए से लड़ने को उतारू था। गांवे धोखा दे दिया।" कलक्टर सिंह कहते हैं।

"मन में घाव तो, भइया, इस बात का न है कि तबो सुगवा का मन पिंजरवे में बसा हुआ है।" कन्हैया सिंह के चेहरे ने 'अजब तेरी कुदरत अजब तेरा खेल' वाली मुद्रा ओढ़ ली है।

"हल्दीघाटी के लड़ाई से भी बरियार लड़ाई लग गया है, नहीं बबुआ?" जंगी सिंह ने पूछा।

"इसको आप हल्दीघाटी की लड़ाई से मत मिलाइए।" लल्लन सिंह ने हस्तक्षेप किया, "इतिहास में इसकी कोई मिसाल नहीं है। यह लड़ाई घर-घर में लड़ी जानी है। ऐसा कोई नहीं है जो इसमें शामिल नहीं है। या तो काट रहा है या कट रहा है। बोलिए, गलत कह रहे हैं?"

"गांव अब होस में आ गया है, बचवा। एक-दू आदमी हैं, जो कानून कर रहे हैं तो उनके कानून करने में कुछ नहीं रखा है।" जंगी सिंह हौसला-अफजाई करते हैं कन्हैया सिंह की।

"बात यही है, भाई, कि श्रीभगवान भाई को चंदा देने का मन नहीं करता किसी का भी। उनके कहने का भरोसा नहीं होता। जिम्मेदारी तुम ले लो, फिर देखो कि कौन ना करता है।" हाकिम सिंह का सुझाव।

"इसी चूतीयापंथी पर न मन कउवा जाता है।" कन्हैया सिंह की मुखमुद्रा कसैली हो गई है, "साला नान्ह सब सैंकड़ों बिगहा जमीन दखलिया लिया तो बकार नहीं निकला मुंह से और स्वाभिमान की रक्षा के लिए दू पइसा निकालने में चरचरा रहा है।"

कुंवरपुर के नौजवान राजपूत इस कदर उत्तेजित हो गए हैं कन्हैया सिंह की बौखलाहट देखकर कि उनमें से कुछ ने गालियां देना शुरू कर दिया है छबीला सिंह, दिनेश सिंह और रंगू सिंह को।

कन्हैया सिंह मना नहीं करते उन्हें अपने से बड़ों को गालियां देने से। दूसरों की हिम्मत नहीं होती उन्हें मना करने की। दरअसल दूसरे सहमत भी हैं कन्हैया सिंह से। संविधान, सरकार, पुलिस, प्रशासन, जिन्हें चलाने के लिए न जाने कितने ही तरह के टैक्स देते रहते हैं लोग, उनसे जब कुछ हो ही नहीं रहा तो जो कह रहा है कि सुरक्षा प्रदान करेंगे, मान-मर्यादा की रक्षा करेंगे, थोड़ा-सा चंदा उसे भी दे देने में क्या हर्ज है!

"तो के-के नहीं दे रहा है?" लल्लन सिंह ने पूछा।

"लल्लन सिंह जेतना देंगे, उससे एक बोरी बेसी धान हमारा लिख लिया जाए।" गौरीशंकर सिंह ने भीष्म-प्रतिज्ञा के-से अंदाज में कहा और गांव के उन लोगों की मइया की यह-वह करने लगा, जो उसके परिवार को बदनाम करने में लगे हुए थे।

"हई रंगूआ का जमलका तो एकदम बेकहल हो गया है, ए भाई!" जंगी सिंह ने लाड़-भरे अंदाज में डांटा उसे।

"देवता बाबा क्या दे रहे हैं?" कन्हैया सिंह की नजर खेतों से घर की ओर लौटते देवता पांड़े पर पड़ गई है।

"आपको जो चाहिए, नहीं मिलने वाला!" कलक्टर सिंह का महेंदरवा बुदबुदाया। आजकल वह करुणा के सपने देखते हुए सो-जाग रहा था।

"कोठिला खलिहा दीजिए, बाबा!" देवता पांड़े को सुनाकर कहा उसने, "उदय बाबा को काटने वाला यही सब है।"

"उदय पांड़े तुम्हारे नहीं थे? वो तो, रामजी की दया से, पूरे गांव का धन थे; लेकिन होनी को क्या कहा जाए!" देवता पांड़े गिलगिलाए; जैसे कोई भी कमजोर आदमी किसी ताकतवर आदमी के गंदे मजाक पर गिलगिलाता है।

"अच्छा, जो हो गया, छोड़िए न उसको।" कन्हैया सिंह ने किसी डॉन की तरह चेहरे को अबूझ बनाते हुए कहा, "दे कितना रहे हैं?"

"आयोजन हो रहा है कोई?"

"उदय पांड़े के मर्डर का बदला नहीं लेना है?" श्रीकमल सिंह ने बोल छोड़ा।

"जो गांव कहेगा, मानना ही होगा।" देवता पांड़े ने कहा।

"खंखार के नहीं बोल रहे हैं, देवता बाबा। मन अभी तक दोचिता बना हुआ है।"

एक जोरदार ठहाका लगा कन्हैया सिंह की इस बात पर।

भयंकर पशोपेश में पड़ गए हैं देवता पांड़े।

"हई कन्हइया सिंहवा कौन भाषा बोल रहा है जी?" सोचा मन का दुःख बांटा जाए किसी से।

"सकल संसार एके भासा बोल रहा है, ए बाबा!" दूधनाथ सिंह बोले, "सकल संसार एके भासा बोल रहा है..."

"लगता है कि जबरदस्ती करने लगेगा बात नहीं मानने पर?"

"तो ठीके लगता है। करेगा ही करेगा।"

"सरकार का काम सरकार को करने देना चाहिए तो..."

"लात मारिए सरकार को।" दूधनाथ सिंह भड़क गए, "सरकार ही ठीक से राजपाट चलाती तो ई हाल होता?...सबका सब डाकू है सरवा..."

"ईहो बात आपकी जायजे है।" मुंह उतर गया है देवता पांड़े का।

पल्टू सिंह ने दूर से ही सुन लिया था इस बतकही का आखिरी हिस्सा और खिंचे चले आए थे। दूधनाथ सिंह चुप हो गए तो देवता पांड़े को समझाने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया—"देखिए बाबा, सरकार जिसके भोट से जीती है, उसका फिकिर करेगी कि हमारा और आपका?"

"लोकतंत्र में हर वोट का भैलू है।"

"झांट है।" दूधनाथ सिंह बोले।

"ई बभना बाहर से सोझिया लगता है, लेकिन असल में है नहीं।" देवता पांड़े चले गए मुंह लटकाए हुए तो पल्टू सिंह ने कहा दूधनाथ सिंह से।

पल्टू सिंह को दरअसल उम्मीद बंधी है कि अपने गलत फैसलों के कारण 'न घर का न घाट का' रह गए कन्हैया सिंह का यह नया पैंतरा शायद कामयाब हो जाए उन्हें कुछ काम का आदमी बना पाने में।

"छबीला सिंहवा इंकार कर दिया है बैठकी में आने से।" दूधनाथ सिंह को बताया उन्होंने, "पता नहीं, क्या सोच रहा है?"

"सोच क्या रहा है! सोच रहा है कि सांपनाथ और नागनाथ में किसको चुना जाए।" बुरी तरह झुलसे हुए थे दूधनाथ सिंह। गांव जरा भी अच्छा नहीं लग रहा था उन्हें। अखिलेश सिंह गुट के समर्थक लड़के उन सभी लोगों पर भद्दे-भद्दे बोल छोड़ते चल रहे थे, जिनके अच्छे संबंध थे दयाशंकर के साथ। धनजी पांड़े पर गोबर भी फेंक दिया था किसी ने। विजय की मोटरसाइकिल गड्ढे में धकेल दी थी और चिढ़ा रहे थे उसे कि धनजीबो की तरह उसकी औरत को भी कब्जिया लेगा दयासंकरा। दूधनाथ सिंह को अच्छी नहीं लग रही द्वेषांधता की यह आंधी। पर मना भी किया जाए तो किसे! दूसरी पार्टी में ही कौन-से दूध के धोए भरे हुए थे?

जाड़े के दिनों में तरह-तरह के पक्षी चले आते थे हरिद्वार पांड़े के पोखरे में। कुछ तो बरस-भर के बाद दिखते। गांव को इंतजार रहता उनके आने का। उनमें से कोई नहीं आता किसी साल तो उदास हो जाते दूधनाथ सिंह। उनके जाने का दिन आ जाने तक टकटकी लगाए रहते कि वह भी आ जाए शायद। उन्हीं पक्षियों को मारकर खाने लगे थे रेज टोलोंवाले। कुछ खास मशक्कत भी नहीं करनी थी उन दुर्लभ रंगवाले नन्ही-सी जानों को दबोच लेने के लिए। वे खुद ही चले आते थे अपने नन्हे पैरों पर डगमग करते हुए। हत्यारे कुंवरपुर से परिचय ही कहां था उनका! गर्दन दबोचे जाने तक यही पुलक भरी रहती होगी भीतर कि कोई दुलार करना चाहता था।

सुना तो रोने लगे थे दूधनाथ सिंह। टीन पीट-पीटकर भगाने की कोशिश में लग गए थे उन्हें; पर ऐसे अभागे थे वे कि ध्यान ही नहीं दें उनके टीन पीटने पर।

दूधनाथ सिंह जानते हैं, विश्वास के खत्म होते-होते भी बहुत वक्त लगता है।

आमोद सिंह आए हैं हांफते हुए—"बहुत टेंशन हो गया है!"

राइफल लेने आए थे।

"का हुआ?" दूधनाथ सिंह घबराए।

"छबीला सिंहवा रंगबाजी बतिया रहा है।" बोले और राइफल लेकर दौड़ पड़े।

छबीला सिंह दरअसल आए ही नहीं थे मीटिंग में और इसी बात को लेकर गर्मा-गर्मी हो रही थी। नवयुवक आवश्यकता से अधिक उत्तेजित थे।

"देखिए, छबीला सिंह इसलिए नहीं आए, क्योंकि छबीला सिंह कह चुके हैं

अपनी बात।" दिनेश सिंह खड़े हुए हैं छबीला सिंह का पक्ष प्रस्तुत करने, "हम लोगों को डर भस्मासुर से है। आप लोगों को भी मालूम है, आपका पैसा आपकी सुरक्षा में लगेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। बल्कि वैसे कामों में ही लगेगा, जिनसे फायदा हो कुछ लोगों को। हमको डर है, गिरोहों की जोर-आजमाइश में कहीं पूरा गांव ही बर्बाद न हो जाए।"

"आप लोगों को भाई, हम चेता देना चाहेंगे इस मौके पर। आत्म-सम्मानहीन लोगों की बात मानकर एक बार धोखा खा चुके हैं हम लोग। सारा जवार कह रहा है कि भजमनपुर में घुसने की हिम्मत दयासंकरा को कुंवरपुर के राजपूतों और ब्राह्मणों ने दी। न कुंवरपुवालों ने घुटने टेके होते, न भजमनपुर कांड हुआ होता। और इस घुटने टेकने के लिए कौन जिम्मेदार है, सबको मालूम है।"

"दूसरा उपाय था क्या कोई?" दिनेश सिंह ने पूछा।

"तो अपनी मौगी को भेज दीजिए ऊ सबके पास। नाच देखाएगी तो और खुश होगा।" श्रीकमल सिंह चिंघाड़े।

"ए भाई, ई जबान में बोलेगा कोई तो ठीक नहीं होगा।" दिनेश सिंह को सकते में आ गया देख सत्यनारायण सिंह ने कहा।

"तो बताएं न साले मान सिंह लोग कि क्या उपाय किया जाए? अखिलेश सिंह भस्मासुर है तो यही आएं आगे। हम अपना सारा खेत इन्हीं के नाम कर देंगे।" श्रीभगवान सिंह ने कहा।

"देखो, श्रीभगवान भाई! इतना दिन जब गाली-गलौज नहीं किए तो आज भी नहीं करेंगे; लेकिन इतना जरूर कहेंगे कि इस गांव के जितने भी दुश्मन हुए हैं या होंगे, सब तुम्हारे कारण।"

"कोढ़ फूटेगा, ए मास्साब! कोढ़ फूटेगा।" श्रीभगवान सिंह गरजे, "श्रीभगवान सिंह नहीं होते तो साला लालटेन युग में चला जाता कुंवरपुर। दालान में पसरकर कथ करने और फील्ड में काम करने में बहुत फर्क होता है।"

"आज हम लोग यही बहस करने के लिए बैठे हैं यहां?" कन्हैया सिंह ने बैठक में मौजूद लोगों से सवाल किया।

"ए मास्साब, आप पार पाइएगा ई साला नेटूआ सबसे?" धड़धड़ाते हुए बैठक में दाखिल हुए थे रंगू सिंह और दिनेश सिंह का हाथ पकड़कर खींचने लगे थे उन्हें—"जाओ, थूक समझकर फेंक दिया...बटोर लो जितना चाहिए...जाओ, जाकर ढरकाओ दारू अखिलेश सिंह के साथ...बाकी बुद्धि मत सिखाओ...लंड़बक आदमी से बुद्धि नहीं सीखना है हमको..."

"अच्छा तो ई भी सुन लीजिए कि हमारा बाप नहीं है ई आदमी आज से।" गौरीशंकर सिंह ने घोषणा की सभा में।

गौरीशंकर सिंह की इस घोषणा के बाद जरूरी नहीं लगा किसी को कि और खींचा जाए चर्चा को। वैसे भी लगभग आम सहमति का ही माहौल था।

25

गुनी की दो महिला अधिकारियों में से एक को, जो सी.डी.पी.ओ. थीं, 'पनतुआ' और दूसरी को, जो डॉक्टर थीं गुनी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में, 'मलाई चॉप' नामों से पुकारा जाता था अवधेश चौधरी की मंडली में; क्योंकि एक सांवली थी और दूसरी गोरी। इन महिला अधिकारियों को भी राजनेता उसी प्रकार देश और समाज की सारी समस्याओं का कारण नजर आते थे, जिस प्रकार देश के अन्य पढ़े-लिखों को। वे भी मानती थीं कि घुन की तरह देश को खा रहे थे नेता। पर उनकी समस्या यह थी कि गुनी में जिन दूसरे लोगों को भी वे पनतुआ और मलाई चॉप लगती थीं वे, उन्हीं में से कोई न कोई एक दरखास्त भेज देता ऊपर कि उनका आना कभी-कभार ही होता था गुनी में और बाध्य होकर उन्हें रामप्रवेश चौधरी की शरण में जाना पड़ता। और रामप्रवेश चौधरी तक पहुंचने के पहले अवधेश चौधरी से मिलना पड़ता, जिनके नाम के साथ पता नहीं कब युवा-हृदय-सम्राट् खुद ब खुद जुड़ गया था।

युवा-हृदय-सम्राट् के हृदय का हाल यह था कि पनतुआजी और मलाई चॉपजी के समझाने के पहले ही समझा हुआ होता कि बेचारी महिलाएं भला रोज-रोज आ भी कैसे सकती थीं गुनी। उन दोनों ने छेड़ा ही होता अपनी पहली समस्या का जिक्र कि दूसरी खुद अवधेश चौधरी बता देते। मसलन वे कहतीं—बच्चे छोटे हैं, तो अवधेश चौधरी कहने लगते कि आजकल के माहौल में औरतों का अकेले रोज-रोज सफर करना भी सुरक्षित नहीं है। वे कहतीं—काम करने के लिए सुविधाएं भी नहीं हैं, तो अवधेश चौधरी कहने लगते, सुविधाएं हों भी तो जैसी गंदगी मची हुई है गांव-जवार की पॉलटिक्स में, कोई कुछ नहीं कर सकता।

महिला अधिकारी तो ठगी-सी रह जातीं ऐसा युवा नेता देखकर, लेकिन अवधेश चौधरी के चमचे कुढ़ने लगते—"ई कोई बात नहीं हुआ कि ड्यूटिओ नहीं करेंगे और निमनकी भी बने रहेंगे।"

"कौन कर रहा है ड्यूटी कि इसी बेचारी सब पर चढ़ जाएं?"

"ओऽऽऽ ई बात है! हम लोग समझे कि..." ठहाके लगाती मंडली इस कल्पना में डूब जाती कि अधिकारीद्वय दोनों हाथों से नारियल के पेड़ के तने को थामे हुए झूल रही हैं 'ओ बोल सजना, बोल जानी' वाले स्टाइल में और अवधेश चौधरी की लुंगी फड़फड़ा रही है समुंदर की तरफ से आती हवा में।

अवधेश चौधरी को अच्छा लगता अपनी मंडली का ऐसी कल्पनाओं में डूब जाना। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अपनी जांघें खुजाने लगते महिला अधिकारियों से बात करते समय या कुर्ते के नीचे हाथ घुसेड़कर पेट सहलाने लगते। दिखाना यह होता कि 'सब चलता है' वाला मामला था और महिला अधिकारियों को यह दिखाई नहीं देता, क्योंकि तन-मन-धन सब उस दरखास्त को निष्प्रभावित करने में लगा होता जो विभाग के किसी भुक्खड़ के हाथों में पैसा बनाने के अमोघ अस्त्र के रूप में पड़ी होती। ऐसा बिल्कुल नहीं था कि वे दरकिनार करके चल रही थीं अपने विभाग को। विभाग को

भी खिला रही थीं; पर डर लगा रहता कि किसी ईमानदारी का रस छके हुए के हाथ में न पड़ जाए कोई दरखास्त। सारी आशंकाओं को निर्मूल करने के लिए रामबाण यह था कि रामप्रवेश चौधरी कड़ककर बता दें विभागीय मंत्रियों को कि उनके विरोधियों की चाल थी इन महिला अधिकारियों के विरुद्ध इस तरह के दरखास्त भिजवाना।

रामप्रवेश चौधरी सुन तो लेते थे उनकी धैर्यपूर्वक, लेकिन विश्वासदायक ढंग से कभी नहीं कहते कि बोल देंगे कड़ककर। अधिकारीद्वय और घबरा जातीं।

"सर तो लगता है, गुस्सा ही गए।" अवधेश चौधरी को बतातीं—'आप ही कुछ कर सकते हैं' की दीन याचना-भरी-सी आवाज में।

"विधायक को तो बहुत कुछ न देखना पड़ता है! लेकिन बात आपकी सही है। विरोधियों की चाल है यह। नहीं तो, यहीं रामबचन बाबू हैं, भेटनरी डाक्टर, उनके खिलाफ दरखास्त क्यों नहीं पड़ता?" अवधेश चौधरी कहते और मारे खुशी के वे होमवर्क कराने बैठ जातीं उनके बेटे का; उनकी बेटी की चोटी गुह देतीं; उनकी पत्नी के बनाए अंचार की तारीफ में जुट जातीं; उन्हें सलाह देने में लग जातीं कि कमरे को किस रंग से पेंट कराना ठीक रहेगा, पर्दे किस रंग के हों, आजकल कौन-सी साड़ी का फैशन चल रहा था...

अवधेश चौधरी भी वहीं बैठ जाते पत्नी के पास और घरेलू समस्याओं की चर्चा छिड़ जाती—बच्चों को बोर्डिंग स्कूल में भेजना ठीक रहेगा कि नहीं; राजधानी में फ्लैट खरीदना ठीक रहेगा कि जमीन खरीदकर घर बनवाना...विशेषज्ञों की तरह उनकी हर उलझन का समाधान प्रस्तुत करती जातीं दोनों।

एक दिन डॉ. आभा अग्रवाल से हो रही थी इसी तरह की बातचीत कि कुछ अधिक ही आत्मीय हो गए अवधेश चौधरी। कहा, "देखिए न, तीन गो मूर्तियां हो गईं; कह रहे हैं कि बंद किया जाए अब तो तैयार ही नहीं हो रही हैं महारानीजी।"

"भाक्!" लजा गईं अवधेश चौधरीबो।

"जाने दीजिए, सामर्थ्य है तो क्या हर्ज है।" डॉ. अग्रवाल बोलीं।

"ए भाई, आप लोग तो हमारा संसद में जाना भी ब्लॉक करवाइएगा। सुने हैं, कानून बन रहा है कि..." अवधेश चौधरी ठठाकर हँसे।

"छोड़िए, नहीं मानतीं देवीजी तो आप हमारा ही कर दीजिए।" डॉक्टर की आंखों में झांकते हुए कहा अवधेश चौधरी ने तो डॉ. अग्रवाल ने अपने डॉक्टर पति को—जो खुद भी फरार डॉक्टरों के समूह का एक वरिष्ठ सदस्य था—सूचित किया कि धोखा हो सकता था अवधेश चौधरी से ज्यादा सटने में। सलाह दी कि मंत्री को ही पटाया जाए। चाहे जिसके पास जाइए, आंखों में तो झांकेगा ही कम से कम। तो अच्छा है न कि कोई बूढ़ा ही झांके!

डॉ. अग्रवाल के साथ यह सुविधा थी कि पानी खतरे के निशान से ऊपर आने लगे तो भाग सकती थीं बिना छुट्टी-फुट्टी लिए हुए और अपने नर्सिंग होम में बैठ सकती थीं। पर श्रीमती सुनीता वर्मा, सी.डी.पी.ओ. को यह सुविधा नहीं थी। उनके पति श्री अमृत कुमार वर्मा जिला योजना पदाधिकारी के पद पर पदस्थापित थे और उनकी समस्या यह थी कि कुछ्छो काम नहीं था। समाहरणालय के भाल पर 'मुझे काम दो'

की करुण याचना से पगे इश्तेहार की तरह चिपके हुए थे। कोई-कोई डी.एम. तरस खाकर किसी दूसरे कार्यालय का अतिरिक्त प्रभार दे देता तो दो-चार पैसा बना लेने की सूरत बन जाती; दूसरा छीन लेता और फिर 'चुहिया की चुहिया' वाली स्थिति पैदा हो जाती। श्री वर्मा को हमेशा एक खाली पड़े दूसरे कार्यालय के अतिरिक्त प्रभार की तलाश होती और यह जानकर कि श्रीमती वर्मा काफी करीब हो गई थीं गुनी के विधायक के, यह उम्मीद बंधी थी कि जिला कोषागार का अतिरिक्त प्रभार मिल जाएगा विधायकजी के कहने पर। और मिल भी गया था जिला कोषागार का अतिरिक्त प्रभार। श्रीमती वर्मा को उस प्रभार की भी चिंता करनी थी।

अवधेश चौधरी को भी विश्वास हो चला था कि 'मलाई चॉप' तो निकल गया-सा लग रहा था हाथ से, पर 'पनतुआ' आ गया था प्लेट में। अब और भी फबने वाली थी यह युवा-हृदय-सम्राट् की पदवी।

प्लेट में आया वही 'पनतुआ' एक दिन चेहरे पर डर का रेगिस्तान लिए हुए हाजिर हो गया और सुबकने लगा उनके 'क्या हुआ?' के जवाब में। दमयंती के दरबार में हाजिर होने का आदेश मिला था उसे। संदेशवाहक बता गया था कि हाजिर होने के पहले ही कुंवरपुर वाले आंगनवाड़ी केंद्र की सेविका और सहायिका की छुट्टी हो जानी चाहिए। जो बात पनतुआजी पचा गई थीं वह यह कि गुनी में अपने पदस्थापन के एक वर्ष के दौरान प्रत्येक सेविका और सहायिका के मासिक पारिश्रमिक से एक-एक सौ रुपया काटकर जो राशि वे अपने बैंक अकाउंट में जमा करती गई थीं, उसे भी समर्पित कर देने को कहा गया था।

"तो इसमें डरने की क्या बात है?" अवधेश चौधरी ने साहस बढ़ाने के लिए हाथ बढ़ाया और सुबकती हुई पीठ का पसीना पोछ दिया। मन ने कहा, अब इस पनतुआ राम का गुजारा नहीं होना गुनी में, सो हाथ साफ कर लेना ही ठीक रहेगा। पर रोती हुई औरत के थन भी कैसे पकड़ लेते अचानक!

"आप ही लोग न बताइएगा, क्या करना होगा...हम तो बहुत नर्वस हैं।" सुबकना और तेज हो गया था।

"आप पहले लोर पोछिए तो।" दोनों घुटनों पर जमी कुहनियों के बीच से उनका रुमालवाला हाथ सुबकते हुए चेहरे की ओर बढ़ा तो रास्ते में दोनों उठानों से टकरा गया।

रोना बंद कर सीधा बैठ गईं श्रीमती वर्मा। दुपट्टे से पोंछ लिए आंसू।

"आप रो रही थीं तो बहुत अच्छा लग रही थीं।" अवधेश चौधरी उन उठानों की दलक की याद में खो गए थे—"मां कसम।"

"मजाक मत कीजिए; हमको बहुत डर लग रहा है।" श्रीमती वर्मा बोलीं।

"आपको तो हमसे भी डर लग रहा है।" अवधेश चौधरी बोले।

"लगेगा नहीं?" श्रीमती वर्मा की समझ में नहीं आया, क्या बोलें।

"ई तो ठीक बात नहीं न है।" अवधेश चौधरी करीब सरक आए।

"सही में हमको बहुत डर लग रहा है।"

अवधेश चौधरी ने असहाय-सी लगती इस आवाज में सुना, 'आपसे नहीं,' और दोनों पंखुरों में हाथ डालकर खड़ा कर लिया अपने सामने। अनमने ढंग से ही, पर यह मान चुकी एक औरत खड़ी थी उनके सामने कि यह तो होना ही था।

उठानों से ढलान तक की यात्रा आनन-फानन पूरी कर अवधेश चौधरी के मन में आया कि कहें वर्माइन को कि जैसा कहती है दमयंतिया, छुट्टी कीजिए कुंवरपुर की सेविका और सहायिका की और अनुपालन प्रतिवेदन भिजवा दीजिए, पर एक दिक्कत थी ऐसा कहने में—नौलाख महतो बुरा मान जाते।

"तो क्या हुआ?" रामप्रवेश चौधरी की त्योरियां चढ़ गईं हैं, "अगर नहीं करती ड्यूटी तो चलता कीजिए। और यह सब तो खुद ही करना चाहिए आपको। बताना क्यों पड़ रहा है?"

नौलाख महतो से वे उसी दिन से चिढ़े हुए थे, जिस दिन बभनटोल में उनके लतमर्दन की सूचना मिली थी। उसी दिन से नौलाख महतो ने भी लगभग मुंह मोड़ लिया था राजनीति से। पूरा ध्यान अपने काम-धंधों पर लगा दिया था। दो लक्जरी बसें चल रही थीं; चार ट्रेकर दौड़ रहे थे; बिक्रमगंज में ट्रैक्टर की एजेंसी ले ली थी; छोटे बेटे ने जूते-चप्पल का एक शोरूम खोल दिया था। यही सब देखने में रम गए थे। सोचा था, चंदे की मांग आएगी राजपूताने से तो दे देंगे, पर अखिलेश सिंह के अनुयायियों ने रुख ही नहीं किया महतो टोल की ओर। नौलाख महतो इस पचड़े से भी बच गए।

"नौलाख भाई को बेइज्जत करवाना ठीक नहीं होगा।" अवधेश चौधरी ने कहा।

"इज्जत बनाने वाला काम ही कहां कर रहे हैं आपके नौलाख भाई!" रामप्रवेश चौधरी ने कहा तो थोड़ी लाज लगी श्रीमती वर्मा को। ध्यान जांघों की चिपचिपाहट की ओर चला गया।

"इज्जत का खयाल होता तो एक आंगनवाड़ी केंद्र नहीं चलवा सकते थे ठीक से?"

"सब जगह ऐसे ही चल रहा है।" अवधेश चौधरी बोले।

"तो चलिए, यही मौका है ठीक करने का। सारी सेविकाओं-सहायिकाओं को हटा दीजिए!"

रामप्रवेश चौधरी ने यह नई शैली अपनाई है सामने रखी गई समस्या का आदर्शवादी समाधान सुझाने की; जिसका एक मकसद तो समस्याग्रस्त जीव को कोने में धकेलकर और दीन-हीन बनाना होता ही था, यह भी होता था कि जो आए हैं समस्या लेकर, वही कोई व्यवहारिक समाधान भी ढूंढ़ लें उसका।

"डरने से काम नहीं होगा।" अंततः अवधेश चौधरी ने ही समाधान बताया, "फिलहाल तो सी.डी.पी.ओ. साहब कुछ दिनों के लिए छुट्टी पर चली जाएं। इसी बीच देख लिया जाएगा कि असल में पौलटिक्स क्या है इस डिमांड के पीछे।"

"छुट्टी पर क्या जाना है, जाती ही रहती हैं।" व्यंग्य का तीर छोड़ा रामप्रवेश चौधरी ने, पर 'जब गिला कीजिए, मुस्करा दीजिए' वाले अंदाज में मुस्करा दिए तीर चलाकर।

श्रीमती वर्मा का मन उदास था एक पराये मर्द के नीचे लेट गए होने के कारण,

पर वे भी मुस्करा दीं।

"दयासंकरा भी, भइया, बहुत डैंजरस होता जा रहा है!" अवधेश चौधरी बोले, "हमको तो इसमें भी उसी का हाथ लग रहा है।"

"चलिए, ये सब तो बाद की बात है। सावधान रहना है। ये तो चली ही जाएं छुट्टी पर।" कभी-कभी रामप्रवेश चौधरी झुंझला भी पड़ते अवधेश चौधरी के अतिशय अनुराग-प्रदर्शन पर।

"अब निकल लीजिए आप। हम खबर लेते हैं दमयंती और दयाशंकर का।" अवधेश चौधरी ने अपनत्व का रस छलकाते हुए कहा।

अवधेश चौधरी जब कह रहे थे ऐसा, दयाशंकर को एस.पी. की कार राज्य के कल्याण मंत्री देवेंद्र राय की कोठी की ओर लिए जा रही थी। एक योजना बनाई थी वी. सुधाकर ने, जिसके अनुसार दयाशंकर को धनंजयजी और दमयंती के खिलाफ खड़ा किया जाना था। एस.पी. ने कहा था दयाशंकर से कि जैसे हालात पैदा हो गए थे इलाके में, अपने को बचाने और बढ़ाने का एकमात्र यही रास्ता बच गया था उनके लिए। वरना तीनों दुश्मनों—धनंजयजी, अखिलेश सिंह और पुलिस, में से कोई न कोई उन्हें उड़ा ही देने वाला था देर-सबेर। दयाशंकर तैयार हो गए थे इस योजना का हिस्सा बनने को।

देवेंद्र राय को मालूम था इस योजना के बारे में।

"दयाशंकर, सर, पहले भी हमारी मदद करते रहे हैं।" एस.पी. ने बात शुरू की।

"हमारा बस एक ही गोल है—पीस। शांति रहे इलाके में। अगर ये मदद कर सकते हैं इस गोल को अचीव करने में तो हमको कोई दिक्कत नहीं है।" रायजी बोले।

"सच, बाबूसाहेब, यह है कि हम हमेशा शांति से चलना चाहे। कुंवरपुर में जो हल्ला किया गया कब्जा किए जाने का, एकदम आधारहीन है। मुसमात ने खुशी से दी थी जमीन और यह बात बतातीं भी सबको, तब तक मार दिया गया उनको। हम कुछ कर पाते, तब तक बाहरी लोग घुस गए। बातचीत ही कर रहे थे गांववालों से कि टेढ़का पुलवाला कांड हो गया...अब देखिए, भजमनपुर का एकदम शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन था तो पुलिस पर अटैक हो गया..."

"पुलिस को बता दिए हैं इस प्लान के बारे में?" दयाशंकर को बोलता हुआ छोड़कर ही रायजी ने एस.पी. से पूछा।

"वो हम सम्हाल लेंगे, सर। इनका कुछ कहना था, उसको सुन लिया जाए। कलक्टर साहब से कुछ मदद चाहिए।"

"क्या मदद चाहिए?" दयाशंकर से पूछा उन्होंने।

"हमको कुछ विकास और कल्याण वाली योजनाओं का लाभ ले जाने दिया जाए उधर। इससे हमको तो मदद मिलेगी ही, सरकार की भी विश्वसनीयता बढ़ेगी।"

"ले न जाइए, भाई! जितना चाहे, ले जाइए। अभी बोल देते हैं। लेकिन ले जा रहे हैं तो कुछ नजर भी आना चाहिए।" रायजी सभा-भंग की मुद्रा में उठ खड़े हुए सोफे से।

"सीक्रेट ही रखना होगा इसको।" एस.पी. को हिदायत दी।

एस.पी. को भी जैसे याद आया कुछ—"रामप्रवेश बाबू से कर ली जाएगी बात।"

"आप इनको खुद ही क्यों नहीं ले जाते कलक्टर के पास? हम बोल देते हैं अभी।" रायजी ने कहा और देखते रहे उन्हें जाते हुए।

"इन लोगों से दूर ही रखा जाए हमको। हमको केवल आपके ऊपर भरोसा है।" दयाशंकर ने एस.पी. से कहा।

"बट आप भी नेता हो गए पूरा का पूरा। 'सर' के बदले 'बाबूसाहब' बोले तो अच्छा लगा।" हँसी आ गई है एस.पी. को, "हमने देखा कि उसका मूड उखड़ गया; लेकिन अच्छा था।"

"रामप्रवेश चौधरी को मत बताया जाए प्लान के बारे में। काम बिगाड़ देगा।"

"डोंट वरी। साले देवेंद्र राय को ही भरोसा नहीं है उसके ऊपर। डरता है कि ये साला बैकवर्ड कैबिनेट में आ गया तो उसका पोजीशन कमजोर हो जाएगा।"

"रायजी खानदानी आदमी हैं।"

"जो भी हो, यार, बेसिकली दे आर ब्लडी डॉग्स। ही इज ए बेटर डॉग ऐंड दैट चौधरी इज ए बिटर डॉग।" एस.पी. बहुत देर तक हँसते रहे कहकर। यह बेशक दारू का ही असर था, जो देवेंद्र राय के यहां जाने के पहले पी गई थी।

दयाशंकर की निगाहें स्टीयरिंग पर टिकी हुई थीं।

"डोंट वरी। आई विल नॉट डाई लाइक ए डॉग।" एस.पी. ने हँसते हुए ही कहा।

वी. सुधाकर को दरअसल कोई शिकायत नहीं थी व्यवस्था से। वे इसी व्यवस्था में रमे हुए जीव थे। ईमानदारी के बारे में सोचना उनकी आदत नहीं थी। 'कमाओ, पर अपना काम करो'—अगर यह कोई सिद्धांत हो सकता है तो—सिद्धांत था उनका। खुद भी जमकर घूस लेते और ऊपरवालों को भी पहुंचाते। सरकार यानी सत्तारूढ़ दल की प्राथमिकताएं उनकी भी प्राथमिकताएं थीं। उन्हें एक सक्षम पुलिस पदाधिकारी समझा जाता था।

कलक्टर एक दूसरी ही परेशानी लिए बैठे थे।

"देखिए न, गुनी के विधायक का फोन आया था। वहां की सी.डी.पी.ओ. को धमकी मिली है।" एस.पी. को देखते ही उनकी ओर उछाल दी अपनी परेशानी।

"इन लोगों को तो आप बोल दीजिए कि आपस में सॉर्ट आउट कर लें। थोड़ा तो शेयर करना होगा, कमाएंगे तो। हम लोग भी करते हैं।"

"आप भी..." कलक्टर हिनहिनाने लगे दयाशंकर की ओर देखते हुए।

"यही मि. दयाशंकर हैं। कल्याण मंत्री बोले होंगे आपसे!" सोफे में धंस गए एस.पी.। बंगले के बड़े-से ड्राइंग-कम-डाइनिंग हॉल को निहारने लगे। आई.ए.एस. नहीं मिलने का दुःख उन्हें केवल कलक्टरों के बंगले देखकर ही होता है। साले पुलिस के बंगले ही रद्दी थे, वरना तो मजे ही मजे थे।

"बोले हैं कि सीक्रेट रखना है, पर सीक्रेट कैसे रखा जाए? बी.डी.ओ. वगैरह को तो बताना ही होगा।" कलक्टर ने अगली परेशानी सामने रखी।

"तो बताया जाए कि सरकार थ्रू डेवलपमेंट टेररिज्म के प्रोबलेम को कंट्रोल करना चाहती है।"

"ठीक ही है, पर सी.डी.पी.ओ. वाले केस को देखिएगा। वह भी इन्हीं के गांव की है।"

"कौन है सी.डी.पी.ओ.?" एस.पी. ने दयाशंकर से पूछा फुसफुसाते हुए।

"अवधेश चौधरी की खासमखास है।" दयाशंकर ने भी फुसफुसाते हुए ही बताया।

"देती है तो लेती भी होगी?" नशा पूरी तरह से सवार हो चुका था एस.पी. के ऊपर। जबान भी लड़खड़ा रही थी।

"लेता कौन नहीं है!" दयाशंकर फुसफुसाए।

"इन्हीं लोगों के मजे हैं, डी.एम. साहब।" कलक्टर से बोले ठहाका लगाकर, "इवेन दयाशंकर हैज ए स्टेपनी...क्या नाम बोलता है?"

"सब अफवाह है, सर!" दयाशंकर शरमाए।

"आपके गांववाला केंद्र बिल्कुल ही नहीं चलता?" कलक्टर ने बातचीत का विषय बदलने के उद्देश्य से पूछा।

"हमारे ऊपर छोड़ दिया जाए उसको। हम ठीक कर देंगे।" दयाशंकर ने कहा, तो उनका मुंह देखने लगे कलक्टर।

एस.पी. मुंह धोने बाथरूम में चले गए थे।

दयाशंकर का आना, दयाशंकर का जाना—रेजटोलों में दूसरी कोई चर्चा ही नहीं है इस एक विषय को छोड़कर। उस शाम आए थे तो नंदलाल के घर में बैठकर कुछ बात की कुछ साथियों के साथ, जगनाथ के घर जाकर हौसला बढ़ाया रोती-कलपती जगनाथबो का और होत भिनसहरा चले गए कहीं। अगली बार आए तो नंदलाल, छांगुर, भंडारी वगैरह के साथ कब्जेवाली जमीन पर गए, घूम-घूमकर देखा कुछ, एक चक्कर लगाया नोनियाटोल और चमटोली का, कुछ दिखाया लोगों को और मोटरसाइकिल पर बैठकर उल्टी दिशा में चले गए। अंतिम बार आए थे तो अन्हरी की खंडी में बैठकर कुछ लिखने-पढ़ने में मशगूल थे।

पूरा गांव आंखें फाड़े हुए ईंट, बालू, गिट्टी, छड़, सीमेंट वगैरह से लदे ट्रैक्टरों का तांता लग गया देख रहा था। काले रंग के चमकीले पत्थर उतारे गए थे कब्जेवाली जमीन पर।

उसी शाम दयाशंकर फिर पहुंचे। पांच मिनटों के अंदर ही यह खबर सभी टोलों में दौड़ गई कि कोई महत्त्वपूर्ण घोषणा करने वाले थे। चमटोली के बरगद के पेड़ के चारों ओर जमा थे लोग। बभनटोल और राजपूताने के लड़के भी आ गए थे। हरिहर मास्टर और रामनाथ यादव भी नहीं रोक पाए खुद को। आखिर चमत्कार जैसा कुछ तो कर ही रहा था यह आदमी। कहां तो भागे-भागे फिरना चाहिए था राइफल की लूटवाले केस में तो ईंटा-बालू गिरवा रहा था; छुट्टा सांड जैसा घूम रहा था!

"साथियो, हम लोगों का सपना था कि हर गांव कुंवरपुर की राह पर आगे बढ़े

पर हम जब भी इस दिशा में कुछ आगे बढ़े, कुछ लोगों ने जान-बूझकर हिंसा, रक्तपात और विश्वासघात का ऐसा दुष्चक्र रचा कि हमारे बढ़ते कदम रुक गए...जरा सोचिए, क्या चाहते हैं ये लोग?...लाशें गिनना चाहते हैं केवल। किंतु हम उन लोगों को भी गिनना चाहते हैं, जिन्हें भूख लगी हो और घर में एक दाना भी नहीं हो खाने को। हम उन मांओं को भी गिनना चाहते हैं, जिनके कलेजे के टुकड़ों को भूख लगी हो, पर जिनकी छातियां सूखी हुई हैं...उनके कहने से मान लें हम लोग कि मात्र हत्या, अपहरण, फिरौतियों और लूटपाट के बल पर संवर जाएगा हमारा भविष्य? हमें हत्यारों और लुटेरों की एक निरुद्देश्य कौम के रूप में बदनाम करने का जो षड्यंत्र रचा जा रहा है, उसके खिलाफ सतर्क हो जाना है हमें...साथियो, हम केवल लड़ने के लिए नहीं लड़ रहे हैं, अपने और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए लड़ रहे हैं। हमारे इन्हीं विचारों के कारण हमको आपके बीच से हटाने की तमाम चालें चली गईं। हमारा एक परम आत्मीय साथी आज भी जेल में है...''

''इसी गद्दार सबका काम है...डाह के मारे जेहल दिलवाया है हमारे मरद को!''

भाषण में व्यवधान उत्पन्न हो गया था। जगनाथबो हरिहर मास्टर को धिक्कारते हुए झपटी थी उनकी ओर।

'दयाशंकर जिंदाबाद' के नारे नाम ही नहीं ले रहे थे थमने का। हरिहर मास्टर और रामनाथ यादव को घेरकर एक सुरक्षित दूरी पर खड़ा कर दिया गया।

''फिर भी...फिर भी हमारा कहना है, मिलजुलकर काम किए बिना यह यज्ञ पार नहीं लगेगा।'' दयाशंकर ने कहा और उसके बाद शुरू हुआ उद्घोषणाओं का दौर—एक से एक चौंका देने वाली उद्घोषणाएं :

''फैसला लिया गया है कि किसी भी सूरत में स्कूल बंद नहीं हो, इसलिए नोनिया टोल में पोखरे के बगलवाली सरकारी जमीन पर एक बड़ा सामुदायिक भवन बने। काम कल से शुरू हो रहा है। एक नया आंगनवाड़ी केंद्र खुलेगा। भवन आप लोग जहां खड़े हैं, वहीं बनना शुरू होगा कल से। शहीद सुरेश पांड़े की पत्नी सेविका और शहीद नकचिपटा की पत्नी बतौर सहायिका नियुक्त हुई हैं...चमटोली और कमकरटोल में आठ-आठ घर इंदिरा आवास के बन रहे हैं...चापाकल और सुलभ शौचालय के साथ। आपको बता दें—इनमें एक घर रामगिरिहीबो काकी और एक भरोसा को देने का फैसला हमने अपने स्तर से कर लिया है, बुरा नहीं मानिएगा...''

बुरा मानने का होश भला कहां था किसी को! 'दयाशंकर जिंदाबाद' के नारे फिर गूंजने लगे थे।

''एक स्वास्थ्य उपकेंद्र खोलने का प्रस्ताव अनुमोदित हो गया है...देखिए, हफ्ते-दो हफ्ते में वह काम भी शुरू ही हो जाना चाहिए...और यह तो हम बताना ही भूल गए कि नन्हकू भाई की प्रतिमा-स्थापना का काम कल सुबह से ही शुरू हो रहा है...पत्थर आपने देखे ही होंगे...''

नारे फिर लगने लगे। इस बार दयाशंकर के साथ-साथ नन्हकू सिंह के नाम के भी।

लेकिन घोषणाएं अभी पूरी नहीं हो पाई थीं...पी.एम.आर.वाई. का जो लोन

मिलते-मिलते रह गया था नंदलाल को, अब मिलने वाला था एक आटा चक्की और धान कूटने की मशीन बैठाने के लिए। चिरई को एक डीजल पंप दे रहे थे कृषि विभागवाले। अन्हरी के मदनवा को किराना दुकान के लिए मिल रहा था लोन। बिभूति पांड़े का नाम था वृद्धावस्था पेंशन मिलने वालों की सूची में।

जोर का ठहाका लगा इस उद्घोषणा पर।

"हमारा नहीं है, बबुआ?" गणपति पांड़े दूर से ही चिल्लाए।

"अब आप का कीजिएगा लेकर?" कोई बोला।

"तुम्हारी मौगी को बझाएंगे दिखाकर।" गणपति पांड़े गरम हो गए, "हमारा और टेंगर भाई का नाम जरूर होना चाहिए!"

राजपूताने के वयस्कों की तरफ से उस सभा में एकमात्र मौजूद आदमी थे टेंगर सिंह। चुक्का-मुक्का बैठे ढील हेर रहे थे एक कुतिया का। बोले, "जंगी सिंहवा भी हमारे ही जैसा बांड़-बहेंगवा है; उसका नाम भी लिख दो!"

एक नशा-सा छाया हुआ था वहां मौजूद लोगों पर। सरकार की जितनी भी योजनाएं थीं, सबकी सब टेंट खोले खड़ी थीं उनके सामने। एक योजना थी राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना, जिसमें गरीबों को दस हजार का लोन मिलता था असामयिक निधन की दशा में। विगत साल-भर के दौरान मरे पांच लोगों का नाम दे दिया गया था इस योजना के तहत, यद्यपि वे सभी जर्जर बुढ़ापे के कारण मरे थे। सुदर्शन पांड़े को दोहरी खुशी मिली थी, क्योंकि उदय पांड़ेवाला दस हजार रुपया भी मिलने वाला था उन्हें।

लाभार्थियों की सारी सूचियां पढ़ दी गईं तो दयाशंकर फिर खड़े हुए—"साथियो, ऐसा नहीं है कि यह सब देकर कोई उपकार कर रहा है हमारे ऊपर। यह हमारा ही था, पर दबाए हुए थे लोग। आज ताकत है हमारे पास एकता और संगठन की, तो छोड़ रहे हैं। वह स्वर्णिम समय आ पहुंचा है...हम खुद ही 'दाता-भाग्यविधाता' हैं अपने।"

"बहुत अच्छा बोले, दयाशंकर बाबा!" दिनेश सिंह का लड़का सारी सूचनाएं बटोर लाया है।

"अब बूझेंगे बबुआन लोग कि बुड़बक दोस्त से चाल्हांक दुश्मन अच्छा होता है।" रंगू सिंह की छाती में ठंडक पहुंच रही है।

छबीला सिंह समझ नहीं पा रहे कि भ्रष्ट सरकारी तंत्र को ताकत का खौफ दिखाकर छीनी हुई सुविधाएं हैं ये कि कुछ और हैं!

हरिहर मास्टर को जरा भी शक नहीं है कि दयाशंकर मिल गए हैं प्रशासन के साथ। भटक गए हैं सही रास्ते से। आत्म-स्फीति में लग गए हैं। धनंजयजी को खबर देनी होगी कि संगठन के लिए बेहद खतरनाक हो गया है यह आदमी।

"धनंजयजी को कुछ करने ही नहीं देती दमयंती। रास्ता छेंककर खड़ी हो जाती है।" बोले रामनाथ यादव से।

"तो हम लोगों को तो मत उलझाएं इस झमेले में।" सभा में जगनाथबो का रुख देखकर डरे हुए हैं रामनाथ यादव।

"निःस्वार्थ सेवा करने वाले ही हमेशा घाटे में रहते हैं।" हरिहर मास्टर को बहुत दुःख है इस बात का।

"ई सब का हो रहा है, चौधरीजी?" अखिलेश सिंह दनदनाते हुए घुस गए हैं रामप्रवेश चौधरी के बैठके में, "रजकवा टाली का टाली ईंटा-बालू गिरवा रहा है ऊ धीचोदा के कहने पर?"

"हम तो आपसे पूछने वाले थे। ब्लॉक तो आप और लुकुड़ी राय ही चला रहे हैं।"

"बिरीन्हीया बाण बाद में छोड़िएगा; कुछ डिजाइन हो तो बता दीजिएगा; नहीं तो ई सरऊ भी घुलट जाएंगे किसी दिन।" राइफल एक कोने में रखकर मनोरंजन रजक की ही दी हुई मोटी मसनद पर थसक गए अखिलेश सिंह, "ई काम बहुत टेटीहा वाला कर रहा है।"

"ए भाई, हम तो कुछ कहना ही छोड़ दिए हैं आजकल। आपके जातभाई देवेंदर बाबू का कहना है कि किसी दीर्घकालिक नीति के तहत हो रहा है यह सब।"

"नीती-फीती हम कुछ नहीं जानते। दयाशंकर को मारेंगे। आज मारें, चाहे कल मारें।" अखिलेश सिंह उत्तेजित हो गए, "भिंडरावाले से वीरप्पन तक सब इसी टूटही टांगवाली नीति के परिणाम थे। अमेरिका का जो गांड़ फट रहा है मियवां सबके डर से, इसी के चलते। साफ बात है कि दामाद बनाइएगा जिसको, चढ़ेगा ही आपकी बबुई पर। तब कहिएगा कि ज्यादती कर रहा है, तो माधड़चोद हैं आप।"

"ए भाई, कुछ दिनों के लिए भूल न जाइए दयाशंकर को। दमयंतिया को पकड़ने से तो कोई नहीं न रोक रहा है आपको? उसीको उड़ा दीजिए। दयाशंकर को पोसने का कारण भी उड़ जाएगा।" ऊब का भाव आ गया है रामप्रवेश चौधरी के चेहरे पर।

रामप्रवेश चौधरी दरअसल नहीं चाहते कि अखिलेश सिंह और लुकुड़ी राय के संरक्षक या समर्थक के रूप में देखा जाए उन्हें। उनकी रुचि भी समाप्त हो गई थी कुंवरपुर में। पूरा चुनाव-क्षेत्र पड़ा था रुचि लेने के लिए।

"नौलाख भाई का बायकाट किए हुए हैं आप लोग?" अवधेश चौधरी को यह उचित अवसर लगा वार करने का।

"नौलाख भाई हैं कहां? ऊ तो सुने कि कुटाई के दिन से ही गांव छोड़े हुए हैं।" अखिलेश सिंह ने जान-बूझकर कहा इस लहजे में। समझ गए थे कि उनकी चिंता को हवा में उड़ाने की कोशिश कर रहे थे चौधरी-बंधु। सोचा, चलते-चलते थोड़ा घाव देते जाएं साले को, "दमयंतिया को हम आपके लिए छोड़ दिए हैं, अवधेश भाई। हम तो दयाशंकर राम को ही घुलटाएंगे।"

"थाना में खबर कर दीजिएगा कि दू ठो गार्ड दे दे रजकवा को।" अखिलेश सिंह के जाने के बाद अवधेश चौधरी से कहा रामप्रवेश चौधरी ने, "ई साला हरामी सब चोट कर सकता है उसके ऊपर।"

"लेकिन दयासंकरा का भाव कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है।"

"देवेंदर बाबू देते रहें जवाब। कह रहे हैं, सी.एम. से पूछ लिए हैं।" कहा और

देवेंद्र राय को फोन मिलाने में लग गए चौधरीजी—'बता दें कि अपने दुलारे अखिलेश सिंह को भी काबू में रखें।'

दयाशंकर एक नई घोषणा के साथ अवतरित हुए थे—पोखरे को मछलीपालन केंद्र के रूप में विकसित किया जाना था। मत्स्यपालन विभाग के कुछ लोग भी आए थे उनके साथ स्थल-निरीक्षण करने। सरकारी लोगों को नाप-जोख करता छोड़कर जगह-जगह पर चल रहे निर्माण-कार्य को देखने निकल गए। पीछे-पीछे हुजूम चल रहा था।

'देखिएगा मिस्त्रीजी, गिलावा एकदम ठीक बनना चाहिए!'

'ईंटा ए वन लगा रहे हैं न?'

'मसाला थोड़ा कमजोर लग रहा है।'

'नींव मजबूत होना चाहिए। ध्यान दीजिएगा!'

जहां से भी गुजरते, इसी तरह के निर्देश उछालते जाते। चापाकल खुद चलाकर देखा।

''पानी दे रहा है न?'' पूछा आसपास खड़े लोगों से और जवाब का इंतजार किए बिना ही आगे बढ़ गए।

शिवजी पांड़े को छोड़कर पच्चीस-तीस घरों के बभनटोल ने मान लिया है कि दयाशंकर को नेता मान लेने में ही भलाई थी। चिरौरी में लग गया है कि कुछ सुविधाएं बभनटोल में भी आनी चाहिए।

रामज्ञान पांड़ेबो को डर लगता है खुश होने में। जैसे ही खुश होती हैं, कुछ उल्टा हो जाता है।

राजपूताना हतप्रभ है। जो उम्मीदें जागी थीं कन्हैया सिंह के जुझारू तेवर से, बुझने लगी हैं। सत्यनारायण सिंह के मार्फत यह खबर आम हो गई है कि धनंजयजी और दमयंती जैसे उग्रपंथियों के मुकाबले दयाशंकर को सरकार समाज में एक अच्छी उपस्थिति मानती है और मदद करना चाहती है उनकी।

''तो अब जो बात कह रहा है, जबून नहीं कह रहा।'' जंगी सिंह को जरूरत महसूस होने लगी है दयाशंकर संबंधी अपनी मान्यताओं में संशोधन की।

''आप ही के जैसा आदमी गर्दन कटवाता है भाई-भतीज का।'' पल्टू सिंह उखड़ गए हैं।

''टेंगर सिंह पैरवी कर आए हैं न वृद्धावस्था पेंशन के लिए, वही चुना रहा है।'' गौरीशंकर को मौका मिल गया है बोल छोड़ने का।

''एगो बात कर रहे थे तो...'' जंगी सिंह को अहसास हो रहा है कि गलत बात निकल गई थी मुंह से।

समझदार लोगों को इस बात का संतोष जरूर था कि आपस में ही झगड़ा लग गया था दमयंती और दयाशंकर के बीच। अपने बनिहारों-चरवाहों को चूड़े के साथ गुड़ खिला-खिलाकर जानने की कोशिश में लग गए थे कि कौन क्या कह रहा था और झगड़ा कितना गंभीर था।

"अरे देख लीजिएगा, फिर एक हो जाएगा दूनो और..." कलक्टर सिंह सावधान करते हैं।

टेंगर सिंह पर लाठी चला दी है कन्हैया सिंह के बड़े बेटे ने। उनके दयाशंकर की मीटिंग में जाने और वृद्धावस्था पेंशन मांगने से नाराज था। टेंगर सिंह का माथा फूट गया है। पल्टू सिंह पुकारते रह गए पट्टी बंधवा लेने के लिए, पर माथे से बहता हुआ खून लिए हुए ही निकल गए हैं गांव की गलियों में।

"अरे, हत्यार कहीं का!" दूधनाथ सिंह ने उन्हें देखा तो दहाड़े पल्टू सिंह के घर की ओर मुंह करके।

गांव को अजीब-सा लगा उनका इस तरह दहाड़ना।

26

"मुन्निया को फिर बेटा हुआ है, माई। मंधाता मिसिर बड़का भोज किए थे। खिसियाए हुए भी थे कि गणपति भइया नहीं आए। शारदा और सुशीला दीदी के यहां भी चले गए थे। सुशीला दीदी को तो जनबे करती हो, खूब बोलती हैं। बाकी, काम चकाचक है और शारदा दीदी का बेटा-बेटी सब तो पूछो मत, दूनो इंजिनियरिंग का परीक्षा द रहा है। बेटीया तो ताल ठोंककर कहती है कि टॉप करेंगे। टॉप से कम कुछ भी करेंगे तो नौकरिये नहीं करेंगे।" चापाकल के नीचे बैठे दयाशंकर साबुन भी रगड़े जा रहे हैं देह में और बोले भी जा रहे हैं।

"हम तो मंधाता मिसिर से अपने खिसियाए हुए हैं।" गणपति पांड़े को भोज छूट जाने के दुःख ने पकड़ लिया है।

"पुआ-पुड़ी के लिए कोई बेटी-दामाद से खिसियाता है भला!" चूड़ामनबो बोली "कहिए न आजे छनवा देते हैं।"

"तो कह नहीं रहे हैं?" गणपति पांड़े खाना आधा खाकर ही उठ गए, "अब पुड़िये खाएंगे।"

"अभी भी पहुंच जाइएगा तो ढेर चीज भेंटा जाएगा।" दयाशंकर हँस रहे हैं।

रामज्ञान पांड़ेबो सुन रही हैं चुपचाप। देखे भी जा रही हैं चापाकल के नीचे बैठे बेटे को। पता नहीं क्यों, प्यार उमड़ा चला आ रहा है आज। सोचकर ग्लानि-सी हो रही है कि हमेशा कुछ उल्टा-पुल्टा ही सोचती रही हैं उसके बारे में। कम से कम उन्हें तो देना ही चाहिए जी भरकर आशीर्वाद।

"देख रही है खड़ा-खड़ा, ई नहीं कि पीठीया में साबुन लगा दें।" चेतना को डांटा।

"हम तो लगाएंगे तो गोतिनी खिसिया जाएगी।" चूड़ामनबो ने बोल छोड़ा देवर पर।

रामज्ञान पांड़ेबो की त्योरियां चढ़ गईं हैं। उन्हें चूड़ामनबो की घुलने-मिलने की कोशिश अच्छी नहीं लगती। पर चूड़ामनबो है कि आ ही जाती है किसी न किसी बहाने। कभी जोरन मांगने, तो कभी गणपति पांड़े के लिए माठा पहुंचाने।

"लगता है, गणपतिबो भउजी जैसा ई भी सधुवाएगी।" चेतना कहती। पर

रामज्ञान पांड़ेबो जानती हैं कि कुछ और नहीं, यह डर है केवल गांव के तनावग्रस्त माहौल का, जो यहां ले आता है उसे।

'कौड़ी-कमच्छा के जादू से भी तगड़ा जादू है इसके पास। चूड़ामन को एक भले आदमी से कुक्कुर बना दी, विजइया का मति भ्रष्ट कर दी। कुछ भी कर सकती है यह औरत।' चेतना को समझातीं, जो कभी-कभी सरिता के साथ उसके घर जाने की जिद्द करने लगती।

"विजय से काहे नहीं एगो दवाई का दोकान खोलवा देतीं बिक्रमगंज में, घर में बैठा हुआ है?" दयाशंकर ने देह पोंछते हुए पूछा।

"नहीं ए बबुआ, सनकाह-बउराह से दोकान नहीं चलेगा।" चूड़ामनबो के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जब दयाशंकर कुछ कहते हैं विजय के बारे में। वह कांप जाती है। उसी को बचाने के लिए तो कलेजे का सारा दुःख भुलाकर आती है इस आंगन में, रामज्ञान पांड़ेबो की कड़वी बातों को हँस-हँसकर बर्दाश्त करती है।

"बहुरिया बनाकर रखने से और सोझबक हो जाएगा।" दयाशंकर ने कहा।

"जाने दो, जो अच्छा लग रहा है, कर रहा है।" रामज्ञान पांड़ेबो का भी मन नहीं करता विजय के बारे में कुछ कहने-सुनने का। नौलाख महतो की पिटाई वाले दिन से ही यह हल्ला होता रहता था कि अपहरण हो सकता था उसका। डर लगा रहता कि दयाशंकर को फंसाने के लिए कोई दूसरा भी उठवा सकता था उसे। अच्छा ही था कि घर में लुकाया हुआ था।

"हरिहर मस्टरवा का गेयर बदला हुआ है हो आजकल।" चूड़ामनबो गई तो गोसांई पांड़े आ गए, "बिक्रमगंज में भेंटाया तो गुणगान करने लगा तुम्हारा।"

"खाने के समय जरूरी है पोलटिस बतियाना!" रामज्ञान पांड़ेबो ने झिड़क दिया।

"ई बेटा अब आंचर में छुपाने लायक नहीं है, चाची।" गोसांई पांड़े की नजर पड़ गई थी ओसारे की चौखट से घुसते धनजी पांड़े पर और हँसते-हँसते लोट गए खटोले पर।

"गोसांई भइअवा बहुत हँसता है।" धनजी पांड़े ने खटोले पर जगह बनाते हुए कहा।

"ए बाचालल्ला, रेकाडे कायम हो गया है कुंवरपुर में।" धनजी पांड़े बोले, "हम तो कहते हैं कि टी.वी. वाला सबको बुलाकर फोटो-वोटो लिवआया जाना ठीक रहेगा।"

"तो कीजिए जोगाड़। टंकी ओभरलो करिए रहा है, कुछ लगाइए इस काम में।" गोसांई पांड़े ने कहा।

"अब देखो, टंकी ओभरलो करने की बात करने लगा।" धनजी पांड़े परेशान दिखने लगे।

"तो इस यज्ञ में क्या है आपका?"

'मेहरारू हइए है।' चेतना अनसाई मन ही मन। मरद आया ही हुआ था, फिर भी दो बार संदेशा भिजवा चुकी थीं दयाशंकर बबुआ के लिए।

"अपना घर नहीं है कि गांव में बउवाने चले जाएं?" रामज्ञान पांड़ेबो ने डपट दिया था।

"साहेब मिठाई लाए थे, वही खाने के लिए बुला रही थीं।" दस-बारह वर्ष का उनका आदिवासी नौकर सहम गया था।

गोसांई पांड़े ने देख लिया था कि झोले में कुछ था, जिसे धनजी पांड़े नहीं निकालना चाहते थे उनके सामने।

"छुपा रहे हैं?" पूछा।

"खाने का चीज छुपाया जाता है।" धनजी पांड़े वही मिठाई लाए थे।

'सबकी सब कौड़ी-कमच्छावाली ही जमा हो गई है बभनटोल में।' चेतना ने सोचा।

"एस्टीमेट-ओस्टीमेट बनवाने में खरचा नहीं करना है, भाई। हम बना देंगे।" धनजी पांड़े ने यज्ञ में अपना हिस्सा स्पष्ट किया।

सुरेश का दस साल का लड़का दौड़ते हुए बताने आ गया हैं कि—"प्लाटून कमांडर आए हुए हैं।"

"तोरा बहिनी के...अब नहीं रुकेंगे हम।" रामज्ञान पांड़ेबो का खिजा हुआ चेहरा देखकर हँसी का एक और दौरा पड़ गया है गोसांई पांड़े को।

प्लाटून कमांडर का नाम था उग्रेश्वर झा--गोरे-चिट्टे, अच्छी-खासी डीलडौल वाले। अक्सर केवल धोती में नजर आते, माथे पर लाल टीका लगाते और किसी भूगर्भवेत्ता की-सी पैनी निगाहें लिए दिन में तीन-चार चक्कर जरूर लगाते गांव का। कुछ न कुछ हर चक्कर में मिल जाता—सब्जियां, अंचार, दही, दूध, अदौरी, तिसौरी। हरिद्वार पांड़े ने जाते समय अपनी गाय उन्हीं को सौंप दी थी और अब उसी का दूध पी रहे थे। उनसे बचता तो प्लाटून भी पीती। गांव में घूमते समय गिल्ली-डंडा या अंटी खेलते लड़कों को हड़काते, उनकी अंटियां, गिल्लियां वगैरह फेंक देते उठाकर और ती-ती, ती-ती खेलती लड़कियों को खड़े होकर उपदेश देते कि ती-ती, ती-ती करने की बजाए पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देना चाहिए उन्हें। झाजी एक सामाजिक प्राणी थे। एक सामान्य आदमी की तरह सुख-दुःख की बातें करना चाहते थे लोगों के साथ, पर कुंवरपुर के लोग उनसे खुलकर बात नहीं करते; क्योंकि उन्हें शंका थी कि झाजी का असली मकसद जासूसी करना था। बेचारे झाजी को क्या मिलना था जासूसी करके कि जासूसी करते! देवता पांड़े से कहते दुःखी होकर कि दुनिया में सरल हृदयवाले लोगों को समझने वाले लोग ही नहीं रहे।

"आप तो इतना न व्यस्त रहते हैं कि..." दयाशंकर को आते देखा तो कहा।

"पहले तो आप विप्रवर, हमारे आनंद को थोड़ा काबू में आने दीजिए कि आप पधारे।" दयाशंकर ने एकदम से गद्‌गद हो जाने की भाव-मुद्रा अपनाई।

"आप ही नहीं रहते हैं यहां। हम तो हमेशा खबर लेते रहते हैं। पूछिए इन लोगों से।" आसपास खड़े लड़कों की ओर इशारा किया।

"पता है, पता है, सब पता है। हम खुद बहुत बार आने को सोचे, पर यही सोचकर रह गए कि कहीं आप अन्यथा न ले लें।" दयाशंकर ने हाथ जोड़े हुए ही कहा।

"जो आदमी किसी से मिलने जुलने को अन्यथा ले, उसको हम आदमी ही नहीं मानते।" झाजी ने कहा।

"आपकी तारीफ यहां सभी करते हैं।" दयाशंकर ने अपने लाए मिक्सचर और धनजी पांड़े की लाई मिठाई की प्लेट उनके सामने सरकाते हुए कहा, "और हम लोगों के लिए तो आप साक्षात् विष्णु भगवान के ही रूप हैं।"

"वही कहें कि क्या बात है कि दुश्मन भी आपसे नाराज नहीं रहते।"

झाजी की इस बात पर दोनों हँसे।

रामज्ञान पांड़े को दिखी यह हँसी, तब जाकर छाती का धड़कना बंद हुआ।

दयाशंकर के मन में यह कीड़ा कुलबुला रहा था कि असली प्रयोजन क्या था झाजी के आने का, पर खुद पूछना नहीं चाहते थे।

"हेडक्वार्टर वगैरह से रिपोर्ट आते रहता है कि आपकी चौकी पर अटैक हो सकता है। सावधान रहिए। हम कहते हैं कि कुंवरपुर में हमारा कोई दुश्मन ही नहीं है।"

"देखिए झाजी, हम सी.आई.डी. रिपोर्ट के बारे में तो कुछ नहीं जानते, लेकिन एक बात आपको जरूर कहेंगे। अगर आपकी चौकी पर अटैक हुआ तो अटैक करने वाले को पहले कुंवरपुर के सैकड़ों मजदूरों और मजलूमों को पार करना होगा। छाती खोलकर खड़ा नहीं हो गए तो कहिएगा।" दयाशंकर ने बनावटी आवेश के साथ कहा, "खेल बात है अटैक कर देना! चौकी नहीं होती तो चैन से रह सकता था कोई?" आवेश में हांफने का अभिनय किया।

"अटैक से कौन डरता है जी? महीना ही अटैक का सामना करने के लिए उठाते हैं। हम केवल इतना जानते हैं कि पुलिस पब्लिक के साथ मेल-जोल रखे तो कोई गड़बड़ नहीं होगा।" झाजी ने आत्मविश्वास से भरे होने का अभिनय किया।

"आप लोगों को भला क्या जरूरत है किसी की सहायता की। हमारी विनती बस यही है कि हमेशा हमको अपना समझिए और सेवा बताइए।" दयाशंकर ने जमे हुए नेता की तरह अपने को स्वतंत्र भी कर लिया छाती खोलकर खड़े होने के संकल्प से।

झाजी को अच्छा लगा है दयाशंकर से मिलकर। बहुत दिनों से सोचते आ रहे थे, मिलें कि नहीं। अपनी व्यावहारिक समझ पर खुशी हो रही है उन्हें। ऊपर से आ रही चौकी पर हमले की रिपोर्टों ने उनकी नींद खराब कर दी थी। चौकी के चारों ओर बोरों में मिट्टी भरकर एक सुरक्षात्मक प्राचीर बना ली गई थी, पर झाजी को विश्वास नहीं है ऐसी तैयारियों में। उनका अनुभव कहता कि चौकी पर हमले का मतलब था चौकी की तबाही। सबसे पुरअसर सुरक्षात्मक तैयारी थी चौकी पर हमला नहीं होने देना। दयाशंकर से बातचीत करने के बाद उन्हें लग रहा है कि सच्चे कमांडर की भूमिका निभाई है उन्होंने। प्लाटून के जांबाज सिपाहियों के बीबी-बच्चों की दुआएं जरूर उनके काम आएंगी नौकरी के बाकी बचे सालों में। आम के अंचारवाला मटका, जो दयाशंकर ने उनके ना-नुकुर करने के बावजूद भिजवा दिया था, रात के खाने में ही काम आ जाने वाला था।

"देख लीजिएगा, कुछ मिला-ओला मत न हो।" एक सिपाही ने मटके को गौर से देखते हुए कहा।

झाजी ने डांट दिया उसे। आदमी पहचानने में भूल नहीं कर सकते वे।

"बात भी हुई कुछ?"

"बात करना आना चाहिए।" दंभपूर्वक कहा उन्होंने।

"ई सबका कोई भरोसा नहीं है कब घात कर दे। हम पिछला बार गढ़वा में थे तो..."

"वह प्लाटून कमांडर गधा होगा।" झाजी ने डपट दिया उस सिपाही को।

शाम के सात बजे थे उस समय और बड़ी सुकूनदेह ठंडी हवा बह रही थी आंगन में। रामज्ञान पांड़ेबो खटिये पर वो कपड़े फैलाए बैठी थीं, जो दयाशंकर लाए थे तीनों बहनों को भेजने के लिए। गणपति पांड़े को कल ही निकल जाना था बहनों के यहां। चापाकल के पास बैठे अपनी धोती चमकाने में लगे हुए थे। दयाशंकर कुछ ही मिनटों पहले निकले थे यह खबर सुनकर कि श्रीराम पांड़े की तबियत अचानक बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। ओसारे में पैरों की धमक सुनाई दी तो लगा, वापस आ गए थे। पर कुछ अजनबी लोग आए थे दौड़ते हुए और गणपति पांड़े को गिरा दिया था राइफल की बट मारकर। दयाशंकर को खोज रहे थे वे। दयाशंकर नहीं थे।

"जल्दी!" ओसारे से आवाज आई थी।

"कहां है?" गणपति पांड़े से पूछा एक ने और "हम नहीं..." सुनते ही गोली चला दी। चेतना दौड़ी थी कमरे की ओर और ढेर हो गई थी।

"भागो!" ओसारे से फिर आवाज आई थी और वे भागने को हुए थे, पर पता नहीं क्या सोचकर रुक गए थे और उस कमरे की ओर बढ़ गए, जिसमें रामज्ञान पांड़े गोलियों की आवाज से डरे हुए गों-गों कर रहे थे। रामज्ञान पांड़ेबो दौड़ी थीं उनका रास्ता रोकने को, पर वे नहीं रुके थे। रामज्ञान पांड़ेबो पागलों की तरह चीखते हुए झपटी थीं उनकी ओर और ठीक चेतना की लाश के पास ही भहरा गई थीं लाश बनकर।

ताबड़तोड़ गरजती राइफलों के साये में शाम के झुटपुटे में गुम हो गए थे वे। स्कूल की तरफ से आती गोलियों की आवाज सुनाई देती रही थी उसके बाद भी। प्लाटूनवाले जवाबी कार्रवाई कर रहे थे अपनी समझ से। गोली चलने की कुछ आवाजें कब्जेवाली जमीन की तरफ से भी आई थीं.

"मिला?" भागती हुई एक परछाईं ने पूछा और 'नहीं मिला' सुनते ही निढाल-सी खड़ी हो गई दौड़ते-दौड़ते।

"तो गोली किसलिए चलाए?" थकी हुई-सी आवाज में पूछा।

"चार गो को घुलटा दिए हैं।"

"चार गो माने?" वह परछाईं चीखी।

"भागिएगा कि हिसाब लेने लगिएगा यहीं?" एक दूसरी परछाईं झुंझलाई।

"चार गो कौन-कौन रे साला! गदहा! सब?" दौड़ते हुए पूछा उस परछाईं ने।

"बूढ़ा-बूढ़ी था, एगो छोकड़ी थी और एगो हाफ सिलिंडरवाला था।"

"रामगियान बाबा को काहे को मारा रे बहनचोद सब?" राइफल फेंककर आर्तनाद-सा करते हुए दौड़ना बंद कर दिया है कन्हैया सिंह ने।

"फोटो दिखाए थे हमको कि ई रामगियान बाबा हैं, मारना नहीं, जल चढ़ाना है इनको?" जिसने मारा था, गुर्राया और दौड़ना जारी रखा।

गोलियों का शोर थमे आधा घंटा बीत गया था और गांव बंद दरवाजों के पीछे अपने-अपने हिसाब से सुखद और दुःखद कल्पनाएं करने में जुटा हुआ था। दयाशंकर दुबके हुए खड़े थे श्रीराम पांड़े के आंगन में और सोच रहे थे, बस पांच मिनट देर और होनी थी निकलने में और खेल समाप्त था!

बस चूड़ामनबो बच गई थी अपने घर की, जो रो रही थी बारी-बारी से चारों लाशों के पास बैठकर। मटुक आए थे लाठी के सहारे टांग घसीटते हुए और रामज्ञान पांड़े की लाश के पास बैठे रो रहे थे। दूधनाथ सिंह सिर झुकाए बैठे थे अपराधी की तरह। इतना स्थिर कि डर गए लोग कि कहीं वे भी तो नहीं चल पड़े अपने जिगरी दोस्त के साथ। गोसाांई पांड़े ने कंधे हिलाकर देखा—जिंदा थे।

"जो रे सार नालायक, गेहुंअन को जखम देकर छोड़ दिया।" दयाशंकर के बच जाने का समाचार सुनते ही माथा पीट लिया पल्टू सिंह ने, "ई कन्हइअवा साला कहियो काम का आदमी नहीं बनेगा।"

"हमारे मरद को मडरर कहेंगे बाबूजी तो कह देते हैं हम।" कन्हैया सिंहबो ने फुत्कार छोड़ी, तब जाकर पल्टू सिंहबो ने डांटा पति को—"रस्सा लगवाइएगा बाल-बच्चा सबको?"

छांगुर लजाया हुआ-सा खड़ा है एक कोने में। यह सोचकर कि इतना बड़ा कांड कर गए थे दुश्मन और उनका बाल भी बांका नहीं हुआ था। रह-रहकर यह शंका भी फन उठाती थी मन में कि कहीं धनंजयजी का ही काम तो नहीं था यह।

देवता पांड़े रामज्ञान पांड़ेबो की लाश के पास बैठे विलाप कर रहे हैं। आज ही शाम को वसुधा की चिट्ठी आई थी। लिखा था—'उदय पांड़े कैसे हैं? रामज्ञानबो चाची कैसी हैं?'

"गणपति बबवा का काम ठीक था। अकेला था, चल दिया; कोई रोअनीहार भी नहीं है।" टेंगर सिंह खड़े-खड़े यही देखने में मशगूल थे कि कौन किसके लिए रो रहा था और कैसे रो रहा था।

रेजटोलों की औरतें अपने नेता के लिए रो रही थीं। छबीला सिंह गांव के प्रारब्ध के बारे में सोचकर रो रहे थे।

"एकरी मइयाचोद...सबसे यही तो कह रहे थे हम कि गुंडा सब नहीं मरेगा। श्रीभगवनवा, अखिलेसवा, कन्हइवा और दयासंकरा का कुछ नहीं होगा...केवल हम लोग मरेंगे...आज सीधका बाबा, कल...एकरी मइयाचोद...सब गद्दार कहता है हमको..." रंगू सिंह काबू में नहीं रख सके मन का दुःख। पूरे गांव को गाली देना शुरू कर दिया।

दयाशंकर को बड़ी अजीब-सी लग रही है अपनी विचार-शृंखला। मन कर रहा था कि चेहरा कुछ खास दिखे इस मौके पर। यह तो तय था कि आएंगे ही आएंगे अखबारवाले, पर आशंका यह सता रही थी कि कहीं बिना कैमरे के न आ जाएं। मन हो रहा है कि मंधाता मिश्र को यह संदेश भिजवा दें कि आएं तो एक वीडियोग्राफी टीम साथ में लाएं।

यह खयाल भी कौंध जाता था अंदर के आकाश में कि अपने समर्थकों के बीच उनका कद और भी बढ़ जाएगा। धनंजयजी के लोग चाहेंगे भी यह दुष्प्रचार करना कि प्रशासन से मिला हुआ है यह आदमी तो भरोसा नहीं दिला पाएंगे लोगों को।

दयाशंकर को लाज भी लग रही है इन खयालों के उगने पर। लेकिन करें तो क्या करें! अतीत और वर्तमान को भूलकर मन और मस्तिष्क दोनों एक सुनहरे भविष्य की योजना बुनने में लग गए थे।

बाहर दुआर पर जमा लोग बोल छोड़ रहे थे प्लाटून कमांडर और उनके साथ आए सिपाहियों पर। झाजी उन्हें समझाना चाह रहे थे कि बहुत दूर तक पीछा करते हुए गए थे हमलावरों का, इसीलिए देर से आ रहे थे और लोग हिंदी फिल्मों के हीरो की तरह गरज-गरजकर कह रहे थे कि चूड़ियां पहन लें, चूड़ियां!

"जब तक मुख्यमंत्री नहीं आएंगे, लाश नहीं उठने देना है।" नंदलाल बुदबुदा गया दयाशंकर के कान में। लेकिन दयाशंकर कुछ और ही सोच रहे थे। गांव जाहिरा तौर पर मर्माहत था इन हत्याओं से। लाशों का उठना रोककर इस स्थिति को विक्षोभ में नहीं बदलने देना चाहते थे दयाशंकर। कुछेक लोगों को छोड़कर पूरा गांव जमा हो गया था उनके आंगन में। बहुत बड़ी बात थी यह। दयाशंकर उन्हें निराश नहीं करेंगे इस मुद्दे पर गुटबंदी करके। फिर लाशों का आंगन में पड़ा होना भी कैसा तो लग रहा था!

धनंजयजी ने सुना तो एक कुछ-भी-नहीं-कहती-सी खामोशी ओढ़ ली। दमयंती बहुत विचलित हो गई है। पुराने दिन जीवंत हो उठते हैं चेतना में। नन्हकू सिंह की दालान, नन्हकू सिंह के साथ बैठे आत्म-शंकित से दयाशंकर, गुनी में बी.डी.ओ. के घेराव के लिए उसके साथ-साथ चलते दयाशंकर, रामगिरिही की लाश को कंधा देते दयाशंकर, और रामझान बाबाबो की बुद्धि का तो सारा गांव कायल था। कितना बोझ था माथे पर और आंचल नहीं सरकने दिया था माथे से।

धनंजयजी को बिना बनाए वह रमेश के साथ बनारस चली आई है। हरिश्चंद्र घाट की सीढ़ियों पर बैठी उधेड़बुन में लगी है—सामने जाए कि नहीं दयाशंकर के? सिर घुटाए दयाशंकर के साथ दूसरे लोग भी तो हैं—मास्साब, छबीला सिंह, रंगू सिंह, सत्यनारायण सिंह, सुधाकर पांड़े, देवता पांड़े। गांव। कोई पूछता था, "तुम्हारा गांव?" "कुंवरपुर।" कितनी सहजता से जुबान पर चला आता था यह जवाब। गंगा नहाकर अपने गीले कपड़े कचाड़ता वही खड़ा था उसके सामने!

"सब कोई आया है...छांगुर, निहोरा, हरखू, चरित्तर, नंदलाल..." रमेश भी अपने गांव को देखने में जुट गया था।

"चलो!" अचानक खड़ी हो गई वह और सीढ़ियां चढ़ने लगी।

रमेश कुछ देर तक देखता रहा उसे हक्का-बक्का और पीछे हो लिया उसके।

"गांव अब रहने लायक नहीं रह गया, फिरंगी। हमको भी अपने ही कंपनी में रखवा दो।" बलराम सिंह ने कहा।

श्मशान की-सी चुप्पी छाई हुई थी गांव में। हल्की-सी आहट भी पूरे गांव में गूंज

जाती। बलराम सिंह की आवाज भी मानो पूरे गांव में गूंज गई हो। फिरंगी ने इशारा किया, धीमे बोलें।

"बोलना नहीं है कुछ, चल ही चलते हैं कल।" आवाज नीची कर ली बलराम सिंह ने।

"कंपनी का हाल भी नरभस ही है, बबुआन। खाली वी.डी.ओ. चल रहा है लगन में। हम तो अझुरा गए हैं इसलिए लगे हुए हैं, बाकी..."

"जाने दो, साथे रहा जाएगा दूनो आदमी। खाने-पहनने-भर हो जाए तो बेसी का फेर नहीं रहता हमको।"

फिरंगी की नजर दुआर पर टहलते नरेश सिंह पर पड़ गई है।

"नरेश चाचा हैं।" डर गया है कि कहीं आग-बबूला न हो जाएं उसे देखकर।

"इसीलिए न कह रहे हैं..."

बाकी बात अनकही ही रह गई, क्योंकि नरेश सिंह उन्हीं की ओर आ रहे थे।

"रियाज हो रहा है?" पूछा।

आवाज की कोमलता दोनों को ही अंचिभत कर गई।

"अच्छा नहीं लग रहा है, बबुआ...जरा ऊ गीतिया सुनाओ तो..."

बलराम सिंह रोने लगे पिता की आंखों में उग आया उजाड़ देखकर।

"कब की चूक हमारी हमार पियाऽऽ..."

गांव ने नरेश सिंह की दालान से आती यह तान सुनी और सुनने लगा।

27

हल्की बारिश हुई थी रात को। भोर की हवा में पानी की महक थी। बाहर रखी पुआल के सड़ रहे ढेर और गउरहर की गंध से पगी हुई। घर के ठीक दरवाजे से सटकर गांव के बीचोबीच एक नाली बहती है, जिसके दोनों ओर की बेहद संकरी पट्टियों के सहारे ही बगल की दीवारों से गोह की तरह चिपके हुए लोग जाते हैं एक-दूसरे के या अपने-अपने घरों को। नाली भर जाती तो कीचड़ निकालकर किनारों पर जमा कर दिया जाता और चलना और भी मुश्किल हो जाता।

बड़ों ने तो घिनाना बंद कर दिया था और आराम से उसी हांच में हबड़-दबड़ करते हुए, कीचड़ बेढंगे ढंग से निकालने के लिए सामनेवाले दरवाजे को कुछ मधुर वचनों का अर्पण कर चले जाते, पर पिछले दो दिनों से दमयंती देख रही थी कि स्कूल जाने के लिए नहा-धोकर अपने घरों से निकले बच्चों के पैर कांपने लगते थे गली पार करने में। जो बहुत छोटे थे, रोने लगते। उनके बड़े भाई-बहन हौसला बढ़ाते धीरे-धीरे कीचड़ पर पांव जमाते हुए आगे चले आने को, पर उनके पैर कीचड़ में धंस जाते और वे और जोर से रोने लगते। 'तो इसमें हमारा क्या दोष है' की निरीह विवशता ओढ़े उनके बड़े भाई-बहन आगे बढ़ जाते।

दमयंती जानती है, इन बच्चों की रुलाई का कोई अर्थ नहीं है। अधिक से अधिक

कोई चिढ़ जाएगा उन्हें फेंकरता हुआ सुनकर और उनकी माइयों को गरियाने लगेगा।

इन गांवों में रिवाज था कि बच्चा रोए तो उनकी मांओं को गरियाया जाए। बच्चा रोहंटीया हो जाता तो इसके लिए मांएं ही जिम्मेदार ठहराई जातीं। मान लिया गया था कि बाप इतने व्यस्त थे बाहरी झमेलों में कि उनके पास वक्त नहीं था बच्चों की देखभाल का। बच्चे भी जान जाते थे यह बात। बापों का तो लिहाज करते, समझ जाते उनके समझाने पर, पर मांएं समझाना चाहतीं तो रोने लगते।

लोग चाहते कि उनके घर की औरतें अपने बच्चों को यह समझा दें कि पैंट चूतड़ पर फट गई हो और दूसरे लड़के 'एगो लईका के चूतरा प छेद भइल बा' कहकर चिढ़ाएं तो उन्हें रोना नहीं चाहिए। चूंकि औरतें नहीं समझा पातीं, गालियां सुनना उनकी दिनचर्या का हिस्सा हो गया था। उसकी माई, लेकिन उसके बाबू को भी तोप देती ग़ालियों से। रामगिरिही मुनमुनाकर चुप हो जाते—'और लइका-बच्चा नहीं है टोला में।'

घिनौना बचपन था वह। दूसरों को घिन भी तो आती थी उन्हें छूने में। उसके घुटने फूट गए थे हाकिम सिंह के घर के सामने लगे खूंटे से टकराकर और वह रोती रही थी उनसे रिसता खून देखकर। हाकिम सिंह इंतजार करते रहे थे कि कोई आए उसके टोले का तो उठाए। अंततः बनिहार आया था उनका, उड़ती हुई निगाह से देखा था घुटनों को और चुनौटी से चूना निकालकर रगड़ दिया था उनके ऊपर—सोरह आना हो जाएगा। वह दर्द से बिलबिलाती हुई भागी थी।

उन्हें खुश देखकर अटपटा-सा महसूस करने का रिवाज था कुंवरपुर में। चिढ़-सा जाने का। बभनटोल और राजपूताने की औरतों को तो हँसी आ जाती उन्हें नए कपड़े पहने हुए देखकर—'आज तो बबुआ बन गई है रे!' बच्चे अपनी नासमझ भोली आंखों से देखते रहते। पर बड़ा होते-होते उन्हें कुछ नया पहन लेने पर लजाने की आदत पड़ जाती। मन के किसी न किसी कोने से झांकती रहती यह आवाज—'आज तो साहेब बन गया रे!' वे दूसरों को बिना पूछे ही बताने लगते कि पहलेवाला कुर्तवा चाहे लुंगिया पहनने लायक नहीं रह गया था सो खरीद लिए एक। रामगिरिही को तो इतनी लाज लगती कुछ नया पहनने में कि नया कुर्ता सिलवाते तो बटन नहीं लगवाते उसमें। ताकि नया होते हुए भी एकदम नया नहीं लगे। यह कहने का मौका रहे कि 'लइकवा ठेन करने लगा था, नहीं तो...'

...और शिवजी पंड़इया—हत्यारा! एक गंदा कपड़ा रखता था टेबुल के ड्राअर में। उनका कान पकड़ता तो उस कपड़े को उनके कान पर रखकर पकड़ता और निर्दयतापूर्वक मसलता रहता उनके कान को। वे रोते तो मजा आता उसे। 'रो रहा है कि नेटुआघाघर कर रहा है रे?' बड़ी जातवाले लड़कों से पूछता। 'नेटुआघाघर कर रहा है।' वे एक साथ चीखते।

दमयंती के रोएं खड़े हो गए हैं दर्द की उस अनुभूति को याद कर। कैसे-कैसे लोगों का कुछ नहीं बिगड़ा और रामज्ञान बाबाबो चली गईं।

बनारस से लौटने के बाद से ही विषण्ण है वह। निरर्थकता-बोध का एक पीड़ादायक अहसास दांत गड़ाए हुए है चेतना पर। रह-रहकर उदासी घेर लेती है, कहीं

भाग जाने का मन होता है। दूर। लेकिन कहां?

धनंजयजी कहीं बाहर चले गए थे किसी जरूरी काम के सिलसिले में। हो सकता है, नाराज भी हों उससे। उसकी ऊटपटांग हरकतों से। दमयंती को अफसोस हो रहा है उनके फैसलों पर खुलेआम नाराजगी व्यक्त करने का, पर वह करे भी तो क्या करे। धनंजयजी का विश्व-बोध, उनकी भविष्य-दृष्टि, उनकी सैद्धांतिक उड़ान इतने वायवीय हो जाते हैं कि जी नहीं करता उनसे सहमत होने को। और जिद्दी हैं बेपनाह। जिद्दी तो वह भी है, पर धनंजयजी कुछ समझते ही नहीं दूसरों को। दयाशंकर को अकारण ही दुश्मनों के खेमे में धकेल दिया।

"एगो दयाशंकर जीउवा है कि चमका दिया कुंवरपुर को और एगो हमारे गांव के नेता लोग हैं कि बाहर तो बड़का-बड़का बोल छोड़ेंगे और अफसरन सबके आगे गोड़ कांपने लगेगा।" करौना गांव के उस नवयुवक ने पता नहीं कैसे अनुमान लगा लिया कि दमयंती उसके गांव की बदहाली के बारे में सोच रही थी। सोचा हो, बड़े लोग हमेशा इसी तरह की बातें सोचते रहते हैं। दमयंती 'बड़ा आदमी' थी उसके लिए।

"मुंह क्या जोहना है किसी का, आप लोग नौजवान आदमी हैं, घेराव कर दीजिए ब्लॉक का।" दमयंती ने भी बड़े आदमियों जैसे एक बात कह दी और सोचा—सभी समझ गए हैं एक केवल धनंजयजी को छोड़कर।

"आप और दयाशंकरजी जो कर दिए गुनी में, दूसरे का हूब नहीं है कि कर दे। अवधेश चौधरिया बाकायदा एक गैंग रखता है अब। उन्हीं लोगों का राज है।"

दूसरे लोग आसानी से कह जाते हैं ऐसी बातें, आत्म-दया और पराजय-बोध से भरी हुई, और दमयंती सुनती है तो रोयें सुलगने लगते हैं उसके। निरर्थकता-बोध और भी उदग्र हो जाता है। कितने भी धक्के मारो, जहां की तहां रह जाती हैं चीजें। ज़रा भी फर्क नहीं पड़ता इस बात से कि बी.डी.ओ. त्रिपाठी है कि रजक। एक ही एजेंडा है इन सभी का। पता नहीं, कौन है जो इतना ताकतवर है कि बिना सामने आए ही एक पूरे समाज के लिए तय कर रहा है इस तरह का एजेंडा!

"आप लोग मिले हैं बी.डी.ओ. से?" भीतर चलते विचारों से बाहर आने के लिए पूछा।

"रजकवा का तो हाल है कि बाते नहीं करता सोझ मुंह से...कुछ कहिए तो गिनाने लगता है कि यहां देना पड़ता है, वहां देना पड़ता है...क्या कहा जाए ऐसे आदमी से!"

दमयंती को लाज लगती है यह अभियोग सुनकर। उसने कहा था, रजक जैसे बेईमान लोगों से कुछ लेना ठीक नहीं है, पर धनंजयजी ने सुना ही नहीं। फिर बोले—"लेते नहीं, छीनते हैं, क्योंकि इनको बर्बाद करने के लिए जो शल्य-चिकित्सा जरूरी है, उसका हिस्सा है यह।" छीनते ही थे, पर कहीं न कहीं लेना हो ही जाता था यह छीनना। और विनायक तो कह रहे थे कि नौलाख महतो भी दस्तक दे रहे थे कुछ अर्पण करने को। गुनी-बिक्रमगंज रोड की मरम्मती का जो ठेका मिला था, उसमें निर्विघ्न लूटपाट की सुविधा के मूल्य के रूप में।

धनंजयजी एकदम से खारिज कर देते उसकी इस तरह की चिंताओं को। कहीं

एक अच्छी बिल्डिंग का खड़ा हो जाना, अच्छी सड़क का बन जाना, ये चीजें महत्त्वपूर्ण नहीं लगतीं उन्हें। कहते, एक गलत व्यवस्था ऐसी चीजों के सहारे भ्रम पैदा करती है अपने सही होने का।

"एगो नया ट्रेंड शुरू हो गया है।" वह नौजवान उत्साहित था व्यवस्था के पतन के नव्यतम प्रतिमानों के अनावरण के लिए, "जेतना भी ऑफिसर है गुनी में, सब मिल गया है किसी न किसी से, देख लीजिए आप ही। भेटनरी डाक्टर है रामबचन राय तो बूटन राय का आदमी है। सुनीता बर्मवा है, तो रामप्रवेश चौधरी से लिंक है उसका। डॉ. आभा अग्रवाल है तो सुनते हैं, देवेंदर राय से डाइरेक्ट लिंक है उसका। एगो और डॉक्टर है, सीताराम प्रसाद, तो लोकले है...बैंक मैनेजर है त्रिभुवन सिंहवा तो अखिलेश सिंह बाप बन गए हैं उसका। कृषि विभागवाला है मुरारी पासवान तो अवधेश चौधरी से पूछे बिना दतुअन भी मुंह में नहीं लगाता। सी.ओ. हैं भगवान चौबइया तो ऊ भी सुनते हैं, देवेंदर बाबू का भक्त है और रजकवा...जरूरते नहीं है बताने का।"

"मास्टर आता है स्कूल में?" दमयंती को मजा आने लगा है सुनने में। इतने उत्साह के साथ रस ले-लेकर बता रहा था वह, मानो वैदिक काल की खोजों के बारे में बता रहा हो।

"क्या कहा जाए...एक तो अपने हरिहर मास्टर के बड़े भाई ही हैं न...कुछ कहने में भी खराब लगता है..."

"हमको एक बात बताइए आप। अपने लोगों से खराब ही लगता है कुछ कहने में, दूसरों से डर ही लगता है, तीसरों तक पहुंच ही नहीं सकते, तो कुछ होगा तो कैसे होगा?"

"ई बात तो हइये है।" उस नौजवान ने कहा।

"इन सभी को एक ही साथ खड़ा करके उड़ा देते हैं।" दमयंती बोली।

"मन तो करबे करता है...बाकी सबको एक साथ..."

अब अपनी हँसी नहीं रोक पाएगी दमयंती। अपने एक समर्पित साथी का इस कदर घबरा जाना देख मानो वह अपने-आप पर हँस रही है—अपने सपनों पर, बड़े-बड़े लक्ष्यों पर।

"हमारा कहना है कि उड़ाना भी एक उपाय है, लेकिन जो दयाशंकरजी कर रहे हैं..." कुछ सम्हलकर कहा उस नौजवान ने।

"लेकिन हरिहर मास्टर के भइया से तो आप लोगों को कहना ही चाहिए कि आएं स्कूल।" रुकने का नाम ही नहीं ले रही दमयंती की हँसी।

'नाली तो जरूर बनवाएंगे इस गांव की।' हँसते-हँसते ही यह संकल्प उगा मस्तिष्क में और तत्क्षण याद आया कि सी.डी.पी.ओ. ने ध्यान नहीं दिया था उसके संदेश पर।

दूसरी तरफ यह सोचकर 'समस्या हल हो गई' समझा जा रहा था कि एक और आंगनवाड़ी खुल गई थी कुंवरपुर में और दयाशंकर की मनचाही औरतों को सेविका और सहायिका भी बना दिया गया था। सुनीता वर्मा एक महीने के उपार्जित अवकाश का

उपभोग कर ड्यूटी पर वापस आ गई थीं। बल्कि छुट्टी से वापस आने के बाद, नहीं चाहते हुए भी, अवधेश चौधरी के साथ चुम्मा-चाटी करनी पड़ी थी, क्योंकि उनके पति ने यह पता लगाया था कि समेकित बाल विकास परियोजना के निदेशालय में एक बढ़िया पोस्ट खाली था और विश्व बैंक से बेहिसाब पैसा आ रहा था। रामप्रवेश चौधरी इसी बीच लोक लेखा-समिति के अध्यक्ष बन गए थे। सरकारी लोग डरने लगे थे उनसे। राजनीतिक साख तो बढ़ ही गई थी। श्री वर्मा ने हिसाब लगाया था कि श्री चौधरी लगा देते जोर तो श्रीमती वर्मा को मिल जाने वाला था यह पद।

"आपके आशीर्वाद से सीखने का मौका मिल जाएगा लाइफ में, नहीं तो रेगुलर काम तो करना ही है जिंदगी-भर..." श्रीमती वर्मा ने सिखाए हुए तोते की तरह सविनय निवेदन करना शुरू कर दिया था रामप्रवेश चौधरी से।

"आप लोग समझने को तैयार ही नहीं हैं।" रामप्रवेश चौधरी झुंझलाते, "हमारी सरकार इस ट्रांसफर-पोस्टिंग इंडस्ट्री को बंद करने पर विचार कर रही है। दरखास्त दीजिए, योग्यता होगी तो जरूर मौका मिलेगा।"

अवधेश चौधरी के साथ बातें आत्मीयता के स्तर पर होतीं।

"बदली करवा दीजिए हमारा और बच्चा लोग का वहीं नाम लिखवा दीजिए अच्छे बोर्डिंग स्कूल में। हम रहेंगे ही, देख-सुन करते रहेंगे।" श्रीमती वर्मा कहतीं।

"कहिए न कि जान छुड़ाने के फेरे में हैं तो चरा रही हैं हमको।" अवधेश चौधरी कहते।

"चौधरीजीउवा सब आदमी ठीके लगता है हमको तो।" श्री वर्मा को कभी-कभी शक होता कि कहीं उनकी पत्नी को कोई दिक्कत नहीं हो रही हो इस तरह के दांवपेंच आजमाने में, पर सोचकर संतोष कर लेते कि दो बच्चों की मां में भला क्या रुचि हो सकती है किसी की!

श्रीमती वर्मा कहतीं, "बेचारा सबको अच्छा लगता है कि कोई पढ़ा-लिखा आदमी बिना छल-कपट के बतिआए। बड़ा आदमी बनने का मन करता है, पर सबसे पूछते तो नहीं न चलेगा कि बड़ा आदमी कैसे बना जाता है।"

"हां जी, सबको अलग-अलग प्रोबलेम है लाइफ में।" श्री वर्मा की रही-सही आशंका भी दूर हो जाती। वैसे भी जब से ट्रेजरी का अतिरिक्त प्रभार मिला था, मन खुश रहता। ऐसा तो नहीं था कि बोरे में आ रहा हो पैसा, पर झोरे में तो आ ही रहा था। तो श्रीमती वर्मा को सलाह देते—"अंठियाने से नहीं चलेगा काम। बार-बार कहते रहिए।"

गुनी से खुली बस टेढ़का पुल को पारकर एक किलोमीटर और गई होगी कि कुछ लोगों ने सड़क के बीच में खड़े होकर रुकवाया उसे और ड्राइवर को राइफल की नाल दिखाकर नीचे उतरने को कहा। दिन के दो बजे थे। तीन-चार लोग धड़धड़ाते हुए बस के अंदर धुसे। श्रीमती वर्मा से कहा, 'चलें' और तीन-चार सवारियों के थोबड़ों से राइफल की बटें टकरा दीं।

"महिला हैं, भाई!" पीछे की सीट से एक यात्री मुनमुनाया।

उनमें से एक ने राइफल तान दी उसकी ओर और कहा, "कहां छेदें, बताओ।"

उसने नहीं बताया।

श्रीमती वर्मा बस से उतर गईं चुपचाप। एक जीप में बिठाया गया उन्हें और जाने के पहले बस के सभी चक्कों में गोली दाग दी गई।

'ई तो हद्द हो गया,' के पावन विस्मय में थसकी हुई बस आनंद लेने लगी मार्च की धूप का, जो मीठी नहीं, तो तीखी भी नहीं थी और जीप कुछ ही देर में ओझल हो गई आंखों से।

"पइसावाला पार्टी है, भाई, ले-देकर सलट जाएगा मामला।" एक छुटभैया नेता टाइप सवारी ने कोशिश की सवारियों को 'कुछ नहीं कर सके' के अपराध-बोध से मुक्त करने की।

"सलट काहे नहीं जाएगा, लेकिन सीता मइया को भी अग्निपरीक्षा देनी पड़ी थी।" एक अधेड़ सवारी बोली, जो ऑलरेडी शीघ्रपतन की अपनी बीमारी की चपेट में आ चुकी थी यह कल्पना कर-करके कि...

"अब त्रेता वाला स्टैंडर सब कलजुग पर लागू कीजिएगा तो काम चलेगा?" छुटभैया नेता टाइप सवारी बोली और इस जोगाड़ में लग गई कि कोई फटफटिया-ओटपटिया भी दिख जाए तो लद जाए उस पर।

श्रीमती वर्मा की आंखें बंधी हुई थीं। जीप से उतारकर उन्हें एक मोटर साइकिल पर बिठा दिया गया था और अंदाजा लगा सकती थीं वे कि दो और मोटर साइकिलें चल रही थीं साथ-साथ। आंखों पर से पट्टी हटाई गई तो देखा—आम के एक बगीचे के बीचोबीच, एक पेड़ के तने से सटकर खड़ी हुई एक सांवली-सी चुस्त-दुरुस्त लड़की के सामने खड़ी थीं, जिसने जींस और खादी के मोटे कपड़े का कुर्ता पहन रखा था और जिसके बाल लड़कों जैसे थे। बिना किसी के बताए ही समझ गईं श्रीमती वर्मा कि दमयंती थी वह।

"क्या कहा गया था आपको?" बिना समय गंवाए हुए उनसे पूछा एक आदमी ने।

"वो! हमारे तो बच्चे की तबियत...हम छुट्टी ले लिए...लेकिन एक नया तो..."

"नए नहीं, पुराने के बारे में कहा गया था।"

"हम लोग बहुत पोलिटिकल प्रेशर में काम करते हैं और लेडीज को तो बहुत दिक्कत है...हमको टाइम दिया जाए...हम जरूर..."

"नौकरी में आने के पहले ट्रेनिंग नहीं होती तुम लोगों की?" पहली बार बोली दमयंती।

"जी, होती है।" श्रीमती वर्मा की आंखें उसके सख्त और घृणा से थोड़ा टेढ़े हो गए चेहरे पर जम गई हैं।

"क्या होती है?" छोटा-सा सवाल।

चुप्पी।

"अरे हरामजादी, घूसखोर! बच्चों से प्यार करने के लिए ट्रेनिंग की जरूरत है?"

श्रीमती वर्मा चुप हैं।

"अगर गुनी में लिया घूस का सारा रुपया तीन दिन में वापस नहीं करेगी और इ्यूटी नहीं करेगी ठीक से तो दोनों चूंचियां काट देंगे तलवार से। जब मां वाला कोई गुण ही नहीं है तो..."

"जाने दें?" दमयंती चल दी मुड़कर तो पूछा उस आदमी ने।

"जाने दो, घूस जैसा बदबू कर रही है।" कहा और चली गई।

"चला जाए।" श्रीमती वर्मा के नितंब के गोश्त में पंजा जमा दिया उस आदमी ने।

"मुआ देगी!" दूसरे ने उस दिशा की ओर देखते हुए कहा जिधर गई थी दमयंती।

"साला मन खखनकर रह जाता है।" पंजा हटा लिया उस आदमी ने।

"बहुत बेइज्जत की...।" श्रीमती वर्मा रो रही हैं।

"क्या बोली?" श्री वर्मा ने पूछा।

"क्या नहीं बोली? सब आपके चलते, नहीं तो हम नहीं बैठकर राज करते घर में! तो नौकरी करवाने चले हैं..."

श्री वर्मा निरासक्त हो गए हैं श्रीमती वर्मा के रोने से। उन्हें मालूम है, बदली के लिए एक सॉलिड ग्राउंड बन गया है। बिना वक्त बर्बाद किए लग जाना है इस काम में। कल सुबह को ही राजधानी के लिए प्रस्थान कर जाना है। बाकी के आंसू मंत्री महोदय के आगे बहाना ही ठीक रहेगा।

"हमारा भी बदली करा दिया जाए।" मनोरंजन रजक भागे आए हैं रामप्रवेश चौधरी के पास, "हम भी उठेंगे अब...एतना डिमांड है कि मैनेज नहीं होता...सुनते हैं एनक्वायरी-ओनक्वायरी का भी ऑर्डर हुआ है।"

"हम जबर्दस्ती रखे हुए हैं आप लोगों को?" रामप्रवेश चौधरी गरजे, "जहां जाना चाहते हैं, जाइए।"

"हमको गलत मत समझा जाए...अखिलेश सिंह और लुकुड़ी राय बहुत दुःख दे रहे हैं हमको...इन्हीं लोग का काम है...देवेंद्र बाबू भी डबल रोल खेल रहे हैं।"

"हमसे ज्यादा तो आप ही जानते हैं।" व्यंग्य के भाव में मुंह बिचका दिया चौधरीजी ने।

"इन लोगों में एक कमी भी है, सर। जरा-सा भी रेझिस्ट नहीं करते। खट् से दे आते हैं।" गुनी के नए थाना प्रभारी प्रह्लाद चौधरी ने कहा।

"आप तो नया आए हैं, नहीं जानते होंगे, गुनी में एक मिसाल बनाने का काम किया है हमने। हमारे अवधेश को उठा ले गए लोग, पर हम बोले—सौदाबाजी नहीं करेंगे। अच्छी बातों से लेकिन कहां मतलब है किसी को?"

"आपके जैसा तो खैर, ये लोग क्या करेंगे, पर रेझिस्ट जरूर करना चाहिए थोड़ा।" भावाभिभूत होते हुए कहा नए थाना प्रभारी ने।

"लेकिन देवेंद्र राय का रोल, भइया, गड़बड़ लग रहा है हमको। लगता है, एके बार में अपने दोनों दुश्मनों को डाउन करना चाहते हैं।" अवधेश चौधरी बोले। मन दुःखी था। यह दूसरा मौका था, जब मुंह में कालिख पोत दी थी दमयंती ने। और देवेंद्र राय थे कि सारा मामला उलझाए हुए थे।

"उनके चाहने से ही होता रहता सब कुछ तो लोक लेखा-समिति के अध्यक्ष बन जाते हम?" रामप्रवेश चौधरी ने हंकड़कर कहा, "देवेंदर राय कह रहे हैं न कि दयाशंकरा जो मांगे उसे दिया जाए, तो हम कहते हैं कि दमयंनिया जो मांगे, वह भी दिया जाए... इनक्वायरी-फिनक्वायरी हम देख लेंगे।"

"और आप लोग कुछ दिनों तक लहर सिकोड़कर नहीं रह सकते? कुछ दिनों तक चलने न दीजिए यह खेल।" अवधेश चौधरी को थोड़ा असंतुष्ट देखा तो कहा।

"आपका एस.पी. तीसमार खां बनता है, लेकिन गधा है।" थाना प्रभारी से बोले।

"प्रैक्टिकल बात सब नहीं समझते।" थाना प्रभारी ने अनुमोदन किया उनके मत का।

लेकिन एस.पी. आश्वत हैं कि कोई जरूरत नहीं है रणनीति पर पुनर्विचार की। हां, दयाशंकर अगर खेत रहते उस हमले में, तब जरूर एक सेटबैक होता। अभी तक तो जो भी हुआ या हो रहा था, एकदम ठीक-ठाक था। दयाशंकर का दिमाग ठिकाने लगाए रखने के लिए जरूरी भी था कि उनके मन में विरोधियों का डर बना रहे।

"इससे, सर, दमयंती ऐंड कंपनी के खिलाफ दयाशंकर की क्रेडिबिलिटी स्ट्रेंथेन होगी।" देवेंद्र राय को समझाने में लगे थे, "और ऐंबीशस आदमी को 'सफर' तो करना ही पड़ेगा।"

"और यह सी.डी.पी.ओ. वाला केस? बदला लेने के लिए किया?"

"नहीं सर, हमको नहीं लगता, देयर इज एनी कनेक्शन। ये तो पैसे का खेल है। ये तो चलता रहेगा। यू डोंट नेसेसैरिली नीड नक्सलाइट्स फॉर दिस।"

देवेंद्र राय को एस.पी. की बात जंच रही है। दयाशंकर पर हमले के बारे में सुना था तो मन ही मन बहुत नाराज थे अखिलेश सिंह से। पर अब लग रहा है कि जो हुआ, ठीक ही हुआ। अखिलेश सिंह के ग्रुप को ज्यादा डिमॉरलाइज करना भी ठीक नहीं है। दयाशंकर कोई बबुआ थोड़े ही हैं कि गोदी में छिपाए रखा जा सकता है उनको। इस बहुकोणीय संघर्ष में सबको खुद को बचाते हुए ही आगे बढ़ना है।

"फिर भी सी.डी.पी.ओ. वाले केस के चलते रामप्रवेश बाबू थोड़ा आहत हैं। जरा बात कर लीजिएगा।"

"उनका बेसिक प्रोबलेम, सर, यह है कि वे हर चीज पर डायरेक्ट कंट्रोल रखना चाहते हैं, तो इन्वॉल्वमेंट भी डायरेक्ट हो जाता है। जैसे आप हैं तो कोई आया तो हेल्प कर दिया, दैट्स ऑल। बट ही वांट्स हिज ओन मेन ऐंड वीमेन एवरीह्वेयर। अब

तो दरोगा भी जात भाई, बल्कि बोलता है रिलेशन हैं, आ गया।'' एस.पी. ने थोड़ी सफाई दी, थोड़ी चमचागिरी की, थोड़ी शिकायत की।

''अब क्या कीजिएगा! नेशनल क्राइसिस हो गया है यह तो। जब व्यवस्थापिका के लोग ही व्यवस्थापिका की मर्यादा नहीं समझेंगे तो क्या किया जा सकता है?'' देवेंद्र राय ने कहा और जोर से जम्हाई ली कहने के बाद।

और उनकी जम्हाई पूरी होने और एस.पी. के जाने के लिए उठने के पहले ही मोबाइल फोन पर यह खबर आ गई कि सी.डी.पी.ओ. श्रीमती वर्मा की ही तरह डॉ. आभा अग्रवाल भी टेढ़का पुल के पास अज्ञात राइफलधारियों के द्वारा उठा ली गई थीं।

''अब?'' रायजी की पेशानी पर बल पड़े हुए थे।

''हमको लगता है, हमारा गेमप्लान समझ गया है। दैट फेलो, धनंजय इज वेरी स्मार्ट। वह चाहता है कि...''

''क्या चाहता है?''

''एक तो हमारा ट्रांसफर चाहता है। उसको मालूम हो गया है कि आई ऐम बिहाइंड दयाशंकर।'' एस.पी. ने कहा और थोड़ा उदास हो गए, जब देवेंद्र राय ने नहीं कहा कि ऐसा नहीं होने वाला।

दयाशंकर चुपचाप खड़े हैं आंगन में। उस हत्याकांड का बस एकमात्र चिह्न यह सन्नाटा बच गया है। दूसरे चिह्न मिटा दिए गए हैं। जमीन गोबर से लीप दी गई है। खून के धब्बों को धो दिया गया है। इस सन्नाटे का कोई क्या कर सकता है?

'माई!' दयाशंकर के अंदर से बोला कोई, 'माई!' और दयाशंकर रोने लगे।

''माई...''

बुलाको फुआ दौड़ी हुई आईं ओसारे से। दयाशंकर जमीन पर लेटे हुए थे उस जगह, जहां लाश पड़ी हुई थी रामज्ञान पांड़ेबो की।

''बबुआ।'' बुलाको फुआ माथा पकड़कर बैठ गईं उनकी बगल में।

यह अपनी जन्मदात्री की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने का दर्द था, जो चेहरे बदल-बदलकर आ रहा था सामने, उसकी एक भी अभिलाषा पूरी नहीं कर पाने का दुःख था।

''बड़ा भयावन लगता है।''

''हां, फुआ।''

''दुलहिन आएगी?''

''डरती है, फुआ।''

''अकेले रहोगे?''

''आप कब जाने को सोच रही हैं?''

''करेजा अब कमजोर हो गया, बबुआ। यहां हरमेसा भाई याद आ जाता है। पहले वाला जमाना...सात गो बेटा-बेटीवाला...लगता था, कपार फट जाएगा हल्ला

से...बर्दाश्त नहीं होता...खाली-खाली...तुम्हारे बारे में सोच रहे हैं..."

बस बुलाको फुआ ही आई थीं अपनों में से। बहने नहीं आईं। बहनोइयों में भी केवल मंधाता मिश्र आए। अपने ससुराल से केवल बिनोदजी। एक बनिहार आया था सुशीला की चिट्ठी लेकर। लिखा था, "जीते-जी मुंह नहीं देखेंगे तुम्हारा।"

अब बुलाको फुआ भी जाना चाह रही थीं।

"चलिए, छोड़ते चले जाएंगे आपको। काम भी है थोड़ा।" दयाशंकर ने कहा और मुंह धोने चापाकल की ओर बढ़ गए।

"जगनथवाबो बहुत सेवा की है, बबुआ। रोते रहती है। कौनो उपाय करके जगनथवा को छोड़वा देना।"

"छूट जाएगा, फुआ।"

"भाई भी अकेले था...प्रभुजी के परताप से सात गो बेटा-बेटी हुआ...भगवान तुमको भी देंगे...बालचनवाबो हँस रही थी...हम बोले, हँसले घरवा बसेला...पल्टूओ और जोगीया के परिवार का तो नास हो जाएगा..." कुछ का कुछ बोले जा रही थीं बुलाको फुआ।

"दिदिया सब को भी बुलाएंगे, फुआ। गुस्साई हुई हैं। तुम भी आना तब। शारदा दीदी का तीन, सुशीला दीदी का दो, मुन्नीया का दो, हमारा एक फिर तो सात हो ही जाएगा।"

"अब हम नहीं आएंगे, बबुआ। हम भी भाई के पास चले जाएंगे। अभीये सब आसिरबाद दे देते हैं...हे ठोरा बाबा, हमारे बबुआ के साथ रहना...बाकी तुम आना...मरेंगे तो...भाई नहीं है तो तुम्ही न हो!" फिर बड़बड़ाने लगी थीं बुलाको फुआ।

पूरे रास्ते बड़बड़ाती रहीं, आशीर्वाद देती रहीं। दयाशंकर सुनते रहे।

"अभी सैड होने का समय नहीं है, दयाशंकरजी। इट्स टाइम टू गो फॉर द किल। हम लोग दोनों को दमयंती चाहिए। वो साला धनंजय, थोड़ा-थोड़ा समझ रहा है हमारा गेमप्लान। दमयंती को यूज कर रहा है।" एस.पी. ने कहा।

राजधानी के एक होटल के कमरे में बैठे हुए थे दोनों।

"दमयंती के मरने से क्या होगा? कोई दूसरा यही काम करेगा।" दयाशंकर बोले।

"मि. दयाशंकर! दयाशंकर और दमयंती का रिप्लेसमेंट मिलना आसान नहीं होता। नहीं तो हर कंट्री में लेनिन और माओ हो जाते। हर जगह रेवोल्यूशन हो जाता। इंडिविजुअल्स मैटर ए लॉट।"

"और अखिलेश सिंह और..."

"दे आर हुडलम्स। उड़नेवाला कॉक्रोच। मिनटों में खत्म हो जाएंगे।"

"देवेंद्र राय आपको करने देंगे ऐसा?"

"नारद सिंह को उड़ाया कि नहीं? और आपको लगता है, ये साला देवेंद्र राय इतना इंपॉर्टेंट हैं। इंपॉर्टेंट होता तो कल्याण मंत्री बनता?...और फैक्ट रिमेन्स, इस राज में अखिलेश और लुकुड़ी के मरने पर देयर विल बी हैपिनेस...आपको लगता है, रामप्रवेश

चौधरी चाहता है उनको?''

दारू के साथ ही अंदर जा रही थीं एस.पी. की बातें और वांछित प्रभाव पैदा कर रही थीं। दयाशंकर धीरे-धीरे बाहर आ रहे थे भय और संकोच की चंगुल से।

''आप नहीं रहे तो?'' पूछा।

''हमारे बल पर ही आप यहां तक पहुंचे?''

सोचा, मंधाता मिश्र से पूछेंगे, एस.पी. ठीक बोल रहा था कि नहीं, पर इरादा बदल दिया वहां पहुंचने के बाद। खाकर सो गए चुपचाप। नींद के गहराते कोहरे में दमयंती नजर आई—खून से नहाई हुई। अजीब-सी आंखों से उन्हें घूरती हुई—हम कोई नहीं होते आपका? पूछती-सी। और उनके चारों ओर खिलखिलाती आंखें थीं ढेर सारी—रामप्रवेश चौधरी की, देवेंद्र राय, बूटन राय की, अखिलेश सिंह की, श्रीभगवान सिंह की...एस.पी. भी थे...दयाशंकर कोशिश कर रहे थे उनमें झांक पाने की...वो भी खिलखिला रही थीं क्या? पर दिख ही नहीं रही थी...पता नहीं, कैसे छुपा लिया था कि...पसीने से नहा गए थे दयाशंकर।

''सोइए, तो केवल सोइए!'' बगलवाले पलंग पर लेटे मंधाता मिश्र ने देख लिया था कि बेचैन थे दयाशंकर, करवट बदल रहे थे बार-बार।

सुबह के सात ही बजे होंगे कि रमेश दिख गया था गेट के बाहर बेचैनी से टहलता हुआ। दयाशंकर झटके से बाहर निकले थे और उसे आगे बढ़ने को कह वापस आ गए थे।

''फुआ बात करना चाहती है।'' रमेश फुसफुसाया।

''कहां।''

रमेश ने बताया—वह कहां आने वाली थी।

''धनंजयजी को मालूम है?''

''नहीं पता।'' कहा रमेश ने, पर उसका चेहरा कह रहा था, उसे पता था।

''हमसे मत छुपाओ, रमेश। हम भी भतीजा से कम नहीं समझे तुमको।''

''नहीं पता है उनको।''

''धनंजयजी हैं कहां?''

''नहीं पता, लेकिन नाराज नहीं होंगे। हरिहर मास्टर को हटने को बोले हैं कुंवरपुर से।''

''पहुंच जाएंगे। अब तुम निकल जाओ।'' कहा और लगभग भागते हुए कदमों से जाते हुए देखते रहे उसे।

चमत्कार जैसा लग रहा था यह। कल ही योजना बनी थी और आज ही उसके कार्यान्वयन का अवसर आ गया था। झपटते हुए लौटे और एस.पी. को फोन लगाया। टेढ़का पुल से एक मील आगे, ठीक वहीं जहां सुनीता वर्मा का अपहरण हुआ था, सड़क की बाईं तरह, लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर एक छोटा-सा बगीचा था, उसी में मिलना तय हुआ था। दमयंती के साथ बस दो और लोग आने वाले थे। बगीचे में पहुंचने के पहले ही उन्हें घेर लेना था। दयाशंकर ने बताया, वे भी पहुंचेंगे अपने

दो साथियों के साथ। जानबूझकर थोड़ी दूर खड़े रहेंगे। काम हो जाएगा तो भागेंगे। उनके दोनों साथियों को भी यह मालूम नहीं होगा कि सब कुछ जानकारी में हो रहा था उनके।

दरवाजा खुला कमरे का तो मुन्नी की कौतूहल-भरी आंखें इंतजार कर रही थीं।

"एस.पी. थे।" दयाशंकर ने कहा और ड्रेसिंग टेबुल के सामने अपना चेहरा देखने चले गए। पीला तो नहीं हो रहा था घबराहट के कारण।

समय बहुत कम था। खबर देकर बुलाना था छांगुर और नंदलाल को। मंधाता मिश्र निकले हुए थे कहीं। मुन्नी को कहा, गांव पहुंचना जरूरी था और मोटरसाइकिल लेकर निकल गए।

बिक्रमगंज-गुनी रोड पर भागती मोटरसाइकिल के साथ-साथ दयाशंकर का दिमाग भी उतनी ही तेजी से दौड़ रहा था। तक का जिया हुआ हरेक क्षण मानो चला आ रहा हो समीक्षित होने को। आगे के जीवन का हरेक क्षण मानो कह रहा हो—मेरे बारे में भी सोच लो। दयाशंकर अब सोच रहे कि यह क्यों नहीं सोचा कि कहीं धनंजयजी भी उन्हीं की तरह किसी योजना पर कार्य नहीं कर रहे हों? यह क्यों नहीं सोचा कि एस.पी. विश्वासघात कर सकता था? आखिर था तो देवेंद्र राय जैसों के साथ ही खाने-पीने वाला।

दयाशंकर को अफसोस हो रहा है अपनी हड़बड़ी पर। एस.पी. से बात करने के पहले ठीक से सोच लेना चाहिए था। रमेश से भी थोड़ी और जानकारियां लेनी चाहिए थीं। यह कहानी भी तो एस.पी. की ही गढ़ी हुई है कि उनके घर पर हमला धनंजयजी का काम था। एस.पी. कह रहे थे, ऐसा नहीं होता तो कब्जेवाली जमीन की सुरक्षा के लिए डटे हुए लोग भागने नहीं देते हमलावरों को। दयाशंकर को कमजोरियां नजर आने लगी हैं इस कहानी की। कब्जेवाली जमीन पर अभी भी धनंजयजी के वफादार लोग काबिज थे, पर दयाशंकर के समर्थकों की भी कमी नहीं थी वहां। उनके ऊपर हमले की योजना यदि इतने विस्तार से बनी होती तो उसकी भनक जरूर मिलती उन्हें। कोई न कोई जरूर बता जाता। पर गलती तो हो चुकी थी उनसे। और जो परिस्थिति सामने थी, उसमें दमयंती और एस.पी. दोनों में से किसी एक के साथ तो विश्वासघात करना ही करना था।

"धनंजयजी और अखिलेश सिंह वगैरह में से हमारा ज्यादा बड़ा दुश्मन कौन है! नंदलाल?" नंदलाल से पूछा दयाशंकर ने।

नंदलाल को नहीं सूझा कोई जवाब।

"आप बोलिए, रियासत मियां।" रियासत मियां से पूछा।

"हम तो ऐसा मानते हैं कि जो हम-खयाल हैं, उनमें कभी भी सुलह हो जाए, लेकिन जिसका खयाल ही एकदम अलग हो, उसका भरोसा नहीं किया जा सकता।" रियासत मियां ने कहा।

"मतलब कि आप कह रहे हैं कि धनंजयजी से सुलह का चांस है?"

"हम तो दुआ करते हैं कि..."

"दुआ तो हम भी कर रहे हैं।" दयाशंकर बोले, पर केवल सुनाने के लिए रियासत मियां को।

रियासत मियां की दलील सुनते हुए ही यह विचार जड़ जमाता गया था उनके मस्तिष्क में कि धनंजयजी उनके सबसे बड़े शत्रु थे। और जब तक दयमंती उनके साथ थी, पलड़ा भारी रहने वाला था उनका। दमयंती के जाते ही दयाशंकर भीतरी और बाहरी का सवाल खड़ा कर देते।

"सुलह कर लेना ही ठीक रहेगा, नंदलाल।" दयाशंकर ने अगले कार्यक्रम की तैयारी शुरू कर दी है।

"हां, बाबा।" नंदलाल ने तत्क्षण हामी भर दी, "उधर से भी यही सिगनल मिल रहा है। हरिहर मास्टर चले गए हैं। रामनाथ भाई बहुत अफसोस कर रहे थे।"

"तो चलते हैं आज।"

"कहां?" नंदलाल चौंक गया है।

"छांगुर, हम और तुम। बस तीन आदमी। दमयंती से मीटिंग फिक्स किए हैं। उससे बात करने के बाद ही धनंजयजी से बात करना ठीक रहेगा।" दयाशंकर फुसफुसाए और छांगुर के घर की ओर बढ़ गए। नंदलाल को भौंचक्का छोड़कर।

उन तीनों ने टेढ़का पुल के आधा मील इधर ही नहर का रास्ता छोड़ दिया था और सरसों की क्यारियों से होते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। नौ बजे का समय तय हुआ था। जाती हुई फरवरी की ठंडी हवा अच्छी लगी रही थी। अंजोरिया दमक रही थी सरसों के पीले खेतों में। बगीचा मुश्किल से आधा किलोमीटर दूर रह गया होगा। साढ़े आठ बज रहे थे। दयाशंकर सोच ही रहे थे कि कुछ देर के लिए रुकने को कँहें नंदलाल और छांगुर को कि फुसफुसाहटें सुनाई दीं कहीं पास में। तीनों लेट गए मेंड़ पर और अपनी-अपनी पिस्तौलें निकाल लीं। दूसरी तरफ भी चुप्पी छा गई थी। पसीना चुहचुहा आया था दयाशंकर के माथे पर और सांस बेकाबू होने लगी थी।

"घबराइए मत।" बगल में लेटा छांगुर समझ गया कि डरे हुए थे दयाशंकर।

"बाबा?" रमेश की आवाज आई थी।

दयाशंकर को लगा, उनकी देह का सारा खून ही जम गया हो अचानक। कुहनियों पर टिकी देह धड़ाम से बिछ गई मेंड़ पर। दमयंती होशियार निकली थी उनसे।

दमयंती के साथ भी रमेश के अलावा बस दो ही लोग थे।

"बाप रे! हम तो डर ही गए।" उठकर बैठ गए हैं दयाशंकर।

छांगुर को हँसी का दौरा पड़ गया है मानो। मुंह को हथेलियों से दाबे हुए हँसते-हँसते लोट गया है मेंड़ पर।

"छंगुरा नहीं सुधरेगा।" नंदलाल ने कहा दमयंती से।

"विनायक हैं।" दमयंती ने अपने साथ खड़े आदमी का परिचय कराया दयाशंकर से।

दयाशंकर जी-जान से इस कोशिश में लगे हुए थे कि उनके चेहरे पर उड़ती हवाइयां मत दिख जाएं उन्हें। एक से एक डरावने खयाल उग रहे थे दिमाग में। अगर पूछा उसने कि विकास कार्यक्रमों की ऐसे धड़ल्ले से स्वीकृति कैसे मिल रही थी, तो

क्या जवाब देंगे? अगर गद्दारी का सीधा आरोप ही लगा बैठी तो क्या बोलेंगे?

"बहुत दुःख हुआ हम लोगों को।" विनायक ने कहा।

"हम तो...अब क्या कहें..."

"कुछ नहीं कहना है, बाबा।" दमयंती बोली, "धनंजयजी बस इतना चाहते हैं कि अनुशासन और तैयारी से काम हो। आप भी तो यही कहते थे। कहते थे कि नहीं?"

"तो पूछो इन लोगों से कि क्या बोले हम?...हम थोड़ा...छोड़ो जाने दो..."

"हम तो छोड़े ही हुए हैं। आप लोग ही पकड़े हुए हैं।" दमयंती हँसी, "लेकिन अब छोड़ देना है।"

दयाशंकर ने पहली बार देखा उसके स्निग्ध और सौम्य चेहरे को। अपनत्व का भाव था वहां।

"बेचारे बाबा के लिए तो अपने पहाड़ हो गया है अलग होना..." छांगुर कह ही रहा था अपनी बात कि वातावरण में कुछ दूसरे लोगों की मौजूदगी का अहसास भी तिर गया और सातों एक ही साथ धुटनों के बल बैठ गए मेंड़ पर।

दमयंती ने दयाशंकर को देखा—धोखा तो नहीं किया इस आदमी ने?

दयाशंकर दोनों हथेलियों से मुंह ढांपे कांप रहे थे। ईश्वर से प्रार्थना करते कि एस.पी. नहीं हो यह।

पैरों की आवाजें करीब आ रही थीं। जाहिरा तौर पर कुछ लोग सधे हुए कदमों से बढ़ रहे थे उनकी ओर। अपनी ए.के. की नाल विनायक ने दयाशंकर की कनपटी पर रख दी है। दयाशंकर ने कोई हरकत नहीं की। आवाजों की दिशा में आंखें गड़ाए, पिस्तौल ताने बैठे रहे।

दमयंती ने नाल हटा दी है उनकी कनपटी से। यह भी तो हो सकता था कि कोई गिरोह गुजर रहा हो उधर से और उनकी आवाज सुनकर चला आया हो।

"देखें?" छांगुर फुसफुसाया और उठने को हुआ कि गोली चल गई उधर से।

"हाथ ऊपर करके सामने आ जाओ।" इस चेतावनी के साथ ही सर्चलाइट की चमकीली रोशनी भी आई।

"पुलिस है!" दमयंती बोली। एक निडर आवाज।

दयाशंकर का मन हुआ कि उठकर कह दें कि बस वही और उनके दो साथी थे। पर इसके बाद मुंह कैसे दिखाएंगे दमयंती को?

"बाहर आओ!"

"भागना होगा।" दमयंती बोली और आवाजों की विपरीत दिशा में सरकने लगी।

सरसों के पीले फूल हिले और गोलियों की बौछार शुरू हो गई।

दयाशंकर नहीं जानते, कौन किधर भागा है। भागे जा रहे हैं बेतहाशा।

"अरे चांडाल!" आवाज आई थी पीछे से, पर उसी क्षण एक कराह की शक्ल में ढेर हो गई थी। विनायक मारा गया था।

गोलियों की आवाज लगातार आ रही थी, पर अब और नहीं दौड़ सकते

दयाशंकर। निढाल होकर लेट गए हैं सूखे पड़े करहे में। यह अहसास छील रहा है चेतना को कि एस.पी. ने यह जानने की कोशिश नहीं की थी कि जिन पर चला रहा था गोलियां, उनमें वे भी थे कि नहीं।

"बाबा!" छांगुर का सुबकना सुनाई दिया, "दमयंती मर गई!"

उसके मुंह पर हथेली जमा दी है दयाशंकर ने। हवा में तैरती हुई उसकी आवाज एस.पी. तक पहुंच सकती थी।

गोलियों की आवाज थम गई है। केवल झींगुरों की आवाज बच गई है वातावरण में।

"बढ़ते हैं धीरे-धीरे।" छांगुर बोला और वे करहे में दुबके हुए ही आगे बढ़ने लगे।

"नंदलाल?" दयाशंकर फुसफुसाए।

"बचा होगा तो आइए जाएगा।"

नहरवाली सड़क तक पहुंच गए हैं दोनों और अब अपने गांव की ओर बढ़ रहे हैं।

दमयंती के मारे जाने की खबर कुंवरपुर पहुंच गई है और कुंवरपुर और भी डर गया है। टेंगर सिंह तक के गले से आवाज नहीं निकल रही। गौर से सुनने पर काली माई के मंदिर की दिशा से आती बलराम सिंह की आवाज सुनाई देती है—'कब की चूक हमारी हमार पिया...'

उन्हें शायद बताया नहीं था किसी ने कि...

• • •

अरे चांडाल

प्रमोद कुमार तिवारी



सामयिक प्रकाशन
नई दिल्ली—110002